Elisha Jones
Leipsic, June 15. 1872



DEMOSTHENIS ORATIONES.

DEMOSTHENIS

ORATIONES.

EDIDIT

IMMANUEL BEKKER.

VOL. III.

EDITIO STEREOTYPA.

EX OFFICINA BERNHARDI TAUCHNITZ.

LIPSIAE MDCCCLV.

DEMOSTHENIS

ORATIONES.

EDIDIT

IMMANUEL BEKKER.

VOL. III. PARS I.

EDITIO STEREOTYPA.

EX OFFICINA BERNHARDI TAUCHNITZ.

LIPSIAE MDCCCLV.

ADNOTATIO CRITICA.

Or. XLI. §. 2, 4. *οὐδὲ*] *οὐχ*. ‖ 4, 9. *τῷ Πολυεύκτῳ*] *Πολυεύκτῳ*. ‖ 22, 6. *αὐτῷ μηδὲν*] *μηδὲν αὐτῷ*. ‖ 28, 4. *ταύτην*] *ταυτηνὶ*. ‖ 6. *ἴδωσιν*] *εἰδῶσιν*. ‖ 29, 2. *τριάκοντα*] *τριάκοντα μνᾶς*. ‖ 3. *οὑτοσί*] *οὗτος*. ‖ 9. *ἐπέτρεπον*] *ἐπέτρεπον ἂν*. ‖ 30, 3. *οὗτος*] *ὁὑτοσὶ*. ‖ 4. *εἶναι*] *ἐνεῖναι*.

Or. XLII. §. 1, 6. *ὅπου γε*] *ὅπου*. ‖ 4, 8. *ὑμῖν*] *ὑμῖν ἅπαντα*. ‖ 5, 10. *ἐπὶ τῷ χωρίῳ ἀναφανήσεται*] *ἀναφανήσοιτο ἐπὶ τῷ χωρίῳ*. ‖ 7, 2. [*καὶ κωλύσας*]] *καὶ κωλύσας*. ‖ 11, 2. *καὶ τοῦ*] *τοῦ*. ‖ 21, 9. *τούτοις*] *τουτοισὶ*. ‖ 22, 8. et 23, 2. *ἀνηλωκώς*] *ἀναλωκώς*. ‖ 25, 2. *σώματι*] *σώματι γέγονεν*. ‖ 32, 5. *ἃ*] *ὑμῖν ἃ*.

Or. XLIII. *ὑποθ*. v. 6. *εἱς ὅ γε*] *εἷς ὢν γὰρ*. ‖ §. 4, 2. *αὐτοῦ. καὶ*] *αὐτοῦ καὶ*. ‖ 3. *τούτου*] *τουτουὶ*. ‖ *ἐκείνοις*] *ὃς ἐκείνοις*. ‖ 11, 5. *Εὐβουλίδῃ*] *Εὐβουλίδην*. ‖ 16, 9. *ἔχοντι*] *ἄρχοντι*. ‖ 19, 10. *ἑαυτοῦ*] *ἑαυτοῦ* [*οἶκον*]. ‖ 22, 4. *Φανόστρατος*] *Φανοστράτη*. ‖ 8. *υἱὸς*] *υἱὸς ὁ*. ‖ 26, 3. *πατρὸς*] *πατρὸς Εὐβουλίδου, ἀνεψιοῦ παῖς ὢν Ἁγνίᾳ πρὸς πατρὸς*. ‖ 4. *παῖς, ἀνεψιοῦ παῖς ὢν Ἁγνίᾳ πρὸς πατρός*] *παῖς*. ‖ 29, 1. *οἱ*] *εἰσὶ*. ‖ 3. *δὲ θυγάτηρ*] *θυγάτηρ*. ‖ 11. *ὃ οὐδεπώποτε*] *οὐδεπώποτε*. ‖ 30, 2. *παρασχόμενος*] *παρεχόμενος*. ‖ 32, 1. *ἐνίκησεν ἡ*] *ἐνίκηδε*. ‖ 34, 8. *λέγει*] *λέγειν δόξει*. ‖ 38, 7. *οὐδὲν*] *οὐδενὸς*. ‖ 41, 1. *Εὐβουλίδης*] *ὁ Εὐβουλίδης*. ‖ 42, 10. *τούτων*] *τούτου*. ‖ 43, 5. *πρὸς Γλαύκωνα*] *προσκλαίουσα*. ‖ 45, 1. *Ἀρχίλοχον*] *Ἀρχίμαχον*. ‖ 9. *δὲ* ⟨*τοῦ Εὐβουλίδου τοῦ κλήρου*⟩ *τοῦ*] *δὲ τοῦ*. ‖ 47, 4. *αὐτοῦ*] *ἑαυτοῦ*. ‖ 50, 4. *αὑτῶν*] *ἑαυτῶν*. ‖ 51, 1. *ἂν μὴ*] *μὴ*. ‖ 3. *ἐὰν μὲν*] *ἐὰν δ'*. ‖ 5. ⟨*ἀνεψιοὺς καὶ παῖδας*⟩ *ἐξ*] *ἐξ*. ‖ 8. *ἀνεψιῶν*] *ἀνεψιαδῶν*. ‖ 53, 2. *προσέταξεν*] *προσέταξε πολλὰ πάνυ*. ‖ 54, 3. *ζευγίτης*] *ζυγίτης*. ‖ 4. *πλείους*] *μὴ πλείους*. ‖ 56, 5. *ἀναισχυντότεροι*] *ἀναισχυντότεροι καὶ μιαρώτεροι*. ‖ 57, 1. *ἀνεψιότητος*] *ἀνεψιότητος καὶ ἀνεψιοῦ*. ‖ 2. *γαμβροὺς καὶ πενθεροὺς*] *γαμβροὺς καὶ ἀνεψιοὺς καὶ πενθεροὺς καὶ ἀνεψιαδοῦς*. ‖ 5. *εἶς*] *εἷς* [*ἢ οἱ ἐφέται*]. ‖ 60, 2. *οὐδ'*] *μὲν οὐδ'*. ‖ 63, 8. *τούτου*] *τουτουὶ*. ‖ 66, 10. *κνισῆν*] *κνισσῆν*. ‖ 13. *πάτρια*] *πατρῷα*. ‖ 15. *καττὰ*] *καττὰ τὰ*. ‖ 68, 7. *οὐδὲν*] *οὐδενὸς*. ‖ 70, 9. *πρεμνιζομένας*] *ἐκπρεμνιζομένας*. ‖ 71, 7. *ἐλάαιν*] *ἐλαίαιν*. ‖ 9. *ἐλάας*] *ἐλαίας*. ‖ 11. *ἐλάαν*] *ἐλαίαν*. ‖ 15. ⟨*ὃ δὲ τῇ θεῷ γίγνεται*,⟩ *τοῖς*] *τοῖς*. ‖ 74, 8. *τουτουί*] *τούτου*. ‖ 75, 3. *τούτους*] *τουτουσὶ*. ‖ 76, 1. *ἂν*] *ἂν οὖν*. ‖ 7. *οὐδ'*] *ἀλλ' οὐδ'*. ‖ 81, 4. *τὸν παῖδα τουτονί, ὦ ἄνδρες δικασταί*] *ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸν παῖδα τουτονὶ*.

Or. XLIV. *ὑποθ*. v. 16. *παράπλαστον*] *παραπλησίαν*. ‖ §. 9, 2. *Μιδυλίδης*] *Μειδυλίδης*. sic et infra. ‖ 10, 8. *αὐτοῦ*] *αὐτῶν*. ‖ 13, 3. *τοῦ ἐμοῦ πατρὸς*] *τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ*. ‖ 5. *τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ*] *τοῦ ἐμοῦ πατρὸς*. ‖ 15, 5. *νόμων*] *νομίμων*. ‖ 7. *ἄπαιδος*] *παιδὸς*. ‖ 16, 5. *ἐνισχυριοῦνται*] *ἰσχυριοῦνται*. ‖ 17, 4. *ταύτης αὐτῶν*] *ταύτης τῆς αὑτῶν*. ‖ 20, 1. *ὁ*] *ὁ μὲν*. ‖ 22, 5. *γνήσιον*] *εἰσποιητὸν*. ‖ 44, 5. *καταλειφθεὶς*] *ἐγκαταλειφθεὶς*. ‖ 8. *ἄλλων*] *ἄλλων δὲ*. ‖ 45, 6. *ἂν*] *ἐὰν*. ‖ 46, 6. et 47, 2. *καταλιπὼν*] *ἐγκαταλιπὼν*. ‖ 7. *τούτου*] *τουτουὶ*. ‖ 56, 1. *τοῦτον γὰρ*] *τοῦτον* [*γὰρ*]. ‖ 67, 3. *ὅτῳ ἂν*] *ὅταν*.

Or. XLV. *ὑποθ*. v. 5. *πατρὸς*] *πατρὸς Ἀπολλοδώρου*. ‖ 8. *τοῦ*] [*καὶ*] *τοῦ*. ‖ §. 8, 5. *Λαμπτρεύς*] *Λαμπρεύς*. ‖ 11, 5. *μ' ἐθέλειν*] *με θέλειν*. ‖ 13, 5. *ἐθελήσαντος*] *καὶ ἐθελήσαντος*. ‖ 10. *ὅστις ἂν*] *ὅστις*. ‖ 28, 2. *προκλή-*

σεως] κλήσεως. ‖ 34, 3. ἐξεῖναι δὲ] ἐξεῖναι. ‖ 41, 2. δὲ ὅταν] ὅταν. ‖ 46, 10. οὗτος] οὗτος αὐτὸς. ‖ 50, 5. ἂν] ἐὰν. ‖ 53, 8. οὗτος] οὑτοσί. ‖ 57, 5. ὡσπερεὶ] ὥσπερ. ‖ 65, 7. ὅπως τι] ὅπως. ‖ 87,5. παράδειγμα] καὶ παράδειγμα.

Or. XLVI. §.3,3. ἔχει] ἔχειν. ‖ 7,7. μαρτυρήσαντες] ἐκμαρτυρήσαντες. ‖ 12, 7. ἐπ' ἀνδρὶ ἐξεῖναι] ἐξεῖναι ἐπ' ἀνδρί. ‖ 17, 9. εἶτα δὲ] εἶτα.

Or. XLVII. §.5,1. γὰρ αὐτοῖς] γὰρ νῦν αὐτοὺς. ‖ 9,3. ἠπάτα] ἐξηπάτα. ‖ 11,6. δύο] δύο μόνους. ‖ 13,5. ταύτην τὴν πρόκλησιν προυκαλούμην] προὐκαλούμην ταύτην τὴν πρόκλησιν. ‖ 14, 6. οὖν σὺ] οὖν. ‖ ὧν] ὧν σύ. ‖ 17, 7. τὴν ἄνθρωπον παραδοῦναι] παραδοῦναι τὴν ἄνθρωπον. ‖ 21, 1. τοῦ] τοίνυν τοῦ. ‖ 9. εἰσπράξασθαι] εἰσπρᾶξαι. ‖ 22, 2. ἡμῶν] ὧν. ‖ 4. τούτου] τουτουί. ‖ 23, 1. ἦν οὖν] οὖν ἦν. ‖ 5. κατὰ] καί. ‖ 25,4. οὖν] δή. ‖ 33,4. [καὶ τὸν δῆμον]] καὶ τὸν δῆμον. ‖ 37, 4. ἀναγκάζοντας] ὀφείλοντας καὶ ἀναγκάζοντας. ‖ 39, 3. οἱ] οὗτοι οἱ. ‖ 40, 7. χειρῶν ἀδίκων πρότερος] πρότερος χειρῶν ἀδίκων. ‖ 10. τὴν μαρτυρίαν] τὰς μαρτυρίας. ‖ 42,8. διαψηφισαμένων] ἰδίᾳ ψηφισαμένων. ‖ 55, 3. γενομένη] γεγενημένη. ‖ 60, 4. ἐκαλίστρουν] ἐκάλουν. ‖ 63, 1. βούλονται] βούλοιντο. ‖ 78, 4. οὐκ] οὐκέτι.

Or. XLVIII. §.6,3. οὑτοσὶ] Ὀλυμπιόδωρος οὑτοσί. ‖ 10, 5. et 14,1, ἦν] ἐνῆν. ‖ 14,4. τοῦ] τὰ τοῦ. ‖ 28,3. ἐπεὶ] ἐπειδή. ‖ 33,2. πρώτιστον] πρῶτον. ‖ 34, 1. δέ] δή. ‖ 38, 3. νυνὶ] καὶ νῦν. ‖ 39, 4. ὑπόνοια] ὑπόνοια μὲν. ‖ 42, 5. αἰτίαι] αἱ αἰτίαι. ‖ 44,4. ἀπὸ] τὸ ἀπό. ‖ 48, 1. τὸ ἕτερον] ἕτερον.

Or. XLIX. ὑποθ. p. 108, 3. ὑπὸ] ὑπέρ. ‖ §. 2, 2. καὶ] [ὧν] καί. ‖ 3, 8. κομίσασθαι] κομιεῖσθαι. ‖ 6, 6. ἐκέλευεν] ἐκέλευσεν. ‖ 12, 1. ἐν τῷ λόγῳ ἀπήνεγκεν] ἐν ᾧ λόγῳ ἀπήνεγκεν ἐλογίσατο. ‖ 17, 6. προσάγων] προσαγαγών. ‖ 19, 6. αὐτῷ τὴν] τήν. ‖ 25, 3. τῆς] τῆς [ἐνθάδε]. ‖ 30, 6. Ἀλκισθένους ἄρχοντος] Ἀλκισθένης ἄρχων. ‖ 32, 6. τιμὴν] τὴν τιμήν. ‖ 8. αὐτὸς] αὐτῷ. ‖ 42, 5. ἐπιθεῖναι] Τιμοθέῳ ἐπιθεῖναι. ‖ 46, 7. ὅ τι] ὅτε. ‖ 51, 5. μισθωτοὶ] πότερα μισθωτοί. ‖ 52, 6. ὑποτιθέμενος] ὑποτιθέμενος [παραλήψεσθαι]. ‖ 55, 5. Αἰσχρίων] Αἰσχρίων [αὐτοῦ]. ‖ 56, 7. παραδώσει] παραδοίη. ‖ 59, 4. ἦν] ὤν. ‖ 8. ἀπὸ] ἐπί. ‖ 60, 8. ἀργύριον] ἀργύριον ἀπὸ τῆς τραπέζης. ‖ 63,3. οἷς] ἐν οἷς. ‖ 64, 3. κἆτα] καί. ‖ 7. πρὸς] ὡς. ‖ 65, 3. ἠξίου οὗτος] ἠξίου. ‖ 9. τὸν] τό. ‖ 68, 3. ὀργίζοισθε] ἐκείνοις ὀργίζεσθε. ‖ 4. ἐστι] ἐστιν ὑμᾶς.

Or. L. §.2,5. ἕκασται καὶ χρήσιμοι] ἕκαστα καὶ χρήσιμα. ‖ 3, 9. τὰ τοῦ] τοῦ. ‖ τὰς μαρτυρίας] τοὺς μάρτυρας. ‖ 7, 8. ἅπασαν] ἅπασι. ‖ 15, 5. οὐκέτ'] οὐκ. ‖ 17, 7. παρ' Ἀρχεδήμου] παρὰ Χαιρεδήμου. ‖ 18, 7. τι ὅσον] ὁπόσον. ‖ 21,5. χειμῶνα] χειμῶνας. ‖ 49,5. δ' αὐτῷ] αὐτῷ. ‖ 51,5. βούλοιτό] βούλεταί. ‖ 52, 6. τῷ — τριηραρχίαν ἔπεισεν] πείθει τῷ — τριηραρχίαν. ‖ 60, 1. ἐλεῆσαι] [ἡμᾶς] ἐλεῆσαι. ‖ 61,8. ἀποδιδοίη] ἀποδοίη.

Or. LI. ὑποθ. v. 10. τούτου τοῦ στεφάνου] τοῦτον ἐστεφάνωσεν. ‖ §.4,5. οὐ] οὐδὲ. ‖ 12,6. ὑμεῖς φήσετε] ἂν ὑμεῖς φήσαιτε.

Or. LII. ὑποθ. v.13. τοὔνομα] τοῦ νόμου. ‖ §. 1, 3. γάρ] γὰρ ἤδη. ‖ 10, 9. εἴ τίς] εἴ τι. ‖ 15, 4. ἀναίσχυντοι] ἀναίσχυντοί εἰσι. ‖ 9. αὐτοῦ] δι' αὐτοῦ. ‖ 27, 2. ψευσομένῳ] ψευσαμένῳ.

Or. LIII. ὑποθ. v. 2. δὲ] γάρ. ‖ §.6,10. ἐμὲ] ἡμᾶς. ‖ 7,5. πρῶτον μὲν] πρῶτον. ‖ 7. ὠδύρετο] διωδύρετο. ‖ 8, 6. βοηθήσοιμι] βοηθήσαιμι. ‖ 9, 6. ἃ παρ'] ἅπερ. ‖ 16, 4. ἐγὼ] ἐγὼ πρὸς ὀργήν. ‖ 17, 5. ἐώθει] ὤθει. ‖ 29, 5. ὀδυρόμενοι] ἀποδυρόμενοι.

Or. LIV. §.4,7. κατεσκεδάννυσαν] κατεσκεδάννυον. ‖ 16,2. οὐδ'] οὔτ'. ‖ 21,3. ὑμῶν] ὑμῖν. ‖ 22,9. ἅπερ] ἅπερ οὗτος. ‖ 24, 1. τῆς] τοὺς τῆς.

Or. LV. ὑποθ. v. 2. ἐπομβρίας] δινοβίας. ‖ 6. ἀποικοδομήσαντα νῦν αἴτιον] ἀποικοδομηθεῖσαν νῦν αἰτίαν. ‖ §. 2, 4. Καλλικρατίδην] Καλλικράτην. ‖ 4, 4. ἐγένετο] ἐγίγνετο. ‖ 5, 6. ἡμῖν ἦν δυσχερὲς πρὸς ἀλλήλους] ὑμῖν δυσχερὲς πρὸς ἀλλήλους ἦν. ‖ 7, 1. ἀλλ'] ἀλλ' εἰ ἠνέγκατε τότε μάρτυρα καὶ ἐπεμαρτύρασθε, νῦν. ‖ 7, 3. τούτοις] τούτους. ‖ 10, 3. μέσον] τὸ μέσον. ‖ 5. εἰσπῖπτον] εἰσπῖπτον ἐνίοτε. ‖ 15, 2. χωρίον] τὸ χωρίον. ‖ 18, 3. γὰρ] γὰρ νυνί. ‖ 7. ἀφιέναι] ἀφεῖναι. ‖ 22, 7. ἐκβαλὼν] ἐμβαλὼν. ‖ 27, 2. ἐκβεβλήκασι] ἐμβεβλήκασι. ‖ 31, 2. κατηγορεῖν] κατηγορεῖν νῦν.

Or. LVI. §. 9, 9. τἀνθένδε] τἀνθάδε. ‖ 32, 8. οὐ δίδως] οὐκ ἀποδίδως. ‖ 37, 1. Ἀθηναῖοι] δικασταί. ‖ 43, 3. ἐμίσθωσαν] ἐμίσθουν. ‖ 44, 1. τούτοις] τοῖς. ‖ 48, 7. οἴεσθε] οἰήσεσθε.

Or. LVII. §. 2, 2. ἡμᾶς] ὑμᾶς. ‖ 15, 4. ᾔεσαν] εἴησαν. ‖ 20, 5. δέ] δή. ‖ 24, 1. συγγενῶν] [ζώντων] συγγενῶν. ‖ 32, 3. πάλιν] πάλιν [τὸν αὐτὸν]. ‖ 36, 6. ἃ] ἃ οὗτος. ‖ 39, 8. τῶν συγγενῶν] καὶ συγγενῶν. ‖ 44, 5. ψηφίσαιντο] ψηφίσαιτο. ‖ 49, 4. εἰσπηδῶσιν] εἰσπεπηδηκόσιν. ‖ 50, 3. εἰ ἐμαυτὸν] ἐμαυτὸν. ‖ 54, 7. με] ἐμὲ. ‖ 56, 9. ὑμῶν] ὑμῖν. ‖ 62, 6. διαψηφίσει] δοκιμασίᾳ. ‖ 68, 3. υἱοί] υἱοί, εἶτα τοῦ ἑτέρου ἀδελφιδοῦ δύο υἱοί.

Or. LVIII. ὑποθ. v. 9. ἐνέδειξε] ἔδειξε. ‖ §. 11, 5. γεγενημένα] ταῦτα γεγενημένα. ‖ 12, 8. συκοφαντεῖ] καὶ συκοφαντεῖ. ‖ 17, 11. Σκιρωνίδης] Σκιρωνίδης. ΨΗΦΙΣΜΑ. ‖ 19, 1. νόμος] ἕτερος νόμος. ‖ 20, 1. οὐδὲν] οὐδὲν [μὲν]. ‖ 28, 8. ὥστε ζητήσας] ὥστ' ἀναζητήσας. ‖ 34, 5. καθυφεῖκε] καθυφῆκε. ‖ 35, 4. Ἀντιμέδων] Αὐτομέδων. ‖ 37, 4. οὐδὲ] οὔτε. ‖ 41, 7. αὐτοὺς τούτους ὑμῖν] τοὺς αὐτοὺς ὑμῖν τούτους. ‖ 46, 2. φήσει μὴ] μὴ φήσει ἄν. ‖ 5. κωλύειν] κωλύειν ἄν. ‖ 47, 6. ζημίας] τιμωρίας. ‖ 48, 5. ἐπιγεγραμμένοι] γεγραμμένοι. ‖ 49, 4. δῆλον] δῆλον ὄν. ‖ 51, 1. φήσει] φησί. ‖ 52, 6. κατὰ τούτου] κατ' αὐτοῦ. ‖ 56, 8. καθημένους] καθημένους τουτουσί. ‖ 9. ἐᾶσαι] ἐάσετε. ‖ 58, 2. βλασφημεῖν] βλασφημεῖν με. ‖ 61, 3. κατὰ] καί. ‖ 63, 2. θαυμάσιόν] θαυμαστόν. ‖ ἐκ] ἀπὸ. ‖ 6. δυσχερής] δύσχρηστος. ‖ 66, 3. Ὀλυμπίασι] Ὀλύμπια. ‖ 68, 3. πολλάκις] πολλάκις γε.

Or. LIX. §. 11, 1. δὴ] δὴ αὐτοί. ‖ 6. ἂν ἦν] ἦν. ‖ 12, 2. τι προσιόντων μοι] προσιόντων ἐμοί. ‖ 3. ἐπάθομεν] ἐπάθομεν ὑπ' αὐτοῦ. ‖ 13, 2. ἀφῃρεῖτο] ἀφῄρητο. ‖ 19, 5. Ἄντειαν] Ἀντίαν. ‖ 35, 8. τοὺς Λακεδαιμονίους] Λακεδαιμονίους. ‖ 50, 2. παιδάριον] παιδίον. ‖ 52, 10. ἐκδῷ] ἐκδιδῷ. ‖ 59, 3. ὧν] ὡς. ‖ 67, 11. αὐτὸν] αὐτούς. ‖ 78, 9. θεόγνια] θεοίνια. ‖ 94, 3. ἐφ'] ὑφ'. ‖ 102, 7. δύο] δέκα. ‖ 108, 1. αὕτη] αὐτῇ. ‖ 115, 4. δικάζεσθαι] διαδικάζεσθαι. ‖ 121, 1. et 124, 7. Ξεννίδα] Ξενίδα. ‖ 124, 8. τῶν Στεφάνου ὅτι ἐκ Νεαίρας] τῶν Νεαίρας ὅτι ἐκ Στεφάνου. ‖ 125, 9. ἐγὼ δ'] ὡς ἐγώ.

Or. LX. §. 2, 1. ἐνθαδὶ κἀμοί] ἐνθάδε εἶναί μοι. ‖ 4, 8. ἐπήλυδας ἐλθόντας εἰς τὰς] εἰς τὰς ἐπήλυδας ἐλθόντας. ‖ 8, 2. τὸν πολλῶν] πολλῶν. ‖ 12, 4. δείκνυσιν αὐτὴ ἃ] πολλὰ καλὰ δίδωσιν αὐτὴ εἰπεῖν. ‖ 5. ἐπελθεῖν ἐστίν] μέν ἐστι διελθεῖν. ‖ 13, 8. τούτους] τούσδε. ‖ 23, 5. γοῦν] οὖν. ‖ 29, 9. οἰκείους ὑπὲρ] γονέας ἕνεκα. ‖ 30, 2. ὃν] υἱὸν ὄντα ὄν. ‖ 6. ἐκτῖσαι] ἐκτῖναι. ‖ 31, 5. δεῖν] δεῖν [προσήκειν]. ‖ 35, 5. αὐτοὺς καὶ πεφυκότας] καὶ πεφυκότας αὐτούς.

Or. LXI. §. 1, 4. πολλῶν] πολλῶν καὶ καλῶν. ‖ 3, 6. καὶ πρὸς τοὺς] καὶ τούς. ‖ 7. διακεῖσθαι] διακειμένους. ‖ 11, 1. θνητῷ] θνητῶν. ‖ 16, 2. ὑπερβάλοι] ὑποβάλοι. ‖ 17, 5. τούτου] τούτων. ‖ 19, 1. συμπίπτει] συμπίπτειν. ‖ 32, 7. εὐδαιμονῆσαι] ἐνευδαιμονῆσαι. ‖ 37, 1. τῶν] τήν. ‖ 41, 7. γυμνασίᾳ] γυμνασίᾳ τινί. ‖ 47, 4. ἄνευ ταύτης] ἄνευ τέχνης καὶ ταύτης.

Prooem. 1. §. 3, 5. παυσαίμεθ' ἂν] παυσαίμεθα. [λοντὰς.
3. §. 1, 4. παρέχειν ἐθέλοντας] ἐθε-
4. §. 1, 1. ἔστι δὲ] ἔστιν. ‖ 6. ληρεῖν] παραληρεῖν.
5. §. 1, 2. ἀκούσαιτε] ἀκούσητε.
8. §. 2, 5. μεταξὺ] τὰ μεταξύ.
12. §. 1, 1. οὐδέν ἂν] οὐδένα. ‖ 2, 3. παύσεσθαι] παύσασθαι.
14. §. 1, 1. τοίνυν ἂν] ἄν.
23. §. 3, 2. συνοῖσον] τὸ συνοῖσον.
24. §. 1, 7. λέγειν ἀξίως τῶν ὑπαρχόντων] ἔχειν ἀξίως τῶν ὑπαρχόντων λέγειν.
25. §. 1, 3. ἄλλως] καλῶς.
27. §. 2, 2. τὸ τοὺς] τούτους.
28. §. 2, 3. ⟨μὲν ἂν⟩ ἑώρων] ἑώρων.
30. §. 2, 5. ἐπὶ] ἐν.
31. §. 2, 2. συστασιάζειν] στασιάζειν. ‖ 5. καταρᾶσθαι συμβουλεύοντ'] καταράσασθαι συμβουλεύοντι.
34. §. 2, 2. ἄν, ὦ] ὦ. ‖ 5. προκαταλαμβανόντων] καταλαμβανόντων. ‖ 4, 4. τιν' ἂν] τινα.
36. §. 3, 4. ἔσται] ἔσται [χρόνος].
37. §. 1, 4. συγκρύψεται] συγκρύψηται.
40. §. 3, 3. ὀφείλειν] ὀφλεῖν. ‖ 4. δοῦναι] [δοῦναι].
41. §. 5, 2. τούς τ'] τοὺς.
43. §. 2, 4. ἄφυκτον] ἀφύλακτον.
44. §. 2, 1. εἴ μοι] ἐμοὶ. ‖ 2. παρῆλθον] οὔτ' ἂν παρῆλθον. ‖ 3. οὔτ' ἂν εἰ] ὅταν ᾖ.
51. v. 4. τῷ — συμφέροντι] τῶν — συμφερόντων. ‖ 5. ὡς] οἱ.
52. §. 1, 1. ὑπάρχειν] ἔχειν. ‖ 3. πεποίηται] πεποίηνται.
53. §. 3, 4. φησι] φασι. ‖ 4, 4. παρελήλυθα] προελήλυθα. ‖ 5. τοιαύτας] ταύτας τὰς.
55. §. 2, 3. παραζευγνυμένων] παραζευγνύμενοι. ‖ 5. ἂν ἄρχοντες] ἄρχοντες.

Epist. 1. §. 6, 7. καὶ κίνδυνον] κίνδυνον. ‖ 9, 4. μικρὰ] μικρῶς. ‖ 14, 1. ἐλλίπηθ'] ἐλλείπηθ'.

2. §. 11, 4. οὔτε ἐφ' οἷς ἐπολιτεύθην — ἐξελεγχθέντων· οὔτε γὰρ — γεγονώς] οὔτε γὰρ — γεγονώς· οὔτε ἐφ' οἷς ἐπολιτεύθην — ἐξελεγχθέντων. ‖ 13, 6. ὑμᾶς οὐδέν] ὑμῶν οὐδένα. ‖ 9. οὐδ'] οὔτ'. ‖ 14, 2. οὐδαμοῖ] οὐδαμοῦ.

3. §. 11, 4. γ' ἐν] τ' ἐν. ‖ 17, 1. ᾗ περὶ] ἥνπερ. ‖ 19, 6. ἀγνῶσι] ἀγνώμοσι. ‖ 26, 6. πατρίους] πατρῴους. ‖ 38, 2. τὸ περιφανὲς] τἀφανές.

ΠΡΟΣ ΣΠΟΥΔΙΑΝ ΥΠΕΡ ΠΡΟΙΚΟΣ.

1027. 1028.

‖ ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Πολύευκτος, ἀνὴρ Ἀθηναῖος, δύο θυγατέρων πατὴρ γίνεται, ὧν τὴν μὲν νεωτέραν Λεωκράτει πρότερον δίδωσιν, εἶτα Σπουδίᾳ, τὴν πρεσβυτέραν δὲ τῷ πρὸς τὸν Σπουδίαν δικαζομένῳ. ὁ μὲν οὖν Πολύευκτος ἐτελεύτησε ταῖς θυγατράσι καταλιπὼν τὸν κλῆρον ἐξ ἴσου, ὁ δὲ τὴν πρεσβυτέραν γήμας φησὶ τετταράκοντα μνᾶς ὁμολογηθῆναι τὴν προῖκα, οὐ μὴν ὅλην εὐθὺς δοθῆναι, ἀλλὰ δέκα μνῶν ὑπολειφθεισῶν ζῶντά τε ὁμολογεῖν τὸν Πολύευκτον ὀφείλειν αὐτάς, καὶ ὡς ἤμελλε τελευτᾶν, τὴν οἰκίαν τῆς ἄλλης οὐσίας ἐξελεῖν καὶ ταύτην εἰς τὸ χρέος δοῦναι. ὁ δὲ Λεωκράτης ἀξιοῖ καὶ ταύτην εἶναι κοινὴν ὥσπερ καὶ τὰ ἄλλα πάντα. καὶ τὸ μέγιστον τῶν ἀμφισβητημάτων τῶν ἐν τῷ λόγῳ τοῦτο ἐστί. προσεγκαλεῖ δὲ τῷ Σπουδίᾳ καὶ ἕτερα· φησὶ γὰρ αὐτὸν καὶ τοῦ Πολυεύκτου καὶ τῆς πρεσβυτέρας ὀφείλοντα χρήματα μὴ καταβαλεῖν εἰς τὸ μέσον, δέον τοῦτο ποιεῖν. τοῦ δὲ Σπουδίου κἀκεῖνο λέγοντος, ὡς αὐτὸς τριάκοντα μνᾶς προῖκα εἴληφε, μάλιστα μὲν ἐξεῖναι τῷ Πολυεύκτῳ φησὶν εἰ τῇ ἑτέρᾳ τῶν θυγατέρων ἠβούλετο πλείω προῖκα δοῦναι καὶ μὴ τὴν ἴσην ἀμφοτέραις, ἔπειτα δὲ ἐπιδείκνυσιν ὡς καὶ τοῦτο Σπουδίας ψεύδεται· τὰς μὲν γὰρ τριάκοντα μνᾶς αὐτὸν ἐν ἀργύρῳ φησὶ λαβεῖν, τὰς δὲ δέκα ἐν ἱματίοις καὶ χρυσίοις, ἃ καὶ πλείονος ἢ δέκα μνῶν εἶναι ἄξια.*

‖ Ἀδελφὰς ἔχομεν ὦ ἄνδρες δικασταὶ γυναῖκας ἐγὼ καὶ Σπουδίας οὑτοσί, Πολυεύκτου θυγατέρας. ἄπαιδος δ' ἐκείνου τελευτήσαντος ἀρρένων παίδων ἀναγκάζομαι πρὸς τουτονὶ περὶ τῶν καταλειφθέντων δικάζεσθαι. καὶ εἰ μέν, ὦ ἄνδρες δικασταί, μὴ πᾶσαν σπουδὴν καὶ προθυμίαν ἐποιησάμην βουλόμενος διαλύεσθαι καὶ τοῖς φίλοις ἐπιτρέπειν, ἐμαυτὸν ἂν ᾐτιώμην, εἰ μᾶλλον ᾑρούμην δίκας
καὶ πράγματ' ἔχειν ἢ μικρὰ ἐλαττωθεὶς ἀνέχεσθαι· νῦν 2
δ' ὅσῳ πρᾳότερον ἐγὼ καὶ φιλανθρωπότερον τούτῳ διελεγόμην, τοσούτῳ μᾶλλόν μου κατεφρόνει. καὶ νῦν κινδυνεύω μὲν οὐδὲ ὁμοίως τούτῳ πρὸς τουτονὶ τὸν ἀγῶν' ἔχειν, ἀλλ' οὗτος μὲν ῥᾳδίως φέρει πολλάκις εἰθισμένος ἐνταῦθ' εἰς ὑμᾶς εἰσιέναι, ἐγὼ δ' αὐτὸ τοῦτο φοβοῦμαι, μὴ διὰ τὴν ἀπειρίαν οὐ δυνηθῶ δηλῶσαι περὶ τῶν πραγμάτων ὑμῖν· ὅμως δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ προσέχετε τὸν νοῦν.

3 Πολύευκτος γὰρ ἦν τις Θριάσιος, ὃν ἴσως οὐδ᾽ ὑμῶν
τινὲς ἀγνοοῦσιν. οὗτος ὁ Πολύευκτος, ἐπειδὴ οὐκ ἦσαν αὐτῷ
παῖδες ἄρρενες, ποιεῖται Λεωκράτη τὸν ἀδελφὸν τῆς ἑαυ-
τοῦ γυναικός. οὐσῶν δ᾽ αὐτῷ δύο θυγατέρων ἐκ τῆς τοῦ
Λεωκράτους ἀδελφῆς τὴν μὲν πρεσβυτέραν ἐμοὶ δίδωσι,
καὶ τετταράκοντα μνᾶς προῖκα, τὴν δὲ νεωτέραν τῷ Λεω-
4 κράτει. ‖ τούτων δ᾽ οὕτως ἐχόντων, διαφορᾶς γενομένης
τῷ Πολυεύκτῳ πρὸς τὸν Λεωκράτη, περὶ ἧς οὐκ οἶδ᾽ ὅ τι
δεῖ λέγειν, ἀφελόμενος ὁ Πολύευκτος τὴν θυγατέρα δίδωσι
Σπουδίᾳ τούτῳ. μετὰ δὲ ταῦτα ἠγανάκτει ὁ Λεωκράτης,
καὶ δίκας ἐλάγχανε Πολυεύκτῳ καὶ τούτῳ Σπουδίᾳ, καὶ
περὶ πάντων ἠναγκάζοντο εἰς λόγον καθίστασθαι. καὶ τὸ
τελευταῖον διελύθησαν, ἐφ᾽ ᾧτε κομισάμενον τὸν Λεω-
κράτη ἅπερ ἦν εἰς τὴν οὐσίαν εἰσενηνεγμένος μήτε κακό-
νουν εἶναι τῷ Πολυεύκτῳ, τῶν τε πρὸς ἀλλήλους ἐγκλη-
5 μάτων ἀπηλλάχθαι πάντων. τίνος οὖν ἕνεχ᾽ ὑμῖν ὦ ἄνδρες
δικασταὶ ταῦτ᾽ εἶπον; ὅτι τὴν προῖκα οὐ κομισάμενος
ἅπασαν, ἀλλ᾽ ὑπολειφθεισῶν χιλίων δραχμῶν καὶ ὁμολο-
γηθεισῶν ἀπολαβεῖν ὅταν Πολύευκτος ἀποθάνῃ, ἕως μὲν
ὁ Λεωκράτης ἦν κληρονόμος τῶν Πολυεύκτου, πρὸς ἐκεῖ-
νον ἦν μοι τὸ συμβόλαιον, ἐπειδὴ δ᾽ ὅ τε Λεωκράτης ἐξε-
κεχωρήκει ὅ τε Πολύευκτος μοχθηρῶς εἶχε, τηνικαῦτ᾽ ὦ
ἄνδρες δικασταὶ τὴν οἰκίαν ταύτην ἀποτιμῶμαι πρὸς τὰς
δέκα μνᾶς, ἐξ ἧς διακωλύει με τὰς μισθώσεις κομίζεσθαι
6 Σπουδίας. πρῶτον μὲν οὖν ὑμῖν μάρτυρας παρέξομαι
τοὺς παραγενομένους ὅτ᾽ ἐνεγύα μοι Πολύευκτος τὴν θυ-
γατέρα ἐπὶ τετταράκοντα μναῖς· ἔπειθ᾽ ὡς ἔλαττον ταῖς
χιλίαις ἐκομισάμην· ἔτι δ᾽ ὡς ἅπαντα τὸν χρόνον ὀφείλειν
ὡμολόγει μοι Πολύευκτος, καὶ τὸν Λεωκράτη συνέστησε,
καὶ ὡς τελευτῶν διέθετο ὅρους ἐπιστῆσαι χιλίων δρα-
χμῶν ἐμοὶ τῆς προικὸς ἐπὶ τὴν οἰκίαν. καί μοι κάλει τοὺς
μάρτυρας.

‖ ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

7 Ἓν μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοῦτ᾽ ἐστὶν ὧν ἐγ-
καλῶ Σπουδίᾳ. καὶ περὶ τούτου τί ἂν ἔτι μεῖζον ἢ ἰσχυ-
ρότερον ἔχων εἰς ὑμᾶς κατέστην ἢ τὸν νόμον, ὃς οὐκ ἐᾷ
διαρρήδην, ὅσα τις ἀπετίμησεν, εἶναι δίκας, οὔτ᾽ αὐτοῖς

οὔτε τοῖς κληρονόμοις; ἀλλ' ὅμως πρὸς τοῦτο τὸ δίκαιον
ἥκει Σπουδίας ἀμφισβητήσων. ἕτερον δ' ὦ ἄνδρες δι- 8
κασταί, δύο μὲν μνᾶς ἐμαρτύρησεν Ἀριστογένης ἐγκαλεῖν
ἀποθνήσκοντα Πολύευκτον ὀφειλομένας αὑτῷ παρὰ Σπου-
δίᾳ καὶ τὸν τόκον (τοῦτο δ' ἐστὶν οἰκέτου τιμή, ὃν ἐωνη-
μένος οὗτος παρὰ τοῦ Πολυεύκτου τὴν τιμὴν οὔτ' ἐκείνῳ
διέλυσεν οὔτε νῦν εἰς τὸ κοινὸν ἀνενήνοχεν), ὀκτακοσίας
δὲ καὶ χιλίας, περὶ ὧν οὐδ' ἔγωγ' οἶδα τί ποθ' ἕξει δίκαιον
λέγειν. ἦν μὲν γὰρ τὸ ἀργύριον παρὰ τῆς Πολυεύκτου δε- 9
δανεισμένος γυναικός, γράμματα δ' ἔστιν ἃ κατέλιπεν
ἀποθνήσκουσα ἐκείνη, μάρτυρες δ' οἱ τῆς γυναικὸς ἀδελ-
φοὶ παρόντες ἅπασι καὶ καθ' ἕκαστον ἐπερωτῶντες, ἵνα
μηδὲν δυσχερὲς ἡμῖν εἴη πρὸς ἀλλήλους. οὐκοῦν δεινὸν ὦ
ἄνδρες δικασταὶ καὶ σχέτλιον ἐμὲ μὲν ἁπάντων, ὧν ἢ παρὰ
Πολυεύκτου ζῶντος ἦν ἐωνημένος ἢ παρὰ τῆς γυναικὸς
εἶχον αὐτοῦ, καὶ τόκον τιθέναι καὶ τὴν τιμὴν ἀποδεδω-
κέναι, καὶ νῦν ἅπερ ὤφειλον πάντ' εἰς τὸ κοινὸν φέρειν,
τοῦτον δὲ μήτε τῶν νόμων τῶν ὑμετέρων φροντίζειν μήθ' 10
ὧν διέθετο Πολύευκτος μήτε τῶν καταλειφθέντων γραμ-
μάτων μήτε τῶν συνειδότων, ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα ταῦθ'
ἥκειν ἀντιδικήσοντα.

Λαβὲ δή μοι πρῶτον μὲν τὸν νόμον ὃς οὐκ ἐᾷ τῶν ἀπο-
τιμηθέντων || ἔτι δίκην εἶναι πρὸς τοὺς ἔχοντας, ἔπειτα
τὰ γράμματα τὰ καταλειφθέντα καὶ τὴν μαρτυρίαν τὴν
Ἀριστογένους. λέγε.

ΝΟΜΟΣ. ΓΡΑΜΜΑΤΑ. ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Βούλομαι τοίνυν, ὦ ἄνδρες δικασταί, καὶ περὶ τῶν ἄλ- 11
λων ὧν ἐγκαλῶ καθ' ἕκαστον ὑμᾶς διδάξαι. φιάλην μὲν
γὰρ λαβόντες παρὰ τῆς Πολυεύκτου γυναικὸς καὶ θέντες
ἐνέχυρα μετὰ χρυσίων οὐκ ἀνενηνόχασι κεκομισμένοι ταύ-
την, ὡς ὑμῖν Δημόφιλος ὁ θέμενος μαρτυρήσει· σκηνὴν
δ' ἣν ἔχουσιν, οὐδὲ γὰρ ταύτην λαβόντες ἀναφέρουσιν.
ἄλλα δὲ πόσα τοιαῦτα; τὸ δὲ τελευταῖον εἰσενεγκούσης
τῆς ἐμῆς γυναικὸς εἰς τὰ νεμέσεια τῷ πατρὶ μνᾶν ἀργυ-
ρίου καὶ προαναλωσάσης, οὐδὲ ταύτης ἀξιοῖ συμβαλέσθαι
τὸ μέρος, ἀλλ' ἃ μὲν ἔχει προλαβών, τῶν δὲ τὰ μέρη κο-
μίζεται, τὰ δ' οὕτω φανερῶς οὐκ ἀποδίδωσιν. ἵνα τοίνυν

*μηδὲ ταῦτ' ᾖ παραλελειμμένα, λαβέ μοι πάντων αὐτῶν
τὰς μαρτυρίας.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

12 *Ἴσως τοίνυν, ὦ ἄνδρες δικασταί, πρὸς μὲν ταῦτ' οὐδὲν
ἀντερεῖ Σπουδίας· οὐδὲ γὰρ ἕξει, καίπερ δεινὸς ὤν· αἰτιά-
σεται δὲ Πολύευκτον καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ φήσει
πάντα ταῦτα ὑπ' ἐμοῦ πεισθέντας καταχαρίσασθαι, καὶ
νὴ Δί' ἕτερα πολλὰ καὶ μεγάλα βλάπτεσθαι, καὶ δίκην
εἰληχέναι μοι· ταῦτα γὰρ καὶ πρὸς τῷ διαιτητῇ λέγειν*
13 *ἐπεχείρει. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρῶτον μὲν οὐχ
ἡγοῦμαι δικαίαν εἶναι τὴν ἀπολογίαν τὴν τοιαύτην, οὐδὲ
προσήκειν, ὅταν τις φανερῶς ‖ ἐξελέγχηται, μεταστρέψαντα
τὰς αἰτίας ἐγκαλεῖν καὶ διαβάλλειν· ἀλλ' ἐκείνων μέν, εἴ-
περ ἀδικεῖται, δῆλον ὅτι δίκην λήψεται, τούτων δὲ δώσει·
πῶς γὰρ ἂν ἐγὼ νῦν ταῖς τούτων διαβολαῖς ἀντιδικοίην,*
14 *ἀφεὶς ὑπὲρ ὧν ὑμεῖς μέλλετε τὴν ψῆφον οἴσειν; ἔπειτα
θαυμάζω τί δή ποτε, εἴπερ ἀληθῆ καὶ δίκαια εἶχεν ἐγκα-
λεῖν, βουλομένων ἡμᾶς τῶν φίλων διαλύειν καὶ πολλῶν
λόγων γενομένων οὐχ οἷός τ' ἦν ἐμμένειν οἷς ἐκεῖνοι γνοῖεν.
καίτοι τίνες ἂν ἄμεινον καὶ τῶν τούτου καὶ τῶν ἐμῶν
ἐγκλημάτων τὰ μηδὲν ὄντα ἐξήλεγξαν τῶν παραγεγενημέ-
νων ἅπασι τούτοις, τῶν εἰδότων οὐδὲν ἧττον ἡμῶν τὰ*
15 *γενόμενα, τῶν κοινῶν ἀμφοτέροις καὶ φίλων ὄντων; ἀλλὰ
δῆλον ὅτι τούτῳ ταῦτ' οὐκ ἐλυσιτέλει, φανερῶς ὑπ' αὐτῶν
ἐξελεγχομένῳ τοῦτον τὸν τρόπον λαβεῖν διάλυσιν· μὴ γὰρ
οἴεσθ', ὦ ἄνδρες δικασταί, τοὺς εἰδότας ἅπαντα ταῦτα
νυνὶ μὲν ὑποκινδύνους αὐτοὺς καθιστάντας ἐμοὶ μαρτυ-
ρεῖν, τότε δ' οὐδ' ὀμόσαντας ἄλλο τι γνῶναι περὶ αὐτῶν.
οὐ μὴν ἀλλ' εἰ καὶ μηδὲν τούτων ὑπῆρχεν ἡμῖν, οὐδ' ὣς
χαλεπόν ἐστι γνῶναι περὶ αὐτῶν ὁπότεροι τἀληθῆ λέ-*
16 *γουσιν. περὶ μὲν γὰρ τῆς οἰκίας, εἰ φησὶν ὑπ' ἐμοῦ πει-
σθέντα Πολύευκτον προστάξαι τοὺς ὅρους στῆσαι τῶν
χιλίων, ἀλλ' οὐ δή που καὶ τοὺς μάρτυρας ἔπεισα ὦ Σπου-
δία ψευδῆ μοι μαρτυρεῖν, τοὺς παραγενομένους ὅτ' ἐνεγύα
μοι, τοὺς εἰδότας ἔλαττόν με κομισάμενον, τοὺς ἀκούον-
τας ὁμολογοῦντος ὀφείλειν ἐμοί, συστήσαντος ἀποδοῦναι,
τοὺς τὸ τελευταῖον ταῖς διαθήκαις παραγενομένους· τού-*

τοις γὰρ ἅπασιν οὐκέτι καταχαρίσασθαι ταῦθ᾽ ὑπῆρχεν, ‖ ἀλλὰ κινδυνεύειν τὴν ψευδομαρτυρίαν, εἰ μηδὲν τῶν γενομένων μαρτυροῖεν. ἀφῶμεν τοίνυν τοῦτ᾽ ἤδη. πρὸς ἐκεῖνο 17
δὲ τί ἂν λέγοις; ἀκριβῶς γὰρ ὅπως τούτους διδάξεις· εἰ δὲ μή, πάντες ὑμεῖς ἀπαιτεῖτ᾽ αὐτόν. ὅτε γὰρ Πολύευκτος διετίθετο ταῦτα, παρῆν μὲν ἡ τούτου γυνή, καὶ δῆλον ὅτι τὰς τοῦ πατρὸς διαθήκας ἀπήγγειλεν, ἄλλως τ᾽ εἰ καὶ μηδὲν ἴσον εἶχεν ἀλλ᾽ ἐν ἅπασιν ἠλαττοῦτο, παρεκλήθη δ᾽ αὐτὸς οὗτος, ὥστε μηδὲ τοῦτ᾽ εἶναι λέγειν ὡς λάθρᾳ καὶ ἰδίᾳ, κρυψάμενοι τούτους, ἐπράττομεν ταῦτα· παρακαλούμενος γὰρ ἔφησεν αὐτὸς μὲν ἀσχολίαν ἄγειν, τὴν δὲ γυναῖκ᾽ ἐξαρκεῖν τὴν αὐτοῦ παροῦσαν. τί ἔτι λοιπόν; 18
ἀπαγγείλαντος Ἀριστογένους αὐτῷ περὶ ἁπάντων τούτων ἀκριβῶς, οὐδ᾽ ἐνταῦθ᾽ οὐδένα φαίνεται λόγον ποιησάμενος, ἀλλ᾽ ἐπιβιοῦντος μετὰ ταῦτα τοῦ Πολυεύκτου πλεῖον ἢ πένθ᾽ ἡμέρας οὔτ᾽ ἠγανάκτησεν εἰσελθὼν οὔτ᾽ ἀντεῖπεν οὐδέν, οὐδ᾽ ἡ γυνή, παροῦσα ἐξ ἀρχῆς ἅπασι τούτοις. ὥστ᾽ οὐκέτι Πολύευκτος αὐτὰ πεισθεὶς ἐμοὶ κατεχαρίζετο, ὡς ἔοικεν, ἀλλ᾽ ὑμεῖς αὐτοί. ταῦτα τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ μεμνημένοι σαφῶς, ἐὰν ἄρα τι περὶ αὐτῶν ἐγχειρῇ νυνὶ διαβάλλειν, ἀντίθετε. πρῶτον δ᾽ ἵν᾽ εἰδῆτ᾽ ἀκριβῶς ὅτι τοῦτον τὸν τρόπον ἔχει, τῶν μαρτύρων ἀκούσατε. λέγε.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Οὐκοῦν, ὦ ἄνδρες δικασταί, τῶν μὲν χιλίων δραχμῶν 19
ὡς δικαίως καὶ προσοφειλομένων ἀπετίμησέ μοι τὴν οἰκίαν ὁ Πολύευκτος, αὐτὸς οὗτός μοι μαρτυρεῖ ‖ καὶ ἡ τούτου γυνὴ πρὸς τοῖς ἄλλοις τούτοις τοῖς μεμαρτυρηκόσι, συγχωροῦντες τότε καὶ οὔτε πρὸς τὸν Πολύευκτον ἀντειπόντες ἐπιβιοῦντα τοσαύτας ἡμέρας οὔτε πρὸς τὸν Ἀριστογένην, ἐπεὶ τάχιστ᾽ ἤκουσαν. ἀλλὰ μὴν εἴγε δικαίως ἀπετιμήθη, μεμνημένοις τοῦ νόμου κατὰ μὲν τοῦθ᾽ ὑμῖν οὐκ ἔστιν ἀποψηφίσασθαι Σπουδίου. σκέψασθε δὲ δὴ 20
καὶ περὶ τῶν εἴκοσι μνῶν, ἃς οὐκ ἐπαναφέρει· καὶ γὰρ ἐνταυθοῖ πάλιν αὐτὸς οὗτός μοι μέγιστος ἔσται μάρτυς, οὐ λόγῳ μὰ Δία, ὥσπερ νῦν, ἀντιδικῶν (τουτὶ μὲν γὰρ οὐδὲν τεκμήριόν ἐστιν) ἀλλ᾽ ἔργῳ περιφανεῖ. τί ποιῶν ὦ ἄνδρες δικασταί; τούτῳ γὰρ ἤδη προσέχετε τὸν νοῦν, ἵν᾽

*ἐὰν ἄρα τολμᾷ τι καὶ περὶ τῆς μητρὸς τῶν γυναικῶν
βλασφημεῖν ἢ περὶ τῶν γραμμάτων, εἰδότας ὑμᾶς μὴ
21 δύνηται λέγων ἐξαπατᾶν. ταυτὶ γὰρ τὰ γράμματα κατέ-
λιπε μὲν ἡ Πολυεύκτου γυνή, καθάπερ εἶπον ὀλίγῳ πρό-
τερον, ὁμολογουμένων δὲ τῶν σημείων καὶ παρὰ τῆς τού-
*του γυναικὸς καὶ παρὰ τῆς ἐμῆς, ἀμφότεροι παρόντες
ἀνοίξαντες ἀντίγραφά τ' ἐλάβομεν, κἀκεῖνα πάλιν κατα-
22 σημηνάμενοι παρ' Ἀριστογένει κατεθέμεθα. τοῦτο δή,
τοῦτο ὦ ἄνδρες δικασταὶ μάθετε πρὸς θεῶν. ἐνῆσαν μὲν
γὰρ αἱ δύο μναῖ, ἡ τιμὴ τοῦ οἰκέτου, καὶ οὐ μόνον ὁ Πο-
λύευκτος ἀποθνήσκων ταῦτα ἐγκεκλήκει, ἐνῆσαν δ' αἱ
χίλιαι καὶ ὀκτακόσιαι δραχμαί. ταῦτα δ' ἀναγνούς, εἰ μὲν
αὐτῷ μηδὲν προσῆκε μηδ' ἀληθῆ τὰ γεγραμμένα ἦν, τί
δή ποτ' οὐκ εὐθὺς ἠγανάκτει περὶ αὐτῶν; τί δὲ συνεση-
μαίνετο πάλιν τὰ μηδὲν ὑγιὲς ὄντα μηδ' ἀληθῆ γράμ-
ματα; ‖ τουτὶ γὰρ οὐδ' ἂν εἷς δή που μὴ πᾶσιν ὁμολογῶν
23 τοῖς γεγραμμένοις ποιήσειεν. ἀλλὰ μὴν ὦ ἄνδρες δικα-
σταὶ τοῦτό γε δεινὸν δή που, εἰ πρὸς τὰ συγκεχωρημένα
ὑπ' αὐτῶν τούτων ἐξέσται νῦν ἀντιλέγειν, καὶ μηδὲν ση-
μεῖον ὑμῖν ἔσται διότι πάντες ἄνθρωποι πρὸς τὰ μήτ'
ἀληθῆ μήτε δίκαια τῶν ἐγκλημάτων οὐ κατασιωπᾶν ἀλλὰ
παραχρῆμα ἀμφισβητεῖν εἰώθαμεν, μὴ ποιήσαντες δὲ
ταῦτα, ἂν ὕστερον ἀντιδικῶσι, πονηροὶ καὶ συκοφάνται
24 δοκοῦσιν εἶναι. ταῦτα μὲν τοίνυν Σπουδίας οὐδὲν ἧττον
ἐμοῦ γιγνώσκων, ἀλλ' οἶμαι καὶ ἀκριβέστερον ὅσῳ καὶ
πυκνότερον ἐνταυθοῖ παρέρχεται, πᾶσιν ἐναντία τοῖς πε-
πραγμένοις ἑαυτῷ λέγων οὐκ αἰσχύνεται. καίτοι πολλάκις
ὑμεῖς ἓν μόνον σκευώρημα συνιδόντες τούτῳ κατὰ τῶν
ἄλλων τῶν ἐγκαλουμένων ἐχρήσασθε τεκμηρίῳ. τούτῳ δ'
ἅπανθ' ὑφ' αὐτοῦ συμβέβηκεν ἐξελέγχεσθαι. καί μοι λαβὲ
τὴν μαρτυρίαν ὡς ὡμολογεῖτό τε τότε τὰ σημεῖα τῶν
γραμμάτων ὑπὸ τῆς τούτου γυναικός, καὶ νῦν ὑπὸ Σπου-
δίου κατασημανθέντα κεῖται.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

25 *Τούτων τοίνυν οὕτω σαφῶς ἀποδεδειγμένων ἡγοῦμαι
μὲν οὐδὲν ἔτι δεῖν πλείω λέγειν· ὁπότε γὰρ καὶ νόμους
ἔχω παρέχεσθαι καὶ μάρτυρας ἁπάντων τῶν εἰρημένων*

καὶ τὸν ἀντίδικον αὐτὸν ὁμολογοῦντά μοι, τί δεῖ μακρῶν
ἔτι λόγων; ὅμως δ᾽ ἂν ἄρα περὶ τῆς προικὸς ἀγανακτῇ
καὶ φάσκῃ πλεονεκτεῖσθαι ταῖς χιλίαις δραχμαῖς, ψεύ-
σεται· οὐδὲν γὰρ ἔχων ἔλαττον ἀμφισβητεῖ πρὸς αὐτάς,
ἀλλὰ πλεῖον, ὡς αὐτίκ᾽ ὑμῖν ἔσται φανερόν. οὐ μὴν ἀλλ᾽ 26
εἰ πάντα ταῦθ᾽ ὡς ‖ ἀληθῶς συνέβη, οὐ δή που δίκαιον
ἐμὲ τὴν ὁμολογηθεῖσαν προῖκα μὴ λαβεῖν, εἴπερ ὄφελός
τι τῶν νόμων ἐστίν, οὐδέ γε τὸν Πολύευκτον, εἰ τῶν θυ-
γατέρων ἐβούλετο τῇ μὲν ἐλάττω τῇ δὲ πλείω προῖκ᾽ ἐπι-
δοῦναι, διακωλυθῆναι νῦν· σοὶ γὰρ αὐτῷ μὴ λαμβάνειν
ἐξῆν, ὦ Σπουδία, μὴ προστιθεμένων ὥσπερ ἐμοὶ τῶν
χιλίων. ἀλλ᾽ οὐδὲν ἔλαττον εἶχες, ὡς ἐγὼ διδάξω. πρῶ-
τον δ᾽ ἐφ᾽ οἷς ἐξέδοτο, τούτων λαβέ μοι τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Πῶς οὖν οὐδὲν ἔλαττον ἔχει, φήσει τις, εἰ τούτῳ μὲν 27
ἐν ταῖς τετταράκοντα μναῖς ἐνετιμᾶτο τὰ χρυσία καὶ τὰ
ἱμάτια τῶν χιλίων, ἐμοὶ δ᾽ αἱ δέκα μναῖ χωρὶς προσαπε-
δίδοντο; τοῦτο δὴ καὶ μέλλω λέγειν. ὁ μὲν γὰρ Σπουδίας,
ὦ ἄνδρες δικασταί, παρὰ τοῦ Λεωκράτους ἔχουσαν τὰ χρυ-
σία καὶ τὰ ἱμάτια τὴν γυναῖκ᾽ ἔλαβεν, ὧν ὁ Πολύευκτος
προσαπετίμησε τῷ Λεωκράτει πλεῖον ἢ χιλίας· ἐγὼ δ᾽,
ἅπερ ἔπεμψέ μοι χωρὶς τῆς προικός, ὅσ᾽ ἔχω μόνον πρὸς
τὰ τούτῳ δοθέντα ἐὰν τιθῇ τις, εὑρήσει παραπλήσια,
χωρὶς τῶν εἰς τὰς χιλίας ἀποτιμηθέντων. ὥστ᾽ εἰκότως 28
ἐν ταῖς τετταράκοντα μναῖς ἐνετιμᾶτο ταῦθ᾽ ἅπερ ἀποτε-
τίκει τῷ Λεωκράτει, καὶ πλείω τῶν ἐμοὶ δοθέντων ἦν.
καί μοι λαβὲ πρῶτον μὲν τὴν ἀπογραφὴν ταύτην καὶ λέγε
αὐτοῖς ἅπερ ἑκάτερος ἡμῶν ἔχει, μετὰ δὲ ταῦτα τὴν τῶν
διαιτητῶν μαρτυρίαν, ἵν᾽ ἴδωσιν ὅτι καὶ πολλῷ πλείω
χρήματ᾽ ἔχει, καὶ περὶ τούτων ὁ Λεωκράτης ἐνεκάλει, καὶ
κατὰ ταῦτα ἔγνωσαν οἱ διαιτηταί. λέγε.

‖ΑΠΟΓΡΑΦΗ. ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Ἆρ᾽ οὖν οὐ φανερῶς οὗτος μὲν ἔχει τετταράκοντα μνᾶς 29
πάλαι τὴν προῖκα, ἐγὼ δὲ τὰς μὲν τριάκοντα καθάπερ
οὑτοσί, τὰς δὲ χιλίας οὐ μόνον ὕστερον οὐκ ἐκομισάμην,
ἀλλὰ καὶ νυνὶ κινδυνεύω περὶ αὐτῶν ὡς ἀδίκως ἔχων; διὰ
ταῦτα μέντοι Σπουδίας, ὦ ἄνδρες δικασταί, τοῖς φίλοις

οὐκ ἐβούλετο ἐπιτρέψας ἀπαλλαγῆναι τῶν πρὸς ἐμὲ ἐγκλημάτων, ὅτι συνέβαινεν αὐτῷ πάντα ταῦτ' ἐξελέγχεσθαι· πᾶσι γὰρ τούτοις παραγεγενημένοι καὶ σαφῶς εἰδότες οὐκ ἐπέτρεπον αὐτῷ λέγειν ὅ τι τύχοι· παρ' ὑμῖν δ' οἴεται ψευδόμενος ἐμοῦ τἀληθῆ λέγοντος περιγενήσεσθαι. καίτοι περὶ ὧν ἐγκαλῶ, πάνθ' ὑμῖν ἀπέδειξα σαφῶς, ὡς οἷός τ' ἦν αὐτός. τοὺς δ' εἰδότας οὗτος ἔφευγεν, οὐχ ἡγούμενος εἶναι παραλογίσασθαι. μὴ τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ μηδ' ὑμεῖς ἐπιτρέπετε αὐτῷ ψεύδεσθαι καὶ διαβάλλειν, μεμνημένοι τῶν εἰρημένων· ἴστε γὰρ πάνθ' ὡς ἐγένετο, πλὴν εἴ τι παρέλιπον ἐγὼ πρὸς ὀλίγον ὕδωρ ἀναγκαζόμενος λέγειν.

ΠΡΟΣ ΦΑΙΝΙΠΠΟΝ ΠΕΡΙ ΑΝΤΙΔΟΣΕΩΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ὁ μὲν λόγος οὐκ ἀναφέρεται παρά τινων εἰς τὸν Δημοσθένην, ὑπόθεσιν δὲ ἔχει ταύτην. ἦν σύνταγμα παρὰ τοῖς Ἀθηναίοις τριακοσίων ἀνδρῶν κατὰ τὸν πλοῦτον ἐξειλεγμένων, οἷς ἀνέκειντο τῶν || λειτουργιῶν αἱ μείζονες, νόμος δὲ ἐδίδου τῷ πεπονηκότι τούτων ὑπεξελθεῖν ἐκ τοῦ συντάγματος, εἴ τινα ἑαυτοῦ πλουσιώτερον σχολάζοντα ἐπεδείκνυε. καὶ εἰ μὲν ὁ προβληθεὶς ὡμολόγει πλουσιώτερος εἶναι, εἰς τοὺς τριακοσίους ἀντικαθίστατο, εἰ δὲ ἠρνεῖτο, τὴν οὐσίαν ἀντεδίδοσαν. νῦν τοίνυν εἷς τῶν τριακοσίων πεπονηκέναι λέγων καὶ εἶναι πένης ἐπὶ Φαίνιππον ἐλήλυθε, καὶ τῆς οὐσίας εἰς ἀντίδοσιν ἥκουσι. περὶ δὲ τούτων ἐγκαλεῖ τῷ Φαινίππῳ ὡς οὔτε τὴν ἀπογραφὴν τῆς οὐσίας δεδωκότι κατὰ τὸν προσήκοντα χρόνον ἀλλ' ὕστερον πολλῷ, τά τε σημεῖα τῶν οἰκημάτων ἀφῃρηκότι ὑπὲρ τοῦ διαφορῆσαι τῶν ἔνδον τινά, καὶ ψευδῶς ὀφείλειν πολλὰ πλαττομένῳ.*

Πολλὰ κἀγαθὰ γένοιτ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρῶτον μὲν ὑμῖν ἅπασιν, ἔπειτα δὲ καὶ Σόλωνι τῷ νομοθετήσαντι τὸν περὶ τῶν ἀντιδόσεων νόμον. εἰ μὴ γὰρ οὗτος ἡμῖν σαφῶς διώρισε τί πρῶτον δεῖ ποιεῖν τοὺς ἀντιδεδωκότας καὶ τί δεύτερον καὶ τἆλλα δ' ἐφεξῆς, οὐκ οἶδ' ὅποι προῆλθεν ἂν ἡ τουτουὶ Φαινίππου τόλμα, ὅπου γε καὶ νῦν ἅπαντα ταῦτα προλέγοντος ἡμῖν τοῦ νόμου, ὅμως οὐδὲν || φροντίσας τῶν ἐν αὐτῷ γεγραμμένων δικαίων, ἀντὶ μὲν τοῦ τριῶν ἡμερῶν ἀφ' ἧς ὤμοσε τὴν ἀπόφασιν δοῦναί μοι τῆς οὐσίας τῆς αὑτοῦ κατὰ τὸν νόμον, ἢ εἰ μὴ τότ' ἐβούλετο, τῇ γ' ἕκτῃ δοῦναι τοῦ βοηδρομιῶνος μηνός, ἣν δεηθείς μου ἔθετο καὶ ἐν ᾗ ὡμολόγησε δώσειν τὴν ἀπόφασιν,

οὐδέτερα τούτων ἐποίησεν, ἀλλὰ καταφρονήσας ἀμφοτέ- 2
ρων, καὶ ἡμῶν καὶ τοῦ νόμου, δευτέρῳ μηνὶ ἔδωκε, δυοῖν
ἢ τρισὶν ἡμέραις πρότερον τῆς εἰς τὸ δικαστήριον εἰσό-
δου, τὸν δ' ἄλλον ἅπαντ' ἐκποδὼν ἦν χρόνον· ἀντὶ δὲ τοῦ
τὰ σημεῖα ἐᾶν τῶν οἰκημάτων ἃ παρεσημηνάμην, ἐλθὼν
εἰς ἀγρὸν ἀνέῳξε καὶ τὰς κριθὰς ἐξεφόρησε καὶ τἆλλα,
ὥσπερ ἐξουσίαν δεδωκότος αὐτῷ τοῦ νόμου ποιεῖν ὅ τι
ἂν βούληται καὶ μὴ ὡς δίκαιον ἐστίν. ἐγὼ δ', ὦ ἄνδρες 3
δικασταί, ἥδιστα μὲν ἂν ἐμαυτὸν εἶδον εὐτυχοῦντα ὥσπερ
πρότερον τῇ οὐσίᾳ καὶ μένοντα ἐν τοῖς τριακοσίοις· ἐπειδὴ
δὲ τὰ μὲν τῆς κοινῆς ἀτυχίας μετασχὼν τοῖς ἄλλοις τοῖς
ἐργαζομένοις ἐν τοῖς ἔργοις, τὰ δ' ἰδίᾳ μεγάλαις περι-
πεπτωκὼς ζημίαις ἀπολώλεκα τὴν οὐσίαν, καὶ τὸ τελευ-
ταῖον νυνί με δεῖ τῇ πόλει τρία τάλαντα καταθεῖναι,
τάλαντον κατὰ τὴν μερίδα (μετέσχον γάρ, ὡς μή ποτ'
ὤφελον, κἀγὼ τοῦ δημευθέντος μετάλλου), ἀναγκαῖόν
ἐστιν εἰς τὴν ἐμὴν τάξιν πειρᾶσθαι καθιστάναι τὸν οὐ
μόνον ἐμοῦ νῦν ὄντα πλουσιώτερον ἀλλὰ καὶ πρότερον,
καὶ οὐδεπώποτ' οὐδὲν λελειτουργηκότα ὑμῖν οὐδ' εἰσενη-
νοχότα τῇ πόλει. δέομαι οὖν ὑμῶν ἁπάντων, ὦ ἄνδρες 4
δικασταί, ἐὰν ἐπιδεικνύω Φαίνιππον τουτονὶ καὶ παρα-
βεβηκότα τὰ ἐν ‖ τοῖς νόμοις δίκαια καὶ πλουσιώτερον
ὄντα ἐμαυτοῦ, βοηθῆσαί μοι καὶ τοῦτον εἰς τοὺς τριακο-
σίους ἀντ' ἐμοῦ καταστῆσαι· διὰ τοῦτο γὰρ οἱ νόμοι καθ'
ἕκαστον ἔτος ποιοῦσι τὰς ἀντιδόσεις, ὅτι τὸ διευτυχεῖν
συνεχῶς τῇ οὐσίᾳ οὐ πολλοῖς τῶν πολιτῶν διαμένειν εἴ-
θισται. ἐξ ἀρχῆς δ' ὑμῖν τὰ γενόμενα περὶ τὴν ἀντίδοσιν
διηγήσομαι.

Τοῦ γὰρ μεταγειτνιῶνος, ὦ ἄνδρες δικασταί, τῇ δευ- 5
τέρᾳ ἱσταμένου ἐποίουν οἱ στρατηγοὶ τοῖς τριακοσίοις
τὰς ἀντιδόσεις. ἐν ταύταις ἐκάλεσα κατὰ τὸν νόμον Φαί-
νιππον τουτονί. καλέσας δὲ καὶ παραλαβὼν τῶν οἰκείων
τινὰς καὶ φίλων ἐπορευόμην Κυθηράδε εἰς τὴν ἐσχατιὰν
αὐτοῦ. καὶ πρῶτον μὲν περιαγαγὼν τὴν ἐσχατιὰν πλέον
ἢ σταδίων οὖσαν τετταράκοντα κύκλῳ ἔδειξα καὶ διεμαρ-
τυράμην ἐναντίον Φαινίππου ὅτι οὐδεὶς ὅρος ἔπεστιν ἐπὶ
τῇ ἐσχατιᾷ· εἰ δέ φησιν, εἰπεῖν ἐκέλευον αὐτὸν ἤδη καὶ

*δεῖξαι, ὅπως μὴ ὕστερον ἐνταῦθα χρέως γενόμενον ἐπὶ
6 τῷ χωρίῳ ἀναφανήσεται. ἔπειτα παρεσημηνάμην τὰ οἰ-
κήματα, καὶ τοῦτον ἐκέλευον εἰς τἀμὰ βαδίζειν. μετὰ δὲ
ταῦτα ἠρόμην ὅπου ὁ σῖτος εἴη ὁ ἀπηλοημένος· ἦσαν γὰρ
νὴ τοὺς θεοὺς καὶ τὰς θεάς, ὦ ἄνδρες δικασταί, δύο ἅλως
αὐτόθι, μικροῦ πλέθρου ἑκατέρα. ὃ δὲ ἀπεκρίνατό μοι
ὅτι ὃ μὲν πεπραμένος εἴη τοῦ σίτου ὃ δ' ἔνδον ἀποκεί-
7 μενος. τέλος δ', ἵνα μὴ μακρολογῶ, καταστήσας φυλάτ-
τειν ἔνδον τινάς, καὶ νὴ Δί' ἀπειπὼν [καὶ κωλύσας] τοὺς
ὀνηλάτας μὴ ἐξάγειν τὴν ὕλην ἐκ τῆς ἐσχατιᾶς (πρὸς γὰρ
τῇ ἄλλῃ οὐσίᾳ ‖ τῇ Φαινίππου, ὦ ἄνδρες δικασταί, καὶ
αὕτη πρόσοδος μεγάλη ἐστὶν αὐτῷ· ἓξ ὄνοι δι' ἐνιαυτοῦ
ὑλαγωγοῦσι, καὶ λαμβάνει οὗτος πλέον ἢ δώδεκα δραχμὰς
τῆς ἡμέρας) τούτοις ἀπειπών, ὥσπερ λέγω, τῆς ὕλης μὴ
ἅπτεσθαι, καὶ ἐπαγγείλας ἐπὶ τὰ ἱερὰ Φαινίππῳ κατὰ
τὸν νόμον ἀπαντᾶν, ᾠχόμην ἀπιὼν εἰς ἄστυ.*

8 *Πρῶτον μὲν οὖν τῶν εἰρημένων τὰς μαρτυρίας ὑμῖν
παρέξομαι, ἔπειτα καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἀκούσεσθε πάσας
τὰς ἀληθείας· τουτονὶ γάρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, Φαίνιπ-
πον εὑρήσετε εὐθὺς ἀπὸ τῆς πρώτης ἡμέρας ἀρξάμενον
τοῦ μηδὲν δίκαιον ποιεῖν. παρεσημηνάμην τὰ οἰκήματα,
τοῦ νόμου μοι δεδωκότος· οὗτος ἀνέῳξεν. καὶ τὸ μὲν
ἀφελεῖν τὸ σημεῖον ὁμολογεῖ, τὸ δ' ἀνοῖξαι τὴν θύραν
οὐχ ὁμολογεῖ, ὥσπερ ἄλλου τινὸς ἕνεκα τὰ σημεῖα ἀφαι-
9 ροῦντος ἢ τοῦ τὰς θύρας ἀνοῖξαι. ἔπειτα ἀπεῖπον τὴν
ὕλην μὴ ἐξάγειν· ἐξῆγεν οὗτος ἁπάσας τὰς ἡμέρας, πλὴν
ἐκείνης ἐν ᾗ ἐγὼ ἀπεῖπον. χρέως οὐδ' ὁτιοῦν ὠφείλετο
ἐπὶ τῇ ἐσχατιᾷ· νῦν οὗτος ἀποφαίνει πολλά. ἁπλῶς
ποιεῖ ὅ τι ἂν βούληται, οὐχ ὅ τι ἂν οἱ νόμοι κελεύωσιν.
λέγε τὰς μαρτυρίας, πρῶτον μὲν τὰς περὶ τοῦ μετάλλου,
ἔπειτα καὶ τὰς ἄλλας.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

10 *Ἃ μὲν τοίνυν εὐθὺς τῇ πρώτῃ ἡμέρᾳ μετὰ τὰς ἀντι-
δόσεις ἤρξατό με Φαίνιππος ἀδικεῖν, ἀκηκόατε ὦ ἄνδρες
Ἀθηναῖοι καὶ ἐμοῦ καὶ τῶν μαρτύρων· τὰ δὲ μετὰ ταῦτα
γεγενημένα οὐκέτ' εἰς ἐμὲ μόνον αὐτῷ ἡμάρτηται, ἀλλὰ
καὶ εἰς τοὺς νόμους, ὑπὲρ ὧν ὑμῖν ἅπασι σπουδαστέον*

ἐστίν. ‖ ὀμόσας γὰρ τῇ ἑνδεκάτῃ τοῦ βοηδρομιῶνος μηνὸς 11
ἀποφαίνειν ὀρθῶς καὶ δικαίως τὴν οὐσίαν, καὶ τοῦ νόμου διαρρήδην λέγοντος τριῶν ἡμερῶν ἀφ᾽ ἧς ἂν ὀμόσῃ διδόναι τὴν ἀπόφασιν, ἐδεῖτό μου προσελθὼν ἐπὶ τῷ δικαστηρίῳ μετὰ Πολυεύκτου τοῦ Κριωέως καὶ ἑτέρων τινῶν πρῶτον μὲν περὶ διαλύσεως συνελθεῖν ἑαυτῷ· πάντα γάρ μοι τὰ δίκαια ποιήσειν· ἔπειτα τὴν ἀπόφασιν τῆς οὐσίας ἀναβαλέσθαι μὴ πολλὰς ἡμέρας· οὐ γὰρ ἀγνοεῖν μου τὰ πράγματα. ἡγησάμενος δ᾽ ἐγὼ καὶ μετρίου καὶ ἀπράγμο- 12
νος εἶναι πολίτου μὴ εὐθὺς ἐπὶ κεφαλὴν εἰς τὸ δικαστήριον βαδίζειν, ἐπείσθην (τί γὰρ δεῖ μακρολογεῖν;) τὴν μὲν σύνοδον τὴν περὶ τῶν διαλύσεων τῇ ὀγδόῃ φθίνοντος τοῦ βοηδρομιῶνος μηνὸς ὁμολογῆσαι ποιήσασθαι, τὴν δ᾽ ἀπόφασιν τῆς οὐσίας τῇ ἕκτῃ φθίνοντος. τυχὼν δὲ τούτων ἀμφοτέρων παρ᾽ ἐμοῦ Φαίνιππος οὐδ᾽ εἰς ἑτέραν τῶν ἡμερῶν ἀπήντησεν, ἀλλ᾽ ἀνθ᾽ ἑνὸς δύο νόμους ἥκει πρὸς ὑμᾶς παραβεβηκώς, ἕνα μὲν τὸν κελεύοντα τριῶν ἡμερῶν ἀφ᾽ ἧς ἂν ὀμόσῃ τὴν οὐσίαν ἀποφαίνειν, ἕτερον δὲ τὸν κελεύοντα κυρίας εἶναι τὰς πρὸς ἀλλήλους ὁμολογίας, ἃς ἂν ἐναντίον μαρτύρων ποιήσωνται. καίτοι ὦ ἄνδρες δικασταὶ 13
τίς οὐκ οἶδεν ὑμῶν ὅτι ὁμοίως ἥ τε ἐν τῷ νόμῳ γεγραμμένη κυρία ἐστὶν ἡμέρα καὶ ἡ ὑπὸ τῶν ἀντιδίκων συγχωρηθεῖσα; πολλάκις γὰρ ἔν τε τοῖς νόμοις γεγραμμένης τριακοστῆς ἡμέρας ἑτέραν ἡμῖν αὐτοῖς συγχωρήσαντες ἐθέμεθα, παρά τε ταῖς ἀρχαῖς ἁπάσαις καὶ δίκας καὶ κρίσεις ἀναβάλλονται ‖ τοῖς ἀντιδίκοις οἱ ἄρχοντες συγχωρησάντων ἐκείνων ἀλλήλοις· ὧν εἴ τις ἄκυρον ἡγήσαιτο δεῖν εἶναι τὴν πρὸς ἀλλήλους ὁμολογίαν, μισήσαιτ᾽ ἂν αὐτὸν ὡς ὑπερβάλλοντα συκοφαντίᾳ. Φαίνιππος τοίνυν, 14
ὥσπερ τοῦ νόμου προστάττοντος μηδὲν ποιεῖν ὧν ἂν ὁμολογήσῃ τις, ἀπ᾽ ἐκείνης τῆς ἡμέρας, ἀφ᾽ ἧς ὡμολόγησεν ἐπί τε τὰς διαλύσεις ἀπαντήσεσθαι καὶ τὴν ἀπόφασίν μοι τὴν αὐτοῦ δώσειν καὶ τὴν παρ᾽ ἐμοῦ λήψεσθαι, οὐδεπώποτ᾽ ἀπήντησεν· ἀλλ᾽ ἐγὼ μὲν ἐπειδὴ τοῦτον ἑώρων οὐ προσέχοντά μοι τὸν νοῦν οὐδὲ τοῖς νόμοις, εἰς τὸ στρατήγιον ἔδωκα τὴν ἀπόφασιν, οὗτος δ᾽, ὅπερ καὶ μικρῷ πρότερον εἶπον, πρῴην ἔδωκέ μοι βιβλίον, οὐδὲν ἀλλ᾽ ἢ

*βουλόμενος δοκεῖν μὲν δεδωκέναι τὴν ἀπόφασιν, μὴ ἔχειν
15 δέ με τοῖς ἐν αὐτῷ γεγραμμένοις ὅ τι χρήσωμαι. χρὴ δ'
ὦ ἄνδρες δικασταὶ μὴ τοῖς ἰσχυροτέραν νομίζουσι τῶν
νόμων τὴν αὐτῶν βδελυρίαν εἶναι, πλέον τούτοις τοῦ δι-
καίου νέμειν· εἰ δὲ μή, πολλοὺς ποιήσετε τοὺς καταγε-
λῶντας τῶν ἐν τοῖς νόμοις δικαίων γεγραμμένων· ἀλλ'
ἐκείνοις βοηθεῖν οἵτινες ἂν τὴν τῶν νόμων φωνὴν ὑμετέ-
ραν εἶναι νομίζωσι, καὶ τὴν ὑμετέραν ταύτην, τὴν εἰς τὸ
δικαστήριον, ὑπὲρ τῶν ἠδικημένων εἶναι νομίζωσι, μὴ
16 τῶν ἠδικηκότων. λέγε τῶν ἀρτίως εἰρημένων τὰς μαρ-
τυρίας καὶ τοὺς νόμους.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ. ΝΟΜΟΙ.

*Τοιαῦτα τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ πεπονθὼς ἐγὼ ὑπὸ
Φαινίππου ἀπεγραψάμην πρὸς τοὺς στρατηγοὺς ταύτην
τὴν ἀπογραφήν. λέγε.*

‖ΑΠΟΓΡΑΦΗ.

*17 Πῶς οὖν ἄλλως πρὸς τῶν θεῶν καὶ δαιμόνων ὦ ἄνδρες
δικασταὶ ἐπιδεικνύειν ὑμῖν δεῖ Φαίνιππον ἔνοχον ὄντα
τοῖς ἀνεγνωσμένοις, ἢ ὅν περ τρόπον ἐγὼ νῦν ἐπιδεικνύω;
ἀλλ' ὅμως ἐμὲ ἀντεγράψατο Φαίνιππος μὴ δικαίως ἀπο-
φαίνειν τὴν οὐσίαν· οὕτω τὸ πρὸς ὑμᾶς ψεύδεσθαι τοῖς
τοιούτοις ῥᾴδιον ἐστιν· καὶ κατηγορεῖ τοῦ ὅρκου ὃν ὤμοσα
πρὸ τῆς ἀποφάσεως, λέγων ὅτι πλὴν τῶν ἐν τοῖς ἔργοις
ὑπεσχόμην ἀποφαίνειν τὴν ἄλλην οὐσίαν, ὥσπερ τὸ κατὰ
18 τοὺς νόμους ὀμνύειν, τοῦτ' ἄξιον κατηγορίας ὄν. ὑμεῖς δ'
ἴστε ὦ ἄνδρες δικασταί (ὑμεῖς γὰρ ἔθεσθε) τὸν νόμον, ὃς
διαρρήδην οὕτω λέγει, τοὺς δ' ἀντιδιδόντας ἀλλήλοις, ὅταν
ὀμόσαντες ἀποφαίνωσι τὴν οὐσίαν, προσομνύειν τόνδε τὸν
ὅρκον "ἀποφαίνω τὴν οὐσίαν τὴν ἐμαυτοῦ ὀρθῶς καὶ δι-
καίως, πλὴν τῶν ἐν τοῖς ἔργοις τοῖς ἀργυρείοις, ὅσα οἱ
νόμοι ἀτελῆ πεποιήκασιν." μᾶλλον δὲ λέγε τὸν νόμον
αὐτόν.*

*19 Μικρὸν μὲν οὖν, ἱκετεύω, ἐπίσχες. ἐγὼ γὰρ καὶ πρό-
τερον προεκαλεσάμην Φαίνιππον, καὶ νῦν ὦ ἄνδρες δικα-
σταὶ δίδωμι αὐτῷ δωρεὰν καὶ ἀφίσταμαι μετὰ τῆς ἄλλης
οὐσίας καὶ τῶν ἐν τοῖς ἔργοις, ἐάν μοι τὴν ἐσχατιὰν
μόνην ἐλευθέραν παραδῷ, ὥσπερ ἦν ὅτ' ἐγὼ τὸ πρῶτον*

ἦλθον εἰς αὐτὴν μετὰ μαρτύρων, καὶ ἐὰν ὃν ἐξῆγεν ἐκ τῶν οἰκημάτων σῖτον καὶ οἶνον καὶ τἆλλα, ἀφελὼν ἀπὸ τῶν θυρῶν τὰ σημεῖα, ταῦτα πάλιν εἰς ταὐτὸ καταστήσῃ. καὶ 20
τί λέγεις ἔτι καὶ βοᾷς; πόλλ᾽ ἐκ τῶν ἔργων τῶν ἀργυρείων ἐγώ, Φαίνιππε, πρότερον αὐτὸς τῷ ‖ ἐμαυτοῦ σώματι πονῶν καὶ ἐργαζόμενος συνελεξάμην· ὁμολογῶ. νυνὶ δὲ πλὴν ὀλίγων ἅπαντ᾽ ἀπολώλεκα. σὺ δ᾽ ἐκ τῆς ἐσχατιᾶς νῦν πωλῶν τὰς κριθὰς ὀκτωκαιδεκαδράχμους καὶ τὸν οἶνον δωδεκάδραχμον πλουτεῖς εἰκότως, ἐπειδὰν ποιῇς σίτου μὲν μεδίμνους πλεῖον ἢ χιλίους, οἴνου δὲ μετρήτας ὑπὲρ ὀκτακοσίους. ἔτι οὖν τὴν αὐτὴν ἡμᾶς τάξιν ἔχειν δεῖ, μὴ τῆς 21
αὐτῆς τύχης ἡμῖν παρακολουθούσης νῦν τε καὶ πρότερον; μηδαμῶς· οὐ γὰρ δίκαιον. ἀλλὰ διάδεξαι καὶ σὺ καὶ μετάλαβε μικρὸν χρόνον τῆς τοῦ λειτουργοῦντος τάξεως, ἐπειδὴ οἱ μὲν ἐν τοῖς ἔργοις ἠτυχήκασιν, ὑμεῖς δ᾽ οἱ γεωργοῦντες εὐπορεῖτε μᾶλλον ἢ προσῆκεν. ἱκανὸν γὰρ χρόνον δύ᾽ οὐσίας καρπούμενος διατελεῖς, τὴν μὲν τοῦ φύσει πατρὸς Καλλίππου, τὴν δὲ τοῦ ποιησαμένου σε, Φιλοστράτου τοῦ ῥήτορος, καὶ οὐδὲν πώποτε τούτοις πεποίηκας. καίτοι ὁ μὲν ἐμὸς πατὴρ πέντε καὶ τετταράκοντα μνῶν 22
μόνων ἑκατέρῳ, ἐμοὶ καὶ τῷ ἀδελφῷ, τὴν οὐσίαν κατέλιπεν, ἀφ᾽ ἧς ζῆν οὐ ῥᾴδιον ἐστίν· οἱ δὲ σοὶ πατέρες τοσούτων ἦσαν κύριοι χρημάτων ὥσθ᾽ ἑκατέρου τρίποδας ἀνάκειται, νικησάντων αὐτῶν Διονύσια χορηγούντων. καὶ οὐ φθονῶ· δεῖ γὰρ τοὺς εὐπόρους χρησίμους αὑτοὺς παρέχειν τοῖς πολίταις. σὺ τοίνυν δεῖξον χαλκοῦν ἕνα μόνον εἰς τὴν πόλιν ἀνηλωκώς, ὁ τὰς δύο λειτουργούσας οὐσίας παρειληφώς. ἀλλ᾽ οὐ δείξεις· ἀποκρύπτεσθαι γὰρ καὶ 23
διαδύεσθαι καὶ πάντα ποιεῖν ἐξ ὧν μὴ λειτουργήσεις τουτοισὶ μεμάθηκας. ἀλλ᾽ ἐγὼ δείξω πόλλ᾽ ἀνηλωκώς, ὁ τὴν μικρὰν οὐσίαν παραλαβὼν παρὰ τοῦ πατρός. ‖ πρῶτον δέ μοι τὸν νόμον ἐκεῖνον ἀνάγνωθι τὸν οὐκ ἐῶντα τῶν ἐν τοῖς ἔργοις οὐδὲν ἀποφαίνειν καὶ τὴν πρόκλησιν, ἔπειτα τὰς μαρτυρίας ὡς δύ᾽ οἴκων λειτουργούντων οὑτοσὶ Φαίνιππος κεκληρονόμηκεν.

ΝΟΜΟΣ. ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ. ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἓν μόνον ἄν τις ἔχοι δεῖξαι τουτονὶ Φαίνιππον πεφι- 24

λοτιμημένον εἰς ὑμᾶς, ὦ ἄνδρες δικασταί· ἱπποτρόφος ἀγαθός ἐστι καὶ φιλότιμος ἅτε νέος καὶ πλούσιος καὶ ἰσχυρὸς ὤν. τί τούτου μέγα σημεῖον; ἀποδόμενος τὸν πολεμιστήριον ἵππον καταβέβηκεν ἀπὸ τῶν ἵππων, καὶ ἀντ' ἐκείνου ὄχημα αὑτῷ τηλικοῦτος ὢν ἐώνηται, ἵνα μὴ πεζῇ πορεύηται· τοσαύτης οὗτος τρυφῆς ἐστὶ μεστός. καὶ τοῦτ' ἀπογέγραφέ μοι, τῶν δὲ κριθῶν καὶ τοῦ οἴνου καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκ τῆς ἐσχατιᾶς γιγνομένων οὐδὲ τὸ
25 *δέκατον μέρος. ἄξιόν γε ἀφεῖναι νῦν αὐτόν ἐστιν, ἐπειδὴ χρήσιμος καὶ φιλότιμος καὶ τῇ οὐσίᾳ καὶ τῷ σώματι. πολλοῦ γε καὶ δεῖ. καλῶν γὰρ κἀγαθῶν ἐστὶ δικαστῶν τοὺς μὲν τῶν πολιτῶν ἐθέλοντας, ὅταν εὐπορῶσι, λειτουργοῦντας καὶ ἐν τοῖς τριακοσίοις ὄντας ἀναπαύειν, ὅταν τούτου δεόμενοι τυγχάνωσι, τοὺς δὲ νομίζοντας ἀπολλύειν ὅταν εἰς τὸ κοινόν τι δαπανήσωσιν, ἄγειν εἰς τοὺς προεισφέροντας καὶ μὴ ἐπιτρέπειν δραπετεύειν. λέγε πρῶτον μὲν τὴν μαρτυρίαν, ἔπειτα τὴν ἀπόφασιν αὐτοῦ.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. ΑΠΟΦΑΣΙΣ.

26 *Ἔα ταῦτα. καίτοι πολλὰ τῶν ἔνδοθεν ἐκφορήσας ὦ ἄνδρες δικασταὶ Φαίνιππος, ἀνοίξας τὰ παρασεσημασμένα τῶν οἰκημάτων, ‖ ὡς ὑμῖν μεμαρτύρηται, καὶ καταλιπὼν ὅσα ἔδοξεν αὐτῷ, δευτέρῳ μηνὶ τὴν ἀπόφασιν ἔδωκέ μοι τῆς οὐσίας. ἀλλ' ὅμως ἔα ταῦτα. λέγε δ' ἐντευθενί "ἐπὶ τούτοις τάδε ὀφείλω."*

ΑΠΟΦΑΣΙΣ.

27 *Ἐπίσχες. αὕτη ἐστὶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἡ Ἀριστονόη ἡ τοῦ Φιλοστράτου θυγάτηρ, μήτηρ δὲ τουτουί. ταύτῃ χρέως φησὶν ὀφείλεσθαι Φαίνιππος τὴν προῖκα, ἧς οἱ νόμοι κύριον τοῦτον ποιοῦσι, ψευδόμενος καὶ οὐ δικαίως χρώμενος τῇ ἀποφάσει. διὰ τί γὰρ ἐγώ, Φαίνιππε, μενούσης μοι τῆς μητρὸς ἐν τῷ οἴκῳ καὶ ζώσης καὶ προῖκα ἐπενεγκαμένης, οὐκ ἀπογράφω τὴν προῖκα χρέως αὐτῇ οὐδὲ παρακρούομαι τοὺς δικαστάς, ἀλλ' ἐῶ μετέχειν τῶν ἐμαυτοῦ τὴν μητέρα, ἄν τε τὴν Φαινίππου ἄν τε τὴν ἐμαυτοῦ ἔχω οὐσίαν; ὅτι οἱ νόμοι ταῦτα κελεύουσιν, ὦ βέλτιστε· σὺ δὲ πάντα ποιεῖς παρὰ τοὺς νόμους. λέγ' ἕτερον.*

ΑΠΟΦΑΣΙΣ.

Ἀκούετε, ὦ ἄνδρες δικασταί· Παμφίλῳ φησὶ καὶ Φει- 28
δόλεῳ Ῥαμνουσίοις κοινῇ τάλαντον ἐνοφείλειν καὶ Αἰαντίδῃ Φλυεῖ τετρακισχιλίας καὶ Ἀριστομένει Ἀναγυρασίῳ τέτταρας καὶ δέκα μνᾶς. διὰ τί οὖν, Φαίνιππε, ὅτε μὲν ἐγὼ μάρτυρας ἔχων ἠρώτων σε εἴ τι ὀφείλοις ἐπὶ τῇ ἐσχατιᾷ, καὶ ἐκέλευον δεῖξαι ὅρον εἴ που ἔπεστι, καὶ διεμαρτυρόμην ὅπως μή μοι ὕστερον κατεσκευασμένοι δανεισταὶ φανήσονται, τότε μὲν οὐδὲν ἀπέφηνας τῶν χρεῶν, ἐπειδὴ δὲ δευτέρῳ μηνὶ τὴν ἀπόφασιν ἔδωκάς μοι τοῦ νόμου κελεύοντος τριῶν ἡμερῶν, νῦν ἥκουσι δανεισταὶ καὶ ὀφλήματα πλέον ἢ τριῶν ταλάντων; ὅτι, ὦ βέλτιστε, 29
οὐδὲν ἄλλο κατασκευάζεις ἢ ὅσον περ κοινῇ ‖ γέγονέ μοι πρὸς τὴν πόλιν ὄφλημα, τοσοῦτο καὶ σοὶ ἰδίᾳ νῦν εἶναι. ὅτι δ' ὦ Φαίνιππε ψευδῆ καὶ ἐπιωρκηκὼς ἥκεις πρὸς τούτους, ἤδη φανερῶς ἐλέγξω. λαβέ μοι, γραμματεῦ, τὴν τοῦ Αἰαντίδου καὶ Θεοτέλους μαρτυρίαν, οἷς οὗτος ἀπογέγραφεν ὀφείλονθ' αὐτὸν τετρακισχιλίας δραχμὰς ψευδόμενος καὶ πάλαι ἀποδεδωκώς, οὐχ ἑκὼν ἀλλὰ δίκην ὀφλών. λέγε.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Ἔπειτ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸν οὕτω καταφανῶς ἐν ἅπα- 30
σιν ἀδίκως πεποιημένον τὴν ἀπόφασιν, καὶ μήτε τῶν νόμων φροντίσαντα μηδέν, οἳ διωρίκασιν ἐν οἷς δεῖ τὴν ἀπόφασιν ποιεῖσθαι χρόνοις, μήτε τῶν ἰδίων ὁμολογιῶν, ἃς ὁμοίως ὑπολαμβάνομεν ἰσχυράς, χωρὶς δὲ τούτων ἀνεῳχότα τὰ σημεῖα τῶν οἰκημάτων καὶ ἐκπεφορηκότα τὸν σῖτον καὶ τὸν οἶνον ἔνδοθεν, πρὸς δὲ τούτοις τὴν ὕλην τὴν τετμημένην πεπρακότα μετὰ τὴν ἀντίδοσιν, πλέον ἢ τριάκοντα μνῶν οὖσαν ἀξίαν, καὶ τὸ πάντων μέγιστον, χρέα ψευδῆ κατεσκευακότα τῆς ἀντιδόσεως ἕνεκα, τοῦτον δικαίως ψηφιεῖσθε πεποιῆσθαι τὴν ἀπόφασιν; μηδαμῶς 31
ὦ ἄνδρες δικασταί· ποῖ γὰρ τραπέσθαι δεήσει διαμαρτόντα τῆς ὑμετέρας γνώμης, ὅταν οἱ πλούσιοι καὶ μηδὲν ὑμῖν πώποτε χρήσιμοι γεγενημένοι, πολὺν καὶ σῖτον καὶ οἶνον ποιοῦντες καὶ τοῦτον τριπλασίας τιμῆς ἢ πρότερον διατιθέμενοι, πλεονεκτῶσι παρ' ὑμῖν; ὃ μηδαμῶς νυνὶ γενέσθω, ἀλλ' ὥσπερ καὶ κοινῇ πᾶσι βεβοηθήκατε τοῖς

ἐν τοῖς ἔργοις ἐργαζομένοις, οὕτω καὶ ἰδίᾳ βοηθήσατέ μοι
32 νῦν. καὶ γὰρ εἰ οἰκέτης ὑμῶν, ‖ μὴ πολίτης ἦν, ὁρῶντες ἄν
μου τὴν φιλεργίαν καὶ τὴν εἰς ὑμᾶς εὔνοιαν, ἀνεπαύσατ᾽
ἄν με τῶν ἀναλωμάτων καὶ ἐπὶ τὸν δραπετεύοντα τῶν
ἄλλων ἤλθετε. τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ νῦν, ἐπειδὰν ἀπο-
τίσω τὰ τρία τάλανθ᾽ ἃ ὦφλον καὶ ἀναλάβω ἐμαυτόν,
πάλιν ἀναπαύσαντες τῶν τεταλαιπωρηκότων ἕτερον ἐπ᾽
ἐμὲ ἥξετε· νῦν δ᾽ ἄφετε, ἱκετεύω πάντας ὑμᾶς, ὦ ἄνδρες
δικασταί, καὶ τὰ δίκαια εἰρηκὼς δέομαι βοηθῆσαί μοι
καὶ μή με περιελαθέντα περιιδεῖν ὑπὸ τούτων.

ΠΡΟΣ ΜΑΚΑΡΤΑΤΟΝ ΠΕΡΙ ΑΓΝΙΟΥ ΚΛΗΡΟΥ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ἁγνίας καὶ Εὐβουλίδης ἦσαν ἀνεψιοί. τούτων δὲ Ἁγνίας ἐτελεύτησεν ἄπαις· ὁ δὲ Εὐβουλίδης θυγατέρα κατέλιπε Φυλομάχην, ἥτις ἐπεδικάζετο τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου ὡς οὖσα ἐγγυτάτω τῷ γένει. ἠμφισβήτουν δὲ αὐτῇ Γλαῦκός τις καὶ Γλαύκων, οὐκ ἀγχιστείᾳ γένους ἀλλὰ διαθήκαις ἰσχυριζόμενοι. ὧν ἐν τῷ δικαστηρίῳ ψευδῶν ἐλεγχθεισῶν παραλαμβάνει τὸν κλῆρον ἡ Φυλομάχη, εἰς ὅ γε ὁ Θεόπομπος, αὐτούς τε τούτους τοὺς ἡττωμένους παραλαβὼν καὶ πρὸς τούτοις Εὐπόλεμον, προσεκαλέσατο εἰς διαδικασίαν τοῦ κλήρου τὴν Φυλομάχην· ἐδίδου γὰρ ὁ νόμος τῷ βουλομένῳ προσκαλεῖσθαι τὸν νενικηκότα καὶ ἔχοντα τὸν κλῆρον. κατασκευασθείσης δὲ πρὸς ἀπάτην τῆς δίκης, ὥς φησι Σωσίθεος, ἐνίκησεν ὁ Θεόπομπος. κἀκεῖνος ‖ μὲν ἐτελεύτησεν υἱὸν καταλιπὼν Μακάρτατον· τῇ δὲ Φυλομάχῃ γίγνεται παῖς, ὃν ὠνόμασεν Εὐβουλίδην καὶ εἰσεποίησεν υἱὸν Εὐβουλίδῃ τῷ ἑαυτῆς μὲν πατρί, ἀνεψιῷ δὲ Ἁγνίου τοῦ τὸν κλῆρον καταλελοιπότος. εἰσποιήσασα δὲ εἰσήγαγεν εἰς τοὺς φράτορας τοῦ Εὐβουλίδου καὶ Ἁγνίου, καὶ οἱ φράτορες ἐδέξαντο ὡς δικαίως εἰσαγόμενον. τούτων δὲ πραχθέντων ὁ παῖς εἰς διαδικασίαν τοῦ κλήρου προσκέκληται Μακάρτατον τὸν υἱὸν τοῦ Θεοπόμπου, καὶ λέγει τὸν λόγον Σωσίθεος ὁ φύσει πατὴρ τοῦ παιδός.*

Ἐπειδὴ καὶ πρότερον ἀγῶνες ἐγένοντο ἡμῖν ὦ ἄνδρες
δικασταὶ πρὸς τοὺς αὐτοὺς τούτους περὶ τοῦ κλήρου τοῦ
Ἁγνίου, καὶ οὐδὲν παύονται παρανομοῦντες καὶ βιαζόμε-
νοι ὥστ᾽ ἐκ παντὸς τρόπου τὰ μὴ προσήκονθ᾽ ἑαυτοῖς ἔχειν,
ἀνάγκη ἴσως ἐστὶ τὰ πραχθέντ᾽ ἐξ ἀρχῆς διηγήσασθαι·
ὑμεῖς τε γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ῥᾷον παρακολουθήσετε
2 ἅπασι τοῖς λεγομένοις, καὶ οὗτοι ἐπιδειχθήσονται οἷοί
εἰσιν ἄνθρωποι, καὶ ὅτι πάλαι ἤδη ἀρξάμενοι οὐδὲν

παύονται κακοτεχνοῦντες καὶ οἰόμενοι δεῖν διαπράττεσθαι
ὅ τι ἂν ἐπέλθῃ τούτοις. δεόμεθα οὖν ὑμῶν ὦ ἄνδρες δι-
κασταὶ εὐνοϊκῶς ‖ ἀκροάσασθαι τῶν λεγομένων καὶ παρα-
κολουθεῖν προσέχοντας τὸν νοῦν. πειράσομαι δὲ κἀγὼ
διδάσκειν, ὡς ἂν οἷός τε ὦ, σαφέστατα περὶ τῶν πεπρα-
γμένων.

Τουτουὶ γὰρ τοῦ παιδὸς ἡ μήτηρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, 3
γένει οὖσα ἐγγυτάτω Ἁγνίᾳ τῷ ἐξ Οἴου, ἐπεδικάσατο τοῦ
κλήρου τοῦ Ἁγνίου κατὰ τοὺς νόμους τοὺς ὑμετέρους· καὶ
τῶν τότε ἀμφισβητησάντων αὐτῇ τοῦ κλήρου τουτουί,
γένει μὲν ὡς ἐγγυτέρω τις εἴη αὐτῶν τῆς γυναικός, οὐδ'
ἐπεχείρησεν οὐδεὶς ἀντομόσαι (ὡμολογεῖτο γὰρ παρὰ πάν-
των τῆς γυναικὸς εἶναι ἡ κληρονομία κατὰ τὴν ἀγχιστείαν),
διαθήκας δὲ ψευδεῖς ἧκον κατασκευάσαντες Γλαῦκός τε ὁ 4
ἐξ Οἴου καὶ Γλαύκων ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ. καὶ Θεόπομπος
ὁ τούτου πατὴρ Μακαρτάτου ἐκείνοις συγκατεσκεύαζεν
ἅπαντα ταῦτα καὶ ἐμαρτύρει τὰς πλείστας μαρτυρίας.
αἱ δὲ διαθῆκαι, ἃς τότε παρέσχοντο, ἐξηλέγχθησαν ψευ-
δεῖς οὖσαι· καὶ οὐ μόνον ἡττήθησαν, ἀλλὰ καὶ πονηρότα-
τοι δόξαντες εἶναι ἀπηλλάττοντο ἀπὸ τοῦ δικαστηρίου.
καὶ ἐπιδημῶν τότε Θεόπομπος ὁ τουτουὶ πατὴρ Μακαρ- 5
τάτου, καὶ τοῦ κήρυκος κηρύττοντος εἴ τις ἀμφισβητεῖν
ἢ παρακαταβάλλειν βούλεται τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου ἢ
κατὰ γένος ἢ κατὰ διαθήκας, οὐκ ἐτόλμησε παρακατα-
βαλεῖν, ἀλλ' αὐτὸς ἑαυτῷ ἐδίκασεν ὅτι οὐδαμόθεν αὐτῷ
προσῆκεν οὐδὲν τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου. ἐχούσης δὲ τῆς 6
μητρὸς τοῦ παιδὸς τουτουὶ τὸν κλῆρον, ἐπειδὴ ἐνίκησεν
ἐν τῷ δικαστηρίῳ ἅπαντας τοὺς ἀμφισβητήσαντας ἑαυτῇ,
οὕτως εἰσὶ μιαροὶ οὗτοι, καὶ οὐκ οἴονται δεῖν οὔτε τοῖς
νόμοις τοῖς ὑμετέροις ‖ πείθεσθαι οὔτε τοῖς γνωσθεῖσιν
ἐν τῷ δικαστηρίῳ, ἀλλὰ πάντα τρόπον ἐπιχειροῦντες
ἀφελέσθαι πάλιν τὴν γυναῖκα τὸν κλῆρον ὃν ὑμεῖς αὐτῇ
ἐψηφίσασθε, συνομόσαντες καὶ συνθήκας γράψαντες πρὸς 7
ἀλλήλους καὶ καταθέμενοι παρὰ Μηδείῳ Ἁγνουσίῳ, Θεό-
πομπος ὁ τουτουὶ πατὴρ Μακαρτάτου καὶ Γλαύκων καὶ
Γλαῦκος ὁ ἡττηθεὶς τὸ πρότερον, καὶ ἕτερόν τινα τῶν
ἐπιτηδείων τέταρτον προσλαβόντες (Εὐπόλεμος ἦν αὐτῷ

ὄνομα), οὗτοι ἅπαντες κοινῇ ἐπιβουλεύσαντες προσεκαλέ-
σαντο τὴν γυναῖκα πρὸς τὸν ἄρχοντα εἰς διαδικασίαν τοῦ
κλήρου τοῦ Ἁγνίου, φάσκοντες τὸν νόμον κελεύειν παρὰ
τοῦ ἐπιδεδικασμένου καὶ ἔχοντος τὸν κλῆρον προσκαλεῖ-
8 σθαι, ἐάν τις βούληται ἀμφισβητεῖν. καὶ ἐπειδὴ ἦγεν ὁ
ἄρχων εἰς τὸ δικαστήριον καὶ ἔδει ἀγωνίζεσθαι, τά τε
ἄλλα ἦν αὐτοῖς ἅπαντα κατεσκευασμένα εἰς τὸν ἀγῶνα,
καὶ τὸ ὕδωρ, πρὸς ὃ ἔδει ἀγωνίζεσθαι, τετραπλάσιον
ἡμῶν ἔλαβον. ἐξ ἀνάγκης γὰρ ἦν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τῷ
ἄρχοντι ἀμφορέα ἑκάστῳ ἐγχέαι τῶν ἀμφισβητούντων,
9 καὶ τρεῖς χόας τῷ ὑστέρῳ λόγῳ. ὥστε συνέβαινεν ἐμοὶ
τῷ ὑπὲρ τῆς γυναικὸς ἀγωνιζομένῳ, μὴ ὅτι περὶ τοῦ γέ-
νους καὶ τῶν ἄλλων ὧν μοι προσῆκε διηγήσασθαι τοῖς
δικασταῖς ὡς ἐγὼ ἠβουλόμην, ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἀπολογήσασθαί
μοι ἐξεγένετο οὐδὲ πολλοστὸν μέρος ὧν κατεψεύδοντο
ἡμῶν· πέμπτον γὰρ μέρος εἶχον τοῦ ὕδατος. καὶ τὸ σό-
φισμα ἦν τοῦτο, αὐτοὺς μὲν ἑαυτοῖς συναγωνίζεσθαι καὶ
ὁμολογεῖν ἅπαντα, περὶ ἡμῶν δὲ ‖ λέγειν τὰ οὐδεπώποτε
10 γενόμενα. καὶ τοῦτον τὸν τρόπον ἐπιβουλευσάντων καὶ
συναγωνιζομένων ἀλλήλοις ἐφ᾽ ἡμᾶς, καδίσκων τεττάρων
τεθέντων κατὰ τὸν νόμον, εἰκότως, οἶμαι, οἱ δικασταὶ
ἐξηπατήθησαν καὶ ἐστασίασαν ἀλλήλοις καὶ παρακρου-
σθέντες ὑπὸ τῆς παρασκευῆς ἐψηφίζοντο ὅ τι ἔτυχεν
ἕκαστος. καὶ αἱ ψῆφοι ὀλίγαις πάνυ ἐγένοντο πλείους,
ἢ τρισὶν ἢ τέτταρσιν, ἐν τῷ Θεοπόμπου καδίσκῳ ἢ ἐν τῷ
τῆς γυναικός.

11 Καὶ τότε μὲν ταῦτα ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἦν τὰ πρα-
χθέντα· ἐπειδὴ δ᾽ οὑτοσὶ ὁ παῖς ἐγένετο καὶ ἐδόκει καιρὸς
εἶναι, οὐκ ὀργισθεὶς ἐγὼ τοῖς γενομένοις ἀλλ᾽ ἡγούμενος
εἰκός τι παθεῖν τοὺς τότε δικάζοντας εἰσήγαγον εἰς τοὺς
φράτορας τοὺς τοῦ Ἁγνίου Εὐβουλίδῃ τὸν παῖδα τουτονί,
ἐκ τῆς θυγατρὸς ὄντα τῆς ἐκείνου, ἵνα μὴ ἐξερημωθῇ ὁ
12 οἶκος. ἐκεῖνος γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὁ Εὐβουλίδης, ὁ
τῷ Ἁγνίᾳ γένει ὢν ἐγγυτάτω, μάλιστα μὲν εὔχετο τοῖς
θεοῖς υἱὸν αὑτῷ γενέσθαι, ὥσπερ καὶ ἡ θυγάτηρ ἡ του-
τουὶ μήτηρ τοῦ παιδὸς αὐτῷ ἐγένετο· ἐπειδὴ δὲ τούτου
ἀπέτυχε καὶ οὐκ ἐγένετο παῖς ἄρρην αὐτῷ οὐδὲ εἷς, μετὰ

ταῦτ' ἤδη ἐσπούδαζεν ὅπως ἐκ τῆς θυγατρὸς εἰσποιηθῇ
αὐτῷ υἱὸς εἰς τὸν οἶκον τὸν ἑαυτοῦ καὶ τὸν Ἁγνίου, καὶ
εἰς τοὺς φράτορας εἰσαχθῇ τοὺς ἐκείνου, ἡγούμενος ὦ
ἄνδρες δικασταὶ ἐκ τῶν ὑπολοίπων τοῦτον εἶναι ἑαυτῷ
οἰκειότατον, καὶ οὕτως ἂν μάλιστα τὸν οἶκον τὸν ἑαυτῶν
διασώζεσθαι καὶ οὐκ ἂν ἐξερημωθῆναι. καὶ ἐγὼ ταῦτα 13
ὑπηρέτησ' αὐτῷ, ὁ τὴν Εὐβουλίδου θυγατέρα ἔχων ἐπι-
δικασάμενος ὡς γένει ὢν ἐγγυτάτω, καὶ εἰσήγαγον τὸν
παῖδα ‖ τουτονὶ εἰς τοὺς Ἁγνίου καὶ Εὐβουλίδου φράτο-
ρας, μεθ' ὧν καὶ Θεόπομπος ὁ τουτουὶ πατὴρ Μακαρ-
τάτου, ἕως ἔζη, ἐφρατρίαζεν, καὶ αὐτὸς οὗτος. καὶ οἱ
φράτορες ὦ ἄνδρες δικασταὶ οἱ τουτουὶ Μακαρτάτου, οἱ
ἄριστα εἰδότες περὶ τοῦ γένους, ὁρῶντες αὐτὸν μὲν τοῦ- 14
τον οὐ θέλοντα κινδυνεύειν οὐδ' ἀπάγοντα τὸ ἱερεῖον ἀπὸ
τοῦ βωμοῦ, εἰ μὴ προσηκόντως εἰσήγετο ὁ παῖς οὑτοσί,
αὐτοὺς δ' ἀξιοῦντα ἐπιορκεῖν, λαβόντες τὴν ψῆφον καιο-
μένων τῶν ἱερείων, ἀπὸ τοῦ βωμοῦ φέροντες τοῦ Διὸς
τοῦ φρατρίου, παρόντος τουτουὶ Μακαρτάτου, ἐψηφίσαντο
τὰ δίκαια ὦ ἄνδρες δικασταί, ὀρθῶς καὶ προσηκόντως τὸν
παῖδα τουτονὶ εἰσάγεσθαι Εὐβουλίδῃ υἱὸν εἰς τὸν οἶκον
τὸν Ἁγνίου. ψηφισαμένων δὲ ταῦτα τῶν φρατόρων τῶν 15
τουτουὶ Μακαρτάτου υἱὸς ὢν Εὐβουλίδου ὁ παῖς οὑτοσὶ
προσεκαλέσατο Μακάρτατον τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου εἰς
διαδικασίαν, καὶ ἔλαχε πρὸς τὸν ἄρχοντα, κύριον ἐπιγρα-
ψάμενος τὸν ἀδελφὸν τὸν ἑαυτοῦ· ἐμοὶ γὰρ οὐκέτι οἷόν τ'
ἦν ὦ ἄνδρες δικασταὶ κυρίῳ ἐπιγεγράφθαι, εἰσπεποιη-
κότι τὸν παῖδα εἰς τὸν οἶκον τὸν Εὐβουλίδου. καὶ ἡ πρόσ-
κλησις ἐγένετο τῷ παιδὶ τούτῳ κατὰ τὸν νόμον καθ' ὅνπερ
καὶ οὗτοι προσεκαλέσαντο τὴν τουτουὶ μητέρα τὴν νενι-
κηκυῖαν πρότερον ἐν τῷ δικαστηρίῳ καὶ ἔχουσαν τὸν κλῆ-
ρον τὸν Ἁγνίου. καί μοι ἀνάγνωθι τὸν νόμον καθ' ὃν ἡ 16
πρόσκλησίς ἐστι παρὰ τοῦ ἔχοντος τὸν κλῆρον.

ΝΟΜΟΣ. Ἐὰν δ' ἐπιδεδικασμένου ἀμφισβητῇ τοῦ κλήρου ἢ τῆς ἐπικλήρου, προσκαλείσθω τὸν ἐπιδεδικασμένον πρὸς τὸν ἄρχοντα καθάπερ ἐπὶ τῶν ἄλλων δικῶν· παρακαταβολὰς δ' εἶναι τῷ ἀμφισβητοῦντι. ‖ ἐὰν δὲ μὴ προσκαλεσάμενος ἐπιδικάσηται, ἀτελὴς ἔσται ἡ ἐπιδικασία τοῦ κλήρου. ἐὰν δὲ μὴ ζῇ ὁ ἐπιδικασάμενος τοῦ κλήρου, προσκαλείσθω κατὰ ταὐτά, ᾧ ἡ προθεσμία μήπω ἐξήκῃ·

τὴν δ' ἀμφισβήτησιν εἶναι τῷ ἔχοντι, καθότι ἐπεδικάσατο οὗ ἂν ἔχῃ τὰ χρήματα.

17 *Τοῦ μὲν νόμου ἀκηκόατε, δέομαι δ' ὑμῶν δικαίαν δέη-
σιν, ὦ ἄνδρες δικασταί. ἐὰν γὰρ ἐπιδείξω Θεοπόμπου
τοῦ πατρὸς τοῦ Μακαρτάτου γένει ὄντας Ἁγνίᾳ ἐγγυτέρω
Εὐβουλίδην τὸν παῖδα τουτονὶ καὶ Φυλομάχην, ἥ ἐστι μή-
τηρ τῷ παιδὶ Εὐβουλίδου δὲ θυγάτηρ, καὶ οὐ μόνον γένει
ἐγγυτάτω ὄντας, ἀλλὰ τὸ παράπαν οὐδὲ ὄντα οὐδένα ἀν-
θρώπων ἐν τῷ οἴκῳ τῷ Ἁγνίου ἄλλον ἢ τὴν μητέρα τοῦ
παιδὸς τουτονὶ καὶ αὐτὸν τοῦτον τὸν παῖδα, ταῦτ' ἐὰν
ἐπιδείξω, δέομαι ὑμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ βοηθεῖν ἡμῖν.*

18 *Τὸ μὲν οὖν πρῶτον διενοήθην ὦ ἄνδρες δικασταὶ γρά-
ψας ἐν πίνακι ἅπαντας τοὺς συγγενεῖς τοὺς Ἁγνίου, οὕτως
ἐπιδεικνύειν ὑμῖν καθ' ἕκαστον· ἐπειδὴ δ' ἐδόκει οὐκ εἶναι
ἐξ ἴσου ἡ θεωρία ἅπασι τοῖς δικασταῖς, ἀλλ' οἱ πόρρω
καθήμενοι ἀπολείπεσθαι, ἀναγκαῖον ἴσως ἐστὶ τῷ λόγῳ
διδάσκειν ὑμᾶς· τοῦτο γὰρ ἅπασι κοινόν ἐστιν. πειρα-
σόμεθα δὲ καὶ ἡμεῖς, ὡς ἂν μάλιστα δυνώμεθα, διὰ
βραχυτάτων ἐπιδεῖξαι περὶ τοῦ γένους τοῦ Ἁγνίου.*

19 *Βούσελος γὰρ ἦν ἐξ Οἴου, ὦ ἄνδρες δικασταί, καὶ
τούτῳ ἐγένοντο πέντε υἱεῖς, Ἁγνίας καὶ Εὐβουλίδης καὶ
Στράτιος καὶ Ἅβρων καὶ Κλεόκριτος. καὶ οὗτοι ἅπαντες
οἱ τοῦ Βουσέλου υἱεῖς ἄνδρες ἐγένοντο, καὶ διένειμεν αὐ-
τοῖς τὴν οὐσίαν ὁ πατὴρ ὁ Βούσελος ἅπασι καλῶς καὶ
δικαίως, ὥσπερ προσῆκεν. νειμάμενοι δὲ τὴν οὐσίαν,
γυναῖκα αὐτῶν ἕκαστος ἔγημε ‖ κατὰ τοὺς νόμους τοὺς
ὑμετέρους, καὶ παῖδες ἐγένοντο αὐτοῖς ἅπασι καὶ παίδων
παῖδες, καὶ ἐγένοντο πέντε οἶκοι ἐκ τοῦ Βουσέλου οἴκου
ἑνὸς ὄντος, καὶ χωρὶς ἕκαστος ᾤκει τὸν ἑαυτοῦ ἔχων καὶ*
20 *ἐκγόνους ἑαυτοῦ ποιούμενος. περὶ μὲν οὖν τῶν τριῶν
ἀδελφῶν τῶν τοῦ Βουσέλου υἱέων, καὶ τῶν ἐκγόνων τῶν
τούτοις γενομένων, τί ἂν ἐγὼ ὑμῖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ
πράγματα παρέχοιμι ἢ ἐμαυτῷ ἐξηγούμενος περὶ ἑκάστου;
ὄντες γὰρ ἐν ταὐτῷ γένει Θεοπόμπῳ καὶ προσήκοντες
ὁμοίως τῷ Ἁγνίᾳ οὗ ἐστιν ὁ κλῆρος, οὐδεὶς αὐτῶν οὔτε
πρότερον πώποτ' οὔτε νῦν ἠνώχλησεν ἡμῖν, οὐδ' ἠμφε-
σβήτησεν οὔτε τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου οὔτε τῆς γυναικὸς*

τῆς ἐπικλήρου, ἣν ἐγὼ ἔχω ἐπιδικασάμενος, ἡγούμενοι οὐδ᾽ ὁτιοῦν προσήκειν ἑαυτοῖς οὐδενὸς τῶν Ἁγνίου. περί- 21
εργον δή μοι δοκεῖ εἶναι λέγειν τι περὶ τούτων, πλὴν ὅσ᾽ ἐξ ἀνάγκης ἐστὶν ἐπιμνησθῆναι. περὶ δὲ Θεοπόμπου τοῦ πατρὸς τοῦ Μακαρτάτου καὶ αὐτοῦ τουτουὶ Μακαρτάτου, περὶ τούτων μοί ἐστιν ἐξ ἀνάγκης λέγειν. ἔστι δὲ βραχὺς ὁ λόγος, ὦ ἄνδρες δικασταί. ὥσπερ γὰρ ὀλίγον τι πρότερον ἀκηκόατε ὅτι τῷ Βουσέλῳ πέντε υἱεῖς ἐγένοντο, τούτων εἷς ἦν Στράτιος ὁ τουτουὶ πρόγονος Μακαρτάτου, καὶ ἕτερος Ἁγνίας ὁ τουτουὶ πρόγονος τοῦ παιδός. ἐγένετο δὴ 22
υἱὸς τῷ Ἁγνίᾳ Πολέμων καὶ θυγάτηρ Φυλομάχη, ἀδελφὴ τοῦ Πολέμωνος ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία· τοῦ δὲ Στρατίου ἐγένοντο τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ Ἁγνίου Φανόστρατος καὶ Χαρίδημος ὁ τούτου πάππος Μακαρτάτου. ἐρωτῶ δὴ ὑμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταὶ πότερος οἰκειότερός ἐστι καὶ προσήκει μᾶλλον ‖ τῷ Ἁγνίᾳ, ὁ υἱὸς ὁ Πολέμων καὶ ἡ θυγάτηρ ἡ Φυλομάχη, ἢ Χαρίδημος ὁ υἱὸς Στρατίου, ἀδελφιδοῦς δ᾽ Ἁγνίου; ἐγὼ μὲν γὰρ ἡγοῦμαι τὸν υἱὸν καὶ τὴν θυγατέρα οἰκειότερον εἶναι ἑκάστῳ ἡμῶν μᾶλλον ἢ τὸν ἀδελφιδοῦν· καὶ οὐ μόνον παρ᾽ ἡμῖν τοῦτο νενόμισται, ἀλλὰ καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις ἅπασι καὶ Ἕλλησι καὶ βαρβάροις. ἐπειδὴ τοίνυν ταῦθ᾽ ὁμολογεῖται, ῥᾳδίως ἤδη τοῖς 23
ἄλλοις ὦ ἄνδρες δικασταὶ παρακολουθήσετε, καὶ αἰσθήσεσθε τούτους ὅτι εἰσὶ βίαιοι καὶ ἀσελγεῖς ἄνθρωποι. τοῦ Πολέμωνος γὰρ τοῦ υἱέος τοῦ Ἁγνίου ἐγένετο υἱὸς Ἁγνίας, τὸ τοῦ πάππου τοῦ ἑαυτοῦ ὄνομ᾽ ἔχων, τοῦ Ἁγνίου. καὶ οὗτος μὲν ἄπαις ἐτελεύτησεν ὁ Ἁγνίας ὁ ὕστερος, τῆς Φυλομάχης δὲ τῆς ἀδελφῆς τῆς Πολέμωνος, 24
καὶ Φιλάγρου ᾧ ἔδωκεν αὐτὴν ὁ ἀδελφὸς Πολέμων ἀνεψιῷ ὄντι ἑαυτοῦ (ὁ γὰρ Φίλαγρος υἱὸς ἦν Εὐβουλίδου τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ Ἁγνίου), τοῦ δὴ Φιλάγρου τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Πολέμωνος καὶ τῆς Φυλομάχης τῆς ἀδελφῆς τῆς Πολέμωνος ἐγένετο υἱὸς Εὐβουλίδης, ὁ πατὴρ ὁ τῆς μητρὸς τοῦ παιδὸς τουτουί. καὶ οὗτοι μὲν υἱεῖς ἐγένοντο Πολέμωνι καὶ τῇ ἀδελφῇ τῇ Πολέμωνος Φυλομάχῃ, τοῦ δὲ Χαριδήμου ἐγένετο, τοῦ υἱέος τοῦ Στρατίου, Θεόπομπος ὁ τουτουὶ πατὴρ Μακαρτάτου. πάλιν δὴ ἐρωτῶ ὦ ἄνδρες δικασταὶ 25

*πότερος οἰκειότερός ἐστι καὶ προσήκει μᾶλλον Ἁγνίᾳ τῷ
πρώτῳ ἐκείνῳ, ὁ Πολέμωνος υἱὸς Ἁγνίας, καὶ Εὐβουλί-
δης ὁ Φυλομάχης υἱὸς καὶ Φιλάγρου, ἢ Θεόπομπος ὁ Χα-
ριδήμου υἱός, Στρατίου δὲ υἱδοῦς; ἐγὼ μὲν γὰρ οἶμαι,
ὦ ἄνδρες δικασταί, εἴπερ καὶ ὁ υἱὸς οἰκειότατός ἐστι καὶ
ἡ θυγάτηρ, πάλιν ὁ υἱδοῦς καὶ ὁ ἐκ τῆς θυγατρὸς ‖ υἱός,
οὗτοι οἰκειότεροί εἰσι μᾶλλον ἢ ὁ τοῦ ἀδελφιδοῦ υἱὸς καὶ
26 ὁ ἐξ ἑτέρου ὢν οἴκου. τῷ μὲν οὖν Θεοπόμπῳ ἐγένετο
υἱὸς Μακάρτατος οὑτοσί, τῷ δὲ Εὐβουλίδῃ τῷ τῆς Φυλο-
μάχης υἱεῖ, ἀνεψιῷ δ' Ἁγνίου ὄντι πρὸς πατρός, οὑτοσὶ
ὁ παῖς, ἀνεψιοῦ παῖς ὢν Ἁγνίᾳ πρὸς πατρός, ἐπειδὴ ἡ
Φυλομάχη ἡ μήτηρ ἡ Εὐβουλίδου καὶ ὁ Πολέμων ὁ πατὴρ
ὁ Ἁγνίου ἀδελφοὶ ἦσαν ὁμοπάτριοι καὶ ὁμομήτριοι. τῷ
δέ γε Μακαρτάτῳ τῳδί, τῷ υἱεῖ τῷ Θεοπόμπου, οὐδὲν
ἐγένετο ἔκγονον ὅ τι ἐστὶν ἐν τῷ οἴκῳ τῷ τούτου καὶ τῷ
27 Στρατίου. τούτων δ' οὕτως ἐχόντων τῷ μὲν παιδὶ τούτῳ
ἐστὶν ὄνομα τῶν ἐν τῷ νόμῳ εἰρημένων, καὶ μέχρι ὧν ὁ
νόμος κελεύει τὴν ἀγχιστείαν εἶναι· ἀνεψιοῦ γὰρ Ἁγνίου
παῖς ἐστίν· ὁ γὰρ πατὴρ αὐτοῦ Εὐβουλίδης ἀνεψιὸς ἦν
Ἁγνίᾳ, οὗ ἐστὶν ὁ κλῆρος. ὁ δέ γε Θεόπομπος ὁ τουτουὶ
πατὴρ Μακαρτάτου οὐκ ἂν εἶχεν ὄνομα θέσθαι αὐτῷ τῶν
ἐν τῷ νόμῳ εἰρημένων οὐδέν· ἐξ ἑτέρου γὰρ οἴκου ἦν τοῦ
28 Στρατίου. οὐ προσήκει δὲ ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὐδένα
ἀνθρώπων ἔχειν τὸν κλῆρον τὸν Ἁγνίου ἐξ ἑτέρου οἴκου
ὄντα, ἕως ἄν τις λείπηται τῶν γενομένων ἐν τῷ οἴκῳ τῷ
Ἁγνίου, οὐδ' ἐκβάλλειν βίᾳ, ὅπερ οὗτοι διαπράττονται
γένει τε ἀπωτέρω ὄντες καὶ οὐκ ἐν τῷ αὐτῷ οἴκῳ. τοῦτο
γάρ ἐστιν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ᾧ παρεκρούσατο Θεόπομπος
29 ὁ τουτουὶ πατὴρ Μακαρτάτου. τίνες οὖν οἱ λοιποί; οἱ
ἔτι νῦν ὄντες ἐν τῷ οἴκῳ τῷ Ἁγνίου, Φυλομάχη τε ἡ ἐμὴ
γυνή, Εὐβουλίδου δὲ θυγάτηρ οὖσα τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ
Ἁγνίου, καὶ οὑτοσὶ ὁ παῖς ὁ εἰσηγμένος υἱὸς εἰς τὸν οἶ-
κον τὸν Εὐβουλίδου καὶ Ἁγνίου. ‖ Θεόπομπος δ' ὁ τουτουὶ
πατὴρ Μακαρτάτου, οὐκ ὢν τοῦ οἴκου τοῦ Ἁγνίου, ἐψεύ-
σατο πρὸς τοὺς δικαστὰς ὑπερμέγεθες ψεῦδος περί τε
τῆς Φυλομάχης τῆς τοῦ Πολέμωνος ἀδελφῆς, τηθίδος δ'
Ἁγνίου, ὅτι οὐκ ἦν τῷ Πολέμωνι τῷ τοῦ Ἁγνίου υἱεῖ*

ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία ἀδελφή, καὶ πάλιν προσποιούμενος τοῦ αὐτοῦ οἴκου εἶναι Ἁγνίᾳ ὁ οὐδεπώποτε γενόμενος. ταῦτα δὲ πάντ᾽ ἀδεῶς ἔλεγεν ὁ Θεόπομπος μάρτυρα 30
μὲν οὐδένα παρασχόμενος, ὅστις ἔμελλεν ὑπεύθυνος ἡμῖν ἔσεσθαι, συνομολογοῦντας δ᾽ ἑαυτῷ ἔχων τοὺς κοινωνούς, οἳ ἦσαν ἀλλήλοις συναγωνισταὶ καὶ δὴ ἅπαντα ἔπραττον κοινῇ ὅπως ἀφέλωνται τὴν γυναῖκα τὴν τουτουὶ μητέρα τοῦ παιδὸς τὸν κλῆρον, ὃν αὐτῇ ὑμεῖς ἐψηφίσασθε. βού- 31
λομαι οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ περὶ ὧν εἴρηκα πρὸς ὑμᾶς μαρτυρίας παρασχέσθαι, πρῶτον μὲν ὡς ἐνίκησε τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου ἡ Εὐβουλίδου θυγάτηρ Φυλομάχη, γένει οὖσα ἐγγυτάτω, ἔπειτα περὶ τῶν ἄλλων ἁπάντων. ἀναγίγνωσκε τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσι παρεῖναι πρὸς τῷ διαιτητῇ ἐπὶ Νικοφήμου ἄρχοντος, ὅτε ἐνίκησε Φυλομάχη ἡ Εὐβουλίδου θυγάτηρ τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου τοὺς ἀμφισβητοῦντας αὐτῇ πάντας.*

Ὅτι μὲν ἐνίκησεν ἡ Εὐβουλίδου θυγάτηρ τοῦ κλήρου τοῦ 32
Ἁγνίου, ἀκηκόατε, ὦ ἄνδρες δικασταί. καὶ αὕτη ἐνίκησεν οὐδεμιᾷ παρασκευῇ ἀδίκῳ οὐδὲ συνωμοσίᾳ, ἀλλ᾽ ὡς οἷόντε δικαιότατα, ἐπιδειξάντων ἡμῶν ὅτι γένει ἐγγυτάτω ἦν Ἁγνίᾳ, οὗ ἐστὶν ὁ κλῆρος, ἀνεψιοῦ παῖς οὖσα πρὸς πατρὸς καὶ ἐκ τοῦ οἴκου οὖσα τοῦ Ἁγνίου. ἐπειδὰν ‖ οὖν 33
λέγῃ Μακάρτατος ὅτι ἐνίκησεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ Θεόπομπος τοῦ κλήρου τούτου, ὑποβάλλετε αὐτῷ ὑμεῖς ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι καὶ ἡ γυνὴ ἐνίκησε πρότερον ἢ Θεόπομπος ὁ τουτουὶ πατήρ, καὶ ὅτι δικαίως ἐνίκησεν ἡ γυνὴ ἐκ τοῦ οἴκου οὖσα τοῦ Ἁγνίου, Εὐβουλίδου θυγάτηρ οὖσα τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Ἁγνίου, ὁ δὲ Θεόπομπος ὅτι οὐκ ἐνίκησεν ἀλλὰ παρεκρούσατο, οὐκ ὢν ἐκ τοῦ οἴκου τὸ παράπαν τοῦ Ἁγνίου. ταῦτα αὐτῷ ὑμεῖς ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὑπο- 34
βάλλετε, καὶ ὅτι τὸν παῖδα τουτονὶ Εὐβουλίδην, τὸν Εὐβουλίδου υἱόν, Ἁγνίου δ᾽, οὗ ἐστὶν ὁ κλῆρος, ἀνεψιοῦ παῖδα πρὸς πατρός, οὔτε Θεόπομπος ὁ Μακαρτάτου πατὴρ οὔτ᾽ ἄλλος οὐδεὶς πώποτε ἀνθρώπων ἐνίκησεν. νυνὶ δ᾽ ἐστὶν ὁ ἀγὼν καὶ ἡ διαδικασία περὶ τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου τῷ Εὐβουλίδου υἱεῖ τούτῳ καὶ Μακαρτάτῳ τούτῳ τῷ Θεοπόμπου υἱεῖ· καὶ ὁπότερος τούτων δικαιότερα λέγει

καὶ κατὰ τοὺς νόμους μᾶλλον, δῆλον ὅτι τούτῳ ὑμεῖς οἱ
35 δικασταὶ προσθήσεσθε. ἀναγίγνωσκε τὰς μαρτυρίας τὰς ὑπολοίπους, πρῶτον μὲν ὅτι ἡ Φυλομάχη ἡ τοῦ Ἁγνίου τηθὶς ἀδελφὴ ἦν ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία τῷ Πολέμωνι τῷ Ἁγνίου πατρί· ἔπειτα τὰς ἄλλας ἁπάσας ἀναγνώσεται περὶ τοῦ γένους.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ. *Μαρτυροῦσι δημόται εἶναι Φιλάγρῳ τῷ Εὐβουλίδου πατρὶ καὶ Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου, καὶ εἰδέναι Φυλομάχην τὴν μητέρα τὴν Εὐβουλίδου νομιζομένην ἀδελφὴν εἶναι Πολέμωνος τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου ὁμοπατρίαν καὶ ὁμομητρίαν, ‖ καὶ μηδενὸς πώποτ᾽ ἀκοῦσαι ὡς γένοιτο ἀδελφὸς Πολέμωνι τῷ Ἁγνίου.*

36 ΑΛΛΗ. *Μαρτυροῦσιν Οἰνάνθην, τὴν μητέρα τοῦ πάππου τοῦ ἑαυτῶν Στρατωνίδου, ἀνεψιὰν εἶναι ἐκ πατραδέλφων Πολέμωνι τῷ πατρὶ τοῦ Ἁγνίου, καὶ ἀκούειν τοῦ πατρὸς τοῦ ἑαυτῶν ὅτι Πολέμωνι ἀδελφὸς οὐδεὶς γένοιτο πώποτε, τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου, ἀδελφὴ δὲ Φυλομάχη ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία, ἡ μήτηρ ἡ Εὐβουλίδου τοῦ πατρὸς τῆς Φυλομάχης τῆς Σωσιθέου γυναικός.*

ΑΛΛΗ. *Μαρτυρεῖ συγγενὴς εἶναι καὶ φράτηρ καὶ δημότης Ἁγνίᾳ καὶ Εὐβουλίδῃ, καὶ ἀκούειν τοῦ πατρὸς τοῦ ἑαυτῶν καὶ τῶν ἄλλων συγγενῶν ὅτι ἀδελφὸς οὐδεὶς ἐγένετο τῷ Πολέμωνι τῷ πατρὶ Ἁγνίου, ἀδελφὴ δ᾽ ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία Φυλομάχη ἡ μήτηρ ἡ Εὐβουλίδου τοῦ πατρὸς Φυλομάχης τῆς Σωσιθέου γυναικός.*

37 ΑΛΛΗ. *Μαρτυρεῖ πάππον εἶναι ἑαυτοῦ Ἀρχίλοχον καὶ ποιήσασθαι ἑαυτὸν υἱόν, καὶ εἶναι αὐτὸν συγγενῆ Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου, καὶ ἀκούειν Ἀρχιλόχου καὶ τῶν ἄλλων συγγενῶν ὅτι ἀδελφὸς οὐδεὶς πώποτ᾽ ἐγένετο Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου, ἀδελφὴ δ᾽ ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία Φυλομάχη ἡ μήτηρ ἡ Εὐβουλίδου τοῦ πατρὸς τῆς Φυλομάχης τῆς Σωσιθέου γυναικός.*

ΑΛΛΗ. *Μαρτυρεῖ τὸν πατέρα τῆς ἑαυτοῦ γυναικὸς Καλλίστρατον ἀνεψιὸν εἶναι ἐκ πατραδέλφων Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου καὶ Χαριδήμῳ τῷ πατρὶ τῷ Θεοπόμπου, τὴν δὲ μητέρα τὴν ἑαυτοῦ ἀνεψιοῦ παῖδα εἶναι Πολέμωνι, καὶ λέγειν τὴν μητέρα τὴν αὐτῶν ‖ πρὸς αὐτοὺς πολλάκις ὅτι Φυλομάχη ἡ μήτηρ ἡ Εὐβουλίδου ἀδελφὴ ἦν Πολέμωνος τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία, καὶ ὅτι ἀδελφὸς οὐδεὶς πώποτε γένοιτο Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου.*

38 Τὸ πρότερον ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτε συνώμοσαν ἀλλήλοις οὗτοι καὶ συστάντες ἠγωνίζοντο πολλοὶ ὄντες πρὸς τὴν γυναῖκα, ἡμεῖς μὲν ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὔτε μαρτυρίας ἐγράψαμεν περὶ τῶν ὁμολογουμένων οὔτε μάρτυρας προσεκαλεσάμεθα, ἀλλ᾽ ᾠόμεθα ταῦτά γε ἀδεῶς ὑπάρχειν ἡμῖν· οὗτοι δὲ τά τ᾽ ἄλλα πολλὰ καὶ ἀναίσχυντα παρε-

*σκευάσαντο εἰς τὸν ἀγῶνα, καὶ ἔμελεν αὐτοῖς οὐδὲν πλὴν
τοῦ ἐξαπατῆσαι ἐν τῷ παρόντι τότε καιρῷ τοὺς δικαστάς,
οἵτινες κατεχρῶντο ὡς τῷ Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου* 39
*τὸ παράπαν οὐδεμία γένοιτο ἀδελφὴ ὁμοπατρία καὶ ὁμο-
μητρία· οὕτως ἦσαν ἀναίσχυντοι καὶ βδελυροί, τηλικοῦτον
πρᾶγμα παρακρουόμενοι τοὺς δικαστὰς καὶ οὕτω περι-
φανές, καὶ ἐσπούδαζον καὶ ἠγωνίζοντο περὶ τούτου μά-
λιστα. ἡμεῖς δέ γε νυνὶ μάρτυρας ὑμῖν τοσούτους παρε-
σχήμεθα περὶ τῆς Πολέμωνος ἀδελφῆς, τηθίδος δ' Ἁγνίου.
τούτῳ δ' ὁ βουλόμενος μαρτυρησάτω ἢ ὡς οὐκ ἦσαν ἀδελ-* 40
*φοὶ ὁμοπάτριοι καὶ ὁμομήτριοι Πολέμων καὶ Φυλομάχη,
ἢ ὅτι οὐκ ἦν ὁ μὲν Πολέμων υἱὸς ἡ δὲ Φυλομάχη θυγά-
τηρ Ἁγνίου τοῦ Βουσέλου υἱέος, ἢ ὅτι ὁ Πολέμων οὐκ ἦν
πατὴρ Ἁγνίου οὗ ἐστιν ὁ κλῆρος, οὐδ' ἡ ἀδελφὴ ἡ Πολέ-
μωνος Φυλομάχη τηθίς, ἢ ὡς Εὐβουλίδης οὐκ ἦν Φυλο-* 41
*μάχης υἱὸς οὐδὲ Φιλάγρου τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Ἁγνίου, ἢ
ἐκεῖνο ὅτι ‖ Εὐβουλίδου τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Ἁγνίου οὐκ ἔστι
Φυλομάχη θυγάτηρ ἡ νῦν ἔτι οὖσα, οὐδ' υἱὸς οὑτοσὶ ὁ
παῖς, εἰσπεποιημένος κατὰ τοὺς νόμους τοὺς ὑμετέρους
εἰς τὸν Εὐβουλίδου οἶκον, ἢ ὡς ὁ Θεόπομπος ὁ τουτουὶ
πατὴρ Μακαρτάτου ἐκ τοῦ οἴκου ἦν τοῦ Ἁγνίου. τούτων
ὅ τι βούλεταί τις μαρτυρησάτω αὐτῷ. ἀλλ' εὖ οἶδ' ὅτι
οὐδεὶς οὕτω τολμηρὸς ἔσται οὐδ' ἀπονενοημένος ἄνθρω-
πος. ὡς δὲ καταφανὲς ὑμῖν ἔσται ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι* 42
*τὸ πρότερον ἀναισχυντοῦντες περιεγένοντο, δίκαιον δ'
οὐδὲν ἔλεγον, ἀναγίγνωσκε τὰς μαρτυρίας, ὅσαι εἰσὶν ἔτι
ὑπόλοιποι.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ. *Μαρτυρεῖ συγγενὴς εἶναι Πολέμωνι τῷ Ἁγνίου πατρί,
καὶ ἀκούειν τοῦ πατρὸς τοῦ ἑαυτοῦ ἀνεψιοὺς εἶναι ἐκ πατραδέλφων
Πολέμωνι Φίλαγρόν τε τὸν Εὐβουλίδου πατέρα καὶ Φανοστράτην
τὴν Στρατίου θυγατέρα καὶ Καλλίστρατον τὸν πατέρα τῆς Σωσιθέου
γυναικὸς καὶ Εὐκτήμονα τὸν βασιλεύσαντα καὶ Χαρίδημον τὸν πα-
τέρα τὸν Θεοπόμπου καὶ Στρατοκλέους, καὶ εἶναι τοῖς τούτων υἱέσι
καὶ Ἁγνίᾳ ἐν τῷ αὐτῷ γένει Εὐβουλίδην κατὰ τὸν πατέρα τὸν ἑαυ-
τοῦ Φίλαγρον, κατὰ δὲ τὴν μητέρα τὴν ἑαυτοῦ Φυλομάχην νομιζό-
μενον ἀνεψιὸν εἶναι Εὐβουλίδην Ἁγνίᾳ πρὸς πατρὸς ἐκ τηθίδος
γεγονότα Ἁγνίᾳ τῆς πρὸς πατρός.*

ΑΛΛΗ. *Μαρτυροῦσι συγγενεῖς εἶναι Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου* 43
καὶ Φιλάγρῳ τῷ πατρὶ τῷ Εὐβουλίδου καὶ Εὐκτήμονι τῷ βασιλεύ-

σαντι, καὶ εἰδέναι Εὐκτήμονα ἀδελφὸν ὄντα ὁμοπάτριον Φιλάγρῳ τῷ πατρὶ τῷ Εὐβουλίδου· καὶ ὁπότε ἡ ἐπιδικασία ‖ ἦν τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου Εὐβουλίδῃ πρὸς Γλαύκωνα, ἔτι ζῆν Εὐκτήμονα, ἐκ πατραδέλφων ἀνεψιὸν ὄντα Πολέμωνι τῷ πατρὶ Ἁγνίου, καὶ μὴ ἀμφισβητῆσαι Εὐκτήμονα Εὐβουλίδῃ τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου, μηδ' ἄλλον μηδένα κατὰ γένος τότε.

44 ΑΛΛΗ. *Μαρτυροῦσι τὸν πατέρα τὸν ἑαυτῶν Στράτωνα συγγενῆ εἶναι Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου καὶ Χαριδήμῳ τῷ πατρὶ τῷ Θεοπόμπου καὶ Φιλάγρῳ τῷ πατρὶ τῷ Εὐβουλίδου, καὶ ἀκούειν τοῦ ἑαυτῶν πατρὸς ὅτι Φίλαγρος λάβοι γυναῖκα πρώτην μὲν Φυλομάχην ἀδελφὴν Πολέμωνος τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου ὁμοπατρίαν καὶ ὁμομητρίαν, καὶ γενέσθαι Φιλάγρῳ ἐκ μὲν τῆς Φυλομάχης Εὐβουλίδην, ἀποθανούσης δὲ Φυλομάχης ἑτέραν λαβεῖν γυναῖκα Φίλαγρον Τελεσίππην, καὶ γενέσθαι ὁμοπάτριον μὲν ἀδελφὸν Εὐβουλίδῃ Μενεσθέα, ὁμομήτριον δὲ μή· καὶ Εὐβουλίδου ἀμφισβητήσαντος τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου κατὰ γένος Μενεσθέα μὴ ἀμφισβητῆσαι τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου, μηδ' Εὐκτήμονα τὸν ἀδελφὸν τὸν Φιλάγρου, μηδ' ἄλλον μηδένα κατὰ γένος πρὸς Εὐβουλίδην τότε.*

45 ΑΛΛΗ. *Μαρτυρεῖ τὸν πατέρα τὸν ἑαυτοῦ Ἀρχίλοχον συγγενῆ εἶναι Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου καὶ Χαριδήμῳ τῷ πατρὶ τῷ Θεοπόμπου καὶ Φιλάγρῳ τῷ πατρὶ τῷ Εὐβουλίδου, καὶ ἀκούειν τοῦ πατρὸς τοῦ ἑαυτῶν ὅτι Φίλαγρος λάβοι γυναῖκα πρώτην μὲν Φυλομάχην ἀδελφὴν Πολέμωνος τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου ὁμοπατρίαν καὶ ὁμομητρίαν, καὶ γενέσθαι ἐκ μὲν Φυλομάχης Εὐβουλίδην, ἀποθανούσης δὲ Φυλομάχης ‖ ἑτέραν λαβεῖν γυναῖκα Φίλαγρον Τελεσίππην, καὶ γενέσθαι Φιλάγρῳ ἐκ Τελεσίππης Μενεσθέα, ὁμοπάτριον μὲν ἀδελφὸν Εὐβουλίδῃ, ὁμομήτριον δὲ μή· ἀμφισβητήσαντος δὲ ⟨τοῦ Εὐβουλίδου τοῦ κλήρου⟩ τοῦ Ἁγνίου κατὰ γένος Μενεσθέα μὴ ἀμφισβητῆσαι τοῦ κλήρου, μηδ' Εὐκτήμονα τὸν ἀδελφὸν Φιλάγρου, μηδ' ἄλλον μηδένα κατὰ γένος πρὸς Εὐβουλίδην τότε.*

46 ΑΛΛΗ. *Μαρτυρεῖ τὸν πατέρα τῆς ἑαυτοῦ μητρὸς Καλλίστρατον ἀδελφὸν εἶναι Εὐκτήμονι τῷ βασιλεύσαντι καὶ Φιλάγρῳ τῷ πατρὶ τῷ Εὐβουλίδου, ἀνεψιοὺς δ' εἶναι τούτους Πολέμωνι τῷ πατρὶ τῷ Ἁγνίου καὶ Χαριδήμῳ τῷ πατρὶ τῷ Θεοπόμπου, καὶ ἀκούειν τῆς μητρὸς τῆς ἑαυτοῦ ὅτι ἀδελφὸς οὐ γένοιτο Πολέμωνι τῷ πατρὶ Ἁγνίου, ἀδελφὴ δὲ γένοιτο ὁμοπατρία καὶ ὁμομητρία Φυλομάχη, καὶ ταύτην λάβοι τὴν Φυλομάχην Φίλαγρος, καὶ γένοιτο ἐξ αὐτῶν Εὐβουλίδης ὁ πατὴρ ὁ Φυλομάχης τῆς Σωσιθέου γυναικός.*

47 Ἀναγνῶναι μὲν τὰς μαρτυρίας ταύτας ἐξ ἀνάγκης ἦν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἵνα μὴ τὸ αὐτὸ πάθοιμεν ὅπερ τὸ πρότερον, ἀπαράσκευοι ληφθέντες ὑπὸ τούτων· πολὺ δὲ σαφέστερον ἔτι αὐτὸς αὑτοῦ Μακάρτατος οὑτοσὶ καταμαρτυρήσει ὅτι οὔτε Θεοπόμπῳ τῷ πατρὶ τῷ ἑαυτοῦ οὔτε

*αὐτῷ τούτῳ προσήκει οὐδενὸς κληρονομεῖν τῶν Ἁγνίου,
γένει ἀπωτέρω ὄντος τοῦ Θεοπόμπου καὶ οὐδ᾽ ἐκ τοῦ
αὐτοῦ οἴκου τὸ παράπαν. εἰ γάρ τις ἀνακρίνοι, ὦ ἄνδρες* 48
*δικασταί, οὑτοσὶ τίς ἐστιν ὁ ἀμφισβητῶν τῷ παιδὶ τούτῳ
τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου; εὖ οἶδ᾽ ὅτι ἀποκρίναιτ᾽ ἂν ὅτι
Μακάρτατος. τίνος ὢν πατρός; Θεοπόμπου. μητρὸς ‖ δὲ
τίνος; Ἀπολήξιδος θυγατρὸς Προσπαλτίου, ἀδελφῆς δὲ
Μακαρτάτου Προσπαλτίου. ὁ δὲ Θεόπομπος τίνος ἦν πα-
τρός; Χαριδήμου. ὁ δὲ Χαρίδημος τίνος; Στρατίου. ὁ δὲ
Στράτιος τίνος; Βουσέλου. οὑτοσὶ ὦ ἄνδρες δικασταί ἐστιν
ὁ Στρατίου οἶκος, ἑνὸς τῶν Βουσέλου υἱέων, καὶ ἔκγονοι
οὗτοί εἰσι Στρατίου, οὓς ὑμεῖς ἀκηκόατε· καὶ ἐνταῦθα
οὐδαμοῦ ἐστὶν οὐδὲν ὄνομα τῶν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ Ἁγνίου,
ἀλλ᾽ οὐδὲ παραπλήσιον. πάλιν δὴ ἀνακρίνω τὸν παῖδα* 49
*τουτονί, τίς ὢν ἀμφισβητεῖ Μακαρτάτῳ τοῦ κλήρου τοῦ
Ἁγνίου; οὐκ ἂν ἔχοι ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ὁτιοῦν
ἀποκρίνασθαι ὁ παῖς ἢ ὅτι Εὐβουλίδης. τίνος ὢν πατρός;
Εὐβουλίδου τοῦ Ἁγνίου ἀνεψιοῦ. μητρὸς δὲ τίνος; Φυλο-
μάχης, ἣ ἦν Ἁγνίᾳ ἀνεψιοῦ παῖς πρὸς πατρός. ὁ Εὐβου-
λίδης δὲ τίνος ἦν πατρός; Φιλάγρου τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ
Ἁγνίου. μητρὸς δὲ τίνος; Φυλομάχης τῆς τηθίδος τῆς
Ἁγνίου. ὁ δ᾽ Ἁγνίας τίνος ἦν υἱός; Πολέμωνος. ὁ δὲ
Πολέμων τίνος; Ἁγνίου. ὁ δ᾽ Ἁγνίας τίνος; Βουσέλου.
οὑτοσὶ ἕτερος οἶκός ἐστιν ὁ Ἁγνίου, ἑνὸς τῶν Βουσέλου* 50
*υἱέων, καὶ ἐνταῦθ᾽ οὐδ᾽ ὁτιοῦν ἔνεστι τὸ αὐτὸ ὄνομα τῶν
ἐν τῷ Στρατίου οἴκῳ ὄντων ἐκγόνων, ἀλλ᾽ οὐδὲ παρα-
πλήσιον· ἀλλ᾽ αὐτοὶ δι᾽ αὑτῶν πορεύονται ἐν τῷ οἴκῳ
τῷ Ἁγνίου, τὰ ὀνόματα παρ᾽ ἀλλήλων παραλαμβάνοντες.
πανταχῇ δὴ καὶ πάντα τρόπον ἐξελέγχονται ἐξ ἑτέρου
οἴκου καὶ γένει ἀπωτέρω ὄντες, καὶ οὐ προσῆκον αὐτοῖς
κληρονομεῖν οὐδενὸς τῶν Ἁγνίου· οἷς γὰρ δίδωσιν ὁ νο-
μοθέτης τὴν ἀγχιστείαν καὶ τὴν κληρονομίαν, τούτους
ἀναγνώσεται ὑμῖν τοὺς νόμους.*

‖ΝΟΜΟΙ. *Ὅστις ἂν μὴ διαθέμενος ἀποθάνῃ, ἐὰν μὲν παῖδας* 51
*καταλείπῃ θηλείας, σὺν ταύτῃσιν, ἐὰν δὲ μή, τούσδε κυρίους εἶναι
τῶν χρημάτων. ἐὰν μὲν ἀδελφοὶ ὦσιν ὁμοπάτορες καὶ ἐὰν παῖδες ἐξ
ἀδελφῶν γνήσιοι, τὴν τοῦ πατρὸς μοῖραν λαγχάνειν. ἐὰν δὲ μὴ ἀδελ-
φοὶ ὦσιν ἢ ἀδελφῶν παῖδες, ⟨ἀνεψιοὺς καὶ παῖδας⟩ ἐξ αὐτῶν κατὰ*

ταὐτὰ λαγχάνειν· κρατεῖν δὲ τοὺς ἄρρενας καὶ τοὺς ἐκ τῶν ἀρρένων, ἐὰν ἐκ τῶν αὐτῶν ὦσι, καὶ ἐὰν γένει ἀπωτέρω. ἐὰν δὲ μὴ ὦσι πρὸς πατρὸς μέχρι ἀνεψιῶν παίδων, τοὺς πρὸς μητρὸς τοῦ ἀνδρὸς κατὰ ταὐτὰ κυρίους εἶναι. ἐὰν δὲ μηδετέρωθεν ᾖ ἐντὸς τούτων, τὸν πρὸς πατρὸς ἐγγυτάτω κύριον εἶναι. νόθῳ δὲ μηδὲ νόθῃ μὴ εἶναι ἀγχιστείαν μήθ' ἱερῶν μήθ' ὁσίων ἀπ' Εὐκλείδου ἄρχοντος.

52 *Διαρρήδην λέγει ὁ νόμος ὦ ἄνδρες δικασταὶ οἷς δεῖ την κληρονομίαν εἶναι· οὐ μὰ Δί' οὐ Θεοπόμπῳ οὐδὲ Μακαρτάτῳ τῷ Θεοπόμπου υἱεῖ, τοῖς μηδὲ τὸ παράπαν ἐν τῷ οἴκῳ οὖσι τῷ Ἁγνίου. ἀλλὰ τίνι καὶ δίδωσιν; τοῖς ἐκγόνοις τοῖς Ἁγνίου, τοῖς οὖσιν ἐν τῷ οἴκῳ τῷ ἐκείνου. ταῦτα καὶ ὁ νόμος λέγει, καὶ τὸ δίκαιον οὕτως ἔχει.*

53 *Οὐ τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ταῦτα μὲν ἔδωκεν ὁ νομοθέτης τοῖς προσήκουσιν, ἕτερα δ' οὐ προσέταξεν ἐν τῷ νόμῳ, ἃ δεῖ ποιεῖν τοὺς προσήκοντας ἐπάναγκες· ἀλλὰ πολλὰ πάνυ ἐστὶν ἃ προστάττει ποιεῖν τοῖς προσήκουσι, καὶ πρόφασιν οὐδεμίαν δίδωσιν, ἀλλ' ἐξ ἀνάγκης δεῖ ποιεῖν. μᾶλλον δὲ λέγε αὐτὸν τὸν νόμον τὸν πρῶτον.*

54 ΝΟΜΟΣ. *Τῶν ἐπικλήρων ὅσαι θητικὸν τελοῦσιν, ἐὰν μὴ βούληται ἔχειν ὁ ἐγγύτατα γένους, ἐκδιδότω ἐπιδοὺς ὁ μὲν πεντακοσιομέδιμνος πεντακοσίας ‖ δραχμάς, ὁ δ' ἱππεὺς τριακοσίας, ὁ δὲ ζευγίτης ἑκατὸν πεντήκοντα, πρὸς οἷς αὐτῆς. ἐὰν δὲ πλείους ὦσιν ἐν τῷ αὐτῷ γένει, τῇ ἐπικλήρῳ πρὸς μέρος ἐπιδιδόναι ἕκαστον. ἐὰν δ' αἱ γυναῖκες πλείους ὦσι, μὴ ἐπάναγκες εἶναι πλέον ἢ μίαν ἐκδοῦναι τῷ γένει, ἀλλὰ τὸν ἐγγύτατα δεῖ ἐκδιδόναι ἢ αὐτὸν ἔχειν. ἐὰν δὲ μὴ ἔχῃ ὁ ἐγγυτάτω γένους ἢ μὴ ἐκδῷ, ὁ ἄρχων ἐπαναγκαζέτω ἢ αὐτὸν ἔχειν ἢ ἐκδοῦναι. ἐὰν δὲ μὴ ἐπαναγκάσῃ ὁ ἄρχων, ὀφειλέτω χιλίας δραχμὰς ἱερὰς τῇ Ἥρᾳ. ἀπογραφέτω δὲ τὸν μὴ ποιοῦντα ταῦτα ὁ βουλόμενος πρὸς τὸν ἄρχοντα.*

55 *Ἃ μὲν λέγει ὁ νόμος ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀκούετε· ὅτε δὲ τῆς ἐπικλήρου ἔδει ἐπιδικάζεσθαι Φυλομάχης τῆς τουτουὶ μητρὸς τοῦ παιδός, Ἁγνίου δ' ἀνεψιοῦ παιδὸς οὔσης πρὸς πατρός, ἐγὼ μὲν ἧκον φοβούμενος τὸν νόμον καὶ ἐπεδικαζόμην γένει ὢν ἐγγυτάτω, Θεόπομπος δ' ὁ Μακαρτάτου πατὴρ οὐδὲ προσῆλθε τὸ παράπαν οὐδ' ἠμφισβήτησε διὰ τὸ μηδ' ὁτιοῦν αὐτῷ προσήκειν, καὶ ταῦτ' ἐν τῇ*
56 *ἡλικίᾳ ὢν τῇ αὐτῇ. καίτοι πῶς οἴεσθε ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἄτοπον εἶναι τῆς μὲν ἐπικλήρου, ἣ ἦν Ἁγνίᾳ ἀνεψιοῦ παῖς πρὸς πατρός, ταύτης μὲν μηδεπώποτ' ἀμφισβητῆσαι*

Θεόπομπον, τὸν δὲ κλῆρον τοῦ Ἁγνίου ἀξιοῦν ἔχειν παρὰ τοὺς νόμους; τούτων γένοιντ' ἂν ἄνθρωποι ἀναισχυντότεροι; ἀναγίγνωσκε καὶ τοὺς ἑτέρους νόμους.

ΝΟΜΟΙ. *Προειπεῖν τῷ κτείναντι ἐν ἀγορᾷ ἐντὸς ἀνεψιότητος,* 57
συνδιώκειν δὲ καὶ ‖ ἀνεψιῶν παῖδας καὶ γαμβροὺς καὶ πενθεροὺς καὶ
φράτορας. ἐὰν δὲ αἰδέσασθαι δέῃ, ἐὰν μὲν πατὴρ ᾖ ἢ ἀδελφὸς ἢ υἱεῖς,
πάντας, ἢ τὸν κωλύοντα κρατεῖν. ἐὰν δὲ τούτων μηδεὶς ᾖ, κτείνῃ δ'
ἄκων, γνῶσι δ' οἱ πεντήκοντα καὶ εἷς ἄκοντα κτεῖναι, αἰδεσάσθων
οἱ φράτορες, ἐὰν θέλωσι, δέκα· τούτους δ' οἱ πεντήκοντα καὶ εἷς
ἀριστίνδην αἱρείσθων. καὶ οἱ πρότερον κτείναντες ἐν τῷδε τῷ
θεσμῷ ἐνεχέσθων.

Τοὺς δ' ἀπογιγνομένους ἐν τοῖς δήμοις, οὓς ἂν μηδεὶς ἀναιρῆται,
ἐπαγγελλέτω ὁ δήμαρχος τοῖς προσήκουσιν ἀναιρεῖν καὶ θάπτειν καὶ
καθαίρειν τὸν δῆμον, τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἀπογένηται ἕκαστος αὐτῶν.
ἐπαγγέλλειν δὲ περὶ μὲν τῶν δούλων τῷ δεσπότῃ, περὶ δὲ τῶν ἐλευ- 58
θέρων τοῖς τὰ χρήματ' ἔχουσιν· ἐὰν δὲ μὴ ᾖ χρήματα τῷ ἀποθα-
νόντι, τοῖς προσήκουσι τοῦ ἀποθανόντος ἐπαγγέλλειν. ἐὰν δὲ τοῦ
δημάρχου ἐπαγγείλαντος μὴ ἀναιρῶνται οἱ προσήκοντες, ὁ μὲν δήμ-
αρχος ἀπομισθωσάτω ἀνελεῖν καὶ καταθάψαι καὶ καθᾶραι τὸν δῆ-
μον αὐθημερόν, ὅπως ἂν δύνωνται ὀλιγίστου· ἐὰν δὲ μὴ ἀπομι-
σθώσῃ, ὀφειλέτω χιλίας δραχμὰς τῷ δημοσίῳ. ὅ τι δ' ἂν ἀναλώσῃ,
διπλάσιον πραξάσθω παρὰ τῶν ὀφειλόντων· ἐὰν δὲ μὴ πράξῃ,
αὐτὸς ὀφειλέτω τοῖς δημόταις.

Τοὺς δὲ μὴ ἀποδιδόντας τὰς μισθώσεις τῶν τεμενῶν τῶν τῆς θεοῦ καὶ τῶν ἄλλων θεῶν καὶ τῶν ἐπωνύμων ἀτίμους εἶναι καὶ αὐτοὺς καὶ γένος καὶ κληρονόμους τοὺς τούτων, ἕως ἂν ἀποδῶσιν.

‖ Ταῦτα πάνθ', ὅσα οἱ νόμοι προστάττουσι τοὺς προσ- 59
ήκοντας ποιεῖν, ἡμῖν προστάττουσι καὶ ἀναγκάζουσι ποι-
εῖν, ὦ ἄνδρες δικασταί. Μακαρτάτῳ δὲ τούτῳ οὐδὲν δια-
λέγονται οὐδὲ Θεοπόμπῳ τῷ πατρὶ τῷ τούτου· οὐδὲ γάρ
εἰσιν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ Ἁγνίου τὸ παράπαν· πῶς ἂν οὖν
τούτοις τι προστάττοιεν;

Ἀλλ' οὗτος ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρὸς μὲν τοὺς νόμους 60
καὶ τὰς μαρτυρίας, ἃς ἡμεῖς παρεχόμεθα, δίκαιον οὐδ'
ὁτιοῦν ἔχει λέγειν, ἀγανακτεῖ δὲ καὶ δεινά φησι πάσχειν
ὅτι τοῦ πατρὸς τετελευτηκότος ἀγωνίζεται. ἐκεῖνο δ' οὐκ
ἐνθυμεῖται, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτι ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἄν-
θρωπος ἦν θνητὸς καὶ τετελεύτηκε μετ' ἄλλων πολλῶν
καὶ νεωτέρων καὶ πρεσβυτέρων. ἀλλ' εἰ Θεόπομπος τετε-
λεύτηκεν ὁ τουτουὶ πατήρ, οἱ νόμοι οὐ τετελευτήκασιν,

οὐδὲ τὸ δίκαιον, οὐ τετελεύτηκεν, οὐδ' οἱ δικασταὶ οἱ τὴν
61 ψῆφον ἔχοντες. ἔστι δ' ὁ νῦν ἀγὼν καὶ ἡ διαδικασία οὐκ εἴ τις ἕτερος ἑτέρου πρότερος ἢ ὕστερος τετελεύτηκεν, ἀλλ' εἰ μὴ προσήκει ἐξελαθῆναι ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ Ἁγνίου τοὺς οἰκείους τοὺς Ἁγνίου, ἀνεψιοὺς ὄντας καὶ ἀνεψιῶν παῖδας Ἁγνίᾳ πρὸς πατρός, ὑπὸ τῶν ἐκ τοῦ Στρατίου οἴκου καὶ μηδὲν προσηκόντων ὥστε κληρονομεῖν τῶν Ἁγνίου, ἀλλὰ γένει ἀπωτέρω ὄντων. περὶ τούτου νῦν ἐστὶν ὁ ἀγών.

62 Ἔτι δὲ σαφέστερον γνώσεσθε ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ ἐκ τοῦδε τοῦ νόμου ὅτι Σόλων ὁ νομοθέτης σπουδάζει περὶ τοὺς οἰκείους, καὶ οὐ μόνον δίδωσι τὰ καταλειφθέντα, ἀλλὰ καὶ προστάγματα ποιεῖται τὰ δυσχερῆ ἅπαντα τοῖς προσήκουσιν. λέγε τὸν νόμον.

‖ ΝΟΜΟΣ. Τὸν ἀποθανόντα προτίθεσθαι ἔνδον, ὅπως ἂν βούληται. ἐκφέρειν δὲ τὸν ἀποθανόντα τῇ ὑστεραίᾳ ᾗ ἂν προθῶνται, πρὶν ἥλιον ἐξέχειν. βαδίζειν δὲ τοὺς ἄνδρας πρόσθεν, ὅταν ἐκφέρωνται, τὰς δὲ γυναῖκας ὄπισθεν. γυναῖκα δὲ μὴ ἐξεῖναι εἰσιέναι εἰς τὰ τοῦ ἀποθανόντος μηδ' ἀκολουθεῖν ἀποθανόντι, ὅταν εἰς τὰ σήματα ἄγηται, ἐντὸς ἑξήκοντ' ἐτῶν γεγονυῖαν, πλὴν ὅσαι ἐντὸς ἀνεψιαδῶν εἰσί· μηδ' εἰς τὰ τοῦ ἀποθανόντος εἰσιέναι, ἐπειδὰν ἐξενεχθῇ ὁ νέκυς, γυναῖκα μηδεμίαν πλὴν ὅσαι ἐντὸς ἀνεψιαδῶν εἰσίν.

63 Οὐκ ἐᾷ εἰσιέναι, οὗ ἂν ᾖ ὁ τετελευτηκώς, οὐδεμίαν γυναῖκα ἄλλην ἢ τὰς προσηκούσας μέχρι ἀνεψιότητος, καὶ πρὸς τὸ μνῆμα ἀκολουθεῖν τὰς αὐτὰς ταύτας. Φυλομάχη τοίνυν ἡ Πολέμωνος ἀδελφὴ τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου οὐκ ἀνεψιὰ ἦν Ἁγνίᾳ ἀλλὰ τηθίς· ἀδελφὴ γὰρ ἦν Πολέμωνος τοῦ πατρὸς τοῦ Ἁγνίου. Εὐβουλίδης δὲ ὁ υἱὸς ταύτης τῆς γυναικὸς ἀνεψιὸς ἦν πρὸς πατρὸς Ἁγνίᾳ οὗ ἐστὶν ὁ κλῆρος. τοῦ δ' Εὐβουλίδου ἦν θυγάτηρ ἡ τούτου τοῦ παιδὸς
64 μήτηρ. ταύτας κελεύει τὰς προσηκούσας καὶ παρεῖναι τῇ προθέσει τοῦ τετελευτηκότος καὶ ἐπὶ τὸ μνῆμα ἀκολουθεῖν, οὐ τὴν Μακαρτάτου μητέρα οὐδὲ τὴν Θεοπόμπου γυναῖκα· οὐδὲν γὰρ προσήκουσιν Ἁγνίᾳ αὗται, ἀλλ' ἦσαν ἐξ ἑτέρας φυλῆς Ἀκαμαντίδος καὶ ἐξ ἑτέρου δήμου Προσπαλτόθεν, ὥστε τὸ παράπαν οὐδ' ᾔσθοντο ὅτε ἦν τετε-
65 λευτηκὼς Ἁγνίας. ὑπεραναίσχυντον δὴ οὗτοι κατασκευάζουσι πρᾶγμα, ὡς ἄρα δεῖ ἡμᾶς καὶ τὰς γυναῖκας τὰς

ἡμετέρας τοῦ μὲν σώματος τοῦ ‖ Ἁγνίου, ὅτε ἐτετελευτή-
κει, κληρονόμους εἶναι καὶ ποιεῖν ἅπαντα τὰ νομιζόμενα
ὡς προσήκοντας καὶ γένει ὄντας ἐγγυτάτω, τὸν δὲ κλῆρον
οἴεσθαι δεῖν ἔχειν τὸν Ἁγνίου τοῦ τετελευτηκότος Μακάρ-
τατον, ἐκ τοῦ Στρατίου οἴκου ὄντα καὶ ἐκ τῆς Ἀπολήξιδος
τοῦ Προσπαλτίου θυγατρός, Μακαρτάτου δ' ἀδελφῆς. ἀλλ'
οὔτε δίκαιον οὔθ' ὅσιον τοῦτ' ἐστίν, ὦ ἄνδρες δικασταί.

Ἀνάγνωθι δέ μοι τὰ ἐκ τῆς μαντείας τῆς ἐκ Δελφῶν 66
κομισθείσης παρὰ τοῦ θεοῦ, ἵν' αἴσθησθε ὅτι ταὐτὰ λέγει
περὶ τῶν προσηκόντων τοῖς νόμοις τοῖς τοῦ Σόλωνος.

ΜΑΝΤΕΙΑ. *Ἀγαθῇ τύχῃ. ἐπερωτᾷ ὁ δῆμος ὁ Ἀθηναίων περὶ τοῦ σημείου τοῦ ἐν τῷ οὐρανῷ γενομένου, ὅ τι ἂν δρῶσιν Ἀθηναίοις ἢ ὅτῳ θεῷ θύουσιν ἢ εὐχομένοις εἴη ἐπὶ τὸ ἄμεινον ἀπὸ τοῦ σημείου. συμφέρει Ἀθηναίοις περὶ τοῦ σημείου τοῦ ἐν τῷ οὐρανῷ γενομένου θύοντας καλλιερεῖν Διὶ ὑπάτῳ, Ἀθηνᾷ ὑπάτῃ, Ἡρακλεῖ, Ἀπόλλωνι σωτῆρι, καὶ ἀποπέμπειν Ἀμφιόνεσσι περὶ τύχας ἀγαθᾶς, Ἀπόλλωνι ἀγυιεῖ, Λητοῖ, Ἀρτέμιδι, καὶ τὰς ἀγυιὰς κνισῆν, καὶ κρατῆρας ἱστάμεν καὶ χορούς, καὶ στεφανηφορεῖν καττὰ πάτρια θεοῖς Ὀλυμπίοις καὶ Ὀλυμπίαις πάντεσσι καὶ πάσαις, δεξιὰς καὶ ἀριστερὰς ἀνίσχοντας, μνασιδωρεῖν καττὰ πάτρια· ἥρῳ ἀρχηγέτᾳ, οὗ ἐπώνυμοί ἐστε, θύειν καὶ δωροτελεῖν καττὰ πάτρια· τοῖς ἀποφθιμένοις ἐν ἱκνουμένᾳ ἁμέρᾳ τελεῖν τοὺς ποθήκοντας καττὰ ἀγημένα.*

Ἀκούετε ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι ταὐτὰ λέγει ὅ τε Σό- 67
λων ἐν τοῖς νόμοις καὶ ὁ θεὸς ἐν τῇ ‖ μαντείᾳ, κελεύων
τοῖς κατοιχομένοις ποιεῖν τοὺς προσήκοντας ἐν ταῖς καθ-
ηκούσαις ἡμέραις. ἀλλὰ τούτων οὐδὲν ἔμελε Θεοπόμπῳ
οὐδὲ Μακαρτάτῳ τούτῳ, ἀλλὰ τοῦτο μόνον, τὰ μὴ προσ-
ήκοντα ἑαυτοῖς ἔχειν, καὶ ἐγκαλεῖν ὅτι πολὺν χρόνον ἐχόν-
των ἑαυτῶν τὸν κλῆρον νυνὶ ἀγωνίζονται. ἐγὼ δ' ᾤμην ὦ
ἄνδρες δικασταὶ προσήκειν τὸν τἀλλότρια ἀδίκως ἔχοντα
οὐκ ἐγκαλεῖν εἰ πλείω χρόνον εἶχεν, ἀλλὰ χάριν εἰδέναι,
μὴ ἡμῖν ἀλλὰ τῇ τύχῃ, ὅτι πολλαὶ καὶ ἀναγκαῖαι διατρι-
βαὶ ἐγένοντο ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ, ὥστε νῦν περὶ τούτων
ἀγωνίζεσθαι.

Οὗτοι μὲν οὖν τοιοῦτοί εἰσιν ἄνθρωποι, ὦ ἄνδρες δι- 68
κασταί, καὶ μέλει αὐτοῖς οὐδὲν οὔτε τοῦ οἴκου ἐξερημου-
μένου τοῦ Ἁγνίου οὔτε τῶν ἄλλων ὅσα παρανομοῦσιν·
οἵτινές γε, ὦ Ζεῦ καὶ θεοί, τὰ μὲν ἄλλα τί ἄν τις λέγοι
περὶ τούτων; πολλὰ γὰρ ἂν εἴη λέγειν· ἓν δ' ὃ παρανο-

μώτατον καὶ μιαρώτατον διαπεπραγμένοι εἰσί, καὶ μάλιστ᾽ ἐνδεικνύμενοι ὅτι οὐδὲν αὐτοῖς μέλει πλὴν τοῦ
69 πλεονεκτεῖν. οὐ γὰρ ἔφθη Θεόπομπος τὴν ἐπιδικασίαν ποιησάμενος τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου τὸν τρόπον τοῦτον ὃν ὑμεῖς ἀκηκόατε, καὶ εὐθὺς ἐνεδείξατο ὅτι τὰ οὐδὲν προσήκονθ᾽ ἑαυτῷ ἔχειν ἐνόμιζεν. ὃ γὰρ ἦν πλείστου ἄξιον ἐν τοῖς χωρίοις τοῖς Ἁγνίου καὶ ἐθαυμάζετο μάλιστα ὑπὸ τῶν προσχώρων καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων, αἱ ἐλαῖαι, ταύτας ἐξώρυττον καὶ ἐξεπρέμνιζον, πλεῖον ἢ χίλια στελέχη, ὅθεν ἔλαιον ὑπέρπολυ ἐγίγνετο. καὶ ταύτας οὗτοι ἀπέδοντο ἐκπρεμνίσαντες, καὶ ἀργύριον ὑπέρπολυ ἔλαβον. καὶ ‖ ταῦτ᾽ ἐποίουν οὗτοι ἐπιδίκου ὄντος τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου κατὰ τὸν νόμον καθ᾽ ὅνπερ οὗτοι τὴν
70 τουτουὶ μητέρα προσεκαλέσαντο. ὅτι δὲ ταῦτ᾽ ἀληθῆ λέγω καὶ ἐξεπρέμνισαν οὗτοι τὰς ἐλαίας ἐκ τῶν χωρίων ὧν Ἁγνίας κατέλιπε, μάρτυρας ὑμῖν τούτων παρεξόμεθα τούς τε προσχώρους καὶ τῶν ἄλλων οὓς παρεκαλέσαμεν, ὅτ᾽ ἐπεμαρτυρόμεθα περὶ τούτων. λέγε τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσιν ἀκολουθῆσαι Ἀραφηνάδε παρακληθέντες ὑπὸ Σωσιθέου εἰς τοὺς Ἁγνίου ἀγρούς, ἐπειδὴ Θεόπομπος ἐπεδικάσατο τοῦ κλήρου τοῦ Ἁγνίου, καὶ ἐπιδεικνύναι αὐτοῖς Σωσίθεον τὰς ἐλαίας πρεμνιζομένας ἐκ τοῦ Ἁγνίου ἀγροῦ.*

71 Εἰ μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸν τετελευτηκότα μόνον ὕβριζον ταῦτα διαπραξάμενοι, δεινὰ μὲν ἐποίουν, ἧττον δέ· νῦν δὲ καὶ εἰς ὅλην τὴν πόλιν ταυτὶ ὑβρίκασι καὶ παρανενομήκασιν. γνώσεσθε δέ, ἐπειδὰν τοῦ νόμου ἀκούσητε. ἀναγίγνωσκε τὸν νόμον.

ΝΟΜΟΣ. *Ἐάν τις ἐλάαν Ἀθήνησιν ἐξορύττῃ, ἐὰν μὴ εἰς ἱερὸν Ἀθηναίων δημόσιον ἢ δημοτικόν, ἢ ἑαυτῷ χρῆσθαι μέχρι δυοῖν ἐλάαιν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἑκάστου, ἢ ἐπὶ ἀποθανόντα δέῃ χρήσασθαι, ὀφείλειν ἑκατὸν δραχμὰς τῷ δημοσίῳ τῆς ἐλάας ἑκάστης. τὸ δὲ ἐπιδέκατον τούτου τῆς θεοῦ εἶναι. ὀφειλέτω δὲ καὶ τῷ ἰδιώτῃ τῷ ἐπεξιόντι ἑκατὸν δραχμὰς καθ᾽ ἑκάστην ἐλάαν. τὰς δὲ δίκας εἶναι περὶ τούτων πρὸς τοὺς ἄρχοντας, ὧν ἕκαστοι δικασταί εἰσι. πρυτανεῖα δὲ τιθέτω ὁ διώκων τοῦ αὐτοῦ μέρους. ὅτου δ᾽ ἂν καταγνωσθῇ, ἐγγραφόντων οἱ ἄρχοντες, ‖ πρὸς οὓς ἂν ᾖ ἡ δίκη, τοῖς πράκτορσιν, ὃ τῷ δημοσίῳ γίγνεται, ⟨ὃ δὲ τῇ θεῷ γίγνεται,⟩ τοῖς ταμίαις τῶν τῆς θεοῦ. ἐὰν δὲ μὴ ἐγγράφωσιν, αὐτοὶ ὀφειλόντων.*

72 Ὁ μὲν νόμος οὕτως ἰσχυρός· ἐκεῖνο δ᾽ ἐνθυμεῖσθε πρὸς

ὑμᾶς αὐτούς, ὦ ἄνδρες δικασταί, τί ποτ' οἴεσθ' ἡμᾶς πάσχειν ἐν τῷ παρεληλυθότι χρόνῳ ὑπὸ τούτων καὶ ὑπὸ τῆς ὕβρεως τῆς τούτων, ὅπου ὑμῶν, πόλεως τηλικαυτησί, κατεφρόνησαν καὶ τῶν νόμων τῶν ὑμετέρων, καὶ ἃ διαρρήδην ἀπαγορεύουσιν οἱ νόμοι μὴ ποιεῖν, οὑτωσὶ καταφρονητικῶς ᾐκίσαντο τὰ χωρία ἃ κατέλιπεν Ἁγνίας. ὁ δὲ νόμος ἀπαγορεύει μηδ' ἐκ τοῦ αὐτοῦ χωρίου, τοῦ πατρῴου, μηδὲν τούτων ποιεῖν. πολύ γε αὐτοῖς μέλει ἢ τοῖς νόμοις τοῖς ὑμετέροις πείθεσθαι, ἢ ὅπως μὴ ἐξερημωθήσεται ὁ οἶκος ὁ Ἁγνίου. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ βού- 73
λομαι περὶ ἐμαυτοῦ πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν διὰ βραχέων, καὶ ἐπιδεῖξαι ὅτι οὐχ ὁμοίως τούτοις ἐπιμέλειαν ἐποιησάμην τοῦ οἴκου τοῦ Ἁγνίου, ὅπως μὴ ἐξερημωθήσεται. καὶ αὐτὸς γάρ εἰμι τοῦ γένους τοῦ Βουσέλου· Ἅβρωνος γὰρ τοῦ Βουσέλου υἱέος ἔλαβε τὴν θυγατριδῆν Καλλίστρατος, Εὐβουλίδου μὲν υἱὸς ὢν Βουσέλου δ' υἱδοῦς, καὶ ἐκ τῆς Ἅβρωνος θυγατριδῆς καὶ Καλλιστράτου τοῦ ἀδελφιδοῦ τοῦ Ἅβρωνος ἐγένετο ἡ μήτηρ ἡ ἡμετέρα. ἐγὼ δ' ἐπειδὴ 74
ἐπεδικασάμην τῆς τούτου μητρὸς καὶ ἐγένοντό μοι υἱεῖς μὲν τέτταρες θυγάτηρ δὲ μία, τὰ ὀνόματα ἐθέμην τούτοις ὦ ἄνδρες δικασταὶ τῷ μὲν πρεσβυτάτῳ τὸ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμαυτοῦ ὄνομα, Σωσίαν, ὥσπερ καὶ δίκαιόν ἐστι, καὶ ἀπέδωκα τῷ πρεσβυτάτῳ τοῦτο τὸ ὄνομα· τῷ δὲ μετ' αὐτὸν ‖ γενομένῳ τούτῳ ἐθέμην Εὐβουλίδην, ὅπερ ἦν ὄνομα τῷ πατρὶ τῷ τῆς μητρὸς τοῦ παιδὸς τουτουί· τῷ δὲ μετὰ τοῦτον Μενεσθέα ἐθέμην (καὶ γὰρ ὁ Μενεσθεὺς οἰκεῖος ἦν τῆς ἐμῆς γυναικός)· τῷ δὲ νεωτάτῳ ἐθέμην ὄνομα Καλλίστρατον, ὃ ἦν ὄνομα τῷ πατρὶ τῆς ἐμῆς μητρός. ἔτι δὲ πρὸς τούτοις καὶ τὴν θυγατέρ' ἔδωκα οὐδαμόσε ἔξω, ἀλλὰ τῷ ἀδελφιδῷ τῷ ἐμαυτοῦ, ὅπως, ἐὰν ὑγιαίνωσι, καὶ οἱ ἐκ τούτων ἐκ τοῦ αὐτοῦ γένους ὦσιν Ἁγνίᾳ. ἐγὼ μὲν οὖν τοῦτον τὸν τρόπον διῴκησα, ὅπως 75
ἂν διασώζωνται ὅτι μάλιστα οἱ οἶκοι οἱ ἀπὸ τοῦ Βουσέλου· τούτους δ' ἐξετάσωμεν πάλιν. καὶ πρώτιστον μὲν τὸν νόμον τουτονὶ ἀνάγνωθι.

ΝΟΜΟΣ. *Ὁ ἄρχων ἐπιμελείσθω τῶν ὀρφανῶν καὶ τῶν ἐπικλήρων καὶ τῶν οἴκων τῶν ἐξερημουμένων καὶ τῶν γυναικῶν, ὅσαι μένουσιν*

ἐν τοῖς οἴκοις τῶν ἀνδρῶν τῶν τεθνηκότων φάσκδυσαι κυεῖν. τούτων ἐπιμελείσθω καὶ μὴ ἐάτω ὑβρίζειν μηδένα περὶ τούτους. ἐὰν δέ τις ὑβρίζῃ ἢ ποιῇ τι παράνομον, κύριος ἔστω ἐπιβάλλειν κατὰ τὸ τέλος. ἐὰν δὲ μείζονος ζημίας δοκῇ ἄξιος εἶναι, προσκαλεσάμενος πρόπεμπτα καὶ τίμημα ἐπιγραψάμενος, ὅ τι ἂν δοκῇ αὐτῷ, εἰσαγαγέτω εἰς τὴν ἡλιαίαν. ἐὰν δ' ἁλῷ, τιμάτω ἡ ἡλιαία περὶ τοῦ ἁλόντος, ὅ τι χρὴ αὐτὸν παθεῖν ἢ ἀποτῖσαι.

76 Πῶς ἂν μᾶλλον ἐξερημώσαιεν ἄνθρωποι οἶκον, ἢ εἴ
τινες τοὺς γένει ὄντας ἐγγυτάτω Ἁγνίᾳ, τούτους ἐξελαύ-
νοιεν ἐξ ἑτέρου οἴκου ὄντες, τοῦ Στρατίου; καὶ πάλιν εἰ
τὸν μὲν κλῆρον ἀξιοῖ ἔχειν τὸν Ἁγνίου ὡς γένει προσήκων,
τὸ δ' ὄνομα ὅ ἐστιν αὐτῷ, μὴ ὅτι ἐκ τοῦ Ἁγνίου οἴκου,
ἀλλ' ‖ οὐδ' ἐκ τοῦ Στρατίου ἐστὶ τοῦ ἑαυτοῦ προγόνου.
οὐδ' ἐκ τῶν ἄλλων ἀπογόνων τῶν Βουσέλου, τοσούτων
77 γενομένων, οὐδενὸς ἔχει τὸ ὄνομα. ἀλλὰ πόθεν δή ἐστι
τὸ ὄνομα ὁ Μακάρτατος; ἐκ τῶν πρὸς μητρός. εἰσεποιήθη
γὰρ οὗτος εἰς τὸν οἶκον τὸν Μακαρτάτου τοῦ Προσπαλτίου,
ἀδελφοῦ ὄντος τῆς μητρὸς τῆς τούτου, καὶ ἔχει καὶ ἐκεῖ-
νον τὸν οἶκον. καὶ οὕτως ἐστὶν ὑβριστὴς ὥστε γενομένου
αὐτῷ υἱέος τοῦτον μὲν εἰσαγαγεῖν εἰς τὸν οἶκον τὸν Ἁγνίου
υἱὸν τῷ Ἁγνίᾳ ἐπελάθετο, καὶ ταῦτ' ἔχων τὸν κλῆρον τὸν
78 Ἁγνίου καὶ φάσκων πρὸς ἀνδρῶν αὐτῷ προσήκειν· τοῦτον
δὲ τὸν υἱὸν τὸν γενόμενον τῷ Μακαρτάτῳ εἰσπεποίηκε τῷ
πρὸς μητρὸς εἰς τοὺς Προσπαλτίους, τὸν δὲ Ἁγνίου οἶκον
εἴακεν ἔρημον εἶναι τὸ τούτου μέρος· φησὶ δὲ τὸν πατέρα
τὸν ἑαυτοῦ Θεόπομπον προσήκειν Ἁγνίᾳ. ὁ δὲ νόμος κε-
λεύει ὁ τοῦ Σόλωνος κρατεῖν τοὺς ἄρρενας καὶ τοὺς ἐκ
τῶν ἀρρένων· οὗτος δ' οὑτωσὶ ῥᾳδίως κατεφρόνησε καὶ
τῶν νόμων καὶ τοῦ Ἁγνίου, καὶ εἰσεποίησε τὸν υἱὸν εἰς
τὸν οἶκον τὸν πρὸς μητρός. πῶς ἂν γένοιντο τούτων ἄν-
θρωποι παρανομώτεροι ἢ βιαιότεροι;
79 Οὐ τοίνυν ταῦτα μόνον, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἀλλὰ καὶ
μνήματος ὄντος κοινοῦ ἅπασι τοῖς ἀπὸ τοῦ Βουσέλου
γενομένοις (καὶ καλεῖται τὸ μνῆμα Βουσελιδῶν, πολὺς
τόπος περιβεβλημένος, ὥσπερ οἱ ἀρχαῖοι ἐνόμιζον) ἐν
τούτῳ τῷ μνήματι οἱ μὲν ἄλλοι ἅπαντες οἱ ἀπὸ τοῦ Βου-
σέλου κεῖνται, καὶ ὁ Ἁγνίας καὶ ὁ Εὐβουλίδης καὶ ὁ Πο-
λέμων καὶ οἱ ἄλλοι πάντες τοσοῦτοι ὄντες συγγενεῖς, οἱ

ἀπὸ τοῦ Βουσέλου, ἅπαντες οὗτοι κοινωνοῦσι τοῦ μνήμα-
τος τούτου· ‖ ὁ δὲ τουτουὶ πατὴρ Μακαρτάτου καὶ ὁ πάπ- 80
πος οὐ κεκοινωνήκασι τούτου, ἀλλ' αὐτοῖς ἰδίᾳ ἐποιήσαντο
μνῆμα ἄποθεν τοῦ Βουσελιδῶν μνήματος. δοκοῦσιν ὑμῖν
ὦ ἄνδρες δικασταὶ προσήκειν τι τῷ οἴκῳ τῷ Ἁγνίου, πλὴν
τοῦ ἔχειν ἁρπάσαντες τὰ μὴ προσήκοντα; εἰ δ' ἐξερημω-
θήσεται ἢ ἀνώνυμος ἔσται ὁ οἶκος ὁ Ἁγνίου καὶ ὁ Εὐβου-
λίδου τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Ἁγνίου, οὐδὲ κατὰ τοὐλάχιστον
πώποτ' αὐτοῖς ἐμέλησεν.
Ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ βοηθῶ μὲν ὡς οἷός τ' εἰμὶ 81
μάλιστα τοῖς τετελευτηκόσιν ἐκείνοις, οὐ πάνυ δ' ἐστὶ
ῥᾴδιον ταῖς τούτων παρασκευαῖς ἀνταγωνίζεσθαι. παρα-
δίδωμι οὖν ὑμῖν τὸν παῖδα τουτονί, ὦ ἄνδρες δικασταί,
ἐπιμεληθῆναι ὅπως ὑμῖν δοκεῖ δικαιότατον εἶναι. οὗτος
εἰσπεποίηται εἰς τὸν οἶκον τὸν Εὐβουλίδου, καὶ εἰσῆκται
εἰς τοὺς φράτορας, οὐκ εἰς τοὺς ἐμοὺς ἀλλ' εἰς τοὺς Εὐ-
βουλίδου καὶ Ἁγνίου καὶ Μακαρτάτου. καὶ ὅτε εἰσήγετο, 82
οἱ μὲν ἄλλοι φράτορες κρύβδην ἔφερον τὴν ψῆφον, οὑτοσὶ
δὲ Μακάρτατος φανερᾷ ψήφῳ ἐψηφίσατο ὀρθῶς εἰσάγε-
σθαι Εὐβουλίδῃ υἱὸν τὸν παῖδα τουτονί, οὐκ ἐθελήσας
ἅψασθαι τοῦ ἱερείου οὐδ' ἀπαγαγεῖν ἀπὸ τοῦ βωμοῦ,
ὑπεύθυνον αὑτὸν ποιήσας· ἀλλὰ καὶ τὴν μερίδα τῶν κρεῶν
ᾤχετο λαβὼν παρὰ τοῦ παιδὸς τουτουί, ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι
φράτορες. νομίζετε δὴ τὸν παῖδα τοῦτον ὦ ἄνδρες δικα- 83
σταὶ ἱκετηρίαν ὑμῖν προκεῖσθαι ὑπὲρ τῶν τετελευτηκότων
Ἁγνίου καὶ Εὐβουλίδου καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἀπὸ τοῦ
Ἁγνίου, καὶ ἱκετεύειν αὐτοὺς ὑμᾶς τοὺς δικαστὰς ὅπως
μὴ ἐξερημωθήσεται αὐτῶν ὁ οἶκος ὑπὸ τῶν μιαρῶν τού-
των ‖ θηρίων, οἵ εἰσιν ἐκ τοῦ Στρατίου οἴκου, ἐκ δὲ τοῦ
Ἁγνίου οὐδεπώποτ' ἐγένοντο· μηδ' ἐπιτρέψητε τούτοις
ἔχειν τὰ μὴ προσήκοντα, ἀλλ' ἀποδοῦναι ἀναγκάσατε εἰς
τὸν Ἁγνίου οἶκον τοῖς προσήκουσι τοῖς Ἁγνίου. ἐγὼ μὲν 84
οὖν ἐκείνοις τε βοηθῶ τοῖς τετελευτηκόσι καὶ τοῖς νόμοις
τοῖς περὶ τούτων κειμένοις, δέομαι δὲ καὶ ὑμῶν ὦ ἄνδρες
δικασταὶ καὶ ἱκετεύω καὶ ἀντιβολῶ, μὴ περιίδητε μήτε
τὸν παῖδα τουτονὶ ὑβρισθέντα ὑπὸ τούτων, μήτε τοὺς
προγόνους τοὺς τούτου ἔτι μᾶλλον καταφρονουμένους ἢ

νῦν καταπεφρόνηνται, ἐὰν διαπράξωνται οὗτοι ἃ βούλονται· ἀλλὰ τοῖς τε νόμοις βοηθεῖτε καὶ τῶν τετελευτηκότων ἐπιμελεῖσθε, ὅπως μὴ ἐξερημωθῇ αὐτῶν ὁ οἶκος. καὶ ταῦτα ποιοῦντες τά τε δίκαια ψηφιεῖσθε καὶ τὰ εὔορκα καὶ τὰ ὑμῖν αὐτοῖς συμφέροντα.

ΠΡΟΣ ΛΕΩΧΑΡΗ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ἀρχιάδου τελευτήσαντος ἄπαιδος Λεωκράτης κατέσχε τὸν κλῆρον, συγγενής τε ὢν αὐτοῦ καὶ εἰσπεποιῆσθαι λέγων ὑπὸ Ἀρχιάδου. καὶ μέχρι μέν τινος αὐτὸς κατεῖχεν, ἔπειτα τὸν υἱὸν τὸν ἑαυτοῦ Λεώστρατον εἰσποιήσας ἀνθ' αὑτοῦ τῷ Ἀρχιάδῃ ἐξίσταται τοῦ οἴκου καὶ εἰς τὸν οἰκεῖον ἀνεχώρησεν, ὡς ἄδειαν δεδωκότος τούτων τοῦ νόμου. ἐποίησε δὲ ταὐτὸ καὶ ὁ Λεώστρατος, καὶ ἀνθ' αὑτοῦ καταλιπὼν ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Ἀρχιάδου παῖδα Λεωκράτην καλούμενον ἐπανῆλθεν || αὐτὸς εἰς τὴν οἰκίαν τὴν τοῦ φύσει πατρός. ὁ μὲν δὴ Λεωκράτης ὁ τελευταῖος εἰσποιηθεὶς τῷ Ἀρχιάδῃ τέθνηκεν ἄπαις, προσελήλυθε δὲ τῷ κλήρῳ Ἀριστόδημος, λέγων ἐγγύτατα τοῦ γένους εἶναι τῷ Ἀρχιάδῃ, οὗπερ ἦν ὁ κλῆρος ἐξ ἀρχῆς, καὶ δι' ἐκεῖνον τῷ Λεωκράτει τῷ τελευταίῳ τῶν εἰσποιηθέντων. Λεωχάρης δὲ ὁ ἀδελφὸς τοῦ τεθνηκότος ἀμφισβητεῖ τοῦ κλήρου, τὸ μὲν ὅλον ἰσχυριζόμενος ποιήσει ὡς υἱὸς ποιητὸς ὢν τοῦ Λεωκράτους, φάσκων δὲ εἶναι καὶ συγγενὴς Ἀρχιάδου. ὁ δὲ ὑπὲρ Ἀριστοδήμου λέγων ἐπιδείκνυσι τὴν μὲν τοῦ γένους ἀγχιστείαν Ἀριστοδήμῳ διδοῦσαν τὸν κλῆρον, τὴν δὲ ποίησιν παράπλαστον οὖσαν· οὐ γὰρ ζῶν, φησίν, ὁ Λεωκράτης ἐποιήσατο παῖδα τὸν Λεωχάρη, καθάπερ οἱ νόμοι κελεύουσιν, ἀλλὰ μετὰ τὴν ἐκείνου τελευτὴν ἐπ' ἀποστερήσει τῆς οὐσίας παρὰ τοὺς νόμους ἡ εἰσποίησις γίνεται. λέγει δὲ τὸν λόγον ὁ τοῦ Ἀριστοδήμου υἱός.*

Αἴτιος μέν ἐστι Λεωχάρης οὑτοσὶ ὦ ἄνδρες δικασταὶ
τοῦ καὶ αὐτὸν κρίνεσθαι καὶ ἐμὲ νεώτερον ὄντα λέγειν ἐν
ὑμῖν, ἀξιῶν κληρονομεῖν ὧν οὐ προσῆκεν αὐτῷ, καὶ ὑπὲρ
τούτων ψευδῆ διαμαρτυρίαν πρὸς τῷ ἄρχοντι ποιησάμε-
2 νος. ἡμῖν μὲν γὰρ || ἀναγκαῖον ἦν, τοῦ νόμου τὰς ἀγχι-
στείας τοῖς ἐγγυτάτω γένους ἀποδιδόντος, οὖσιν οἰκείοις
Ἀρχιάδου τοῦ ἐξ ἀρχῆς καταλιπόντος τὸν κλῆρον, μήτε
τὸν οἶκον ἐξερημωθέντα τὸν ἐκείνου περιιδεῖν μήτε τῆς
οὐσίας ἑτέρους κληρονομήσαντας, οἷς οὐδ' ὁτιοῦν προσή-
κει· οὑτοσὶ δὲ οὔτε γένει τοῦ τετελευτηκότος υἱὸς ὢν οὔτ'
εἰσποιηθεὶς κατὰ τοὺς νόμους, ὡς ἐγὼ δείξω, διαμεμαρ-
τύρηκεν οὕτω τὰ ψευδῆ προπετῶς, ἀφαιρούμενος ἡμῶν

τὴν κληρονομίαν. δέομαι δ' ὑμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ βοη- 3
θῆσαι τῷ τε πατρὶ τούτῳ καὶ ἐμοί, ἐὰν λέγωμεν τὰ δί-
καια, καὶ μὴ περιιδεῖν πένητας ἀνθρώπους καὶ ἀσθενεῖς
καταστασιασθέντας ὑπὸ παρατάξεως ἀδίκου. ἡμεῖς μὲν
γὰρ ταῖς ἀληθείαις πιστεύοντες εἰσεληλύθαμεν, καὶ ἀγα-
πῶντες ἄν τις ἡμᾶς ἐᾷ τῶν νόμων τυγχάνειν· οὗτοι δὲ τῇ
παρασκευῇ καὶ τοῖς ἀναλώμασιν ἰσχυριζόμενοι διατετελέ-
κασιν, εἰκότως, οἶμαι· ἐκ γὰρ τῶν ἀλλοτρίων ῥᾳδίως ἀνα-
λίσκουσιν, ὥστε καὶ τοὺς συνεροῦντας ὑπὲρ αὑτῶν καὶ τοὺς
μαρτυροῦντας τὰ ψευδῆ πολλοὺς πεπορίσθαι. ὁ δὲ πατὴρ 4
οὗτος (εἰρήσεται γάρ) ἅμα τῆς πενίας, ὡς ὑμεῖς ἅπαντες
ἴστε, καὶ τοῦ ἰδιώτης εἶναι φανερὰς ἔχων τὰς μαρτυρίας
ἀγωνίζεται· διατελεῖ γὰρ ἐν Πειραιεῖ κηρύττων, τοῦτο δ'
ἐστὶν οὐ μόνον ἀπορίας ἀνθρωπίνης τεκμήριον ἀλλὰ καὶ
ἀσχολίας τῆς ἐπὶ τὸ πραγματεύεσθαι· ἀνάγκη γὰρ ἡμε-
ρεύειν ἐν τῇ ἀγορᾷ τὸν τοιοῦτον. ἃ δεῖ λογιζομένους ἐν-
θυμεῖσθαι ὅτι, εἰ μὴ τῷ δικαίῳ ἐπιστεύομεν, οὐκ ἄν
ποτ' εἰσήλθομεν εἰς ὑμᾶς.

Περὶ ‖ μὲν οὖν τῶν τοιούτων καὶ προϊόντος τοῦ λόγου 5
σαφέστερον ἀκούσεσθε· ὑπὲρ αὐτῆς δὲ τῆς διαμαρτυρίας
καὶ τοῦ ἀγῶνος ἤδη νομίζω δεῖν διδάσκειν. εἰ μὲν οὖν ὦ
ἄνδρες δικασταὶ ἐκ τῆς διαμαρτυρίας αὐτῆς Λεωχάρης
ἔμελλεν ἀπολογούμενος δείξειν ὡς ἔστιν υἱὸς γνήσιος Ἀρ-
χιάδου, οὐδὲν ἂν ἔδει πολλῶν λόγων, οὐδ' ἄνωθεν ὑμᾶς
ἐξετάζειν τὸ γένος τὸ ἡμέτερον· ἐπειδὴ δὲ τὰ μὲν διαμε- 6
μαρτυρημένα ἕτερον τρόπον ἔχει, ὁ δὲ πολὺς τοῦ λόγου
τουτοισὶ ἔσται ὡς εἰσεποιήθησαν καὶ κατὰ τὴν ἀγχιστείαν
γνήσιοι ὄντες δικαίως ἂν τῆς οὐσίας κληρονομοῖεν, ἀναγ-
καῖον ὦ ἄνδρες δικασταὶ διὰ ταῦτα μικρῷ ἄνωθεν τὰ
περὶ τοῦ γένους ὑμῖν διεξελθεῖν· ἐὰν γὰρ τοῦτο σαφῶς
μάθητε, οὐ μὴ παρακρουσθῆτε ὑπ' αὐτῶν τῷ λόγῳ. ἔστι 7
γὰρ ὁ μὲν ἀγὼν οὑτοσὶ κλήρου διαδικασία, ἀμφισβητεῖται
δὲ παρὰ μὲν ἡμῶν κατὰ γένος ἡ ἀγχιστεία, παρὰ δὲ τού-
των κατὰ ποίησιν· ὁμολογοῦμεν δ' ἐναντίον ὑμῶν δεῖν τὰς
ποιήσεις κυρίας εἶναι, ὅσαι ἂν κατὰ τοὺς νόμους δικαίως
γένωνται. ὥστε ταύτας τὰς ὑποθέσεις μεμνημένοι, ἂν
δείξωσιν ὑμῖν διδόντας τοὺς νόμους αὐτοῖς ἃ διαμεμαρ-

8 τυρήκασι, ψηφίσασθε αὐτοῖς τὸν κλῆρον. καὶ ἐὰν μὲν ἐκ
τῶν νόμων μὴ ὑπάρχῃ, δίκαια δὲ καὶ φιλάνθρωπα φαί-
νωνται λέγοντες, καὶ ὅμως συγχωροῦμεν. ἵνα δὲ εἰδῆτε
ὅτι κατὰ γένος ἐγγύτατα ὄντες οὐ μόνον τούτῳ ἐνισχυρι-
ζόμεθα ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασι, πρῶτον μὲν ὑπὲρ
αὐτοῦ τοῦ γένους ὑμᾶς διδάξομεν, ὅθεν ἐστὶν ‖ ὁ κλῆρος·
νομίζω γάρ, ἂν τούτῳ τῷ μέρει τοῦ ἀγῶνος σαφῶς πα-
ρακολουθήσητε, καὶ τῶν ἄλλων ὑμᾶς οὐδενὸς ἀπολειφθή-
σεσθαι.

9 Τὸ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὦ ἄνδρες δικασταὶ γίγνονται Εὐθυ-
μάχῳ τῷ Ὀτρυνεῖ υἱεῖς τρεῖς, Μιδυλίδης καὶ Ἄρχιππος καὶ
Ἀρχιάδης, καὶ θυγάτηρ ᾗ ὄνομα ἦν Ἀρχιδίκη. τελευτή-
σαντος δὲ τοῦ πατρὸς αὐτοῖς τὴν μὲν Ἀρχιδίκην ἐκδιδόασι
Λεωστράτῳ Ἐλευσινίῳ, αὐτῶν δὲ τριῶν ὄντων ὁ μὲν Ἄρ-
χιππος τριηραρχῶν ἐτελεύτησε τὸν βίον ἐν Μηθύμνῃ, ὁ
δὲ Μιδυλίδης οὐ πολλῷ χρόνῳ ὕστερον γαμεῖ Μνησιμάχην
10 Λυσίππου τοῦ Κριωέως θυγατέρα, καὶ γίγνεται αὐτῷ
θυγάτηρ ὄνομα Κλειτομάχη, ἣν ἠβουλήθη μὲν ἐκεῖνος
ἀγάμῳ τῷ ἀδελφῷ ὄντι τῷ ἑαυτοῦ ἐκδοῦναι· ἐπειδὴ δ'
ὁ Ἀρχιάδης οὐκ ἔφη προαιρεῖσθαι γαμεῖν, ἀλλὰ καὶ τὴν
οὐσίαν ἀνέμητον διὰ ταῦτα συγχωρήσας εἶναι ᾤκει καθ'
αὑτὸν ἐν τῇ Σαλαμῖνι, οὕτως ἤδη ὁ Μιδυλίδης ἐκδίδωσι
τὴν αὑτοῦ θυγατέρα Ἀριστοτέλει Παλληνεῖ τῷ πάππῳ τῷ
ἐμῷ. καὶ γίγνονται ἐξ αὐτοῦ υἱεῖς τρεῖς, Ἀριστόδημός τε
οὑτοσὶ ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς καὶ Ἁβρώνιχος ὁ θεῖος καὶ Μιδυ-
11 λίδης, ὃς νῦν τετελευτηκὼς τυγχάνει. καὶ ἡ μὲν τοῦ γένους
ἀγχιστεία τοῦ ἡμετέρου, ἐν ᾧ ἐστὶν ὁ κλῆρος, σχεδὸν οὕ-
τως ἔχει, ὦ ἄνδρες δικασταί· Ἀρχιάδῃ γὰρ πρὸς ἀνδρῶν
ἡμεῖς ἦμεν γένει ἐγγυτάτω, καὶ κατὰ τοῦτον τὸν νόμον
ἀξιοῦντες τῆς ἐκείνου οὐσίας κληρονομεῖν καὶ τὸ γένος μὴ
περιιδεῖν ἐξερημωθὲν ἐλάχομεν πρὸς τὸν ἄρχοντα τοῦ
κλήρου. οὗτοι δ' ἔχοντες οὐ δικαίως τὰ χρήματα ‖ διαμε-
μαρτυρήκασι νυνί, τὸ μὲν ὅλον ἰσχυριζόμενοι ποιήσει,
12 φάσκοντες δὲ καὶ συγγενεῖς εἶναι. περὶ μὲν οὖν ταύτης
τῆς ποιήσεως, ὃν τρόπον ἔχει, σαφῶς ὑμᾶς ὕστερον δι-
δάξομεν· περὶ δὲ τοῦ γένους, ὡς οὐκ εἰσὶν ἡμῶν ἐγγυ-
τέρω, τοῦτο δεῖ μαθεῖν ὑμᾶς. ἓν μὲν οὖν ὁμολογεῖται,

τὸ κρατεῖν τῶν κληρονομιῶν τοὺς ἄρρενας καὶ τοὺς ἐκ τῶν ἀρρένων· ἁπλῶς γὰρ τοῖς ἐγγυτάτω πρὸς ἀνδρῶν, ὅταν μὴ παῖδες ὦσιν, ὁ νόμος τὰς κληρονομίας ἀποδίδωσιν. οὗτοι δ' ἐσμὲν ἡμεῖς· ἄπαις μὲν γὰρ ὁ Ἀρχιάδης ὁμολογεῖται τετελευτηκέναι, τούτῳ δὲ πρὸς ἀνδρῶν ἡμεῖς ἐσμὲν ἐγγυτάτω. πρὸς δὲ καὶ ἐκ γυναικῶν οἱ αὐτοὶ οὗτοι· ὁ γὰρ 13
Μιδυλίδης ἀδελφὸς ἦν τοῦ Ἀρχιάδου, τοῦ δὲ Μιδυλίδου θυγάτηρ ἡ τοῦ ἐμοῦ πατρὸς μήτηρ, ὥστε γίγνεται Ἀρχιάδης, ὑπὲρ οὗ τοῦ κλήρου τὴν ἐπιδικασίαν ποιούμεθα νυνί, θεῖος τῇ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ μητρὶ ἐκ πατραδέλφων, πρὸς ἀνδρῶν ἔχων τὴν συγγένειαν ταύτην καὶ οὐ πρὸς γυναικῶν. Λεώστρατος δ' οὑτοσὶ γένει τε ἀπωτέρω ἐστὶ καὶ πρὸς γυναικῶν οἰκεῖος Ἀρχιάδῃ· ἡ γὰρ τοῦ Λεωκράτους μήτηρ τοῦ τούτου πατρὸς ἀδελφιδῆ ἦν τῷ Ἀρχιάδῃ ἐκείνῳ καὶ τῷ Μιδυλίδῃ, ἀφ' ὧν ἡμεῖς ὄντες ἀξιοῦμεν τῆς κληρονομίας τυχεῖν.

Πρῶτον μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸ γένος ἡμῶν ὅτι 14
οὕτως ἔχει ὥσπερ καὶ λέγομεν, ἀναγνώσεται ὑμῖν τὰς μαρτυρίας, ἔπειτα μετὰ ταῦτα τὸν νόμον αὐτὸν τοῖς τε γένεσι καὶ τοῖς ἐγγυτάτω πρὸς ἀνδρῶν τὰς κληρονομίας ἀποδιδόντα· τὰ γὰρ κεφάλαια τοῦ ἀγῶνος, καὶ ὑπὲρ ὧν ὀμωμοκότες ‖ οἴσετε τὴν ψῆφον, σχεδόν τι ταῦτ' ἐστίν. καί μοι κάλει τούς τε μάρτυρας δευρὶ καὶ τὸν νόμον ἀναγίγνωσκε.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ. ΝΟΜΟΣ.

Τὰ μὲν τοίνυν περὶ τὸ γένος τό τε τούτων καὶ τὸ ἡμέ- 15
τερον οὕτως ἔχει, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὥστε τοὺς ἐπιδεδειχότας ἐξ αὐτῶν τῶν μαρτυριῶν ὡς εἰσὶ γένει ἐγγυτέρω προσήκει κληρονομεῖν, καὶ μὴ τὴν τοῦ διαμαρτυρήσαντος ἀπόνοιαν κρείττω τῶν ὑμετέρων νόμων γενέσθαι. καὶ γὰρ εἰ τῇ ποιήσει ἰσχυρίζονται, ἣν ὡς ἐγένετο ἡμεῖς δείξομεν, τετελευτηκότος [δὲ] τοῦ εἰσποιηθέντος δή που ἄπαιδος καὶ τοῦ οἴκου μέχρι τῆς ἡμετέρας λήξεως ἐξηρημωμένου πῶς οὐ προσήκει τοὺς ἐγγυτάτω γένει ὄντας, τούτους τὴν κληρονομίαν κομίσασθαι, καὶ ὑμᾶς μὴ τοῖς δυναμένοις ἄριστα παρασκευάσασθαι ἀλλὰ τοῖς ἀδικουμένοις τῶν πολιτῶν βοηθεῖν; εἰ μὲν γὰρ ἐφ' ἡμῖν ἦν ὥστε δεῖξασι τὰ 16

*περὶ τοῦ γένους καὶ τῆς διαμαρτυρίας αὐτῆς καταβῆναι
καὶ μηδενὸς ἔτι πλείονος λόγου προσδεῖσθαι, σχεδόν τι
τῶν μεγίστων εἰρημένων οὐκ ἂν ἠνωχλοῦμεν τὰ πλείω·
ἐπειδὴ δὲ οὗτοι τοῖς μὲν νόμοις οὐκ ἐνισχυριοῦνται, τῷ
δὲ προειληφέναι τι τῶν πραγμάτων ἐκ τοῦ ἄνωθεν χρό-
νου καὶ τῷ ἐμβεβατευκέναι εἰς τὴν οὐσίαν, τούτοις τεκμη-
ρίοις χρώμενοι φήσουσι κληρονομεῖν, ἀναγκαῖον ἴσως καὶ
περὶ τούτων ἐστὶν εἰπεῖν καὶ δεῖξαι τούτους πάντων ἀν-
θρώπων βιαιοτάτους ὄντας.*
17 *Τὸ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐκδιδόασι τὴν
ἀδελφὴν τὴν ἑαυτῶν ὁ Μιδυλίδης καὶ ὁ Ἀρχιάδης Λεω-
στράτῳ Ἐλευσινίῳ· ‖ μετὰ δὲ ταῦτα ἐκ θυγατρὸς τῆς ἐκ-
δοθείσης ἀδελφῆς ταύτης αὐτῶν γίγνεται Λεωκράτης ὁ
πατὴρ Λεωστράτου τουτουί, σκέψασθε ὡς πολλοστὸς εἰς
τὴν τοῦ Ἀρχιάδου συγγένειαν προσήκων, ὑπὲρ οὗ τὴν
διαμαρτυρίαν πεποίηται. τούτων δ᾽ οὕτως ἐχόντων ὁ μὲν
Ἀρχιάδης οὐκ ἐγάμει, ὁ δὲ Μιδυλίδης ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ*
18 *πάππος δὲ τουτουὶ ἔγημεν. καὶ οὐδέπω τὴν οὐσίαν ἐνέ-
μοντο, ἀλλ᾽ ἑκάτερος ἔχων τὰ ἱκανὰ ὁ μὲν Μιδυλίδης ἐν
τῷ ἄστει διέμενεν, ὁ δ᾽ Ἀρχιάδης ἐν Σαλαμῖνι ᾤκει. οὐ
πολλῷ δὲ χρόνῳ ὕστερον ἀποδημίας τινὸς εἰς τὴν ὑπερο-
ρίαν συμβάσης τῷ Μιδυλίδῃ τῷ πάππῳ τῷ τοῦ πατρὸς
ἠρρώστησεν ὁ Ἀρχιάδης, καὶ τελευτᾷ τὸν βίον ἀπόντος
τοῦ Μιδυλίδου ἄγαμος ὤν. τί τούτου σημεῖον; λουτροφό-*
19 *ρος ἐφέστηκεν ἐπὶ τῷ τοῦ Ἀρχιάδου τάφῳ. ἐν δὲ τούτῳ
τῷ καιρῷ ἔχων τὴν τῆς συγγενείας τῆς πρὸς γυναικῶν πρό-
φασιν Λεωκράτης ὁ τουτουὶ πατὴρ Λεωστράτου εἰσποιεῖ
αὑτὸν υἱὸν τῷ Ἀρχιάδῃ, καὶ ἐνεβάτευσεν οὕτως εἰς τὴν
οὐσίαν ὡς ὑπ᾽ ἐκείνου ζῶντος ἔτι εἰσποιηθείς. ἀφικόμε-
νος δ᾽ ὁ Μιδυλίδης ἠγανάκτει τε τῷ γεγενημένῳ καὶ οἷος
ἦν ἐπεξιέναι τῷ Λεωκράτει· πειθόντων δὲ τῶν οἰκείων
καὶ δεομένων ἐᾶν ἐν τῷ οἴκῳ εἶναι τὸν Λεωκράτην υἱὸν
εἰσποιητὸν τῷ Ἀρχιάδῃ, συνεχώρησεν ὁ Μιδυλίδης, οὐχ
ἡττηθεὶς ἐν δικαστηρίῳ, ἀλλὰ τὸ μὲν ὅλον ὑπὸ τούτων
ἀπατηθείς, ἔπειτα μέντοι καὶ τοῖς οἰκείοις πειθόμενος.*
20 *καὶ ὁ Μιδυλίδης ταῦτα πράξας τελευτᾷ τὸν βίον, ὁ δὲ
Λεωκράτης εἶχε τὴν τοῦ Ἀρχιάδου οὐσίαν καὶ ‖ ἐκληρονό-*

μει πολλὰ ἔτη ὡς ἂν ἐκείνου υἱὸς ποιητός· ἡμεῖς δὲ πα-
ρὰ τὸ τὸν Μιδυλίδην ταῦτα συγχωρῆσαι ἡσυχίαν εἴχομεν.
χρόνῳ δ᾽ ὕστερον οὐ πολλῷ — τοῖς γὰρ μετὰ ταῦτα λόγοις
ἤδη σφόδρα τὸν νοῦν προσέχετε, ὦ ἄνδρες δικασταί· ὁ γὰρ 21
Λεωκράτης ὁ εἰσποιητὸς γενόμενος τῷ Ἀρχιάδῃ, ἐγκατα-
λιπὼν τουτονὶ Λεώστρατον ἐν τῷ οἴκῳ υἱὸν γνήσιον, ἐπ-
ανῆλθεν αὐτὸς εἰς τοὺς Ἐλευσινίους, ὅθεν ἦν τὸ ἐξ ἀρχῆς.
καὶ οὐδ᾽ ἐνταῦθ᾽ οὐδέπω ἡμεῖς οὐδὲν τῶν πραγμάτων περὶ
τὸν κλῆρον ἐκινοῦμεν, ἀλλ᾽ ἐμένομεν ἐπὶ τῶν αὐτῶν. πάλιν 22
τοίνυν Λεώστρατος αὐτὸς οὑτοσί, εἰσποιητὸς ὢν υἱὸς καὶ
ἐγκαταλειφθεὶς ἐν τῷ τοῦ Ἀρχιάδου οἴκῳ, ἐπανέρχεται,
ὥσπερ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, ἐπὶ τοὺς Ἐλευσινίους ἐγκαταλιπὼν
υἱὸν γνήσιον καὶ διὰ τριῶν σωμάτων κυρίαν τὴν ἐξ ἀρχῆς
ποίησιν παρὰ τοὺς νόμους καταστήσας. πῶς γὰρ οὐ παρὰ 23
τοὺς νόμους, ὁπότ᾽ εἰσποιητὸς αὐτὸς ὢν εἰσποιητοὺς υἱοὺς
ἐγκαταλιπὼν ἐπανῄει; καὶ τοῦτο διατετέλεκε ποιῶν μέχρι
ταύτης τῆς ἡμέρας, καὶ διὰ τούτου τοῦ τρόπου τὴν κλη-
ρονομίαν ἡμῶν ἀποστερήσειν οἴονται, ἐνεργαζόμενοι μὲν
καὶ ἐμπαιδοτροφούμενοι τῇ τοῦ Ἀρχιάδου οὐσίᾳ, ἐπανιόν-
τες δ᾽ ἐπὶ τὴν πατρῴαν οὐσίαν ἐκεῖθεν ἀεί, κἀκείνην μὲν
ἀκέραιον φυλάττοντες, ταύτην δ᾽ ἀναλίσκοντες. ἀλλ᾽ ὅμως 24
τούτων τοιούτων ὄντων, ὅπερ εἶπον, ἡμεῖς ὑπεμένομεν
ἅπαντα. μέχρι τίνος; ἕως ὁ Λεωκράτης ἐν τῷ οἴκῳ τῷ
Ἀρχιάδου ἐγκαταλειφθεὶς υἱὸς τετελεύτηκεν ἄπαις. τού-
του δὲ || ἄπαιδος τετελευτηκότος ἀξιοῦμεν ἡμεῖς οἱ γένει
ἐγγυτάτω ὄντες Ἀρχιάδῃ κληρονομεῖν τῆς οὐσίας καὶ μὴ
τῷ τετελευτηκότι τῷ αὐτῷ εἰσποιητῷ ὄντι υἱὸν εἰσποιεῖν
ἐπ᾽ ἀποστερήσει τῶν ἡμετέρων. εἰ μὲν γὰρ αὐτὸς ζῶν 25
ἐποιήσατο, καίπερ ὄντος παρὰ τὸν νόμον τοῦ ἔργου, οὐκ
ἀντιλέγομεν· ἐπειδὴ δ᾽ οὔτε γένει ἦν αὐτῷ υἱὸς οὐδεὶς
οὔτ᾽ ἐποιήσατο ζῶν, ὁ δὲ νόμος τοῖς ἐγγύτατα γένους τὰς
κληρονομίας ἀποδίδωσι, πῶς οὐ δίκαιοί ἐσμεν ἡμεῖς τού-
των μὴ ἀποστερηθῆναι κατ᾽ ἀμφότερα; καὶ γὰρ τῷ Ἀρ- 26
χιάδῃ, οὗ ἦν ἡ οὐσία τὸ ἐξ ἀρχῆς, ἐγγυτάτω γένει ἐσμὲν
καὶ τῷ εἰσποιητῷ Λεωκράτει· τοῦ μὲν γὰρ ὁ πατὴρ ἐπαν-
εληλυθὼς εἰς τοὺς Ἐλευσινίους οὐκέτι τὴν κατὰ τὸν νόμον
οἰκειότητα ἔλειπεν αὐτῷ, ἡμεῖς δέ, παρ᾽ οἷς ἦν ἐν τῷ γένει,

*τὴν ἀναγκαιοτάτην συγγένειαν εἴχομεν, ὄντες ἀνεψιαδοῖ
ἐκείνῳ. ὥστ᾽, εἰ μὲν βούλει, τοῦ Ἀρχιάδου συγγενεῖς ὄντες
ἀξιοῦμεν κληρονομεῖν, εἰ δὲ βούλει, τοῦ Λεωκράτους· τετε-
λευτηκότος γὰρ ἄπαιδος αὐτοῦ οὐδεὶς ἡμῶν γένει ἐγγυτέρω
ἐστίν. καὶ διὰ μὲν σέ, ὦ Λεώστρατε, ὁ οἶκος ἐξηρήμωται·
27 τῆς γὰρ οὐσίας τὴν οἰκειότητα, οὐ τῶν ἀνδρῶν τῶν ποιη-
σαμένων διετήρεις. ἕως μέν γε τελευτήσαντος τούτου οὐ-
δεὶς ἠμφεσβήτει τοῦ κλήρου, οὐδένα εἰσεποίεις τῷ Ἀρχιάδῃ
υἱόν· ἐπειδὴ δ᾽ ἡμεῖς συγγενεῖς ὄντες ἥκομεν εἰς τὸ μέσον,
τηνικαῦτα εἰσποιεῖς, ἵνα τὴν οὐσίαν κατάσχῃς. καὶ φῂς
μὲν οὐδὲν εἶναι τῷ Ἀρχιάδῃ, πρὸς ὃν εἰσεποιήθης, δια-
μαρτυρεῖς δὲ πρὸς ἡμᾶς, τὸ ὁμολογούμενον ‖ γένος ἐξε-
λαύνων· εἰ γὰρ μηδέν ἐστιν ἐν τῷ οἴκῳ, τί σὺ ἐλαττοῖ τοῦ
28 μηδενὸς ἡμῶν κληρονομησάντων; ἀλλὰ γὰρ ἡ ἀναίδεια καὶ
ἡ πλεονεξία τοιαύτη ἐστὶν αὐτοῦ, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὥσθ᾽
ἡγεῖσθαι δεῖν ἐν Ἐλευσινίοις τε τὴν πατρῴαν οὐσίαν ἐπ-
ανελθὼν ἔχειν, ἐφ᾽ ἅ τ᾽ εἰσεποιήθη μὴ ὄντος ἐν τῷ οἴκῳ
υἱοῦ, καὶ τούτων κύριος γενέσθαι. καὶ ταῦτα πάντα ῥᾳ-
δίως διοικεῖται· πρὸς γὰρ ἀνθρώπους ἡμᾶς πένητας καὶ
ἀδυνάτους ἔχων ἀναλίσκειν ἐκ τῶν ἀλλοτρίων πολὺ περίε-
στιν. διόπερ οἶμαι ὑμᾶς δεῖν βοηθεῖν τοῖς μὴ πλεονεκτῆ-
σαί τι βουλομένοις, ἀλλ᾽ ἀγαπῶσιν ἐάν τις ἡμᾶς τῶν νόμων
29 ἐᾷ τυγχάνειν. τί γὰρ δεῖ ποιεῖν ἡμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταί;
διὰ τριῶν τῆς ποιήσεως ἐμμενούσης, καὶ τοῦ τελευταίου
ἐγκαταλειφθέντος τούτου ἄπαιδος τετελευτηκότος, μὴ
κομίσασθαι τὰ ἡμέτερ᾽ αὐτῶν χρόνῳ ποτέ; τοῦτο τοίνυν
ἔχοντες τὸ δίκαιον ἐλάχομεν τοῦ κλήρου πρὸς τὸν ἄρχοντα.
οὗτος δὲ Λεωχάρης προπετῶς διαμαρτυρήσας τὰ ψευδῆ,
οἴεται δεῖν παρὰ πάντας τοὺς νόμους ἀποστερῆσαι ἡμᾶς
τῆς κληρονομίας.*

30 *Πρῶτον μὲν οὖν, ὅτι τά τε περὶ τὰς ποιήσεις καὶ τὸ
γένος τὸ τούτων ἀληθῆ εἰρήκαμεν, καὶ ἡ λουτροφόρος ἐφέ-
στηκεν ἐπὶ τῷ τοῦ Ἀρχιάδου μνήματι, ταύτας ὑμῖν τὰς
μαρτυρίας βουλόμεθ᾽ ἀναγνῶναι· ἔπειτ᾽ ἤδη καὶ τὰ λοιπὰ
σαφῶς διδάξομεν ὑμᾶς, ὥστ᾽ ἐξελέγξαι τούτους τὰ ψευδῆ
διαμεμαρτυρηκότας. καί μοι λαβὲ τὰς μαρτυρίας ἃς
λέγω.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὁ μὲν τοίνυν τοῦ πράγματος λόγος καὶ τὸ ἁπλοῦν δί- 31
καιον περὶ τῆς κληρονομίας οὕτως ‖ ἔχει, ὦ ἄνδρες δικασταί, τῶν τε πεπραγμένων ἐξ ἀρχῆς αὐτὰ τὰ κεφάλαια σχεδόν τι ἀκηκόατε. ἃ δὲ μετὰ τὴν τοῦ κλήρου λῆξιν πεποιήκασι καὶ ὃν τρόπον ἡμῖν κεχρημένοι εἰσίν, ἀναγκαῖον νομίζω εἰπεῖν· οἴομαι γὰρ περὶ κλήρου ἀγῶνα μηδένας
ἄλλους παρανενομῆσθαι τοιαῦτα οἷα ἡμᾶς. ἐπειδὴ γὰρ 32
ἐτελεύτησεν ὁ Λεωκράτης καὶ ἡ ταφὴ ἐγένετο αὐτῷ, πορευομένων ἡμῶν εἰς τὰ κτήματα διὰ τὸ ἄπαιδά τε τὸν ἄνδρα καὶ ἄγαμον τετελευτηκέναι, ἐξῆγεν ὁ Λεώστρατος οὑτοσὶ φάσκων αὐτοῦ εἶναι. καὶ τὸ μὲν ποιεῖν τι τῶν νομιζομένων ἐκώλυσεν ἡμᾶς τῷ τετελευτηκότι, πατὴρ ὢν αὐτὸς ἐκείνου, ὡς ἔχει λόγον, καίπερ ὄντος παρανόμου τοῦ ἔργου· τῷ γὰρ φύσει ὄντι πατρὶ τῆς ταφῆς τὴν ἐπιμέλειαν παραδίδοσθαι εἰκός ἐστιν, ἔπειτα μέντοι καὶ τοῖς οἰκείοις ἡμῖν, ὧν ἦν συγγενὴς κατὰ τὴν ποίησιν ὁ τετε-
λευτηκώς. ἐπεὶ δὲ τὰ νομιζόμενα ἐγένετο, κατὰ ποῖον 33
νόμον φανεῖται ἐρήμου ὄντος τοῦ οἴκου τοὺς ἐγγυτάτω γένους ἡμᾶς ἐξαγαγὼν ἐκ τῆς οὐσίας; ὅτι νὴ Δία πατὴρ ἦν τοῦ τετελευτηκότος. ἀπεληλυθώς γ' εἰς τὸν πατρῷον οἶκον καὶ οὐκέτι τῆς οὐσίας, ἐφ' ᾗ ἐγκατέλιπε τὸν υἱόν,
κύριος ὤν· εἰ δὲ μή, τί τῶν νόμων ὄφελος; γενομένης οὖν 34
τῆς ἐξαγωγῆς, ἵνα τὰ πλεῖστα παραλείπω, ἐλάχομεν πρὸς τὸν ἄρχοντα τοῦ κλήρου, οὔτε γόνῳ, ὥσπερ εἶπον, οὐδενὸς ὄντος τῷ τετελευτηκότι οὔτ' εἰσποιητοῦ γεγενημένου κατὰ τοὺς νόμους. μετὰ δὲ ταῦτα Λεώστρατος οὑτοσὶ παρακαταβάλλει ὡς υἱὸς Ἀρχιάδου ἐκείνου, οὐκ ἐπιλογισάμενος οὐθ' ὅτι ‖ ἐπανεληλύθει εἰς τοὺς Ἐλευσινίους, οὐθ' ὅτι οἱ εἰσποιητοὶ οὐκ αὐτοὶ ὑφ' αὑτῶν ἀλλ' ὑπὸ τῶν
εἰσποιουμένων καθίστανται· ἀλλὰ γὰρ οἶμαι ἁπλοῦν τι 35
διελογίσατο, δεῖν αὐτὸν καὶ δικαίως καὶ ἀδίκως ἀμφισβητεῖν τῶν ἀλλοτρίων. καὶ πρῶτον μὲν ἐλθὼν οἷός τ' ἦν εἰς τὸν Ὀτρυνέων πίνακα τὸν ἐκκλησιαστικὸν ἐγγράφειν αὑτὸν Ἐλευσίνιος ὤν, καὶ τοῦτο διῳκεῖτο, ἔπειτα, πρὶν ἐγγραφῆναι καὶ ἐν τῷ ληξιαρχικῷ γραμματείῳ τῷ τῶν Ὀτρυνέων, μετέχειν τῶν κοινῶν, τηλικαύτην παρανομίαν

36 *προαιρούμενος παρανομεῖν ἕνεκα πλεονεξίας. αἰσθόμενοι
δ' ἡμεῖς μαρτύρων ἐναντίον ἐκωλύσαμεν τὸ γιγνόμενον, καὶ
ᾠόμεθα δεῖν κριθῆναι πρῶτον μὲν τὴν κληρονομίαν παρ'
ὑμῖν, πρὶν ἐπὶ τὸ ὄνομά τινα τὸ τοῦ Ἀρχιάδου εἰσποιη-
θῆναι. κωλυθεὶς δὲ καὶ ἐξελεγχθεὶς πρὸς τῷ πίνακι καὶ
ἐν τῇ τῶν ἀρχόντων ἀγορᾷ ὅτι ἠδίκει πολλῶν ἐναντίον,
ᾤετο δεῖν μηδὲν ἧττον βιάζεσθαι καὶ κρείττων ταῖς πα-
37 ρασκευαῖς τῶν ὑμετέρων νόμων γενέσθαι. τί τούτου τε-
κμήριον; συναγαγών τινας τῶν Ὀτρυνέων ὀλίγους καὶ τὸν
δήμαρχον πείθει, ἐπειδὰν ἀνοιχθῇ τὸ γραμματεῖον, ἐγγρά-
ψαι αὐτόν. καὶ μετὰ ταῦτα ἧκε Παναθηναίων ὄντων τῶν
μεγάλων τῇ διαδόσει πρὸς τὸ θεωρικόν, καὶ ἐπειδὴ οἱ
ἄλλοι δημόται ἐλάμβανον, ἠξίου καὶ αὐτῷ δίδοσθαι καὶ
ἐγγραφῆναι εἰς τὸ γραμματεῖον ἐπὶ τὸ τοῦ Ἀρχιάδου
ὄνομα. διαμαρτυρομένων δὲ ἡμῶν, καὶ τῶν ἄλλων δεινὸν
φασκόντων εἶναι τὸ γιγνόμενον, ἀπῆλθεν οὔτ' ἐγγραφεὶς
38 οὔτε τὸ θεωρικὸν λαβών. τὸν δὲ παρὰ ‖ τὸ ψήφισμα τὸ
ὑμέτερον ἀξιοῦντα τὸ θεωρικὸν λαμβάνειν πρὶν ἐγγραφῆ-
ναι εἰς τοὺς Ὀτρυνεῖς, ὄντα ἐξ ἑτέρου δήμου, τοῦτον οὐκ
οἴεσθε τοῦ κλήρου παρὰ τοὺς νόμους ἀμφισβητεῖν; ἢ τὸν
πρὸ τῆς τοῦ δικαστηρίου γνώσεως οὕτως ἀδίκους πλεο-
νεξίας διοικούμενον, τοῦτον πῶς εἰκὸς τῷ πράγματι πι-
στεύειν; ὁ γὰρ τὸ θεωρικὸν ἀδίκως ἀξιώσας λαμβάνειν
καὶ περὶ τοῦ κλήρου τῇ αὐτῇ διανοίᾳ δῆλον ὅτι κέχρηται
39 νυνί. ἀλλὰ μὴν καὶ τὸν ἄρχοντά γ' ἐξηπάτησε παρακατα-
βάλλων, καὶ ἡμᾶς ἀντεγράψατο Ὀτρυνεὺς εἶναι ἐν Ἐλευ-
σινίοις δημοτευόμενος. ἐπειδὴ τοίνυν ἐπὶ τούτων πάντων
ἀπετύγχανε, ταῖς παρελθούσαις ἀρχαιρεσίαις ταύταις πα-
ρασκευασάμενός τινας τῶν δημοτῶν ἠξίου οὕτως ἐγγρά-
40 φεσθαι ποιητὸς υἱὸς τῷ Ἀρχιάδῃ. ἀντιλεγόντων δ' ἡμῶν
καὶ ἀξιούντων, ἐπειδὰν τοῦ κλήρου ἡ διαδικασία γένηται,
τηνικαῦτα τοὺς δημότας τὴν ψῆφον φέρειν, πρότερον δὲ
μή, τοῦτο μὲν ἐπείσθησαν οὐ δι' αὐτοὺς ἀλλὰ διὰ τοὺς
νόμους· δεινὸν γὰρ ἐδόκει εἶναι τὸν παρακαταβεβληκότα
τοῦ κλήρου εἰσποιεῖν αὐτὸν ἔτι τῶν πραγμάτων ἀκρίτων
ὄντων· ὃ δὲ μετὰ ταῦτα διοικεῖται Λεώστρατος οὑτοσί,
41 τοῦτο πάντων δεινότατόν ἐστιν. ἐπειδὴ γὰρ αὐτὸς ἀπε-*

τύγχανε τοῦ ἐγγραφῆναι, εἰσποιεῖ Λεωχάρην τὸν αὑτοῦ υἱὸν Ἀρχιάδῃ παρὰ πάντας τοὺς νόμους, πρὶν τοῦ δήμου τὴν δοκιμασίαν γενέσθαι. οὐκ εἰσηγμένου δ' εἰς τοὺς φράτοράς πω τοῦ Ἀρχιάδου, ἀλλ' ἐπειδὴ ἐνεγράφη, τηνικαῦτα πείσας ἕνα τινὰ τῶν φρατόρων ἐνέγραψεν εἰς τὸ φρατορικὸν γραμματεῖον. καὶ ‖ μετὰ ταῦτα τῇ διαμαρτυρίᾳ πρὸς 42
τῷ ἄρχοντι τοῦτον ἀπογράφεται ὡς υἱὸν ὄντα γνήσιον τοῦ τετελευτηκότος ἔτη πολλὰ τὸν πρῴην καὶ χθὲς ἐγγραφέντα. καὶ συμβαίνει ἀμφοτέρους αὐτοὺς τῆς κληρονομίας ἀμφισβητεῖν· ὅ τε γὰρ Λεώστρατος οὑτοσὶ παρακατέβαλε τοῦ κλήρου ὡς υἱὸς γνήσιος Ἀρχιάδῃ, ὅ τε Λεωχάρης οὑτοσὶ διαμεμαρτύρηκεν ὡς υἱὸς ὢν γνήσιος τοῦ αὐτοῦ πατρός. οὐδέτερος δ' αὐτῶν ζῶντι ἀλλὰ τετελευτηκότι εἰσποιεῖ αὐ- 43
τόν. ἡμεῖς δ' ᾠόμεθα δεῖν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἐπειδὰν περὶ τούτου τοῦ ἀγῶνος ὑμεῖς τὴν ψῆφον ἐνέγκητε, τηνικαῦτα ἐκ τῶν κατὰ γένος ἐγγυτάτω ἡμῖν εἰσποιεῖν υἱὸν τῷ τετελευτηκότι, ὅπως ἂν ὁ οἶκος μὴ ἐξερημωθῇ.

Πρῶτον μὲν οὖν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὡς ἐπανῆλθεν εἰς 44
τοὺς Ἐλευσινίους ἐκ τῶν Ὀτρυνέων Λεώστρατος οὑτοσὶ καταλιπὼν υἱὸν τῷ Ἀρχιάδῃ γνήσιον, καὶ ὅτι ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἔτι πρότερον τὸ αὐτὸ τοῦτ' ἐπεποιήκει, καὶ ὡς ὁ καταλειφθεὶς ἄπαις τετελεύτηκε, καὶ ὡς ὁ νῦν διαμεμαρτυρηκὼς πρότερον εἰς τοὺς δημότας ἢ εἰς τοὺς φράτορας ἐνεγράφη, τούτων ὑμῖν τὰς τῶν φρατόρων καὶ τὰς τῶν δημοτῶν μαρτυρίας ἀναγνώσεται, καὶ τῶν ἄλλων τῶν εἰρημένων ὧν οὗτοι πεποιήκασιν, ἁπάντων ὑμῖν τὰς μαρτυρίας καθ' ἓν ἕκαστον παρέξομαι. καί μοι κάλει τοὺς μάρτυρας δευρί.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Τῶν μὲν τοίνυν πραγμάτων ἁπάντων ἀκηκόατε, ὦ ἄν- 45
δρες δικασταί, καὶ τῶν ἐξ ἀρχῆς γεγενημένων περὶ τὸν κλῆρον τοῦτον καὶ τῶν ὕστερον συμβάντων, ἐπειδὴ τάχιστα τὴν λῆξιν ἡμεῖς ‖ ἐποιησάμεθα· λοιπὸν δ' ἐστὶ περί τε τῆς διαμαρτυρίας αὐτῆς εἰπεῖν καὶ περὶ τῶν νόμων καθ' οὓς ἀξιοῦμεν κληρονομεῖν, ἔτι δέ, ἂν ἐγχωρῇ τὸ ὕδωρ καὶ μὴ μέλλωμεν ὑμῖν ἐνοχλεῖν, ἐξελέγξαι τὰ ὑπὸ τούτων ῥηθησόμενα, ὅτι οὔτε δίκαια οὔτε ἀληθῆ ἐστίν. καὶ πρῶ-

τον μὲν τὴν διαμαρτυρίαν ἀναγνώτω, καὶ σφόδρα τὸν νοῦν
αὐτῇ προσέχετε· περὶ γὰρ ταύτης ἡ ψῆφος οἰσθήσεται νυνί.

ΔΙΑΜΑΡΤΥΡΙΑ.

46 Οὐκοῦν δή που διαμεμαρτύρηκεν οὑτοσί, ὡς ἀκηκόατε,
μὴ ἐπίδικον εἶναι τὸν κλῆρον τὸν Ἀρχιάδου ὄντων αὐτῷ
παίδων γνησίων κυρίως κατὰ τὸν θεσμόν. ἐξετάσωμεν τοί-
νυν εἰ εἰσὶν ἢ τὰ ψευδῆ διαμεμαρτύρηκεν οὑτοσί. ὁ γὰρ
Ἀρχιάδης ἐκεῖνος, οὗ ἐστὶν ὁ κλῆρος, ἐποιήσατο υἱὸν τὸν
τοῦ διαμεμαρτυρηκότος νυνὶ πάππον· ἐκεῖνος δὲ καταλι-
πὼν υἱὸν γνήσιον τὸν τούτου πατέρα Λεώστρατον ἐπαν-
47 ῆλθεν εἰς τοὺς Ἐλευσινίους. μετὰ δὲ ταῦτα αὐτὸς οὑτοσὶ
Λεώστρατος πάλιν καταλιπὼν υἱὸν ᾤχετο ἀπελθὼν εἰς
τὸν πατρῷον οἶκον· ὁ δ' ἐγκαταλειφθεὶς ὑπὸ τούτου τε-
λευταῖος ἁπάντων τῶν εἰσποιηθέντων τετελεύτηκεν ἄπαις,
ὥστε γίγνεται ἔρημος ὁ οἶκος καὶ ἐπανελήλυθεν ἡ κληρο-
48 νομία πάλιν εἰς τοὺς ἐξ ἀρχῆς ἐγγύτατα γένους ὄντας. πῶς
ἂν οὖν εἴησαν κατὰ τὴν διαμαρτυρίαν υἱεῖς ἔτι τινὲς τῷ
Ἀρχιάδῃ, ᾧ οἱ μὲν εἰσποιηθέντες ὁμολογοῦνται ἐπανελη-
λυθέναι, ὁ δ' ἐγκαταλειφθεὶς τελευταῖος ἄπαις τετελεύ-
τηκεν; οὐκοῦν ἀνάγκη τὸν οἶκον ἔρημον εἶναι. ὁπότε δὲ
ἔρημός ἐστιν ὁ οἶκος, οὐκ ἂν εἴησαν υἱεῖς ἔτι ἐκείνῳ || γνή-
σιοι. οὑτοσὶ τοίνυν διαμεμαρτύρηκε τοὺς οὐκ ὄντας εἶναι,
καὶ γέγραφεν ἐν τῇ διαμαρτυρίᾳ "ὄντων παίδων," ἕνα
49 φάσκων αὑτὸν εἶναι. ἀλλὰ μὴν γνησίων γ' ὅταν λέγῃ καὶ
κυρίως κατὰ τὸν θεσμόν, παρακρούεται παρὰ τοὺς νόμους.
τὸ μὲν γὰρ γνήσιόν ἐστιν, ὅταν ᾖ γόνῳ γεγονώς· καὶ ὁ
νόμος ταῦτα μαρτυρεῖ λέγων, ἣν ἂν ἐγγυήσῃ πατὴρ ἢ
ἀδελφὸς ἢ πάππος, ἐκ ταύτης εἶναι παῖδας γνησίους. τὸ
δὲ κυρίως κατὰ τῶν ποιήσεων ὁ νομοθέτης ἔλαβεν, ὑπο-
λαμβάνων δεῖν, ὅταν τις ὢν ἄπαις καὶ κύριος τῶν ἑαυτοῦ
ποιήσηται υἱόν, ταῦτα κύρια εἶναι. οὗτος τοίνυν γόνῳ
μὲν οὐδένα φησὶν Ἀρχιάδῃ γενέσθαι υἱόν, διαμεμαρτύρη-
ται δὲ γνησίων ὄντων, ἐναντίαν τῷ πράγματι τὴν διαμαρ-
50 τυρίαν ποιησάμενος. ποιητὸς δ' ὁμολογῶν εἶναι φαίνεται
οὐκ εἰσποιηθεὶς ὑπὸ τοῦ τετελευτηκότος αὐτοῦ, ὥστε πῶς
ἔτι σοι κύρια ταῦτ' ἂν εἴη κατὰ τὸν θεσμόν; ὅτι νὴ Δί'
ἐγγέγραπται Ἀρχιάδῃ υἱός. ὑπό γε τουτωνὶ πρῴην βια-

σαμένων, ἤδη τῆς τοῦ κλήρου διαδικασίας ἐνεστηκυίας· οὗ δὴ δίκαιόν ἐστιν ἐν τεκμηρίου μέρει ποιεῖσθαι τἀδίκημα. καὶ γὰρ ἐκεῖνο πῶς οὐ δεινόν ἐστιν, ὦ ἄνδρες δικα- 51
σταί, εἰ ἐπὶ μὲν τοῦ λόγου αὐτίκα μάλα φήσει ποιητὸς εἶναι, ἐν δὲ τῇ διαμαρτυρίᾳ τοῦτο μὴ τολμήσει γράψαι, ἀλλὰ τὰ μὲν ἐν ταύτῃ διαμεμαρτυρημένα εἶναι ὡς ὑπὲρ υἱοῦ γόνῳ γεγονότος, τὰ δ' αὐτίκα μάλα ῥηθησόμενα ὡς εἰσποιητοῦ; εἰ δὲ τὴν ἀπολογίαν ἐναντίαν τῇ διαμαρτυρίᾳ ποιήσονται, πῶς οὐκ ἢ τὸν λόγον ἀνάγκη ἢ τὴν διαμαρτυρίαν ψευδῆ εἶναι; εἰκότως δ' οὐ προσέγραψαν τὴν ποίησιν τῇ διαμαρτυρίᾳ. ἔδει γὰρ ‖ ἐγγράψαι αὐτοὺς "εἰσποιησαμένου τοῦ δεῖνος·" ὃ δ' οὐκ εἰσεποιήσατο, ἀλλ' ἑαυτοὺς εἰσποιοῦντες ἀποστεροῦσιν ἡμᾶς τῆς κληρονομίας. τὸ με- 52
τὰ ταῦτα τοίνυν πῶς οὐκ ἄτοπον καὶ δεινόν ἐστιν ἅμα, παρακαταβεβληκέναι τοῦ κλήρου πρὸς τῷ ἄρχοντι ὡς ὄντα αὐτὸν Ἀρχιάδου Λεώστρατον τουτονί, τὸν Ἐλευσίνιον τοῦ Ὀτρυνέως, διαμεμαρτυρηκέναι δ' ἕτερον, ὡς αὐτοὶ ὁρᾶτε, φάσκοντα καὶ τοῦτον Ἀρχιάδου υἱὸν εἶναι; καὶ ποτέρῳ δεῖ προσέχειν ὑμῶν ὡς ἀληθῆ λέγοντι; αὐτὸ γὰρ τοῦτο 53
τεκμήριον οὐκ ἐλάχιστόν ἐστι τοῦ ψευδῆ τὴν διαμαρτυρίαν γεγενῆσθαι, τὸ περὶ τοῦ αὐτοῦ πράγματος μὴ τὸν αὐτὸν πρὸς τοὺς αὐτοὺς ἀμφισβητεῖν. εἰκότως· ὅτε γάρ, οἶμαι, Λεώστρατος οὑτοσὶ παρακατέβαλλε τοῦ κλήρου πρὸς ἡμᾶς, οὔπω διαμεμαρτυρηκὼς νῦν ἐγγέγραπται ὡς δημότης εἶναι. ὥστε πάντων ἂν δεινότατα πάθοιμεν, εἰ τῇ ὕστερον τῶν πραγμάτων γεγενημένῃ διαμαρτυρίᾳ πιστεύσετε ὑμεῖς.

Ἀλλὰ μὴν καὶ πρεσβύτερά γε αὑτοῦ διαμεμαρτύρηκεν. 54
ὁ γὰρ μήπω ἐν τῷ οἴκῳ τῷ Ἀρχιάδου ὢν ὅθ' ἡ λῆξις αὕτη τοῦ κλήρου ἐγένετο, πῶς ἂν εἰδείη τι τούτων; ἔπειτ' εἰ μὲν αὑτὸν διαμεμαρτυρήκει, εἶχεν ἂν λόγον αὐτῷ τὸ πρᾶγμα· ἀδίκως μὲν ἂν ἔγραψεν, οὐδὲν δ' ἧττον ὑπὲρ τοῦ κατὰ τὴν ἡλικίαν λέγοντος. νῦν δὲ γνησίους υἱοὺς γέγραφε τῷ Ἀρχιάδῃ ἐκείνῳ εἶναι, τόν τε αὑτοῦ πατέρα δῆλον ὅτι καὶ αὑτὸν κατὰ τὴν ἐξ ἀρχῆς ποίησιν, οὐκ ἐπιλογισάμενος ὅτι ἐπανεληλυθότες ἦσαν. οὐκοῦν ἀνάγκη πρεσβυτέρας πράξεις αὐτὸν καὶ μὴ τὰς ἐφ' ἑαυτοῦ γεγενημένας διαμεμαρτυρηκέναι. εἶθ' ὑμεῖς τῷ τοῦτο τετολμηκότι ‖ πιστεύ-

55 σετε ὡς ἀληθῆ λέγοντι; νὴ Δί', ἀλλ' ἀκηκοὼς τοῦ αὐτοῦ
πατρὸς διαμεμαρτύρηκεν. ὁ δέ γε νόμος ἀκοὴν τῶν τετε-
λευτηκότων κωλύει διαμαρτυρεῖν ζῶντος τοῦ πατρὸς τὰ
ὑπ' ἐκείνου πραχθέντα. ἐπεὶ κἀκεῖνο. διὰ τί ποτε Λεώ-
στρατος οὑτοσὶ οὐχ αὑτὸν ἀλλὰ τοῦτον ἐπεγράψατο τῇ
διαμαρτυρίᾳ; τὰ γὰρ πρεσβύτερα τῶν πραγμάτων τὸν
πρεσβύτερον ἔδει διαμαρτυρεῖν. ὅτι νὴ Δί' ἂν εἴποι, τοῦ-
56 τον γὰρ εἰσπεποίηκα υἱὸν τῷ Ἀρχιάδῃ. οὐκοῦν σὲ τὸν
εἰσποιοῦντα καὶ κατασκευάζοντα τὰ πράγματα καὶ λόγον
ἔδει διδόναι, γενόμενον ὑπεύθυνον ὧν πεποίηκας· πολλή
γ' ἀνάγκη. ἀλλὰ τοῦτο μὲν ἔφυγες, τῇ διαμαρτυρίᾳ δὲ τοῦ-
τον οὐδὲν εἰδότ' ἐπεγράψω. ὥστε φανερὸν ὑμῖν ἐστιν ὦ
ἄνδρες δικασταὶ τὰ διαμαρτυρούμενα μὴ εἶναι ἀληθῆ, καὶ
παρ' αὐτοῖς γε τούτοις ὁμολογεῖται. καὶ μὴν κἀκεῖνο δί-
καιόν ἐστι, μὴ λέγοντος αὐτίκα μάλ' ἀκούειν Λεωστράτου
τουτουὶ ὑπὲρ ὧν γε διαμαρτυρῆσαι οὐκ ἐτόλμησεν.
57 Ὡς δὲ καὶ τῶν ἀγώνων ἀδικώτατοι καὶ πλείστης ὀργῆς
ἄξιοι τοῖς ἀγωνιζομένοις αἱ διαμαρτυρίαι εἰσί, μάλιστ' ἂν
τις ἐκεῖθεν καταμάθοι. πρῶτον μὲν γὰρ οὐκ ἀναγκαίως
ἔχουσιν ὥσπερ οἱ ἄλλοι, ἀλλ' ἐκ προαιρέσεως καὶ βουλή-
σεως τῆς τοῦ διαμαρτυροῦντος γίγνονται. εἰ μὲν γὰρ ὑπὲρ
τῶν διαμφισβητουμένων μὴ ἔστιν ἄλλον τρόπον δίκην λα-
βεῖν ἢ διαμαρτυρήσαντα, ἴσως ἀναγκαῖον τὸ διαμαρτυρεῖν·
58 εἰ δὲ καὶ ἄνευ διαμαρτυρίας πρὸς ἅπασι τοῖς συνεδρίοις
ἔνεστι λόγου μὴ ἀποστερηθῆναι, πῶς οὐ προπετείας καὶ
τῆς μεγίστης ἀπονοίας σημεῖον τὸ διαμαρτυρεῖν ἐστίν;
οὐδὲ γὰρ ὁ νομοθέτης ἀναγκαῖον αὐτὸ ἐποίησε τοῖς ἀντι-
δίκοις, ‖ ἀλλ' ἂν βούλωνται διαμαρτυρεῖν ἔδωκεν, ὥσπερ
διάπειραν ποιούμενος τῶν τρόπων ἑνὸς ἑκάστου ἡμῶν,
59 πῶς ποτ' ἔχοιμεν πρὸς τὸ προπετῶς τι πράττειν. ἔτι τοί-
νυν ἐπὶ τὸ τῶν διαμαρτυρούντων μέρος οὔτε δικαστήρια
ἦν ἂν οὔτε ἀγῶνες ἐγίγνοντο· κωλύει γὰρ πάντα ταῦτα τὸ
τῶν διαμαρτυριῶν γένος καὶ ἀποκλείει εἰσαγωγῆς ἕκαστα
τῆς εἰς τὸ δικαστήριον, κατά γε τὴν τοῦ διαμαρτυροῦντος
βούλησιν. διόπερ οἶμαι δεῖν κοινοὺς ἐχθροὺς τοὺς τοιού-
τους ἀνθρώπους ὑπολαμβάνειν πᾶσιν εἶναι, καὶ μηδέποτε
τυγχάνειν αὐτοὺς συγγνώμης ἀγωνιζομένους παρ' ὑμῖν·

προελόμενος γὰρ ἕκαστος αὐτῶν τὸν ἐκ τοῦ διαμαρτυρῆσαι κίνδυνον, οὐκ ἀναγκασθεὶς εἰσέρχεται.

Ὅτι μὲν οὖν ἡ διαμαρτυρία ψευδής ἐστι, καὶ ἐκ τῶν 60
γεγραμμένων καὶ ἐκ τῶν εἰρημένων λόγων σχεδὸν ἀκριβῶς μεμαθήκατε· ὅτι δὲ καὶ οἱ νόμοι ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἡμῖν τὴν κληρονομίαν ἀποδιδόασι, τοῦθ᾽ ὑμᾶς διὰ βραχέων βούλομαι διδάξαι, οὐχ ὡς οὐ μεμαθηκότας καὶ ἐν τοῖς ἐν ἀρχῇ εἰρημένοις, ἀλλ᾽ ἵνα μᾶλλον πρὸς τὴν τούτων ψευδολογίαν
τὰ δίκαια μνημονεύητε. τὸ μὲν γὰρ σύνολον, ὄντες Ἀρ- 61
χιάδῃ, οὗ ἐστιν ὁ κλῆρος οὑτοσί, πρὸς ἀνδρῶν κατὰ γένος ἐγγυτάτω, καὶ τῆς ποιήσεως, ἣν ἐκεῖνος ἐποιήσατο, τῶν μὲν ἐπανεληλυθότων εἰς τὸν πατρῷον οἶκον, τοῦ δ᾽ ἐγκαταλειφθέντος ἄπαιδος τετελευτηκότος, τούτων δ᾽ οὕτως
ἐχόντων ἀξιοῦμεν κληρονομεῖν, οὐδεμίαν οὐσίαν Λεωστρά- 62
του ἀφελόμενοι (οὗτοι μὲν γὰρ τὰς ἑαυτῶν ἔχουσι), τῆς ὑπ᾽ Ἀρχιάδου δὲ καταλειφθείσης καὶ οὔσης ἐκ τῶν νόμων ἡμετέρας. ὁ γὰρ νόμος ὦ ἄνδρες δικασταὶ κελεύει ‖ κρατεῖν τοὺς ἄρρενας καὶ τοὺς ἐκ τῶν ἀρρένων· οὗτοι δ᾽ ἡμεῖς ἐσμέν. οὐκ ἦσαν τοίνυν παῖδες ἐκείνῳ. οἱ δ᾽ ὄντες ἡμεῖς
ἐσμέν. ἔπειτ᾽ οὐ δίκαιον δή που τὸν ποιητὸν υἱὸν ποιη- 63
τοὺς ἑτέρους εἰσάγειν, ἀλλ᾽ ἐγκαταλείπειν μὲν γιγνομένους, ὅταν δὲ τοῦτ᾽ ἐπιλείπῃ, τοῖς γένεσιν ἀποδιδόναι τὰς κληρονομίας· ταῦτα γὰρ οἱ νόμοι κελεύουσιν. ἐπεὶ πῶς οὐκ ἐκκλείεται εἷς ἕκαστος ὑμῶν τῆς κατὰ γένος ἀγχιστείας, ὅταν τοῖς ποιητοῖς ἡ ἄδεια αὕτη δοθῇ; ὁρᾶτε γὰρ ὅτι ταῖς κολακείαις οἱ πλεῖστοι ψυχαγωγούμενοι καὶ ταῖς πρὸς τοὺς οἰκείους διαφοραῖς πολλάκις φιλονεικοῦντες ποιητοὺς υἱεῖς ποιοῦνται· εἰ δ᾽ ἔσται τῷ εἰσποιηθέντι παρὰ τὸν νόμον εἰσποιεῖν ὃν ἂν βούληται, οὐδέποτε τοῖς
γένεσιν αἱ κληρονομίαι δοθήσονται. ἃ καὶ προνοηθεὶς ὁ 64
νομοθέτης ἀπεῖπε τῷ ποιητῷ αὐτῷ ὄντι ποιητὸν υἱὸν μὴ ποιεῖσθαι, τίνα τρόπον διορίσας περὶ τούτων; ὅταν εἴπῃ υἱὸν γνήσιον ἐγκαταλείποντα ἐπανιέναι, δηλοῖ δή που φανερῶς ὅτι οὐ δεῖ ποιεῖσθαι· ἀδύνατον γάρ ἐστιν υἱὸν γνήσιον ἐγκαταλιπεῖν, ἐὰν μὴ γόνῳ γεγονὼς ᾖ τινί. σὺ τοίνυν, ὦ Λεώστρατε, ἀξιοῖς τῷ τετελευτηκότι εἰσποιητῷ εἰς τὸ ἡμέτερον γένος ὄντι ποιητὸν ἐπὶ τὸν κλῆρον εἰσαγαγεῖν,

ὥσπερ ἐπὶ τὰ σαυτοῦ κτήματα καὶ οὐκ εἰς τὰ κατὰ νόμον
65 τῷ προσήκοντι δοθησόμενα βαδίζων. ἡμεῖς δ' ὦ ἄνδρες
δικασταί, εἰ μὲν ὁ τετελευτηκὼς ἐποιήσατό τινα, καίπερ
οὐ διδόντος τοῦ νόμου συνεχωροῦμεν ἂν αὐτῷ, ἢ εἰ δια-
θήκας καταλελοίπει, καὶ ταύταις ἂν ἐνεμείναμεν, ἐπεὶ καὶ
τὸ ἐξ ἀρχῆς τοιοῦτοι ὄντες διετελοῦμεν, οὐκ ἐναντιούμενοι
τούτοις ἔχουσι τὴν οὐσίαν καὶ ἐπανιοῦσιν ἄνω, καθ' ‖ ὃν
66 δή ποτε τρόπον ἐβούλοντο. ἐπεὶ δὲ νυνί ποτε ὑπὸ τούτων
αὐτῶν καὶ ὑπὸ τῶν νόμων τὸ πρᾶγμ' ἐξελήλεγκται, καὶ
οἰόμεθα δεῖν κληρονομεῖν τῶν Ἀρχιάδου καὶ παρ' ἡμῶν
εἶναι τὸν υἱὸν τὸν εἰσποιούμενον τῶν μὴ πεποιημένων
πρότερον, μὴ παρὰ τούτων. δικαίως γὰρ ὁ νομοθέτης,
οἶμαι, ὥσπερ καὶ τὰς ἀτυχίας τῶν οἰκείων καὶ τὰς ἐκδό-
σεις τῶν γυναικῶν τοῖς ἐγγύτατα γένους προσέταττε ποιεῖ-
σθαι, οὕτω καὶ τὰς κληρονομίας καὶ τὴν τῶν ἀγαθῶν
67 μετουσίαν τοῖς αὐτοῖς ἀπέδωκεν. τὸ δὲ πάντων μέγιστον
καὶ γνωριμώτατον ὑμῖν· ὁ γὰρ τοῦ Σόλωνος νόμος οὐδὲ
διαθέσθαι τὸν ποιητὸν ἐᾷ τὰ ἐν τῷ οἴκῳ ὅτῳ ἂν ποιηθῇ.
εἰκότως, οἶμαι· τῷ γὰρ κατὰ νόμον εἰσποιηθέντι ἐπὶ τὰ
ἑτέρου οὐχ οὕτως ὡς περὶ τῶν ἰδίων κτημάτων βουλευ-
τέον ἐστίν, ἀλλὰ τοῖς νόμοις ἀκολούθως, περὶ ἑκάστου
68 τῶν γεγραμμένων ὡς ὁ νόμος λέγει. ὅσοι μὴ ἐπεποίηντο,
φησίν, ὅτε Σόλων εἰσῄει εἰς τὴν ἀρχήν, ἐξεῖναι αὐτοῖς
διαθέσθαι ὅπως ἂν ἐθέλωσιν. τοῖς δέ γε ποιηθεῖσιν οὐκ
ἐξὸν διαθέσθαι, ἀλλὰ ζῶντας ἐγκαταλιπόντας υἱὸν γνή-
σιον ἐπανιέναι, ἢ τελευτήσαντας ἀποδιδόναι τὴν κληρονο-
μίαν τοῖς ἐξ ἀρχῆς οἰκείοις οὖσι τοῦ ποιησαμένου.

ΚΑΤΑ ΣΤΕΦΑΝΟΥ ΨΕΥΔΟΜΑΡΤΥΡΙΩΝ Α.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. Ὅτε Ἀπολλόδωρος ἔκρινε Φορμίωνα τῆς τραπέζης ἀφορμὴν ἐγκαλῶν, ὃ δὲ τὴν δίκην παρεγράψατο, Στέφανος μετ' ἄλλων τινῶν ἐμαρτύρησε Φορμίωνι, ὡς ἄρα ὁ μὲν Φορμίων προυκαλεῖτο ‖ Ἀπολλόδωρον, εἰ μή φησιν ἀντίγραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν τῶν τοῦ πατρὸς Πασίωνος, παρασχεῖν ἀνοῖξαι τὰς διαθήκας αὐτάς, ἃς ἔχει καὶ παρέχεται Ἀμφίας, Ἀπολλόδωρος δὲ ἀνοίγειν οὐκ ἠθέλησεν, ἔστι δὲ ἀντίγραφα τάδε τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος. ταύτην ἐμαρτύρησαν τὴν μαρτυρίαν οἱ περὶ Στέφανον, τοῦ Ἀπολλοδώρου λέγοντος κατὰ

τοῦ Φορμίωνος ὡς ἄρα τὰς διαθήκας πέπλακε καὶ τὸ ὅλον πρᾶγμα σκευώρημα ἐστίν. ἡττηθεὶς τοίνυν τὴν δίκην Ἀπολλόδωρος ὑπὲρ τῆς μαρτυρίας ὡς ψευδοῦς οὔσης τῷ Στεφάνῳ δικάζεται.

Καταψευδομαρτυρηθεὶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ παθὼν
ὑπὸ Φορμίωνος ὑβριστικὰ καὶ δεινὰ δίκην παρὰ τῶν αἰ-
τίων ἥκω ληψόμενος παρ᾽ ὑμῖν. δέομαι δὲ πάντων ὑμῶν
καὶ ἱκετεύω καὶ ἀντιβολῶ πρῶτον μὲν εὐνοϊκῶς ἀκοῦσαί
μου· μέγα γὰρ τοῖς ἠτυχηκόσιν, ὥσπερ ἐγώ, δυνηθῆναι
περὶ ὧν πεπόνθασιν εἰπεῖν καὶ εὐμενῶς ἐχόντων ὑμῶν
ἀκροατῶν τυχεῖν· εἶτ᾽ ἐὰν ἀδικεῖσθαι δοκῶ, βοηθῆσαί μοι
τὰ δίκαια. ἐπιδείξω δ᾽ ὑμῖν τουτονὶ Στέφανον καὶ μεμαρ- 2
τυρηκότα ψευδῆ, καὶ δι᾽ αἰσχροκέρδειαν τοῦτο πεποιηκότα,
‖ καὶ κατήγορον αὐτὸν αὑτοῦ γιγνόμενον· τοσαύτη περι-
φάνεια τοῦ πράγματος ἐστίν. ἐξ ἀρχῆς δ᾽, ὡς ἂν οἷός τε
ὦ, διὰ βραχυτάτων εἰπεῖν πειράσομαι τὰ πεπραγμένα μοι
πρὸς Φορμίωνα, ἐξ ὧν ἀκούσαντες τήν τ᾽ ἐκείνου πονηρίαν
καὶ τούτους, ὅτι τὰ ψευδῆ μεμαρτυρήκασι, γνώσεσθε.

Ἐγὼ γάρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, πολλῶν χρημάτων ὑπὸ 3
τοῦ πατρὸς καταλειφθέντων μοι, καὶ ταῦτα Φορμίωνος
ἔχοντος, καὶ ἔτι πρὸς τούτοις τὴν μητέρα γήμαντος τὴν
ἐμὴν ἀποδημοῦντος ἐμοῦ δημοσίᾳ, τριηραρχοῦντος ὑμῖν,
(ὃν τρόπον δέ, οὐκ ἴσως καλὸν υἱεῖ περὶ μητρὸς ἀκριβῶς
εἰπεῖν), ἐπειδὴ καταπλεύσας ᾐσθόμην καὶ τὰ πεπραγμένα
εἶδον, πολλὰ ἀγανακτήσας καὶ χαλεπῶς ἐνεγκὼν δίκην μὲν
οὐχ οἷός τ᾽ ἦν ἰδίαν λαχεῖν (οὐ γὰρ ἦσαν ἐν τῷ τότε καιρῷ 4
δίκαι, ἀλλ᾽ ἀνεβάλλεσθε ὑμεῖς διὰ τὸν πόλεμον), γραφὴν
δὲ ὕβρεως γράφομαι πρὸς τοὺς θεσμοθέτας αὐτόν. χρό-
νου δὲ γιγνομένου, καὶ τῆς μὲν γραφῆς ἐκκρουομένης δικῶν
δὲ οὐκ οὐσῶν, γίγνονται παῖδες ἐκ τούτου τῇ μητρί. καὶ
μετὰ ταῦτα (εἰρήσεται γὰρ ἅπασα πρὸς ὑμᾶς ἡ ἀλήθεια,
ὦ ἄνδρες δικασταί) πολλοὶ μὲν καὶ φιλάνθρωποι λόγοι
παρὰ τῆς μητρὸς ἐγίγνοντο καὶ δεήσεις ὑπὲρ Φορμίωνος
τουτουί, πολλοὶ δὲ καὶ μέτριοι καὶ ταπεινοὶ παρ᾽ αὐτοῦ
τούτου. ἵνα δὲ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι συντέμω ταῦτα, ἐπειδὴ 5
ποιεῖν τε οὐδὲν ᾤετο δεῖν ὧν τότε ὡμολόγησε, καὶ τὰ χρή-
ματα ἀποστερεῖν ἐνεχείρησεν ἃ τῆς τραπέζης εἶχεν ἀφορ-
μήν, δίκην ἠναγκάσθην αὐτῷ λαχεῖν, ἐπειδὴ ‖ τάχιστα ἐξου-

4*

σία ἐγένετο. γνοὺς δ' οὗτος ὅτι πάντα ἐξελεγχθήσεται
καὶ κάκιστος ἀνθρώπων περὶ ἡμᾶς γεγονὼς ἐπιδειχθή-
σεται, μηχανᾶται καὶ κατασκευάζει ταῦτα ἐφ' οἷς Στέφα-
νος οὑτοσὶ τὰ ψευδῆ μου κατεμαρτύρησεν. καὶ πρῶτον
μὲν παρεγράψατο τὴν δίκην, ἣν ἔφευγε Φορμίων, μὴ εἰσα-
γώγιμον εἶναι· ἔπειτα μάρτυρας, ὡς ἀφῆκα αὐτὸν τῶν
ἐγκλημάτων, παρέσχετο ψευδεῖς, καὶ μισθώσεώς τινος
ἐσκευωρημένης καὶ διαθήκης οὐδὲ πώποτε γενομένης.
6 προλαβὼν δέ μου ὥστε πρότερον λέγειν διὰ τὸ παραγρα-
φὴν εἶναι καὶ μὴ εὐθυδικίᾳ εἰσιέναι, καὶ ταῦτ' ἀναγνοὺς
καὶ τἄλλα ὡς αὑτῷ συμφέρειν ἡγεῖτο ψευσάμενος, οὕτω
διέθηκε τοὺς δικαστὰς ὥστε φωνὴν μηδ' ἡντινοῦν ἐθέλειν
ἀκούειν ἡμῶν· προσοφλὼν δὲ τὴν ἐπωβελίαν καὶ οὐδὲ
λόγου τυχεῖν ἀξιωθείς, ὡς οὐκ οἶδ' εἴ τις πώποτε ἄλλος
ἀνθρώπων, ἀπῄειν βαρέως ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ χαλε-
7 πῶς φέρων. λόγον δ' ἐμαυτῷ διδοὺς εὑρίσκω τοῖς δικά-
σασι μὲν τότε πολλὴν συγγνώμην οὖσαν (ἐγὼ γὰρ αὐτὸς
οὐκ ἂν οἶδ' ὅ τι ἄλλο εἶχον ψηφίσασθαι, τῶν πεπραγμέ-
νων μὲν μηδὲν εἰδώς, τὰ δὲ μαρτυρούμενα ἀκούων), τού-
τους δὲ ἀξίους ὄντας ὀργῆς, οἳ τῷ τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν
αἴτιοι τούτων ἐγένοντο. περὶ μὲν δὴ τῶν ἄλλων τῶν με-
μαρτυρηκότων, ὅταν πρὸς ἐκείνους εἰσίω, τότε ἐρῶ· περὶ
ὧν δ' οὑτοσὶ Στέφανος μεμαρτύρηκεν, ἤδη πειράσομαι
8 διδάσκειν ὑμᾶς. λαβὲ δ' αὐτὴν τὴν μαρτυρίαν καὶ ἀνά-
γνωθί μοι, ἵνα ἐξ αὐτῆς ἐπιδεικνύω. λέγε· σὺ δ' ἐπίλαβε
τὸ ὕδωρ.

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Στέφανος Μενεκλέους Ἀχαρνεύς, Ἔνδιος Ἐπιγένους Λαμπτρεύς, Σκύθης Ἁρματέως Κυδαθηναιεὺς μαρτυροῦσι παρεῖναι πρὸς τῷ διαιτητῇ Τισίᾳ Ἀχαρνεῖ, ὅτε προυκαλεῖτο Φορμίων Ἀπολλόδωρον, εἰ μή φησιν ἀντίγραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος τὸ γραμματεῖον ὃ ἐνεβάλετο Φορμίων εἰς τὸν ἐχῖνον, ἀνοίγειν τὰς διαθήκας τὰς Πασίωνος, ἃς παρεῖχε πρὸς τὸν διαιτητὴν Ἀμφίας ὁ Κηφισοφῶντος κηδεστής· Ἀπολλόδωρον δὲ οὐκ ἐθέλειν ἀνοίγειν· εἶναι δὲ τὰ ἀντίγραφα τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος.*

9 Ἠκούσατε μὲν τῆς μαρτυρίας, ὦ ἄνδρες δικασταί, νο-
μίζω δ' ὑμᾶς, εἰ καὶ μηδὲν τῶν ἄλλων αἰσθάνεσθέ πω,
τοῦτό γε αὐτὸ θαυμάζειν, τὸ τὴν μὲν ἀρχὴν τῆς μαρτυ-
ρίας εἶναι πρόκλησιν, τὴν δὲ τελευτὴν διαθήκην. οὐ μὴν

ἀλλ' ἔγωγ' οἶμαι δεῖν, ἐπειδάν, ὃ τῶν μεμαρτυρημένων ὥσπερ εἰ κεφάλαιόν ἐστιν, ἐπιδείξω ψεῦδος ὄν, τηνικαῦτ' ἤδη καὶ περὶ τῶν τοιούτων ποιεῖσθαι τοὺς λόγους. ἔστι 10
δὴ μεμαρτυρημένον αὐτοῖς προκαλεῖσθαι Φορμίωνα ἀνοίγειν τὰς διαθήκας, ἃς παρέχειν πρὸς τὸν διαιτητὴν Τισίαν Ἀμφίαν τὸν Κηφισοφῶντος κηδεστήν· ἐμὲ δ' οὐκ ἐθέλειν ἀνοίγειν· εἶναι δὲ ἃς αὐτοὶ μεμαρτυρήκασι διαθήκας ἀντιγράφους ἐκείνων. εἶθ' ἡ διαθήκη γέγραπται. ἐγὼ τοί- 11
νυν περὶ μὲν τοῦ προκαλεῖσθαί με ἢ μὴ ταῦτα Φορμίωνα οὐδέν πω λέγω, οὐδὲ ὑπὲρ τοῦ τὰς διαθήκας ἀληθεῖς ἢ ψευδεῖς εἶναι, ἀλλ' αὐτίχ' ὑμᾶς περὶ τούτων διδάξω· ἀλλ' ἃ μεμαρτυρήκασι, μή μ' ἐθέλειν τὸ γραμματεῖον ἀνοίγειν. ὡδὶ δὴ σκοπεῖτε. τοῦ τις ἂν εἵνεκεν ἔφευγεν ἀνοίγειν τὸ γραμματεῖον; ἵν' ἡ ‖ διαθήκη νὴ Δία μὴ φανερὰ γένοιτο τοῖς δικασταῖς. εἰ μὲν τοίνυν μὴ προσεμαρτύρουν τῇ προ- 12
κλήσει τὴν διαθήκην οὗτοι, λόγον εἶχέ τιν' ἂν τὸ φεύγειν ἐμὲ ἀνοίγειν τὸ γραμματεῖον· προσμαρτυρούντων δὲ τούτων καὶ τῶν δικαστῶν ὁμοίως ἀκουσομένων τί ἦν μοι κέρδος τὸ μὴ ἐθέλειν; οὐδὲ ἓν δή που. αὐτὸ γὰρ τοὐναντίον, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, κἂν εἰ μηδὲν προυκαλοῦντο οὗτοι, λόγῳ δ' ἐχρῶντο μόνον, καὶ παρεῖχέ τις αὐτοῖς γραμματεῖον ὡς διαθήκην, ἐμὸν ἦν τὸ προκαλεῖσθαι καὶ ἀνοίγειν ταύτην, ἵν' εἰ μὲν ἄλλ' ἄττα τῶν ὑπὸ τούτων με- 13
μαρτυρημένων ἦν τἀκεῖ γεγραμμένα, μάρτυρας εὐθὺς τῶν περιεστηκότων πολλοὺς ποιησάμενος τεκμηρίῳ τούτῳ καὶ περὶ τῶν ἄλλων, ὡς κατασκευάζουσιν, ἐχρώμην, εἰ δὲ ταῦτ' ἐνῆν, τὸν παρασχόντ' αὐτὸν ἠξίουν μαρτυρεῖν· ἐθελήσαντος μέν γ' ὑπεύθυνον ἐλάμβανον, εἰ δ' ἔφευγε, πάλιν αὐτὸ τοῦθ' ἱκανὸν τεκμήριον ἦν μοι τοῦ πεπλάσθαι τὸ πρᾶγμα. καὶ δὴ καὶ συνέβαινεν ἐκείνως μὲν ἕνα εἶναι πρὸς ὃν τὰ πράγματα ἐγίγνετό μοι, ὡς δ' οὗτοι μεμαρτυρήκασι, πρὸς πολλούς. ἔστιν οὖν ὅστις ἂν ὑμῶν ταῦθ' εἵλετο; ἐγὼ μὲν οὐδένα ἡγοῦμαι. οὐ τοίνυν οὐδὲ κατ' ἄλ- 14
λου πιστεύειν ἐστὲ δίκαιοι. καὶ γάρ, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὅσοις μὲν πρόσεστιν ὀργὴ τῶν πραττομένων ἢ λῆμμά τι κέρδους ἢ παροξυσμὸς ἢ φιλονεικία, ταῦτα μὲν ἄλλος ἂν ἄλλως πράξειε πρὸς τὸν αὐτοῦ τρόπον· ὅσοις δὲ τούτων

*μὲν μηδὲν λογισμὸς δ' ἐφ' ἡσυχίας τοῦ συμφέροντος, τίς
οὕτως ἄφρων ὅστις ἂν τὰ συνοίσοντα ἀφείς, ἐξ ὧν κάκιον
ἔμελλεν ἀγωνιεῖσθαι, ταῦτ' ἔπραξεν; ἃ ‖ γὰρ οὔτ' εἰκότα
οὔτ' εὔλογα οὔτ' ἂν ἔπραξεν οὐδείς, ταῦθ' οὗτοι μεμαρ-
τυρήκασι περὶ ἡμῶν.*
15 *Οὐ τοίνυν μόνον ἐξ ὧν ἐμὲ μὴ ἐθέλειν τὸ γραμματεῖον
ἀνοίγειν μεμαρτυρήκασι, γνοίη τις ἂν αὐτοὺς ὅτι ψεύδον-
ται, ἀλλὰ καὶ ἐκ τοῦ πρόκλησιν ὁμοῦ διαθήκῃ μαρτυρεῖν.
οἶμαι γὰρ ἅπαντας ὑμᾶς εἰδέναι ὅτι, ὅσα μὴ δυνατὸν πρὸς
ὑμᾶς ἀγαγεῖν ἐστι τῶν πεπραγμένων, τούτων προκλήσεις*
16 *εὑρέθησαν. οἷον βασανίζειν οὐκ ἔστιν ἐναντίον ὑμῶν·
ἀνάγκη τούτου πρόκλησιν εἶναι. οἷον εἴ τι πέπρακται
καὶ γέγονεν ἔξω που τῆς χώρας, ἀνάγκη καὶ τούτου πρό-
κλησιν εἶναι πλεῖν ἢ βαδίζειν οὗ τὸ πρᾶγμ' ἐπράχθη· καὶ
τῶν ἄλλων τῶν τοιούτων. ὅπου δ' αὐτὰ τὰ πράγματα ἐφ'
αὑτῶν ἔστιν ὑμῖν ἐμφανῆ ποιῆσαι, τί ἦν ἁπλούστερον ἢ*
17 *ταῦτ' ἄγειν εἰς μέσον; Ἀθήνησι μὲν τοίνυν ὁ πατὴρ ἐτε-
λεύτησεν οὑμός, ἐγίγνετο δ' ἡ δίαιτα ἐν τῇ ποικίλῃ στοᾷ,
μεμαρτυρήκασι δ' οὗτοι παρέχειν τὸ γραμματεῖον Ἀμφίαν
πρὸς τὸν διαιτητήν. οὐκοῦν εἴπερ ἀληθὲς ἦν, ἐχρῆν αὐτὸ
τὸ γραμματεῖον εἰς τὸν ἐχῖνον ἐμβαλεῖν καὶ τὸν παρέχοντα
μαρτυρεῖν, ἵν' ἐκ τῆς ἀληθείας καὶ τοῦ τὰ σημεῖα ἰδεῖν οἱ
μὲν δικασταὶ τὸ πρᾶγμα ἔγνωσαν, ἐγὼ δέ, εἴ τις ἠδίκει*
18 *με, ἐπὶ τοῦτον ᾖα. νῦν δὲ εἷς μὲν οὐδεὶς ὅλον τὸ πρᾶγμα
ἀνεδέξατο, οὐδὲ μεμαρτύρηκεν ἁπλῶς ὡς ἄν τις τἀληθῆ
μαρτυρήσειε, μέρος δ' ἕκαστος ὡς δὴ σοφὸς καὶ διὰ τοῦτο
οὐ δώσων δίκην, ὃ μὲν γραμματεῖον ἔχειν ἐφ' ᾧ γεγράφθαι
διαθήκη Πασίωνος, ὃ δὲ πεμφθεὶς ὑπὸ τούτου παρέχειν*
19 *τοῦτο, εἰ δ' ἀληθὲς ἢ ψεῦδος, οὐδὲν εἰδέναι. οἱδὶ δὲ τῇ
προκλήσει χρησάμενοι ‖ παραπετάσματι διαθήκας ἐμαρ-
τύρησαν, ὡς ἂν μάλισθ' οἱ δικασταὶ ταύτην τὴν διαθήκην
ἐπίστευσαν τοῦ πατρὸς εἶναι, ἐγὼ δὲ ἀπεκλείσθην τοῦ
λόγου τυχεῖν ὑπὲρ ὧν ἀδικοῦμαι, οὗτοι δὲ φωραθεῖεν τὰ
ψευδῆ μεμαρτυρηκότες. καίτοι τό γ' ἐναντίον ᾤοντο τού-
του. ἵνα δ' εἰδῆτε ταῦτα ὅτι ἀληθῆ λέγω, λαβὲ τὴν τοῦ
Κηφισοφῶντος μαρτυρίαν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Κηφισοφῶν Κεφαλῶνος Ἀφιδναῖος μαρτυρεῖ κατα-*

λειφθῆναι αὐτῷ ὑπὸ τοῦ πατρὸς γραμματεῖον ἐφ᾿ ᾧ ἐπιγεγράφθαι διαθήκη Πασίωνος.

Οὐκοῦν ἦν ἁπλοῦν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸν ταῦτα μαρτυροῦντα προσμαρτυρῆσαι "εἶναι δὲ τὸ γραμματεῖον, ὃ αὐτὸς παρέχει, τοῦτο," καὶ τὸ γραμματεῖον ἐμβαλεῖν. ἀλλὰ τοῦτο μέν, οἶμαι, τὸ ψεῦδος ἡγεῖτο ὀργῆς ἄξιον, καὶ δίκην ἂν ὑμᾶς παρ᾿ αὐτοῦ λαβεῖν, γραμματεῖον δ᾿ αὐτῷ καταλειφθῆναι μαρτυρῆσαι φαῦλον καὶ οὐδέν. ἔστι δὲ τοῦτ᾿ αὐτὸ τὸ δηλοῦν καὶ κατηγοροῦν ὅτι πᾶν τὸ πρᾶγμα κατεσκευάκασιν. εἰ μὲν γὰρ ἐπῆν ἐπὶ τῆς διαθήκης 20
21 "Πασίωνος καὶ Φορμίωνος" ἢ "πρὸς Φορμίωνα" ἢ τοιοῦτό τι, εἰκότως ἂν αὐτὴν ἐτήρει τούτῳ· εἰ δ᾿, ὥσπερ μεμαρτύρηκεν, ἐπῆν "διαθήκη Πασίωνος," πῶς οὐκ ἂν ἀνῃρήμην αὐτὴν ἐγώ, συνειδὼς μὲν ἐμαυτῷ μέλλοντι δικάζεσθαι, συνειδὼς δ᾿ ὑπεναντίαν οὖσαν, εἴπερ ἦν τοιαύτη, τοῖς ἐμαυτῷ συμφέρουσι, κληρονόμος δὲ ὢν καὶ ταύτης, εἴπερ ἦν τοὐμοῦ πατρός, καὶ τῶν ἄλλων πατρῴων ὁμοίως; οὐκοῦν τῷ παρέχεσθαι μὲν Φορμίωνι, γεγράφθαι 22
δὲ Πασίωνος, εἰᾶσθαι δ᾿ ὑφ᾿ ἡμῶν ἐξελέγχεται κατεσκευασμένη ‖ μὲν ἡ διαθήκη, ψευδὴς δ᾿ ἡ τοῦ Κηφισοφῶντος μαρτυρία. ἀλλ᾿ ἐῶ Κηφισοφῶντα· οὔτε γὰρ νῦν μοι πρὸς ἐκεῖνόν ἐστιν, οὔτ᾿ ἐμαρτύρησεν ἐκεῖνος περὶ τῶν ἐν ταῖς διαθήκαις ἐνόντων οὐδέν. καίτοι καὶ τοῦτο σκοπεῖτε, 23
ὅσον ἐστὶ τεκμήριον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦ τούτους τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκέναι. εἰ γὰρ ὁ μὲν αὐτὸς ἔχειν τὸ γραμματεῖον μαρτυρῶν οὐκ ἐτόλμησεν ἀντίγραφα εἶναι ἃ παρείχετο Φορμίων τῶν παρ᾿ αὐτῷ μαρτυρῆσαι, οὗτοι δὲ οὔτε ἐξ ἀρχῆς ὡς παρῆσαν ἔχοιεν ἂν εἰπεῖν οὔτε ἀνοιχθὲν εἶδον πρὸς τῷ διαιτητῇ τὸ γραμματεῖον, ἀλλὰ καὶ μεμαρτυρήκασιν αὐτοὶ μὴ ἐθέλειν ἐμὲ ἀνοίγειν, ταῦτα ὡς ἀντίγραφά ἐστιν ἐκείνων μεμαρτυρηκότες τί ἄλλο ἢ σφῶν αὐτῶν κατήγοροι γεγόνασιν ὅτι ψεύδονται;

Ἔτι τοίνυν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὡς γέγραπταί τις ἂν 24
ἐξετάσας τὴν μαρτυρίαν γνοίη παντελῶς τοῦτο μεμηχανημένους αὐτούς, ὅπως δικαίως καὶ ἀδίκως δόξει ταῦτα ὁ πατὴρ οὑμὸς διαθέσθαι. λαβὲ δ᾿ αὐτὴν τὴν μαρτυρίαν, καὶ λέγ᾿ ἐπισχὼν οὗ ἂν σε κελεύω, ἵν᾿ ἐξ αὐτῆς δεικνύω.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσι παρεῖναι πρὸς τῷ διαιτητῇ Τισίᾳ, ὅτε προυκαλεῖτο Φορμίων Ἀπολλόδωρον, εἰ μή φησιν ἀντίγραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος.*

25 *Ἐπίσχες. ἐνθυμεῖσθε ὅτι τῶν διαθηκῶν γέγραπται τῶν Πασίωνος. καίτοι χρῆν τοὺς βουλομένους τἀληθῆ μαρτυρεῖν, εἰ τὰ μάλιστ' ἐγίγνετο ἡ πρόκλησις, ὡς οὐκ ἐγίγνετο, ἐκείνως μαρτυρεῖν. λέγε τὴν μαρτυρίαν ἀπ' ἀρχῆς πάλιν.*

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσι παρεῖναι πρὸς τῷ διαιτητῇ Τισίᾳ.*

Μαρτυροῦμεν· παρῆμεν γὰρ δή. λέγε.

ὅτε προυκαλεῖτο Φορμίων Ἀπολλόδωρον.

Καὶ τοῦτο, εἴπερ προυκαλεῖτο, ὀρθῶς ἂν ἐμαρτύρουν.

εἰ μή φησιν ἀντίγραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος.

26 *Ἔχε αὐτοῦ. οὐδ' ἂν εἷς ἔτι δή που τοῦτ' ἐμαρτύρησεν, εἰ μή τις καὶ παρῆν διατιθεμένῳ τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ· ἀλλ' εὐθὺς ἂν εἶπε "τί δ' ἡμεῖς ἴσμεν εἴ τινές εἰσι διαθῆκαι Πασίωνος;" καὶ γράφειν ἂν αὐτὸν ἠξίωσεν ὥσπερ ἐν ἀρχῇ τῆς προκλήσεως, "εἰ μή φημ' ἐγὼ ἀντίγραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν ὧν φησὶ Φορμίων Πασίωνα καταλιπεῖν," οὐ "τῶν Πασίωνος." τοῦτο μὲν γὰρ ἦν εἶναι διαθήκας μαρτυρεῖν, ὅπερ ἦν τούτοις βούλημα, ἐκεῖνο δὲ φάσκειν Φορμίωνα· πλεῖστον δὲ δή που κεχώρισται τό τ' εἶναι καὶ τὸ τοῦτον φάσκειν.*

27 *Ἵνα τοίνυν εἰδῆτε ὑπὲρ ἡλίκων καὶ ὅσων ἦν τὸ κατασκεύασμα τὸ τῆς διαθήκης, μικρὰ ἀκούσατέ μου. ἦν γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦτο πρῶτον μὲν ὑπὲρ τοῦ μὴ δοῦναι δίκην ὧν διεφθάρκει ἣν ἐμοὶ μὲν οὐ καλὸν λέγειν, ὑμεῖς δ' ἴστε κἂν ἐγὼ μὴ λέγω, ἔπειθ' ὑπὲρ τοῦ κατασχεῖν ὅσα ἦν τῷ ἡμετέρῳ πατρὶ χρήματα παρὰ τῇ μητρί, πρὸς δὲ τούτοις ὑπὲρ τοῦ καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἡμετέρων ἁπάντων κυρίῳ γενέσθαι. ὅτι δ' οὕτω ταῦτ' ἔχει, τῆς διαθήκης αὐτῆς ἀκούσαντες γνώσεσθε· φανήσεται γὰρ οὐ πατρὸς ὑπὲρ υἱέων γράφοντος ἐοικυῖα διαθήκῃ, ἀλλὰ δούλου λελυμασμένου τὰ τῶν δεσποτῶν, ὅπως μὴ δώσει δίκην ‖*
28 *σκοποῦντος. λέγε δ' αὐτοῖς τὴν διαθήκην αὐτήν, ἣν οὗτοι πρὸ τῆς προκλήσεως μεμαρτυρήκασιν· ὑμεῖς δ' ἐνθυμεῖσθε ἃ λέγω.*

ΔΙΑΘΗΚΗ. *Τάδε διέθετο Πασίων Ἀχαρνεύς. δίδωμι τὴν ἐμαυτοῦ γυναῖκα Ἀρχίππην Φορμίωνι, καὶ προῖκα ἐπιδίδωμι Ἀρχίππῃ τά-*

λαντον μὲν τὸ ἐκ Πεπαρήθου τάλαντον δὲ τὸ αὐτόθεν, συνοικίαν ἑκατὸν μνῶν, θεραπαίνας καὶ τὰ χρυσία καὶ τἄλλ' ὅσα ἐστὶν αὐτῇ ἔνδον. ἅπαντα ταῦτα Ἀρχίππῃ δίδωμι.

Ἠκούσατε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὸ πλῆθος τῆς προικός, τάλαντον ἐκ Πεπαρήθου, τάλαντον αὐτόθεν, συνοικίαν ἑκατὸν μνῶν, θεραπαίνας καὶ χρυσία, καὶ τἆλλα, φησίν, ὅσα ἐστὶν αὐτῇ, δίδωμι, τούτῳ τῷ γράμματι καὶ τοῦ ζητῆσαί τι τῶν καταλειφθέντων ἀποκλείων ἡμᾶς.

29 Φέρε δὴ δείξω τὴν μίσθωσιν ὑμῖν, καθ' ἣν ἐμεμίσθωτο τὴν τράπεζαν παρὰ τοῦ πατρὸς οὗτος· καὶ γὰρ ἐκ ταύτης καίπερ ἐσκευωρημένης ὄψεσθε ὅτι πλάσμα ὅλον ἐστὶν ἡ διαθήκη. δείξω δ' ἣν οὗτος παρέσχετο μίσθωσιν, οὐκ ἄλλην τινά, ἐν ᾗ προσγέγραπται ἕνδεκα τάλαντα ὁ πατὴρ ὀφείλων εἰς τὰς παρακαταθήκας τούτῳ. ἔστι δ', οἶμαι,
30 ταῦτα τοιαῦτα. τῶν μὲν οἴκοι χρημάτων ὡς ἐπὶ τῇ μητρὶ δοθέντων διὰ τῆς διαθήκης αὐτὸν ἐποίησε κύριον, ὥσπερ ἀκηκόατε ἄρτι, τῶν δ' ἐπὶ τῆς τραπέζης ὄντων, ἃ πάντες ᾔδεσαν καὶ λαθεῖν οὐκ ἦν, διὰ τοῦ προσοφείλοντα ἀποφῆναι τὸν πατέρα ἡμῶν, ἵν' ὅσα ἐξελέγχοιτο ἔχων κεκομίσθαι φαίη. ὑμεῖς δ' ἴσως αὐτὸν ὑπειλήφατε, ὅτι σολοικίζει τῇ φωνῇ, βάρβαρον καὶ εὐκαταφρόνητον εἶναι. ‖ ἔστι δὲ βάρβαρος οὗτος τῷ μισεῖν οὓς αὐτῷ προσῆκε τιμᾶν· τῷ δὲ κακουργῆσαι καὶ διορύξαι πράγματα οὐδε-
31 νὸς λείπεται. λαβὲ δὴ τὴν μίσθωσιν, καὶ λέγε, ἣν τὸν αὐτὸν τρόπον διὰ προκλήσεως ἐνεβάλοντο.

ΜΙΣΘΩΣΙΣ ΤΡΑΠΕΖΗΣ. *Κατὰ τάδε ἐμίσθωσε Πασίων τὴν τράπεζαν Φορμίωνι· μίσθωσιν φέρειν Φορμίωνα τῆς τραπέζης τοῖς παισὶ τοῖς Πασίωνος δύο τάλαντα καὶ τετταράκοντα μνᾶς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἑκάστου, χωρὶς τῆς καθ' ἡμέραν διοικήσεως· μὴ ἐξεῖναι δὲ τραπεζιτεῦσαι χωρὶς Φορμίωνι, ἐὰν μὴ πείσῃ τοὺς παῖδας τοὺς Πασίωνος. ὀφείλει δὲ Πασίων ἐπὶ τὴν τράπεζαν ἕνδεκα τάλαντα εἰς τὰς παρακαταθήκας.*

32 Ἃς μὲν τοίνυν παρέσχετο συνθήκας ὡς κατὰ ταύτας μισθωσάμενος τὴν τράπεζαν, αὗταί εἰσιν, ὦ ἄνδρες δικασταί· ἀκούετε δ' ἐν ταύταις ἀναγιγνωσκομέναις μίσθωσιν μὲν φέρειν τοῦτον, ἄνευ τῆς καθ' ἡμέραν διοικήσεως, δύο τάλαντα καὶ τετταράκοντα μνᾶς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἑκάστου, μὴ ἐξεῖναι δὲ τραπεζιτεύειν αὐτῷ, ἐὰν μὴ ἡμᾶς πείσῃ. προσγέγραπται δὲ τελευταῖον "ὀφείλει δὲ Πασίων ἕνδεκα

33 τάλαντα εἰς τὰς παρακαταθήκας." ἔστιν οὖν ὅστις ἂν
τοῦ ξύλου καὶ τοῦ χωρίου καὶ τῶν γραμματείων τοσαύτην
ὑπέμεινε φέρειν μίσθωσιν; ἔστι δ' ὅστις ἄν, δι' ὃν ὠφει-
λήκει τοσαῦτα χρήματα ἡ τράπεζα, τούτῳ τὰ λοιπὰ ἐπέ-
τρεψεν; εἰ γὰρ ἐνεδέησε τοσούτων χρημάτων, τούτου διοι-
κοῦντος ἐνεδέησεν. ἴστε γὰρ πάντες, καὶ ὅτ' ἦν ὁ πατὴρ
ἐπὶ τοῦ τραπεζιτεύειν, τοῦτον καθήμενον καὶ διοικοῦντα
ἐπὶ τῇ τραπέζῃ, ὥστε ἐν τῷ μυλῶνι προσῆκεν αὐτὸν εἶναι
μᾶλλον ἢ ‖ τῶν λοιπῶν κύριον γενέσθαι. ἀλλ' ἐῶ ταῦτα
καὶ τἄλλ' ὅσ' ἂν περὶ τῶν ἕνδεκα ταλάντων ἔχοιμι εἰπεῖν,
34 ὡς οὐκ ὤφειλεν ὁ πατὴρ ἀλλ' οὗτος ὑφῄρηται. ἀλλ' οὗ
ἀνέγνων εἵνεκα, τοῦ τὴν διαθήκην ψευδῆ δεῖξαι, τοῦθ'
ὑμᾶς ἀναμνήσω. γέγραπται γὰρ αὐτόθι μὴ ἐξεῖναι δὲ
τραπεζιτεύειν Φορμίωνι, ἐὰν μὴ ἡμᾶς πείσῃ. τοῦτο τοί-
νυν τὸ γράμμα παντελῶς δηλοῖ ψευδῆ τὴν διαθήκην οὖ-
σαν. τίς γὰρ ἀνθρώπων, ἃ μὲν ἤμελλε τραπεζιτεύων
οὗτος ἐργάζεσθαι, ταῦθ' ὅπως ἡμῖν τοῖς αὐτοῦ παισὶν
ἀλλὰ μὴ τούτῳ γενήσεται προυνοήθη, καὶ διὰ τοῦτο μὴ
ἐξεῖναι τούτῳ τραπεζιτεύειν ἔγραψεν, ἵνα μὴ ἀφίστηται
ἀφ' ἡμῶν· ἃ δ' αὐτὸς εἰργασμένος ἔνδον κατέλειπε, ταῦθ'
35 ὅπως οὗτος λήψεται παρεσκεύασεν; καὶ τῆς μὲν ἐργασίας
ἐφθόνησεν, ἧς οὐδὲν αἰσχρὸν ἦν μεταδοῦναι, τὴν δὲ γυ-
ναῖκα ἔδωκεν, οὗ μεῖζον οὐδὲν ἂν κατέλιπεν ὄνειδος;
τυχών γε τῆς παρ' ὑμῶν δωρεᾶς, εἶτα ὥσπερ ἂν δοῦλος
δεσπότῃ διδούς, ἀλλ' οὐ τοὐναντίον, εἴπερ ἐδίδου, δεσπό-
της οἰκέτῃ, προστιθεὶς προῖκα ὅσην οὐδεὶς τῶν ἐν τῇ
36 πόλει φαίνεται. καίτοι τούτῳ μὲν αὐτὸ τοῦτο ἀγαπητὸν
ἦν, τὸ τῆς δεσποίνης ἀξιωθῆναι· τῷ πατρὶ δὲ οὐδὲ λαμ-
βάνοντι τοσαῦτα χρήματα, ὅσα φασὶ διδόντα οὗτοι, εὔ-
λογον ἦν πρᾶξαι ταῦτα. ἀλλ' ὅμως ἃ τοῖς εἰκόσι, τοῖς
χρόνοις, τοῖς πεπραγμένοις ἐξελέγχεται ψευδῆ, ταῦτα
μαρτυρεῖν οὐκ ὤκνησεν οὑτοσὶ Στέφανος.

37 Εἶτα λέγει περιιὼν ὡς ἐμαρτύρησε μὲν Νικοκλῆς ἐπι-
τροπεῦσαι κατὰ τὴν διαθήκην, ἐμαρτύρησε δὲ Πασικλῆς
ἐπιτροπευθῆναι κατὰ τὴν διαθήκην. ἐγὼ δὲ αὐτὰ ταῦτ'
οἶμαι τεκμήρια εἶναι τοῦ μήτ' ἐκείνους τἀληθῆ ‖ μήτε
τούσδε μεμαρτυρηκέναι. ὁ γὰρ ἐπιτροπεῦσαι κατὰ δια-

θήκας μαρτυρῶν δῆλον ὅτι καθ' ὁποίας ἂν εἰδείη, καὶ ὁ
ἐπιτροπευθῆναι κατὰ διαθήκας μαρτυρῶν δῆλον ὅτι καθ'
ὁποίας ἂν εἰδείη. τί οὖν μαθόντες ἐμαρτυρεῖτε ὑμεῖς ἐν 38
προκλήσει διαθήκας, ἀλλ' οὐκ ἐκείνους εἰᾶτε; εἰ γὰρ αὖ
μὴ φήσουσιν εἰδέναι τὰ γεγραμμένα ἐν αὐταῖς, πῶς ὑμᾶς
οἷόν τ' εἰδέναι τοὺς μηδαμῇ μηδαμῶς τοῦ πράγματος ἐγ-
γύς; τί ποτ' οὖν οἳ μὲν ἐκεῖνα οἳ δὲ ταῦτα ἐμαρτύρησαν;
ὅπερ εἴρηκα καὶ πρότερον, διείλοντο τἀδικήματα, καὶ ἐπι-
τροπεῦσαι μὲν κατὰ διαθήκην οὐδὲν δεινὸν ἡγεῖτο μαρ-
τυρεῖν ὁ μαρτυρῶν, οὐδ' ἐπιτροπευθῆναι κατὰ διαθήκην, 39
ἀφαιρῶν ἑκάτερος τὸ μαρτυρεῖν τὰ ἐν ταῖς διαθήκαις ὑπὸ
τούτου γεγραμμένα, οὐδὲ καταλιπεῖν τὸν πατέρα αὑτῷ
ἐπιγεγραμμένον γραμματεῖον διαθήκην, οὐδὲ τὰ τοιαῦτα·
διαθήκας δὲ μαρτυρεῖν ἐν αἷς χρημάτων τοσούτων κλοπή,
γυναικὸς διαφθορά, γάμοι δεσποίνης, πράγματα αἰσχύνην
καὶ ὕβριν τοσαύτην ἔχοντα, οὐδεὶς ἤθελε πλὴν οὗτοι, πρό-
κλησιν κατασκευάσαντες, παρ' ὧν δίκαιον τῆς ὅλης τέχνης
καὶ κακουργίας δίκην λαβεῖν.

Ἵνα τοίνυν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, μὴ μόνον ἐξ ὧν ἐγὼ 40
κατηγορῶ καὶ ἐλέγχω δῆλος ὑμῖν γένηται τὰ ψευδῆ με-
μαρτυρηκὼς οὑτοσὶ Στέφανος, ἀλλὰ καὶ ἐξ ὧν πεποίηκεν
ὁ παρασχόμενος αὐτόν, τὰ πεπραγμένα ἐκείνῳ βούλομαι
πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν. ὅπερ δ' εἶπον ἀρχόμενος τοῦ λόγου,
δείξω κατηγόρους γιγνομένους αὐτοὺς ἑαυτῶν. τὴν γὰρ
δίκην, ἐν ᾗ ταῦτα ἐμαρτυρήθη, παρεγράψατο Φορμίων
πρὸς ἐμὲ μὴ εἰσαγώγιμον ‖ εἶναι ὡς ἀφέντος ἐμοῦ τῶν
ἐγκλημάτων αὐτόν. τοῦτο τοίνυν ἐγὼ μὲν οἶδα ψεῦδος 41
ὄν, καὶ ἐλέγξω δὲ ὅταν εἰσίω πρὸς τοὺς ταῦτα μεμαρτυ-
ρηκότας· τούτῳ δὲ οὐχ οἷόν τε τοῦτ' εἰπεῖν. εἰ τοίνυν
ἀληθῆ πιστεύσαιτ' εἶναι τὴν ἄφεσιν, οὕτω καὶ μάλιστ' ἂν
οὗτος φανείη ψευδῆ μεμαρτυρηκὼς καὶ κατεσκευασμένης
διαθήκης μάρτυς γεγονώς. τίς γὰρ οὕτως ἄφρων ὥστε
ἄφεσιν μὲν ἐναντίον μαρτύρων ποιήσασθαι τοῦ βεβαίαν
αὑτῷ τὴν ἀπαλλαγὴν εἶναι, τὰς δὲ συνθήκας καὶ τὰς δια-
θήκας καὶ τἆλλα, ὑπὲρ ὧν ἐποιεῖτο τὴν ἄφεσιν, σεση-
μασμένα ἐᾶσαι καθ' αὑτοῦ κεῖσθαι; οὐκοῦν ἐναντία μὲν ἡ 42
παραγραφὴ πᾶσι τοῖς μεμαρτυρημένοις, ἐναντία δέ, ἣν

ἀνέγνων ὑμῖν ἄρτι μίσθωσιν, τῇδε τῇ διαθήκῃ· οὐδὲν δὲ
τῶν πεπραγμένων οὔτ' εὔλογον οὔθ' ἁπλοῦν οὔθ' ὁμολο-
γούμενον αὐτὸ ἑαυτῷ φαίνεται, ἐκ δὲ τοῦ τούτου τρόπου
πάντα πεπλασμένα καὶ κατεσκευασμένα ἐλέγχεται.
43 Ὡς μὲν τοίνυν ἐστὶν ἀληθῆ τὰ μεμαρτυρημένα, οὔτ'
αὐτὸν τοῦτον οὔτ' ἄλλον ὑπὲρ τούτου δεῖξαι δυνήσεσθαι
νομίζω· ἀκούω δ' αὐτὸν τοιοῦτόν τι παρεσκευάσθαι λέ-
γειν, ὡς προκλήσεώς ἐστιν ὑπεύθυνος, οὐχὶ μαρτυρίας,
καὶ δυοῖν αὐτῷ προσήκει δοῦναι λόγον, οὐ πάντων τῶν
γεγραμμένων, εἴτε προυκαλεῖτό με ταῦτα Φορμίων ἢ μή,
καὶ εἰ μὴ ἐδεχόμην ἐγώ· ταῦτα μὲν γὰρ ἁπλῶς αὐτὸς
μεμαρτυρηκέναι φήσει, τὰ δ' ἄλλα ἐκεῖνον προκαλεῖσθαι,
εἰ δ' ἔστιν ἢ μὴ ταῦτα, οὐδὲν προσήκειν αὐτῷ σκοπεῖν.
44 πρὸς δὴ τὸν λόγον τοῦτον καὶ τὴν ἀναίδειαν βέλτιόν ἐστι
μικρὰ προειπεῖν ὑμῖν, ἵνα μὴ λάθητε ἐξαπατηθέντες.
πρῶτον ‖ μέν, ὅταν ἐγχειρῇ λέγειν τοῦτο, ὡς ἄρα οὐ πάν-
των ὑπεύθυνός ἐστιν, ἐνθυμεῖσθε ὅτι διὰ ταῦτα ὁ νόμος
μαρτυρεῖν ἐν γραμματείῳ κελεύει, ἵνα μήτ' ἀφελεῖν ἐξῇ
μήτε προσθεῖναι τοῖς γεγραμμένοις μηδέν. τότ' οὖν αὐ-
τὸν ἔδει ταῦτ' ἀπαλείφειν κελεύειν ἃ νῦν οὔ φησι μεμαρ-
45 τυρηκέναι, οὐ νῦν ἐνόντων ἀναισχυντεῖν. ἔπειτα καὶ τόδε
σκοπεῖτε, εἰ ἐάσαιτ' ἂν ἐναντίον ὑμῶν ἐμὲ προσγράψαι
τι λαβόντα τὸ γραμματεῖον. οὐ δή που. οὔκουν οὐδὲ τοῦ-
τον ἀφαιρεῖν τῶν γεγραμμένων ἐᾶν προσήκει· τίς γὰρ
ἁλώσεται πώποτε ψευδομαρτυριῶν, εἰ μαρτυρήσει τε ἃ
βούλεται, καὶ λόγον ὧν βούλεται δώσει; ἀλλ' οὐχ οὕτω
ταῦτα οὔθ' ὁ νόμος διεῖλεν οὔθ' ὑμῖν ἀκούειν προσήκει·
ἀλλ' ἐκεῖνο ἁπλοῦν καὶ δίκαιον. τί γέγραπται; τί μεμαρ-
τύρηκας; ταῦθ' ὡς ἀληθῆ, δείκνυε. καὶ γὰρ ἀντιγέγραψαι
ταῦτα "ἀληθῆ μεμαρτύρηκα μαρτυρήσας τὰ ἐν τῷ γραμμα-
46 τείῳ γεγραμμένα," οὐ τὸ καὶ τὸ τῶν ἐν τῷ γραμματείῳ. ὅτι
δ' οὕτω ταῦτ' ἔχει, λαβὲ τὴν ἀντιγραφὴν αὐτήν μοι. λέγε.

ΑΝΤΙΓΡΑΦΗ.

Ἀπολλόδωρος Πασίωνος Ἀχαρνεὺς Στεφάνῳ Μενεκλέους Ἀχαρνεῖ ψευδομαρτυριῶν, τίμημα τάλαντον. τὰ ψευδῆ μου κατεμαρτύρησε Στέφανος μαρτυρήσας τὰ ἐν τῷ γραμματείῳ γεγραμμένα.

Στέφανος Μενεκλέους Ἀχαρνεὺς τἀληθῆ ἐμαρτύρησα μαρτυρήσας τὰ ἐν τῷ γραμματείῳ γεγραμμένα.

‖ Ταῦτα οὗτος ἀντεγράψατο, ἃ χρὴ μνημονεύειν ὑμᾶς, καὶ μὴ τοὺς ἐπ' ἐξαπάτῃ νῦν λόγους ὑπὸ τούτου ῥηθησομένους πιστοτέρους ποιεῖσθαι τῶν νόμων καὶ τῶν ὑπὸ τούτου γραφέντων εἰς τὴν ἀντιγραφήν.

Πυνθάνομαι τοίνυν αὐτοὺς καὶ περὶ ὧν ἔλαχον τὴν ἐξ 47
ἀρχῆς δίκην ἐρεῖν καὶ κατηγορήσειν, ὡς συκοφάντημα ἦν.
ἐγὼ δ', ὃν μὲν τρόπον ἐσκευωρήσατο τὴν μίσθωσιν, ὅπως
τὴν ἀφορμὴν τῆς τραπέζης κατάσχοι, εἶπον καὶ διεξῆλθον
ὑμῖν, ὑπὲρ δὲ τῶν ἄλλων οὐκ ἂν οἷός τ' εἴην λέγειν ἅμα
καὶ τούτους ἐλέγχειν περὶ τῆς μαρτυρίας· οὐ γὰρ ἱκανόν
μοι τὸ ὕδωρ ἐστίν. ὅτι δ' οὐδ' ὑμεῖς ἐθέλοιτ' ἂν εἰκότως 48
ἀκούειν περὶ τούτων αὐτῶν, ἐκεῖθεν εἴσεσθε, ἂν λογίσησθε πρὸς ὑμᾶς αὐτοὺς ὅτι οὔτε νῦν ἐστὶ χαλεπὸν περὶ ὧν μὴ κατηγόρηται λέγειν, οὔτε ψευδεῖς ἀναγνόντα μαρτυρίας ἀποφεύγειν. ἀλλ' οὐδέτερόν γε δίκαιον τούτων οὐδ' ἂν εἷς φήσειεν εἶναι, ἀλλ' ὃ ἐγὼ προκαλοῦμαι νῦν. σκοπεῖτε δὲ ἀκούσαντες. ἐγὼ γὰρ ἀξιῶ, οὓς μὲν ἀφείλοντό 49
με ἐλέγχους περὶ τῶν ἐγκλημάτων, οὓς προσῆκον ἦν ῥηθῆναι, μὴ ζητεῖν αὐτοὺς νῦν, αἷς δὲ ἀφείλοντο μαρτυρίαις, ὡς εἰσὶν ἀληθεῖς δεικνύναι. εἰ δ' ὅταν μὲν τὴν δίκην εἰσίω, τὰς μαρτυρίας με ἐλέγχειν ἀξιώσουσιν, ὅταν δὲ ταύταις ἐπεξίω, περὶ τῶν ἐξ ἀρχῆς ἐγκλημάτων λέγειν με κελεύσουσιν, οὔτε δίκαια οὔτε ὑμῖν συμφέροντα ἐροῦσιν. δικάσειν γὰρ ὀμωμόκατε ὑμεῖς οὐ περὶ ὧν ἂν ὁ 50
φεύγων ἀξιοῖ, ἀλλ' ὑπὲρ αὐτῶν ὧν ἂν ἡ δίωξις ᾖ. ταύτην δ' ἀνάγκη τῇ τοῦ διώκοντος λήξει δηλοῦσθαι, ἣν ἐγὼ τούτῳ ψευδομαρτυριῶν εἴληχα. μὴ δὴ τοῦτ' ‖ ἀφεὶς περὶ ὧν οὐκ ἀγωνίζεται λεγέτω· μηδ' ὑμεῖς ἐᾶτε, ἂν ἄρα οὗτος ἀναισχυντῇ.

Οἴομαι τοίνυν αὐτὸν οὐδὲν οὐδαμῇ δίκαιον ἔχοντα λέ- 51
γειν ἥξειν καὶ ἐπὶ τοῦτο, ὡς ἄτοπον ποιῶ, παραγραφὴν ἡττημένος, τοὺς διαθήκην μαρτυρήσαντας διώκων, καὶ τοὺς δικαστὰς τοὺς τότε φήσει διὰ τοὺς ἀφεῖναι μεμαρτυρηκότας ἀποψηφίσασθαι μᾶλλον ἢ διὰ τοὺς διαθήκην μαρτυρήσαντας. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι νομίζω πάντας ὑμᾶς εἰδέναι ὅτι οὐχ ἧττον τὰ πεπραγμένα εἰώθατε σκοπεῖν ἢ τὰς ὑπὲρ τούτων παραγραφάς· περὶ δὴ τῶν

πραγμάτων αὐτῶν τὰ ψευδῆ καταμαρτυρήσαντες οὗτοί μου ἀσθενεῖς τοὺς περὶ τῆς παραγραφῆς ἐποίησαν λό-
52 *γους. χωρὶς δὲ τούτων ἄτοπον, πάντων τὰ ψευδῆ μαρτυρησάντων, τίς μάλιστα ἔβλαψεν ἀποφαίνειν, ἀλλ᾽ οὐχ ὡς αὐτὸς ἕκαστος ἀληθῆ μεμαρτύρηκε δεικνύναι. οὐ γάρ, ἂν ἕτερον δείξῃ δεινότερα εἰργασμένον, ἀποφεύγειν αὐτῷ προσήκει, ἀλλ᾽ ἂν αὐτὸς ὡς ἀληθῆ μεμαρτύρηκεν ἀποφήνῃ.*
53 *Ἐφ᾽ ᾧ τοίνυν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μάλιστ᾽ ἀπολωλέναι δίκαιός ἐστιν οὑτοσὶ Στέφανος, τοῦτ᾽ ἀκούσατέ μου. δεινὸν μὲν γάρ ἐστιν εἰ καὶ καθ᾽ ὅτου τις οὖν τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖ, πολλῷ δὲ δεινότερον καὶ πλείονος ὀργῆς ἄξιον εἰ κατὰ τῶν συγγενῶν· οὐ γὰρ τοὺς γεγραμμένους νόμους ὁ τοιοῦτος ἄνθρωπος μόνον ἀλλὰ καὶ τὰ τῆς φύσεως οἰκεῖα ἀναιρεῖ. τοῦτο τοίνυν ἐπιδειχθήσεται πεποιηκὼς*
54 *οὗτος. ἔστι γὰρ ἡ τούτου μήτηρ καὶ ὁ τῆς ἐμῆς γυναικὸς πατὴρ ἀδελφοί, ὥστε τὴν μὲν γυναῖκα τὴν ἐμὴν ἀνεψιὰν εἶναι τούτῳ, τοὺς δὲ παῖδας ‖ τοὺς ἐκείνου καὶ τοὺς ἐμοὺς ἀνεψιαδοῦς. ἆρ᾽ οὖν δοκεῖ ποτ᾽ ἂν ὑμῖν οὗτος, εἴ τι δι᾽ ἔνδειαν εἶδε ποιούσας ὧν οὐ χρὴ τὰς αὑτοῦ συγγενεῖς, ὅπερ ἤδη πολλοὶ πεποιήκασι, παρ᾽ αὑτοῦ προῖκα ἐπιδοὺς ἐκδοῦναι, ὃς ὑπὲρ τοῦ μηδ᾽ ἃ προσήκει κομίσασθαι ταύτας τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν ἠθέλησε, καὶ περὶ πλείονος ἐποιήσατο τὸν Φορμίωνος πλοῦτον ἢ τὰ τῆς συγγενείας*
55 *ἀναγκαῖα; ἀλλὰ μὴν ὅτι ταῦτ᾽ ἀληθῆ λέγω, λαβὲ τὴν μαρτυρίαν τὴν Δεινίου καὶ ἀναγίγνωσκε, καὶ κάλει Δεινίαν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Δεινίας Θεομνήστου Ἀθμονεὺς μαρτυρεῖ τὴν θυγατέρα αὑτοῦ ἐκδοῦναι Ἀπολλοδώρῳ κατὰ τοὺς νόμους γυναῖκα ἔχειν, καὶ μηδεπώποτε παραγενέσθαι μηδὲ αἰσθέσθαι ὅτι Ἀπολλόδωρος ἀφῆκε τῶν ἐγκλημάτων ἁπάντων Φορμίωνα.*

56 *Ὅμοιός γε ὁ Δεινίας ὦ ἄνδρες δικασταὶ τούτῳ, ὃς ὑπὲρ τῆς θυγατρὸς καὶ τῶν θυγατριδῶν καὶ ἐμοῦ τοῦ κηδεστοῦ διὰ τὴν συγγένειαν οὐδὲ τἀληθῆ μαρτυρεῖν ἐθέλει κατὰ τούτου. ἀλλ᾽ οὐχ οὑτοσὶ Στέφανος, οὐκ ὤκνησε καθ᾽ ἡμῶν τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν, οὐδ᾽, εἰ μηδένα τῶν ἄλλων, τὴν αὑτοῦ μητέρα ᾐσχύνθη τοῖς ἀπ᾽ ἐκείνης οἰκείοις τῆς ἐσχάτης ἐνδείας αἴτιος γενόμενος.*

57 *Ὃ τοίνυν ἔπαθον δεινότατον καὶ ἐφ᾽ ᾧ μάλιστα ἐξε-*

πλάγην ὅτ᾽ ἠγωνιζόμην, ὦ ἄνδρες δικασταί, τοῦθ᾽ ὑμῖν
εἰπεῖν βούλομαι· τήν τε γὰρ τούτου πονηρίαν ἔτι μᾶλλον
ὑμεῖς ὄψεσθε, καὶ ἐγὼ τῶν γεγενημένων ἀποδυράμενος
τὰ πλεῖστα πρὸς ὑμᾶς ὡσπερεὶ ῥάων ἔσομαι. τὴν γὰρ
μαρτυρίαν ἣν ᾤμην εἶναι καὶ δι᾽ ‖ ἧς ἦν ὁ πλεῖστος ἔλεγ-
χός μοι, ταύτην οὐχ εὗρον ἐνοῦσαν ἐν τῷ ἐχίνῳ. τότε μὲν 58
δὴ τῷ κακῷ πληγεὶς οὐδὲν ἄλλο εἶχον ποιῆσαι πλὴν ὑπο-
λαμβάνειν τὴν ἀρχὴν ἠδικηκέναι με καὶ τὸν ἐχῖνον κεκινη-
κέναι· νῦν δὲ ἀφ᾽ ὧν ὕστερον πέπυσμαι, πρὸς αὐτῷ τῷ
διαιτητῇ Στέφανον τουτονὶ αὐτὴν ὑφῃρημένον εὑρίσκω,
πρὸς μαρτυρίαν τινά, ἵν᾽ ἐξορκώσαιμι, ἀναστάντος ἐμοῦ.
καὶ ὅτι ταῦτ᾽ ἀληθῆ λέγω, πρῶτον μὲν ὑμῖν μαρτυρήσουσι
τῶν τούτοις παρόντων οἱ ἰδόντες· οὐ γὰρ ἐξομνύναι ἐθε-
λήσειν αὐτοὺς οἴομαι. ἐὰν δ᾽ ἄρα τοῦτο ποιήσωσιν ὑπ᾽ 59
ἀναιδείας, πρόκλησιν ὑμῖν ἀναγνώσεται, ἐξ ἧς τούτους τ᾽
ἐπιορκοῦντας ἐπ᾽ αὐτοφώρῳ λήψεσθε καὶ τοῦτον ὁμοίως
ὑφῃρημένον τὴν μαρτυρίαν εἴσεσθε. καίτοι ὅστις ὦ ἄν-
δρες Ἀθηναῖοι κακῶν ἀλλοτρίων κλέπτης ὑπέμεινεν ὀνο-
μασθῆναι, τί ἂν ἡγεῖσθε ποιῆσαι τοῦτον ὑπὲρ αὑτοῦ;
λέγε τὴν μαρτυρίαν, εἶτα τὴν πρόκλησιν ταύτην. 60

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσι φίλοι εἶναι καὶ ἐπιτήδειοι Φορμίωνι, καὶ παρεῖναι πρὸς τῷ διαιτητῇ Τισίᾳ ὅτε ἦν ἀπόφανσις τῆς διαίτης Ἀπολλοδώρῳ πρὸς Φορμίωνα, καὶ εἰδέναι τὴν μαρτυρίαν ὑφῃρημένον Στέφανον, ἣν αἰτιᾶται αὐτὸν Ἀπολλόδωρος ὑφελέσθαι.*

Ἢ μαρτυρεῖτε ἢ ἐξομόσασθε.

ΕΞΩΜΟΣΙΑ.

Οὐκ ἄδηλον ἦν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι τοῦτο ἔμελλον 61
ποιήσειν, προθύμως ἐξομεῖσθαι. ἵνα τοίνυν παραχρῆμα
ἐξελεγχθῶσιν ἐπιωρκηκότες, λαβέ μοι ταύτην τὴν μαρτυ-
ρίαν καὶ τὴν πρόκλησιν. ἀναγίγνωσκε.

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑ. ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ. *Μαρτυροῦσι παρεῖναι ὅτε Ἀπολλόδωρος προυκαλεῖτο Στέφανον παραδοῦναι τὸν παῖδα τὸν ἀκόλουθον εἰς βάσανον περὶ τῆς ὑφαιρέσεως τοῦ γραμματείου, καὶ γράμματα ἦν ἕτοιμος γράφειν Ἀπολλόδωρος καθ᾽ ὅ τι ἔσται ἡ βάσανος. ταῦτα δὲ προκαλουμένου Ἀπολλοδώρου οὐκ ἐθελῆσαι παραδοῦναι Στέφανον, ἀλλ᾽ ἀποκρίνασθαι Ἀπολλοδώρῳ δικάζεσθαι, εἰ βούλοιτο, εἴ τί φησιν ἀδικεῖσθαι ὑφ᾽ ἑαυτοῦ.*

Τίς ἂν οὖν ὑπὲρ τοιαύτης αἰτίας, ὦ ἄνδρες δικασταί, 62
εἴπερ ἐπίστευεν αὑτῷ, οὐκ ἐδέξατο τὴν βάσανον; οὐκοῦν

τῷ φεύγειν τὴν βάσανον ὑφῃρημένος ἐξελέγχεται. ἆρ᾽ οὖν
ἂν ὑμῖν αἰσχυνθῆναι δοκεῖ τὴν τοῦ τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν
δόξαν ὁ τὴν τοῦ κλέπτης φανῆναι μὴ φυγών; ἢ δεηθέντος
του ὀκνῆσαι ἂν τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν, ὃς ἃ μηδεὶς ἐκέλευεν
ἐθελοντὴς πονηρὸς ἦν;

63 Δικαίως τοίνυν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τούτων ἁπάντων
δοὺς ἂν δίκην, πολὺ μᾶλλον ἂν εἰκότως διὰ τἆλλα κολα-
σθείη παρ᾽ ὑμῖν. σκοπεῖτε δέ, τὸν βίον ὃν βεβίωκεν
ἐξετάζοντες. οὗτος γάρ, ἡνίκα μὲν συνέβαινεν εὐτυχεῖν
Ἀριστολόχῳ τῷ τραπεζίτῃ, ἴσα βαίνων ἐβάδιζεν ὑπο-
πεπτωκὼς ἐκείνῳ, καὶ ταῦτα ἴσασι πολλοὶ τῶν ἐνθάδ᾽
64 ὄντων ὑμῶν. ἐπειδὴ δ᾽ ἀπώλετ᾽ ἐκεῖνος καὶ τῶν ὄντων
ἐξέστη, οὐχ ἥκιστα ὑπὸ τούτου καὶ τῶν τοιούτων διαφο-
ρηθείς, τῷ μὲν υἱεῖ τῷ τούτου πολλῶν πραγμάτων ὄντων
οὐ παρέστη πώποτε οὐδ᾽ ἐβοήθησεν, ἀλλ᾽ Ἀπόληξις καὶ
Σόλων καὶ πάντες ἄνθρωποι μᾶλλον βοηθοῦσιν, Φορμίωνα
δὲ πάλιν ἑώρακε καὶ τούτῳ γέγονεν οἰκεῖος, ἐξ Ἀθηναίων
ἁπάντων τοῦτον ‖ ἐκλεξάμενος, καὶ ὑπὲρ τούτου πρεσβευ-
τὴς μὲν ᾤχετο εἰς Βυζάντιον πλέων, ἡνίκα ἐκεῖνοι τὰ πλοῖα
τὰ τούτου κατέσχον, τὴν δὲ δίκην ἔλεγε τὴν πρὸς Καλχη-
δονίους, τὰ ψευδῆ δ᾽ ἐμοῦ φανερῶς οὕτω καταμεμαρτύ-
65 ρηκεν. εἶθ᾽ ὃς εὐτυχούντων ἐστὶ κόλαξ, κἂν ἀτυχῶσι, τῶν
αὐτῶν τούτων προδότης, καὶ τῶν μὲν ἄλλων πολιτῶν
πολλῶν καὶ καλῶν κἀγαθῶν ὄντων μηδενὶ μηδ᾽ ἐξ ἴσου
χρῆται, τοῖς δὲ τοιούτοις ἐθελοντὴς ὑποπίπτει, καὶ μήτ᾽
εἴ τινα τῶν οἰκείων ἀδικήσει μήτ᾽ εἰ παρὰ τοῖς ἄλλοις
φαύλην δόξαν ἕξει ταῦτα ποιῶν μήτ᾽ ἄλλο μηδὲν σκοπεῖ
πλὴν ὅπως τι πλέον ἕξει, τοῦτον οὐ μισεῖν ὡς κοινὸν
ἐχθρὸν τῆς φύσεως ὅλης τῆς ἀνθρωπίνης προσήκει; ἔγωγ᾽
66 ἂν φαίην. ταῦτα μέντοι τὰ τοσαύτην ἔχοντα αἰσχύνην, ὦ
ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ἐπὶ τῷ τὴν πόλιν φεύγειν καὶ τὰ ὄντα
ἀποκρύπτεσθαι προῄρηται πράττειν, ἵν᾽ ἐργασίας ἀφανεῖς
διὰ τῆς τραπέζης ποιῆται καὶ μήτε χορηγῇ μήτε τριηραρχῇ
μήτ᾽ ἄλλο μηδὲν ὧν προσήκει ποιῇ. καὶ κατείργασται
τοῦτο. τεκμήριον δέ· ἔχων γὰρ οὐσίαν τοσαύτην ὥστε
ἑκατὸν μνᾶς ἐπιδοῦναι τῇ θυγατρί, οὐδ᾽ ἥντινοῦν ἑώρα-
ται λειτουργίαν ὑφ᾽ ὑμῶν λειτουργῶν, οὐδὲ τὴν ἐλαχίστην.

*καίτοι πόσῳ κάλλιον φιλοτιμούμενον ἐξετάζεσθαι καὶ
προθυμούμενον εἰς ἃ δεῖ τῇ πόλει, ἢ κολακεύοντα καὶ
τὰ ψευδῆ μαρτυροῦντα; ἀλλ' ἐπὶ τῷ κερδαίνειν πᾶν ἂν
οὗτος ποιήσειεν. καὶ μὴν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μᾶλλον* 67
*ἄξιον ὀργίλως ἔχειν τοῖς μετ' εὐπορίας πονηροῖς ἢ τοῖς
μετ' ἐνδείας. τοῖς μὲν γὰρ ἡ ‖ τῆς χρείας ἀνάγκη φέρει
τινὰ συγγνώμην παρὰ τοῖς ἀνθρωπίνως λογιζομένοις· οἱ
δ' ἐκ περιουσίας, ὥσπερ οὗτος, πονηροὶ οὐδεμίαν πρό-
φασιν δικαίαν ἔχοιεν ἂν εἰπεῖν, ἀλλ' αἰσχροκερδείᾳ καὶ
πλεονεξίᾳ καὶ ὕβρει καὶ τῷ τὰς αὑτῶν συστάσεις κυριω-
τέρας τῶν νόμων ἀξιοῦν εἶναι ταῦτα φανήσονται πράτ-
τοντες. ὑμῖν δὲ οὐδὲν τούτων συμφέρει, ἀλλὰ τὸν ἀσθενῆ
παρὰ τοῦ πλουσίου δίκην, ἂν ἀδικῆται, δύνασθαι λαβεῖν.
ἔσται δὲ τοῦτο, ἐὰν κολάζητε τοὺς φανερῶς οὕτως ἐξ εὐ-
πορίας πονηρούς.*

Οὐ τοίνυν οὐδ' ἃ πέπλασται καὶ βαδίζει οὗτος παρὰ 68
*τοὺς τοίχους ἐσκυθρωπακώς, σωφροσύνης ἄν τις ἡγήσαιτο
εἰκότως εἶναι σημεῖα, ἀλλὰ μισανθρωπίας. ἐγὼ γάρ, ὅστις
αὑτῷ μηδενὸς συμβεβηκότος δεινοῦ μηδὲ τῶν ἀναγκαίων
σπανίζων ἐν ταύτῃ τῇ σχέσει διάγει τὸν βίον, τοῦτον ἡγοῦ-
μαι συνεωρακέναι καὶ λελογίσθαι παρ' αὑτῷ ὅτι τοῖς μὲν
ἁπλῶς, ὡς πεφύκασι, βαδίζουσι καὶ φαιδροῖς καὶ προσ-
έλθοι τις ἂν καὶ δεηθείη καὶ ἐπαγγείλειεν οὐδὲν ὀκνῶν,
τοῖς δὲ πεπλασμένοις καὶ σκυθρωποῖς ὀκνήσειεν ἄν τις
προσελθεῖν πρῶτον. οὐδὲν οὖν ἄλλο ἢ πρόβλημα τοῦ* 69
*τρόπου τὸ σχῆμα τοῦτ' ἐστί, καὶ τὸ τῆς διανοίας ἄγριον
καὶ πικρὸν ἐνταῦθα δηλοῖ. σημεῖον δέ· τοσούτων γὰρ
ὄντων τὸ πλῆθος Ἀθηναίων, πράττων πολὺ βέλτιον ἢ σὲ
προσῆκον ἦν, τῷ πώποτε εἰσήνεγκας, ἢ τίνι συμβέβλησαί
πω, ἢ τίνα εὖ πεποίηκας; οὐδέν' ἂν εἰπεῖν ἔχοις· ἀλλὰ* 70
*τοκίζων καὶ τὰς τῶν ἄλλων συμφορὰς καὶ χρείας εὐτυχή-
ματα σαυτοῦ νομίζων ἐξέβαλες μὲν τὸν σαυτοῦ θεῖον Νι-
κίαν ἐκ τῆς ‖ πατρῴας οἰκίας, ἀφῄρησαι δὲ τὴν σαυτοῦ
πενθερὰν ταῦτα ἀφ' ὧν ἔζη, ἀοίκητον δὲ τὸν Ἀρχεδήμου
παῖδα τὸ σαυτοῦ μέρος πεποίηκας, οὐδεὶς δὲ πώποτε
οὕτω πικρῶς οὐδ' ὑπερήμερον εἰσέπραξεν ὡς σὺ τοὺς
ὀφείλοντας τοὺς τόκους. εἶτα ὃν ὁρᾶτε ἐπὶ πάντων οὕτως*

ἄγριον καὶ μιαρόν, τοῦτον ὑμεῖς ἠδικηκότα ἐπ' αὐτοφώρῳ
λαβόντες οὐ τιμωρήσεσθε; δεινὰ ἄρα ὦ ἄνδρες δικασταὶ
ποιήσετε καὶ οὐχὶ δίκαια.

71 Ἄξιον τοίνυν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ Φορμίωνι τῷ
παρασχομένῳ τουτονὶ νεμεσῆσαι τοῖς πεπραγμένοις, τὴν
ἀναίδειαν τοῦ τρόπου καὶ τὴν ἀχαριστίαν ἰδόντας. οἶμαι
γὰρ ἅπαντας ὑμᾶς εἰδέναι ὅτι τοῦτον, ἡνίκ' ὤνιος ἦν, εἰ
συνέβη μάγειρον ἤ τινος ἄλλης τέχνης δημιουργὸν πρία-
σθαι, τὴν τοῦ δεσπότου τέχνην ἂν μαθὼν πόρρω τῶν
72 νῦν παρόντων ἦν ἀγαθῶν. ἐπειδὴ δὲ ὁ πατὴρ ὁ ἡμέτερος
τραπεζίτης ὢν ἐκτήσατ' αὐτὸν καὶ γράμματα ἐπαίδευσε
καὶ τὴν τέχνην ἐδίδαξε καὶ χρημάτων ἐποίησε κύριον πολ-
λῶν, εὐδαίμων γέγονε, τὴν τύχην, ᾗ πρὸς ἡμᾶς ἀφίκετο,
73 ἀρχὴν λαβὼν πάσης τῆς νῦν παρούσης εὐδαιμονίας. οὔ-
κοῦν δεινόν, ὦ γῆ καὶ θεοί, καὶ πέρα δεινοῦ, τοὺς Ἕλληνα
μὲν ἀντὶ βαρβάρου ποιήσαντας γνώριμον δ' ἀντ' ἀνδραπό-
δου, τοσούτων δ' ἀγαθῶν ἡγεμόνας, τούτους περιορᾶν ἐν
ταῖς ἐσχάταις ἀπορίαις ὄντας ἔχοντα καὶ πλουτοῦντα, καὶ
εἰς τοῦθ' ἥκειν ἀναιδείας ὥστε, ἧς παρ' ἡμῶν τύχης μετ-
74 έσχε, ταύτης ἡμῖν μὴ τολμᾶν μεταδοῦναι. ἀλλ' αὐτὸς μὲν
οὐκ ὤκνησε τὴν δέσποιναν γῆμαι, καὶ ἣ τὰ καταχύσματα
αὐτοῦ ‖ κατέχεε τόθ' ἡνίκα ἐωνήθη, ταύτῃ συνοικεῖν, οὐδὲ
προῖκα πέντε τάλαντα αὑτῷ γράψαι, χωρὶς ὧν οὔσης τῆς
μητρὸς κυρίας οὗτος ἐγκρατὴς γέγονε πολλῶν χρημάτων
(τί γὰρ αὐτὸν οἴεσθε εἰς τὰς διαθήκας ἐγγράψαι "καὶ
τἆλλα ὅσα ἐστίν, Ἀρχίππῃ δίδωμι")· τὰς δ' ἡμετέρας θυ-
γατέρας μελλούσας δι' ἔνδειαν ἀνεκδότους ἔνδον γηράσκειν
75 περιορᾷ. καὶ εἰ μὲν πένης οὗτος ἦν, ἡμεῖς δ' εὐποροῦντες
ἐτυγχάνομεν, καὶ συνέβη τι παθεῖν, οἷα πολλά, ἐμοί, οἱ
παῖδες ἂν οἱ τούτου τῶν ἐμῶν θυγατέρων ἐδικάζοντο, οἱ
τοῦ δούλου τῶν τοῦ δεσπότου· θεῖοι γάρ εἰσιν αὐταῖς διὰ
τὸ τὴν μητέρα τὴν ἐμὴν τοῦτον λαβεῖν· ἐπειδὴ δὲ ἀπόρως
ἡμεῖς ἔχομεν, τηνικαῦτα οὐ συνεκδώσει ταύτας, ἀλλὰ λέ-
76 γει καὶ λογίζεται τὸ πλῆθος ὧν ἐγὼ χρημάτων ἔχω. καὶ
γὰρ τοῦτο ἀτοπώτατον πάντων. ὧν μὲν ἀπεστέρηκεν ἡμᾶς
χρημάτων, οὐδέπω καὶ τήμερον ἠθέλησεν ὑποσχεῖν τὸν
λόγον, ἀλλὰ μὴ εἰσαγωγίμους εἶναι τὰς δίκας παραγρά-

φεται· ἃ δὲ τῶν πατρῴων ἐνειμάμην ἐγώ, ταῦτα λογίζεται. καὶ τοὺς μὲν ἄλλους ἄν τις ἴδοι τοὺς οἰκέτας ὑπὸ τῶν δεσποτῶν ἐξεταζομένους· οὗτος δ' αὖ τοὐναντίον τὸν δεσπότην ὁ δοῦλος ἐξετάζει, ὡς δῆτα πονηρὸν καὶ ἄσωτον ἐκ τούτων ἐπιδείξων. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῆς μὲν 77
ὄψεως τῇ φύσει καὶ τῷ ταχέως βαδίζειν καὶ λαλεῖν μέγα οὐ τῶν εὐτυχῶς πεφυκότων ἐμαυτὸν κρίνω· ἐφ' οἷς γὰρ οὐδὲν ὠφελούμενος λυπῶ τινάς, ἔλαττον ἔχω πολλαχοῦ· τῷ μέντοι μέτριος κατὰ πάσας τὰς εἰς ἐμαυτὸν δαπάνας εἶναι ‖ πολὺ τούτου καὶ τοιούτων ἑτέρων εὐτακτότερον ζῶν ἂν φανείην. τὰ δ' εἰς τὴν πόλιν καὶ ὅσα εἰς ὑμᾶς, ὡς 78
δύναμαι λαμπρότατα, ὡς ὑμεῖς σύνιστε, ποιῶ· οὐ γὰρ ἀγνοῶ τοῦθ', ὅτι τοῖς μὲν γένει πολίταις ὑμῖν ἱκανόν ἐστι λειτουργεῖν ὡς οἱ νόμοι προστάττουσι, τοὺς δὲ ποιητοὺς ἡμᾶς ὡς ἀποδιδόντας χάριν, οὕτω προσήκει φαίνεσθαι λειτουργοῦντας. μὴ οὖν μοι ταῦτ' ὀνείδιζε ἐφ' οἷς ἐπαίνου τύχοιμ' ἂν δικαίως. ἀλλὰ τίνα ὦ Φορμίων τῶν πο- 79
λιτῶν ἑταιρεῖν, ὥσπερ σύ, μεμίσθωμαι, δεῖξον. τίνα τῆς πόλεως, ἧς αὐτὸς ἠξιώθην, καὶ τῆς ἐν αὐτῇ παρρησίας ἀπεστέρηκα, ὥσπερ σὺ τοῦτον ὃν κατῄσχυνας; τίνος γυναῖκα διέφθαρκα, ὥσπερ σὺ πρὸς πολλαῖς ἄλλαις ταύτην ᾗ τὸ μνῆμα ᾠκοδόμησεν ὁ θεοῖς ἐχθρὸς οὗτος πλησίον τοῦ τῆς δεσποίνης, ἀνηλωκὼς πλέον ἢ τάλαντα δύο; καὶ οὐκ ᾐσθάνετο ὅτι οὐχὶ τοῦ τάφου μνημεῖον ἔσται τὸ οἰκοδόμημα τοιοῦτον ὄν, ἀλλὰ τῆς ἀδικίας ἧς τὸν ἄνδρα ἠδίκηκεν ἐκείνη διὰ τοῦτον. εἶτα τοιαῦτα ποιῶν καὶ τη- 80
λικαύτας μαρτυρίας ἐξενηνοχὼς τῆς ὕβρεως τῆς σαυτοῦ σὺ τὸν ἄλλου του βίον ἐξετάζειν τολμᾷς; μεθ' ἡμέραν εἶ σὺ σώφρων, τὴν δὲ νύκτα, ἐφ' οἷς θάνατος ἡ ζημία, ταῦτα ποιεῖς; πονηρός, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, πονηρὸς οὗτος ἄνωθεν ἐκ τοῦ ἀνακείου κἄδικος. σημεῖον δέ· εἰ γὰρ ἦν δίκαιος, πένης ἂν ἦν τὰ τοῦ δεσπότου διοικήσας. νῦν δὲ τοσούτων χρημάτων τὸ πλῆθος κύριος καταστὰς ὥστε τοσαῦτα λαθεῖν ἀπ' αὐτῶν κλέψας ὅσα νῦν κέκτηται, οὐκ ὀφείλειν ταῦτα ἀλλὰ πατρῷα ἔχειν ἡγεῖται. καίτοι πρὸς 81
θεῶν, εἰ κλέπτην σε ἀπῆγον ὡς ἐπ' ‖ αὐτοφώρῳ εἰληφώς, τὴν οὐσίαν ἣν ἔχεις, εἴ πως οἷόν τ' ἦν, ἐπιθείς σοι, εἶτά

σε ἠξίουν, εἰ μὴ φῂς ὑφῃρημένος ταῦτ' ἔχειν, ἀνάγειν
ὅθεν εἴληφας, εἰς τίνα ἂν αὐτὰ ἀνήγαγες; οὔτε γάρ σοι
πατὴρ παρέδωκεν, οὔθ' εὗρες, οὔτε λαβών ποθεν ἄλλο-
θεν ἦλθες ὡς ἡμᾶς· βάρβαρος γὰρ ἐωνήθης. εἶθ' ᾧ δη-
μοσίᾳ προσῆκεν ἐπὶ τοῖς εἰργασμένοις τεθνάναι, σύ, τὸ
σῶμα σεσωκὼς καὶ πόλιν ἐκ τῶν ἡμετέρων σαυτῷ κτη-
σάμενος καὶ παῖδας ἀδελφοὺς τοῖς σεαυτοῦ δεσπόταις
ἀξιωθεὶς ποιήσασθαι, παρεγράψω μὴ εἰσαγώγιμον εἶναι
82 τὴν δίκην τῶν ἐγκαλουμένων χρημάτων ὑφ' ἡμῶν; εἶτα
κακῶς ἡμᾶς ἔλεγες, καὶ τὸν ἡμέτερον πατέρα ἐξήταζες
ὅστις ἦν; ἐφ' οἷς τίς οὐκ ἂν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι χαλεπῶς
ἤνεγκεν; ἐγὼ γάρ, εἰ πάντων τῶν ἄλλων ὑμῶν ἔλαττον
προσήκει μοι φρονεῖν, τούτου γε μεῖζον, οἶμαι, καὶ τούτῳ
γε εἰ μηδενὸς τῶν ἄλλων ἔλαττον, ἐμοῦ γε ἔλαττον· ὄντων
γὰρ ἡμῶν τοιούτων ὁποίους τινὰς ἂν καὶ σὺ κατασκευά-
σῃς τῷ λόγῳ, σὺ δοῦλος ἦσθα.
83 Τάχα τοίνυν ἂν ἴσως καὶ τοῦτό τις αὐτῶν εἴποι, ὡς
ἀδελφὸς ὢν ἐμὸς Πασικλῆς οὐδὲν ἐγκαλεῖ τῶν αὐτῶν
τούτῳ πραγμάτων. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ περὶ
Πασικλέους, παραιτησάμενος καὶ δεηθεὶς ὑμῶν συγγνώ-
μην ἔχειν, εἰ προεληλυθὼς εἰς τοῦτο ὥστε ὑπὸ τῶν ἐμαυ-
τοῦ δούλων ὑβρισθεὶς οὐ δύναμαι κατασχεῖν ἃ τέως οὐδὲ
τῶν ἄλλων λεγόντων ἀκούειν ἐδόκουν, ἐρῶ καὶ οὐ σιωπή-
84 σομαι. ἐγὼ γὰρ ὁμομήτριον μὲν ἀδελφὸν ἐμαυτοῦ Πασι-
κλέα νομίζω, ὁμοπάτριον δ' οὐκ οἶδα, δέδοικα μέντοι μὴ
τῶν Φορμίωνος ἁμαρτημάτων εἰς ἡμᾶς ‖ ἀρχὴ Πασικλῆς
ᾖ. ὅταν γὰρ τῷ δούλῳ συνδικῇ τὸν ἀδελφὸν ἀτιμῶν, καὶ
παραπεπτωκὼς θαυμάζῃ τούτους ὑφ' ὧν αὐτῷ θαυμά-
ζεσθαι προσῆκε, τίν' ἔχει δικαίαν ταῦθ' ὑποψίαν; ἄνελε
οὖν ἐκ μέσου μοι Πασικλέα, καὶ σὸς μὲν υἱὸς ἀντὶ δε-
σπότου καλείσθω, ἐμὸς δὲ ἀντίδικος (βούλεται γάρ) ἀντ'
ἀδελφοῦ.
85 Ἐγὼ δὲ τούτῳ μὲν χαίρειν λέγω, οὓς δ' ὁ πατήρ μοι
παρέδωκε βοηθοὺς καὶ φίλους, εἰς τούτους ἥκω, εἰς ὑμᾶς,
ὦ ἄνδρες δικασταί. καὶ δέομαι καὶ ἀντιβολῶ καὶ ἱκετεύω,
μὴ ὑπερίδητέ με καὶ τὰς θυγατέρας δι' ἔνδειαν τοῖς
ἐμαυτοῦ δούλοις καὶ τοῖς τούτου κόλαξιν ἐπίχαρτον γε-

νόμενον. ὁ ἐμὸς ὑμῖν πατὴρ χιλίας ἔδωκεν ἀσπίδας, καὶ πολλὰ χρήσιμον αὑτὸν παρέσχε, καὶ πέντε τριήρεις ἐθελοντὴς ἐπιδοὺς καὶ παρ' αὑτοῦ πληρώσας ἐτριηράρχησε τριηραρχίας. καὶ ταῦτα οὐκ ὀφείλειν ὑμᾶς νομίζων χάριν ἡμῖν ὑπομιμνήσκω· ἡμεῖς γὰρ ὀφείλομεν ὑμῖν· ἀλλ' ἵνα μὴ λάθω τι παθὼν τούτων ἀνάξιον· οὐδὲ γὰρ ὑμῖν ἂν γένοιτο καλόν.

Πολλὰ δ' ἔχων εἰπεῖν περὶ ὧν ὕβρισμαι, οὐχ ἱκανὸν 86
ὂν τὸ ὕδωρ ὁρῶ μοι. ὡς οὖν μάλιστ' ἂν ἅπαντας ὑμᾶς ἡγοῦμαι γνῶναι τὴν ὑπερβολὴν ὧν ἠδικήμεθ' ἡμεῖς, φράσω· εἰ σκέψαιτο πρὸς ἑαυτὸν ἕκαστος ὑμῶν τίν' οἴκοι κατέλιπεν οἰκέτην, εἶθ' ὑπὸ τούτου πεπονθόθ' ἑαυτὸν θείη ταῦθ' ἅπερ ἡμεῖς ὑπὸ τούτου. μὴ γὰρ εἰ Σύρος ἢ Μάνης ἤ τις ἕκαστος ἐκείνων, οὗτος δὲ Φορμίων· ἀλλὰ τὸ πρᾶγμα τὸ αὐτό· δοῦλοι μὲν ἐκεῖνοι, δοῦλος δ' οὗτος ἦν, δεσπόται δ' ὑμεῖς, δεσπότης δ' ἦν ἐγώ. ἣν τοίνυν ὑμῶν ἂν ἕκα- 87
στος δίκην ἀξιώσειε λαβεῖν, ταύτην νομίζετε κἀμοὶ προσήκειν νῦν· καὶ ‖ τὸν ἀφῃρημένον τῷ μαρτυρῆσαι τὰ ψευδῆ καὶ ὑπὲρ τῶν νόμων καὶ ὑπὲρ τῶν ὅρκων οὓς ὀμωμοκότες δικάζετε, τιμωρήσασθε, παράδειγμα ποιήσατε τοῖς ἄλλοις, μνημονεύοντες πάντα ὅσα ἀκηκόατε ἡμῶν, καὶ φυλάττοντες, ἐὰν παράγειν ἐπιχειρῶσιν ὑμᾶς, καὶ πρὸς ἕκαστον ἀπαντῶντες, ἐὰν μὴ φῶσιν ἅπαντα μεμαρτυρηκέναι, "τί οὖν ἐν τῷ γραμματείῳ γέγραπται; τί οὖν οὐ τότε ἀπηλείφου; τίς ἡ παρὰ τοῖς ἄρχουσιν ἀντιγραφή;" 88
ἐὰν μεμαρτυρηκέναι τὸν μὲν ἐπιτροπευθῆναι κατὰ διαθήκας, τὸν δ' ἐπιτροπεῦσαι, τὸν δ' ἔχειν, ποίας; ἐν αἷς τί γέγραπται; ταῦτ' ἐρωτᾶτε· ἃ γὰρ οὗτοι μεμαρτυρήκασιν, οὐδεὶς ἐκείνων προσμεμαρτύρηκεν. ἐὰν δ' ὀδύρωνται, τὸν πεπονθότα ἐλεεινότερον τῶν δωσόντων δίκην ἡγεῖσθε. ταῦτα γὰρ ἂν ποιῆτε, ἐμοί τε βοηθήσετε, καὶ τούτους τῆς ἄγαν κολακείας ἐπισχήσετε, καὶ αὐτοὶ τὰ εὔορκα ἔσεσθε ἐψηφισμένοι.

ΚΑΤΑ ΣΤΕΦΑΝΟΥ ΨΕΥΔΟΜΑΡΤΥΡΙΩΝ Β.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. Ἐν τούτῳ τῷ λόγῳ καὶ τῶν φθασάντων τινὰ ἐπικατασκευάζεται, καὶ ἕτερα προσεισάγεται, εἰ καὶ παράνομοι αἱ διαθῆκαι.

‖Ὅτι μὲν οὐκ ἀπορήσειν ἔμελλε Στέφανος οὑτοσὶ ὅ τι
ἀπολογήσεται περὶ τῆς μαρτυρίας, παράγων τῷ λόγῳ ὡς
οὐ πάντα μεμαρτύρηκε τὰ ἐν τῷ γραμματείῳ γεγραμμένα,
καὶ ἐξαπατῶν ὑμᾶς, καὶ αὐτὸς σχεδόν τι ὑπενόουν, ὦ
ἄνδρες δικασταί· πανοῦργός τε γάρ ἐστι, καὶ οἱ γράφον-
τες καὶ οἱ συμβουλεύοντες ὑπὲρ Φορμίωνος πολλοί, ἅμα
τ' εἰκός ἐστι τοὺς ἐγχειροῦντας τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν καὶ
2 τὴν ἀπολογίαν εὐθέως ὑπὲρ αὐτῶν μελετᾶν. ὅτι δ' ἐν
τοσούτῳ λόγῳ οὐδαμοῦ μάρτυρας παρέσχετο ὑμῖν ὡς ἢ
διατιθεμένῳ τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ παρεγένετό που αὐτὸς
ταύτην τὴν διαθήκην, ὥστ' εἰδέναι ταῦτα ὅτι ἀντίγραφά
ἐστιν ὧν ὁ πατήρ μου διέθετο, ἢ ἀνοιχθὲν εἶδε τὸ γραμ-
ματεῖον ὅ φασι διαθέμενον ἐκεῖνον καταλιπεῖν, ταῦτα
3 συμμέμνησθέ μοι. ἀλλὰ μὴν ὁπότε μεμαρτύρηκεν ἀντί-
γραφα εἶναι τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος τὰ ἐν τῷ γραμ-
ματείῳ γεγραμμένα, τὰς δὲ διαθήκας μὴ ἔχει ἐπιδεῖξαι
μήθ' ὡς ὁ πατὴρ διέθετο ἡμῶν μήθ' ὡς αὐτὸς εἶδε παρα-
γενόμενος αὐταῖς διατιθεμένου τοῦ πατρός, πῶς οὐ πε-
ριφανῶς οὗτος ἐξελέγχεται τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκώς;
4 Εἰ τοίνυν πρόκλησίν φησιν εἶναι καὶ μὴ μαρτυρίαν,
οὐκ ἀληθῆ λέγει· ἅπαντα γὰρ ὅσα παρέχονται εἰς τὸ ‖
δικαστήριον προκαλούμενοι ἀλλήλους οἱ ἀντίδικοι, διὰ
μαρτυρίας παρέχονται. οὐ γὰρ ἂν εἰδείηθ' ὑμεῖς εἴτ' ἐστὶν
ἀληθῆ εἴτε ψευδῆ ἅ φασιν ἑκάτεροι, εἰ μή τις καὶ τοὺς
μάρτυρας παρέχοιτο· ὅταν δὲ παράσχηται, τούτοις πι-
στεύοντες ὑπόδικοις οὖσι ψηφίζεσθε ἐκ τῶν λεγομένων
5 καὶ μαρτυρουμένων, ἃ ἂν ὑμῖν δοκῇ δίκαια εἶναι. βούλο-
μαι τοίνυν καὶ τὴν μαρτυρίαν ἐξελέγξαι, ὅτι οὐ πρόκλη-
σίς ἐστι, καὶ ὡς ἔδει μαρτυρεῖν αὐτούς, εἴπερ ἐγίγνετο ἡ
πρόκλησις, ὡς οὐκ ἐγίγνετο. μαρτυροῦσι παρεῖναι πρὸς
τῷ διαιτητῇ Τισίᾳ ὅτε προυκαλεῖτο Φορμίων Ἀπολλόδω-

ρον ἀνοίγειν τὸ γραμματεῖον, ὃ παρεῖχεν Ἀμφίας ὁ Κηφισοφῶντος κηδεστής, Ἀπολλόδωρον δ' οὐκ ἐθέλειν ἀνοίγειν. οὕτω μὲν ἂν μαρτυροῦντες ἐδόκουν ἀληθῆ μαρτυρεῖν· ἀντίγραφα δὲ τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος μαρτυρεῖν εἶναι τὰ ἐν τῷ γραμματείῳ ἃ παρείχετο Φορμίων, μήτε παραγενομένους ἐκείνῳ διατιθεμένῳ μήτ' εἰδότας εἰ διέθετο, πῶς οὐ περιφανῶς ἀναισχυντία δοκεῖ ὑμῖν εἶναι;

Ἀλλὰ μὴν εἰ φησὶ Φορμίωνος λέγοντος πιστεύειν ταῦτ' 6 ἀληθῆ εἶναι, τοῦ αὐτοῦ ἀνδρός ἐστι πιστεύειν τε λέγοντι τούτῳ ταῦτα καὶ κελεύοντι μαρτυρεῖν. οἱ δέ γε νόμοι οὐ ταῦτα λέγουσιν, ἀλλ' ἃ ἂν εἰδῇ τις καὶ οἷς ἂν παραγένηται πραττομένοις, ταῦτα μαρτυρεῖν κελεύουσιν ἐν γραμματείῳ γεγραμμένα, ἵνα μήτ' ἀφελεῖν ἐξῇ μηδὲν μήτε προσθεῖναι τοῖς γεγραμμένοις. ἀκοὴν δ' οὐκ ἐῶσι ζῶντος 7 μαρτυρεῖν, ἀλλὰ τεθνεῶτος. τῶν δὲ ἀδυνάτων καὶ ὑπερορίων ἐκμαρτυρίαν γεγραμμένην ἐν γραμματείῳ· καὶ ἀπὸ τῆς αὐτῆς ἐπισκήψεως ‖ τήν τε μαρτυρίαν καὶ ἐκμαρτυρίαν ἀγωνίζεσθαι ἅμα, ἵν' ἐὰν μὲν ἀναδέχηται ὁ ἐκμαρτυρήσας, ἐκεῖνος ὑπόδικος ᾖ τῶν ψευδομαρτυριῶν, ἐὰν δὲ μὴ ἀναδέχηται, οἱ μαρτυρήσαντες τὴν ἐκμαρτυρίαν. Στέφανος 8 τοίνυν οὑτοσί, οὔτ' εἰδὼς διαθήκας καταλιπόντα τὸν πατέρα ἡμῶν οὔτε παραγενόμενος πώποτε διατιθεμένῳ τῷ πατρὶ ἡμῶν, ἀκούσας δὲ Φορμίωνος, μεμαρτύρηκεν ἀκοὴν τὰ ψευδῆ τε καὶ παρὰ τὸν νόμον. καὶ ταῦθ' ὅτι ἀληθῆ λέγω, αὐτὸν ὑμῖν τὸν νόμον ἀναγνώσεται.

ΝΟΜΟΣ. *Ἀκοὴν εἶναι μαρτυρεῖν τεθνεῶτος, ἐκμαρτυρίαν δὲ ὑπερορίου καὶ ἀδυνάτου.*

Ὡς τοίνυν καὶ παρ' ἕτερον νόμον μεμαρτύρηκεν, ἐπι- 9 δεῖξαι ὑμῖν βούλομαι, ἵνα εἰδῆτε ὅτι μεγάλων ἀδικημάτων οὐκ ἔχων καταφυγὴν ὁ Φορμίων, πρόφασιν λαβὼν λόγῳ τὴν πρόκλησιν, ἔργῳ αὐτὸς αὑτῷ μεμαρτύρηκε προστησάμενος τούτους, δι' ὧν οἱ μὲν δικασταὶ ἐξηπατήθησαν ὡς ἀληθῆ τούτων μαρτυρούντων, ἐγὼ δὲ ἀπεστερήθην ὧν ὁ πατήρ μοι κατέλιπε χρημάτων καὶ τοῦ δίκην λαβεῖν περὶ ὧν ἀδικοῦμαι. μαρτυρεῖν γὰρ οἱ νόμοι οὐκ ἐῶσιν αὐτὸν αὑτῷ οὔτ' ἐπὶ ταῖς γραφαῖς οὔτ' ἐπὶ ταῖς δίκαις οὔτ' ἐν ταῖς εὐθύναις· ὁ τοίνυν Φορμίων αὐτὸς αὑτῷ μεμαρτύρη-

κεν, ὁπότε φασὶν οὗτοι ἀκούσαντες ἐκείνου ταῦτα μεμαρ-
10 *τυρηκέναι. ἵνα δὲ εἰδῆτε ἀκριβῶς, αὐτὸν τὸν νόμον μοι ἀνάγνωθι.*

ΝΟΜΟΣ. *Τοῖν ἀντιδίκοιν ἐπάναγκες εἶναι ἀποκρίνασθαι ἀλλήλοις τὸ ἐρωτώμενον, μαρτυρεῖν δὲ μή.*

Σκέψασθε τοίνυν τουτονὶ τὸν νόμον, ὃς κελεύει ‖ ὑποδίκους εἶναι τῶν ψευδομαρτυριῶν καὶ κατ᾽ αὐτὸ τοῦτο, ὅτι μαρτυρεῖ παρὰ τὸν νόμον.

ΝΟΜΟΣ. *Ἔστω δὲ καὶ ὑπόδικος τῶν ψευδομαρτυριῶν ὁ μαρτυρήσας αὐτοῦ τούτου, ὅτι μαρτυρεῖ παρὰ τὸν νόμον· καὶ ὁ προβαλόμενος κατὰ ταὐτά.*

11 *Ἔτι τοίνυν κἂν ἀπὸ τοῦ γραμματείου γνοίη τις, ἐν ᾧ ἡ μαρτυρία γέγραπται, ὅτι τὰ ψευδῆ μεμαρτύρηκεν. λελευκωμένον τε γάρ ἐστι καὶ οἴκοθεν κατεσκευασμένον. καίτοι τοὺς μὲν τὰ πεπραγμένα μαρτυροῦντας προσήκει οἴκοθεν τὰς μαρτυρίας κατεσκευασμένας μαρτυρεῖν, τοὺς δὲ τὰς προκλήσεις μαρτυροῦντας τοὺς ἀπὸ ταὐτομάτου προστάντας καὶ ἐν μάλθῃ γεγραμμένην τὴν μαρτυρίαν, ἵνα εἴ τι προσγράψαι ἢ ἀπαλεῖψαι βουληθῇ, ῥᾴδιον ᾖ.*

12 *Οὐκοῦν κατὰ μὲν ταῦτα πάντα ἐξελέγχεται τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκὼς καὶ παρὰ τὸν νόμον· βούλομαι δ᾽ ὑμῖν καὶ αὐτὸ τοῦτο ἐπιδεῖξαι, ὡς οὔτε διέθετο ὁ πατὴρ ἡμῶν διαθήκην οὐδεμίαν οὔθ᾽ οἱ νόμοι ἐῶσιν. εἰ γάρ τις ἔροιτο ὑμᾶς καθ᾽ ὁποίους νόμους δεῖ πολιτεύεσθαι ἡμᾶς, δῆλον ὅτι ἀποκρίναισθ᾽ ἂν κατὰ τοὺς κειμένους. ἀλλὰ μὴν οἵ γε νόμοι ἀπαγορεύουσι μηδὲ νόμον ἐπ᾽ ἀνδρὶ ἐξεῖναι θεῖναι,*
13 *ἂν μὴ τὸν αὐτὸν ἐφ᾽ ἅπασιν Ἀθηναίοις. οὐκοῦν ὁ μὲν νόμος οὑτοσὶ τοῖς αὐτοῖς νόμοις πολιτεύεσθαι ἡμᾶς κελεύει καὶ οὐκ ἄλλοις, ὁ δὲ πατὴρ ἐτελεύτησεν ἐπὶ Δυσνικήτου ἄρχοντος, ὁ δὲ Φορμίων Ἀθηναῖος ἐγένετο ἐπὶ Νικοφήμου ἄρχοντος, δεκάτῳ ἔτει ὕστερον ἢ ὁ πατὴρ ἡμῶν ἀπέθανεν. πῶς ἂν οὖν μὴ εἰδὼς ὁ πατὴρ αὐτὸν Ἀθηναῖον ἐσόμενον ἔδωκεν ἂν τὴν ἑαυτοῦ γυναῖκα, καὶ προεπηλάκισε μὲν ἂν ἡμᾶς, ‖ κατεφρόνησε δ᾽ ἂν τῆς δωρεᾶς ἧς παρ᾽ ὑμῶν ἔλαβε, παρεῖδε δ᾽ ἂν τοὺς νόμους; πότερα δὲ κάλλιον ἦν αὐτῷ ζῶντι πρᾶξαι ταῦτα, εἴπερ ἠβούλετο, ἢ*
14 *ἀποθανόντα διαθήκας καταλιπεῖν, ἃς οὐ κύριος ἦν; ἀλλὰ*

μὴν αὐτῶν τῶν νόμων ἀκούσαντες γνώσεσθε ὡς οὐ κύριος ἦν διαθέσθαι. λέγε τὸν νόμον.

ΝΟΜΟΣ. *Ὅσοι μὴ ἐπεποίηντο, ὥστε μήτε ἀπειπεῖν μήτ' ἐπιδικάσασθαι, ὅτε Σόλων εἰσῄει τὴν ἀρχήν, τὰ ἑαυτοῦ διαθέσθαι εἶναι, ὅπως ἂν ἐθέλῃ, ἂν μὴ παῖδες ὦσι γνήσιοι ἄρρενες, ἂν μὴ μανιῶν ἢ γήρως ἢ φαρμάκων ἢ νόσου ἕνεκεν, ἢ γυναικὶ πειθόμενος, ἢ ὑπὸ τῶν του παρανόμων, ἢ ὑπ' ἀνάγκης, ἢ ὑπὸ δεσμοῦ καταληφθείς.*

Τοῦ μὲν νόμου τοίνυν ἀκηκόατε, ὃς οὐκ ἐᾷ διαθήκας 15
διαθέσθαι ἐὰν παῖδες ὦσι γνήσιοι. οὗτοι δέ φασι ταῦτα
διαθέσθαι τὸν πατέρα, ὡς δὲ παρεγένοντο, οὐκ ἔχουσιν
ἐπιδεῖξαι. ἄξιον δὲ καὶ τόδε ἐνθυμηθῆναι, ὅτι ὅσοι μὴ
ἐπεποίηντο ἀλλ' ἦσαν πεφυκότες γνήσιοι, τούτοις ὁ νόμος
δίδωσιν, ἐὰν ἄπαιδες ὦσι, διαθέσθαι τὰ ἑαυτῶν. ὁ τοί-
νυν πατὴρ ἡμῶν ἐπεποίητο ὑπὸ τοῦ δήμου πολίτης, ὥστε
οὐδὲ κατὰ τοῦτο ἐξῆν αὐτῷ διαθέσθαι διαθήκην, ἄλλως
τε καὶ περὶ τῆς γυναικός, ἧς οὐδὲ κύριος ἐκ τῶν νόμων
ἦν, παῖδές τε ἦσαν αὐτῷ. σκέψασθε δὲ καὶ διότι οὐδ' ἂν 16
ἄπαις τις ᾖ, κύριός ἐστι τὰ αὑτοῦ διαθέσθαι, ἐὰν μὴ εὖ
φρονῇ· νοσοῦντα δὲ ἢ φαρμακῶντα ἢ γυναικὶ πειθόμενον
ἢ ὑπὸ γήρως ἢ ὑπὸ μανιῶν ἢ ὑπὸ ἀνάγκης τινὸς κατα-
ληφθέντα ἄκυρον κελεύουσιν εἶναι οἱ νόμοι. σκοπεῖτε δὴ
εἰ δοκοῦσιν ὑμῖν εὖ φρονοῦντος ἀνδρὸς εἶναι ‖ αἱ διαθῆ-
και ἅς φασι διαθέσθαι οὗτοι τὸν πατέρα. μὴ πρὸς ἄλλο 17
δέ τι παράδειγμα σκέψησθε ἢ πρὸς τὴν μίσθωσιν, εἰ δο-
κεῖ ὑμῖν ἀκόλουθον εἶναι τῷ τὴν τέχνην μὴ ἐξουσίαν δόντι
ἐν τῷ αὐτῷ ἡμῖν ἐργάζεσθαι, τούτῳ τὴν γυναῖκα δοῦναι
τὴν αὑτοῦ καὶ τῶν παίδων ἐᾶσαι κοινωνὸν αὐτῷ γενέσθαι.
καὶ μὴ θαυμάζετε εἰ τἆλλα σκευωρουμένους αὐτοὺς τὰ ἐν
τῇ μισθώσει τοῦτο παρέλαθεν. ἴσως μὲν γὰρ οὐδὲ προσ-
εῖχον ἄλλῳ οὐδενὶ ἢ τῷ τὰ χρήματα ἀποστερῆσαι καὶ τῷ
προσοφείλοντα τὸν πατέρα ἐγγράψαι· εἶτα δὲ οὐδὲ ἐδόκουν
ἐμὲ οὕτω δεινὸν ἔσεσθαι ὥστε ταῦτα ἀκριβῶς ἐξετάσαι.

Σκέψασθε τοίνυν καὶ τοὺς νόμους παρ' ὧν κελεύουσι 18
τὰς ἐγγύας ποιεῖσθαι, ἵν' εἰδῆτε καὶ ἐκ τούτων ὡς κατε-
σκευασμένης διαθήκης ψευδὴς μάρτυς γέγονε Στέφανος
οὑτοσί. λέγε.

ΝΟΜΟΣ. *Ἣν ἂν ἐγγυήσῃ ἐπὶ δικαίοις δάμαρτα εἶναι ἢ πατὴρ ἢ ἀδελφὸς ὁμοπάτωρ ἢ πάππος ὁ πρὸς πατρός, ἐκ ταύτης εἶναι παῖ-*

δας γνησίους. ἐὰν δὲ μηδεὶς ᾖ τούτων, ἐὰν μὲν ἐπίκληρός τις ᾖ, τὸν κύριον ἔχειν, ἐὰν δὲ μὴ ᾖ, ὅτῳ ἂν ἐπιτρέψῃ, τοῦτον κύριον εἶναι.

19 *Οὗτος μὲν τοίνυν ὁ νόμος οὓς ἐποίησε κυρίους εἶναι, ἀκηκόατε· ὅτι δ' οὐδεὶς ἦν τούτων τῇ μητρί, οἱ ἀντίδικοί μοι αὐτοὶ μεμαρτυρήκασιν· εἰ γὰρ ἦν, παρεῖχοντ' ἄν. ἢ μάρτυρας μὲν ψευδεῖς οἴεσθ' ἂν παρασχέσθαι καὶ διαθήκας οὐκ οὔσας, ἀδελφὸν δὲ ἢ πάππον ἢ πατέρα οὐκ ἄν, εἴπερ ἦν δυνατὸν ἕνεκα χρημάτων; ὁπότε τοίνυν μηδεὶς φαίνεται ζῶν τούτων τότε, ἀνάγκη ἐπίκληρον τὴν μητέρα ἡμῶν εἶναι. τῆς τοίνυν ἐπικλήρου ‖ σκοπεῖτε τίνας κελεύ-*
20 *ουσιν οἱ νόμοι κυρίους εἶναι. λέγε τὸν νόμον.*

ΝΟΜΟΣ. *Καὶ ἐὰν ἐξ ἐπικλήρου τις γένηται καὶ ἅμα ἡβήσῃ ἐπὶ δίετες, κρατεῖν τῶν χρημάτων, τὸν δὲ σῖτον μετρεῖν τῇ μητρί.*

Οὐκοῦν ὁ μὲν νόμος κελεύει τοὺς παῖδας ἡβήσαντας κυρίους τῆς μητρὸς εἶναι, τὸν δὲ σῖτον μετρεῖν τῇ μητρί· ἐγὼ δὲ φαίνομαι στρατευόμενος καὶ τριηραρχῶν ὑμῖν ὅτε
21 *οὗτος συνῴκησε τῇ μητρί. ἀλλὰ μὴν ὅτι ἐγὼ μὲν ἀπεδήμουν τριηραρχῶν, τετελευτήκει δ' ὁ πατὴρ πάλαι, ὅτε οὗτος ἔγημε, τὰς δὲ θεραπαίνας αὐτὸν ἐξῄτουν καὶ ἠξίουν περὶ αὐτοῦ τούτου βασανίζεσθαι αὐτάς, εἰ ταῦτ' ἀληθῆ ἐστί, καὶ ὡς προεκαλούμην, λαβέ μοι τὴν μαρτυρίαν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Μαρτυροῦσι παρεῖναι ὅτε προυκαλεῖτο Ἀπολλόδωρος Φορμίωνα, ὅτε ἠξίου ἀποδοῦναι Ἀπολλόδωρος Φορμίωνα τὰς θεραπαίνας εἰς βάσανον, εἰ μή φησι Φορμίων καὶ πρότερον διεφθαρκέναι τὴν μητέρα τὴν ἐμήν, πρὶν οὗ ἀποφαίνει Φορμίων γῆμαι ἐγγυησάμενος αὐτὴν παρὰ Πασίωνος. ταῦτα δὲ προκαλουμένου Ἀπολλοδώρου οὐκ ἠθέλησε Φορμίων παραδοῦναι τὰς θεραπαίνας.*

22 *Τὸν τοίνυν νόμον ἐπὶ τούτοις ἀνάγνωθι, ὃς κελεύει ἐπιδικασίαν εἶναι τῶν ἐπικλήρων ἁπασῶν, καὶ ξένων καὶ ἀστῶν, καὶ περὶ μὲν τῶν πολιτῶν τὸν ἄρχοντα εἰσάγειν καὶ ἐπιμελεῖσθαι, περὶ δὲ τῶν μετοίκων τὸν πολέμαρχον, καὶ ἀνεπίδικον μὴ ἐξεῖναι ἔχειν μήτε κλῆρον μήτε ἐπίκληρον.*

‖ΝΟΜΟΣ. *Κληροῦν δὲ τὸν ἄρχοντα κλήρων καὶ ἐπικλήρων, ὅσοι εἰσὶ μῆνες, πλὴν τοῦ σκιροφοριῶνος. ἀνεπίδικον δὲ κλῆρον μὴ ἔχειν.*

23 *Οὐκοῦν αὐτόν, εἴπερ ἠβούλετο ὀρθῶς διαπράττεσθαι, λαχεῖν ἔδει τῆς ἐπικλήρου, εἴτε κατὰ δόσιν αὐτῷ προσήκειν εἴτε κατὰ γένος, εἰ μὲν ὡς ὑπὲρ ἀστῆς, πρὸς τὸν ἄρχοντα, εἰ δὲ ὑπὲρ ξένης, πρὸς τὸν πολέμαρχον, καὶ*

τότε, εἴπερ τι λέγειν εἶχε δίκαιον, πείσαντα ὑμῶν τοὺς
λαχόντας μετὰ τῶν νόμων καὶ τῆς ψήφου κύριον εἶναι,
καὶ μὴ αὐτὸν αὑτῷ νόμους ἰδίους θέμενον διαπράξασθαι
ἃ ἐβούλετο.

Σκέψασθε δὴ καὶ τονδὶ τὸν νόμον, ὃς κελεύει τὴν δια- 24
θήκην, ἣν ἂν παίδων ὄντων γνησίων ὁ πατὴρ διαθῆται,
ἐὰν ἀποθάνωσιν οἱ παῖδες πρὶν ἡβῆσαι, κυρίαν εἶναι.

ΝΟΜΟΣ. *Ὅ τι ἂν γνησίων ὄντων υἱῶν ὁ πατὴρ διαθῆται, ἐὰν ἀποθάνωσιν οἱ υἱεῖς πρὶν ἐπὶ διέτες ἡβᾶν, τὴν τοῦ πατρὸς διαθήκην κυρίαν εἶναι.*

Οὐκοῦν ὁπότε ζῶσιν, ἄκυρος μὲν ἡ διαθήκη ἐστίν, ἥν 25
φασιν οὗτοι τὸν πατέρα καταλιπεῖν, παρὰ πάντας δὲ τοὺς
νόμους μεμαρτύρηκε Στέφανος οὑτοσὶ τὰ ψευδῆ, ὡς ἀν-
τίγραφά ἐστι τῆς διαθήκης τῆς Πασίωνος· πῶς γὰρ σὺ
οἶσθα, καὶ ποῦ παραγενόμενος διατιθεμένῳ τῷ πατρί;
κακοτεχνῶν δὲ φαίνει περὶ τὰς διαθήκας, τὰ ψευδῆ μὲν
αὐτὸς μαρτυρῶν ἑτοίμως, κλέπτων δὲ τὰς ἀληθεῖς μαρ-
τυρίας, ἐξαπατῶν δὲ τοὺς δικαστάς, συνιστάμενος δ᾽ ἐπὶ
ταῖς δίκαις. οἱ δὲ νόμοι καὶ περὶ τῶν τοιούτων γραφὴν
πεποιήκασιν. καί μοι ἀνάγνωθι τὸν νόμον. 26

‖ΝΟΜΟΣ. *Ἐάν τις συνίστηται ἢ συνδεκάζῃ τὴν ἡλιαίαν ἢ τῶν δικαστηρίων τι τῶν Ἀθήνησιν ἢ τὴν βουλὴν ἐπὶ δωροδοκίᾳ χρήματα διδοὺς ἢ δεχόμενος, ἢ ἑταιρίαν συνιστῇ ἐπὶ καταλύσει τοῦ δήμου, ἢ συνήγορος ὢν λαμβάνῃ χρήματα ἐπὶ ταῖς δίκαις ταῖς ἰδίαις ἢ δημοσίαις, τούτων εἶναι τὰς γραφὰς πρὸς τοὺς θεσμοθέτας.*

Ἡδέως ἂν τοίνυν ὑμᾶς ἐροίμην ἐπὶ τούτοις ἅπασι, κατὰ 27
ποίους νόμους ὀμωμοκότες δικάζετε, πότερα κατὰ τοὺς τῆς
πόλεως ἢ καθ᾽ οὓς Φορμίων αὑτῷ νομοθετεῖ. ἐγὼ μὲν τοί-
νυν τούτους παρέχομαι ὑμῖν, καὶ ἐξελέγχω αὐτοὺς ἀμφο-
τέρους παραβεβηκότας, Φορμίωνα μὲν ἐξ ἀρχῆς ἀδικήσαντα
ἡμᾶς καὶ ἀποστερήσαντα τὰ χρήματα, ἃ ὁ πατὴρ ἡμῖν
κατέλιπε καὶ ἐμίσθωσε τούτῳ μετὰ τῆς τραπέζης καὶ τοῦ
ἐργαστηρίου, Στέφανον δὲ τουτονὶ τὰ ψευδῆ μεμαρτυρη-
κότα καὶ παρὰ τὸν νόμον.

Ἄξιον τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τόδε ἐνθυμηθῆναι, 28
ὅτι διαθηκῶν οὐδεὶς πώποτε ἀντίγραφα ἐποιήσατο, ἀλλὰ
συγγραφῶν μέν, ἵνα εἰδῶσι καὶ μὴ παραβαίνωσι, διαθη-
κῶν δὲ οὔ. τούτου γὰρ ἕνεκα καταλείπουσιν οἱ διατιθέ-

μενοι, ἵνα μηδεὶς εἰδῇ ἃ διατίθενται. πῶς οὖν ὑμεῖς ἴστε ὅτι ἀντίγραφά ἐστι τῶν διαθηκῶν τῶν Πασίωνος τὰ ἐν τῷ γραμματείῳ γεγραμμένα;

Δέομαι δ' ὑμῶν ἁπάντων ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ ἱκετεύω βοηθῆσαι μὲν ἐμοί, τιμωρήσασθαι δὲ τοὺς ἑτοίμως οὕτω τὰ ψευδῆ μαρτυροῦντας, ὑπέρ τε ὑμῶν αὐτῶν καὶ ἐμοῦ καὶ τοῦ δικαίου καὶ τῶν νόμων.

‖ΚΑΤΑ ΕΥΕΡΓΟΥ ΚΑΙ ΜΝΗΣΙΒΟΥΛΟΥ ΨΕΥΔΟΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ἐπειγομένων Ἀθηναίων εἰς στρατείαν ναυτικὴν ἐνέδει σκεύη τριηραρχικά, καὶ γράφεται ψήφισμα κατὰ τάχος εἰσπράττειν τοὺς ὀφείλοντας σκεύη τριηραρχικὰ τῇ πόλει· οὗτοι δὲ ἦσαν τῶν τετριηραρχηκότων τινές. ἄλλος μὲν οὖν ἄλλους εἰσπράττειν ἐτάχθη, ὁ δὲ νῦν τὸν λόγον λέγων Θεόφημον καὶ Δημοχάρην. ἀγνωμονοῦσι δὲ αὐτοῖς δίκην ἔλαχε καὶ εἷλε. καὶ ὁ μὲν Δημοχάρης ἀποδέδωκεν, ὁ δὲ Θεόφημος ἔτι μεθοδευόμενος ἦν. ψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς, ὅτῳ τις ἂν δύνηται τρόπῳ, τοὺς ὀφείλοντας εἰσπράττειν, ἧκεν ἐπὶ τὴν οἰκίαν τοῦ Θεοφήμου οὗτος ὁ νῦν δικαζόμενος. ἐκ δὲ ἀψιμαχίας πληγὰς ἀλλήλοις ἐνέτειναν, καὶ αἰκίας κατ' ἀλλήλων δίκας ἀπήνεγκαν, ἑκάτερος φάσκων τὸν ἕτερον ἄρξαι τῶν πληγῶν· τοῦτο γὰρ ἦν ἡ αἰκία. πρότερος οὖν εἰσελθὼν ὁ Θεόφημος παρέσχετο μάρτυρας Εὔεργον καὶ Μνησίβουλον, τὸν μὲν ἀδελφὸν ὄντα ἑαυτοῦ τὸν δὲ κηδεστήν. οἳ δὲ ἐμαρτύρησαν ὅτι Θεόφημος μὲν ἐβούλετο παραδοῦναι τὴν ἄνθρωπον εἰς βάσανον τὴν παροῦσαν τῇ μάχῃ, ἵν' εἴπῃ βασανιζομένη πότερος ἦρξατο τῶν πληγῶν, ταῦτα δὲ προκαλουμένου τοῦ Θεοφήμου καὶ παραδιδόντος τὴν θεράπαιναν οὐκ ἐδέξατο. τέλος οἱ μὲν δικασταὶ τῇ μαρτυρίᾳ πεισθέντες ὑπὲρ Θεοφήμου τὴν ‖ ψῆφον ἔθεντο, ὁ δὲ ἡττηθεὶς τοῖς μάρτυσιν ὡς ψευσαμένοις δικάζεται.*

Καλῶς μοι δοκοῦσιν οἱ νόμοι ἔχειν ὦ ἄνδρες δικασταὶ οἱ ὑπόλοιπον ἀγῶνα ἀποδιδόντες ταῖς δίκαις τῶν ψευδομαρτυριῶν, ἵν' εἴ τις μάρτυρας τὰ ψευδῆ μαρτυροῦντας παρασχόμενος ἢ προκλήσεις μὴ γενομένας ἢ μαρτυρίας παρὰ τὸν νόμον μαρτυρηθείσας ἐξηπάτησε τοὺς δικαστάς, μηδὲν αὐτῷ πλέον γένηται, ἀλλ' ἐπισκηψάμενος ταῖς μαρτυρίαις ὁ ἀδικηθεὶς καὶ εἰσελθὼν ὡς ὑμᾶς καὶ ἐπιδείξας περὶ τοῦ πράγματος τοὺς μάρτυρας τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκότας παρά τε τούτων δίκην λάβῃ καὶ τὸν προβαλόμε-
2 *νον ὑπόδικον ἔχῃ τῶν κακοτεχνιῶν. καὶ διὰ τοῦτο τῷ μὲν*

διώκοντι ἐλάττω ἐποίησαν τὰ ἐπιτίμια, ἐὰν ἡττηθῇ, ἵνα
μὴ διὰ τὸ πλῆθος ἀποτρέπωνται διώκειν τοὺς μάρτυρας
τῶν ψευδομαρτυριῶν οἱ ἀδικούμενοι, τῷ δὲ φεύγοντι με-
γάλας ἐπέθηκαν τιμωρίας, ἐὰν ἁλῷ καὶ δοκῇ ὑμῖν τὰ ψευδῆ
μεμαρτυρηκέναι. δικαίως, ὦ ἄνδρες δικασταί. ὑμεῖς γὰρ 3
εἰς τοὺς μάρτυρας βλέψαντες, καὶ πιστεύσαντες οἷς ἂν
οὗτοι μαρτυρήσωσι, ψηφίζεσθε· ἵνα οὖν μήθ᾽ ὑμεῖς ἐξα-
πατᾶσθε μήθ᾽ οἱ εἰσιόντες εἰς ὑμᾶς ἀδικῶνται, διὰ ταῦτα
αὐτοὺς ὑποδίκους ἐποίησεν ὁ νομοθέτης. ‖ δέομαι δὲ ὑμῶν
κἀγὼ μετ᾽ εὐνοίας μου ἀκροάσασθαι περὶ τοῦ πράγματος
ἐξ ἀρχῆς ἅπαντα, ἵνα ἐκ τούτων εἰδῆτε ὅσα ἐγώ τε ἠδι-
κήθην καὶ ἐξηπατήθησαν οἱ δικασταὶ καὶ οὗτοι τὰ ψευδῆ
ἐμαρτύρησαν.

Μάλιστα μὲν οὖν ἂν ἠβουλόμην μὴ ἔχειν πράγματα· 4
εἰ δ᾽ οὖν ἀναγκάζοι τις, πρὸς τοιούτους ἡδύ ἐστιν εἰσιέναι
οἳ μὴ ἀγνῶτές εἰσιν ὑμῖν. νῦν δὲ πλείων μοι λόγος ἔσται
ἐξελέγχοντι τὸν τρόπον αὐτῶν ἢ τὴν μαρτυρίαν ψευδῆ
οὖσαν. περὶ μὲν γὰρ τῆς μαρτυρίας, ὅτι ψευδῆ μεμαρ-
τυρήκασιν, αὐτοί μοι δοκοῦσιν ἔργῳ ἐξελέγχειν αὐτήν, καὶ
οὐκ ἄλλους με δεῖ μάρτυρας παρασχέσθαι ἢ αὐτοὺς τού-
τους· ἐξὸν γὰρ αὐτοῖς ἀπηλλάχθαι πραγμάτων καὶ μὴ 5
κινδυνεύειν εἰσιόντας εἰς ὑμᾶς, ἔργῳ βεβαιώσαντας ὡς
ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία, οὐκ ἠθελήκασι παραδοῦναι τὴν
ἄνθρωπον, ἣν μεμαρτυρήκασι προκαλέσασθαι πρὸς τῷ
διαιτητῇ Πυθοδώρῳ ἐκ Κηδῶν παραδιδόναι ἕτοιμον εἶναι
Θεόφημον, ἠξίουν δ᾽ ἐγὼ παραλαμβάνειν, ὡς οἱ μάρτυρες
ὑμῖν οἱ τότε παραγενόμενοι ἐμαρτύρησαν ἐν τῷ δικαστη-
ρίῳ, νῦν δὲ μαρτυρήσουσιν· καὶ Θεόφημος αὐτοῖς ὡς ἀλη-
θῆ μεμαρτυρηκόσιν οὐκ ἐπεσκήψατο, οὐδ᾽ ἐπεξέρχεται τῶν
ψευδομαρτυριῶν. σχεδὸν μὲν οὖν τι καὶ αὐτοί μοι ὁμολο- 6
γοῦσιν ἐν τῇ μαρτυρίᾳ ἐθέλειν με παραλαμβάνειν τὴν ἄν-
θρωπον, Θεόφημον δὲ ἀναβάλλεσθαι κελεύειν, ἐμὲ δὲ οὐκ
ἐθέλειν. ἣν δ᾽ ἐγὼ μὲν ἠξίωσα παραλαμβάνειν, Θεόφημος
δὲ προυκαλέσατο παραδοῦναι, ὡς οὗτοί φασι, ‖ τὸ δὲ σῶμα
οὐδεὶς εἶδε παρόν, οὔτε τότε πρὸς τῷ διαιτητῇ οὔτε ὕστε-
ρον πρὸς τῷ δικαστηρίῳ, οὔτ᾽ ἄλλοθι οὐδαμοῦ παραδι-
δόμενον, ἐμαρτύρησαν οἱ μάρτυρες οὗτοι ὡς ἐθέλοι παρα-

7 δοῦναι Θεόφημος καὶ πρόκλησιν προκαλοῖτο· ᾠήθησαν δὲ
οἱ δικασταὶ ἀληθῆ εἶναι τὴν μαρτυρίαν, φεύγειν δ' ἐμὲ τὸν
ἔλεγχον ἐκ τῆς ἀνθρώπου περὶ τῆς αἰκίας, ὁπότερος ἡμῶν
ἦρξε χειρῶν ἀδίκων· τοῦτο γάρ ἐστιν ἡ αἰκία. πῶς οὖν
οὐκ ἀναγκαῖόν ἐστι τούτους τοὺς μάρτυρας τὰ ψευδῆ με-
μαρτυρηκέναι, οἵ γε οὐδὲ νῦν πω τολμῶσι τὸ σῶμα τῆς
ἀνθρώπου παραδοῦναι, καθὰ ἔφασαν προκαλέσασθαι τὸν
Θεόφημον καὶ ἐμαρτύρησαν αὐτῷ, καὶ τὴν μὲν μαρτυρίαν
ἔργῳ βεβαιῶσαι ὡς ἀληθής ἐστι, καὶ τοὺς μάρτυρας ἀπηλ-
8 λάχθαι τοῦ ἀγῶνος, παραδόντος τὸ σῶμα τῆς ἀνθρώπου,
τὴν δ' ἄνθρωπον περὶ τῆς αἰκίας βασανίζεσθαι, ἐφ' ᾗ ἐγὼ
διώκω δίκῃ τὸν Θεόφημον, ἐπειδὴ τότε οὐ παρέσχε, καὶ
τὸν ἔλεγχον ἐξ ὧν ὁ Θεόφημος ἔλεγε τότε ἐξαπατῶν τοὺς
δικαστάς, ἐκ τούτων γίγνεσθαι; ἔφη γὰρ ἐν τῇ δίκῃ τῆς
αἰκίας τοὺς μὲν μάρτυρας τοὺς παραγενομένους καὶ μαρ-
τυροῦντας τὰ γενόμενα ἐν γραμματείῳ κατὰ τὸν νόμον
ψευδεῖς εἶναι καὶ ὑπ' ἐμοῦ παρεσκευασμένους, τὴν δ' ἄν-
θρωπον τὴν παραγενομένην ἐρεῖν τἀληθῆ οὐκ ἐκ γραμμα-
τείου μαρτυροῦσαν ἀλλ' ἐκ τῆς ἰσχυροτάτης μαρτυρίας,
9 βασανιζομένην, ὁπότερος ἦρξε χειρῶν ἀδίκων. ἃ δή, τῷ
λόγῳ τότε καταχρώμενος καὶ μάρτυρας παρεχόμενος τού-
των, ἠπάτα τοὺς δικαστάς, νῦν ἐξελέγχεται ψευδῆ ὄντα·
τὸ γὰρ σῶμα τῆς ‖ ἀνθρώπου οὐ τολμᾷ παραδοῦναι, ὃ
μεμαρτυρήκασιν αὐτὸν ἐθέλειν παραδοῦναι, ἀλλὰ μᾶλλον
προῄρηται τὸν ἀδελφὸν καὶ τὸν κηδεστὴν ψευδομαρτυριῶν
ἀγωνίζεσθαι, ἢ παραδοῦναι τὸ σῶμα τῆς ἀνθρώπου καὶ
δικαίως ἀπηλλάχθαι, καὶ μὴ διὰ λόγων καὶ δεήσεως, ἐὰν
10 δύνωνται ἐξαπατήσαντες ὑμᾶς ἀποφεύγειν, πολλάκις ἐμοῦ
προκαλεσαμένου καὶ ἐξαιτήσαντος τὴν ἄνθρωπον, καὶ τότε
ἀξιοῦντος παραλαμβάνειν, καὶ μετὰ τὴν δίκην, καὶ ὅτε
ἐξέτινον αὐτοῖς, καὶ ἐφ' ᾗ ἐγὼ δίκῃ τὸν Θεόφημον διώκω
τῆς αἰκίας, καὶ ἐν τῇ ἀνακρίσει τῶν ψευδομαρτυριῶν· καὶ
τούτων οὐ προσποιουμένων, ἀλλὰ λόγῳ μὲν μαρτυρούν-
των τὰ ψευδῆ, ἔργῳ δὲ οὐ παραδιδόντων τὴν ἄνθρωπον·
εὖ γὰρ ᾔδεσαν ὅτι βασανιζομένης αὐτῆς ἐξελεγχθήσονται
ἀδικοῦντες, οὐκ ἀδικούμενοι. ὡς δὲ ταῦτα ἀληθῆ λέγω,
τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅτι μὲν τοίνυν πολλάκις προκαλεσαμένῳ καὶ ἀξιοῦντι 11
παραλαβεῖν τὴν ἄνθρωπον οὐδεὶς παρεδίδου, μεμαρτύρη-
ται ὑμῖν· ἵνα δὲ καὶ ἐκ τεκμηρίων εἰδῆτε ὅτι ψευδῆ με-
μαρτυρήκασι, δηλώσω ὑμῖν. οὗτοι γάρ, εἴπερ ἀληθῆ ἦν
ἅ φασι προκαλέσασθαι τὸν Θεόφημον καὶ παραδιδόναι
τὸ σῶμα τῆς ἀνθρώπου, οὐκ ἂν δή που δύο μάρτυρας
ἐποιήσαντο κηδεστὴν καὶ ἀδελφόν, τἀληθῆ μαρτυροῦντας,
ἀλλὰ καὶ ἄλλους ἂν πολλούς. ἡ μὲν γὰρ δίαιτα ἐν τῇ 12
ἡλιαίᾳ ἦν· οἱ γὰρ τὴν Οἰνηίδα καὶ τὴν Ἐρεχθηίδα διαι-
τῶντες ἐνταῦθα κάθηνται· τῶν δὲ τοιούτων προκλήσεων,
ὅταν τις τὸ σῶμα παραδιδῷ κομίσας, πολλοὶ προΐστανται
ἐπακούοντες τῶν λεγομένων, ὥστε οὐκ ἂν ἠπόρησαν ‖ μαρ-
τύρων, εἴπερ καὶ ὁπωστιοῦν ἀληθὴς ἦν ἡ μαρτυρία.

Μεμαρτυρήκασι τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐν τῇ αὐτῇ 13
μαρτυρίᾳ ὡς ἐγὼ οὐκ ἐθέλοιμι ἀναβαλέσθαι, ὁ δὲ Θεό-
φημος κελεύοι, ἵνα μοι παραδοίη τὴν ἄνθρωπον. ὡς δὲ
οὐκ ἀληθὲς τοῦτ' ἐστίν, ἐγὼ ὑμᾶς διδάξω. εἰ μὲν γὰρ ἐγὼ
τὸν Θεόφημον ταύτην τὴν πρόκλησιν προυκαλούμην ἣν
μεμαρτυρήκασιν αὐτῷ, ἀξιῶν αὐτὸν τὴν ἄνθρωπον παρα-
δοῦναι, εἰκότως ἄν μοι τούτους τοὺς λόγους ἀπεκρίνατο, 14
ἀναβαλέσθαι κελεύων τὴν δίαιταν εἰς τὴν ὑστέραν σύνο-
δον, ἵνα κομίσῃ τὴν ἄνθρωπον καὶ παραδῷ μοι. νῦν δὲ
σὲ αὐτὸν μεμαρτυρήκασιν ὦ Θεόφημε ἐθέλειν παραδιδό-
ναι τὴν ἄνθρωπον, καὶ ἐμὲ μὴ ἐθέλειν παραλαβεῖν. πῶς
οὖν σὺ κύριος μὲν ὢν τῆς ἀνθρώπου, μέλλων δὲ προκα-
λεῖσθαι ταύτην τὴν πρόκλησιν ἣν μεμαρτυρήκασί σοι,
καταφεύγων δὲ εἰς τὴν ἄνθρωπον περὶ τοῦ δικαίου, ἄλλου 15
δέ σοι οὐδενὸς ὄντος μάρτυρος ὡς ἐπλήγης ὑπ' ἐμοῦ ἄρ-
χοντος χειρῶν ἀδίκων, οὐχ ἧκες ἔχων τὴν ἄνθρωπον πρὸς
τὸν διαιτητὴν καὶ παρεδίδους τὸ σῶμα παρούσης τῆς ἀν-
θρώπου, κύριός γε ὢν αὐτῆς; ἀλλὰ τὴν μὲν πρόκλησιν
φῂς προκαλέσασθαι, τὴν δ' ἄνθρωπον οὐδεὶς εἶδε, δι' ἧς
ἐξηπάτησας τοὺς δικαστάς, ψευδεῖς μάρτυρας παρασχό-
μενος ὡς ἐθέλων παραδοῦναι;

Ἐπειδὴ τοίνυν σοι τότε οὐ παρῆν ἡ ἄνθρωπος, ἀλλὰ 16
πρότερον ἐσημάνθησαν οἱ ἐχῖνοι, ὕστερον ἔστιν ὅπου

ἤγαγες τὴν ἄνθρωπον εἰς τὴν ἀγορὰν ἢ εἰς τὸ δικαστήριον; εἰ γὰρ μὴ τότε σοι παρεγένετο, ὕστερον δή που ἔδει παραδιδόναι, καὶ μάρτυρας ποιεῖσθαι ὡς ἐθέλεις ἐν τῇ ἀνθρώπῳ τὸν ἔλεγχον γίγνεσθαι, καθάπερ ‖ προυκαλέσω, προκλήσεώς τε ἐμβεβλημένης σοι καὶ μαρτυρίας ὡς ἤθελες παραδιδόναι τὴν ἄνθρωπον. μέλλων τοίνυν εἰσιέναι τὴν δίκην ἔστιν ὅπου τὴν ἄνθρωπον εἰσήγαγες πρὸς τὸ
17 δικαστήριον; καίτοι ἔδει αὐτόν, εἴπερ ἀληθῆ ἦν ἃ φασιν αὐτὸν προκαλεῖσθαι, κληρουμένων τῶν δικαστηρίων κομίσαντα τὴν ἄνθρωπον, λαβόντα τὸν κήρυκα, κελεύειν ἐμέ, εἰ βουλοίμην, βασανίζειν, καὶ μάρτυρας τοὺς δικαστὰς εἰσιόντας ποιεῖσθαι ὡς ἕτοιμός ἐστι παραδοῦναι. νυνὶ δὲ λόγῳ ἐξαπατήσας, ψευδεῖς μαρτυρίας παρασχόμενος, οὐδέπω καὶ νῦν τολμᾷ τὴν ἄνθρωπον παραδοῦναι, πολλάκις ἐμοῦ προκαλεσαμένου καὶ ἐξαιτήσαντος, ὡς οἱ μάρτυρες ὑμῖν οἱ παραγενόμενοι μεμαρτυρήκασιν. καί μοι ἀνάγνωθι πάλιν τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

18 Βούλομαι δ' ὑμῖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τὴν δίκην διηγήσασθαι, ὅθεν ἐγένετό μοι πρὸς Θεόφημον, ἵνα εἰδῆτε ὅτι οὐ μόνον ἐμοῦ ἀδίκως κατεδικάσατο ἐξαπατήσας τοὺς δικαστάς, ἀλλὰ καὶ τῆς βουλῆς ἅμα τῶν πεντακοσίων τῇ αὐτῇ ψήφῳ, καὶ ἄκυρα μὲν ἐποίησε τὰ δικαστήρια τὰ ὑμέτερα ἄκυρα δὲ τὰ ψηφίσματα καὶ τοὺς νόμους, ἀπίστους δὲ τὰς ἀρχὰς κατέστησεν ὑμῖν καὶ τὰ γράμματα τὰ ἐν ταῖς στήλαις. ὃν δὲ τρόπον, ἐγὼ ὑμᾶς περὶ ἑνὸς
19 ἑκάστου διδάξω. ἐμοὶ γὰρ πρὸς Θεόφημον συμβόλαιον μὲν οὐδὲν πώποτε πρότερον ἐν τῷ βίῳ ἐγένετο, οὐδ' αὖ κῶμος ἢ ἔρως ἢ πότος, ὥστε διαφερόμενον περί τινος πλεονεκτήματος ἢ παροξυνόμενον ὑπὸ ἡδονῆς τινὸς ἐλθεῖν ἐπὶ τὴν οἰκίαν τὴν τούτου· ψηφισμάτων δὲ ὑμετέρων δήμου καὶ βουλῆς καὶ νόμου ἐπιτάξαντος, ‖ εἰσέπραξα καὶ
20 τοῦτον ὀφείλοντα τῇ πόλει σκεύη τριηρικά. διότι δέ, ἐγὼ ὑμῖν διηγήσομαι. ἔτυχεν ἐκπλεουσῶν τριήρων καὶ βοήθεια ἀποστελλομένη διὰ τάχους. σκεύη οὖν ἐν τῷ νεωρίῳ οὐχ ὑπῆρχε ταῖς ναυσίν, ἀλλ' ἔχοντες οἱ ὀφείλοντες οὐκ ἀπεδίδοσαν· πρὸς δὲ τούτοις οὐδ' ἐν τῷ Πειραιεῖ ὄντα ἄφθονα

ϑόνια καὶ στύππια καὶ σχοινία, οἷς κατασκευάζεται τριήρης, ὥστε πρίασϑαι. γράφει οὖν Χαιρέδημος τὸ ψήφισμα τουτί, ἵνα εἰσπραχϑῇ τὰ σκεύη ταῖς ναυσὶ καὶ σῷα γένηται τῇ πόλει. καί μοι ἀνάγνωϑι τὸ ψήφισμα.

ΨΗΦΙΣΜΑ.

21 Τούτου τοῦ ψηφίσματος γεγενημένου ἡ μὲν ἀρχὴ ἐπεκλήρωσε καὶ παρέδωκε τοὺς ὀφείλοντας τὰ σκεύη τῇ πόλει, οἱ δὲ τῶν νεωρίων ἐπιμεληταὶ τοῖς τριηράρχοις τοῖς ἐκπλέουσι τότε καὶ τοῖς ἐπιμεληταῖς τοῖς ἐν ταῖς συμμορίαις· ὁ δὲ νόμος ὁ τοῦ Περιάνδρου ἠνάγκαζε καὶ προσέταττε παραλαβεῖν τοὺς ὀφείλοντας τὰ σκεύη, καϑ' ὃν αἱ συμμορίαι συνετάχϑησαν. πρὸς δὲ τούτοις ἕτερον ψήφισμα δήμου ἠνάγκαζε τὸ πρὸς μέρος ἡμῖν διδόναι τῶν ὀφειλόντων ἕκαστον εἰσπράξασϑαι. 22 ἔτυχον δὲ ἐγὼ μὲν τριηραρχῶν καὶ ἐπιμελητὴς ἡμῶν τῆς συμμορίας, Δημοχάρης δὲ ὁ Παιανιεὺς ἐν τῇ συμμορίᾳ ὢν καὶ ὀφείλων τῇ πόλει σκεύη μετὰ Θεοφήμου τούτου, συντριήραρχος γενόμενος. γεγραμμένους οὖν αὐτοὺς ἀμφοτέρους ἐν τῇ στήλῃ ὀφείλοντας τὰ σκεύη τῇ πόλει ἡ ἀρχὴ παραλαβοῦσα παρὰ τῆς προτέρας ἀρχῆς ἡμῖν παρέδωκε κατά τε τὸν νόμον καὶ τὰ ψηφίσματα. 23 ἐξ ἀνάγκης ἦν οὖν μοι παραλαμβάνειν, ἐπεὶ ἐν τῷ πρόσϑε χρόνῳ πολλὰς τριηραρχίας τετριηραρχηκὼς ὑμῖν οὐδεπώποτε ἔλαβον σκεύη ἐκ τοῦ νεωρίου, ἀλλ' αὐτὸς ἰδίᾳ παρεσκεύαζον ὁπότε δέοι, ἵνα ὡς ἐλάχιστα πράγματα ἔχοιμι πρὸς τὴν πόλιν. τότε δὲ κατὰ τὰ ψηφίσματα καὶ τὸν νόμον ἠναγκαζόμην παραλαμβάνειν. 24 ὡς δὲ ταῦτ' ἀληϑῆ λέγω, τούτων ὑμῖν μάρτυρας παρέξομαι τό τε ψήφισμα καὶ τὸν νόμον, ἔπειτα τὴν ἀρχὴν αὐτὴν τὴν παραδοῦσαν καὶ εἰσαγαγοῦσαν εἰς τὸ δικαστήριον, εἶτα τοὺς ἐκ τῆς συμμορίας ἧς ἦν ἐπιμελητὴς καὶ τριήραρχος. καί μοι ἀνάγνωϑι.

ΝΟΜΟΣ. ΨΗΦΙΣΜΑ. ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

25 Ὡς μὲν τοίνυν πολλή μοι ἀνάγκη ἦν παραλαβεῖν τοὺς ὀφείλοντας τῇ πόλει, τοῦ τε νόμου ἀκούετε καὶ τῶν ψηφισμάτων· ὡς δὲ καὶ παρέλαβον παρὰ τῆς ἀρχῆς, ὁ παραδοὺς ὑμῖν μεμαρτύρηκεν. σκέψασϑαι οὖν ὑμᾶς εἰκός ἐστιν ἐξ ἀρχῆς ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοῦτο πρῶτον, πότερον

ἐγὼ ἠδίκουν ὁ ἀναγκαζόμενος εἰσπρᾶξαι τὸν Θεόφημον, ἢ
Θεόφημος, ὃς ὀφείλων τῇ πόλει τὰ σκεύη πολὺν χρόνον
26 οὐκ ἀπεδίδου. ἐὰν γὰρ καθ' ἕκαστον σκοπῆτε, εὑρήσετε
τὸν Θεόφημον ἅπαντα ἀδικοῦντα, καὶ ταῦτα οὐχ ὑπ' ἐμοῦ
μόνον λόγῳ εἰρημένα, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τῆς βουλῆς καὶ τοῦ
δικαστηρίου ψήφῳ κεκριμένα. ἐπειδὴ γὰρ παρέλαβον αὐ-
τὸν παρὰ τῆς ἀρχῆς, προσελθὼν αὐτῷ πρῶτον μὲν ἀπῄ-
τουν τὰ σκεύη, ὡς δὲ τοῦτό μου εἰπόντος οὐκ ἀπεδίδου,
ὕστερον αὐτῷ περιτυχὼν περὶ τὸν Ἑρμῆν τὸν πρὸς τῇ
πυλίδι προσεκαλεσάμην πρός τε τοὺς ἀποστολέας καὶ
πρὸς τοὺς ‖ τῶν νεωρίων ἐπιμελητάς· οὗτοι γὰρ εἰσῆγον
τότε τὰς διαδικασίας εἰς τὸ δικαστήριον περὶ τῶν σκευῶν.
27 ὡς δὲ ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν μάρτυρας τοὺς κλητεύ-
σαντας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Ὅτι μὲν τοίνυν προσεκλήθη ὑπ' ἐμοῦ, οἱ κλήτορες με-
μαρτυρήκασιν· ὡς δὲ εἰσήχθη εἰς τὸ δικαστήριον, λαβέ
μοι τὴν μαρτυρίαν τῶν ἀποστολέων καὶ τῆς ἀρχῆς.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

28 Ὃν μὲν τοίνυν ᾤμην πράγματα παρέξειν μοι Δημοχάρην
τὸν Παιανιέα, πρὶν μὲν εἰσαχθῆναι εἰς τὸ δικαστήριον ἦν
ἀηδής, ἐπειδὴ δὲ εἰσήχθη καὶ ἑάλω, ἀπέδωκε τὸ καθ'
ἑαυτὸν μέρος τῶν σκευῶν· ὃν δ' οὐκ ἂν ᾠήθην εἰς τοσοῦ-
τον πονηρίας ἐλθεῖν ὥστε τολμῆσαι δή ποτε τὴν πόλιν
ἀποστερῆσαι τὰ σκεύη, εἰς τοσοῦτο δικῶν καὶ πραγμάτων
προβέβηκεν. καὶ παρὼν μὲν πρὸς τῷ δικαστηρίῳ, ὅτε
εἰσήγετο, οὐδαμοῦ ἠντεδίκησεν, οὐδὲ ἀπεγράψατο διαδι-
κασίαν πρὸς οὐδένα, εἴ τινά φησιν ἕτερον ἔχειν τὰ σκεύη
καὶ μὴ προσήκειν αὐτῷ ἀποδοῦναι, ἀλλ' εἴασε καθ' ἑαυ-
29 τοῦ ψῆφον ἐπαχθῆναι· ἐπειδὴ δὲ ἀπῆλθεν ἐκ τοῦ δικα-
στηρίου, οὐδὲν μᾶλλον ἀπεδίδου, ἀλλ' ᾤετο ἐν μὲν τῷ
παρόντι αὐτὸς ἐκποδὼν γενόμενος ἡσυχίαν ἕξειν, ἕως ἐγώ
τε ἐκπλεύσω καὶ αἱ νῆες καὶ χρόνος ἐγγένηται, καὶ ἐμέ,
ἃ οὗτος ὤφειλε σκεύη τῇ πόλει, ἀναγκασθήσεσθαι ἀπο-
δοῦναι ἥκοντα ἐνθάδε ἢ τῷ διαδόχῳ, ὃς ἂν ἔλθῃ ἐκ τῆς
συμμορίας ἐπὶ τὴν ναῦν. τί γὰρ ἂν καὶ ἀντέλεγον αὐτῷ
ψηφίσματα καὶ νόμους παρεχομένῳ, ὡς προσῆκεν ἐμὲ

*εἰσπρᾶξαι ‖ τὰ σκεύη; ὁ δὲ Θεόφημος χρόνου ἐγγεγενημέ- 30
νου, ὁπότε αὐτὸν ἥκων ἀπαιτοίην, ἔμελλε φήσειν ἀποδε-
δωκέναι, καὶ τούτοις τεκμηρίοις καταχρήσεσθαι ὡς ἀπο-
δέδωκε, τῷ καιρῷ, τῇ χρείᾳ, ὡς οὐκ ἠλίθιος ἦν οὐδ' αὖ
φίλος αὐτῷ γενόμενος οὐδεπώποτε ὥστ' ἐπισχεῖν· τί ἄν
ποτε βουλόμενος ἐγώ, τριηραρχῶν μὲν τῇ πόλει, ἐπιμελη-
τὴς δὲ ὢν τῆς συμμορίας, ψηφισμάτων δὲ τοιούτων καὶ
νόμου ὄντος, περὶ τὴν εἴσπραξιν ἐπέσχον ἂν τούτῳ; ταύ- 31
την τὴν διάνοιαν ἔχων ὁ Θεόφημος τότε μὲν οὐκ ἀπεδίδου
τὰ σκεύη ἀλλ' ἐκποδὼν ἦν, ὕστερον δὲ ᾤετό με ἀποστε-
ρήσειν, πρὸς δὲ τούτοις εἰς ὅρκον καταφυγὼν ῥᾳδίως
ἐπιορκήσειν, ὅπερ καὶ ἄλλοις πεποίηκεν. δεινὴ γὰρ ἡ
πλεονεξία τοῦ τρόπου περὶ τὰ διάφορα, ὡς ἐγὼ ἔργῳ
ὑμῖν ἐπιδείξω. ταῦτα γὰρ τὰ σκεύη ὀφείλων ὁ Θεόφημος
τῇ πόλει εἰς Ἀφαρέα ἀνέφερε λόγῳ, ἔργῳ δὲ οὐκ ἀπε-
γράψατο πρὸς αὐτὸν διαδικασίαν, εὖ εἰδὼς ὅτι ἐλεγχθή-
σεται ψευδόμενος, ἐὰν εἰσέλθῃ εἰς δικαστήριον. ὁ γὰρ 32
Ἀφαρεὺς ἐξήλεγχεν αὐτὸν τιμὴν λογισάμενον αὐτῷ τῶν
σκευῶν καὶ λαβόντα παρ' αὐτοῦ, ὅτε παρελάμβανε τὴν
τριηραρχίαν. νῦν δέ φησι Δημοχάρει παραδοῦναι, καὶ
δικάζεται τοῖς παιδίοις τοῖς Δημοχάρους τετελευτηκότος
τοῦ Δημοχάρους. ὅτε δ' ἔζη ὁ Δημοχάρης, οὐκ ἀπεγρά-
ψατο πρὸς αὐτὸν διαδικασίαν ὁ Θεόφημος, εἰσπραττόμε-
νος ὑπ' ἐμοῦ τὰ σκεύη, ἀλλ' ἠβούλετο ἐπὶ προφάσει χρόνου
ἐγγενομένου ἀποστερῆσαι τὴν πόλιν τὰ σκεύη. ὡς δ' ἀληθῆ
λέγω, ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.*

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

*Ταῦτα τοίνυν ἐγὼ πάντα ἐνθυμούμενος, καὶ ἀκούων 33
τὸν Θεόφημον τῶν πεπλησιακότων οἷος εἴη περὶ τὰ διά-
φορα, καὶ οὐκ ἀπολαμβάνων τὰ σκεύη παρ' αὐτοῦ, προσ-
ῄειν πρός τε τοὺς ἀποστολέας καὶ τὴν βουλὴν [καὶ τὸν
δῆμον], λέγων ὅτι οὐκ ἀποδίδωσί μοι τὰ σκεύη ὁ Θεόφη-
μος, ἃ ὦφλεν ἐν τῷ δικαστηρίῳ. προσῄεσαν δὲ καὶ οἱ
ἄλλοι τριήραρχοι τῇ βουλῇ, ὅσοι μὴ παρελάμβανον παρὰ
τῶν ὀφειλόντων τὰ σκεύη. καὶ πολλῶν λόγων γενομένων
ἀποκρίνεται ἡμῖν ἡ βουλὴ ψηφίσματι, ὃ ἀναγνώσεται
ὑμῖν, εἰσπράττεσθαι τρόπῳ ᾧ ἂν δυνώμεθα.*

ΨΗΦΙΣΜΑ.

34 *Γενομένου τοίνυν τοῦ ψηφίσματος τούτου ἐν τῇ βουλῇ,*
καὶ οὐδενὸς γραφομένου παρανόμων, ἀλλὰ κυρίου ὄντος,
προσελθὼν Εὐέργῳ τούτῳ τῷ ἀδελφῷ τοῦ Θεοφήμου,
ἐπειδὴ τὸν Θεόφημον οὐχ οἷός τε ἦν ἰδεῖν, ἔχων τὸ ψή-
φισμα πρῶτον μὲν ἀπῄτησα τὰ σκεύη καὶ ἐκέλευσα αὐτὸν
φράσαι τῷ Θεοφήμῳ, ἔπειτα διαλιπὼν ἡμέρας τινάς, ὡς
οὐκ ἀπεδίδου τὰ σκεύη ἀλλ' ἐχλεύαζέ με, παραλαβὼν
μάρτυρας ἠρόμην αὐτὸν πότερα μεμερισμένος εἴη πρὸς
35 *τὸν ἀδελφὸν ἢ κοινὴ ἡ οὐσία εἴη αὐτοῖς. ἀποκριναμένου*
δέ μοι Εὐέργου ὅτι νενεμημένος εἴη καὶ χωρὶς οἰκοίη ὁ
Θεόφημος, αὐτὸς δὲ παρὰ τῷ πατρί, πυθόμενος οὗ ᾤκει
ὁ Θεόφημος, λαβὼν παρὰ τῆς ἀρχῆς ὑπηρέτην ἦλθον ἐπὶ
τὴν οἰκίαν τοῦ Θεοφήμου. καταλαβὼν δὲ αὐτὸν οὐκ ἔνδον
ὄντα, ἐκέλευσα τὴν ἄνθρωπον τὴν ὑπακούσασαν μετελ-
θεῖν αὐτὸν ὅπου εἴη, ταύτην ἣν μεμαρτυρήκασιν οὗτοι
προκαλέσασθαι τὸν Θεόφημον παραδοῦναι, ἐγὼ δὲ ἐξαι-
τῶν ‖ οὐ δύναμαι παραλαβεῖν, ἵν' ὑμεῖς τὴν ἀλήθειαν
36 *πύθησθε, ὁπότερος ἦρξε χειρῶν ἀδίκων. ὡς δὲ ἀφικνεῖ-*
ται ὁ Θεόφημος μετελθούσης αὐτὸν τῆς ἀνθρώπου, ἀπῄ-
τουν αὐτὸν τὸ διάγραμμα τῶν σκευῶν, λέγων ὅτι ἤδη
περὶ ἀναγωγὴν εἴην, καὶ ἐδείκνυον τὸ ψήφισμα τῆς βου-
λῆς. ὡς δὲ ταῦτά μου λέγοντος οὐκ ἀπεδίδου ἀλλ'
ἠπείλει καὶ ἐλοιδορεῖτο, ἐκέλευσα τὸν παῖδα καλέσαι εἴ
τινας ἴδοι τῶν πολιτῶν παριόντας ἐκ τῆς ὁδοῦ, ἵνα μάρ-
37 *τυρές μοι εἴησαν τῶν λεγομένων, καὶ ἠξίουν πάλιν τὸν*
Θεόφημον ἢ αὐτὸν ἀκολουθεῖν πρὸς τοὺς ἀποστολέας καὶ
τὴν βουλήν, καὶ εἰ μή φησιν ὀφείλειν, ἐκείνους πείθειν
τοὺς παραδιδόντας καὶ ἀναγκάζοντας εἰσπράττειν, ἢ ἀπο-
διδόναι τὰ σκεύη· εἰ δὲ μή, ἐνέχυρα ἔφην λήψεσθαι κατά
τε τοὺς νόμους καὶ τὰ ψηφίσματα. οὐδὲν δ' ἐθέλοντος
αὐτοῦ τῶν δικαίων ποιεῖν ἦγον τὴν ἄνθρωπον ἑστηκυῖαν
38 *ἐπὶ τῇ θύρᾳ, τὴν μετελθοῦσαν αὐτόν. καὶ ὁ Θεόφημός*
με ἀφῃρεῖτο. καὶ ἐγὼ τὴν μὲν ἄνθρωπον ἀφῆκα, εἰς δὲ
τὴν οἰκίαν εἰσῄειν, ἵνα ἐνέχυρόν τι λάβοιμι τῶν σκευῶν·
ἔτυχε γὰρ ἡ θύρα ἀνεῳγμένη, ὡς ἦλθεν ὁ Θεόφημος, καὶ
ἔτι ἤμελλεν εἰσιέναι· καὶ ἐπεπύσμην αὐτὸν ὅτι οὐκ εἴη

γεγαμηκώς. εἰσιόντος δέ μου παίει πὺξ ὁ Θεόφημος τὸ
στόμα, καὶ ἐγὼ ἐπιμαρτυράμενος τοὺς παρόντας ἠμυνά-
μην. ὡς οὖν ἀληθῆ λέγω καὶ ἦρξε χειρῶν ἀδίκων ὁ Θεό- 39
φημος, οὐκ ἄλλοθεν δεῖν οἶμαι τὸν ἔλεγχον γίγνεσθαι ἢ
ἐκ τῆς ἀνθρώπου, ἣν μεμαρτυρήκασιν οἱ μάρτυρες ὡς
ἤθελε Θεόφημος παραδιδόναι. ‖ ταύτῃ δὲ τῇ μαρτυρίᾳ
πρότερος εἰσελθὼν εἰς τὸ δικαστήριον, οὐ παραγραφομέ-
νου ἐμοῦ οὐδ' ὑπομνυμένου διὰ τὸ καὶ πρότερόν ποτε ἐφ'
ἑτέρας δίκης ταῦτά με βλάψαι, ἐξηπάτησε τοὺς δικαστὰς
λέγων, οὓς μὲν ἐγὼ παρειχόμην μάρτυρας, τὰ ψευδῆ μαρ-
τυρεῖν, τὴν δὲ ἄνθρωπον ἐρεῖν τὰς ἀληθείας βασανιζομέ-
νην. οἷς δὲ τότε κατεχρῶντο λόγοις, νῦν αὐτοῖς ἐξελέγχον- 40
ται ὑπεναντία ποιοῦντες· τὴν γὰρ ἄνθρωπον οὐ δύναμαι
παραλαβεῖν πολλάκις ἐξαιτήσας, ὡς μεμαρτύρηται ὑμῖν.
ἐπειδὴ τοίνυν τὴν ἄνθρωπον οὐ παραδιδόασιν ἣν αὐτοὶ
ἔφασαν προκαλέσασθαι, βούλομαι ὑμῖν καὶ τοὺς μάρτυρας
παρασχέσθαι οἳ εἶδόν με πρότερον πληγέντα ὑπὸ τοῦ
Θεοφήμου. ἡ δ' αἰκία τοῦτ' ἐστίν, ὃς ἂν ἄρξῃ χειρῶν ἀδί-
κων πρότερος, ἄλλως τε καὶ κατὰ τὸν νόμον καὶ κατὰ τὰ
ψηφίσματα τὰ ὑμέτερα εἰσπράττοντα. καί μοι ἀνάγνωθι
τὰ ψηφίσματα καὶ τὴν μαρτυρίαν.

ΨΗΦΙΣΜΑΤΑ. ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Ἐπειδὴ τοίνυν ἀφῃρέθην τὰ ἐνέχυρα ὑπὸ τοῦ Θεοφή- 41
μου καὶ συνεκόπην, ἐλθὼν εἰς τὴν βουλὴν τάς τε πληγὰς
ἔδειξα καὶ ἃ πεπονθὼς ἦν εἶπα, καὶ ὅτι εἰσπράττων τῇ
πόλει τὰ σκεύη. ἀγανακτήσασα δ' ἡ βουλὴ ἐφ' οἷς ἐγὼ
ἐπεπόνθειν, καὶ ἰδοῦσά με ὡς διεκείμην, καὶ ἡγησαμένη
ὑβρίσθαι οὐκ ἐμὲ ἀλλ' ἑαυτὴν καὶ τὸν δῆμον τὸν ψηφισά-
μενον καὶ τὸν νόμον τὸν ἀναγκάσαντα εἰσπράττειν τὰ
σκεύη, ἐκέλευεν εἰσαγγέλλειν με, καὶ τοὺς πρυτάνεις προ- 42
γράφειν αὐτῷ τὴν κρίσιν ἐπὶ δύο ἡμέρας ὡς ἀδικοῦντι
καὶ ‖ διακωλύοντι τὸν ἀπόστολον, διότι τὰ σκεύη οὐκ ἀπε-
δίδου καὶ τὰ ἐνέχυρα ἀφείλετο καὶ ἐμὲ συνέκοψε τὸν εἰσ-
πράττοντα καὶ ὑπηρετοῦντα τῇ πόλει. γενομένης τοίνυν
τῆς κρίσεως τῷ Θεοφήμῳ ἐν τῇ βουλῇ κατὰ τὴν εἰσαγγε-
λίαν ἣν ἐγὼ εἰσήγγειλα, καὶ ἀποδοθέντος λόγου ἑκατέρῳ,
καὶ κρύβδην διαψηφισαμένων τῶν βουλευτῶν, ἑάλω ἐν τῷ

43 βουλευτηρίῳ καὶ ἔδοξεν ἀδικεῖν. καὶ ἐπειδὴ ἐν τῷ δια-
χειροτονεῖν ἦν ἡ βουλὴ πότερα δικαστηρίῳ παραδοίη ἢ
ζημιώσειε ταῖς πεντακοσίαις, ὅσου ἦν κυρία κατὰ τὸν νό-
μον, δεομένων τούτων ἁπάντων καὶ ἱκετευόντων καὶ τίνα
οὐ προσπεμπόντων, καὶ τὸ διάγραμμα τῶν σκευῶν ἀπο-
διδόντων εὐθὺς ἐν τῇ βουλῇ, καὶ περὶ τῶν πληγῶν φα-
σκόντων ἐπιτρέψειν ᾧ ἂν κελεύσω Ἀθηναίων, συνεχώρησα
ὥστε τῷ Θεοφήμῳ πέντε καὶ εἴκοσι δραχμῶν προστιμη-
44 θῆναι. καὶ ταῦτα ὡς ἀληθῆ λέγω, ὑμῶν τε δέομαι ὅσοι
ἐβούλευον ἐπ' Ἀγαθοκλέους ἄρχοντος φράζειν τοῖς παρα-
καθημένοις, καὶ ὅσους ἠδυνάμην ἐγὼ ἐξευρεῖν τῶν τότε
βουλευόντων, μάρτυρας ὑμῖν παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἐγὼ μὲν τοίνυν οὕτως ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐπιεικὴς ἐγε-
νόμην πρὸς τούτους. καίτοι τό γε ψήφισμα δημοσίαν
τὴν οὐσίαν ἐκέλευεν εἶναι οὐ μόνον ὃς ἂν ἔχων σκεύη μὴ
ἀποδιδῷ τῇ πόλει, ἀλλὰ καὶ ὃς ἂν ἰδίᾳ κτησάμενος μὴ
πωλῇ· τοιαύτη γὰρ ἡ ἀπορία οὖσα συνέβαινε τότε ἐν τῇ
πόλει σκευῶν. καί μοι ἀνάγνωθι τὸ ψήφισμα.

ΨΗΦΙΣΜΑ.

45 Καταπλεύσας τοίνυν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὡς οὐδενὶ
ἤθελεν ἐπιτρέπειν ὁ Θεόφημος ‖ περὶ τῶν πληγῶν ὧν τότ'
ἔλαβον ὑπ' αὐτοῦ, προσεκαλεσάμην αὐτὸν καὶ ἔλαχον αὐτῷ
δίκην αἰκίας. ἀντιπροσκαλεσαμένου δὲ κἀκείνου ἐμὲ καὶ
διαιτητῶν ἐχόντων τὰς δίκας, ἐπειδὴ ἡ ἀπόφασις ἦν τῆς
δίκης, ὁ μὲν Θεόφημος παρεγράφετο καὶ ὑπώμνυτο, ἐγὼ
46 δὲ πιστεύων ἐμαυτῷ μηδὲν ἀδικεῖν εἰσῄειν εἰς ὑμᾶς. πα-
ρασχόμενος δὲ ἐκεῖνος ταύτην τὴν μαρτυρίαν, ἣν ἄλλος
μὲν οὐδεὶς μεμαρτύρηκεν ὁ δ' ἀδελφὸς καὶ ὁ κηδεστής,
ὡς ἐθέλοι τὴν ἄνθρωπον παραδοῦναι, καὶ προσποιούμε-
νος ἄκακος εἶναι, ἐξηπάτησε τοὺς δικαστάς. δέομαι δ'
ὑμῶν νυνὶ δικαίαν δέησιν, ἅμα μὲν δικάσαι περὶ τῆς
μαρτυρίας, πότερα ψευδής ἐστιν ἢ ἀληθής, ἅμα δὲ περὶ
47 τοῦ πράγματος ἐξ ἀρχῆς σκέψασθαι. ἐγὼ μὲν τοίνυν, εἰς
ἃ οὗτος κατέφυγε τότε δίκαια, ἐκ τούτων οἴομαι δεῖν τὸν
ἔλεγχον γενέσθαι, ἐκ τῆς ἀνθρώπου βασανιζομένης, ὁπό-
τερος ἦρξε χειρῶν ἀδίκων· τοῦτο γάρ ἐστιν ἡ αἰκία. καὶ

τοὺς μάρτυρας διὰ τοῦτο διώκω τῶν ψευδομαρτυριῶν, ὅτι ἐμαρτύρησαν ἐθέλειν παραδιδόναι τὸν Θεόφημον τὴν ἄνθρωπον, οὐδαμοῦ τὸ σῶμα παραδιδόντος οὔτε πρὸς τῷ διαιτητῇ οὔτε ὕστερον, πολλάκις ἐμοῦ ἐξαιτήσαντος. δι- 48
πλῆν οὖν αὐτοὺς δεῖ δοῦναι δίκην, ὅτι τε ἐξηπάτησαν τοὺς δικαστὰς ψευδεῖς μαρτυρίας παρασχόμενοι, κηδεστοῦ καὶ ἀδελφοῦ, καὶ ὅτι ἐμὲ ἠδίκησαν, λειτουργοῦντα μὲν ὑμῖν προθύμως, ποιοῦντα δὲ τὰ προσταττόμενα, ὑπηρετοῦντα δὲ τοῖς νόμοις καὶ τοῖς ψηφίσμασι τοῖς ὑμετέροις. ὡς δὲ οὐκ ἐγὼ μόνος παρέλαβον παρὰ τῆς ἀρχῆς τοῦτον εἰσπράξασθαι σκεύη ὀφείλοντα ‖ τῇ πόλει, ἀλλὰ καὶ ἄλλοι τῶν τριηράρχων ἑτέρους εἰσεπράξαντο οὓς παρέλαβον, ἀνάγνωθί μοι αὐτῶν τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Βούλομαι τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ ἃ πέπονθα 49
ὑπ᾽ αὐτῶν διηγήσασθαι ὑμῖν. ἐπειδὴ γὰρ ὦφλον αὐτοῖς τὴν δίκην ἐφ᾽ ᾗ τοὺς μάρτυρας τούτους διώκω τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκότας, προσελθὼν τῷ Θεοφήμῳ μελλούσης μοι ἤδη ἐξήκειν τῆς ὑπερημερίας ἐδεήθην αὐτοῦ ἐπισχεῖν μοι ὀλίγον χρόνον, λέγων τὰς ἀληθείας, ὅτι πεπορισμένου τοῦ ἀργυρίου ὃ ἤμελλον αὐτῷ ἐκτίνειν συμβέβηκέ μοι τριηραρχία, καὶ ἀποστέλλειν διὰ τάχους δεῖ τὴν τριήρη, καὶ 50
ὁ στρατηγὸς Ἀλκίμαχος αὐτῷ παρασκευάζειν κελεύοι ταύτην τὴν ναῦν· τὸ οὖν ἀργύριον τὸ πεπορισμένον τῷ Θεοφήμῳ ἀποδοῦναι ἐνταῦθα κατεχρησάμην. ἐδεόμην δ᾽ αὐτοῦ ἀναβαλέσθαι τὴν ὑπερημερίαν, ἕως ἂν τὴν ναῦν ἀποστείλω. ὁ δὲ ῥᾳδίως μοι καὶ ἀκάκως ἀποκρίνεται· οὐδὲν κωλύει, ἔφη· ἀλλ᾽ ἐπειδὰν τὴν ναῦν ἀποστείλῃς, πόριζε καὶ ἐμοί. ἀποκριναμένου δέ μοι ταῦτα τοῦ Θεοφήμου καὶ 51
ἀναβαλομένου τὴν ὑπερημερίαν, καὶ μάλιστά μου πιστεύσαντος τῇ τε ἐπισκήψει τῶν ψευδομαρτυριῶν καὶ τῷ μὴ ἐθέλειν αὐτὸν παραδοῦναι τὴν ἄνθρωπον, ὡς οὐδὲν ἂν νεωτερίσαντος περὶ τἀμά, ἐγὼ μὲν τὴν τριήρη ἀποστείλας, οὐ πολλαῖς ἡμέραις ὕστερον πορίσας τὸ ἀργύριον, προσελθὼν αὐτῷ ἐκέλευον ἐπὶ τὴν τράπεζαν ἀκολουθοῦντα κομίζεσθαι τὴν καταδίκην. ὡς δὲ ταῦτ᾽ ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

‖ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

52 *Ὁ δὲ Θεόφημος ἀντὶ τοῦ τὴν καταδίκην ἀπολαβεῖν ἀκο-*
λουθήσας ἐπὶ τὴν τράπεζαν, ἐλθών μου τὰ πρόβατα λαμ-
βάνει ποιμαινόμενα πεντήκοντα μαλακὰ καὶ τὸν ποιμένα
μετ' αὐτῶν καὶ πάντα τὰ ἀκόλουθα τῇ ποίμνῃ, ἔπειτα
παῖδα διάκονον ὑδρίαν χαλκῆν ἀποφέροντα ἀλλοτρίαν ᾐτη-
μένην, πολλοῦ ἀξίαν. καὶ ταῦτα ἔχουσιν οὐκ ἐξήρκεσεν
53 *αὐτοῖς, ἀλλ' ἐπεισελθόντες εἰς τὸ χωρίον (γεωργῶ δὲ πρὸς*
τῷ ἱπποδρόμῳ, καὶ οἰκῶ ἐνταῦθ' ἐκ μειρακίου) πρῶτον
μὲν ἐπὶ τοὺς οἰκέτας ᾖξαν, ὡς δὲ οὗτοι διαφεύγουσιν αὐ-
τοὺς καὶ ἄλλος ἄλλῃ ἀπεχώρησαν, ἐλθόντες πρὸς τὴν
οἰκίαν καὶ καταβαλόντες τὴν θύραν τὴν εἰς τὸν κῆπον
φέρουσαν Εὔεργός τε οὑτοσὶ ὁ ἀδελφὸς ὁ Θεοφήμου καὶ
Μνησίβουλος ὁ κηδεστὴς αὐτοῦ, οἷς οὐδεμίαν δίκην ὠφλή-
κειν οὐδὲ προσῆκεν αὐτοῖς ἅπτεσθαι τῶν ἐμῶν οὐδενός,
εἰσελθόντες ἐπὶ τὴν γυναῖκά μου καὶ τὰ παιδία ἐξεφορή-
54 *σαντο ὅσα ἔτι ὑπόλοιπά μοι ἦν σκεύη ἐν τῇ οἰκίᾳ. ᾤοντο*
μὲν γὰρ οὐ τοσαῦτα μόνον λήψεσθαι, ἀλλὰ πολλῷ πλείω
τὴν παροῦσάν μοι τότε κατασκευὴν τῆς οἰκίας καταλήψε-
σθαι· ἀλλ' ὑπὸ τῶν λειτουργιῶν καὶ τῶν εἰσφορῶν καὶ
τῆς πρὸς ὑμᾶς φιλοτιμίας τὰ μὲν ἐνέχυρα κεῖται αὐτῶν
τὰ δὲ πέπραται. ὅσα δ' ἦν ἔτι ὑπόλοιπα, πάντα λαβόν-
55 *τες ᾤχοντο. πρὸς δὲ τούτοις, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἔτυχεν*
ἡ γυνή μου μετὰ τῶν παιδίων ἀριστῶσα ἐν τῇ αὐλῇ, καὶ
μετ' αὐτῆς τίτθη τις ἐμὴ γενομένη πρεσβυτέρα, ἄνθρω-
πος εὔνους καὶ πιστὴ καὶ ἀφειμένη ἐλευθέρα ὑπὸ τοῦ
πατρὸς τοῦ ἐμοῦ. ‖ συνῴκησε δὲ ἀνδρί, ἐπειδὴ ἀφείθη
ἐλευθέρα· ὡς δὲ οὗτος ἀπέθανε καὶ αὐτὴ γραῦς ἦν καὶ
56 *οὐκ ἦν αὐτὴν ὁ θρέψων, ἐπανῆκεν ὡς ἐμέ. ἀναγκαῖον*
οὖν ἦν μὴ περιιδεῖν ἐνδεεῖς ὄντας μήτε τίτθην ἐμὴν γενο-
μένην μήτε παιδαγωγόν· ἅμα δὲ καὶ τριηραρχῶν ἐξέπλεον,
ὥστε καὶ τῇ γυναικὶ βουλομένῃ ἦν τοιαύτην οἰκουρὸν μετ'
αὐτῆς με καταλιπεῖν. ἀριστώντων δὲ ἐν τῇ αὐλῇ, ὡς
ἐπεισπηδῶσιν οὗτοι καὶ καταλαμβάνουσιν αὐτὰς καὶ ἥρ-
παζον τὰ σκεύη, αἱ μὲν ἄλλαι θεράπαιναι (ἐν τῷ πύργῳ
γὰρ ἦσαν, οὗπερ διαιτῶνται) ὡς ἤκουσαν κραυγῆς, κλεί-
ουσι τὸν πύργον, καὶ ἐνταῦθα μὲν οὐκ εἰσῆλθον, τὰ δ' ἐκ

τῆς ἄλλης οἰκίας ἐξέφερον σκεύη, ἀπαγορευούσης τῆς γυ- 57
ναικὸς μὴ ἅπτεσθαι αὐτοῖς, καὶ λεγούσης ὅτι αὐτῆς εἴη ἐν τῇ προικὶ τετιμημένα καὶ ὅτι τὰ πρόβατα ἔχετε πεντήκοντα καὶ τὸν παῖδα καὶ τὸν ποιμένα, πλείονος ἄξια ἢ κατεδικάσασθε· ἀπήγγειλε γάρ τις αὐταῖς τῶν γειτόνων κόψας τὴν θύραν. ἔτι δὲ ἔφη τὸ ἀργύριον αὐτοῖς κείμενον εἶναι ἐπὶ τῇ τραπέζῃ· ἠκηκόει γὰρ ἐμοῦ· κἂν περιμείνητε, ἔφη, ἢ μετέλθῃ τις ὑμῶν αὐτόν, ἔχοντες ἄπιτε τὸ ἀργύριον ἤδη· τὰ δὲ σκεύη ἐᾶτε, καὶ μηδὲν τῶν ἐμῶν φέρετε, ἄλλως τε καὶ ἔχοντες ἄξια τῆς καταδίκης. ταῦτα δὲ λεγού- 58
σης τῆς γυναικὸς οὐχ ὅπως ἐπέσχον, ἀλλὰ καὶ τῆς τίτθης τὸ κυμβίον λαβούσης παρακείμενον αὐτῇ, ἐξ οὗ ἔπινε, καὶ ἐνθεμένης εἰς τὸν κόλπον, ἵνα μὴ οὗτοι λάβοιεν, ἐπειδὴ εἶδεν ἔνδον ὄντας αὐτούς, κατιδόντες αὐτὴν οὕτω διέθεσαν ἀφαιρούμενοι ‖ τὸ κυμβίον Θεόφημος καὶ Εὔεργος ἀδελφὸς αὐτοῦ οὑτοσί, ὥστε ὕφαιμοι μὲν οἱ βραχίονες 59
καὶ οἱ καρποὶ τῶν χειρῶν αὐτῆς ἐγένοντο ἀποστρεφομένης τὼ χεῖρε καὶ ἑλκομένης ὑπὸ τούτων ἀφαιρουμένων τὸ κυμβίον, ἀμυχὰς δ' ἐν τῷ τραχήλῳ εἶχεν ἀγχομένη, πελιὸν δὲ τὸ στῆθος. εἰς τοῦτο δ' ἦλθον πονηρίας ὥστε, ἕως ἀφείλοντο τὸ κυμβίον ἐκ τοῦ κόλπου αὐτῆς, οὐκ ἐπαύσαντο ἄγχοντες καὶ τύπτοντες τὴν γραῦν. ἀκούοντες δὲ οἱ θε- 60
ράποντες τῶν γειτόνων τῆς κραυγῆς καὶ ὁρῶντες τὴν οἰκίαν πορθουμένην τὴν ἐμὴν οἳ μὲν ἀπὸ τῶν τεγῶν τῶν ἑαυτῶν ἐκαλίστρουν τοὺς παριόντας, οἳ δὲ καὶ εἰς τὴν ἑτέραν ὁδὸν ἐλθόντες καὶ ἰδόντες Ἁγνόφιλον παριόντα ἐκέλευσαν παραγενέσθαι. προσελθὼν δὲ ὁ Ἁγνόφιλος προσκληθεὶς ὑπὸ τοῦ θεράποντος τοῦ Ἀνθεμίωνος, ὅς ἐστί μοι γείτων, εἰς μὲν τὴν οἰκίαν οὐκ εἰσῆλθεν (οὐ γὰρ ἡγεῖτο δίκαιον εἶναι μὴ παρόντος γε τοῦ κυρίου), ἐν δὲ τῷ τοῦ Ἀνθεμίωνος χωρίῳ ὢν ἑώρα τά τε σκεύη ἐκφερόμενα καὶ Εὔεργον καὶ Θεόφημον ἐξιόντας ἐκ τῆς ἐμῆς οἰκίας. οὐ 61
μόνον τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ λαβόντες μου τὰ σκεύη ᾤχοντο, ἀλλὰ καὶ τὸν υἱὸν ἦγον ὡς οἰκέτην, ἕως τῶν γειτόνων ἀπαντήσας αὐτοῖς Ἑρμογένης εἶπεν ὅτι υἱός μου εἴη. ὡς δὲ ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, ἀναγνώσεται ὑμῖν τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

62 Ἐπειδὴ τοίνυν μοι ἀπηγγέλθη εἰς Πειραιᾶ τὰ γεγενη-
μένα ὑπὸ τῶν γειτόνων, ἐλθὼν εἰς ἀγρὸν τούτους μὲν
οὐκέτι καταλαμβάνω, ἰδὼν δὲ τὰ ἐκ τῆς οἰκίας ἐκπεφορη-
μένα καὶ τὴν γραῦν ὡς διέκειτο, καὶ ἀκούσας τῆς γυναικὸς
τὰ γενόμενα, ‖ προσελθὼν τῷ Θεοφήμῳ τῇ ὑστεραίᾳ ἕω-
θεν ἐν τῇ πόλει μάρτυρας ἔχων ἐκέλευον αὐτὸν πρῶτον
μὲν τὴν καταδίκην ἀπολαμβάνειν καὶ ἀκολουθεῖν ἐπὶ τὴν
τράπεζαν, ἔπειτα τὴν ἄνθρωπον θεραπεύειν ἣν συνέκοψαν,
63 καὶ ἰατρὸν εἰσάγειν ὃν αὐτοὶ βούλονται. ταῦτα δέ μου
λέγοντος καὶ διαμαρτυρομένου, κακά με πολλὰ εἰπόντες
ὁ μὲν Θεόφημος ἠκολούθει μόλις, διατριβὰς ἐμποιῶν καὶ
φάσκων βούλεσθαι καὶ αὐτός τινας παραλαβεῖν μάρτυρας
(ταῦτα δ' ἔλεγε τεχνάζων τοῦ χρόνον ἐγγενέσθαι), ὁ δ'
Εὔεργος οὑτοσὶ εὐθὺς ἐκ τῆς πόλεως μεθ' ἑτέρων ὁμοίων
αὑτῷ ἐλθὼν εἰς ἀγρὸν τὰ ὑπόλοιπα σκεύη, εἴ τι τῇ προ-
τεραίᾳ ἐν τῷ πύργῳ ἦν καὶ οὐκ ἔτυχεν ἔξω ὄντα, ἐπειδὴ
δ' ἐγὼ ἦλθον, διὰ τὴν χρείαν κατηνέχθη, ἐκβαλὼν τὴν
θύραν ἥνπερ καὶ τῇ προτεραίᾳ ἐξέβαλε κακῶς ἐνεστηκυῖαν,
ᾤχετό μου λαβὼν τὰ σκεύη· ᾧ οὔτε δίκην ὠφλήκειν, οὔτε
64 συμβόλαιον ἦν μοι πρὸς αὐτὸν οὐδέν. ἐκτίνοντος δέ μου
τῷ Θεοφήμῳ, ᾧ ὠφλήκειν τὴν δίκην, ἐπειδὴ ἐξέτινον πολ-
λῶν παρόντων μαρτύρων χιλίας μὲν καὶ ἑκατὸν δραχμὰς
<τὴν καταδίκην, ὀγδοήκοντα δὲ καὶ ἑκατὸν> καὶ τρεῖς καὶ
δύ' ὀβολὼ τὴν ἐπωβελίαν, τριάκοντα δὲ τὰ πρυτανεῖα (τῶν
γὰρ ἄλλων οὐδὲν αὐτῷ ἐπιτιμίων ὦφλον), λαβὼν τοίνυν
παρ' ἐμοῦ ἐπὶ τῇ τραπέζῃ χιλίας τριακοσίας δεκατρεῖς
δύ' ὀβολώ, τὸ σύμπαν κεφάλαιον, ἀπαιτοῦντος ἐμοῦ τά
τε πρόβατα καὶ τὰ ἀνδράποδα καὶ τὰ σκεύη ἃ ἡρπάκει
μου, οὐκ ἔφη ἀποδώσειν μοι, εἰ μή τις αὐτὸν ἀφήσει καὶ
τοὺς μετ' αὐτοῦ τῶν ἐγκλημάτων καὶ τοὺς μάρτυρας τῶν
65 ψευδομαρτυριῶν. ‖ ταῦτα δὲ ἀποκριναμένου αὐτοῦ μάρτυ-
ρας μὲν ἐποιησάμην τῆς ἀποκρίσεως τοὺς παρόντας, τὴν
δὲ δίκην ἐξέτισα, ὑπερήμερον δὲ οὐκ ᾤμην δεῖν ἐμαυτὸν
εἶναι. τὸν δ' Εὔεργον οὐδ' ᾔδειν εἰσεληλυθότα μου εἰς
τὴν οἰκίαν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ, ἀλλ' αὐτίκα ἡ δίκη ἐξετέτιστο
καὶ εἶχεν ὁ Θεόφημος τά τε πρόβατα καὶ τὰ ἀνδράποδα

καὶ τὰ σκεύη τὰ τῇ προτεραίᾳ περιγενόμενα, καὶ ἄγγελος ἦλθέ μοι λιθοκόπος τις, τὸ πλησίον μνῆμα ἐργαζόμενος, ὅτι πάλιν οἴχεται Εὔεργος τὰ ὑπόλοιπα σκεύη ἐκφορήσας ἐκ τῆς οἰκίας· πρὸς ὃν οὐδέν μοι πρᾶγμα ἦν. ὡς οὖν 66
ἀληθῆ λέγω, καὶ ὅτι τῇ μὲν προτεραίᾳ εἰλήφεσάν μου τὰ ἐνέχυρα, καὶ πάλιν αὐθημερὸν εἰσεληλύθεισαν εἰς τὴν οἰκίαν ἐκτίνοντος τὴν δίκην, τῇ δ' ὑστεραίᾳ ἐκομίσαντο τὸ ἀργύριον παρ' ἐμοῦ (καίτοι πῶς ἄν, εἰ μὴ πεπορισμένον τε ἦν καὶ ἐπηγγέλκειν αὐτοῖς, εὐθὺς ἂν ἀπέλαβον;) τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἐπειδὴ τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐπαγγείλαντός μου 67
αὐτῷ θεραπεύειν τὴν ἄνθρωπον ἣν συνέκοψαν καὶ ἰατρὸν εἰσάγειν οὐκ ἐφρόντιζεν, ἐγὼ αὐτὸς εἰσήγαγον ἰατρὸν ᾧ πολλὰ ἔτη ἐχρώμην, ὃς ἐθεράπευεν αὐτὴν ἀρρωστοῦσαν, καὶ ἐπέδειξα ὡς εἶχεν, εἰσαγαγὼν μάρτυρας. ἀκούσας δὲ τοῦ ἰατροῦ ὅτι οὐδὲν ἔτι εἴη ἡ ἄνθρωπος, πάλιν ἑτέρους μάρτυρας παραλαβὼν τήν τε ἄνθρωπον ἐπέδειξα ὡς εἶχε, καὶ ἐπήγγειλα τούτοις θεραπεύειν. ἕκτῃ τοίνυν ἡμέρᾳ ὕστερον ἢ οὗτοι εἰσῆλθον εἰς τὴν ‖ οἰκίαν ἐτελεύτησεν ἡ τίτθη. ὡς δὲ ἀληθῆ ταῦτα λέγω, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἐπειδὴ τοίνυν ἐτελεύτησεν, ἦλθον ὡς τοὺς ἐξηγητάς, 68
ἵνα εἰδείην ὅ τι με χρὴ ποιεῖν περὶ τούτων, καὶ διηγησάμην αὐτοῖς ἅπαντα τὰ γενόμενα, τήν τε ἄφιξιν τὴν τούτων καὶ τὴν εὔνοιαν τῆς ἀνθρώπου, καὶ ὡς εἶχον αὐτὴν ἐν τῇ οἰκίᾳ, καὶ ὡς διὰ τὸ κυμβίον, οὐκ ἀφεῖσα, τελευτήσειεν. ἀκούσαντες δέ μου οἱ ἐξηγηταὶ ταῦτα, ἤροντό με πότερον ἐξηγήσωνταί μοι μόνον ἢ καὶ συμβουλεύσωσιν.
ἀποκριναμένου δέ μου αὐτοῖς ἀμφότερα, εἶπόν μοι ὅτι 69
ἡμεῖς τοίνυν σοι τὰ μὲν νόμιμα ἐξηγησόμεθα, τὰ δὲ σύμφορα παραινέσομεν, πρῶτον μὲν ἐπενεγκεῖν δόρυ ἐπὶ τῇ ἐκφορᾷ καὶ προαγορεύειν ἐπὶ τῷ μνήματι, εἴ τις προσήκων ἐστὶ τῆς ἀνθρώπου, ἔπειτα τὸ μνῆμα φυλάττειν ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας. τὰ δὲ συμβουλευόμέν σοι, ἐπειδὴ αὐτὸς μὲν οὐ παρεγένου, ἡ δὲ γυνὴ καὶ τὰ παιδία, ἄλλοι δέ σοι

*μάρτυρες οὐκ εἰσίν, ὀνομαστὶ μὲν οὐδενὶ μὴ προαγορεύειν,
τοῖς δεδρακόσι δὲ καὶ κτείνασιν, εἶτα πρὸς τὸν βασιλέα
70 μὴ λαγχάνειν. οὐδὲ γὰρ ἐν τῷ νόμῳ ἔστι σοι· οὐ γάρ
ἐστιν ἐν γένει σοι ἡ ἄνθρωπος οὐδὲ θεράπαινα, ἐξ ὧν
σὺ λέγεις· οἱ δὲ νόμοι τούτων κελεύουσι τὴν δίωξιν εἶναι,
ὥστ᾽ εἰ διομεῖ ἐπὶ Παλλαδίῳ αὐτὸς καὶ ἡ γυνὴ καὶ τὰ
παιδία καὶ καταράσεσθε αὐτοῖς καὶ τῇ οἰκίᾳ, χείρων τε
δόξεις πολλοῖς εἶναι, κἂν μὲν ἀποφύγῃ σ᾽, ἐπιωρκηκέναι,
ἐὰν δὲ ἕλῃς, φθονήσει. ἀλλ᾽ ὑπὲρ σεαυτοῦ καὶ τῆς οἰκίας
ἀφοσιωσάμενος ὡς ‖ ῥᾷστα τὴν συμφορὰν φέρειν, ἄλλῃ δὲ
71 εἴ πῃ βούλει, τιμωροῦ. ταῦτα ἀκούσας ἐγὼ τῶν ἐξηγη-
τῶν, καὶ τοὺς νόμους ἐπισκεψάμενος τοὺς τοῦ Δράκοντος
ἐκ τῆς στήλης, ἐβουλευόμην μετὰ τῶν φίλων ὅ τι χρή με
ποιεῖν. συμβουλευόντων δέ μοι ταῦτα, ἃ μὲν ὑπὲρ τῆς
οἰκίας προσῆκέ μοι πρᾶξαι καὶ ἃ ἐξηγήσαντό μοι οἱ ἐξη-
γηταί, ἐποίησα, ἃ δ᾽ ἐκ τῶν νόμων οὐκέτι μοι προσῆκεν,
72 ἡσυχίαν εἶχον. κελεύει γὰρ ὁ νόμος ὦ ἄνδρες δικασταὶ
τοὺς προσήκοντας ἐπεξιέναι μέχρι ἀνεψιαδῶν· καὶ ἐν τῷ
ὅρκῳ διορίζεται ὅ τι προσήκων ἐστί, κἂν οἰκέτης ᾖ, τού-
των τὰς ἐπισκήψεις εἶναι. ἐμοὶ δὲ οὔτε γένει προσῆκεν
ἡ ἄνθρωπος οὐδέν, εἰ μὴ ὅσον τίτθη γενομένη, οὐδ᾽ αὖ
θεράπαινά γε· ἀφεῖτο γὰρ ὑπὸ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ
73 ἐλευθέρα καὶ χωρὶς ᾤκει καὶ ἄνδρα ἔσχεν. ψεύσασθαι δὲ
πρὸς ὑμᾶς καὶ διομόσασθαι αὐτὸς καὶ τὸν υἱὸν καὶ τὴν
γυναῖκα οὐκ ἂν ἐτόλμησα, οὐδ᾽ ἂν εἰ εὖ ᾔδειν ὅτι αἱρή-
σομαι αὐτούς· οὐ γὰρ οὕτω τούτους μισῶ ὡς ἐμαυτὸν
φιλῶ. ἵνα δὲ μὴ λόγῳ μόνον ἀκούσητέ μου, αὐτὸν ὑμῖν
τὸν νόμον ἀναγνώσομαι.*

ΝΟΜΟΣ.

74 *Πολλαχόθεν μὲν οὖν οἶμαι ὦ ἄνδρες δικασταὶ κατα-
φανῆ ὑμῖν τὴν μαρτυρίαν εἶναι ὡς ψευδής ἐστιν, οὐχ
ἥκιστα δ᾽ ἐκ τῶν πεπραγμένων αὐτοῖς ῥᾴδιον γνῶναι.
οὗτοι γὰρ ᾤοντο ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐμέ, εἰ πολλά μου
λάβοιεν ἐνέχυρα, ἄσμενον ἀφήσειν [με] τοὺς μάρτυρας
τῶν ψευδομαρτυριῶν, ὥστε ἀπολαβεῖν με τὰ ἐνέχυρα.
75 καὶ ἐπειδὴ ἐδεήθην αὐτοῦ ἀναβαλέσθαι μοι τὴν ὑπερη-
μερίαν, ἄσμενος ἤκουσεν, ἵνα ὑπερήμερος αὐτῷ ‖ γενοίμην*

καὶ ἐκφορήσαιτό μου ὡς πλεῖστα. καὶ διὰ τοῦτο ἀκάκως καὶ ταχύ μοι ὡμολόγησεν, ἵνα πιθανὸς γένηται καὶ μὴ καταφανὴς ἐπιβουλεύων, ἡγούμενος οὐκ εἶναι αὐτῷ δι' ἄλλου τρόπου τοὺς μάρτυρας ἀφεθῆναι τῶν ψευδομαρτυριῶν ἢ διὰ τοῦ ἐξαπατῆσαι καὶ λαβεῖν με ὑπερήμερον καὶ ἐκφορήσασθαι ὡς πλεῖστα· οὐ γὰρ ὅσα ἔχουσί μου, ᾤετο λήψεσθαι, ἀλλὰ πολλῷ πλείω. καὶ τὸν μὲν ἄλλον 76
χρόνον ἀνέμενεν ὡς οὐ διὰ ταχέων με ποριοῦντα αὐτῷ τὸ ἀργύριον, βουλόμενος ὑπ' αὐτοὺς τοὺς ἀγῶνας τῶν ψευδομαρτυριῶν τὴν ἐνεχυρασίαν μου ποιήσασθαι· ἐπειδὴ δὲ ἐπήγγειλα αὐτῷ κομίσασθαι τὴν δίκην, ἐλθών μου τά τε σκεύη καὶ τοὺς οἰκέτας καὶ τὰ πρόβατα ἔλαβεν ἀντὶ τοῦ ἀπολαβεῖν. γεωργῶ δὲ πρὸς τῷ ἱπποδρόμῳ, ὥστε οὐ πόρρω ἔδει αὐτὸν ἐλθεῖν. ὅτι δ' ἀληθῆ λέγω, μέγα 77
τεκμήριον ὑμῖν ἔστω· τῇ ὑστεραίᾳ γὰρ ἐκομίσατο τὸ ἀργύριον τῆς δίκης ἢ τὰ ἐνέχυρα ἔλαβεν. καίτοι πῶς ἄν, εἰ μὴ πεπορισμένος ἦν, εὐθὺς ἀπέλαβε τὸ ἀργύριον, χιλίας τριακοσίας δεκατρεῖς δύ' ὀβολώ; καὶ τὰ ἐνέχυρά μοι οὐκ ἀπεδίδου, ἀλλ' ἔτι καὶ νῦν ἔχει ὡς ὑπερημέρου ὄντος. ὅτι δ' οὐκ ἦν αὐτῷ ὑπερήμερος, ἀνάγνωθί μοι τὸν νόμον καὶ τὴν μαρτυρίαν, ὃς κελεύει κύρια εἶναι ὅ τι ἂν ἕτερος ἑτέρῳ ὁμολογήσῃ, ὥστε οὐκέτι ἦν αὐτῷ δή που ὑπερήμερος.

ΝΟΜΟΣ. ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Ὡς μὲν τοίνυν ὡμολόγησε καὶ ἀνεβάλετό μοι τὴν ὑπερ- 78
ημερίαν, μεμαρτύρηται ὑμῖν· ὡς δὲ ἐτριηράρχουν, ὁ συντριήραρχός μοι μεμαρτύρηκε, καὶ ὡς ἡ ναῦς ἡ ‖ στρατηγὶς κατεσκευάσθη Ἀλκιμάχῳ. ὥστ' οὐκ ἦν αὐτῷ δή που ὑπερήμερος ἀναβαλομένῳ μοι, ἔτι δὲ καὶ ἐκτίνων. ἀλλὰ δεινὴ ἡ πλεονεξία τοῦ τρόπου ὦ ἄνδρες δικασταὶ περὶ τὸ πλεῖον καὶ τὸ ἔλαττον. καὶ εὖ ᾔδεσαν ὅτι, εἰ μὲν τὴν ἄνθρωπον παραδώσουσιν, ἐξελεγχθήσονται ψευδῆ ἐγκαλέσαντες, εἰ δὲ μὴ παραδώσουσιν ἣν ἐμαρτύρησαν ὡς οὗτος ἤθελε παραδιδόναι, ψευδομαρτυριῶν ἁλώσονται. δέομαι δ' ὑμῶν, 79
ὦ ἄνδρες δικασταί, εἴ τις ἄρα τῶν τότε δικαζόντων τυγχάνει ὢν ἐν τῷ δικαστηρίῳ, τοῖς αὐτοῖς χρήσασθαι ἔθεσιν οἷσπερ καὶ τότε, καὶ εἰ μὲν ἡ μαρτυρία πιστὴ ὑμῖν

ἔδοξεν εἶναι καὶ ἐγὼ φεύγειν τὸν ἔλεγχον τὸν ἐκ τῆς ἀν-
θρώπου, νῦν ἐξελεγχομένων αὐτῶν ψευδῆ μεμαρτυρηκό-
των καὶ οὐ παραδιδόντων τὴν ἄνθρωπον βοηθῆσαί μοι,
εἰ δ' ἐμοὶ ὠργίσθητε ὅτι ἐνεχυράσων ἦλθον ἐπὶ τὴν οἰ-
κίαν τὴν τοῦ Θεοφήμου, καὶ τούτοις νῦν ὀργισθῆναι ὅτι
80 ἐπὶ τὴν ἐμὴν ἦλθον. καὶ ἐγὼ μὲν ὑπὸ νόμων καὶ ψηφι-
σμάτων ἀναγκαζόμενος πρόνοιαν ἐποιησάμην τοῦ μήτε
ἐπὶ τὸν πατέρα τὸν τούτου εἰσελθεῖν μήτε ἐπὶ τὴν μη-
τέρα, μήτε τῶν τοῦ ἀδελφοῦ λαβεῖν μηδέν, ἀλλ' οὗ αὐτὸς
ᾤκει ὁ Θεόφημος· καὶ ἐπειδὴ οὐ κατέλαβον αὐτὸν ἔνδον,
οὐχ ἁρπάσας ᾠχόμην οὐδέν, ἀλλὰ μετελθεῖν ἐκέλευσα
αὐτόν, καὶ παρόντος, οὐκ ἀπόντος τὴν ἐνεχυρασίαν ἐποιη-
σάμην, καὶ ἀφαιρούμενος ἀφῆκα, καὶ ἀνῆλθον ἐπὶ τὴν
βουλὴν τοὺς κυρίους, καὶ εἰσαγγείλας καὶ ἑλὼν ἐν τῇ
βουλῇ ἀποχρῆν ἡγησάμην τὰ μὲν σκεύη ἀπολαβεῖν ἁπλᾶ,
περὶ δὲ τῶν πληγῶν ἐπιτρέψαι, τῷ δὲ ‖ τιμήματι συγχω-
81 ρῆσαι. ὥστε ἐγὼ μὲν οὕτω πρᾶος περὶ τούτους ἦν, οὗτοι
δὲ οὕτως ἀσελγεῖς καὶ βδελυροὶ ὥστ' ἐπὶ τὴν γυναῖκα καὶ
τὰ παιδία ἐλθεῖν, ἔχοντες μὲν τὰ πρόβατα καὶ τοὺς οἰκέ-
τας, πλείονος ἄξια ἢ κατεδικάσαντο, ἀναβαλόμενοι δὲ τὴν
ὑπερημερίαν, ἐπαγγείλαντος δ' ἐμοῦ κομίζεσθαι αὐτοὺς
τὴν δίκην, ὡς μεμαρτύρηται ὑμῖν, καὶ εἰσελθόντες εἰς τὴν
οἰκίαν τά τε σκεύη ἐκφορῆσαι τήν τε τίτθην συγκόψαι,
γραῦν γυναῖκα, ἕνεκα κυμβίου, καὶ ταῦτα πάντα ἔτι ἔχειν
καὶ μὴ ἀποδιδόναι ἐκτετικότος ἐμοῦ τὴν δίκην, χιλίας
82 τριακοσίας δεκατρεῖς δύ' ὀβολώ. εἰ δέ τις ἀγνοήσας αὐ-
τοὺς τότε ἀκάκους ἡγήσατο καὶ ἀπράγμονας εἶναι, βού-
λομαι ὑμῖν περὶ αὐτῶν τὰς μαρτυρίας ἀναγνῶναι ἃς
μεμαρτυρήκασί μοι οἱ ὑπὸ τούτων ἠδικημένοι (λόγῳ μὲν
γὰρ διηγήσασθαι οὐκ ἂν ἱκανόν μοι γένοιτο τὸ ὕδωρ), ἵν'
ἐκ τούτων ἁπάντων σκεψάμενοι, τῶν τε λεχθέντων καὶ
τῶν μαρτυρουμένων, ὁσίαν καὶ δικαίαν ὑπὲρ ὑμῶν αὐτῶν
τιθῆσθε τὴν ψῆφον. λέγε τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

ΚΑΤΑ ΟΛΥΜΠΙΟΔΩΡΟΥ ΒΛΑΒΗΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ποικίλην ἔχει περιπέτειαν πραγμάτων ὁ λόγος. Κόνων γάρ τις ἀνὴρ Ἀθηναῖος ἄπαις τελευτᾷ, ὡς ἐπίδικον τοῖς οἰκείοις γενέσθαι τὸν κλῆρον. ‖ Καλλίστρατος μὲν οὖν ὁ τὸν λόγον τουτονὶ λέγων ὅλον τὸν κλῆρον τοῦτον ἑαυτῷ προσήκειν φησίν· ἐγγυτάτω γὰρ κατὰ γένος αὐτὸς εἶναι τῷ Κόνωνι. ἀλλὰ τοῦτο μὲν τάχ᾽ ἂν καὶ ψεύδοιτο καὶ λόγῳ καταχρῷτο ψιλῷ. Ὀλυμπιόδωρος δέ, πρὸς ὃν ἡ δίκη, καὶ αὐτὸς ἠμφισβήτησεν ἐξ ἀρχῆς τοῦ κλήρου. ἤστην δὲ οἰκείω ὅ τε Ὀλυμπιόδωρος καὶ ὁ Καλλίστρατος· ἀδελφὴν γὰρ Ὀλυμπιοδώρου Καλλίστρατος εἶχε γυναῖκα. ἔδοξεν οὖν αὐτοῖς μὴ διαφέρεσθαι πρὸς ἀλλήλους, ἀλλὰ νείμασθαι μὲν ἐξ ἴσης τὴν οὐσίαν τοῦ τελευτήσαντος, ὅση φανερά τε ἦν καὶ ὡμολογημένη, κοινῇ δὲ ζητεῖν τὰ ἀφανῆ καὶ κοινῇ πράττειν περὶ τούτων πάντα· προσεδόκων γὰρ ἥξειν τινὰς ἀμφισβητοῦντας αὐτοῖς τοῦ κλήρου. περὶ τούτου καὶ συνθήκας ἔγραψαν καὶ κατέθεντο παρ᾽ Ἀνδροκλείδῃ, φίλῳ τινὶ κοινῷ. οἰκέτης δὲ ἦν Κόνωνος Μοσχίων, πάνυ πιστὸς ἐκείνῳ νομισθείς. τοῦτον Ὀλυμπιόδωρος λαμβάνει, καὶ διαβληθέντα χιλίας ὑφῃρῆσθαι τοῦ Κόνωνος δραχμὰς βασανίζει μετὰ Καλλιστράτου, καὶ ὡς ὡμολόγησεν ὁ οἰκέτης τὸ ἀργύριον, νέμεται καὶ τοῦτο πρὸς τὸν Καλλίστρατον κατὰ τὰς συνθήκας ἐξ ἴσης. ὑπονοήσας δὲ καὶ πλείονας ἔχειν ἀργυρίου τὸν ἄνθρωπον, οὐκέτι παραλαβὼν τὸν Καλλίστρατον αὐτὸς βασανίζει, καὶ μνᾶς ἑβδομήκοντα λαμβάνει μόνος. περὶ δὲ τοῦτον τὸν καιρὸν ἀμφισβητοῦσι τοῦ κλήρου Κόνωνος καὶ ἄλλοι καὶ ὁ ἀδελφὸς ὁ Καλλιστράτου Κάλλιππος, ὁμοπάτριος ὤν. βουλευόμενοι κοινῇ περὶ τῶν ἀγώνων Ὀλυμπιόδωρος καὶ Καλλίστρατος συντίθενται, ὁ μὲν Ὀλυμπιόδωρος ἀμφισβητεῖν ὅλου τοῦ κλήρου, ὁ δὲ Καλλίστρατος τοῦ ἡμικληρίου. στρατευομένων δὲ Ἀθηναίων ‖ εἰς Ἀκαρνανίαν ᾤχετο καὶ Ὀλυμπιόδωρος· ἦν γὰρ τῶν ἐκ καταλόγου. τῆς δὲ κυρίας ἐνστάσης οἱ δικασταί, πρόφασιν τὴν στρατείαν εἶναι πεισθέντες, ἀνεῖλον αὐτῶν τὴν διαδικασίαν· διό φησι Καλλίστρατος καὶ αὐτὸς ἐκλιπεῖν τὴν τοῦ ἡμικληρίου δίκην, ταῖς συνθήκαις ἐμμένων, ἐπειδὴ κοινῇ πάντα πράττειν ἐκέλευον. ὡς δὲ ἐπανῆλθεν ἀπὸ τῆς στρατείας Ὀλυμπιόδωρος, παλινδικίᾳ χρῆται πρὸς τοὺς νενικηκότας καὶ αὐτὸς καὶ ὁ Καλλίστρατος, δεδωκότος τοῦτο τοῦ νόμου. καὶ ἀμφισβητοῦσι τοῦ κλήρου καθάπερ ἐξ ἀρχῆς, ὁ μὲν τοῦ ἡμίσεος ὁ δὲ καὶ τοῦ ὅλου. πρότερος δὲ λέγων Ὀλυμπιόδωρος νικᾷ τὸν κλῆρον. νικήσας δὲ καὶ λαβὼν ὅλον οὐκ ἐμμένει ταῖς συνθήκαις αἷς ἐξ ἀρχῆς ἐποιήσατο, οὐδὲ δίδωσι τὰ ἡμίση τῷ Καλλιστράτῳ. ὁ δὲ αὐτὸν ἀπαιτεῖ καὶ τῶν ἑβδομήκοντα μνῶν τῶν παρὰ τοῦ Μοσχίωνος τὸ ἥμισυ καὶ τῆς ὅλης οὐσίας, ταῖς συνθήκαις ἰσχυριζόμενος, καὶ λέγων καὶ ἐν τῇ τελευταίᾳ δίκῃ συναγωνίσασθαι τῷ Ὀλυμπιοδώρῳ, καὶ συγκεχωρηκέναι καὶ τοὺς λόγους εἰπεῖν οὓς ἐβούλετο καὶ μάρτυρας παρασχέσθαι ψευδεῖς, ὡς, εἰ μὴ κοινῇ καὶ συντεθειμένοι πρὸς ἀλλήλους ἠγωνίζοντο, ῥᾳδίως ἂν ἐξελέγξαι, καὶ οὐκ ἐᾶσαι τὸν Ὀλυμπιόδωρον νικῆσαι τὴν δίκην.*

‖ Ἀναγκαῖον ἴσως ἐστὶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τοὺς μὴ
εἰωθότας μηδὲ δυναμένους εἰσιέναι εἰς δικαστήριον, ἐπει-
δὰν ὑπό τινος ἀδικῶνται, ἄλλως τε καὶ ὑφ᾽ ὧν ἥκιστα
προσήκει ἀδικεῖσθαι, οἷον καὶ ἐμοὶ νυνὶ συμβαίνει. οὐ
βουλόμενος γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀγωνίζεσθαι πρὸς
Ὀλυμπιόδωρον οἰκεῖον ὄντα καὶ ἀδελφὴν τούτου ἔχων,
2 ἠνάγκασμαι διὰ τὸ μεγάλ᾽ ἀδικεῖσθαι ὑπὸ τούτου. εἰ
μὲν οὖν μὴ ἀδικούμενος ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀλλὰ ψεῦδός
τι ἐγκαλῶν Ὀλυμπιοδώρῳ τούτων τι ἐποίουν, ἢ τοῖς ἐπι-
τηδείοις τοῖς ἐμοῖς καὶ Ὀλυμπιοδώρου μὴ ἐθέλων ἐπιτρέ-
πειν, ἢ ἄλλου τινὸς τῶν δικαίων ἀφιστάμενος, εὖ ἴστε
ὅτι πάνυ ἂν ᾐσχυνόμην καὶ ἐνόμιζον ἂν ἐμαυτὸν φαῦλον
εἶναι ἄνθρωπον· νῦν δ᾽ οὔτε μικρὰ ἐλαττούμενος ὑπὸ
Ὀλυμπιοδώρου, οὔτε διαλλακτὴν οὐδένα φεύγων, οὔτε μὰ
τὸν Δία τὸν μέγιστον ἑκὼν ἀλλ᾽ ὡς οἷόν τε μάλιστα ἄκων,
ἠνάγκασμαι ὑπὸ τούτου ἀγωνίζεσθαι ταύτην τὴν δίκην.
3 δέομαι οὖν ὑμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀκούσαντας ἀμφοτέ-
ρων ἡμῶν καὶ αὐτοὺς δοκιμαστὰς τοῦ πράγματος γενομέ-
νους μάλιστα μὲν διαλλάξαντας ἀποπέμψαι καὶ εὐεργέτας
ἡμῶν ἀμφοτέρων ὑμᾶς γενέσθαι, ἐὰν δ᾽ ‖ ἄρα μὴ ἐπιτυγ-
χάνητε τούτου, ἐκ τῶν ὑπολοίπων τῷ τὰ δίκαια λέγοντι
τούτῳ τὴν ψῆφον ὑμᾶς προσθέσθαι. πρῶτον μὲν οὖν μαρ-
τυρίας ἀναγνώσεται ὅτι οὐκ ἐγὼ αἴτιός εἰμι τοῦ εἰς τὸ δι-
καστήριον εἰσιέναι, ἀλλ᾽ οὗτος αὐτός. λέγε τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

4 Ὅτι μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ μέτρια καὶ προσή-
κοντα προυκαλούμην Ὀλυμπιόδωρον, μεμαρτύρηται ὑπὸ
τῶν παραγενομένων· οὐκ ἐθέλοντος δὲ τούτου οὐδ᾽ ὁτιοῦν
ποιεῖν τῶν δικαίων ἀναγκαῖόν ἐστι πρὸς ὑμᾶς λέγειν περὶ
ὧν ἀδικοῦμαι ὑπὸ Ὀλυμπιοδώρου. ἔστι δὲ βραχὺς ὁ λό-
5 γος. ἦν γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ Κόνων Ἁλαιεύς, οἰκεῖος
ἡμέτερος. οὗτος ὁ Κόνων ἐτελεύτησεν ἄπαις ὀλίγον πάνυ
χρόνον ἀρρωστήσας, ἐβίω δὲ πολλὰ ἔτη, καὶ ἦν πρεσβύ-
τερος ὅτ᾽ ἐτελεύτα. καὶ ἐγὼ ἐπειδὴ ᾐσθόμην ὅτι οὐχ οἷός
τε ἔσται περιγενέσθαι, μετεπεμψάμην τουτονὶ Ὀλυμπιό-
δωρον, ὅπως ἂν παρῇ καὶ συνεπιμελῆται μεθ᾽ ἡμῶν ἁπάν-
των ὧν προσῆκεν. καὶ Ὀλυμπιόδωρος οὑτοσί, ὦ ἄνδρες

*δικασταί, ἐπειδὴ ἦλθεν ὡς ἐμὲ καὶ τὴν ἀδελφὴν τὴν ἑαυ-
τοῦ ἐμὴν δὲ γυναῖκα, μεθ' ἡμῶν ἅπαντα διῴκει. ὄντων δ' 6
ἡμῶν περὶ ταύτην τὴν πραγματείαν, ἐξαίφνης λόγον μοι
προσφέρει οὑτοσὶ ὅτι καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ προσήκουσα εἴη
τῷ Κόνωνι τῷ τετελευτηκότι, καὶ ὅτι δίκαιον εἴη καὶ αὐ-
τὸν τὸ μέρος λαβεῖν ἁπάντων ὧν ὁ Κόνων κατέλιπεν. καὶ
ἐγὼ ὦ ἄνδρες δικασταὶ συνειδὼς ὅτι ἐψεύδετο καὶ ἀναι-
σχυντεῖν ἐπεχείρει, καὶ ὅτι οὐδεὶς ἦν ἄλλος τῷ Κόνωνι
γένει ἐγγυτέρω ἐμοῦ, τὸ μὲν πρῶτον ὡς οἷόν τε μάλιστα
ὠργίσθην καὶ ἠγανάκτησα ἐπὶ τῇ ἀναισχυντίᾳ τοῦ λόγου,
‖ ἔπειτα δ' ἐλογισάμην πρὸς ἐμαυτὸν ὅτι οὐκ ἐν καιρῷ
ὀργιζοίμην, καὶ τούτῳ ἀπεκρινάμην ὅτι ἐν μὲν τῷ παρόντι
προσήκει θάπτειν τὸν τετελευτηκότα καὶ τἆλλα ποιεῖν τὰ
νομιζόμενα, ἐπειδὰν δὲ τούτων ἁπάντων ἐπιμεληθῶμεν,
τόθ' ἡμῖν αὐτοῖς διαλεξόμεθα. καὶ οὗτος ὦ ἄνδρες δι- 7
κασταὶ προσωμολόγησε ταῦτα καὶ καλῶς μ' ἔφη λέγειν.
ἐπειδὴ δ' ἀπηλλάγημεν καὶ ἐποιήσαμεν ἅπαντα τὰ νομι-
ζόμενα, καθ' ἡσυχίαν ἤδη παρακαλέσαντες τοὺς οἰκείους
ἅπαντας διελεγόμεθα ἡμῖν αὐτοῖς περὶ ὧν οὗτος ἠξίου
ἑαυτῷ εἶναι. ὅσα μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἡμεῖς πρὸς
ἡμᾶς αὐτοὺς διηνέχθημεν περὶ τούτων διαλεγόμενοι, τί
ἂν ἐγὼ ταῦτα διηγούμενος ἢ ὑμῖν πράγματα παρέχοιμι ἢ
ἐμαυτῷ ἐνοχλοίην; τὸ δὲ τέλος ὃ ἐγένετο, τοῦθ' ὑμᾶς 8
ἀναγκαίως ἔχει ἀκοῦσαι. αὐτὸς γὰρ ἐγὼ ἐδίκασα τούτῳ
καὶ οὗτος ἐμοὶ τὰ ἡμίσεα ἑκάτερον ἡμῶν λαβεῖν ὧν κατέ-
λιπε Κόνων, καὶ μηδεμίαν ἀηδίαν εἶναι περαιτέρω. καὶ
προειλόμην ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἑκὼν μεταδοῦναι τούτῳ
μᾶλλον ἢ εἰς δικαστήριον εἰσιὼν κινδυνεύειν πρὸς οἰκεῖον
ὄντα τοῦτον, καὶ εἰπεῖν τι ἀηδὲς ἀδελφὸν ὄντα τῆς ἐμῆς
γυναικὸς καὶ θεῖον τῶν ἐμῶν παίδων, καὶ ὑπὸ τούτου
ἀκοῦσαί τι ἀνεπιτήδειον. ταῦτα πάντ' ἐνθυμούμενος συνε- 9
χώρησ' αὐτῷ. καὶ μετὰ ταῦτα συνθήκας ἐγράψαμεν πρὸς
ἡμᾶς αὐτοὺς περὶ ἁπάντων, καὶ ὅρκους ἰσχυροὺς ὠμόσα-
μεν ἀλλήλοις, ἦ μὴν τά τε ὑπάρχοντα φανερὰ ὄντα καλῶς
καὶ δικαίως διαιρήσεσθαι, καὶ μηδ' ὁτιοῦν πλεονεκτήσειν
τὸν ἕτερον τοῦ ἑτέρου ὧν κατέλιπε Κόνων, καὶ τἆλλα πάντα
κοινῇ ζητήσειν, καὶ πράξειν ‖ μετ' ἀλλήλων βουλευόμενοι ὅ*

10 τι ἂν ἀεὶ δέῃ. ὑπενοοῦμεν γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἥξειν
τινὰς ἀμφισβητήσοντας τῶν τοῦ Κόνωνος καὶ ἑτέρους.
οἷον καὶ ὁ ἐμὸς ἀδελφὸς ὁμοπάτριος μὲν ὁμομήτριος δ'
οὔ, ὃς ἀπεδήμει, καὶ εἰ δή τις ἄλλος ἠβούλετ' ἀμφισβη-
τεῖν, οὐκ ἦν ἡμῖν κωλύειν· οἱ γὰρ νόμοι κελεύουσι τὸν
βουλόμενον ἀμφισβητεῖν. ταῦτα δὴ πάντα προνοούμενοι
ἐγράψαμεν τὰς συνθήκας καὶ ὅρκους ὠμόσαμεν, ὅπως
μήθ' ἑκόντι μήτε ἄκοντι μηδετέρῳ ἐξουσία ἡμῶν γένηται
μηδ' ὁτιοῦν ἰδίᾳ πρᾶξαι, ἀλλὰ κοινῇ βουλευόμενοι μεθ'
11 ἡμῶν αὐτῶν ἅπαντα πράττωμεν. καὶ μάρτυρας ἐποιη-
σάμεθα περὶ τούτων πρῶτον μὲν τοὺς θεοὺς οὓς ὠμό-
σαμεν ἀλλήλοις, καὶ τοὺς οἰκείους τοὺς ἡμετέρους αὐτῶν,
ἔπειτ' Ἀνδροκλείδην Ἀχαρνέα, παρ' ᾧ κατεθέμεθα τὰς
συνθήκας. βούλομαι οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τόν τε νόμον
ἀναγνῶναι καθ' ὃν τὰς συνθήκας ἐγράψαμεν πρὸς ἡμᾶς
αὐτούς, καὶ μαρτυρίαν τοῦ ἔχοντος τὰς συνθήκας. λέγε
τὸν νόμον πρῶτον.

ΝΟΜΟΣ.

Ἀναγίγνωσκε δὴ καὶ τὴν μαρτυρίαν τὴν Ἀνδροκλείδου.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

12 Ἐπειδὴ δ' ὠμόσαμεν ἀλλήλοις καὶ αἱ συνθῆκαι ἦσαν
κείμεναι παρὰ τῷ Ἀνδροκλείδῃ, διεῖλον ἐγὼ δύο μερίδας,
ὦ ἄνδρες δικασταί. καὶ ἡ μὲν ἑτέρα ἦν μερὶς ἡ οἰκία ἐν
ᾗ ᾤκει αὐτὸς ὁ Κόνων, καὶ τἀνδράποδα οἱ σακχυφάνται,
ἡ δ' ἑτέρα ἦν μερὶς οἰκία ἑτέρα καὶ τἀνδράποδα οἱ φαρ-
μακοτρίβαι. ἀργύριον δ' εἴ τι κατέλιπεν ὁ Κόνων ‖ φανερὸν
ἐπὶ τῇ τραπέζῃ τῇ Ἡρακλείδου, τοῦθ' ἅπαν σχεδόν τι ἀνη-
λώθη εἴς τε τὴν ταφὴν καὶ τἆλλα τὰ νομιζόμενα καὶ εἰς
13 τὴν οἰκοδομίαν τοῦ μνήματος. διελὼν δ' ἐγὼ τὰς δύο ταύ-
τας μερίδας ἔδωκα αἵρεσιν τούτῳ Ὀλυμπιοδώρῳ ὁποτέραν
βούλεται τῶν μερίδων λαβεῖν, καὶ οὗτος εἵλετο τοὺς φαρ-
μακοτρίβας καὶ τὴν οἰκίαν· ἐγὼ δ' ἔλαβον τοὺς σακχυφάν-
τας καὶ τὴν οἰκίαν τὴν ἑτέραν. καὶ ταῦτ' ἐστὶν ἃ ἑκάτερος
14 ἡμῶν εἶχεν. ἐν δὲ τῇ μερίδι τῇ τουτουὶ Ὀλυμπιοδώρου ἦν
εἷς τῶν φαρμακοτριβῶν, ὃν μάλιστ' ἐνόμιζε πιστὸν ἑαυτῷ
εἶναι ὁ Κόνων· ὄνομα δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐστὶ Μοσχίων.
οὗτος ὁ οἰκέτης σχεδόν τι ᾔδει τά τ' ἄλλα τοῦ Κόνωνος

ἅπαντα, καὶ δὴ καὶ τὸ ἀργύριον οὗ ἦν, τὸ ἔνδον κείμενον
τῷ Κόνωνι. καὶ δὴ καὶ ἔλαθε τὸν Κόνωνα, πρεσβύτερόν 15
τε ὄντα καὶ πεπιστευκότα αὐτῷ, ὑφαιρούμενος τὸ ἀργύ-
ριον οὗτος ὁ οἰκέτης ὁ Μοσχίων. καὶ πρῶτον μὲν ὑφαι-
ρεῖται αὐτοῦ χιλίας δραχμὰς χωρίς που κειμένας τοῦ
ἄλλου ἀργυρίου, ἔπειθ' ἑτέρας ἑβδομήκοντα μνᾶς. καὶ
ταῦτα ποιῶν ἐλάνθανε τὸν Κόνωνα. καὶ τὸ ἀργύριον τοῦθ'
ἅπαν εἶχεν αὐτὸς δι' ἑαυτοῦ ὁ ἄνθρωπος. οὐ πολλῷ δὲ 16
χρόνῳ ὕστερον ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἢ ἡμεῖς διειλόμεθα τὰς
μερίδας, ὑποψία τις ἐγένετο καὶ αἴσθησις περὶ τἀνθρώ-
που τούτου· ἐκ δὲ ταύτης τῆς ὑποψίας ἐδόκει ἐμοὶ καὶ
τούτῳ Ὀλυμπιοδώρῳ βασανίζειν τὸν ἄνθρωπον. καὶ ὁ
ἄνθρωπος ὦ ἄνδρες δικασταὶ αὐτὸς αὑτοῦ κατεῖπε, πρὶν
βασανίζεσθαι, ὅτι χιλίας δραχμὰς ὑφείλετο τοῦ Κόνωνος,
καὶ ἔφη ‖ εἶναι παρ' ἑαυτῷ ὅσον μὴ ἦν ἀνηλωμένον· περὶ
δὲ τοῦ πλείονος ἀργυρίου οὐδ' ὁτιοῦν εἶπεν ἐν τῷ τότε
χρόνῳ. καὶ ἀποδίδωσι περὶ ἑξακοσίας τινὰς δραχμάς. καὶ 17
τούτου τοῦ ἀργυρίου, οὗ ἀπέδωκεν ὁ ἄνθρωπος, καλῶς
καὶ δικαίως κατὰ τοὺς ὅρκους οὓς ὠμόσαμεν ἡμεῖς καὶ
κατὰ τὰς συνθήκας τὰς κειμένας παρὰ τῷ Ἀνδροκλείδῃ
τὸ μὲν ἥμισυ ἐγὼ ἔλαβον, τὸ δ' ἥμισυ οὑτοσὶ Ὀλυμπιό-
δωρος. μετὰ δὲ ταῦτ' οὐ πολλῷ χρόνῳ ὕστερον ἐκ ταύτης 18
τῆς ὑποψίας τῆς πρὸς τὸν οἰκέτην περὶ τοῦ ἀργυρίου οὗ
ἀπέδωκεν, ἔδησε τὸν ἄνθρωπον καὶ ἐβασάνισεν αὐτὸς ἐφ'
ἑαυτοῦ, ἡμᾶς δὲ οὐ παρεκάλεσεν, ὁμωμοκὼς κοινῇ ζητή-
σειν καὶ πράξειν μετ' ἐμοῦ πάντα. καὶ ὁ ἄνθρωπος ὦ
ἄνδρες δικασταὶ κατατεινόμενος ὑπὸ τῆς βασάνου προσω-
μολόγησε καὶ τὰς ἑβδομήκοντα μνᾶς εἰληφέναι ὑφελόμενος
Κόνωνος, καὶ ἀποδίδωσιν ἅπαν τὸ ἀργύριον τοῦτο Ὀλυμ-
πιοδώρῳ τούτῳ. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταί, ἐπειδὴ ἐπυ- 19
θόμην περὶ τῆς βασάνου τἀνθρώπου καὶ ὅτι ἀποδεδωκὼς
εἴη τὸ ἀργύριον, ἐνόμιζόν μοι ἀποδώσειν τοῦτον τὸ ἥμισυ
τοῦ ἀργυρίου, ὥσπερ καὶ τὸ πρότερον ἀπὸ τῶν χιλίων
δραχμῶν ἀπέδωκεν. καὶ εὐθὺς μὲν οὐ πάνυ τι ἠνώχλουν
τούτῳ, ἡγούμενος αὐτὸν τοῦτο γνώσεσθαι καὶ διοικήσειν
καὶ ἐμοὶ καὶ ἑαυτῷ, ὅπως ἑκάτερος ἡμῶν ἕξει τὰ δίκαια
κατὰ τοὺς ὅρκους καὶ τὰς συνθήκας τὰς πρὸς ἡμᾶς αὐτοὺς

περὶ τοῦ ἰσομοιρεῖν ἁπάντων ὧν Κόνων ἦν καταλελοιπώς·
20 ἐπειδὴ δ' ἐνδιέτριβε καὶ οὐδὲν ἐποίει, διελεγόμην τούτῳ
Ὀλυμπιοδώρῳ, καὶ ἠξίουν ‖ ἀπολαμβάνειν τὸ ἐμαυτοῦ μέ-
ρος τοῦ ἀργυρίου. οὑτοσὶ δ' Ὀλυμπιόδωρος ἀεί τι πρου-
φασίζετο καὶ ἀναβολὰς ἐποιεῖτο. καὶ ἐν τούτῳ τῷ καιρῷ
ἕτεροί τινες ἔλαχον τοῦ κλήρου τοῦ Κόνωνος, καὶ ὁ Κάλ-
λιππος ἐπεδήμησεν ἐκ τῆς ἀποδημίας, ὁ ἐμὸς ἀδελφὸς ὁ
21 ὁμοπάτριος· καὶ οὗτος ἔλαχεν εὐθὺς τοῦ ἡμικληρίου. καὶ
τούτῳ Ὀλυμπιοδώρῳ πρόφασις καὶ αὕτη ἐγένετο πρὸς τὸ
μὴ ἀποδιδόναι μοι τὸ ἀργύριον, ἐπειδὴ πολλοὶ ἦσαν οἱ
ἀμφισβητοῦντες, καὶ ἔφη χρῆναί με περιμεῖναι ἕως ἂν οἱ
22 ἀγῶνες γένωνται. καὶ ἐμοὶ ἀνάγκη ἦν ταῦτα συγχωρεῖν,
καὶ συνεχώρησα. μετὰ δὲ ταῦτα ἐβουλευόμεθα ἐγὼ καὶ
οὑτοσὶ Ὀλυμπιόδωρος κοινῇ, ὥσπερ καὶ ὠμόσαμεν, ὅντινα
τρόπον ἄριστα καὶ ἀσφαλέστατα προσοισόμεθα πρὸς τοὺς
ἀμφισβητοῦντας. καὶ ἔδοξεν ἡμῖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ του-
τονὶ μὲν Ὀλυμπιόδωρον τοῦ κλήρου ὅλου ἀμφισβητεῖν, ἐμὲ
δὲ τοῦ ἡμικληρίου, ἐπειδὴ καὶ Κάλλιππος ὁ ἀδελφὸς ὁ
23 ἐμὸς τοῦ ἡμικληρίου μόνον ἠμφισβήτει. καὶ ἐπειδὴ ἀνε-
κρίθησαν πρὸς τῷ ἄρχοντι ἅπασαι αἱ ἀμφισβητήσεις καὶ
ἔδει ἀγωνίζεσθαι ἐν τῷ δικαστηρίῳ, ἀπαράσκευοι ἦμεν
τὸ παράπαν πρὸς τὸ ἤδη ἀγωνίζεσθαι ἐγὼ καὶ Ὀλυμπιό-
δωρος. οὑτοσὶ διὰ τὸ ἐξαίφνης ἐπιπεπτωκέναι ἡμῖν πολ-
λοὺς τοὺς ἀμφισβητοῦντας. ἐκ δὲ τῶν ὑπαρχόντων ἐσκο-
ποῦμεν κοινῇ εἴ πως ἀναβολή τις γένοιτο ἐν τῷ παρόντι,
ὥστε παρασκευάσασθαι ἡμᾶς καθ' ἡσυχίαν πρὸς τὸν ἀγῶνα.
24 καὶ κατὰ τύχην τινὰ καὶ δαίμονα ὑμεῖς ἐπείσθητε ὑπὸ τῶν
ῥητόρων εἰς Ἀκαρνανίαν στρατιώτας ἐκπέμπειν, καὶ ἔδει
καὶ ‖ τουτονὶ Ὀλυμπιόδωρον στρατεύεσθαι, καὶ ᾤχετο μετὰ
τῶν ἄλλων στρατευόμενος· καὶ συνεβεβήκει, ὡς ᾠόμεθα
ἡμεῖς, αὕτη καλλίστη ἀναβολὴ δημοσίᾳ τούτου ἀποδη-
25 μοῦντος καὶ στρατευομένου. ἐπειδὴ δ' ἐκάλει ὁ ἄρχων εἰς
τὸ δικαστήριον ἅπαντας τοὺς ἀμφισβητοῦντας κατὰ τὸν
νόμον, ὑπωμοσάμεθα ἡμεῖς τουτονὶ Ὀλυμπιόδωρον δημο-
σίᾳ ἀπεῖναι στρατευόμενον. ὑπομοθέντος δὲ τούτου ἀνθ-
υπωμόσαντο οἱ ἀντίδικοι, καὶ διαβάλλοντες Ὀλυμπιόδω-
ρον τουτονί, ὕστεροι ἡμῶν λέγοντες, ἔπεισαν τοὺς δικαστὰς

ψηφίσασθαι τῆς δίκης ἕνεκ' ἀπεῖναι τουτονὶ καὶ οὐ δημο-
σίᾳ. ψηφισαμένων δὲ ταῦτα τῶν δικαστῶν διέγραψεν ὁ 26
ἄρχων Πυθόδοτος κατὰ τὸν νόμον τὴν τουτουὶ Ὀλυμπιο-
δώρου ἀμφισβήτησιν. διαγραφείσης δὲ ταύτης ἐξ ἀνάγκης
κἀμοὶ ἦν ἐκλιπεῖν τὴν τοῦ ἡμικληρίου ἀμφισβήτησιν. γενο-
μένων δὲ τούτων ἐπεδίκασεν ὁ ἄρχων τοῖς ἀντιδίκοις τοῖς
ἡμετέροις τὸν κλῆρον τὸν Κόνωνος· ταῦτα γὰρ οἱ νόμοι
αὐτὸν ἠνάγκαζον ποιεῖν. ἐπειδὴ δ' ἐπεδικάσαντο, εὐθὺς 27
εἰς Πειραιᾶ ἐλθόντες παρελάμβανον πάνθ' ὅσα ἡμῶν εἶχεν
ἑκάτερος νειμάμενος ἐν τῇ μερίδι. κἀγὼ μὲν ἐπιδημῶν
αὐτὸς παρέδωκα (ἀνάγκη γὰρ ἦν πείθεσθαι τοῖς νόμοις),
τὰ δ' Ὀλυμπιοδώρου ἀποδημοῦντος τούτου ἅπαντα ᾤχοντο
λαβόντες, πλὴν τοῦ ἀργυρίου οὗ εἶχεν αὐτὸς παρὰ τοῦ
ἀνθρώπου τοῦ οἰκέτου, ὃν ἐβασάνισεν· οὐ γὰρ εἶχον ὅπου
ἐπιλάβοιντο τοῦ ἀργυρίου. καὶ τὰ μὲν πραχθέντα ταῦτ' 28
ἦν ἐν τῇ ἀποδημίᾳ τῇ Ὀλυμπιοδώρου, καὶ τῆς κοινωνίας
τῆς πρὸς τοῦτον ταῦτ' ἐγὼ ἀπέλαυσα. || ἐπεὶ δ' ἐπεδήμησεν
οὗτος καὶ οἱ ἄλλοι στρατιῶται, ἠγανάκτει Ὀλυμπιόδωρος
οὑτοσὶ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐπὶ τοῖς συμβεβηκόσι, καὶ ἡγεῖτο
δεινὰ πεπονθέναι. ἐπειδὴ δὲ μεστὸς ἐγένετο ἀγανακτῶν,
ἐσκοποῦμεν πάλιν καὶ ἐβουλευόμεθα κοινῇ ἐγὼ καὶ Ὀλυμ-
πιόδωρος οὑτοσί, ὅντινα τρόπον τούτων τι πάλιν κομιού-
μεθα. καὶ ἐδόκει ἡμῖν βουλευομένοις προσκαλεῖσθαι τοὺς 29
ἐπιδεδικασμένους κατὰ τὸν νόμον, καὶ ἐκ τῶν ὑπαρχόντων
ἀσφαλέστατον εἶναι μὴ ἐν τῷ αὐτῷ ἡμᾶς ἀμφοτέρους τὸν
κίνδυνον ποιεῖσθαι πρὸς τοὺς ἀμφισβητοῦντας, ἀλλὰ χω-
ρὶς ἑκάτερον, καὶ τοῦτον μὲν Ὀλυμπιόδωρον ὅλου τοῦ κλή-
ρου λαχεῖν, ὥσπερ τὸ πρότερον, καὶ ἀγωνίζεσθαι καθ'
αὑτόν, ἐμὲ δὲ τοῦ ἡμικληρίου, ἐπειδὴ καὶ Κάλλιππος ὁ
ἀδελφὸς ὁ ἐμὸς τοῦ ἡμικληρίου μόνον ἠμφισβήτει, ὅπως,
ἐὰν μὲν Ὀλυμπιόδωρος οὑτοσὶ ἐπιτύχῃ τοῦ ἀγῶνος, ἐγὼ 30
κατὰ τὰς συνθήκας καὶ τοὺς ὅρκους πάλιν τὸ μέρος λά-
βοιμι παρὰ τούτου, ἐὰν δ' ἄρ' ἀποτύχῃ καὶ τὰ ἕτερα ψη-
φίσωνται οἱ δικασταί, οὗτος παρ' ἐμοῦ τὰ μέρη καλῶς καὶ
δικαίως ἀπολαμβάνοι, ὥσπερ ὠμόσαμεν ἀλλήλοις καὶ συνε-
θέμεθα. ἐπειδὴ δὲ ταῦτ' ἐβουλευσάμεθα καὶ ἐδόκει ἀσφα-
λέστατ' εἶναι καὶ ἐμοὶ καὶ Ὀλυμπιοδώρῳ, προσεκλήθησαν

ἅπαντες οἱ ἔχοντες τὰ τοῦ Κόνωνος κατὰ τὸν νόμον. καί
μοι ἀνάγνωθι τὸν νόμον καθ' ὃν ἡ πρόσκλησις ἐγένετο.

ΝΟΜΟΣ.

31 Κατὰ τὸν νόμον τοῦτον ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἡ πρόσκλη-
σις ἐγένετο, καὶ τὰς ἀμφισβητήσεις ἀντεγραψάμεθα ὃν
τρόπον τούτῳ ἐδόκει Ὀλυμπιοδώρῳ. καὶ μετὰ ταῦθ' ὁ ἄρ-
χων ἀνέκρινε πᾶσιν ἡμῖν τοῖς ἀμφισβητοῦσι, καὶ ἀνακρί-
νας εἰσήγαγεν εἰς τὸ δικαστήριον. καὶ οὑτοσὶ Ὀλυμπιό-
δωρος ἠγωνίζετο πρῶτος, καὶ ἔλεγεν ὅ τι ἠβούλετο, ‖ καὶ
μαρτυρίας παρείχετο ἃς ἐδόκει τούτῳ· κἀγὼ ὦ ἄνδρες δι-
κασταὶ σιωπῇ ἐκαθήμην ἐπὶ τοῦ ἑτέρου βήματος. τοῦτον
δὲ τὸν τρόπον κατασκευασθέντος τοῦ ἀγῶνος ἐνίκησεν οὑ-
32 τοσὶ ῥᾳδίως. νικήσας δὲ καὶ διαπραξάμενος ἅπανθ' ὅσα
ἠβουλήθημεν ἐν τῷ δικαστηρίῳ, καὶ ἀπολαβὼν παρὰ τῶν
πρότερον ἐπιδικασαμένων ὅσα ἦσαν ἐκεῖνοι παρ' ἡμῶν
εἰληφότες, ταῦτα δὴ πάντ' ἔχων καὶ τὸ ἀργύριον ὃ ἔλαβε
παρὰ τοῦ ἀνθρώπου τοῦ βασανισθέντος, οὐδ' ὁτιοῦν ἠθέ-
λησε τῶν δικαίων πρός με ποιῆσαι, ἀλλ' ἔχει αὐτὸς ἅπαν-
τα, ὀμωμοκὼς καὶ συνθήκας πρός με ποιησάμενος ἦ μὴν
ἰσομοιρήσειν. καὶ αἱ συνθῆκαι αὗται ἔτι καὶ νῦν κεῖνται
παρὰ τῷ Ἀνδροκλείδῃ, καὶ μεμαρτύρηκεν αὐτὸς πρὸς ὑμᾶς.
33 βούλομαι δὲ καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἁπάντων ὧν εἴρηκα μαρ-
τυρίας ὑμῖν παρασχέσθαι, πρώτιστον μὲν τὸ ἐξ ἀρχῆς
ὅτι ἐγὼ καὶ οὗτος ἡμῖν αὐτοῖς δικάσαντες ἐνειμάμεθα τὸ
ἴσον ἑκάτερος τῆς φανερᾶς οὐσίας ἧς Κόνων κατέλιπεν.
καί μοι λαβὲ ταύτην τὴν μαρτυρίαν πρῶτον, ἔπειτα τὰς
ἄλλας ἁπάσας ἀναγίγνωσκε.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

34 Λαβὲ δέ μοι καὶ τὴν πρόκλησιν, ἣν προεκαλεσάμην
αὐτὸν περὶ τοῦ ἀργυρίου οὗ ἔλαβε παρὰ τοῦ ἀνθρώπου
τοῦ βασανισθέντος.

ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ.

Ἀναγίγνωσκε δὴ καὶ τὴν ἑτέραν μαρτυρίαν, ὅτι, ἐπειδὴ
ἐπεδικάσαντο οἱ ἀντίδικοι ἡμῶν, ἅπαντα παρέλαβον ὅσα
ἡμεῖς εἴχομεν, πλὴν τῶν χρημάτων ‖ ὧν εἶχεν Ὀλυμπιό-
δωρος παρὰ τοῦ βασανισθέντος ἀνθρώπου.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

35 Ὃν μὲν τρόπον ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐξ ἀρχῆς διενειμά-

μεθα τὴν Κόνωνος οὐσίαν τὴν φανερὰν ἐγὼ καὶ Ὀλυμπιόδωρος, καὶ λόγῳ ἀκηκόατε καὶ μεμαρτύρηται ὑμῖν, καὶ ὡς οὗτος τὸ ἀργύριον ἔλαβε παρὰ τοῦ ἀνθρώπου τοῦ οἰκέτου, καὶ ὅτι οἱ ἐπιδικασάμενοι ἔλαβον ὅσα ἡμεῖς εἴχομεν, ἕως οὑτοσὶ πάλιν ἐνίκησεν ἐν τῷ δικαστηρίῳ. ἃ δὲ 36
λέγων οὐκ ἀποδίδωσί μοι οὐδ' ἐθέλει τῶν δικαίων οὐδ' ὁτιοῦν ποιεῖν, τούτοις ἤδη προσέχετε τὸν νοῦν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἵνα μὴ αὐτίκ' ἐξαπατήσωσιν ὑμᾶς οἱ ῥήτορες, οὓς οὑτοσὶ παρεσκεύασται ἐπ' ἐμέ. λέγει μὲν οὖν οὗτος οὐδέποτε ταὐτὰ ἀλλ' ὅ τι ἂν τύχῃ ἀεί, καὶ περιιὼν προφάσεις ἀτόπους τινὰς καὶ ὑπονοίας καὶ αἰτίας ψευδεῖς ἐπιφέρει, καὶ περὶ τὸ πρᾶγμ' ὅλον ἄδικός ἐστιν ἄνθρωπος. πλεῖστοι δ' αὐτοῦ ἀκηκόασι λέγοντος, οἱ μὲν ὅτι τὸ 37
παράπαν οὐκ ἔλαβε τὸ ἀργύριον παρὰ τἀνθρώπου. ἐπειδὰν δὲ τοῦτ' ἐξελέγχηται, πάλιν λέγει ὅτι παρὰ τοῦ ἑαυτοῦ ἀνθρώπου ἔχει τὸ ἀργύριον, καὶ οὐ μεταδώσει ἐμοὶ οὔτε τοῦ ἀργυρίου οὔτε τῶν ἄλλων οὐδενὸς ὧν κατέλιπε Κόνων. ἐπειδὰν δέ τις αὐτὸν τῶν ἐπιτηδείων τῶν τούτου 38
καὶ τῶν ἐμῶν ἐρωτᾷ διὰ τί οὐκ ἀποδώσει ὁμωμοκὼς ἰσομοιρήσειν καὶ τῶν συνθηκῶν ἔτι νυνὶ κειμένων, φησί με παραβεβηκέναι τὰς συνθήκας καὶ δεινὰ πεπονθέναι ὑπ' ἐμοῦ, καὶ διατελέσαι μέ φησιν ὑπεναντία καὶ λέγοντα καὶ πράττοντα ἑαυτῷ. καὶ ἃ μὲν προφασίζεται, ‖ ταῦτ' ἐστίν. ἃ μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὗτος λέγει, ὑπόνοιαι πλα- 39
σταί εἰσι καὶ προφάσεις ἄδικοι καὶ πονηρίαι ἐπὶ τῷ ἀποστερῆσαι ἃ προσήκει αὐτὸν ἀποδοῦναι ἐμοί· ἃ δ' ἐγὼ ἐρῶ πρὸς ὑμᾶς ὅτι οὗτος ψεύδεται, ταῦτα δὲ ὑπόνοια οὐδεμία ἔσται, φανερῶς δ' ἐπιδείξω τὴν τούτου ἀναισχυντίαν, τεκμήρια λέγων ἀληθινὰ καὶ πᾶσι γνώριμα, καὶ μάρτυρας παρεχόμενος περὶ ἁπάντων. πρῶτον μὲν οὖν, ὦ 40
ἄνδρες δικασταί, λέγω ὅτι οὗτος διὰ τοῦτο τοῖς οἰκείοις καὶ τοῖς ἐπιτηδείοις τοῖς ἑαυτοῦ καὶ τοῖς ἐμοῖς, τοῖς εἰδόσιν ἀκριβῶς ἅπαντα ταῦτα τὰ πράγματα ὡς ἔχει καὶ παρηκολουθηκόσιν ἐξ ἀρχῆς, οὐκ ἠθέλησεν ἐπιτρέψαι. ἀκριβῶς γὰρ ᾔδει ὅτι εὐθὺς παραχρῆμα ὑπ' αὐτῶν ἐξελεγχθήσεται, ἐάν τι ψεύδηται· νυνὶ δ' ἴσως ἡγεῖται ψευδόμενος ἐν ὑμῖν λήσειν. πάλιν λέγω ὅτι οὐκ ἀκόλουθόν 41

*ἐστιν ὑπεναντία μὲν πράττειν σοι ὦ Ὀλυμπιόδωρε ἐμέ,
κοινῇ δ᾽ ἀναλίσκειν μετὰ σοῦ εἰς ὅ τι ἂν ἀεὶ δέῃ, οὐδ᾽
ἐκλιπεῖν τὴν ἀμφισβήτησιν αὐτὸν ἑκόντα, ὅτε ἀπεδήμεις
σύ, ἐπειδὴ καὶ ἡ σὴ διεγράφη δόξαντός σου ἕνεκα τῆς
δίκης ἀπεῖναι καὶ οὐ δημοσίᾳ. ἐξῆν γάρ ἔμοιγε τοῦ ἡμι-
κληρίου ἐπιδικάσασθαι ἐμαυτῷ· οὐδεὶς γάρ μοι ἀνθρώ-
42 πων ἀντέλεγεν, ἀλλὰ συνεχώρουν αὐτοὶ οἱ ἀντίδικοι. ἀλλὰ
ταῦτα ποιήσας εὐθὺς ἂν ἦν ἐπιωρκηκώς· ὤμοσα γὰρ καὶ
συνεθέμην πρὸς σὲ κοινῇ πράξειν ἅπαντα ὅ τι ἂν δοκῇ
ἐμοὶ καὶ σοὶ βουλευομένοις βέλτιστον εἶναι. ὥστε ὑπερα-
βέλτεροί εἰσιν αἱ προφάσεις καὶ αἰτίαι δι᾽ ἃς οὐδέν μοι
43 φῂς ποιήσειν τῶν δικαίων. ‖ ἔτι πρὸς τούτοις ἡγῇ ἄν μ᾽
ἐπιτρέπειν σοι, Ὀλυμπιόδωρε, ἐν τῷ τελευταίῳ ἀγῶνι τῷ
περὶ τοῦ κλήρου, ἢ ἃ ἔλεγες πρὸς τοὺς δικαστάς, εἰκῇ
οὑτωσὶ λέγειν, ἢ περὶ ὧν τὰς μαρτυρίας παρέσχου, οὕτως
ἂν παρασχέσθαι, εἰ μὴ μετὰ σοῦ κοινῇ συνηγωνιζόμην;
οὗτος γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ τά τ᾽ ἄλλα ἔλεγεν ἃ ἐβού-
44 λετο ἐν τῷ δικαστηρίῳ, καὶ κατεχρήσατο πρὸς τοὺς δι-
καστὰς ὅτι ἐγὼ τὴν οἰκίαν, ἣν ἔλαβον ἐν τῇ μερίδι τῇ
ἐμαυτοῦ, μεμισθωμένος εἴην παρ᾽ αὐτοῦ, καὶ τὸ ἀργύριον
ὃ ἔλαβον, τὸ ἥμισυ ἀπὸ τῶν χιλίων δραχμῶν τῶν παρὰ
τοῦ οἰκέτου, ὅτι ἐδανεισάμην παρ᾽ αὐτοῦ. καὶ οὐ μόνον
ἔλεγε ταῦτα, ἀλλὰ καὶ μαρτυρίας παρείχετο περὶ τούτου.
κἀγὼ οὐδ᾽ ὁτιοῦν ἀντέλεγον τούτοις, οὐδ᾽ ἤκουσέ μου φω-
νὴν οὐδεὶς ἀνθρώπων, ὅτε οὗτος ἠγωνίζετο, οὔτε μικρὰν
οὔτε μεγάλην, ἀλλὰ προσωμολόγουν ἀληθῆ εἶναι πάνθ᾽
ὅσα οὗτος ἠβούλετο λέγειν. κοινῇ γὰρ ἠγωνιζόμην μετὰ
45 σοῦ, ὥσπερ ἔδοξεν ἐμοὶ καὶ σοί. ἐπεὶ εἰ μή ἐστι ταῦτ᾽
ἀληθῆ ἃ λέγω, διὰ τί οὐκ ἐπεσκηψάμην ἐγὼ τότε τοῖς
μάρτυσι τοῖς ταῦτα μαρτυροῦσιν, ἀλλ᾽ ἡσυχίαν εἶχον πολ-
λήν; ἢ διὰ τί σύ, Ὀλυμπιόδωρε, οὐδεπώποτέ μοι ἔλαχες
ἐνοικίου δίκην τῆς οἰκίας ἧς ἔφασκες μισθῶσαί μοι ὡς
σαυτοῦ οὖσαν, οὐδὲ τοῦ ἀργυρίου οὗ ἔλεγες πρὸς τοὺς
δικαστὰς ὅτι ἐδάνεισάς μοι; τούτων οὐδὲν ἐποίησας. ὥστε
πῶς ἂν μᾶλλον ἄνθρωπος ἐξελέγχοιτο ψευδόμενος καὶ
ὑπεναντία λέγων αὐτὸς αὑτῷ καὶ αἰτιώμενος τὰ οὐδεπώ-
46 ποτε γενόμενα; ὃ δὲ πάντων μέγιστόν ἐστιν, ὦ ἄνδρες*

‖ δικασταί, ᾧ καὶ γνώσεσθε τουτονὶ ὅτι ἄδικός ἐστι καὶ πλεονέκτης ἄνθρωπος· ἐχρῆν γὰρ αὐτόν, εἴ τι ἀληθὲς ἦν ὧν λέγει, πρότερον ταῦτα λέγειν καὶ ἐπιδεικνύειν, πρὶν τὸν ἀγῶνα γενέσθαι καὶ διαπειραθῆναι τῶν δικαστῶν ὅ τι γνώσονται, καὶ παραλαβόντα πολλοὺς μάρτυρας ἀξιοῦν ἀναιρεῖσθαι τὰς συνθήκας παρὰ τοῦ Ἀνδροκλείδου ὡς παραβαίνοντος ἐμοῦ καὶ τἀναντία πράττοντος ἑαυτῷ καὶ οὐκέτι κυρίων οὐσῶν τῶν συνθηκῶν ἐμοὶ καὶ τούτῳ, καὶ τῷ Ἀνδροκλείδῃ τῷ ἔχοντι τὰς συνθήκας διαμαρτύρασθαι ὅτι αὐτῷ οὐδέν ἐστιν ἔτι πρᾶγμα πρὸς τὰς συνθήκας ταύτας. ταῦτ᾽ ἐχρῆν αὐτόν, ὦ ἄνδρες δικασταί, εἴπερ τι ἦν 47 ἀληθὲς ὧν λέγει, καὶ μόνον προσιόντα τῷ Ἀνδροκλείδῃ διαμαρτύρεσθαι καὶ μετὰ μαρτύρων πολλῶν, ἵν᾽ αὐτῷ πολλοὶ ἦσαν οἱ συνειδότες. ὅτι δὲ τούτων οὐδὲν πώποτ᾽ ἐποίησεν, αὐτοῦ ὑμῖν τοῦ Ἀνδροκλείδου, παρ᾽ ᾧ εἰσὶν αἱ συνθῆκαι κείμεναι, μαρτυρίαν ἀναγνώσεται. λέγε τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Τὸ ἕτερον δ᾽ ὦ ἄνδρες δικασταὶ σκέψασθε, ὃ διαπέ- 48 πρακται. ἐγὼ γὰρ τοῦτον προυκαλεσάμην καὶ ἠξίωσα ἀκολουθῆσαι ὡς Ἀνδροκλείδην, παρ᾽ ᾧ κεῖνται αἱ συνθῆκαι, καὶ κοινῇ ἐκγραψαμένους ἡμᾶς τὰς συνθήκας πάλιν σημήνασθαι, τὰ δ᾽ ἀντίγραφα ἐμβαλέσθαι εἰς τὸν ἐχῖνον, ὅπως ἂν μηδεμία ὑποψία ᾖ, ἀλλ᾽ ὑμεῖς ἅπαντα καλῶς καὶ δικαίως ἀκούσαντες γνῶτε ὅ τι ἂν ὑμῖν δικαιότατον δοκῇ εἶναι. ταῦτα δ᾽ ἐμοῦ προκαλουμένου οὐκ ἠθέλησε τούτων 49 οὐδὲν ποιῆσαι, ἀλλ᾽ ‖ οὕτω πεφιλοσόφηκεν ὥστε μὴ εἶναι ὑμᾶς ἀκοῦσαι τῶν συνθηκῶν ἐκ τῶν κοινῶν γραμμάτων. καὶ ὅτι ταῦτα προυκαλούμην τοῦτον, μαρτυρίαν ὑμῖν ἀναγνώσεται ὧν ἐναντίον προυκαλούμην. λέγε τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Πῶς ἂν οὖν μᾶλλον καταφανὴς γένοιτο ἄνθρωπος, ὅτι 50 δικαίως μὲν οὐδὲν βούλεται πρός με πράττειν, ἀποστερήσειν δ᾽ οἴεται ἃ προσήκει ἐμοὶ λαβεῖν, προφάσεις λέγων καὶ ἐγκλήματα ἐγκαλῶν, τὰς δὲ συνθήκας, ἅς φησί με παραβεβηκέναι, οὐκ ᾠήθη δεῖν ὑμᾶς ἀκοῦσαι. ἐγὼ δὲ τότε μὲν ἐναντίον τῶν μαρτύρων τῶν παραγενομένων προυκαλεσάμην, νυνὶ δὲ καὶ ὑμῶν ἐναντίον τῶν δικαστῶν πάλιν

*προκαλοῦμαι, καὶ ἀξιῶ συγχωρεῖν αὐτὸν καὶ ἐγὼ συγχωρῶ
ἀνοιχθῆναι τὰς συνθήκας ἐνταυθὶ ἐπὶ τοῦ δικαστηρίου,
καὶ ἀκοῦσαι ὑμᾶς, καὶ πάλιν σημανθῆναι ἐναντίον ὑμῶν.
51 Ἀνδροκλείδης δ' οὑτοσὶ πάρεστιν· ἐγὼ γὰρ αὐτῷ ἐπήγγειλα
ἥκειν ἔχοντι τὰς συνθήκας. καὶ συγχωρῶ ὦ ἄνδρες δικα-
σταὶ ἐν τῷ τούτου λόγῳ ἢ ἐν τῷ προτέρῳ ἢ ἐν τῷ ὑστέρῳ
ἀνοιχθῆναι· οὐδὲν γάρ μοι διαφέρει. ὑμᾶς δὲ βούλομαι
ἀκοῦσαι τὰς συνθήκας καὶ τοὺς ὅρκους οὓς ὠμόσαμεν
ἀλλήλοις ἐγὼ καὶ Ὀλυμπιόδωρος οὑτοσί. καὶ εἰ μὲν συγ-
χωρεῖ, ἔστω ταῦτα, καὶ ὑμεῖς ἀκούετε, ἐπειδὰν τούτῳ
δοκῇ· ἐὰν δὲ μὴ ἐθέλῃ ταῦτα ποιεῖν, οὐκ ἤδη καταφανὴς
ἔσται ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι ἀναισχυντότατός ἐστιν ἀν-
θρώπων ἁπάντων, καὶ δικαίως οὐδ' ἂν ὁτιοῦν ἀνέχοισθε
τούτου ὡς ὑγιές τι λέγοντος;
52 Ἀλλὰ τί ταῦτα σπουδάζω; οὐδὲ γὰρ αὐτὸς ‖ ἀγνοεῖ
ταῦτα οὗτος, ὅτι ἀδικεῖ μὲν ἐμέ, ἀδικεῖ δὲ τοὺς θεοὺς
οὓς ὤμοσε, καὶ ἐπιορκεῖ. ἀλλὰ διέφθαρται ὦ ἄνδρες
δικασταὶ καὶ παραφρονεῖ. ἀνιῶμαι μὲν οὖν καὶ αἰσχύνο-
μαι ὦ ἄνδρες δικασταὶ οἷς μέλλω λέγειν πρὸς ὑμᾶς, ἐξ
ἀνάγκης δέ μοί ἐστιν εἰπεῖν, ὅπως ἂν ὑμεῖς οἱ τὴν ψῆ-
φον ἔχοντες ἀκούσαντες ἅπαντα βουλεύσησθε ὅ τι ἂν ὑμῖν
53 δοκῇ βέλτιστον εἶναι περὶ ἡμῶν. ὧν δὲ μέλλω λέγειν,
οὗτος αἴτιός ἐστιν οὐκ ἐθέλων ἐν τοῖς οἰκείοις περὶ τού-
των πρός με διαλύσασθαι, ἀλλ' ἀναισχυντῶν. Ὀλυμπιό-
δωρος γὰρ οὑτοσὶ ὦ ἄνδρες δικασταὶ γυναῖκα μὲν ἀστὴν
κατὰ τοὺς νόμους τοὺς ὑμετέρους οὐδεπώποτ' ἔγημεν,
οὐδ' εἰσὶν αὐτῷ παῖδες οὐδ' ἐγένοντο, ἑταίραν δὲ λυσάμε-
νος ἔνδον ἔχει, καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ λυμαινομένη ἅπαντας
54 ἡμᾶς καὶ ποιοῦσα τουτονὶ περαιτέρω μαίνεσθαι. πῶς
γὰρ οὐ μαίνεται ὅστις οἴεται δεῖν, ἃ μὲν ὡμολόγησε καὶ
συνέθετο ἑκὼν πρὸς ἑκόντα καὶ ὤμοσε, τούτων μὲν μηδ'
ὁτιοῦν ποιεῖν, καὶ ταῦτ' ἐμοῦ σπουδάζοντος οὐχ ὑπὲρ
ἐμαυτοῦ μόνον ἀλλὰ καὶ ὑπὲρ τῆς τούτου ἀδελφῆς ὁμο-
πατρίας καὶ ὁμομητρίας, ἣ ἐμοὶ συνοικεῖ, καὶ ὑπὲρ τῆς
τούτου ἀδελφιδῆς, θυγατρὸς δὲ ἐμῆς. αὗται γάρ εἰσιν αἱ
55 ἀδικούμεναι οὐχ ἧττον ἐμοῦ, ἀλλὰ καὶ μᾶλλον. πῶς γὰρ
οὐκ ἀδικοῦνται ἢ πῶς οὐ δεινὰ πάσχουσιν, ἐπειδὰν ὁρῶσι*

τὴν μὲν τούτου ἑταίραν περαιτέρω τοῦ καλῶς ἔχοντος καὶ χρυσία πολλὰ ἔχουσαν καὶ ἱμάτια καλά, καὶ ἐξόδους λαμπρὰς ἐξιοῦσαν, καὶ ὑβρίζουσαν ἐκ τῶν ἡμετέρων, αὗται δὲ καταδεεστέρως περὶ ταῦτ᾽ ἔχωσιν ἅπαντα. πῶς οὐκ ἐκεῖναι μᾶλλον ‖ ἔτι ἀδικοῦνται ἢ ἐγώ; οὗτος δὲ πῶς οὐ καταφανῶς μαίνεται καὶ παραφρονεῖ τοιαῦτα περὶ αὑτοῦ βουλευόμενος; ἵνα δὲ μὴ φάσκῃ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐπὶ διαβολῇ ταῦτα λέγειν με τοῦ ἀγῶνος ἕνεκα τουτουί, μαρτυρίαν ὑμῖν ἀναγνώσεται τῶν τούτου οἰκείων καὶ ἐμῶν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Ὀλυμπιόδωρος μὲν τοίνυν τοιουτοσί ἐστιν ἄνθρωπος, 56
οὐ μόνον ἄδικος, ἀλλὰ καὶ μελαγχολᾶν δοκῶν ἅπασι τοῖς οἰκείοις καὶ τοῖς γνωρίμοις τῇ προαιρέσει τοῦ βίου, καὶ ὅπερ Σόλων ὁ νομοθέτης λέγει, παραφρονῶν ὡς οὐδεὶς πώποτε παρεφρόνησεν ἀνθρώπων, γυναικὶ πειθόμενος πόρνῃ. καὶ ἄκυρά γε ταῦτα πάντα ἐνομοθέτησεν εἶναι ὁ Σόλων, ὅ τι ἂν τις γυναικὶ πειθόμενος πράττῃ, ἄλλως τε καὶ τοιαύτῃ. περὶ μὲν οὖν τούτων καλῶς ὁ νομοθέτης 57
ἐπεμελήθη, ἐγὼ δ᾽ ὑμῶν δέομαι, καὶ οὐ μόνον ἐγὼ ἀλλὰ καὶ ἡ ἐμὴ γυνή, Ὀλυμπιοδώρου δὲ τουτουὶ ἀδελφή, καὶ ἡ θυγάτηρ ἡ ἐμή, Ὀλυμπιοδώρου δὲ τουτουὶ ἀδελφιδῆ, ἱκετεύομεν ὑμᾶς καὶ ἀντιβολοῦμεν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἅπαντες ἡμεῖς (νομίσατε γὰρ ἐκείνας ἐνθάδε παρεῖναι) μάλιστα 58
μὲν τουτονὶ Ὀλυμπιόδωρον πεῖσαι μὴ ἀδικεῖν ἡμᾶς, ἐὰν δ᾽ ἄρα μὴ θέλῃ πείθεσθαι, ὑμᾶς μεμνημένους ἁπάντων τῶν εἰρημένων ψηφίζεσθαι ὅ τι ἂν ὑμῖν δοκῇ βέλτιστον καὶ δικαιότατον εἶναι. καὶ ταῦτα ποιοῦντες τά τε δίκαια γνώσεσθε καὶ τὰ συμφέροντα ἡμῖν ἅπασιν, οὐχ ἥκιστα δὲ Ὀλυμπιοδώρῳ αὐτῷ τούτῳ.

‖ ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘΕΟΝ ΥΠΕΡ ΧΡΕΩΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Τιμόθεον τὸν Ἀθηναῖον, ἄνδρα ἔνδοξον καὶ στρατηγήσαντα τῆς πόλεως, Ἀπολλόδωρος ἀπαιτεῖ χρέα, λέγων ὅτι Πασίωνι φίλῳ χρώμενος ὁ Τιμόθεος ἔλαβε παρ᾽ αὐτοῦ χρήματα καὶ ὀφείλων ἐν τοῖς τραπεζιτικοῖς λόγοις ἐγγέγραπται. τὰ μὲν δὴ πάντα ὀφλήματα τέτταρα καταριθμεῖται, ἐφ᾽ ἑκάστου δὲ καὶ τοὺς χρόνους καὶ τὰς αἰτίας δι᾽ ἃς ἐδανείσατο Τιμόθεος, ἀκριβῶς εἴρηκε. καὶ τὰς μὲν πλείστας ἀπο-*

δείξεις ἐκ τῶν καλουμένων ἀτέχνων πίστεων παρέσχηται, μαρτυριῶν καὶ προκλήσεων, τινὰς δὲ καὶ ἐντέχνους ἀπὸ τῶν εἰκότων. καὶ ὁ μὲν Ἀπολλόδωρος Τιμόθεον εἶναί φησι τὸν δανεισάμενον, καὶ τοῖς ὑπὸ Τιμοθέου συσταθεῖσι δοθῆναι τὸ ἀργύριον ἀπὸ τῆς τραπέζης· ὁ δὲ οὐχ ἑαυτὸν ἀλλ' ἐκείνους ὀφείλειν λέγει.

Μηδενὶ ὑμῶν ἄπιστον γενέσθω, ὦ ἄνδρες δικασταί, εἰ
Τιμόθεος ὀφείλων ἀργύριον τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ φεύγει νῦν
ὑπ' ἐμοῦ ταύτην τὴν δίκην· ἀλλ' ἐπειδὰν ὑμᾶς ἀναμνήσω
τόν τε καιρὸν ἐν ᾧ τὸ ‖ συμβόλαιον ἐγένετο, καὶ τὰ συμ-
βάντα τούτῳ ἐν ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ, καὶ εἰς ὅσην ἀπορίαν
κατέστη οὗτος, τόθ' ἡγήσεσθε τὸν μὲν πατέρα τὸν ἐμὸν
βέλτιστον γενέσθαι περὶ Τιμόθεον, τοῦτον δ' οὐ μόνον
ἀχάριστον εἶναι ἀλλὰ καὶ ἀδικώτατον πάντων ἀνθρώπων,
2 *ὅς γε τυχὼν παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ ὅσων ἐδεήθη καὶ*
λαβὼν ἀργύριον ἀπὸ τῆς τραπέζης ἐν πολλῇ ἀπορίᾳ καὶ
κινδύνοις τοῖς μεγίστοις καθεστηκὼς περὶ τῆς ψυχῆς, οὐ
μόνον οὐκ ἀπέδωκε χάριν, ἀλλὰ καὶ τὸ δοθὲν ἀποστερεῖ
με. καίτοι σφαλέντος μὲν τούτου ἀπώλλυτο καὶ τῷ πατρὶ
τῷ ἐμῷ τὸ συμβόλαιον· οὔτε γὰρ ἐπ' ἐνεχύρῳ οὔτε μετὰ
μαρτύρων ἔδωκε· σωθέντος δὲ ἐπὶ τούτῳ ἐγίγνετο ὁπότε
3 *βούλοιτο εὐπορήσας ἡμῖν ἀποδοῦναι. ἀλλ' ὅμως ὦ ἄνδρες*
δικασταὶ οὐ περὶ πλείονος ἐποιήσατο ὁ πατὴρ περιουσίαν
χρημάτων μᾶλλον ἢ οὐ Τιμοθέῳ ὑπηρετῆσαι, ὧν ἐδεήθη
αὐτοῦ, ἐν ἀπορίᾳ ὄντι. ᾤετο μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ
ὁ πατήρ, εἰ σωθείη Τιμόθεος τότε ἐξ ἐκείνων τῶν κιν-
δύνων καὶ ἀφίκοιτο οἴκαδε παρὰ βασιλέως, εὐπορωτέρου
γενομένου τούτου ἢ ὡς τότε διέκειτο, οὐ μόνον τὰ ἑαυτοῦ
κομίσασθαι, ἀλλὰ καὶ ἄλλου εἴ του δέοιτο πρὸς Τιμόθεον
4 *πρᾶξαι ὑπάρξειν αὐτῷ· ἐπειδὴ δ' οὐχ ὡς ἐκεῖνος ᾠήθη*
συμβέβηκεν, ἀλλ' ἃ μετὰ χάριτος ἔλαβε Τιμόθεος ἀπὸ τῆς
τραπέζης δεηθεὶς τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ταῦτα δι' ἔχθρας
καὶ δίκης τετελευτηκότος ἐκείνου ἐξελεγχθεὶς μὲν ὡς ὀφεί-
λει οἴεται δεῖν ἀποδοῦναι, ἐὰν δὲ δύνηται ὑμᾶς πεῖσαι
ὡς οὐκ ὀφείλει, ‖ ἐξαπατήσας τῷ λόγῳ, ἀποστερῆσαι ἡμᾶς
τῶν χρημάτων, ἀναγκαῖόν μοι δοκεῖ εἶναι ἐξ ἀρχῆς ἅπαντα
διηγήσασθαι ὑμῖν, τά τε ὀφειλόμενα, καὶ εἰς ὅ τι ἕκαστον
αὐτῶν κατεχρήσατο, καὶ τοὺς χρόνους ἐν οἷς τὸ συμβό-
5 *λαιον ἐγένετο. θαυμάσῃ δὲ μηδεὶς ὑμῶν εἰ ἀκριβῶς ἴσμεν·*

οἱ γὰρ τραπεζῖται εἰώθασιν ὑπομνήματα γράφεσθαι ὧν
τε διδόασι χρημάτων καὶ εἰς ὅ τι καὶ ὧν ἄν τις τιθῆται,
ἵν᾿ ᾖ αὐτοῖς γνώριμα τά τε ληφθέντα καὶ τὰ τεθέντα πρὸς
τοὺς λογισμούς.
Ἐπὶ Σωκρατίδου γὰρ ἄρχοντος μουνυχιῶνος μηνὸς μέλ- 6
λων ἐκπλεῖν τὸν ὕστερον ἔκπλουν Τιμόθεος οὑτοσί, περὶ
ἀναγωγὴν ἤδη ὢν ἐν τῷ Πειραιεῖ, προσδεηθεὶς ἀργυρίου,
προσελθὼν τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ ἐν τῷ λιμένι ἐκέλευσεν αὐ-
τὸν χρῆσαι χιλίας τριακοσίας πεντήκοντα μίαν δύ᾿ ὀβολώ·
τοσούτου γὰρ ἔφη προσδεῖσθαι· καὶ δοῦναι ἐκέλευεν Ἀντι-
μάχῳ τῷ ταμίᾳ τῷ ἑαυτοῦ, ὃς τούτῳ διῴκει τότε πάντα.
καὶ ὁ μὲν δανεισάμενος τὸ ἀργύριον παρὰ τοῦ πατρὸς 7
τοῦ ἐμοῦ Τιμόθεος ἦν καὶ κελεύσας δοῦναι Ἀντιμάχῳ τῷ
ταμίᾳ τῷ ἑαυτοῦ, ὁ δὲ λαβὼν τὸ ἀργύριον ἐκ τῆς τραπέ-
ζης παρὰ Φορμίωνος Αὐτόνομος, ὅσπερ Ἀντιμάχῳ διετέ-
λει γραμματεύων τὸν ἅπαντα χρόνον. δοθέντος τοίνυν 8
τοῦ ἀργυρίου τούτου ἐγράψατο μὲν ὀφείλοντα τὸν κελεύ-
σαντα χρῆσαι Τιμόθεον, ὑπόμνημα δ᾿ ἐγράψατο ᾧ τε
οὗτος ἐκέλευσε δοῦναι, Ἀντιμάχῳ, καὶ ὃν ὁ Ἀντίμαχος
συνέπεμψεν ἐπὶ τὴν τράπεζαν ληψόμενον τὸ ἀργύριον,
τὸν Αὐτόνομον, τὰς χιλίας τριακοσίας δραχμὰς καὶ ‖ πεν-
τήκοντα καὶ μίαν καὶ δύ᾿ ὀβολώ.
Τὸ μὲν τοίνυν πρῶτον χρέως, ὃ ἐκπλέων ἔλαβε στρα-
τηγῶν τὸ ὕστερον, τοσοῦτον ὤφειλεν. ἐπειδὴ δ᾿ ἀπεχει- 9
ροτονήθη μὲν ὑφ᾿ ὑμῶν στρατηγὸς διὰ τὸ μὴ περιπλεῦσαι
Πελοπόννησον, ἐπὶ κρίσει δὲ παρεδέδοτο εἰς τὸν δῆμον
αἰτίας τῆς μεγίστης τυχών, ἐφειστήκει δ᾿ αὐτῷ Καλλί-
στρατος καὶ Ἰφικράτης, τῷ τε πράττειν καὶ εἰπεῖν δυνά-
μενοι, οὕτω δὲ διέθεσαν ὑμᾶς κατηγοροῦντες τούτου αὐτοί
τε καὶ οἱ συναγορεύοντες αὐτοῖς ὥστ᾿ Ἀντίμαχον μὲν ταμίαν 10
ὄντα καὶ πιστότατα διακείμενον τούτῳ κρίναντες ἐν τῷ
δήμῳ ἀπεκτείνατε καὶ τὴν οὐσίαν αὐτοῦ ἐδημεύσατε, αὐτὸν
δὲ τοῦτον ἐξαιτουμένων μὲν τῶν ἐπιτηδείων καὶ οἰκείων
αὐτοῦ ἁπάντων, ἔτι δὲ καὶ Ἀλκέτου καὶ Ἰάσονος, συμμά-
χων ὄντων ὑμῖν, μόλις μὲν ἐπείσθητε ἀφεῖναι, στρατη-
γοῦντα δ᾿ αὐτὸν ἐπαύσατε, — ἐν τοιαύταις δ᾿ ὢν διαβολαῖς 11
καὶ ἀπορίᾳ χρημάτων πολλῇ· ἡ μὲν γὰρ οὐσία ὑπόχρεως

*ἦν ἅπασα, καὶ ὅροι αὐτῆς ἕστασαν, καὶ ἄλλοι ἐκράτουν·
ὁ μὲν ἐν πεδίῳ ἀγρὸς ἀποτίμημα τῷ παιδὶ τῷ Εὐμηλίδου
καθειστήκει, ἑξήκοντα δὲ τριηράρχοις τοῖς συνεκπλεύσα-
σιν αὐτῷ ἑπτὰ μνῶν ἑκάστῳ ἡ ἄλλη οὐσία ὑπέκειτο, ἃς
οὗτος αὐτοὺς στρατηγῶν ἠνάγκασε τοῖς ναύταις τροφὴν
12 διαδοῦναι· ἐπειδὴ δ᾽ ἀποχειροτονηθεὶς ἐν τῷ λόγῳ ἀπή-
νεγκεν ἐκ τῶν στρατιωτικῶν χρημάτων αὐτὸς δεδωκὼς εἰς
τὰς ναῦς τὰς ἑπτὰ μνᾶς ταύτας τότε, φοβούμενος μὴ
καταμαρτυρήσωσιν αὐτοῦ οἱ τριήραρχοι καὶ ἐξελέγχηται
ψευδόμενος, ‖ δάνεισμα ποιεῖται ἰδίᾳ παρ᾽ ἑκάστου αὐτῶν
τὰς ἑπτὰ μνᾶς καὶ ὑποτίθησιν αὐτοῖς τὴν οὐσίαν, ἃς νῦν
13 αὐτοὺς ἀποστερεῖ καὶ τοὺς ὅρους ἀνέσπακεν· πανταχόθεν
δ᾽ ἀπορούμενος, καὶ ἐν ἀγῶνι τῷ μεγίστῳ καθεστηκὼς
περὶ τοῦ σώματος διὰ τὸ συμβεβηκέναι τῇ πόλει τοιαῦτα
πράγματα, ἄμισθον μὲν τὸ στράτευμα καταλελύσθαι ἐν
Καλαυρείᾳ, πολιορκεῖσθαι δὲ τοὺς περὶ Πελοπόννησον
συμμάχους ὑπὸ Λακεδαιμονίων, κατηγορούντων δὲ τοῦτον
αἴτιον εἶναι τῆς παρούσης ἀτυχίας Ἰφικράτους καὶ Καλ-
λιστράτου, ἔτι δὲ τῶν ἀφικνουμένων ἀπὸ στρατεύματος
ἀπαγγελλόντων ἐν τῷ δήμῳ τὴν παροῦσαν ἔνδειαν καὶ
ἀπορίαν, τὰ δὲ καὶ δι᾽ ἐπιστολῶν ἑκάστου πυνθανομένου
παρὰ τῶν οἰκείων καὶ ἐπιτηδείων ὡς διέκειντο· ὧν ἀκού-
οντες ὑμεῖς ἐν τῷ δήμῳ τότε ἀναμνήσθητε πῶς ἕκαστος
περὶ αὐτοῦ τὴν γνώμην εἶχεν· οὐ γὰρ ἀγνοεῖτε τὰ λεγό-
14 μενα. μέλλων τοίνυν καταπλεῖν ἐπὶ τὴν κρίσιν ἐν Καλαυ-
ρείᾳ δανείζεται χιλίας δραχμὰς παρὰ Ἀντιφάνους τοῦ
Λαμπτρέως, ὃς ἐπέπλει ταμίας Φιλίππῳ τῷ ναυκλήρῳ,
ἵνα διαδοίη τοῖς Βοιωτίοις τριηράρχοις, καὶ παραμένω-
σιν ἕως ἂν αὐτῷ ἡ κρίσις γένηται, καὶ μὴ καταλυθεισῶν
πρότερον τῶν Βοιωτίων τριήρων καὶ διαπελθόντων πρό-
15 τερον τῶν στρατιωτῶν μᾶλλον αὐτῷ ὀργίζησθε ὑμεῖς. οἱ
μὲν γὰρ πολῖται ἠνείχοντο κακοπαθοῦντες καὶ παρέμενον·
οἱ δὲ Βοιωτοὶ οὐκ ἔφασαν παραμενεῖν, εἰ μή τις αὐτοῖς
τὴν καθ᾽ ἡμέραν τροφὴν δώσοι. τότε οὖν ἀναγκαζόμενος
δανείζεται ‖ τὰς χιλίας δραχμὰς παρὰ τοῦ Ἀντιφάνους, ὃς
ἐπέπλει ταμιεύων Φιλίππῳ τῷ ναυκλήρῳ, καὶ δίδωσι τῷ
16 Βοιωτίῳ ἄρχοντι τῶν νεῶν. ἐπειδὴ δ᾽ ἀφίκετο δεῦρο,*

ἀπῄτουν αὐτὸν ὅ τε Φίλιππος καὶ Ἀντιφάνης τὰς χιλίας
δραχμὰς ἃς ἐδανείσατο ἐν Καλαυρείᾳ, καὶ ἠγανάκτουν ὅτι
οὐ ταχὺ ἀπελάμβανον. φοβούμενος δ' οὗτος τοὺς ἐχθροὺς
τοὺς ἑαυτοῦ, μὴ πύθοιντο ὅτι, ἃς ἐν τῷ λόγῳ ἀπήνεγκε
χιλίας δραχμὰς δεδωκὼς εἰς τὰς Βοιωτίας ναῦς ἐκ τῶν
στρατιωτικῶν χρημάτων, ταύτας Φίλιππος δανείσας ἀπο-
στερεῖται, καὶ ἅμα δεδιὼς τὸν Φίλιππον, μὴ καταμαρτυ- 17
ροίη αὐτοῦ ἐν τῷ ἀγῶνι, προσελθὼν τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ
ἐδεήθη ἀπαλλάξαι τὸν Φίλιππον καὶ χρῆσαι αὐτῷ τὰς
χιλίας δραχμάς, ἵν' ἀποδιδοίη Φιλίππῳ. ὁρῶν δ' ὁ πατὴρ
ὁ ἐμὸς τό τε μέγεθος τοῦ ἀγῶνος ἡλίκον ἦν τούτῳ καὶ ὡς
ἠπορεῖτο οὗτος, καὶ ἐλεῶν αὐτόν, προσάγων πρὸς τὴν
τράπεζαν ἐκέλευσεν ἀποδοῦναι Φιλίππῳ χιλίας δραχμὰς
τὸν Φορμίωνα τὸν ἐπικαθήμενον ἐπὶ τῆς τραπέζης, καὶ
γράψαι ὀφείλοντα Τιμόθεον. καὶ ταῦθ' ὅτι ἀληθῆ ἐστί, 18
τὸν δόντα τὸ ἀργύριον Φορμίωνα ὑμῖν μάρτυρα παρέξο-
μαι, ἐπειδὰν καὶ περὶ τοῦ ἄλλου συμβολαίου διηγήσωμαι
ὑμῖν, ἵνα τῇ αὐτῇ μαρτυρίᾳ περὶ ὅλου τοῦ χρέως ἀκού-
σαντες εἰδῆτε ὅτι ἀληθῆ λέγω. καλῶ δ' ὑμῖν καὶ τὸν
Ἀντιφάνην τὸν δανείσαντα τὸ ἀργύριον τούτῳ, τὰς χιλίας
δραχμάς, ἐν Καλαυρείᾳ, καὶ παρόντα ὅτε ἀπέλαβε Φίλιπ-
πος τὸ ἀργύριον παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ ἐνθάδε. τοῦ μὲν 19
‖ γὰρ μαρτυρίαν με ἐμβαλέσθαι πρὸς τὸν διαιτητὴν παρε-
κρούσατο, φάσκων ἀεί μοι μαρτυρήσειν εἰς τὴν κυρίαν ἀπό-
φασιν· ἐπειδὴ δ' ἡ δίαιτα ἦν, προσκληθεὶς ἀπὸ τῆς οἰκίας
(οὐ γὰρ ἦν φανερός) ἔλιπε τὴν μαρτυρίαν πεισθεὶς ὑπὸ τού-
του. τιθέντος δ' ἐμοῦ αὐτῷ τὴν δραχμὴν τοῦ λιπομαρτυρίου
κατὰ τὸν νόμον, ὁ διαιτητὴς οὐ κατεδιῄτα, ἀλλ' ἀπιὼν
ᾤχετο ἀποδιαιτήσας τούτου τὴν δίαιταν, ἑσπέρας ἤδη
οὔσης. νυνὶ δὲ τῷ Ἀντιφάνει εἴληχα βλάβης ἰδίαν δίκην, 20
ὅτι μοι οὔτ' ἐμαρτύρησεν οὔτ' ἐξωμόσατο κατὰ τὸν νόμον.
καὶ ἀξιῶ αὐτὸν ἀναβάντα εἰπεῖν ἐναντίον ὑμῶν διομοσά-
μενον, πρῶτον μὲν εἰ ἐδάνεισε Τιμοθέῳ ἐν Καλαυρείᾳ
χιλίας δραχμάς, δεύτερον δ' εἰ παρὰ τοῦ πατρὸς Φίλιπ-
πος ἀπέλαβεν ἐνθάδε τοῦτο τὸ ἀργύριον. σχεδὸν μὲν οὖν 21
καὶ αὐτὸς οὗτος ὡμολόγει πρὸς τῷ διαιτητῇ ἀποδοῦναι
τῷ Φιλίππῳ τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν τὰς χιλίας δραχμάς,

οὐ μέντοι ἑαυτῷ γέ φησι δανεῖσαι ἀλλὰ τῷ Βοιωτίῳ
ναυάρχῳ, καὶ ὑποθεῖναί φησιν αὐτὸν τούτου τοῦ ἀργυ-
ρίου χαλκόν. ὡς δ' οὐκ ἀληθῆ ἔλεγεν ἀλλ' αὐτὸς δανεισά-
μενος ἀπεστέρει, ἐγὼ ὑμᾶς διδάξω, ἐπειδὰν καὶ περὶ τῶν
ἄλλων ὧν ὀφείλει καθ' ἕκαστον ὑμῖν διηγήσωμαι.

22 Ἀφικομένου γὰρ Ἀλκέτου καὶ Ἰάσονος ὡς τοῦτον ἐν τῷ
μαιμακτηριῶνι μηνὶ τῷ ἐπ' Ἀστείου ἄρχοντος ἐπὶ τὸν
ἀγῶνα τὸν τούτου, βοηθησόντων αὐτῷ, καὶ καταγομένων
εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ἐν Πειραιεῖ τὴν ἐν τῇ Ἱπποδαμείᾳ
ἑσπέρας ἤδη οὔσης, ἀπορούμενος ὑποδέξασθαι αὐτούς,
πέμψας ὡς τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν Αἰσχρίωνα τὸν ἀκό-
λουθον τὸν αὑτοῦ ‖ ἐκέλευσεν αἰτήσασθαι στρώματα καὶ
ἱμάτια καὶ φιάλας ἀργυρᾶς δύο, καὶ μνᾶν ἀργυρίου δα-
23 νείσασθαι. ἀκούσας δ' ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς τοῦ Αἰσχρίωνος
τούτου τούς τε ἀφιγμένους καὶ τὴν χρείαν εἰς ἣν ᾐτεῖτο,
ἐφ' ἅ τ' ἦλθον, ἔχρησε, καὶ τὴν μνᾶν τοῦ ἀργυρίου, ἣν
ἐδανείζετο, ἐδάνεισεν. ἀπολελυμένῳ τοίνυν τῆς αἰτίας
πολλὴ συνέβαινεν αὐτῷ μετὰ ταῦτα χρημάτων ἀπορία
εἴς τε τὰς ἰδίας χρείας καὶ εἰς τὰς δημοσίας εἰσφοράς,
ἃ ὁρῶν ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς οὐκ ἐτόλμα τοῦτον εὐθὺς ἀπαι-
24 τεῖν τὸ ἀργύριον· οὔτε γὰρ ἂν τοῦτον εὐπορήσανθ' ἡγεῖτο
ἀδικῆσαι αὐτόν, οὔτ' ἂν αὐτὸς ἀποροῦντα τοῦτον ἔχειν
ὁπόθεν εἰσπράξειεν. ἐπειδὴ τοίνυν ἀπῆλθον ὅ τε Ἀλκέτας
καὶ ὁ Ἰάσων, τὰ μὲν στρώματα καὶ τὰ ἱμάτια πάλιν ἀπ-
ήνεγκεν ὁ Αἰσχρίων ὁ ἀκόλουθος ὁ τούτου, τὰς δὲ φιάλας
τὰς δύο οὐκ ἀπήνεγκεν, ἃς ᾐτήσατο ὅτε περ καὶ τὰ στρώ-
ματα καὶ τὴν μνᾶν τοῦ ἀργυρίου ἐδανείσατο, ἀφικομένων
ὡς τοῦτον Ἀλκέτου καὶ Ἰάσονος.

25 Μέλλων τοίνυν ἀποδημεῖν ὡς βασιλέα, καὶ διαπραξά-
μενος ἐκπλεῦσαι ὡς βασιλεῖ στρατηγήσων τὸν ἐπ' Αἴγυ-
πτον πόλεμον, ἵνα μὴ δῷ ἐνθάδε λόγον καὶ εὐθύνας τῆς
στρατηγίας, μεταπεμψάμενος τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν εἰς τὸ
26 παράλιον τῶν τε προϋπηργμένων εἰς αὐτὸν ἐπῄνει, καὶ
ἐδεῖτο αὐτοῦ συστήσας Φιλώνδαν, ἄνδρα τὸ μὲν γένος Με-
γαρέα, μετοικοῦντα δ' Ἀθήνησι, πιστῶς δὲ τούτῳ διακεί-
μενον καὶ ὑπηρετοῦντα ἐν ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ, ἐπειδὰν ‖ ἀφί-
κηται ἐκ Μακεδονίας ὁ Φιλώνδας, ὃν συνίστη οὗτος τῷ

πατρὶ τῷ ἐμῷ, ἄγων ξύλα τὰ δοθέντα τούτῳ ὑπὸ Ἀμύν-
του, τὸ ναῦλον τῶν ξύλων παρασχεῖν καὶ ἐᾶσαι ἀνακομίσαι
τὰ ξύλα εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ἑαυτοῦ τὴν ἐν Πειραιεῖ· αὐτοῦ
γὰρ εἶναι τὰ ξύλα. ἅμα τε τῇ δεήσει εἶπε λόγον ᾧ οὐκ 27
ἀκόλουθα ποιεῖ τὰ ἔργα νυνί· ἔφη γάρ, κἂν μὴ τύχῃ ὧν
ἐδεῖτο τοῦ πατρός, οὐκ ὀργισθήσεσθαι ὥσπερ ἂν ἄλλος
τις ἀποτυχών, ἀλλ᾽ ὧν αὐτῷ δεηθέντι ὑπηρέτηκε, τούτων,
ἄν ποτε δύνηται, χάριν ἀποδώσειν. ἀκούσας δ᾽ ὁ πατὴρ
ὁ ἐμὸς ταῦτα ἥσθη τε τοῖς λόγοις, καὶ ἐπῄνει τοῦτον ὅτι
μέμνηται εὖ παθών, καὶ ὅσα αὐτοῦ ἐδεῖτο ὑπέσχετο ποι-
ήσειν. καὶ οὗτος μὲν μετὰ ταῦτα τὴν ἀναγωγὴν ἐποιεῖτο 28
ὡς τοὺς στρατηγοὺς τοὺς βασιλέως, ὁ δὲ Φιλώνδας, ᾧ
συνέστησε τὸν πατέρα τὸν ἐμόν, ἐπειδὰν ἀφίκηται ἄγων
τὰ ξύλα, τὸ ναῦλον παρασχεῖν, εἰς τὴν Μακεδονίαν τὴν
πορείαν ἐποιεῖτο. καὶ οὗτοι οἱ χρόνοι ἦσαν περὶ Θαργη-
λιῶνα μῆνα ἐπ᾽ Ἀστείου ἄρχοντος. τῷ δ᾽ ὑστέρῳ ἔτει ἀφι- 29
κομένου τοῦ Φιλώνδου ἐκ τῆς Μακεδονίας ἄγοντος τὰ ξύλα,
ἀποδημοῦντος τούτου παρὰ βασιλεῖ, καὶ προσελθόντος
τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ κελεύοντος τὸ ναῦλον τῶν ξύλων παρα-
σχεῖν ἵνα διαλύσῃ τὸν ναύκληρον, καθάπερ οὗτος ἐδεήθη
ὅτε ἐξέπλει τοῦ πατρὸς καὶ συνέστησε τὸν Φιλώνδαν,
προσαγαγὼν πρὸς τὴν τράπεζαν ὁ πατὴρ ἐκέλευσε δοῦναι
Φορμίωνα τὸ ναῦλον τῶν ξύλων, χιλίας ἑπτακοσίας πεν-
τήκοντα. καὶ ἠρίθμησε τὸ ἀργύριον Φορμίων, καὶ ἐγρά- 30
ψατο μὲν ὀφείλοντα ‖ Τιμόθεον (οὗτος γὰρ ἦν ὁ δεηθεὶς
τοῦ πατρὸς παρασχεῖν τὸ ναῦλον τῶν ξύλων, καὶ τούτου
ἦν), ὑπομνήματα δ᾽ ἀπεγράψατο τήν τε χρείαν εἰς ἣν
ἐλήφθη τὸ ἀργύριον, καὶ τὸ ὄνομα τοῦ λαβόντος. καὶ οὗ-
τος ὁ χρόνος ἦν Ἀλκισθένους ἄρχοντος, ὁ ὕστερος ἐνιαυτὸς
ᾗ αὐτὸς ἀνήγετο ὡς βασιλέα. ὑπὸ δὲ τὸν αὐτὸν χρόνον 31
τοῦτον καὶ Τιμοσθένης ὁ Αἰγιλιεὺς ἀφικνεῖται κατ᾽ ἐμπο-
ρίαν ἰδίαν ἀποδημῶν. ἐπιτήδειος δὲ ὢν Φορμίωνι καὶ
κοινωνὸς ὁ Τιμοσθένης, ὅτ᾽ ἐξέπλει, δίδωσιν ἀποθεῖναι τῷ
Φορμίωνι μετ᾽ ἄλλων χρημάτων καὶ φιάλας λυκουργεῖς
δύο. ἀπὸ τύχης δ᾽ ὁ παῖς ταύτας τὰς φιάλας, οὐκ εἰδὼς
ὅτι ἀλλότριαι ἦσαν, δίδωσι τῷ Αἰσχρίωνι τῷ ἀκολούθῳ
τῷ τούτου, ὅτ᾽ ἐπέμφθη ὡς τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν ὑπὸ

τούτου καὶ ᾐτεῖτο τὰ στρώματα καὶ τὰ ἱμάτια καὶ τὰς φιάλας καὶ τὴν μνᾶν τοῦ ἀργυρίου ἐδανείσατο, ἀφι-
32 κομένων ὡς τοῦτον Ἀλκέτου καὶ Ἰάσονος. ἀπαιτοῦντος δὲ τοῦ Τιμοσθένους τὰς φιάλας τὸν Φορμίωνα, ἐπειδὴ ἧκεν, ἀποδημοῦντος Τιμοθέου παρὰ βασιλεῖ, πείθει αὐτὸν ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς τιμὴν ἀπολαβεῖν τῶν φιαλῶν, ὅσον ἧγον αἱ φιάλαι, διακοσίας τριάκοντα ἑπτά. καὶ τῷ μὲν Τιμοσθένει τιμὴν ἀπέδωκε τῶν φιαλῶν, τοῦτον δ' ἐγράψατο αὐτῷ ὀφείλοντα, πρὸς τὸ ἄλλο χρέως ὃ οὗτος αὐτὸς ὤφειλεν, ὃ ἀπέτισε τῷ Τιμοσθένει τῶν φια-
33 λῶν. καὶ ταῦτα πάνθ' ὅτι ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας, πρῶτον μὲν τῶν δόντων τὸ ἀργύριον οἷς οὗτος ἐκέλευσεν ἀπὸ τῆς τραπέζης καὶ ἐπικαθημένων τότε, ἔπειτα τοῦ ἀπολαβόντος τὴν τιμὴν τῶν φιαλῶν.

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅτι μὲν τοίνυν οὐ ψεύδομαι πρὸς ὑμᾶς περὶ ὧν εἶπον, τῶν μαρτυριῶν ἀναγιγνωσκομένων ἀκηκόατε· ὅτι δέ μοι καὶ αὐτὸς οὗτος ὡμολόγει τὰ ξύλα τὰ κομισθέντα ὑπὸ Φιλώνδου εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ἑαυτοῦ ἀνακομισθῆναι τὴν ἐν Πειραιεῖ, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

34 Ὡς μὲν τοίνυν τούτου ἦν τὰ ξύλα ἃ ἤγαγεν ὁ Φιλώνδας, αὐτός μοι μεμαρτύρηκεν· ὡμολόγει γὰρ αὐτὰ πρὸς τῷ διαιτητῇ ἀνακομισθῆναι εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ἑαυτοῦ τὴν ἐν Πειραιεῖ, ὡς μεμαρτύρηται ὑμῖν ὑπὸ τῶν ἀκουόντων. ἔτι δὲ καὶ ἐκ τεκμηρίων πειράσομαι ἐγὼ ὑμᾶς διδάξαι
35 ὅτι ἀληθῆ λέγω. οἴεσθε γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸν πατέρα τὸν ἐμόν, εἰ μὴ Τιμοθέου ἦν τὰ ξύλα καὶ ἐδεήθη οὗτος αὐτοῦ συστήσας τὸν Φιλώνδαν, ὅτε ἀνήγετο ὡς τοὺς στρατηγοὺς τοὺς βασιλέως, παρασχεῖν τὸ ναῦλον, ἐᾶσαι ἄν ποτε ὑποκειμένων αὐτῷ τῶν ξύλων τοῦ ναύλου ἀνακομίσαι τὸν Φιλώνδαν τὰ ξύλα ἐκ τοῦ λιμένος, ἀλλ' οὐκ ἂν παρακαταστήσαντά τινα τῶν οἰκετῶν φυλάττειν καὶ τὴν τιμὴν λαμβάνειν τῶν πωλουμένων ξύλων, ἕως ἐκομίσατο τὰ ἑαυτοῦ, εἴπερ Φιλώνδου ἦν τὰ ξύλα καὶ
36 ἐμπορίας ἕνεκ' ἤχθη; ἔπειτα πρὸς τούτοις τίνι ὑμῶν εἰκὸς δοκεῖ εἶναι, μὴ κελεύσαντος τούτου τὸ ναῦλον παρασχεῖν

*τῶν ξύλων τῶν δοθέντων τούτῳ ὑπὸ Ἀμύντου, πιστεῦσαι
τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν Φιλώνδᾳ καὶ ἐᾶσαι ἀνακομίσαι τὰ
ξύλα ἐκ τοῦ λιμένος εἰς τὴν οἰκίαν τὴν τούτου; ἢ πῶς
οἷόν τ᾽ ἐστὶ τὸν μὲν Φιλώνδαν ἐμπορίας ἕνεκ᾽ ἀγαγεῖν τὰ
ξύλα, ὡς οὗτός φησι, καταχρήσασθαι ‖ δὲ τοῦτον ἥκοντ᾽
εἰς τὴν οἰκοδομίαν τὴν αὑτοῦ τοῖς ξύλοις τούτοις; σκέ- 37
ψασθε δὲ κἀκεῖνο, ὅτι πολλοὶ καὶ χρηστοὶ τῶν πολιτῶν
οἰκεῖοι ὄντες τούτῳ ἐπεμελοῦντο τῶν τούτου, ἀποδη-
μοῦντος παρὰ βασιλεῖ Τιμοθέου, ὧν οὐδεὶς τετόλμηκε
μαρτυρῆσαι τούτῳ ἢ ὡς οὐκ ἔλαβεν ὁ Φιλώνδας τὸ ναῦ-
λον τῶν ξύλων ἀπὸ τῆς τραπέζης ἢ ὡς λαβὼν ἀπέδωκεν,
οὐδ᾽ αὖ ὡς αὐτῶν τις διέλυσε τὸ ναῦλον ὑπὲρ τῶν ξύλων
ὧν ἤγαγεν ὁ Φιλώνδας, δοθέντων τούτῳ παρ᾽ Ἀμύντου·
ἡγοῦνται γὰρ περὶ πλείονος αὑτοῖς εἶναι καλοὶ κἀγαθοὶ
δοκεῖν εἶναι μᾶλλον ἢ Τιμοθέῳ χαρίσασθαι τὰ ψευδῆ
μαρτυροῦντες. οὐ μέντοι γ᾽ οὐδὲ τούτου ἔφασαν καταμαρ- 38
τυρῆσαι ἂν τἀληθῆ· οἰκεῖον γὰρ αὑτοῖς εἶναι. ὅπου τοί-
νυν μηδεὶς τετόλμηκε τῶν οἰκείων τούτῳ μαρτυρῆσαι καὶ
ἐπιμελομένων τῶν τούτου, ὅτε ἀπεδήμει οὗτος παρὰ
βασιλεῖ, ἢ ὡς οὐκ ἔλαβεν ὁ Φιλώνδας τὸ ναῦλον τῶν
ξύλων ἀπὸ τῆς τραπέζης ἢ ὡς αὐτῶν τις διέλυσε, πῶς
οὐκ εἰκός ἐστιν ὑμᾶς ἡγεῖσθαί με τἀληθῆ λέγειν; καὶ 39
μὴν οὐδ᾽ ἐκεῖνό γε τολμήσει, ὡς ἄλλος τις διέλυσε τὸ
ναῦλον ὑπὲρ τῶν ξύλων ὧν ἤγαγεν ὁ Φιλώνδας, ἢ ὁ πατὴρ
ὁ ἐμός. ἐὰν δὲ καταχρῆται τῷ λόγῳ, ἀξιοῦτε αὐτὸν καὶ
τὴν μαρτυρίαν παρασχέσθαι ὑμῖν τοῦ ἀποδόντος τὸ ναῦ-
λον ὑπὲρ τῶν ξύλων. αὐτὸς μὲν γὰρ ὁμολογεῖται ἀπο-
δημεῖν παρὰ βασιλεῖ, τὸν δὲ Φιλώνδαν, ὃν ἔπεμψεν ἐπὶ
τὰ ξύλα καὶ συνέστησε τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ, τεθνηκότα
κατελάμβανες ἥκων παρὰ βασιλέως. ἀναγκαῖον δὴ τῶν 40
ἄλλων οἰκείων καὶ ἐπιτηδείων, οὓς κατέλειπες ἀποδημεῖν
μέλλων ‖ συνεπιμελεῖσθαι τῶν σαυτοῦ, εἰδέναι τινὰ ὅθεν
τὸ ναῦλον τῶν ξύλων πορίσας ὁ Φιλώνδας τῷ ναυκλήρῳ
διέλυσεν, εἰ μὴ φῂς τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν συστῆσαι αὐτῷ,
μηδὲ λαβεῖν τὸν Φιλώνδαν παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ
τὸ ναῦλον τῶν ξύλων. μαρτυρίαν τοίνυν οὐδενὸς ἔχεις 41
παρασχέσθαι τῶν οἰκείων τῶν σαυτοῦ ὡς οὐκ ἐλήφθη*

σοῦ ἀποδημοῦντος τὸ ναῦλον τῶν ξύλων ἀπὸ τῆς τραπέζης, ἀλλὰ δυοῖν θάτερον, ἢ οὐδενὶ χρῇ τῶν οἰκείων οὐδὲ πιστεύεις τῶν σαυτοῦ οὐδενί, ἢ εἰδὼς ἀκριβῶς τὸν Φιλώνδαν λαβόντα τὸ ναῦλον τῶν ξύλων παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ᾧπερ αὐτὸν συνέστησας ὅτε ἐξέπλεις, οἴει

42 δεῖν ἀποστερήσας ἡμᾶς, ἐὰν δύνῃ, πλεονεκτεῖν. ἐγὼ τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρὸς τῇ μαρτυρίᾳ, ἣν παρέσχημαι ὑμῖν μαρτυροῦντας τοὺς δόντας τὸ ἀργύριον οἷς οὗτος ἐκέλευσε καὶ καθημένους ἐπὶ τῇ τραπέζῃ τότε, καὶ πίστιν ἠθέλησα ἐπιθεῖναι, ἣν ἀναγνώσεται ὑμῖν.

ΟΡΚΟΙ.

Οὐ τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ γράψας μοι ὁ πατὴρ κατέλιπε τὰ χρέα μόνον, ἀλλὰ καὶ ἔλεγεν ἀρρωστῶν ὅ τι ὀφείλοιτο αὐτῷ ἕκαστον, καὶ παρ' ᾧ, καὶ εἰς ὅ τι ἐλήφθη τὸ ἀργύριον, καὶ τῷ ἀδελφῷ τῷ ἐμῷ. καὶ ὡς ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, ἀνάγνωθί μοι τὴν μαρτυρίαν τοῦ ἀδελφοῦ.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

43 Ὡς μὲν τοίνυν κατελείφθη ὀφείλων Τιμόθεος ἡμῖν τὸ ἀργύριον ὑπὸ τοῦ πατρός, οὗ δικάζομαι αὐτῷ, καὶ γίγνεται ἐμὸν μέρος, ὅ τε ἀδελφός μοι μεμαρτύρηκε καὶ ὁ Φορμίων ὁ δοὺς τὸ ἀργύριον, κἀγὼ τούτων πίστιν ἠθέλησα ἐπιθεῖναι. ‖ προκαλεσαμένου δὲ τούτου πρὸς τῷ διαιτητῇ καὶ κελεύοντος ἐνεγκεῖν τὰ γράμματα ἀπὸ τῆς τραπέζης καὶ ἀντίγραφα αἰτοῦντος, πέμψαντος Φρασιηρίδην ἐπὶ τὴν τράπεζαν, τῷ δὲ Φρασιηρίδῃ ἐξενέγκας ἔδωκα ζητεῖν τὰ γράμματα καὶ ἐκγράφεσθαι ὅσα οὗτος ὤφειλεν. καὶ ὡς ὡμολόγει λαβεῖν οὗτος τὰ ἀντίγραφα, ἀνάγνωθί μοι τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

44 Πρὸς τοίνυν τὸν διαιτητὴν κομίσαντός μου τὰ γράμματα, παρὼν ὁ Φορμίων καὶ ὁ Εὐφραῖος, οἱ δόντες τὸ ἀργύριον οἷς ἐκέλευσεν οὗτος, ἐξήλεγχον αὐτὸν ἐν οἷς τε χρόνοις ἕκαστον ἐδανείσατο, καὶ εἰς ὅ τι ἔλαβε τὸ ἀργύριον, καὶ εἰς ἃ κατεχρήσατο. ὃ δὲ τὰς μὲν χιλίας καὶ τριακοσίας καὶ πεντήκοντα καὶ μίαν καὶ δύ' ὀβολώ, ἃς πρώτας ἐδανείσατο τοῦ μουνυχιῶνος μηνὸς μέλλων ἐκπλεῖν ἐπὶ Σωκρατίδου ἄρχοντος, ἃς καὶ ἐκέλευσε δοῦναι

Ἀντιμάχῳ τῷ ταμίᾳ τῷ ἑαυτοῦ, ἰδίᾳ ἔφη δανεῖσαι τὸν
πατέρα Ἀντιμάχῳ καὶ οὐκ αὐτὸς λαβεῖν. καὶ ὡς μὲν 45
ἀληθῆ λέγει, οὐδένα μάρτυρα παρέσχηται, λόγῳ δὲ κατα-
χρῆται, ἵνα μὴ αὐτὸς δοκῇ ἀποστερεῖν ἀλλ' Ἀντίμαχος
δανείσασθαι. καίτοι ὦ ἄνδρες δικασταὶ μέγα ὑμῖν ἐρῶ
τεκμήριον ὅτι οὐκ Ἀντιμάχῳ ἐδάνεισεν ὁ πατὴρ τοῦτο
τὸ ἀργύριον, ἀλλὰ Τιμοθέῳ περὶ ἀναγωγὴν ὄντι. πότερα
γὰρ ἂν οἴεσθε ῥᾷον εἶναι τῷ πατρὶ δημευθέντων τῶν
Ἀντιμάχου ἐνεπισκήψασθαι ἐν τῇ οὐσίᾳ τῇ ἐκείνου ἐν-
οφειλόμενον αὐτῷ τοῦτο τὸ ‖ ἀργύριον, εἴπερ Ἀντιμάχῳ
ἐδάνεισεν, ἢ ἀναμένειν ὁπότε παρὰ τούτου κομιεῖσθαι 46
ἔμελλεν εὐπορήσαντος, ὃς οὐ πολλὰς ἐλπίδας σωτηρίας
περὶ αὑτοῦ εἶχεν ἐν ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ; καὶ μὴν ἐνεπισκη-
ψάμενός γε οὔτ' ἂν παρακαταβολῆς ἠπόρησεν οὔτ' ἂν ἠπι-
στήθη ὑφ' ὑμῶν· πάντες γὰρ ἴστε τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν
οὐ τῶν δημοσίων ἀδίκως ἐπιθυμοῦντα ἀλλὰ τῶν αὑτοῦ
ὑμῖν, ὅ τι κελεύσαιτε, προθύμως ἀναλίσκοντα, εἶτα καὶ 47
ἐπιτηδείου ὄντος αὐτῷ Καλλιστράτου, ὅσπερ ἐδήμευσε
τὰ Ἀντιμάχου, ὥστε μηδὲν ἐναντιοῦσθαι. ὥστε τί ἂν
βουλόμενός ποτε ὁ πατὴρ ἠβούλετο Τιμόθεον χρήστην
ἐγγράψας ἡμῖν καταλιπεῖν, εἴπερ μὴ ὤφειλε τοῦτο τὸ
ἀργύριον, μᾶλλον ἢ οὐκ ἐκ τῶν Ἀντιμάχου δημευθέντων
ἐνεπισκηψάμενος κομίσασθαι;

Περὶ δὲ τῶν χιλίων δραχμῶν, ἃς ἐδανείσατο παρὰ τοῦ 48
Ἀντιφάνους ἐν Καλαυρείᾳ, ἵνα διαδοίη τοῖς Βοιωτίοις
τριηράρχοις, μέλλων καταπλεῖν ἐπὶ τὴν κρίσιν, ἃς καὶ
ἀπέδωκε Φιλίππῳ τῷ ναυκλήρῳ ἐνθάδε λαβὼν παρὰ τοῦ
πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, τὸν Βοιώτιον ναύαρχόν φησι δανείσα-
σθαι καὶ ὑποθεῖναι τούτου τοῦ ἀργυρίου τῷ πατρὶ τῷ
ἐμῷ χαλκόν. ὡς δ' οὐκ ἀληθῆ λέγει, μέγα ὑμῖν ἐρῶ τε-
κμήριον. πρῶτον μὲν γὰρ ἐν Καλαυρείᾳ οὗτος φαίνεται 49
δανεισάμενος τὰς χιλίας δραχμὰς καὶ οὐχ ὁ Βοιώτιος
ναύαρχος, ἔπειτ' ἀπαιτῶν ὁ Φίλιππος ἐνθάδε τοῦτον τὰς
χιλίας δραχμὰς καὶ οὐ τὸν Βοιώτιον ναύαρχον, καὶ ἀπο-
δοὺς οὗτος ἀλλ' οὐχ ὁ ‖ Βοιώτιος ναύαρχος· προσῆκε γὰρ
τῷ μὲν Βοιωτίῳ ἄρχοντι παρὰ τούτου τὴν τροφὴν τοῖς
ἐν ταῖς ναυσὶ λαμβάνειν· ἐκ γὰρ τῶν κοινῶν συντάξεων ἡ

μισθοφορία ἦν τῷ στρατεύματι, τὰ δὲ χρήματα σὺ ἅπαντα
ἐξέλεξας ἐκ τῶν συμμάχων, καὶ σὲ ἔδει αὐτῶν λόγον ἀπο-
50 δοῦναι. εἶτα καταλυθεισῶν τῶν Βοιωτίων νεῶν καὶ διαπ-
ελθόντων τῶν στρατιωτῶν τῷ μὲν Βοιωτίῳ ναυάρχῳ οὐδεὶς
κίνδυνος ὑπ᾽ Ἀθηναίων ἦν, οὐδ᾽ ἐν ἀγῶνι καθειστήκει οὐ-
δενί, σὺ δ᾽ ἐν τῷ μεγίστῳ· περίφοβος δ᾽ ὢν ἡγοῦ σοι με-
γάλην ἐπικουρίαν ἀπολογίας ἔσεσθαι, ἐὰν παραμείνωσιν
αἱ Βοιώτιαι τριήρεις ἕως ἂν σοι ἡ κρίσις γένηται. ἔπειτα
καὶ ἐκ τίνος ἂν φιλίας ποτ᾽ ἐδάνεισεν ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς τῷ
Βοιωτίῳ ναυάρχῳ τὰς χιλίας δραχμάς, ὃν οὐκ ἐγίγνωσκεν;
51 ἀλλὰ γὰρ ὑποθέσθαι φησὶν αὐτὸν χαλκόν. ὁπόσον τινὰ
καὶ ποδαπὸν καὶ πόθεν γενόμενον τὸν χαλκὸν τοῦτον τῷ
Βοιωτίῳ ναυάρχῳ; πότερα κατ᾽ ἐμπορίαν ἀχθέντα ἢ ἀπ᾽
αἰχμαλώτων γενόμενον; εἶτα τίνες ἦσαν οἱ ἐνέγκαντες τὸν
χαλκὸν ὡς τὸν πατέρα τὸν ἐμόν; μισθωτοὶ ἢ οἰκέται; ἢ
52 τίς ὁ παραλαβὼν τῶν οἰκετῶν τῶν ἡμετέρων; χρῆν γὰρ
αὐτόν, εἰ μὲν οἰκέται ἤνεγκαν, τοὺς κομίσαντας παραδι-
δόναι, εἰ δὲ μισθωτοί, τὸν ὑποδεξάμενον καὶ ἀποστησά-
μενον τὸν χαλκὸν τῶν οἰκετῶν τῶν ἡμετέρων, τοῦτον
ἐξαιτεῖν· οὐ γὰρ δή που ἄνευ γε σταθμοῦ ἤμελλεν οὔθ᾽ ὁ
ὑποτιθέμενος οὔθ᾽ ὁ ὑποτιθεὶς τὸν χαλκὸν παραδώσειν,
οὐδ᾽ αὖ ὁ πατὴρ ἤμελλεν αὐτὸς ‖ οὔτε οἴσειν τὸν χαλκὸν
οὔτε στήσεσθαι, ἀλλ᾽ οἰκέται ἦσαν αὐτῷ, οἳ τὰ ἐνέχυρα
53 τῶν δανεισμάτων παρελάμβανον. θαυμάζω δ᾽ ἔγωγε καὶ
τίνος οὕνεκ᾽ ἄν ποτε ὑπετίθει τὸν χαλκὸν τῷ πατρὶ τῷ
ἐμῷ ὁ Βοιώτιος ναύαρχος, Φιλίππῳ ὀφείλων χιλίας
δραχμάς. πότερον ὡς Φίλιππος οὐκ ἂν ἡδέως τόκον ἐλάμ-
βανεν, εἴπερ ἀσφαλῶς ἦν αὐτῷ τὸ ἀργύριον δεδανεισμέ-
νον καὶ ἐπ᾽ ἐνεχύρῳ; ἢ ὡς οὐκ ἦν τῷ Φιλίππῳ ἀργύριον;
ὥστε τί ἔδει τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ δεηθῆναι δανεῖσαι τὰς
χιλίας δραχμὰς τὸν Βοιώτιον ναύαρχον καὶ ἀποδοῦναι
Φιλίππῳ μᾶλλον ἢ οὐ τὸν χαλκὸν ὑποθεῖναι τῷ Φιλίπ-
54 πῳ; ἀλλ᾽ οὔθ᾽ ὁ χαλκὸς ὑπετέθη ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὔθ᾽
ὁ Βοιώτιος ναύαρχος ἐδανείσατο τὰς χιλίας δραχμὰς παρὰ
τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ἀλλὰ Τιμόθεος οὑτοσὶ ἐν ἀπορίᾳ
ὢν πολλῇ· τὴν δὲ χρείαν, εἰς ἣν κατεχρήσατο τῷ ἀργυρίῳ,
εἴρηκα ὑμῖν. ἀντὶ δὲ τοῦ χάριν ἀποδοῦναι ὧν ἐπιστεύθη

καὶ ἔλαβε παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, οἴεται δεῖν καὶ τὰ ἀρχαῖα, ἂν δύνηται, ἀποστερῆσαι.

Περὶ μὲν τοίνυν τῶν φιαλῶν καὶ τῆς μνᾶς τοῦ ἀργυ- 55
ρίου, ἣν ἐδανείσατο παρὰ τοῦ πατρὸς πέμψας τὸν ἀκόλουθον τὸν αὑτοῦ Αἰσχρίωνα τῆς νυκτὸς ὡς τὸν πατέρα τὸν ἐμόν, ἠρόμην αὐτὸν πρὸς τῷ διαιτητῇ εἰ ἔτι δοῦλος εἴη ὁ Αἰσχρίων, καὶ ἠξίουν αὐτὸν ἐν τῷ αὑτοῦ δέρματι τὸν ἔλεγχον διδόναι. ἀποκριναμένου δέ μοι τούτου ὅτι ἐλεύθερος εἴη, τῆς μὲν ἐξαιτήσεως ἐπέσχον, μαρτυρίαν δ' αὐτὸν ἠξίουν ἐμβαλέσθαι τοῦ Αἰσχρίωνος ὡς ἐλευθέρου ὄντος.‖ ὁ δὲ οὔτε μαρτυρίαν παρέσχετο, οὔθ' ὡς δοῦλον 56
τὸν Αἰσχρίωνα παραδοὺς ἐκ τοῦ σώματος τὸν ἔλεγχον ἠξίου γενέσθαι, φοβούμενος, ἂν μὲν μαρτυρίαν παράσχηται ὡς ἐλευθέρου ὄντος, μὴ ἐπισκηψάμενος ἐγὼ αὐτῷ τῶν ψευδομαρτυριῶν καὶ ἐξελέγξας τὰ ψευδῆ μεμαρτυρηκότα τὸν Αἰσχρίωνα ἐπὶ τόνδε τῶν κακοτεχνιῶν ἔλθοιμι κατὰ τὸν νόμον, εἰ δ' αὖ βασανίζειν παραδώσει, μὴ τὰς ἀληθείας κατείποι ὁ Αἰσχρίων. καίτοι καλὸν ἦν αὐτῷ, εἰ 57
τῶν ἄλλων λημμάτων τοῦ ἀργυρίου μάρτυρας μὴ εἶχε παρασχέσθαι, τοῦτό γ' ἐξελέγξαι ἐκ τοῦ Αἰσχρίωνος, ὡς οὐκ ἐλήφθησαν αἱ φιάλαι οὐδ' ἡ μνᾶ τοῦ ἀργυρίου, οὐδ' ἐπέμφθη ὁ Αἰσχρίων ὑπὸ τούτου ὡς τὸν πατέρα τὸν ἐμόν, καὶ τεκμηρίῳ τούτῳ καταχρήσασθαι πρὸς ὑμᾶς ὅτι ἐγὼ καὶ τἆλλα ψεύδομαι περὶ ὧν ἐγκαλῶ αὐτῷ, ὅπου γε ὅν φημι λαβεῖν οἰκέτην ὄντα τούτου τὰς φιάλας καὶ τὴν μνᾶν τοῦ ἀργυρίου, οὗτος βασανιζόμενος οὐ φαίνεται λαβών. εἰ τοίνυν τοῦτο ἰσχυρὸν ἦν ἂν τούτῳ πρὸς ὑμᾶς 58
τεκμήριον, ὅτι ἐξεδίδου τὸν Αἰσχρίωνα, ὃν πεμφθῆναί φημι ὑπὸ τούτου καὶ λαβεῖν τὰς φιάλας παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ καὶ τὴν μνᾶν τοῦ ἀργυρίου δανείσασθαι, κἀμοὶ γενέσθω τεκμήριον πρὸς ὑμᾶς ὅτι συνειδώς με ἀληθῆ ἐγκαλοῦντα οὐ τολμᾷ τὸν Αἰσχρίωνα παραδοῦναι.

Ἀπολογίαν τοίνυν ποιήσεται ὅτι ἐν τοῖς γράμμασι τοῖς 59
τραπεζιτικοῖς ἐπ' Ἀλκισθένους ἄρχοντος ἦν ἐγγεγραμμένος τό τε ναῦλον τῶν ξύλων εἰληφὼς καὶ τὴν τιμὴν τῶν φιαλῶν ἣν ἀπέτισε Τιμοσθένει ὑπὲρ τούτου ὁ πατήρ, καὶ ὅτι αὐτὸς ἐν τούτῳ ‖ τῷ χρόνῳ οὐκ ἐπεδήμει ἀλλὰ παρὰ

βασιλεῖ ἦν. περὶ δὴ τούτου σαφῶς ὑμᾶς βούλομαι διδά-
ξαι, ἵν᾽ ἀκριβῶς εἰδῆτε ὃν τρόπον ἔχει τὰ γράμματα τὰ
60 *ἀπὸ τῆς τραπέζης. οὗτος μὲν γὰρ ἐν μὲν τῷ Θαργηλιῶνι*
μηνὶ ἐπ᾽ Ἀστείου ἄρχοντος, μέλλων ἀνάγεσθαι ὡς βασιλέα,
συνέστησε τὸν Φιλώνδαν τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ· τοῦ δ᾽ ὑστέρου
ἐνιαυτοῦ, ἐπὶ Ἀλκισθένους ἄρχοντος, ἀφικνεῖται ὁ Φιλών-
δας ἄγων τὰ ξύλα ἐκ τῆς Μακεδονίας, καὶ ἔλαβε τὸ ναῦλον
τῶν ξύλων παρὰ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ἀποδημοῦντος
τούτου παρὰ βασιλεῖ. ἐγράψαντο οὖν, ὅτε ἐδίδοσαν τὸ
ἀργύριον, ὀφείλοντα τοῦτον, οὐχ ὅτε συνέστησε τὸν Φι-
61 *λώνδαν τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ ἐπιδημῶν. ὅτε μὲν γὰρ συνέ-*
στησεν, οὐδέπω τὰ ξύλα ἧκεν, ἀλλ᾽ ἤμελλεν ἐπ᾽ αὐτὰ ὁ
Φιλώνδας τὴν πορείαν ποιεῖσθαι· ὅτε δ᾽ ἦλθε τὰ ξύλα
ἄγων, οὗτος μὲν ἀπεδήμει, ὁ δὲ Φιλώνδας ἔλαβε τὸ ναῦ-
λον τῶν ξύλων καθάπερ οὗτος ἐκέλευσε, καὶ ἀνεκομίσθη
εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ἐν Πειραιεῖ τὴν τούτου τὰ ξύλα. ὅτι
δ᾽ οὐκ εὐπορῶν οὗτος ἐξέπλει ἐνθένδε, ἴστε μὲν καὶ αὐ-
τοὶ ὅσοις αὐτοῦ ἡ οὐσία ἀφωρισμένη ἦν, οὓς νῦν ἀποστε-
ρεῖ· ἵνα δ᾽ εἰδῆτε ὅτι καὶ ἄνευ ἐνεχύρων ὤφειλέ τισι τῶν
πολιτῶν, οὐκ ἔχων ὑποθεῖναι τὰ ἄξια, ἀνάγνωθί μοι
τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

62 *Περὶ δὲ τῶν φιαλῶν, ἃς ᾐτήσατο μὲν ἐν τῷ μαιμακτη-*
ριῶνι μηνὶ ὁ Αἰσχρίων ὁ ἀκόλουθος τούτου ἐπ᾽ Ἀστείου
ἄρχοντος, ἐπιδημοῦντος τούτου, ὅτε ὑπεδέξατο Ἀλκέτην
καὶ Ἰάσονα, γεγραμμένου δὲ τὴν τιμὴν ὀφείλοντος τούτου
ἐπ᾽ Ἀλκισθένους ‖ ἄρχοντος, — τέως μὲν ᾤετο αὐτὸν ἀποί-
σειν τὰς φιάλας, ἃς ᾐτήσατο, ὁ πατήρ· ἐπειδὴ δ᾽ οὗτος
μὲν ἀπῆλθε, τὰς δὲ φιάλας οὐκ ἀπενηνόχει, οὐδ᾽ ἦσαν αἱ
φιάλαι τοῦ Τιμοσθένους κείμεναι παρὰ τῷ Φορμίωνι,
ἥκων δ᾽ ἀπῄτει τὰς φιάλας, τότε μὲν ἀπέτισε τὴν τιμὴν
τῶν φιαλῶν τῷ Τιμοσθένει, ἐγράψατο δ᾽ ὁ πατὴρ αὐτῷ
63 *τοῦτον ὀφείλοντα πρὸς τὸ ἄλλο χρέως. ὥστ᾽ ἂν ταύτῃ*
ἀπολογίᾳ καταχρῆται, ὅτι οὐκ ἐπεδήμει ἐν τοῖς χρόνοις
οἷς γέγραπται τὴν τιμὴν τῶν φιαλῶν ὀφείλων, ὑποβάλ-
λετε αὐτῷ ὅτι ἔλαβες μὲν ἐπιδημῶν, ἐπειδὴ δ᾽ οὐκ ἀπέ-
φερες, ἀπεδήμεις δέ, οὐκ ἦσαν δ᾽ αἱ φιάλαι ἃς ὁ θέμενος

ἀπήτει, ἐγράφης τὴν τιμὴν αὐτῶν ὀφείλων ὅτε ἀπετίσθη
τῶν φιαλῶν. ἀλλὰ νὴ Δία, φήσει ἴσως, ἔδει τὸν πατέρα 64
τὸν ἐμὸν ἀπαιτεῖν αὐτὸν τὰς φιάλας. ἀλλ᾽ ἑώρα σε ὡς
ἠπορου̃. κᾆτα περὶ μὲν τοῦ ἄλλου χρέως σοι ἐπίστευε,
καὶ ἡγεῖτο, ἐπειδὰν ἔλθῃς, ἀπολήψεσθαι παρὰ σοῦ εὐ-
πορήσαντος· περὶ δὲ τῶν φιαλῶν σοι ἀπιστήσειν ἤμελλεν;
καὶ ὑπέσχετο μὲν δεομένου σου τὸ ναῦλον τῶν ξύλων πα-
ρασχήσειν, ὅτε ἀνήγου πρὸς βασιλέα· ἕνεκα δὲ τῶν φια-
λῶν, δυεῖν οὐσῶν, ἀπιστήσειν σοι ἤμελλεν; καὶ τὸ μὲν
ἄλλο χρέως σε οὐκ ἀπῄτει, ἀπορούμενον ὁρῶν, τὰς δὲ
φιάλας ἤμελλεν;

Βούλομαι τοίνυν ὑμῖν καὶ περὶ τῆς προκλήσεως τοῦ 65
ὅρκου εἰπεῖν, ἣν ἐγώ τε τοῦτον προεκαλεσάμην καὶ οὗτος
ἐμέ. ἐμβαλομένου γὰρ ἐμοῦ ὅρκον εἰς τὸν ἐχῖνον, ἠξίου
οὗτος καὶ αὐτὸς ὀμόσας ἀπηλλάχθαι. ἐγὼ δ᾽ εἰ μὲν μὴ
περιφανῶς αὐτὸν ᾔδειν πολλοὺς καὶ μεγάλους ὅρκους
ἐπιωρκηκότα καὶ πόλεσι καὶ ἰδιώταις, ἔδωκ᾽ ‖ ἂν αὐτῷ
τὸν ὅρκον· νῦν δέ μοι δοκεῖ, μαρτύρων μὲν ὄντων ἐμοὶ
ὡς ἔλαβον τὸ ἀργύριον ἀπὸ τῆς τραπέζης οἷς οὗτος ἐκέ-
λευσε δοῦναι, περιφανῶν δὲ τεκμηρίων, δεινὸν εἶναι τὸν
ὅρκον δοῦναι τούτῳ, ὃς οὐχ ὅπως εὐορκήσει πρόνοιαν
ποιήσεται, ἀλλ᾽ οὐδὲ τῶν ἱερῶν αὐτῶν ἕνεκα τοῦ πλεο-
νεκτήματος ἀπέσχηται. τὰ μὲν οὖν καθ᾽ ἕκαστα πόλλ᾽ ἂν 66
εἴη λέγειν ὧν ἐπιώρκηκεν οὗτος ῥᾳδίως· οὓς δὲ περιφα-
νέστατα καὶ ὑμεῖς αὐτῷ πάντες σύνιστε ὅρκους ἐπιωρκη-
κότι, τούτους ἀναμνήσω ὑμᾶς. ἴστε γὰρ τοῦτον ἐν τῷ
δήμῳ ὀμόσαντα καὶ ἐπαρασάμενον αὑτῷ ἐξώλειαν, εἰ μὴ
γράψαιτο Ἰφικράτην ξενίας, καὶ καθιερώσαντα τὴν οὐσίαν
τὴν ἑαυτοῦ. ὀμόσας δὲ ταῦτα καὶ ὑποσχόμενος ἐν τῷ δήμῳ,
οὐ πολλῷ χρόνῳ ὕστερον ἕνεκα τοῦ συμφέροντος αὑτῷ
ἔδωκε τῷ υἱεῖ τῷ ἐκείνου τὴν θυγατέρα. ὃς οὖν οὔθ᾽ ὑμᾶς 67
ᾐσχύνθη ἐξαπατῆσαι ὑποσχόμενος, νόμων ὄντων, ἐάν τις
τὸν δῆμον ὑποσχόμενος ἐξαπατήσῃ, εἰσαγγελίαν εἶναι περὶ
αὐτοῦ, οὔτε τοὺς θεοὺς ὀμόσας καὶ ἐπαρασάμενος ἑαυτῷ
ἔδεισεν, οὓς ἐπιώρκησε, πῶς οὐκ εἰκός ἐστιν ἐμὲ τούτῳ
μὴ ἐθέλειν ὅρκον δοῦναι; οὔπω τοίνυν πολὺς χρόνος ἐστὶν
ἐξ ὅτου ἐν τῷ δήμῳ πάλιν διωμόσατο μὴ εἶναι αὑτῷ ἐφόδια.

*τῷ γήρᾳ ἱκανά, τοσαύτην οὐσίαν κεκτημένος· οὕτως ἄπλη-
68 στος καὶ αἰσχροκερδὴς ὁ τρόπος αὐτοῦ ἐστίν. ἡδέως δ' ἂν ἔγωγε πυθοίμην ὑμῶν εἰ ὀργίζεσθε τοῖς ἀνεσκευασμένοις τῶν τραπεζιτῶν. εἰ γὰρ ὀργίζοισθε δικαίως ὅτι ἀδικοῦσιν ὑμᾶς, πῶς οὐκ εἰκός ἐστι ‖ βοηθεῖν τοῖς μηδὲν ἀδικοῦσιν; καὶ μὴν διὰ τούτους τοὺς ἄνδρας αἱ τράπεζαι ἀνασκευάζονται, ὅταν ἀπορούμενοι μὲν δανείζωνται καὶ οἴωνται διὰ τὴν δόξαν πιστεύεσθαι δεῖν, εὐπορήσαντες δὲ μὴ ἀποδιδῶσιν ἀλλ' ἀποστερῶσιν.*

69 *Ὅσων μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἠδυνάμην ὑμῖν μάρτυρας παρασχέσθαι, μεμαρτυρήκασί μοι· ἔτι δὲ καὶ ἐκ τεκμηρίων δεδήλωκα ὑμῖν ὡς ὀφείλει Τιμόθεος τἀργύριον τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ. δέομαι οὖν ὑμῶν συνεισπρᾶξαί μοι τοὺς ὀφείλοντας ἅ μοι ὁ πατὴρ κατέλιπεν.*

ΠΡΟΣ ΠΟΛΥΚΛΕΑ ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΤΡΙΗΡΑΡΧΗΜΑΤΟΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ἀπολλόδωρος ὁ Πασίωνος τριηραρχήσας φιλοτίμως τὸν ὡρισμένον χρόνον ἐπετριηράρχησεν ἕτερον οὐκ ὀλίγον, τοῦ διαδόχου αὐτοῦ Πολυκλέους μὴ ἐλθόντος παραχρῆμα ἐπὶ τὴν ναῦν, τούτου δέ, ὅτε ἦλθεν, οὐ παραλαβόντος εὐθέως, ἀλλὰ σκηψαμένου περιμένειν τὸν συντριήραρχον. τοσούτου δὲ χρόνου ἐπιτριηραρχοῦντος, ἀξιοῖ κομίσασθαι τὸ ἀνάλωμα παρὰ Πολυκλέους Ἀπολλόδωρος.*

*‖ Τοῖς τοιούτοις τῶν ἀγώνων ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τοὺς διαγνωσομένους προσήκει μάλιστα προσέχειν τὸν νοῦν. οὐ γὰρ ἐμὸς καὶ Πολυκλέους ἴδιός ἐστιν ὁ ἀγὼν μόνον, ἀλλὰ καὶ τῆς πόλεως κοινός. ὧν γὰρ τὰ μὲν ἐγκλήματα ἴδιά ἐστιν αἱ δὲ βλάβαι κοιναί, πῶς οὐχ ὑπὲρ τούτων εἰκός ἐστιν ἀκούσαντας ὑμᾶς ὀρθῶς διαγνῶναι; εἰ μὲν γὰρ περὶ ἄλλου τινὸς συμβολαίου ἐγὼ διαφερόμενος πρὸς Πολυκλέα εἰσῄειν εἰς ὑμᾶς, ἐμὸς ἂν ἦν καὶ Πολυκλέους ὁ ἀγών· νῦν δὲ περί τε διαδοχῆς νεώς ἐστιν ὁ λόγος καὶ ἐπιτριηραρχήματος πέντε μηνῶν καὶ ἓξ ἡμερῶν ἀνηλωμένου, καὶ περὶ τῶν νόμων, πότερα κύριοί εἰσιν ἢ
2 οὔ. ἀναγκαῖον δή μοι δοκεῖ εἶναι ἅπαντα ἐξ ἀρχῆς διηγήσασθαι πρὸς ὑμᾶς. καὶ πρὸς θεῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ δέομαι ὑμῶν, μή με ἡγήσησθε ἀδολεσχεῖν, ἐὰν διὰ μακρο-*

τέρων διηγῶμαι τά τε ἀναλώματα καὶ τὰς πράξεις, ὡς
ἐν καιρῷ τε ἕκασται καὶ χρήσιμοι τῇ πόλει ἐδιακονήθη-
σαν. εἰ μὲν γάρ τις ἔχει με ἐπιδεῖξαι ὡς ψεύδομαι, ἀνα-
στὰς ἐν τῷ ἐμῷ ὕδατι ἐξελεγξάτω, ὅ τι ἂν μὴ φῇ με
ἀληθὲς λέγειν πρὸς ὑμᾶς· εἰ δ' ἐστὶν ἀληθῆ καὶ μηδεὶς
ἄν μοι ἀντείποι ἄλλος ἢ οὗτος, δέομαι ὑμῶν ἁπάντων
δικαίαν δέησιν. ὅσοι μὲν τῶν στρατιωτῶν ‖ ἐστὲ καὶ παρ- 3
ῆτε ἐκεῖ, αὐτοί τε ἀναμνήσθητε καὶ τοῖς παρακαθημέ-
νοις φράζετε τήν τ' ἐμὴν προθυμίαν καὶ τὰ συμβάντα ἐν
τῷ τότε καιρῷ τῇ πόλει πράγματα καὶ τὰς ἀπορίας, ἵν'
ἐκ τούτων εἰδῆτε ὁποῖός τίς εἰμι περὶ ἃ ἂν προστάξητε
ὑμεῖς· ὅσοι δ' αὐτοῦ ἐπεδημεῖτε, σιγῇ μου ἀκοῦσαι διη-
γουμένου ἅπαντα πρὸς ὑμᾶς καὶ ἐπὶ τούτων ἑκάστῳ, οἷς
ἂν λέγω, τούς τε νόμους παρεχομένου καὶ τὰ ψηφίσματα,
τά τε τῆς βουλῆς καὶ τὰ τοῦ δήμου, καὶ τὰς μαρτυρίας.

Ἑβδόμῃ γὰρ φθίνοντος μεταγειτνιῶνος μηνὸς ἐπὶ Μό- 4
λωνος ἄρχοντος, ἐκκλησίας γενομένης καὶ εἰσαγγελθέντων
ὑμῖν πολλῶν καὶ μεγάλων πραγμάτων, ἐψηφίσασθε τὰς
ναῦς καθέλκειν τοὺς τριηράρχους· ὧν καὶ ἐγὼ ἦν. καὶ
τὸν μὲν καιρὸν τὸν συμβεβηκότα τῇ πόλει τότε οὐκ ἐμὲ
δεῖ διεξελθεῖν, ἀλλ' αὐτοὺς ὑμᾶς ἀναμνησθῆναι ὅτι Τῆνος
μὲν καταληφθεῖσα ὑπ' Ἀλεξάνδρου ἐξηνδραποδίσθη, Μιλ- 5
τοκύθης δ' ἀφειστήκει ἀπὸ Κότυος καὶ πρέσβεις ἐπεπόμ-
φει περὶ συμμαχίας, βοηθεῖν κελεύων καὶ τὴν Χερρόνησον
ἀποδιδούς, Προκοννήσιοι δὲ σύμμαχοι ὄντες ἱκέτευον ὑμᾶς
ἐν τῷ δήμῳ βοηθῆσαι αὐτοῖς, λέγοντες ὅτι ὑπὸ Κυζικη-
νῶν κατέχονται τῷ πολέμῳ καὶ κατὰ γῆν καὶ κατὰ θάλατ-
ταν, καὶ μὴ περιιδεῖν ἀπολομένους, ἔτι δὲ τῶν ἐμπόρων
καὶ τῶν ναυκλήρων περὶ ἔκπλουν ὄντων ἐκ τοῦ Πόντου,
καὶ Βυζαντίων καὶ Καλχηδονίων καὶ Κυζικηνῶν καταγόν-
των τὰ πλοῖα ἕνεκα τῆς ἰδίας χρείας τοῦ σίτου. ὧν ἀκού- 6
οντες τότε ὑμεῖς ἐν τῷ δήμῳ αὐτῶν τε λεγόντων καὶ τῶν
‖ συναγορευόντων αὐτοῖς, καὶ ὁρῶντες ἐν τῷ Πειραιεῖ τὸν
σῖτόν ἐπιτιμώμενον καὶ οὐκ ὄντα ἄφθονον ὠνεῖσθαι, ἐψη-
φίσασθε τάς τε ναῦς καθέλκειν τοὺς τριηράρχους καὶ
παρακομίζειν ἐπὶ τὸ χῶμα, καὶ τοὺς βουλευτὰς καὶ τοὺς
δημάρχους καταλόγους ποιεῖσθαι τῶν δημοτῶν καὶ ἀπο-

*φέρειν ναύτας, καὶ διὰ τάχους τὸν ἀπόστολον ποιεῖσθαι
καὶ βοηθεῖν ἑκασταχοῖ. καὶ ἐνίκησε τὸ Ἀριστοφῶντος
ψήφισμα τουτί.*

ΨΗΦΙΣΜΑ.

7 *Τοῦ μὲν ψηφίσματος τοίνυν ἀκηκόατε, ὦ ἄνδρες δι-
κασταί· ἐγὼ δ' ἐπειδή μοι οὐκ ἦλθον οἱ ναῦται οἱ κατα-
λεγέντες ὑπὸ τῶν δημοτῶν, ἀλλ' ἢ ὀλίγοι καὶ οὗτοι ἀδύ-
νατοι, τούτους μὲν ἀφῆκα, ὑποθεὶς δὲ τὴν οὐσίαν τὴν
ἐμαυτοῦ καὶ δανεισάμενος ἀργύριον πρῶτος ἐπληρωσάμην
τὴν ναῦν, μισθωσάμενος ναύτας ὡς οἷόν τ' ἦν ἀρίστους,
δωρεὰς καὶ προδόσεις δοὺς ἑκάστῳ αὐτῶν μεγάλας. ἔτι
δὲ σκεύεσιν ἰδίοις τὴν ναῦν ἅπασαν κατεσκεύασα, καὶ τῶν
δημοσίων ἔλαβον οὐδέν, καὶ κόσμῳ ὡς οἷόν τ' ἦν κάλλιστα
καὶ διαπρεπέστατα τῶν τριηράρχων. ὑπηρεσίαν τοίνυν ἣν
8 ἐδυνάμην κρατίστην ἐμισθωσάμην. οὐ μόνον τοίνυν ὦ
ἄνδρες δικασταὶ τὰ κατὰ τὴν τριηραρχίαν ἀνήλισκον τότε
οὕτω πολυτελῆ ὄντα, ἀλλὰ καὶ τῶν χρημάτων ὧν εἰς τὸν
ἔκπλουν ἐψηφίσασθε εἰσενεχθῆναι μέρος οὐκ ἐλάχιστον
ἐγὼ ὑμῖν προεισήνεγκα. δόξαν γὰρ ὑμῖν ὑπὲρ τῶν δημο-
τῶν τοὺς βουλευτὰς ἀπενεγκεῖν τοὺς προεισοίσοντας τῶν
τε δημοτῶν καὶ τῶν ἐγκεκτημένων, προσαπηνέχθη μου
τοὔνομα ἐν τριττοῖς δήμοις διὰ τὸ φανερὰν εἶναί μου τὴν
9 οὐσίαν. καὶ τούτων ἐγὼ οὐδεμίαν ‖ πρόφασιν ποιησάμε-
νος, οὔτε ὅτι τριηραρχῶ καὶ οὐκ ἂν δυναίμην δύο λει-
τουργίας λειτουργεῖν, οὐδὲ οἱ νόμοι ἐῶσιν, ἔθηκα τὰς
προεισφορὰς πρῶτος. καὶ οὐκ εἰσεπραξάμην διὰ τὸ τότε
μὲν ἀποδημεῖν ὑπὲρ ὑμῶν τριηραρχῶν, ὕστερον δὲ κατα-
πλεύσας καταλαβεῖν τὰ μὲν εὔπορα ὑφ' ἑτέρων προεξει-
10 λεγμένα τὰ δ' ἄπορα ὑπόλοιπα. καὶ ταῦτα ὅτι ἀληθῆ
λέγω πρὸς ὑμᾶς, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας
τῶν τε τὰ στρατιωτικὰ τότε εἰσπραττόντων καὶ τῶν ἀπο-
στολέων, καὶ τοὺς μισθοὺς οὓς ταῖς ὑπηρεσίαις καὶ τοῖς
ἐπιβάταις κατὰ μῆνα ἐδίδουν, παρὰ τῶν στρατηγῶν σιτη-
ρέσιον μόνον λαμβάνων, πλὴν δυοῖν μηνοῖν μόνον μισθὸν
ἐν πέντε μησὶ καὶ ἐνιαυτῷ, καὶ τοὺς ναύτας τοὺς μισθω-
θέντας, καὶ ὅσον ἕκαστος ἔλαβεν ἀργύριον, ἵν' ἐκ τούτων
εἰδῆτε τὴν ἐμὴν προθυμίαν, καὶ οὗτος διότι παραλαβεῖν*

παρ᾽ ἐμοῦ τὴν ναῦν οὐκ ἤθελεν, ἐπειδή μοι ὁ χρόνος ἐξῆλθε τῆς τριηραρχίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅτι μὲν τοίνυν οὐ ψεύδομαι πρὸς ὑμᾶς περὶ ὧν εἶπον, 11
ὦ ἄνδρες δικασταί, τῶν μαρτυριῶν ἀναγιγνωσκομένων ἀκηκόατε· ἔτι δὲ περὶ ὧν μέλλω λέγειν, ἅπαντές μοι ὁμολογήσετε ὅτι ἀληθῆ ἐστιν. τριήρους γὰρ ὁμολογεῖται κατάλυσις εἶναι πρώτη μέν, ἐὰν μή μισθόν τις διδῷ, δευτέρα δέ, ἐὰν εἰς τὸν Πειραιᾶ μεταξὺ καταπλεύσῃ· ἀπόλειψίς τε γὰρ πλείστη γίγνεται, οἵ τε παραμένοντες τῶν ναυτῶν οὐκ ἐθέλουσι πάλιν ἐμβαίνειν, ἐὰν μή τις αὐτοῖς ἕτερον ἀργύριον διδῷ ὥστε τὰ οἰκεῖα διοικήσασθαι. ἃ ἐμοὶ ἀμφότερα συνέβη, ὦ ἄνδρες ‖ δικασταί, ὥστε πολυτελεστέραν μοι γενέσθαι τὴν τριηραρχίαν. καὶ γὰρ μισθὸν οὐδένα 12
λαβὼν παρὰ τοῦ στρατηγοῦ ὀκτὼ μηνῶν, κατέπλευσα τοὺς πρέσβεις ἄγων διὰ τὸ ἄριστά μοι πλεῖν τὴν ναῦν. καὶ ἐνθένδε πάλιν, προσταχθέν μοι ὑπὸ τοῦ δήμου Μένωνα τὸν στρατηγὸν ἄγειν εἰς Ἑλλήσποντον ἀντὶ Αὐτοκλέους ἀποχειροτονηθέντος, ᾠχόμην ἀναγόμενος διὰ τάχους, καὶ ἀντὶ μὲν τῶν ἀπολιπόντων με ναυτῶν ἑτέρους ἐμισθωσάμην ναύτας, δωρεὰς καὶ προδόσεις αὐτοῖς διδοὺς μεγάλας, τοῖς δὲ παραμείνασι τῶν ἀρχαίων ναυτῶν ἔδωκά τι εἰς διοίκησιν τῶν οἰκείων καταλιπεῖν πρὸς ᾧ πρότερον εἶχον, οὐκ ἀγνοῶν τὴν παροῦσαν χρείαν, ὡς ἀναγκαία ἦν 13
ἑκάστῳ, ἀπορῶν δ᾽ αὐτὸς ὡς μὰ τὸν Δία καὶ τὸν Ἀπόλλω οὐδεὶς ἄν μοι πιστεύσειεν, ὅστις μὴ ἀληθῶς παρηκολούθηκε τοῖς ἐμοῖς πράγμασιν· ὑποθεὶς δὲ τὸ χωρίον Θρασυλόχῳ καὶ Ἀρχένεῳ, καὶ δανεισάμενος τριάκοντα μνᾶς παρ᾽ αὐτῶν καὶ διαδοὺς τοῖς ναύταις ᾠχόμην ἀναγόμενος, ἵνα μηδὲν ἐλλείποι τῷ δήμῳ ὧν προσέταξε τὸ κατ᾽ ἐμέ. καὶ ὁ δῆμος ἀκούσας ταῦτα ἐπῄνεσέ τ᾽ ἐμὲ καὶ ἐπὶ δεῖπνον εἰς τὸ πρυτανεῖον ἐκάλεσεν. καὶ ὡς ταῦτ᾽ ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὴν μαρτυρίαν καὶ τὸ ψήφισμα τὸ τοῦ δήμου.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. ΨΗΦΙΣΜΑ.

Ἐπειδὴ τοίνυν εἰς Ἑλλήσποντον ἤλθομεν, καὶ ὅ τε χρό- 14
νος ἐξεληλύθει μοι τῆς τριηραρχίας, καὶ μισθὸς οὐκ ἀπε-

δόϑη τοῖς στρατιώταις ἀλλ' ἢ δυοῖν μηνοῖν, ἕτερός τε
στρατηγὸς ἧκε Τιμόμαχος, καὶ οὗτος διαδόχους οὐκ ἄγων
‖ ἐπὶ τὰς ναῦς, ἀϑυμήσαντές μοι πολλοὶ τοῦ πληρώματος
ᾤχοντο ἀπολείποντες τὴν ναῦν, οἳ μὲν εἰς τὴν ἤπειρον
στρατευσόμενοι, οἳ δ' εἰς τὰς Θασίων καὶ Μαρωνειτῶν
ναῦς, μισϑῷ μεγάλῳ πεισϑέντες καὶ ἀργύριον πολὺ προ-
15 λαβόντες, καὶ τὰ μὲν παρ' ἐμοῦ ἐξανηλωμένα ἤδη ὁρῶν-
τες, τὰ δὲ τῆς πόλεως ἀμελῆ, τὰ δὲ τῶν συμμάχων ἄπορα,
τὰ δὲ τῶν στρατηγῶν ἄπιστα, καὶ ὑπὸ πολλῶν αὖ τῷ
λόγῳ ἐξηπατημένοι, καὶ τὸν χρόνον ἐξήκοντα τῆς τριη-
ραρχίας καὶ τὸν πλοῦν οὐκέτ' ὄντα οἴκαδε, οὐδὲ διάδοχον
ἥκοντα ἐπὶ τὴν ναῦν, παρ' οὗ ἄν τις ἠξίωσεν ὠφεληϑῆναι.
ὅσῳ γὰρ φιλοτιμούμενος ἄμεινον ἐπληρωσάμην τὴν ναῦν
ἐρετῶν ἀγαϑῶν, τοσούτῳ μοι πλείστη ἀπόλειψις ἐγένετο
16 τῶν ἄλλων τριηράρχων. τοῖς μὲν γὰρ ἄλλοις, εἰ μή τι
ἄλλο, οἵ γ' ἐκ καταλόγου ἐλϑόντες ἐπὶ τὴν ναῦν παρέμε-
νον τηροῦντες τὴν οἴκαδε σωτηρίαν, ὁπότε αὐτοὺς ἀφήσει
ὁ στρατηγός· οἱ δ' ἐμοὶ ναῦται πιστεύοντες αὑτοῖς ἐπὶ
τῷ δύνασϑαι ἐλαύνειν, ὅπου ἤμελλον ἀργύριον πάλιν πλεῖ-
στον λήψεσϑαι, ἐνταῦϑ' ἀπῄεσαν, ἡγούμενοι τὴν ἐν τῷ
παρόντι εὐπορίαν κρείττω εἶναι αὐτοῖς τοῦ μέλλοντος
17 φόβου, εἴ ποτε ληφϑείησαν ὑπ' ἐμοῦ. τοιούτων τοίνυν
μοι τῶν πραγμάτων συμβεβηκότων, καὶ τοῦ στρατηγοῦ
ἅμα Τιμομάχου προστάξαντος πλεῖν ἐφ' Ἱερὸν ἐπὶ τὴν
παραπομπὴν τοῦ σίτου καὶ μισϑὸν οὐ διδόντος, εἰσαγ-
γελϑέντων δὲ ὅτι Βυζάντιοι καὶ Καλχηδόνιοι πάλιν κατά-
γουσι τὰ πλοῖα καὶ ἀναγκάζουσι τὸν σῖτον ἐξαιρεῖσϑαι,
δανεισάμενος ἐγὼ ἀργύριον παρ' Ἀρχεδήμου μὲν τοῦ Ἀνα-
φλυστίου ‖ πεντεκαίδεκα μνᾶς ἐπὶ τόκον, ὀκτακοσίας δὲ
δραχμὰς παρὰ Νικίππου τοῦ ναυκλήρου ναυτικὸν ἀνειλό-
μην, ὃς ἔτυχεν ὢν ἐν Σηστῷ, ἐπόγδοον, σωϑέντος δὲ τοῦ
18 πλοίου Ἀϑήναζε ἀποδοῦναι αὐτὸ καὶ τοὺς τόκους, καὶ
πέμψας Εὐκτήμονα τὸν πεντηκόνταρχον εἰς Λάμψακον,
δοὺς αὐτῷ ἀργύριον καὶ γράμματα πρὸς τοὺς ξένους τοῦ
πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ἐκέλευσά μοι αὐτὸν ναύτας μισϑώσα-
σϑαι ὡς ἂν δύνηται ἀρίστους· αὐτὸς δ' ὑπομείνας ἐν
Σηστῷ τοῖς τε παραμείνασι τῶν ἀρχαίων ναυτῶν ἔδωκα

τι ὅσον εἶχον, ἐπειδή μοι ὁ χρόνος ἐξῆκε τῆς τριηραρχίας,
καὶ ἑτέρους ναύτας ἐντελομίσθους προσέλαβον, ἐν ὅσῳ ὁ
στρατηγὸς τὸν ἀνάπλουν τὸν ἐφ᾽ Ἱερὸν παρεσκευάζετο.
ἐπειδὴ δ᾽ ὅ τε Εὐκτήμων ἧκεν ἐκ τῆς Λαμψάκου ἄγων 19
τοὺς ναύτας οὓς ἐμισθώσατο, καὶ ὁ στρατηγὸς παρήγγει-
λεν ἀνάγεσθαι, τῷ μὲν Εὐκτήμονι ἀσθενῆσαι ἐξαίφνης
συνέβη καὶ πάνυ πονήρως διετέθη. τούτῳ μὲν οὖν ἀπο-
δοὺς τὸν μισθὸν καὶ ἐφόδια προσθεὶς ἀπέπεμψα οἴκαδε·
αὐτὸς δὲ πεντηκόνταρχον ἕτερον λαβὼν ἀνηγόμην ἐπὶ τὴν
παραπομπὴν τοῦ σίτου, καὶ ἐκεῖ περιέμεινα πέντε καὶ
τετταράκοντα ἡμέρας, ἕως ὁ ἔκπλους τῶν πλοίων τῶν
μετ᾽ Ἀρκτοῦρον ἐκ τοῦ Πόντου ἐγένετο. ἀφικόμενος δ᾽ εἰς 20
Σηστὸν ἐγὼ μὲν ᾤμην οἴκαδε καταπλευσεῖσθαι, τοῦ τε
χρόνου μοι ἐξήκοντος καὶ ἐπιτετριηραρχημένων ἤδη μοι
δυοῖν μηνοῖν καὶ διαδόχου οὐχ ἥκοντος ἐπὶ τὴν ναῦν· ὁ
δὲ στρατηγὸς Τιμόμαχος, ἀφικομένων ὡς αὐτὸν πρέσβεων
Μαρωνειτῶν ‖ καὶ δεομένων αὐτοῖς τὰ πλοῖα παραπέμψαι
τὰ σιτηγά, προσέταξεν ἡμῖν τοῖς τριηράρχοις ἀναδησαμέ-
νοις τὰ πλοῖα ἕλκειν εἰς Μαρώνειαν, πλοῦν καὶ πολὺν καὶ
πελάγιον. καὶ ταῦθ᾽ ὑμῖν διηγησάμην ἐξ ἀρχῆς, ἵν᾽ εἰδῆτε 21
ὅσα ἀνηλωκὼς αὐτὸς καὶ ἡλίκης μοι γεγενημένης τῆς λει-
τουργίας ὕστερον ὅσα ἀναλώματα ὑπὲρ τούτου ἀνήλωσα
ἐπιτριηραρχῶν, οὐχ ἥκοντος τούτου ἐπὶ τὴν ναῦν, καὶ κιν-
δύνους ὅσους ἐκινδύνευσα αὐτὸς πρός τε χειμῶνα καὶ πρὸς
πολεμίους. μετὰ γὰρ τὴν παραπομπὴν τῶν πλοίων τὴν
εἰς Μαρώνειαν καὶ τὴν ἄφιξιν τὴν εἰς Θάσον, ἀφικόμενος
παρέπεμπε πάλιν ὁ Τιμόμαχος μετὰ τῶν Θασίων εἰς τὴν
Στρύμην σῖτον καὶ πελταστάς, ὡς παραληψόμενος αὐτὸς
τὸ χωρίον. παραταξαμένων δὲ Μαρωνειτῶν ἡμῖν ταῖς ναυ- 22
σὶν ὑπὲρ τοῦ χωρίου τούτου καὶ μελλόντων ναυμαχήσειν,
καὶ τῶν στρατιωτῶν ἀπειρηκότων, πλοῦν πολὺν πεπλευ-
κότων καὶ πλοῖα ἑλκόντων ἐκ Θάσου εἰς Στρύμην, ἔτι δὲ
χειμῶνος ὄντος καὶ τοῦ χωρίου ἀλιμένου, καὶ ἐκβῆναι οὐκ
ὂν οὐδὲ δειπνοποιήσασθαι πολεμίας τῆς χώρας οὔσης καὶ
περικαθημένων κύκλῳ τὸ τεῖχος καὶ ξένων μισθοφόρων
καὶ βαρβάρων προσοίκων, ἀναγκαῖον ἦν ἐπ᾽ ἀγκύρας ἀπο-
σαλεύειν τὴν νύκτα μετεώρους, ἀσίτους καὶ ἀγρύπνους,

φυλαττομένους μὴ τῆς νυκτὸς ἡμῖν ἐπιθῶνται αἱ Μαρω-
23 νειτῶν τριήρεις. ἔτι δὲ συνέβη τῆς νυκτὸς ὥρᾳ ἔτους ὕδωρ
καὶ βροντὰς καὶ ἄνεμον μέγαν γενέσθαι (ὑπ' αὐτὰς γὰρ
τὰς Πλειάδων δύσεις οἱ χρόνοι οὗτοι ἦσαν), ἐξ ὧν τίνα
οὐκ οἴεσθε ὦ ἄνδρες ‖ δικασταὶ τοῖς στρατιώταις ἀθυμίαν
ἐμπεσεῖν; πόσην δέ μοι μετὰ ταῦτα ἀπόλειψιν γενέσθαι
πάλιν τῶν ἀρχαίων ναυτῶν ταλαιπωρουμένων μὲν πολλὰ
ὠφελουμένων δὲ βραχέα, ὅσα ἐγὼ δυναίμην ἑκάστῳ δανει-
ζόμενος ἐπαρκέσαι πρὸς ᾧ πρότερον εἶχον παρ' ἐμοῦ, ἐπεὶ
ὅ γε στρατηγὸς οὐδὲ τὸ ἐφ' ἡμέραν αὐτοῖς τροφὴν διαρκῆ
ἐδίδου. καὶ ἤδη τρεῖς μῆνες ἐπετετριηράρχηντό μοι, καὶ
οὐδέπω οὗτος ἧκεν ἐπὶ τὴν ναῦν, ἀλλ' ἐμισθούμην ναύτας
ἀντὶ τῶν ἀπολιπόντων, δανειζόμενος ἀργύριον.

24 Μόνῳ τοίνυν τούτῳ τῶν ἄλλων διαδόχων οὐκ ἔστι πρό-
φασις ὑπολειπομένη, διότι οὐ πάλαι ἧκεν ἐπὶ τὴν ναῦν.
ὁ γὰρ Εὐκτήμων ὁ πεντηκόνταρχος ὡς ἐκ τοῦ Ἑλλησπόν-
του ἀπεστάλη οἴκαδε ἀσθενήσας, ἐπειδὴ κατέπλευσε καὶ
ἤκουσε τοῦτον ἐμοὶ διάδοχον καθεστηκότα, εἰδώς τόν τε
χρόνον ἐξήκοντά μοι τῆς τριηραρχίας καὶ ἤδη ἐπιτριηραρ-
χοῦντά με, παραλαβὼν Δεινίαν τὸν κηδεστὴν τὸν ἐμὸν
προσέρχεται αὐτῷ ἐν τῷ δείγματι, καὶ ἐκέλευσεν αὐτὸν
ὡς τάχιστα ἐπὶ τὴν ναῦν ἀποπλεῖν ὡς τῶν ἀναλωμάτων
πολλῶν ὄντων ἃ καθ' ἡμέραν ἑκάστην πρὸς τῷ παρὰ τοῦ
στρατηγοῦ σιτηρεσίῳ εἰς τὴν ναῦν διδομένῳ ἀνηλίσκετο,
25 καθ' ἕκαστον αὐτῷ διεξιὼν τούς τε μισθοὺς τοὺς τῇ ὑπη-
ρεσίᾳ καὶ τοῖς ἐπιβάταις κατὰ μῆνα διδομένους, τοῖς τε
ναύταις οὓς αὐτὸς ἐκ τῆς Λαμψάκου ἐμισθώσατο, καὶ τοῖς
ὕστερον ἐπεμβᾶσιν ἀντὶ τῶν ἀπολιπόντων, ἔτι δὲ ὃ τῶν
ἀρχαίων ναυτῶν ἑκάστῳ προσέθηκα δεηθέντι, ἐπειδή μοι
ὁ χρόνος ἐξῆκε τῆς τριηραρχίας, καὶ τἆλλα ὅσα ἦν τὰ
καθ' ἡμέραν ἑκάστην ἀναλισκόμενα εἰς τὴν ναῦν, οὐκ ἀπεί-
ρως ‖ ἔχων· διὰ γὰρ ἐκείνου πεντηκονταρχοῦντος καὶ ἠγο-
26 ράζετο καὶ ἀνηλίσκετο. καὶ περὶ τῶν σκευῶν ἔφραζεν αὐ-
τῷ ὅτι ἴδια ἔχοιμι καὶ δημόσιον οὐδέν· ὡς οὖν, ἔφη, ἢ
πείσων ἐκεῖνον διανοοῦ ἢ σκεύη ἔχων σαυτῷ ἀνάπλει.
οἶμαι δέ σοι, ἔφη, αὐτὸν οὐδὲν διοίσεσθαι· ὀφείλει γὰρ
ἀργύριον ἐκεῖ, ὃ διαλῦσαι βουλήσεται ἐκ τῆς τιμῆς τῶν

σκευῶν. ἀκούσας δ' οὗτος ταῦτα τοῦ τ' Εὐκτήμονος καὶ
τοῦ Δεινίου τοῦ κηδεστοῦ τοῦ ἐμοῦ, περὶ μὲν ὧν ἔλεγον
αὐτῷ οὐδὲν αὐτοῖς ἀποκρίνεται, γελάσαντα δ' ἔφασαν αὐ-
τὸν εἰπεῖν "ἄρτι μῦς πίττης γεύεται·" ἐβούλετο γὰρ Ἀθη-
ναῖος εἶναι. ἐπειδὴ τοίνυν τοῦ Εὐκτήμονος καὶ τοῦ Δει- 27
νίου ἀκούσας οὐδὲν ἐφρόντιζε, πάλιν αὐτῷ προσέρχονται
ὕστερον Πυθόδωρός τε ὁ Ἀχαρνεὺς καὶ Ἀπολλόδωρος ὁ
Λευκονοεύς, ἐπιτήδειοι ὄντες ἐμοὶ καὶ φίλοι, καὶ ἐκέλευον
αὐτὸν ἐπί τε τὴν ναῦν ἀπιέναι ὡς διάδοχον ὄντα, καὶ περὶ
τῶν σκευῶν ἔφραζον αὐτῷ ὅτι ἴδια ἔχοιμι ἅπαντα καὶ
δημόσιον οὐδέν· "εἰ μὲν οὖν ἐκείνοις ἐθέλεις χρῆσθαι, 28
κατάλιπε" ἔφασαν "ἀργύριον αὐτοῦ, καὶ μὴ διακινδύνευε
ἐκεῖσε ἄγων," ἵνα λύσωνταί μοι τὸ χωρίον, ἀποδόντες Ἀρ-
χένεῳ καὶ Θρασυλόχῳ τριάκοντα μνᾶς. περὶ δ' ἀποτριβῆς
τῶν σκευῶν ἤθελον αὐτῷ γράμματα γράφειν, καὶ ἐγγυη-
ταὶ αὐτοὶ γίγνεσθαι ὑπὲρ ἐμοῦ ἦ μὴν ἔσεσθαι αὐτῷ ὅ
τι ἂν καὶ τοῖς ἄλλοις τριηράρχοις πρὸς τοὺς διαδόχους ᾖ.
ὡς οὖν πάντα ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν ἀναγνώ-
σεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἐκ πολλῶν μὲν τοίνυν τεκμηρίων οἶμαι ὑμῖν ἐπιδείξειν 29
Πολυκλέα ὅτι οὔτε αὐτόθεν διενοεῖτο παραλαμβάνειν παρ'
ἐμοῦ τὴν ναῦν, οὔτ', ‖ ἐπειδὴ ὑφ' ὑμῶν καὶ τοῦ ψηφίσμα-
τος τοῦ ὑμετέρου ἠναγκάσθη ἐπὶ τὴν ναῦν ἀπιέναι, ἐλθὼν
ἠθέλησέ μοι διαδέξασθαι αὐτήν. οὗτος γὰρ ἐπειδὴ ἀφί-
κετο εἰς Θάσον ἤδη μου τέταρτον μῆνα ἐπιτριηραρχοῦν-
τος, παραλαβὼν ἐγὼ μάρτυρας τῶν τε πολιτῶν ὡς ἐδυ-
νάμην πλείστους καὶ τοὺς ἐπιβάτας καὶ τὴν ὑπηρεσίαν
προσέρχομαι αὐτῷ ἐν Θάσῳ ἐν τῇ ἀγορᾷ, καὶ ἐκέλευον
αὐτὸν τήν τε ναῦν παραλαμβάνειν παρ' ἐμοῦ ὡς διάδοχον
ὄντα, καὶ τοῦ ἐπιτετριηραρχημένου χρόνου ἀποδιδόναι μοι
τἀναλώματα. λογίσασθαι δ' ἤθελον αὐτῷ καθ' ἕκαστον, 30
ἕως μοι μάρτυρες παρῆσαν τῶν ἀνηλωμένων οἵ τε ναῦται
καὶ οἱ ἐπιβάται καὶ ἡ ὑπηρεσία, ἵν' εἴ τι ἀντιλέγοι εὐθὺς
ἐξελέγχοιμι. οὕτω γάρ μοι ἀκριβῶς ἐγέγραπτο ὥστ' οὐ
μόνον αὐτά μοι τἀναλώματα ἐγέγραπτο, ἀλλὰ καὶ ὅποι
ἀνηλώθη καὶ ὅ τι ποιούντων, καὶ ἡ τιμὴ τίς ἦν καὶ νό-

μισμα ποδαπόν, καὶ ὁπόσου ἡ καταλλαγὴ ἦν τῷ ἀργυρίῳ,
ἵν' εἴη ἀκριβῶς ἐξελέγξαι με τῷ διαδόχῳ, εἴ τι ἡγοῖτο
31 ψεῦδος αὐτῷ λογίζεσθαι. ἔτι δὲ καὶ πίστιν αὐτῷ ἐπι-
θεὶς ἠθέλησα λογίσασθαι τὰ ἀνηλωμένα. προκαλουμένου
δέ μου ταῦτα ἀπεκρίνατό μοι ὅτι οὐδὲν αὐτῷ μέλοι ὧν
λέγοιμι. ἐν δὲ τούτῳ ὑπηρέτης ἥκων παρὰ τοῦ στρατη-
γοῦ ἐμοὶ παρήγγελλεν ἀνάγεσθαι, οὐ τούτῳ τῷ διαδόχῳ,
οὗ ἡ λειτουργία ἤδη ἐγίγνετο· τούτου δὲ τὸ αἴτιον ἐγὼ
ὑμᾶς προϊόντος τοῦ λόγου διδάξω. τότε μὲν οὖν μοι ἐδό-
32 κει ἀνάγεσθαι καὶ πλεῖν οἷ ἐκέλευεν· ἐπειδὴ δὲ κατέ-
πλευσα πάλιν εἰς Θάσον, ἑλκύσας τὰ πλοῖα ‖ εἰς Στρύμην,
οἷ προσέταξεν ὁ στρατηγός, κελεύσας τοὺς ναύτας ἐν τῇ
νηὶ μένειν καὶ τοὺς ἐπιβάτας καὶ τὴν ὑπηρεσίαν, ἐκβὰς
αὐτὸς πορεύομαι ἐπὶ τὴν οἰκίαν οὗ κατήγετο Τιμόμαχος
ὁ στρατηγός, βουλόμενος κἀκείνου ἐναντίον παραδιδόναι
33 τὴν ναῦν Πολυκλεῖ τούτῳ πλήρη. καταλαμβάνω οὖν καὶ
τοῦτον ἐκεῖ καὶ τοὺς τριηράρχους καὶ τοὺς διαδόχους καὶ
ἄλλους τινὰς τῶν πολιτῶν, καὶ εἰσελθὼν εὐθὺς ἐναντίον
τοῦ στρατηγοῦ λόγους πρὸς αὐτὸν ἐποιούμην, καὶ ἠξίουν
αὐτὸν τήν τε ναῦν μοι παραλαμβάνειν καὶ τοῦ ἐπιτετριη-
ραρχημένου χρόνου ἀποδιδόναι μοι τὰ ἀναλώματα, καὶ
περὶ τῶν σκευῶν ἠρώτων αὐτόν, πότερα παραλήψεται ἢ
34 ἴδια σκεύη ἔχων ἥκοι ἐπὶ τὴν ναῦν. ταῦτα δέ μου προ-
καλουμένου αὐτόν, ἠρώτα με διότι σκεύη τε ἴδια μόνος
ἔχοιμι τῶν τριηράρχων, καὶ πότερα ἡ πόλις οὐκ εἰδείη
τινὰς δυναμένους σκεύη παρασχεῖν ταῖς ναυσίν, ὥστε αὐτὴ
μὴ παρέχειν. "ἢ σὺ τοσοῦτον" ἔφη "ὑπερπέπαικας πλού-
τῳ τοὺς ἄλλους ὥστε καὶ σκεύη ἴδια ἔχειν καὶ κόσμον
35 χρυσόπαστον μόνος τῶν τριηράρχων; τίς ἂν οὖν δύναιτ'"
ἔφη "τὴν σὴν μανίαν καὶ πολυτέλειαν ὑπομεῖναι, δι-
εφθαρμένον μὲν πλήρωμα καὶ εἰωθὸς ἀργύριον πολὺ προ-
λαμβάνειν καὶ ἀτελείας ἄγειν τῶν νομιζομένων ἐν τῇ νηὶ
λειτουργιῶν καὶ λοῦσθαι ἐν βαλανείῳ, τρυφῶντας δ' ἐπι-
βάτας καὶ ὑπηρεσίαν ὑπὸ μισθοῦ πολλοῦ καὶ ἐντελοῦς;
κακῶν δ'" ἔφη "διδάσκαλος γέγονας ἐν τῷ στρατεύματι,
καὶ αἴτιος εἶ μέρος τι καὶ τοῖς ἄλλοις τριηράρχοις πονη-
ροτέρους εἶναι τοὺς στρατιώτας, ζητοῦντας ταὐτὰ τοῖς

παρὰ ‖ σοί· ἔδει γάρ σε ταὐτὰ ποιεῖν τοῖς ἄλλοις τριηράρχοις." λέγοντος δ' αὐτοῦ ταῦτ', ἀπεκρινάμην αὐτῷ ὅτι 36
σκεύη μὲν διὰ τοῦτο οὐ λάβοιμι ἐκ τοῦ νεωρίου, ὅτι σὺ ἀδόκιμα ἐποίησας αὐτά. ἀλλ' εἰ μὲν βούλει, ταῦτα παράλαβε, εἰ δὲ μή, σκεύη σαυτῷ παρασκεύαζε. περὶ δὲ τῶν ναυτῶν καὶ τῶν ἐπιβατῶν καὶ τῆς ὑπηρεσίας, εἰ φῂς ὑπ' ἐμοῦ αὐτοὺς διεφθάρθαι, παραλαβὼν τὴν τριήρη αὐτὸς σαυτῷ κατασκεύασαι καὶ ναύτας καὶ ἐπιβάτας καὶ ὑπηρεσίαν οἵτινές σοι μηδὲν λαβόντες συμπλεύσονται. τὴν δὲ ναῦν παράλαβε· οὐ γάρ ἔτι μοι προσήκει τριηραρχεῖν· ὅ τε γὰρ χρόνος ἐξήκει μοι τῆς τριηραρχίας, καὶ ἐπιτετριηράρχηκα τέτταρας μῆνας. λέγοντος δέ μου ταῦτ', ἀποκρίνεταί 37
μοι ὅτι ὁ συντριήραρχος αὐτῷ οὐχ ἥκοι ἐπὶ τὴν ναῦν· οὔκουν παραλήψομαι μόνος τὴν τριήρη. ὡς οὖν ἀληθῆ ταῦτα λέγω πρὸς ὑμᾶς, καὶ ἐν μὲν τῇ ἀγορᾷ ἀπεκρίνατό μοι τὰ πρότερον, ὅτι οὐδὲν αὐτῷ μέλοι ὧν λέγοιμι, ἐν δὲ τῇ οἰκίᾳ οὗ ὁ Τιμόμαχος κατήγετο, ὅτι μόνος οὐ παραλήψεται τὴν ναῦν, τούτων ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Μετὰ ταῦτα τοίνυν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὡς οὔτε οὗτος 38
ἤθελέ μοι τὴν ναῦν διαδέχεσθαι, οὔτε τἀναλώματ' ἀπεδίδου τοῦ ἐπιτετριηραρχημένου χρόνου, ὅ τε στρατηγὸς ἐπέταττέ μοι ἀνάγεσθαι, προσελθὼν αὐτῷ ἐν Θάσῳ ἐν τῷ λιμένι ἐναντίον τοῦ στρατηγοῦ, πλήρους οὔσης τῆς τριήρους, ἔλεγον ἃ δίκαια μὲν οὐκ ἦν, ἀλλὰ πλεονεκτήματα τούτου, ἀναγκαῖα δ' ἐμοὶ ἐκ τῶν παρόντων εἰπεῖν, "ἐπειδὴ σὺ ‖ φῂς ὦ Πολύκλεις τὸν συντριήραρχον οὐχ 39
ἥκειν, τοῦ μὲν ἐπιτετριηραρχημένου χρόνου ἐγὼ ἐκεῖνον πράξομαι τἀναλώματ', ἂν δύνωμαι, τῶν τεττάρων μηνῶν· σὺ δὲ παραλαβὼν τὴν ναῦν πρῶτον μὲν τὸν ὑπὲρ σεαυτοῦ χρόνον τριηράρχησον, τοὺς ἓξ μῆνας· ἔπειτ' ἐὰν μὲν σοι ἔλθῃ ἐν τούτῳ ὁ συντριήραρχος, ἐκείνῳ παραδώσεις λειτουργήσας, ἐὰν δὲ μή, οὐδὲν δεινὸν πείσῃ δύο μῆνας ἐπιτριηραρχήσας. ἢ ἐγὼ μὲν ὁ τόν τε ὑπὲρ ἐμαυτοῦ χρό- 40
νον καὶ τοῦ συντριηράρχου λελειτουργηκὼς ἐπετριηράρχησα ὑπὲρ ὑμῶν· σὺ δ' οὐδὲν ἀνηλωκὼς οὐκ ἀξιοῖς οὐδὲ τὸν ὑπὲρ σεαυτοῦ χρόνον, παραλαβὼν τὴν ναῦν, λειτουρ-

γῆσαι, οὐδὲ τἀναλώματ᾽ ἀποδοῦναι;" λέγοντος δέ μου ταῦτα, ἀπεκρίνατό μοι ὅτι μύθους λέγοιμι. ὁ δὲ στρατηγὸς ἐμβαίνειν με ἐκέλευεν εἰς τὴν ναῦν καὶ ἀνάγεσθαι μεθ᾽ ἑαυτοῦ. ὡς οὖν ταῦτ᾽ ἀπεκρίνατο, ἀνάγνωθί μοι τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

41 Βούλομαι δ᾽ ὑμῖν καὶ τεκμήριόν τι εἰπεῖν, ἵν᾽ εἰδῆθ᾽ ὅτι περιφανῶς ἠδίκημαι. Ἁγνίᾳ γὰρ καὶ Πραξικλεῖ ὑπὸ τὸν αὐτὸν χρόνον κατέστησαν διάδοχοι Μνησίλοχός τε ὁ Περιθοίδης καὶ Φρασιηρίδης ὁ Ἀναφλύστιος. οὐκ ἀφικομένου δὲ τοῦ Φρασιηρίδου ἐπὶ τὴν ναῦν ὁ Μνησίλοχος ἐλθὼν εἰς
42 τὴν Θάσον παρέλαβέ τε παρὰ τοῦ Ἁγνίου τὴν τριήρη, καὶ ἐπιτριηράρχημα ἀπέδωκε τῷ Ἁγνίᾳ τοῦ χρόνου οὗ ἐπανήλωσεν ὑπὲρ αὐτῶν, ὅσον ἔπεισε, καὶ τὰ σκεύη παρὰ τοῦ Ἁγνίου ἐμισθώσατο, καὶ αὐτὸς ἐτριηράρχει. ὕστερον δ᾽ οἱ παρὰ τοῦ Φρασιηρίδου ἐλθόντες τῶν τε ἀνηλωμένων τὸ μέρος ἀπέδοσαν τῷ Μνησιλόχῳ, ‖ καὶ τοῦ λοιποῦ χρόνου ὅσα ἐδεῖτο εἰς τὴν ναῦν συνανήλισκον. καί μοι τούτων ἀνάγνωθι τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

43 Ἴσως οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ποθεῖτε ἀκοῦσαι διὰ τί ποτε ὁ στρατηγὸς οὐκ ἠνάγκαζε τοῦτον παραλαμβάνειν τὴν ναῦν, διάδοχον ἥκοντα ἐπ᾽ αὐτήν, τῶν νόμων οὕτως ἰσχυρῶν ὄντων. περὶ δὴ τούτων βούλομαι ὑμᾶς σαφῶς διδάξαι τὸ αἴτιον. Τιμόμαχος γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρῶτον μὲν ἐβούλετο εὖ κατεσκευασμένῃ τῇ τριήρει πρὸς
44 ἅπαντα χρῆσθαι. ᾔδειν οὖν ὅτι οὗτος μὲν παραλαβὼν αὐτὴν κακῶς ἤμελλε τριηραρχήσειν· οὔτε γὰρ τῷ τριηραρχήματι οὔτε τοῖς ἐπιβάταις καὶ τῇ ὑπηρεσίᾳ χρήσοιτο· οὐδεὶς γὰρ αὐτῷ παραμενοῖ. ἔτι δὲ πρὸς τούτοις, ὁπότε μὴ διδοὺς ἀργύριον προστάττοι πλεῖν, οὐκ ἤμελλεν αὐτῷ ἀνάξεσθαι ὥσπερ ἐγώ, ἀλλὰ πράγματα παρέξειν. πρὸς δὲ τούτῳ δανείζεται παρ᾽ αὐτοῦ τριάκοντα μνᾶς, ὥστε
45 μὴ ἀναγκάσαι παραλαβεῖν τὴν ναῦν. ἐξ ὧν δὲ μάλιστά μοι ὀργισθεὶς ἐπηρέαζε καὶ οὐδὲ λόγον ἑκάστοτε ἐδίδου οὐδὲ περὶ ἑνός, βούλομαι ὑμῖν σαφῶς διηγήσασθαι, ἵν᾽ εἰδῆτε ὅτι οὐ περὶ πλείονος ἐποιούμην οὔτε τὴν ἐμαυτοῦ

ῥᾳστώνην ἐν ἐκείνῳ τῷ χρόνῳ οὔτε τὴν ἐκείνου ῥώμην τοῦ δήμου τῶν Ἀθηναίων καὶ τῶν νόμων, ἀλλ' ἠνειχόμην καὶ ἔργῳ ἀδικούμενος καὶ λόγῳ προπηλακιζόμενος, ἃ πολλῷ μοι βαρύτερα ἦν τῶν ἀναλωμάτων. ὡς γὰρ ἐν 46
Θάσῳ διατριβαὶ τοῦ ναυτικοῦ ἐγίγνοντο, ἀφικνεῖται ἐκ Μεθώνης τῆς Μακεδονίας ὑπηρετικὸν εἰς Θάσον ἄγον ἄνδρα καὶ ἐπιστολὰς παρὰ ‖ Καλλιστράτου ὡς Τιμόμαχον, ἐν αἷς ἦν, ὡς ὕστερον ἐγὼ ταῦτ' ἐπυθόμην, ἀποπέμψαι αὐτῷ τριήρη τὴν ἄριστα πλέουσαν, ἵν' ἀφίκηται ὡς αὐτόν. εὐθὺς οὖν τῇ ὑστεραίᾳ ἅμα τῇ ἡμέρᾳ ὁ ὑπηρέτης ἐλθὼν ἐκέλευέ με καλεῖν εἰς τὴν ναῦν τοὺς ναύτας. ἐπεὶ 47
δὲ πλήρης ἦν, ἀναβαίνει Κάλλιππος ὁ Φίλωνος ὁ Αἰξωνεὺς καὶ φράζει πρὸς τὸν κυβερνήτην τὸν ἐπὶ Μακεδονίας πλοῦν πλεῖν. ἐπειδὴ δ' ἀφικόμεθα εἰς χωρίον τι ἐν τῇ ἀπαντικρὺ ἠπείρῳ, Θασίων ἐμπόριον, καὶ ἐκβάντες ἠριστοποιούμεθα, προσέρχεταί μοι τῶν ναυτῶν Καλλικλῆς Ἐπιτρέφους Θριάσιος, λέγων ὅτι βούλοιτό μοι διαλεχθῆναι ἐμόν τι πρᾶγμα. κελεύσαντος δέ μου, λέγει ὅτι βούλοιτό μοι χάριν ἀποδοῦναι καθ' ὅ τι δύναται ὧν αὐτῷ ἀπορηθέντι ἔδωκα. "σὺ οὖν" ἔφη "τὸν πλοῦν τοῦτον οἶ- 48
σθα ἐφ' ὅ τι πλεῖς ἢ ποῖ;" ἀποκριναμένου δ' ἐμοῦ αὐτῷ ὅτι οὐκ εἰδείην "ἀλλ' ἐγώ σοι" ἔφη "ἐρῶ· δεῖ γάρ σε ἀκούσαντα ὀρθῶς βουλεύσασθαι. μέλλεις γάρ" ἔφη "ἄγειν ἄνδρα φυγάδα, οὗ Ἀθηναῖοι θάνατον δὶς κατεψηφίσαντο, Καλλίστρατον ἐκ Μεθώνης εἰς Θάσον ὡς Τιμόμαχον τὸν κηδεστήν, ὡς ἐγώ" ἔφη "πέπυσμαι τῶν παίδων τῶν Καλλίππου. σὺ οὖν, ἐὰν σωφρονῇς, οὐδένα τῶν φευγόντων ἐάσεις εἰς τὴν ναῦν ἀναβαίνειν· οὐ γὰρ ἐῶσιν οἱ νόμοι." ἀκούσας δ' ἐγὼ ταῦτα τοῦ Καλλικλέους προσέρχομαι τῷ 49
Καλλίππῳ, καὶ ἐρωτῶ αὐτὸν ὅποι τε τὸν πλοῦν ποιεῖται καὶ ἐπὶ τίνα. διαχλευάσαντος δ' αὐτοῦ με καὶ ἀπειλήσαντος ἃ οὐδ' ἂν ὑμεῖς ἀγνοήσαιτε (τοῦ γὰρ τρόπου τοῦ Καλλίππου οὐκ ἀπείρως ἔχετε) λέγω δ' αὐτῷ ὅτι ἀκούω σε πλεῖν ‖ ἐπὶ Καλλίστρατον. ἐγὼ οὖν τῶν φευγόντων οὐδένα ἄξω, οὐδὲ πλεύσομαι ἐπ' αὐτόν· οἱ γὰρ νόμοι οὐκ ἐῶσιν ὑποδέχεσθαι τῶν φευγόντων οὐδένα, ἢ ἐν τοῖς αὐτοῖς κελεύουσιν ἐνέχεσθαι τὸν ὑποδεχόμενον τοὺς φεύγοντας.

ἀποπλευσοῦμαι οὖν πάλιν ὡς τὸν στρατηγὸν εἰς Θάσον.
50 *καὶ ἐπειδὴ ἐνέβησαν οἱ ναῦται, λέγω τῷ κυβερνήτῃ ἀπο-*
πλεῖν εἰς τὴν Θάσον. ἀντιλέγοντος δὲ τοῦ Καλλίππου καὶ
κελεύοντος πλεῖν εἰς τὴν Μακεδονίαν, οἷ προσέταξεν ὁ
στρατηγός, ἀποκρίνεται αὐτῷ Ποσείδιππος ὁ κυβερνήτης
ὅτι τριήραρχός τε ἐγὼ τῆς νεὼς εἴην καὶ ὑπεύθυνος, καὶ
τὸν μισθὸν παρ' ἐμοῦ λαμβάνοι· πλεύσοιτο οὖν οἷ ἐγὼ
51 *κελεύω, εἰς Θάσον ὡς τὸν στρατηγόν. ἀφικομένων δ' ἡμῶν*
τῇ ὑστεραίᾳ εἰς τὴν Θάσον, μεταπέμπεταί με ὁ Τιμόμαχος,
οὗ κατήγετο ἔξω τείχους. φοβούμενος δ' ἐγὼ μὴ δεθείην
διαβληθεὶς ὑπὸ τοῦ Καλλίππου, αὐτὸς μὲν οὐχ ὑπακούω,
ἀλλὰ λέγω τῷ ὑπηρέτῃ ὅτι εἴ τι βούλοιτό μοι διαλέγε-
σθαι, ἐν τῇ ἀγορᾷ ἔσομαι, τὸν δὲ παῖδα συμπέμπω αὐτῷ,
52 *ἵν' εἴ τί μοι προστάττοι, ἀκούσας ἀπαγγεῖλαι μοι. διὰ*
μὲν ταύτας τὰς αἰτίας, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἃς εἴρηκα πρὸς
ὑμᾶς, ὁ Τιμόμαχος οὐκ ἠνάγκαζε παραλαμβάνειν τοῦτον
τὴν ναῦν, ἔτι δὲ καὶ βουλόμενος αὐτὸς χρῆσθαι τῇ νηὶ ὡς
ἄριστα πλεούσῃ. τὴν μὲν γὰρ τοῦ Θρασυλόχου τοῦ Ἀνα-
γυρασίου τριήρη, ἐφ' ἧς αὐτὸς ἔπλει, τὸν Θρασύλοχον τῷ
Καλλίππῳ μισθῶσαι τὴν τριηραρχίαν ἔπεισεν, ἵν' αὐτο-
κράτωρ ὢν ὁ Κάλλιππος τῆς νεὼς περιάγοι τὸν Καλλί-
στρατον· αὐτὸς δ' ἀναβὰς ἐπὶ τὴν ἐμὴν ναῦν περιέπλει
πανταχοῖ, ἕως ἀφίκετο εἰς Ἑλλήσποντον.

53 ‖*Ἐπειδὴ δ' οὐκέτι χρεία ἦν αὐτῷ τριήρων, ἐμβιβάσας*
μοι Λυκῖνον τὸν Παλληνέα ἄρχοντα εἰς τὴν ναῦν, καὶ
προστάξας αὐτῷ καθ' ἡμέραν ἀργύριον διδόναι τοῖς ναύ-
ταις, ἀποπλεῖν οἴκαδέ με ἐκέλευεν. ἐπειδὴ τοίνυν κατα-
πλέοντες οἴκαδε ἦμεν ἐν Τενέδῳ, καὶ οὔτε ὁ Λυκῖνος, ᾧ
προσέταξεν ὁ Τιμόμαχος, ἐδίδου τοῖς ναύταις σιτηρέσιον
(οὐ γὰρ ἔφη ἔχειν ἀλλ' ἐκ Μυτιλήνης λήψεσθαι), οἵ τε
στρατιῶται εἶχον οὐδὲν ὅτου ἂν ἐπισιτίσαιντο, ἄσιτοι δὲ
54 *οὐκ ἂν ἠδύναντο ἐλαύνειν, πάλιν παραλαβὼν ἐγὼ μάρτυ-*
ρας τῶν πολιτῶν, προσελθὼν Πολυκλεῖ τούτῳ ἐν Τενέδῳ
ἐκέλευον αὐτὸν τήν τε ναῦν παραλαμβάνειν ὡς διάδοχον
ὄντα, καὶ τὸ ἐπιτριηράρχημα ἀποδιδόναι τοῦ χρόνου οὗ
ἐπανήλωσα ὑπὲρ τούτου ἐπιτριηραρχῶν, ἵνα μὴ πρόφασις
αὐτῷ γένοιτο ἀπολογίας πρὸς ὑμᾶς, ὡς ἐγὼ διὰ τοῦτο

οὐκ ἤθελον αὐτῷ παραδοῦναι τὴν ναῦν, φιλοτιμούμενος, ἵνα καταπλεύσαιμι οἴκαδε ἐπὶ νεὼς εὖ πλεούσης καὶ ἐνδειξαίμην ὑμῖν τὰ ἀναλώματα. οὐκ ἐθέλοντος δ' αὐτοῦ 55
παραλαμβάνειν, τῶν δὲ ναυτῶν ἀργύριον αἰτούντων ἵν' ἀγοράσωνται τὰ ἐπιτήδεια, πάλιν αὐτῷ προσέρχομαι μάρτυρας ἔχων, καὶ ἠρώτων αὐτὸν εἰ ἀναπλεύσειεν ἔχων ἀργύριον ὡς διαδεξόμενός μοι τὴν ναῦν ἢ οὔ. ἀποκριναμένου δ' αὐτοῦ ὅτι ἔχων ἀργύριον ἥκοι, ἐκέλευον αὐτόν μοι δανεῖσαι ὑποθέμενον τὰ σκεύη τῆς νεώς, ἵν' ἔχοιμι διαδοῦναι τοῖς ναύταις καὶ κατακομίσαι τὴν ναῦν, ἐπειδὴ οὐ βούλεται παραλαβεῖν διάδοχος ὤν. δεομένου δέ μου ταῦτα, 56
ἀπεκρίνατό μοι ὅτι οὐδ' ἀκαρῆ δανείσοι. ἐγὼ μὲν οὖν παρὰ ξένων Τενεδίων τοῦ πατρός, Κλεάνακτος καὶ Ἐπηράτου, ἐδανεισάμην ‖ καὶ ἔδωκα τοῖς ναύταις τὸ σιτηρέσιον· διὰ γὰρ τὸ Πασίωνος εἶναι καὶ ἐκεῖνον ἐπεξενῶσθαι πολλοῖς καὶ πιστευθῆναι ἐν τῇ Ἑλλάδι οὐκ ἠπόρουν, ὅπου δεηθείην δανείσασθαι. ὡς οὖν ταῦτ' ἀληθῆ πρὸς ὑμᾶς λέγω, τούτων ὑμῖν τὰς μαρτυρίας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅσων μὲν τοίνυν ὑμῖν ἠδυνάμην τὰς μαρτυρίας παρα- 57
σχέσθαι τῶν παραγενομένων, ὡς παρεδίδουν τὴν ναῦν Πολυκλεῖ πολλάκις, οὗτος δ' οὐκ ἤθελε παραλαβεῖν, ἀνέγνωκεν ὑμῖν· ἔτι δὲ καὶ ἐκ τεκμηρίων ἱκανῶν δεδήλωκα ὑμῖν διότι οὐκ ἤθελε παραλαβεῖν τὴν ναῦν. βούλομαι δ' ὑμῖν καὶ τὸν νόμον ἀναγνωσθῆναι τὸν περὶ τῶν διαδόχων, ἵν' εἰδῆτε ἡλίκων τῶν ἐπιτιμίων ὄντων ἐάν τις μὴ διαδέξηται τὴν ναῦν ἐν τῷ χρόνῳ τῷ εἰρημένῳ, κατεφρόνησεν οὐκ ἐμοῦ μόνον ἀλλὰ καὶ ὑμῶν καὶ τῶν νόμων. καὶ διὰ 58
μὲν τοῦτον πάντα τῇ πόλει ἄπρακτα γέγονε καὶ τοῖς συμμάχοις· οὔτε γὰρ ἀφίκετο ἐπὶ τὴν ναῦν κατὰ τὸν νόμον, οὔτ' ἐπειδὴ ἦλθεν ἠθέλησε διαδέξασθαι· ἐγὼ δὲ καὶ τὸν ὑπὲρ ἐμαυτοῦ ὑμῖν χρόνον καὶ τὸν ὑπὲρ τοῦ συντριηράρχου ἐλειτούργησα, καὶ ἐπειδὴ ἐξῆλθέ μοι ὁ χρόνος τῆς τριηραρχίας, προστάττοντός μοι τοῦ στρατηγοῦ πλεῖν ἐφ' Ἱερὸν παρέπεμψα τῷ δήμῳ τὸν σῖτον, ἵν' ἔχητε ἄφθονον 59
ὠνεῖσθαι καὶ μηδὲν ὑμῖν κατ' ἐμὲ ἐλλείπηται, καὶ ἄλλα ὅσα ἢ ἐμοὶ ἢ τῇ τριήρει ἐβουλήθη ὁ στρατηγὸς χρῆσθαι

*παρέσχον αὐτῷ, οὐ μόνον τὴν οὐσίαν ἀναλίσκων ἀλλὰ
καὶ τῷ σώματι κινδυνεύων, συνεπιπλέων, τῶν οἰκείων μοι
πραγμάτων τοιούτων συμβεβηκότων ἐν τῷ τότε καιρῷ
60 ὥστε ὑμᾶς ἂν ἀκούσαντας ἐλεῆσαι. ἡ μέν γε ‖ μήτηρ
ἔκαμνε καὶ ἐπιθάνατος ἦν ἐμοῦ ἀποδημοῦντος, ὥστε μὴ
δύνασθαι ἂν ἔτι αὐτὴν βοηθῆσαι τοῖς ἐμοῖς πράγμασιν
ἀνηλωμένοις, ἀλλ' ἢ βραχέα· ἑκταῖος γὰρ ἥκων ἐτύγχανον,
καὶ ἐκείνη ἰδοῦσά με καὶ προσειπασα τὴν ψυχὴν ἀφῆκεν,
οὐκέτι τῶν ὄντων κυρία οὖσα ὥστε δοῦναι ὅσα ἐβούλετό
μοι. πολλάκις δὲ πρότερον μετεπέμπετό με, ἀφικέσθαι
61 δεομένη αὐτόν, εἰ μὴ τῇ τριήρει οἷόν τ' εἴη. ἡ δὲ γυνή,
ἣν ἐγὼ περὶ πλείστου ποιοῦμαι, ἀσθενῶς διέκειτο πολὺν
χρόνον ἐν τῇ ἐμῇ ἀποδημίᾳ. τὰ δὲ παιδία μικρά, ἡ δ'
οὐσία ὑπόχρεως. ἡ δὲ γῆ οὐχ ὅπως τινὰ καρπὸν ἤνεγκεν,
ἀλλὰ καὶ τὸ ὕδωρ ἐν ἐκείνῳ τῷ ἐνιαυτῷ, ὡς πάντες ἴστε,
ἐκ τῶν φρεάτων ἐπέλιπεν, ὥστε μηδὲ λάχανον γενέσθαι
ἐν τῷ κήπῳ. οἱ δὲ δεδανεικότες ἧκον ἐπὶ τοὺς τόκους,
ἐπειδὴ ὁ ἐνιαυτὸς ἐξῆλθεν, εἰ μή τις ἀποδιδοίη αὐτοῖς
62 κατὰ τὰς συγγραφάς. ὧν ἀκούοντά με καὶ παρὰ τῶν
ἀφικνουμένων λόγῳ, τὰ δὲ καὶ δι' ἐπιστολῶν παρὰ τῶν
οἰκείων, τίνα με οἴεσθε ψυχὴν ἔχειν ἢ πόσα δάκρυα ἀφιέ-
ναι, τὰ μὲν ἐκλογιζόμενον περὶ τῶν παρόντων, τὰ δὲ καὶ
ποθοῦντα ἰδεῖν παιδία καὶ γυναῖκα καὶ μητέρα, ἣν ἐγὼ
οὐ πολλὰς ἐλπίδας εἶχον ζῶσαν καταλήψεσθαι, ὧν τί
ἥδιόν ἐστιν ἀνθρώπῳ, ἢ τοῦ ἕνεκ' ἄν τις εὔξαιτο τούτων
στερηθεὶς ζῆν;*

63 *Τοιούτων τοίνυν μοι συμβεβηκότων πραγμάτων, οὐ
περὶ πλείονος ἐποιησάμην τὰ ἐμαυτοῦ ἴδια ἢ τὰ ὑμέτερα,
ἀλλ' ἡγούμην δεῖν καὶ χρημάτων ἀναλισκομένων κρείττων
εἶναι καὶ τῶν οἴκοι ἀμελουμένων καὶ γυναικὸς καὶ μητρὸς
νοσούσης, ὥστε μήτε τὴν τάξιν αἰτιάσασθαί μέ τινα λι-
64 πεῖν μήτε τὴν ‖ τριήρη τῇ πόλει ἄχρηστον γενέσθαι. ἀνθ'
ὧν ἁπάντων νῦν ὑμῶν δέομαι, ὥσπερ ἐγὼ ὑμῖν εὔτακτον
καὶ χρήσιμον ἐμαυτὸν παρέσχον, οὕτω καὶ ὑμᾶς νυνὶ περὶ
ἐμοῦ πρόνοιαν ποιησαμένους, καὶ ἀναμνησθέντας ἁπάν-
των ὧν τε διηγησάμην πρὸς ὑμᾶς, τῶν τε μαρτυριῶν ὧν
παρεσχόμην καὶ τῶν ψηφισμάτων, βοηθῆσαι μὲν ἐμοὶ*

ἀδικουμένῳ, τιμωρήσασθαι δ' ὑπὲρ ὑμῶν, εἰσπρᾶξαι δὲ
τὰ ὑπὲρ τούτου ἀνηλωμένα. ἢ τίς ἐθελήσει φιλοτιμεῖσθαι
πρὸς ὑμᾶς, ὅταν ὁρῶσι μήτε τοῖς χρηστοῖς καὶ εὐτάκτοις
χάριν οὖσαν μήτε τοῖς πονηροῖς καὶ ἀκοσμοῦσι τιμωρίαν
παρ' ὑμῶν; ἀναγνώσεται δὲ καὶ τὸν νόμον ὑμῖν καὶ τὰ 65
ἀναλώματα τοῦ χρόνου οὗ ἐπετριηράρχησα ὑπὲρ τούτου,
καθ' ἕκαστον, καὶ τοὺς λιπόνεως, ὅσον ἕκαστος ἔχων ἀρ-
γύριον ἀπέδρα καὶ ὅπου, ἵν' εἰδῆτε ὅτι οὔτε νῦν πρὸς
ὑμᾶς ψεῦδος οὐδὲν λέγω οὔτε ἐν τῷ πρόσθεν χρόνῳ,
ἡγοῦμαί τε δεῖν τὸν μὲν ὑπὸ τῶν νόμων χρόνον ὡρισμέ-
νον ἀμέμπτως ὑμῖν λειτουργεῖν, τοὺς δὲ καταφρονοῦντας
καὶ ὑμῶν καὶ τῶν νόμων καὶ οὐκ ἐθέλοντας πείθεσθαι
τοῖς νόμοις ἐξελέγξας ἐν ὑμῖν ἀδικοῦντας τιμωρήσασθαι.
εὖ δ' ἴστε ὅτι οὐ περὶ τῶν ἐμῶν ἰδίων μᾶλλον τιμωρή- 66
σεσθε Πολυκλέα ἢ οὐχ ὑπὲρ ὑμῶν αὐτῶν, οὐδὲ περὶ τῶν
παρεληλυθότων τριηράρχων ἐπιμέλειαν ποιήσεσθε μόνον
ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν μελλόντων πρόνοιαν, ὥστε μήτε τοὺς
λειτουργοῦντας ἀθυμεῖν μήτε τοὺς διαδόχους καταφρονεῖν
τῶν νόμων, ἀλλ' ἀπιέναι ἐπὶ τὰς ναῦς ὅταν κατασταθῶ-
σιν. ἃ προσήκει ὑμᾶς ἐνθυμηθέντας ὀρθῶς καὶ ‖ δικαίως
διαγνῶναι περὶ ἁπάντων.

Ἡδέως δ' ἂν ὑμῶν πυθοίμην, ὦ ἄνδρες δικασταί, τίν' 67
ἂν ποτε γνώμην περὶ ἐμοῦ εἴχετε, εἰ τοῦ τε χρόνου ἐξή-
κοντος καὶ τούτου μὴ ἥκοντος ἐπὶ τὴν ναῦν μὴ ἐπετριη-
ράρχησα κελεύοντος τοῦ στρατηγοῦ ἀλλὰ πλέων ᾠχόμην.
ἆρ' οὐκ ἂν ὠργίζεσθέ μοι καὶ ἡγεῖσθε ἂν ἀδικεῖν με; εἰ
τοίνυν ἂν ἐμοὶ τότε ὠργίζεσθε ὅτι οὐκ ἐπετριηράρχησα,
πῶς οὐχὶ νῦν προσήκει ὑμᾶς τοῦτον εἰσπρᾶξαί μοι τὰ
ἀναλώματα ἃ ἐγὼ ὑπὲρ τούτου ἀνάλωσα, τὸν οὐ δια-
δεξάμενον τὴν ναῦν;

Ὅτι δ' οὐκ ἐμοὶ μόνῳ οὐ διεδέξατο τὴν ναῦν, ἀλλὰ καὶ 68
πρότερον Εὐριπίδῃ συντριήραρχος ὢν καὶ συνθηκῶν οὐ-
σῶν αὐτοῖς τοὺς ἓξ μῆνας ἑκάτερον πλεῖν, ἐπειδὴ Εὐρι-
πίδης ἐξέπλευσε καὶ ὁ χρόνος ἐξῆκεν, οὐ διεδέξατο τὴν
ναῦν αὐτῷ, ἀναγνώσεται τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΣΤΕΦΑΝΟΥ ΤΗΣ ΤΡΙΗΡΑΡΧΙΑΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Πολλῶν καὶ μεγάλων πραγμάτων κατεπειγόντων τοὺς Ἀθηναίους τριήρεις πληρῶσαι καὶ τῆς κατὰ θάλατταν ἐπιμεληθῆναι δυνάμεως, γράφεται ψήφισμα τῶν τριηράρχων τὸν μὲν πρῶτον τῶν ἄλλων τὴν ναῦν παρέχοντα πεπληρωμένην τὸν στέφανον λαβεῖν, τὸν δὲ μὴ πρὸ τῆς ἕνης καὶ νέας, ἥτις ἐστὶν ἡ τελευταία τοῦ μηνός, περιορμίσαντα τὴν ναῦν* ‖ *ἐπὶ τὸ χῶμα δεθῆναι. τὸ χῶμα δὲ ἦν οἰκοδόμημα ἐν τῷ λιμένι προβεβλημένον προσορμίσεως ἕνεκα καὶ ἀγορᾶς τῶν ναυτῶν. Ἀπολλόδωρος οὖν ὁ Πασίωνος πρῶτος τὴν ναῦν περιορμίσας ἔλαβε τὸν στέφανον. προτεθείσης δὲ πάλιν δοκιμασίας, ὅστις κάλλιστα παρεσκευάσατο τὴν τριήρη, στεφανῶσαι καὶ τοῦτον, ἀντιποιεῖται καὶ τούτου τοῦ στεφάνου ὁ Ἀπολλόδωρος.*

*Εἰ μὲν ὅτῳ πλεῖστοι συνείποιεν, ὦ βουλή, τὸ ψήφισμα
ἐκέλευε δοῦναι τὸν στέφανον, κἂν ἀνόητος ἦν εἰ λαβεῖν
αὐτὸν ἠξίουν, Κηφισοδότου μόνου μοι συνειρηκότος, τού-
τοις δὲ παμπόλλων. νῦν δὲ τῷ πρώτῳ παρασκευάσαντι
τὴν τριήρη τὸν ταμίαν προσέταξεν ὁ δῆμος δοῦναι, πε-
ποίηκα δὲ τοῦτ᾽ ἐγώ· διό φημι δεῖν αὐτὸς στεφανοῦσθαι.
2 θαυμάζω δὲ καὶ τούτων ὅτι τῆς τριήρους ἀμελήσαντες
τοὺς ῥήτορας παρεσκεύασαν, καὶ δοκοῦσί μοι παντὸς διη-
μαρτηκέναι τοῦ πράγματος, καὶ νομίζειν οὐχὶ τοῖς ποιοῦ-
σιν ἃ δεῖ χάριν ὑμᾶς ἔχειν, ἀλλὰ τοῖς φάσκουσιν, οὐ τὸν
αὐτὸν τρόπον ἐγνωκότες ὅνπερ ἐγὼ περὶ ὑμῶν. καὶ κατ᾽
αὐτὸ δὴ τοῦτο δικαίως ἂν ἔχοιτ᾽ εὐνοϊκωτέρως ἐμοί· φαί-
3 νομαι γὰρ βελτίους ὑμᾶς ὑπολαμβάνων ἢ οὗτοι. ἐχρῆν
μὲν οὖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ δίκαιον ἦν τοὺς τὸν στέ-
φανον οἰομένους ‖ δεῖν παρ᾽ ὑμῶν λαβεῖν αὐτοὺς ἀξίους
ἐπιδεικνύναι τούτου, μὴ ἐμὲ κακῶς λέγειν· ἐπειδὴ δὲ
τοῦτο παρέντες ἐκεῖνο ποιοῦσιν, ἀμφότερ᾽ αὐτοὺς ἐπιδείξω
ψευδομένους, ἅ τε αὐτοὺς ἐνεκωμίασαν καὶ ὅσα εἰς ἡμᾶς
ἐβλασφήμησαν, ἐξ αὐτῶν τῶν πεπραγμένων ἑκατέροις.
4 Ψήφισμα γὰρ ὑμῶν ποιησαμένων, ὃς ἂν μὴ πρὸ τῆς
ἕνης καὶ νέας ἐπὶ χῶμα τὴν ναῦν περιορμίσῃ, δῆσαι καὶ
δικαστηρίῳ παραδοῦναι, καὶ ταῦτα κυρωσάντων, ἐγὼ μὲν
περιώρμισα καὶ στέφανον διὰ ταῦτα παρ᾽ ὑμῶν ἔλαβον,
οὗτοι δ᾽ οὐ καθείλκυσαν, ὥστ᾽ ἔνοχοι δεσμῷ γεγόνασιν.*

πῶς οὖν οὐκ ἀτοπώτατον ἂν διαπράξαισθε ἔργον, εἰ τοὺς
καθ' ἑαυτῶν ἐάσαντας τίμημα τοιοῦτον ἐπαχθῆναι, τού-
τους στεφανώσαντες ὑμεῖς φαίνοισθε; τὰ σκεύη τοίνυν, 5
ὅσα δεῖ παρέχειν τὴν πόλιν τοῖς τριηράρχοις, ἐγὼ μὲν ἐκ
τῶν ἰδίων ἀνήλωσα καὶ τῶν δημοσίων ἔλαβον οὐδέν, οὗτοι
δ' ὑμετέροις κέχρηνται καὶ τῶν σφετέρων οὐδὲν εἰς ταῦτα
προεῖνται. καὶ μὴν οὐδ' ἂν ἐκεῖνό γ' ἔχοιεν εἰπεῖν, ὡς
ἀνεπειρῶντο ἐμοῦ πρότεροι· πρὶν γὰρ ἧφθαι μόνον τῆς
τριήρους τούτους ἐπεπλήρωτό μοι, καὶ πάντες ἑωρᾶθ'
ὑμεῖς ἀναπειρωμένην τὴν ναῦν. ἔτι τοίνυν ὑπηρεσίαν τὴν 6
κρατίστην ἔλαβον, πολλῷ πλεῖστον ἀργύριον δούς. οὗτοι
δ' εἰ μὲν εἶχον χείρονα ἡμῶν, οὐδὲν ἂν ἦν δεινόν· νῦν δ'
οὐδ' ὁποιαντινοῦν μεμίσθωνται, περὶ τοῦ πλείονος ἀντι-
λέγοντες. καίτοι πῶς εἰσὶ δίκαιοι ταῦτα μὲν ὕστερον
ἐξαναπληροῦν, νῦν δ' ὡς πρῶτοι παρασκευασάμενοι τὸν
στέφανον λαβεῖν;

Ἡγοῦμαι τοίνυν, ὅτι μὲν δικαιότατ' ἂν στεφανώσαιτε 7
ἐμέ, καὶ μηδὲν ‖ εἰπόντος ἐμοῦ γιγνώσκειν ὑμᾶς· ὅτι δ' οὐ
μέτεστι μόνοις τούτοις περὶ τοῦ στεφάνου λόγος, τοῦτ'
ἐπιδεῖξαι βούλομαι. πόθεν οὖν τοῦτο μάλιστ' ἔσται δῆ-
λον; ἀφ' ὧν αὐτοὶ πεποιήκασι· σκεψάμενοι γὰρ τὸν ἐξ
ἐλαχίστου τριηραρχεῖν βουλόμενον, μεμισθώκασι τὴν λει-
τουργίαν. καίτοι πῶς οὐκ ἄδικον τῶν μὲν ἀναλωμάτων
ἀφεστηκέναι, τῶν δὲ γιγνομένων δι' ἐκεῖνα τιμῶν ἀξιοῦν
αὑτοῖς μετεῖναι; καὶ τοῦ μὲν μὴ περιορμίσαι τὴν ναῦν
τότε τὸν μεμισθωμένον αἰτιᾶσθαι, τῶν δὲ καλῶς δεδια-
κονημένων νῦν αὑτοῖς κελεύειν χάριν ὑμᾶς ἔχειν; δεῖ τοί- 8
νυν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μὴ μόνον ἐκ τούτων σκοπεῖν
τὸ δίκαιον, ἀλλὰ καὶ ἐξ ὧν αὐτοὶ πρότερον πεποιήκατε,
ταὐτὰ τινῶν διαπραξαμένων τούτοις. ὅτε γὰρ τῇ ναυ-
μαχίᾳ τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον ἐνικήθητε, τότε τῶν τριηράρ-
χων τοὺς μεμισθωκότας τὰς τριηραρχίας αἰτιωτάτους τοῦ
γεγενημένου νομίζοντες παρεδώκατε εἰς τὸ δικαστήριον,
καταχειροτονήσαντες προδεδωκέναι τὰς ναῦς καὶ λελοιπέ-
ναι τὴν τάξιν. καὶ κατηγόρει μὲν Ἀριστοφῶν, ἐδικάζετε δ' 9
ὑμεῖς· εἰ δὲ μὴ μετριωτέραν ἔσχετε τὴν ὀργὴν τῆς ἐκείνων
πονηρίας, οὐδὲν αὐτοὺς ἐκώλυε τεθνάναι. ταὐτὰ τοίνυν

εἰδότες οὗτοι πεπραγμέν' αὐτοῖς καὶ ἐκείνοις, οὐχὶ φρίτ-
τουσιν ἐν ὑμῖν ὑπὲρ ὧν προσήκει παθεῖν αὐτούς, ἀλλὰ
δημηγοροῦσι κατ' ἄλλων καὶ στεφανοῦν κελεύουσιν αὐτούς.
καίτοι σκέψασθε τίν' ἄν ποτε δόξαιτε βεβουλεῦσθαι τρό-
πον, εἰ διὰ τὴν αὐτὴν πρόφασιν τοὺς μὲν θανάτου κρί-
10 ναντες τοὺς δὲ στεφανώσαντες φανείητε. καὶ μὴν οὐ μόνον
εἰ τοῦτο ποιήσαιτε, ‖ δοκοῖτ' ἂν ἁμαρτεῖν, ἀλλ' εἰ μὴ καὶ
κολάσαιτε τοὺς τὰ τοιαῦτα ποιοῦντας, ἔχοντες. οὐ γὰρ
ἐπειδὰν ἐάσητέ τι τῶν ὑμετέρων ἀπολέσθαι, τότε χρὴ
χαλεπαίνειν, ἀλλ' ἐν ᾧ τὰ μὲν ὑμέτερ' ἐστὶ σῷα, καθορᾶτε
δὲ τοὺς ἐφεστηκότας δι' αἰσχροκέρδειαν οὐχὶ προσήκουσαν
πρόνοιαν περὶ σωτηρίας αὐτῶν ποιουμένους. καὶ μηδεὶς
ὑμῶν ἐπιτιμήσῃ τῷ λόγῳ, πικρὸν εἶναι νομίσας, ἀλλὰ
τοῖς τὸ ἔργον αὐτὸ πεποιηκόσι· διὰ γὰρ τούτους τοιοῦ-
11 τος ἐστίν. θαυμάζω δ' ἔγωγε, τί δή ποτε τῶν μὲν ναυ-
τῶν τοὺς ἀπολειπομένους, ὧν τριάκοντα δραχμὰς ἕκαστος
ἔχει μόνας, δέουσι καὶ κολάζουσιν οὗτοι, τῶν δὲ τριηράρ-
χων τοὺς μὴ συμπλέοντας, ὧν τριάκοντα μνᾶς εἰς ἐπί-
πλουν εἴληφεν ἕκαστος, οὐ ταὐτὰ ποιεῖθ' ὑμεῖς, ἀλλ' ἐὰν
μὲν πένης ὢν τις δι' ἔνδειαν ἁμάρτῃ, τοῖς ἐσχάτοις ἐπι-
τιμίοις ἐνέξεται, ἐὰν δὲ πλούσιος ὢν δι' αἰσχροκέρδειαν
ταὐτὰ ποιήσῃ, συγγνώμης τεύξεται. καὶ ποῦ τὸ πάντας
ἔχειν ἴσον καὶ δημοκρατεῖσθαι φανεῖται, τοῦτον τὸν τρό-
12 πον ὑμῶν ταῦτα βραβευόντων; ἔτι τοίνυν ἔμοιγε δοκεῖ
κἀκεῖνο ἀλόγως ἔχειν, τὸν μὲν εἰπόντα τι μὴ κατὰ τοὺς
νόμους, ἐὰν ἁλῷ, τὸ τρίτον μέρος ἠτιμῶσθαι τοῦ σώμα-
τος, τοὺς δὲ μὴ λόγον ἀλλ' ἔργον παράνομον πεποιηκότας
μηδεμίαν δοῦναι δίκην. καὶ μήν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι,
πάντες ὑμεῖς φήσετε τὸ πρὸς τὰ τοιαῦτα πρᾴως ἔχειν
προδιδάσκειν ἑτέρους ἀδίκους εἶναι.
13 Βούλομαι τοίνυν, ἐπειδήπερ παρῆλθον, καὶ τὰ συμβαί-
νοντα ἀπὸ τῶν τοιούτων ὑμῖν διεξελθεῖν. ἐπειδὰν γάρ
τις μισθωσάμενος τριηραρχίαν ἐκπλεύσῃ, ‖ πάντας ἀν-
θρώπους ἄγει καὶ φέρει, καὶ τὰς μὲν ὠφελείας ἰδίᾳ
καρποῦται, τὰς δὲ δίκας τούτων ὁ τυχὼν δίδωσιν ὑμῶν,
καὶ μόνοις ὑμῖν οὐδαμόσε ἔστιν ἄνευ κηρυκείου βαδίσαι
διὰ τὰς ὑπὸ τούτων ἀνδροληψίας καὶ σύλας κατεσκευα-

σμένας· ὥστε τῇ γ' ἀληθείᾳ σκοπῶν ἄν τις εὕροι τὰς 14
τοιαύτας τριήρεις οὐχ ὑπὲρ ὑμῶν ἀλλὰ καθ' ὑμῶν ἐκ-
πεπλευκυίας. τὸν γὰρ ὑπὲρ τῆς πόλεως τριήραρχον οὐκ
ἀπὸ τῶν κοινῶν προσδοκᾶν χρὴ πλουτήσειν, ἀλλ' ἀπὸ τῶν
ἰδίων τὰ τῆς πόλεως ἐπανορθώσειν, εἴπερ ἔσται τι τῶν
δεόντων ὑμῖν. τούτων δὲ τἀναντία ἕκαστος ἐγνωκὼς ἐκ-
πλεῖ· καὶ γάρ τοι τὰ τῶν αὐτῶν τρόπων ἁμαρτήματα
ταῖς ὑμετέραις βλάβαις ἐπανορθοῦνται. καὶ τούτων οὐδέν 15
ἐστιν ἄλογον. δεδώκατε γὰρ τοῖς βουλομένοις ἀδικεῖν, ἂν
μὲν λάθωσιν, ἔχειν, ἂν δὲ ληφθῶσι, συγγνώμης τυχεῖν·
τοῖς οὖν ἠμεληκόσι δόξης ἄδεια ποιεῖν ὅ τι ἂν βούλωνται
γέγονεν. τῶν μὲν τοίνυν ἰδιωτῶν τοὺς μετὰ τοῦ παθεῖν
μανθάνοντας ἀπροσκέπτους ὀνομάζομεν· ὑμᾶς δ', οἵτινες
οὐδὲ πεπονθότες πολλάκις ἤδη φυλάττεσθε, τί τις καλέ-
σειεν ἄν;

Ἄξιον τοίνυν καὶ περὶ τῶν συνειρηκότων εἰπεῖν. οὕτω 16
γὰρ ἡγοῦνταί τινες ἐξουσίαν εἶναι σφίσι καὶ ποιεῖν ὅ τι
βούλονται καὶ λέγειν παρ' ὑμῖν, ὥστε τῶν ποτὲ συγκατη-
γορούντων μετ' Ἀριστοφῶντος καὶ πικρῶν ὄντων τοῖς με-
μισθωκόσι τὰς τριηραρχίας νῦν κελεύουσί τινες τούτους
στεφανῶσαι, καὶ δυοῖν θάτερον ἐξελέγχουσιν αὑτούς, ἢ
τότ' ἐκείνους ἀδίκως συκοφαντοῦντες ἢ νῦν τοῖσδ' ἐπὶ
μισθῷ συνηγοροῦντες. καὶ χαρίσασθαι κελεύουσιν ὑμᾶς, 17
ὥσπερ περὶ δωρεᾶς ‖ ἀλλ' οὐ περὶ νικητηρίων τῶν λόγων
ὄντων, ἢ καὶ χάριν τιθεμένων διὰ τῶν τοιούτων τοῖς ἀμε-
λοῦσιν ὑμῶν, ἀλλ' οὐ διὰ τῶν βελτιόνων τοῖς ὑπηρετοῦ-
σιν ἃ δεῖ χαρίζεσθαι προσῆκον. ἐπειθ' οὕτως ὀλιγωροῦσι
τοῦ δοκεῖν ἐπιεικεῖς εἶναι καὶ παντελῶς τἄλλα πάρεργα
πρὸς τὸ λαβεῖν νομίζουσιν, ὥστ' οὐ μόνον τοῖς πρότερον
ῥηθεῖσιν ὑφ' αὑτῶν ἐναντία τολμῶσι δημηγορεῖν, ἀλλὰ
καὶ νῦν οὐ ταὐτὰ λέγουσιν ἑαυτοῖς, οἵτινες τοὺς μὲν ναύ-
τας φασὶ δεῖν οἰκείους εἶναι τῆς τριήρους τῆς ληψομένης
τὸν στέφανον, τῶν δὲ τριηράρχων τοὺς ἠλλοτριωκότας αὐ-
τοὺς ἀπὸ τῆς λειτουργίας, τούτους στεφανῶσαι κελεύουσιν.
καὶ φασὶ μὲν οὐδένα τούτων πρότερον παρασκευάσασθαι, 18
κελεύουσι δὲ κοινῇ στεφανοῦν ἡμᾶς, τοῦ ψηφίσματος οὐ
ταῦτα λέγοντος. ἐγὼ δὲ τοσούτου δέω τοῦτο συγχωρεῖν

ὅσουπερ καὶ μεμισθωκέναι τὴν τριηραρχίαν· οὔτε γὰρ
τοῦθ' ὑπομείναιμ' ἂν οὔτ' ἐκεῖν' ἐποίησα. προσποιοῦνται
μὲν τοίνυν ὑπὲρ τοῦ δικαίου συνηγορεῖν, σπουδάζουσι δὲ
μᾶλλον ἢ προῖκ' ἄν τις ὑμῶν πράττων, ὥσπερ ἄξια τοῦ
μισθοῦ ποιῆσαι προσῆκον ἑαυτοῖς, ἀλλ' οὐ γνώμην ἀπο-
19 φήνασθαι. εἶθ' ὥσπερ οὐχὶ πολιτείας κοινῆς μετέχοντες
καὶ διὰ ταῦτα τῷ βουλομένῳ λέγειν ἐξόν, ἀλλ' ἱερωσύνην
ἰδίαν αὐτοί τινα ταύτην ἔχοντες, ἐὰν ὑπὲρ τῶν δικαίων ἐν
ὑμῖν τις εἴπῃ, δεινὰ πάσχουσι καὶ θρασὺν εἶναι φασιν.
καὶ εἰς τοσοῦτον ἀναισθησίας προήκουσιν ὥστ' οἴονται,
τὸν ἅπαξ εἰρηκότα ἂν καλέσωσιν ἀναιδῆ, σφᾶς αὐτοὺς
20 πάντα τὸν βίον καλοὺς κἀγαθοὺς νομίζεσθαι. καίτοι διὰ
μὲν τὰς τούτων δημηγορίας πολλὰ χεῖρον ἔχει, || διὰ δὲ
τοὺς οἰομένους δεῖν τὰ δίκαια ἀντιλέγειν οὐ πάντ' ἀπό-
λωλεν. τοιούτους τοίνυν τοὺς συνηγοροῦντας αὐτοῖς παρ-
εσκευασμένοι, καὶ τοσαύτην βλασφημίαν εἰδότες οὖσαν
καθ' ἑαυτῶν τοῖς βουλομένοις τι λέγειν φλαῦρον, ὅμως
εἰς λόγον ἠξίωσαν καταστῆναι καὶ κακῶς τιν' ἐτόλμησαν
εἰπεῖν, οἷς ἀγαπητὸν ἦν μὴ πάσχουσι κακῶς αὐτοῖς.
21 Τοῦ τοίνυν τούτους ἀδίκους εἶναι καὶ θρασεῖς οὐδένες
ὑμῶν εἰσὶν αἰτιώτεροι· παρὰ γὰρ τῶν λεγόντων, οὓς ἴστε
ἐπὶ μισθῷ τοῦτο πράττοντας, πυνθάνεσθε ποῖόν τιν'
ἕκαστον δεῖ νομίζειν, οὐκ αὐτοὶ θεωρεῖτε. καίτοι πῶς
οὐκ ἄτοπον τούτους μὲν αὐτοὺς πονηροτάτους τῶν πολι-
τῶν νομίζειν, τοὺς δ' ὑπὸ τούτων ἐπαινουμένους χρηστοὺς
22 ἡγεῖσθαι; καὶ γάρ τοι πάντα δι' αὐτῶν ποιοῦνται, καὶ
μόνον οὐχ ὑπὸ κήρυκος πωλοῦσι τὰ κοινά, καὶ στεφανοῦν,
ὃν ἂν αὐτοῖς δοκῇ, καὶ μὴ στεφανοῦν κελεύουσι, κυριωτέ-
ρους αὐτοὺς τῶν ὑμετέρων δογμάτων καθιστάντες. ἐγὼ
δ' ὑμῖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι παραινῶ μὴ ποιεῖν τὴν τῶν
ἀναλίσκειν ἐθελόντων φιλοτιμίαν ἐπὶ τῇ τῶν λεγόντων
πλεονεξίᾳ. εἰ δὲ μή, διδάξετε πάντας τὰ μὲν ὑφ' ὑμῶν
προσταττόμενα ὡς εὐτελέστατα διοικεῖν, τοὺς δ' ὑπὲρ
τούτων ἀναιδῶς εἰς ὑμᾶς ψευσομένους ὡς πλεῖστον μι-
σθοῦσθαι.

ΠΡΟΣ ΚΑΛΛΙΠΠΟΝ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Λύκων τις, τὸ γένος Ἡρακλεώτης, τῇ Πασίωνος ἐχρῆτο τραπέζῃ. οὗτος μέλλων ἐκπλεῖν εἰς Λιβύην κατέλιπεν ἀργύριον παρὰ Πασίωνι, ὡς μὲν* || *Πασίων ζῶν ἔλεγε καὶ Ἀπολλόδωρος λέγει νῦν, ἐντειλάμενος ἀποδοῦναι Κηφισιάδῃ, ὡς δὲ Κάλλιππός φησιν, ἑαυτῷ χαρισάμενος φίλῳ τε ὄντι καὶ προξένῳ τῶν πάντων Ἡρακλεωτῶν. ἀποθανόντος δὲ τοῦ Λύκωνος τὸ ἀργύριον ἀπεδόθη Κηφισιάδῃ. Κάλλιππος δέ, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος, ἐπειδὴ πείθειν τὸν Πασίωνα οὐκ ἠδύνατο μεθ' ἑαυτοῦ γενόμενον συνεπιθέσθαι τῷ ξένῳ, ἐπ' αὐτὸν ἦλθε τὸν Πασίωνα βλάβης αὐτῷ δικαζόμενος, καὶ Λυσιθείδῃ τὸ πρᾶγμα ἐπέτρεψεν, ὅστις Πασίωνος ζῶντος οὐδὲν ἀπεφήνατο. ἀποθανόντος δὲ ἐκείνου αὖθις Ἀπολλοδώρῳ λαγχάνει δίκην τοῦ ἀργυρίου Κάλλιππος, καὶ ἠξίου πάλιν ἐπιτρέψαι τῷ Λυσιθείδῃ. ὁ δὲ Ἀπολλόδωρος τὸν μὲν διαιτητὴν ἐδέξατο, πρὸς δὲ τὴν ἀρχὴν τοὔνομα Λυσιθείδου ἀπήνεγκεν, ἵν', ὥς φησιν, ὀμόσας δικάσῃ καὶ μὴ χωρὶς ὅρκου διαιτῶν τῷ Καλλίππῳ χαρίσηται. ὁ δὲ Λυσιθείδης οὐκ ὀμόσας ἀπεφήνατο καὶ κατεδιῄτησε τὴν δίκην. διόπερ ἔφεσιν δοὺς ὁ Ἀπολλόδωρος εἰς τὸ δικαστήριον εἰσέρχεται.*

Οὐκ ἔστι χαλεπώτερον οὐδὲν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἢ ὅταν
ἄνθρωπος δόξαν ἔχων καὶ δυνάμενος εἰπεῖν τολμᾷ ψεύ-
δεσθαι καὶ μαρτύρων εὐπορῇ. ἀνάγκη γάρ ἐστι τῷ φεύ-
γοντι μηκέτι περὶ τοῦ || πράγματος μόνον λέγειν, ἀλλὰ καὶ
περὶ αὐτοῦ τοῦ λέγοντος, ὡς οὐκ εἰκὸς αὐτῷ διὰ τὴν δό-
ξαν πιστεύειν. εἰ γὰρ ἔθος καταστήσετε τοῖς δυναμένοις 2
εἰπεῖν καὶ δόξαν ἔχουσι μᾶλλον πιστεύειν ἢ τοῖς ἀδυνα-
τωτέροις, ἐφ' ὑμῖν αὐτοῖς ἔσεσθε τὸ ἔθος τοῦτο κατε-
σκευακότες. δέομαι οὖν ὑμῶν, εἴπερ τι καὶ ἄλλο πώποτε
πρᾶγμα αὐτὸ καθ' αὐτὸ ἐδικάσατε, μηδὲ μεθ' ἑτέρων τὴν
γνώμην γενόμενοι, μήτε μετὰ τῶν διωκόντων μήτε μετὰ
τῶν φευγόντων, ἀλλὰ τὸ δίκαιον σκεψάμενοι, οὕτω καὶ
νῦν διαγνῶναι. ἐξ ἀρχῆς δ' ὑμῖν διηγήσομαι.

Λύκων γὰρ ὁ Ἡρακλεώτης, ὦ ἄνδρες δικασταί, οὗτος 3
ὃν καὶ αὐτὸς λέγει, τῇ τραπέζῃ τῇ τοῦ πατρὸς ἐχρῆτο
ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι ἔμποροι, ξένος μὲν ὢν Ἀριστόνῳ τῷ
Δεκελεῖ καὶ Ἀρχεβιάδῃ τῷ Λαμπτρεῖ, ἄνθρωπος δέ τις
σώφρων. οὗτος ἐπειδὴ ἐκπλεῖν ἤμελλεν εἰς τὴν Λιβύην,
διαλογισάμενος πρὸς τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν ἐναντίον Ἀρχε-

βιάδου καὶ Φρασίου προσέταξε τὸ ἀργύριον ὃ κατέλιπεν (ἦν δὲ τοῦτο ἑκκαίδεκα μναῖ καὶ τετταράκοντα δραχμαί, ὡς ἐγὼ ὑμῖν πάνυ ἀκριβῶς ἐπιδείξω) Κηφισιάδῃ ἀποδοῦναι, λέγων ὅτι κοινωνὸς εἴη αὐτοῦ ὁ Κηφισιάδης οὗτος, οἰκήτωρ μὲν ὢν ἐν Σκύρῳ, ἐν δὲ τῷ παρόντι ἐφ' ἑτέρᾳ
4 ἀποδημῶν ἐμπορίᾳ. δεῖξαι δ' ἂν αὐτὸν τῷ πατρὶ τῷ ἐμῷ καὶ συστῆσαι τῷ Ἀρχεβιάδῃ καὶ τῷ Φρασίᾳ προσέταξεν, ἐπειδὴ ἥκοι ἐκ τῆς ἀποδημίας. εἰώθασι δὲ πάντες οἱ τραπεζῖται, ὅταν τις ἀργύριον τιθεὶς ἰδιώτης ἀποδοῦναί τῳ προστάττῃ, πρῶτον τοῦ θέντος τοὔνομα ‖ γράφειν καὶ τὸ κεφάλαιον τοῦ ἀργυρίου, ἔπειτα παραγράφειν "τῷ δεῖνι ἀποδοῦναι δεῖ," καὶ ἐὰν μὲν γιγνώσκωσι τὴν ὄψιν τοῦ ἀνθρώπου ᾧ ἂν δέῃ ἀποδοῦναι, τοσοῦτο μόνον ποιεῖν, γράψαι ᾧ δεῖ ἀποδοῦναι, ἐὰν δὲ μὴ γιγνώσκωσι, καὶ τούτου τοὔνομα προσπαραγράφειν ὃς ἂν μέλλῃ συστήσειν καὶ δείξειν τὸν ἄνθρωπον ὃν ἂν δέῃ κομίσασθαι τὸ ἀργύ-
5 ριον. τύχης δὲ συμβάσης τοιαύτης τῷ Λύκωνι τούτῳ ὥστε εὐθὺς ἐκπλέοντα αὐτὸν περὶ τὸν Ἀργολικὸν κόλπον ὑπὸ ληστρίδων νεῶν τά τε χρήματα καταχθῆναι εἰς Ἄργος καὶ αὐτὸν τοξευθέντα ἀποθανεῖν, ἔρχεται ἐπὶ τὴν τράπεζαν Κάλλιππος οὑτοσὶ εὐθὺς ἐρωτῶν Λύκωνα Ἡρακλεώτην εἰ γιγνώσκοιεν. ἀποκριναμένου δὲ Φορμίωνος τουτουὶ ὅτι γιγνώσκοιεν, "ἆρα καὶ ἐχρῆτο ὑμῖν;" ἔφη ὁ Φορμίων. "ἀλλὰ πρὸς τί ἐρωτᾷς;" "πρὸς τί;" ἔφη· "ἐγώ σοι ἐρῶ. ἐκεῖνος μὲν τετελεύτηκεν, ἐγὼ δὲ προξενῶν τυγχάνω τῶν Ἡρακλεωτῶν. ἀξιῶ δή σε δεῖξαί μοι τὰ γράμματα, ἵν' εἰδῶ εἴ τι καταλέλοιπεν ἀργύριον· ἐξ ἀνάγκης γάρ μοί
6 ἐστιν ἁπάντων Ἡρακλεωτῶν ἐπιμελεῖσθαι." ἀκούσας δ' αὐτοῦ ὁ Φορμίων ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἔδειξεν εὐθέως παραχρῆμα. δείξαντος δὲ αὐτοῦ τὸ γραμματεῖον ἀναγνοὺς αὐτὸς καὶ ἄλλος οὐδείς, καὶ ἰδὼν γεγραμμένον ἐν αὐτῷ "Λύκων Ἡρακλεώτης χιλίας ἑξακοσίας τετταράκοντα· Κηφισιάδῃ ἀποδοῦναι δεῖ· Ἀρχεβιάδης Λαμπτρεὺς δείξει τὸν Κηφισιάδην," ᾤχετο ἀπιὼν σιωπῇ, καὶ πλέον ἢ πέντε
7 μηνῶν οὐδένα λόγον ἐποιήσατο. ἐπιδημήσαντος δὲ τοῦ Κηφισιάδου μετὰ ταῦτα καὶ προσελθόντος πρὸς τὴν τράπεζαν καὶ ἀπαιτοῦντος τὰ χρήματα, παρόντος ‖ δὲ ὦ ἄν-

δρες δικασταὶ Ἀρχεβιάδου καὶ τοῦ Φρασίου, οὓς ὁ Λύκων τῷ πατρὶ συνέστησε καὶ ἐκέλευσε τὸν Κηφισιάδην δεῖξαι ὃς εἴη, ἐπειδὴ ἔλθοι, παρόντων καὶ ἄλλων, ἐξαριθμήσας αὐτῷ τὰς ἑκκαίδεκα μνᾶς καὶ τετταράκοντα δραχμὰς ἀπέδωκε Φορμίων οὑτοσί. ὡς δὲ ἀληθῆ λέγω, τούτων ἁπάντων ὑμῖν τὰς μαρτυρίας ἀναγνώσεται.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅτι μὲν ἀληθῆ ἅπαντα εἶπον πρὸς ὑμᾶς, ὦ ἄνδρες 8
δικασταί, τῶν μαρτυριῶν ἀκηκόατε· προσελθὼν δὲ συχνῷ χρόνῳ ὕστερον πρὸς τὸν πατέρα Κάλλιππος οὑτοσὶ ἐν ἄστει, ἤρετο αὐτὸν εἰ ἤδη ἐπιδεδημηκὼς εἴη ὁ Κηφισιάδης, ὅτῳ ἐπιγεγραμμένον εἴη ἀποδοῦναι τὸ ἀργύριον τὸ ὑπὸ τοῦ Λύκωνος τοῦ Ἡρακλεώτου καταλειφθέν. ἀποκριναμένου δὲ τοῦ πατρὸς ὅτι οἴοιτο μέν, εἰ μέντοι βούλοιτο εἰς Πειραιᾶ καταβῆναι, τὴν ἀκρίβειαν εἴσοιτο, "οἶσθά τοι" ἔφη "ὅ τι ἔστιν ὦ Πασίων ὅ σε ἐρωτῶ;" καὶ μὰ 9
τὸν Δία καὶ τὸν Ἀπόλλω καὶ τὴν Δήμητρα, οὐ ψεύσομαι πρὸς ὑμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταί, ἀλλ' ἃ τοῦ πατρὸς ἤκουον διηγήσομαι ὑμῖν. "ἔξεστί σοι" ἔφη "ἐμέ τε εὖ ποιῆσαι καὶ σεαυτὸν μηδὲν βλαβῆναι. προξενῶν μὲν γὰρ τυγχάνω τῶν Ἡρακλεωτῶν, βούλοιο δ' ἄν, ὡς οἶμαι ἐγώ, ἐμὲ μᾶλλον τὸ ἀργύριον λαβεῖν ἢ τὸν μέτοικον ἄνθρωπον καὶ ἐν Σκύρῳ κατοικοῦντα καὶ οὐδενὸς ἄξιον. συμβέβηκε δὲ τοιοῦτόν τι· ὁ Λύκων τυγχάνει ὢν καὶ ἄπαις καὶ κληρονόμον οὐδένα οἴκοι καταλιπών, ὡς ἐγὼ πυνθάνομαι. πρὸς δὲ 10
τούτῳ, ἐπειδὴ εἰς Ἄργος κατήχθη τετρωμένος, τῷ προξένῳ τῶν Ἡρακλεωτῶν τῷ Ἀργείῳ Στραμμένῳ τὰ χρήματα δέδωκεν ἃ κατήχθη μετ' ‖ αὐτοῦ. οἷος οὖν εἰμὶ καὶ ἐγὼ τὰ ἐνθάδε αὐτὸς ἀξιοῦν λαμβάνειν· ἡγοῦμαι γὰρ δίκαιος εἶναι ἔχειν. σὺ οὖν, εἰ ἄρα μὴ ἀπείληφε, λέγε ὅτι ἐγὼ ἀμφισβητῶ, ἂν ἄρα ἔλθῃ ὁ Κηφισιάδης· εἰ δ' ἄρα ἀπείληφε, λέγε ὅτι ἐγὼ μάρτυρας ἔχων ἠξίουν ἐμφανῆ καταστῆσαι τὰ χρήματα ἢ τὸν κεκομισμένον, καὶ εἴ τίς με βούλεται ἀφελέσθαι, πρόξενον ὄντα ἀφαιρεθῆναι." ἐπειδὴ δὲ αὐτῷ εἴρητο, "ἐγὼ" ἔφη ὁ πατήρ, "ὦ Κάλλιππε, 11
χαρίζεσθαι μέν σοι βούλομαι (καὶ γὰρ ἂν καὶ μαινοίμην εἰ μή), οὕτω μέντοι ὅπως ἂν αὐτός τε μὴ χείρων δόξω

*εἶναι καὶ ἐκ τοῦ πράγματος μηδὲν ζημιώσομαι. εἰπεῖν
μὲν οὖν μοι ταῦτα πρὸς τὸν Ἀρχεβιάδην καὶ τὸν Ἀριστό-
νουν καὶ πρὸς αὐτὸν δὲ τὸν Κηφισιάδην οὐδὲν διαφέρει·
ἐὰν μέντοι μὴ θέλωσι ταῦτα ποιεῖν εἰπόντος ἐμοῦ, αὐ-
τὸς ἤδη διαλέγου αὐτοῖς." "ἀμέλει" ἔφη οὗτος "ὦ Πα-
σίων, ἐὰν βούλῃ σύ, ἀναγκάσεις αὐτοὺς ταῦτα ποιῆσαι."
12 Ἃ μὲν οὖν διελέχθη ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὗτος μὲν τῷ
πατρί, ἐκεῖνος δὲ τῷ Ἀρχεβιάδῃ καὶ τῷ Κηφισιάδῃ τού-
του δεηθέντος καὶ τούτῳ χαριζόμενος, ταῦτ᾽ ἐστίν, ἐξ ὧν
κατὰ μικρὸν ἡ δίκη αὕτη πέπλασται· ὧν ἐγὼ ἤθελον
τούτῳ ταύτην ἥτις εἴη μεγίστη πίστις δοῦναι, ἦ μὴν ἐγὼ
13 τοῦ πατρὸς ἀκούειν. οὗτος δὲ ὁ ἀξιῶν ὑφ᾽ ὑμῶν πιστεύε-
σθαι ὡς ἀληθῆ λέγων, τρία ἔτη διαλιπών, ἐπειδὴ τὸ
πρῶτον διαλεχθέντος τοῦ πατρὸς τῷ Ἀρχεβιάδῃ καὶ τοῖς
ἄλλοις τοῖς Κηφισιάδου ἐπιτηδείοις οὐκ ἔφασαν Καλ-
λίππῳ προσέχειν τὸν νοῦν οὐδὲν οἷς λέγει, ἐπειδὴ ᾔσθετο
ἀδυνάτως ἤδη ἔχοντα τὸν πατέρα καὶ μόγις εἰς ἄστυ
14 ἀναβαίνοντα καὶ τὸν ὀφθαλμὸν αὐτὸν ‖ προδιδόντα, λαγ-
χάνει αὐτῷ δίκην, οὐ μὰ Δί᾽ οὐχ ὥσπερ νῦν ἀργυρίου,
ἀλλὰ βλάβης, ἐγκαλέσας βλάπτειν ἑαυτὸν ἀποδιδόντα Κη-
φισιάδῃ τὸ ἀργύριον ὃ κατέλιπε Λύκων ὁ Ἡρακλεώτης
παρ᾽ αὐτῷ ἄνευ αὐτοῦ, ὁμολογήσαντα μὴ ἀποδώσειν. λα-
χὼν δὲ παρὰ μὲν τοῦ διαιτητοῦ ἀνείλετο τὸ γραμματεῖον,
προυκαλέσατο δ᾽ αὐτὸν ἐπιτρέψαι Λυσιθείδῃ, αὐτοῦ μὲν
καὶ Ἰσοκράτους καὶ Ἀφαρέως ἑταίρῳ, γνωρίμῳ δὲ τοῦ
15 πατρός. ἐπιτρέψαντος δὲ τοῦ πατρός, ὃν μὲν χρόνον ἔζη
ὁ πατήρ, ὅμως, καίπερ οἰκείως ἔχων τούτοις, ὁ Λυσιθεί-
δης οὐκ ἐτόλμα οὐδὲν εἰς ἡμᾶς ἐξαμαρτάνειν. καίτοι οὕτω
τινὲς ἀναίσχυντοι τῶν οἰκείων τῶν τουτουὶ ὥστε ἐτόλμη-
σαν μαρτυρῆσαι ὡς ὁ μὲν Κάλλιππος ὅρκον τῷ πατρὶ
δοίη, ὁ δὲ πατὴρ οὐκ ἐθέλοι ὀμόσαι παρὰ τῷ Λυσιθείδῃ,
καὶ οἴονται ὑμᾶς πείσειν ὡς ὁ Λυσιθείδης οἰκεῖος μὲν ὢν
τῷ Καλλίππῳ διαιτῶν δὲ τὴν δίαιταν ἀπέσχετ᾽ ἂν μὴ
οὐκ εὐθὺς τοῦ πατρὸς καταδιαιτῆσαι, αὐτοῦ γε ἑαυτῷ μὴ
16 θέλοντος δικαστοῦ γενέσθαι τοῦ πατρός. ὡς δὲ ἐγὼ μὲν
ἀληθῆ λέγω οὗτοι δὲ ψεύδονται, πρῶτον μὲν αὐτὸ ὑμῖν
τοῦτο γενέσθω τεκμήριον, ὅτι κατεγνώκει ἂν αὐτοῦ ὁ Λυ-*

*σιθείδης, καὶ ὅτι ἐγὼ ἐξούλης ἂν ἔφευγον νῦν ἀλλ᾽ οὐκ
ἀργυρίου δίκην· πρὸς δὲ τούτῳ ἐγὼ ὑμῖν τοὺς παρόντας
ἑκάστοτε τῷ πατρὶ ἐν ταῖς συνόδοις ταῖς πρὸς τοῦτον, αἳ
παρὰ τῷ Λυσιθείδῃ ἐγίγνοντο, μάρτυρας παρέξομαι.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Ὅτι μὲν οὐ προκαλεσάμενος εἰς ὅρκον τὸν πατέρα τότε 17
*νυνὶ ἐκείνου τετελευτηκότος καταψεύδεται, καὶ κατ᾽ ἐμοῦ
ῥᾳδίως τὰ ψευδῆ ‖ μαρτυροῦντας τοὺς οἰκείους τοὺς ἑαυ-
τοῦ παρέχεται, ἔκ τε τῶν τεκμηρίων καὶ ἐκ τῆς μαρτυρίας
ταύτης ῥᾴδιον ὑμῖν εἰδέναι· ὅτι δὲ ἐγὼ ὑπὲρ τοῦ πατρὸς
ἠθέλησα αὐτῷ πίστιν δοῦναι ἥνπερ ὁ νόμος κελεύει ἐάν
τις τεθνεῶτι ἐπικαλῶν δικάζηται τῷ κληρονόμῳ, μὴ δο-* 18
*κεῖν μοι μήτε ὁμολογῆσαι τὸν πατέρα τούτῳ ἀποδώσειν
τὸ ἀργύριον ὃ κατέλιπε Λύκων, μήτε συσταθῆναι αὐτὸν
τῷ πατρὶ ὑπὸ τοῦ Λύκωνος, καὶ Φορμίων, ἦ μὴν διαλο-
γίσασθαί τε ἐναντίον Ἀρχεβιάδου τῷ Λύκωνι αὐτὸς καὶ
προσταχθῆναι αὐτῷ Κηφισιάδῃ ἀποδοῦναι τὸ ἀργύριον,
τὸν δὲ Κηφισιάδην δεῖξαι αὐτῷ τὸν Ἀρχεβιάδην, καὶ ὅτε* 19
*Κάλλιππος προσῆλθε τὸ πρῶτον πρὸς τὴν τράπεζαν, λέ-
γων ὅτι τετελευτηκὼς εἴη ὁ Λύκων καὶ αὐτὸς ἀξιοίη τὰ
γράμματα ἰδεῖν, εἴ τι καταλελοιπὼς εἴη ὁ ξένος ἀργύριον,
ἦ μὴν δείξαντος ἑαυτοῦ εὐθὺς αὐτῷ τὰ γράμματα, ἰδόντα
αὐτὸν τῷ Κηφισιάδῃ γεγραμμένον ἀποδοῦναι, σιωπῇ οἴ-
χεσθαι ἀπιόντα, οὐδὲν οὔτε ἀμφισβητήσαντα οὔτ᾽ ἀπει-
πόντ᾽ αὐτὸν περὶ τοῦ ἀργυρίου, τούτων ὑμῖν τάς τε μαρ-
τυρίας ἀμφοτέρας καὶ τὸν νόμον ἀναγνώσεται.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ. ΝΟΜΟΣ.

Φέρε δὴ ὑμῖν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὡς οὐδ᾽ ἐχρῆτο Λύ- 20
*κων τῷ Καλλίππῳ ἐπιδείξω· οἶμαι γάρ τί μοι καὶ τοῦτο
εἶναι πρὸς τὴν ἀλαζονείαν τὴν τουτουὶ τοῦ φάσκοντος
αὐτῷ δωρεὰν δοθῆναι τὸ ἀργύριον τοῦτο παρὰ τοῦ
Λύκωνος. ἐκεῖνος γὰρ τετταράκοντα μνᾶς ἔκδοσιν ἐκδοὺς
εἰς Θρᾴκην Μεγακλείδῃ τῷ Ἐλευσινίῳ καὶ Θρασύλλῳ τῷ
ἀδελφῷ αὐτοῦ, μεταδόξαν αὐτῷ μὴ ἐκεῖσε πλεῖν μηδὲ
κινδυνεύειν, ἐγκαλέσας τι τῷ Μεγακλείδῃ περὶ τῶν ‖ τόκων
ὡς ἐξηπατημένος διεφέρετο καὶ ἐδικάζετο, βουλόμενος τὴν
ἔκδοσιν κομίσασθαι. συχνῆς δὲ πάνυ πραγματείας περὶ* 21

τοσαῦτα χρήματα γενομένης τὸν μὲν Κάλλιππον ὁ Λύκων
οὐδαμοῖ πώποτε παρεκάλεσε, τὸν δὲ Ἀρχεβιάδην καὶ τοὺς
τοῦ Ἀρχεβιάδου φίλους· καὶ ὁ διαλλάξας αὐτοὺς Ἀρχε-
βιάδης ἦν. ὡς δὲ ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν αὐτὸν τὸν
Μεγακλείδην μάρτυρα παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

22 Οὑτωσὶ μὲν οἰκείως φαίνεται χρώμενος ὦ ἄνδρες δι-
κασταὶ ὁ Λύκων τῷ Καλλίππῳ ὥστε μήτε παρακαλεῖν
αὐτὸν ἐπὶ τὰ αὑτοῦ πράγματα μήτε κατάγεσθαι ὡς τοῦ-
τον μηδεπώποτε· καὶ αὐτό γε τοῦτο μόνον οὐ τετολμή-
κασιν οἱ οἰκεῖοι τούτου μαρτυρῆσαι, ὡς κατήγετο παρὰ
τούτῳ ἐκεῖνος, εὖ εἰδότες ὅτι διὰ βασάνου ἐκ τῶν οἰκε-
23 τῶν ὁ ἔλεγχος ἤδη ἔσοιτο, εἴ τι τοιοῦτο ψεύσαιντο. βού-
λομαι δ' ὑμῖν καὶ τεκμήριόν τι εἰπεῖν τηλικοῦτον ᾧ δῆλον
ὑμῖν ἔσται, ὡς ἐγὼ οἴομαι, ὅτι πάντα πρὸς ὑμᾶς ἔψευ-
σται. τῷ γὰρ Λύκωνι, ὦ ἄνδρες δικασταί, εἴπερ ἠσπά-
ζετο μὲν τουτονὶ καὶ οἰκείως εἶχεν, ὥσπερ οὗτός φησιν,
24 ἐβούλετο δὲ δωρεὰν δοῦναι αὐτῷ, εἴ τι πάθοι, τὸ ἀργύ-
ριον, πότερον κάλλιον ἦν ἄντικρυς παρὰ τῷ Καλλίππῳ
καταλιπεῖν τὸ ἀργύριον, ὃ ἤμελλε σωθεὶς μὲν ὀρθῶς καὶ
δικαίως ἀπολήψεσθαι παρὰ φίλου γε ὄντος αὐτῷ καὶ
προξένου, εἰ δέ τι πάθοι, ἄντικρυς ἔσεσθαι δεδωκώς,
ὥσπερ καὶ ἠβούλετο, ἢ ἐπὶ τῇ τραπέζῃ καταλιπεῖν; ἐγὼ
μὲν γὰρ οἶμαι ἐκεῖνο καὶ δικαιότερον καὶ μεγαλοπρεπέ-
στερον εἶναι. οὐ τοίνυν φαίνεται τούτων οὐδὲν ποιήσας,
ὥστε καὶ ταῦτα ὑμῖν τεκμήρια ἔστω, ἀλλὰ τῷ ‖ Κηφισιάδῃ
καὶ γράψας καὶ προστάξας ἀποδοῦναι.

25 Ἔτι τοίνυν καὶ τοδὶ σκέψασθε, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτι
Κάλλιππος μὲν ἦν πολίτης ἡμέτερος καὶ οὐκ ἀδύνατος
οὐδέτερα ποιῆσαι, οὔτε κακῶς οὔτε εὖ, ὁ δὲ Κηφισιάδης
καὶ μέτοικος καὶ οὐδὲν δυνάμενος, ὥστε μὴ προσθέσθαι
ἂν παρὰ τὸ δίκαιον τῷ Κηφισιάδῃ μᾶλλον τὸν πατέρα ἢ
26 τούτῳ τὰ δίκαια ποιῆσαι. ἀλλὰ νὴ Δία, ἴσως ἂν εἴποι,
ἐκέρδαινέ τι ἰδίᾳ ὁ πατὴρ ἀπὸ τοῦ ἀργυρίου, διὸ ἐκείνῳ
μᾶλλον προσετίθετο τὴν γνώμην ἢ τούτῳ. εἶτα πρῶτον
μὲν τὸν δυνησόμενον διπλάσιον τοῦ λήμματος κακὸν ποιῆ-
σαι ἠδίκει, ἔπειτα ἐνταῦθα μὲν αἰσχροκερδὴς ἦν, εἰς δὲ

τὰς εἰσφορὰς καὶ λειτουργίας καὶ δωρεὰς τῇ πόλει οὔ;
καὶ τῶν μὲν ξένων οὐδένα ἠδίκει, Κάλλιππον δέ; καὶ οὗ- 27
τος, ὥς φησιν, ὡς χρηστῷ μὲν αὐτῷ ὄντι καὶ οὐδὲν ψευ-
σομένῳ ὅρκον ἐδίδου, ὡς περὶ πονηροῦ δὲ καὶ ἀπαλείφον-
τος ἀπὸ τῶν παρακαταθηκῶν νυνὶ διαλέγεται; κἀκεῖνος
οὔτ' ὀμόσαι θέλων, ὡς οὗτός φησιν, οὔτ' ἀποδιδοὺς οὐκ
εὐθὺς ἂν ὠφλήκει; τῷ ταῦτα πιστά, ὦ ἄνδρες δικασταί;
ἐγὼ μὲν γὰρ οὐδενὶ οἴομαι. καὶ ὁ Ἀρχεβιάδης εἰς τοῦτο 28
φαυλότητος ἥκει ὥστε τοῦ Καλλίππου δημότου ὄντος
αὐτῷ καὶ πολιτευομένου καὶ οὐκ ἰδιώτου ὄντος καταμαρ-
τυρεῖ, καὶ φησὶν ἡμᾶς μὲν ἀληθῆ λέγειν τοῦτον δὲ ψεύ-
δεσθαι, καὶ ταῦτα εἰδὼς ὅτι, ἂν οὗτος βούληται ἐπι-
σκήψασθαι αὐτῷ τῶν ψευδομαρτυριῶν καὶ ἄλλο μηδὲν
ποιῆσαι ἢ ἐξορκῶσαι, ἀνάγκη αὐτῷ ἔσται πίστιν ἐπιθεῖναι
ἣν ἂν κελεύῃ οὗτος. ἔπειτα ἵνα ὁ Κηφισιάδης ἔχῃ τὸ ἀρ- 29
γύριον, ἄνθρωπος μέτοικος, ἢ Φορμίων, ὅν φησιν ἀπα-
ληλιφέναι τι οὗτος τοῦ ἀργυρίου, ‖ πεισθήσεσθε ὑμεῖς ὡς
ἐπιορκήσειεν ἂν ὁ Ἀρχεβιάδης; οὐκ ἔκ γε τῶν εἰκότων, ὦ
ἄνδρες δικασταί. οὐ γὰρ ἄξιον οὔτε Ἀρχεβιάδου κακίαν
οὐδεμίαν καταγνῶναι οὔτε τοῦ πατρὸς τοῦ ἡμετέρου·
πολὺ γὰρ αὐτὸν φιλότιμον ἴστε μᾶλλον ὄντα ἢ κακόν τι
ἢ αἰσχρὸν ἐπιτηδεύοντα, καὶ πρὸς Κάλλιππον οὐχ οὕτως
ἔχοντα ὥστε καταφρονήσαντα τούτου ἀδικῆσαι ἄν τι αὐ-
τόν. οὐ γὰρ οὕτω μοι δοκεῖ δύνασθαι ὥστ' εὐκαταφρόνη- 30
τος εἶναι, ὃς οὕτως ἐρρωμένος ἐστὶν ὥστε πέρυσί μοι
λαχὼν τὴν δίκην ταυτηνὶ καὶ προκαλεσάμενος τῷ Λυσι-
θείδῃ ἐπιτρέψαι, ἐγὼ μὲν καίπερ καταπεφρονημένος ὑπ'
αὐτοῦ τοῦτό γε ὀρθῶς ἐβουλευσάμην· κατὰ τοὺς νόμους
γὰρ ἐπέτρεψα καὶ ἀπήνεγκα πρὸς τὴν ἀρχήν· οὗτος δὲ
τὸν κατὰ τοὺς νόμους ἀπενηνεγμένον διαιτητὴν ἔπεισεν
ἀνώμοτον διαιτῆσαι, ἐμοῦ διαμαρτυρομένου κατὰ τοὺς
νόμους ὀμόσαντα διαιτᾶν, ἵνα αὐτῷ ᾖ πρὸς ὑμᾶς λέγειν
ὅτι καὶ Λυσιθείδης, ἀνὴρ καλὸς κἀγαθός, ἔγνω περὶ αὐ-
τῶν. Λυσιθείδης γάρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, ἕως μὲν ὁ 31
πατὴρ ἔζη, καὶ ἄνευ ὅρκου καὶ μεθ' ὅρκου ἴσως ἂν οὐκ
ἠδίκησεν ἐκεῖνον· ἔμελε γὰρ αὐτῷ ἐκείνου· ἐμοῦ δὲ ἄνευ
μὲν ὅρκου οὐδὲν αὐτῷ ἔμελε, μεθ' ὅρκου δὲ ἴσως ἂν οὐκ

ἠδίκησε διὰ τὸ αὑτοῦ ἴδιον, διόπερ ἀνώμοτος ἀπεφήνατο. ὡς δὲ ἀληθῆ λέγω, καὶ τούτων ὑμῖν τοὺς παραγενομένους μάρτυρας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

32 Ὅ τι μὲν καὶ παρὰ τοὺς νόμους καὶ παρὰ τὸ δίκαιον δύναται διαπράττεσθαι Κάλλιππος, ὦ ἄνδρες δικασταί, τῆς μαρτυρίας ‖ ἀκηκόατε· δέομαι δὲ ὑμῶν αὐτός τε ὑπὲρ ἐμαυτοῦ καὶ ὑπὲρ τοῦ πατρός, ἀναμνησθέντας ὅτι πάντων μὲν ὑμῖν καὶ μάρτυρας καὶ τεκμήρια καὶ νόμους καὶ πίστεις παρεσχόμην ὧν εἴρηκα, τούτῳ δὲ ἐπιδείκνυμι ὅτι ἐξόν, εἴπερ τι αὐτῷ προσῆκε τοῦ ἀργυρίου, ἐπὶ τὸν Κηφισιάδην βαδίζειν τὸν ὁμολογοῦντα κεκομίσθαι καὶ ἔχειν τὸ ἀργύριον, καὶ ταῦτα μηδὲν ἧττον τὰ πιστὰ παρ' ἡμῶν λαβόντα, οὐκ ἔρχεται, εἰδὼς ὅτι οὐκ ἔστι παρ' ἡμῖν τὸ
33 ἀργύριον, δέομαι ὑμῶν ἀποψηφίσασθαί μου. καὶ ταῦτα ποιοῦντες πρῶτον μὲν τὰ δίκαια καὶ κατὰ τοὺς νόμους ἔσεσθε ἐψηφισμένοι, ἔπειτα ἄξια μὲν αὑτῶν ὑμῶν ἄξια δὲ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ, ὡς ἐγὼ ὑμᾶς ἂν δεξαίμην ἅπαντα τὰ ἐμαυτοῦ λαβεῖν μᾶλλον ἢ ἀδίκως τι συκοφαντούμενος ἀποτῖσαι.

ΠΡΟΣ ΝΙΚΟΣΤΡΑΤΟΝ ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΑΡΕΘΟΥΣΙΟΥ ΑΝΔΡΑΠΟΔΩΝ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Ἀπολλόδωρος γραψάμενος ψευδοκλητείας Ἀρεθούσιον εἷλεν. ὀφείλοντος δὲ τοῦ Ἀρεθουσίου τάλαντον τῇ πόλει καὶ ἀποδοῦναι μὴ δυνηθέντος, καὶ διὰ τοῦτο εἰς τὰ δημόσια ἀπογραφομένης αὐτοῦ τῆς οὐσίας, ἀπογράφει ὁ Ἀπολλόδωρος οἰκέτας ὡς ὄντας Ἀρεθουσίου, ὁ δὲ Νικόστρατος μεταποιεῖται ὡς ἰδίων καὶ ἐκείνῳ προσηκόντων οὐδέν. ἐπεὶ δὲ τὸ πρᾶγμα μοχθηρόν, διὰ τοῦτο ὁ ῥήτωρ διηγεῖται πηλίκα πέπονθεν Ἀπολλόδωρος ὑπ' Ἀρεθουσίου, ‖ ἵνα δοκῇ μὴ φύσει πονηρὸς ὢν ταῦτα πράττειν, ἀλλὰ ἀμυνόμενος τὸν ἀδικοῦντα.*

Ὅτι μὲν οὐ συκοφαντῶν ἀλλ' ἀδικούμενος καὶ ὑβριζόμενος ὑπὸ τούτων καὶ οἰόμενος δεῖν τιμωρεῖσθαι τὴν ἀπογραφὴν ἐποιησάμην, μέγιστον ὑμῖν ἔστω τεκμήριον ὦ ἄνδρες δικασταὶ τό τε μέγεθος τῆς ἀπογραφῆς, καὶ ὅτι αὐτὸς ἐγὼ ἀπέγραψα. οὐ γὰρ δή που συκοφαντεῖν γε βουλόμενος ἀπέγραψα ἂν πένθ' ἡμιμναίων ἄξια ἀνδρά-

*ποδα, ὡς αὐτὸς ὁ ἀμφισβητῶν τετίμηται αὐτά, ἐκινδύ-
νευον δ' ἂν περί τε χιλίων δραχμῶν καὶ τοῦ μηδέποτε
μηδένα αὖθις ὑπὲρ ἐμαυτοῦ γράψασθαι· οὐδ' αὖ οὕτως
ἄπορος ἦν οὐδ' ἄφιλος ὥστ' οὐκ ἂν ἐξευρεῖν τὸν ἀπογρά-
ψοντα· ἀλλὰ τῶν ἐν ἀνθρώποις ἁπάντων ἡγησάμενος δει-* 2
*νότατον εἶναι ἀδικεῖσθαι μὲν αὐτός, ἕτερον δ' ὑπὲρ ἐμοῦ
τοῦ ἀδικουμένου τοὔνομα παρέχειν, καὶ εἶναι ἄν τι τού-
τοις τοῦτο τεκμήριον, ὁπότε ἐγὼ λέγοιμι τὴν ἔχθραν πρὸς
ὑμᾶς, ὡς ψεύδομαι (οὐ γὰρ ἄν ποτε ἕτερον ἀπογράψαι,
εἴπερ ἐγὼ αὐτὸς ἠδικούμην), διὰ μὲν ταῦτ' ἀπέγραψα.
ἀπογράψας δὲ ἐὰν ἀποδείξω τἀνδράποδα Ἀρεθουσίου
ὄντα οὗπερ ‖ ἀπεγέγραπτο εἶναι, τὰ μὲν τρία μέρη, ἃ ἐκ
τῶν νόμων τῷ ἰδιώτῃ τῷ ἀπογράψαντι γίγνεται, τῇ πόλει
ἀφίημι, αὐτῷ δ' ἐμοὶ τετιμωρῆσθαι ἀρκεῖ μόνον. εἰ μὲν* 3
*οὖν μοι ἦν ἱκανὸν τὸ ὕδωρ διηγήσασθαι πρὸς ὑμᾶς τὰ ἐξ
ἀρχῆς, ὅσ' ἀγαθὰ πεπονθότες ὑπ' ἐμοῦ οἷά με εἰργασμέ-
νοι εἰσίν, εὖ οἶδ' ὅτι ὑμεῖς τ' ἄν μοι ἔτι μᾶλλον συγγνώ-
μην εἴχετε τοῦ ὀργίζεσθαι αὐτοῖς, τούτους τ' ἀνοσιωτά-
τους ἀνθρώπων ἡγήσασθε εἶναι· νῦν δ' οὐδὲ διπλάσιόν μοι
τούτου ὕδωρ ἱκανὸν ἂν γένοιτο. τὰ μὲν οὖν μέγιστα καὶ
περιφανῆ τῶν ἀδικημάτων, καὶ ὁπόθεν ἡ ἀπογραφὴ αὕτη
γέγονεν, ἐρῶ πρὸς ὑμᾶς, τὰ δὲ πολλὰ ἐάσω.*

Νικόστρατος γὰρ οὑτοσὶ ὦ ἄνδρες δικασταὶ γείτων μοι 4
*ὢν ἐν ἀγρῷ καὶ ἡλικιώτης γνωρίμως μέν μοι εἶχε καὶ πά-
λαι, ἐπειδὴ δ' ἐτελεύτησεν ὁ πατὴρ καὶ ἐγὼ ἐν ἀγρῷ κατ-
ῴκουν, οὗπερ καὶ νῦν οἰκῶ, καὶ μᾶλλον ἀλλήλοις ἤδη
ἐχρώμεθα διὰ τὸ γείτονές τε εἶναι καὶ ἡλικιῶται. χρόνου
δὲ προβαίνοντος καὶ πάνυ οἰκείως διεκείμεθα, καὶ ἐγώ θ'
οὕτως οἰκείως διεκείμην πρὸς τοῦτον ὥστ' οὐδενὸς πώ-
ποτε ὧν ἐδεήθη οὗτος ἐμοῦ ἀπέτυχεν, οὗτός τ' αὖ ἐμοὶ
οὐκ ἄχρηστος ἦν πρὸς τὸ ἐπιμεληθῆναι καὶ διοικῆσαι, καὶ
ὁπότε ἐγὼ ἀποδημοίην ἢ δημοσίᾳ τριηραρχῶν ἢ ἰδίᾳ κατ'
ἄλλο τι, κύριοι τῶν ἐν ἀγρῷ τοῦτον ἁπάντων κατέλειπον.
συμβαίνει δή μοι τριηραρχία περὶ Πελοπόννησον, ἐκεῖθεν* 5
*δ' εἰς Σικελίαν ἔδει τοὺς πρέσβεις ἄγειν οὓς ὁ δῆμος ἐχει-
ροτόνησεν. ἡ οὖν ἀναγωγὴ διὰ ταχέων ἐγίγνετό μοι. ἐπι-
στέλλω δὴ αὐτῷ ὅτι αὐτὸς μὲν ἀνῆγμαι καὶ οὐχ οἷός τ'*

*εἴην οἴκαδε ἀφικέσθαι, ‖ ἵνα μὴ κατακωλύοιμι τοὺς πρέ-
σβεις· τούτῳ δὲ προσέταξα ἐπιμελεῖσθαί τε τῶν οἴκοι καὶ
6 διοικεῖν ὥσπερ καὶ ἐν τῷ ἔμπροσθεν χρόνῳ. ἐν δὲ τῇ
ἐμῇ ἀποδημίᾳ ἀποδιδράσκουσιν αὐτὸν οἰκέται τρεῖς ἐξ
ἀγροῦ παρὰ τούτου, οἱ μὲν δύο ὧν ἐγὼ ἔδωκα αὐτῷ, ὁ
δὲ εἷς ὧν αὐτὸς ἐκτήσατο. διώκων οὖν ἁλίσκεται ὑπὸ
τριήρους καὶ κατήχθη εἰς Αἴγιναν, καὶ ἐκεῖ ἐπράθη. ἐπειδὴ
δὲ κατέπλευσα ἐγὼ τριηραρχῶν, προσέρχεταί μοι Δείνων
ὁ ἀδελφὸς ὁ τούτου λέγων τήν τε τούτου συμφοράν, αὐ-
τός τε ὅτι δι' ἀπορίαν ἐφοδίων οὐ πεπορευμένος εἴη ἐπὶ
τοῦτον πέμποντος τούτου αὐτῷ ἐπιστολάς, καὶ ἅμα λέγων
7 πρὸς ἐμὲ ὡς ἀκούοι αὐτὸν δεινῶς διακεῖσθαι. ἀκούσας
δ' ἐγὼ ταῦτα καὶ συναχθεσθεὶς ἐπὶ τῇ ἀτυχίᾳ τῇ τούτου
πέμπω τὸν Δείνωνα τὸν ἀδελφὸν τούτου εὐθὺς ἐπὶ τοῦ-
τον, δοὺς ἐφόδιον αὐτῷ τριακοσίας δραχμάς. ἀφικόμενος
δ' οὗτος καὶ ἐλθὼν ὡς ἐμὲ πρῶτον μὲν ἠσπάζετο, καὶ
ἐπῄνει ὅτι παρέσχον τὰ ἐφόδια τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, καὶ
ὠδύρετο τὴν αὑτοῦ συμφοράν, καὶ κατηγορῶν ἅμα τῶν
ἑαυτοῦ οἰκείων ἐδεῖτό μου βοηθῆσαι αὐτῷ, ὥσπερ καὶ
ἐν τῷ ἔμπροσθεν χρόνῳ ἦν περὶ αὐτὸν ἀληθινὸς φίλος·
καὶ κλάων ἅμα, καὶ λέγων ὅτι ἓξ καὶ εἴκοσι μνῶν λελυμέ-
νος εἴη, εἰσενεγκεῖν αὐτῷ τι ἐκέλευέ με εἰς τὰ λύτρα.
8 ταῦτα δ' ἐγὼ ἀκούων καὶ ἐλεήσας τοῦτον, καὶ ἅμα ὁρῶν
κακῶς διακείμενον καὶ ἐπιδεικνύοντα ἕλκη ἐν ταῖς κνήμαις
ὑπὸ δεσμῶν, ὧν ἔτι τὰς οὐλὰς ἔχει, καὶ ἐὰν κελεύσητε
αὐτὸν δεῖξαι, οὐ μὴ θελήσῃ, ἀπεκρινάμην αὐτῷ ὅτι ‖ καὶ
ἐν τῷ ἔμπροσθεν χρόνῳ εἴην αὐτῷ φίλος ἀληθινός, καὶ
νῦν ἐν τῇ συμφορᾷ βοηθήσοιμι αὐτῷ, καὶ τάς τε τριακο-
σίας, ἃς τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ἔδωκα ἐφόδια ὅτε ἐπορεύετο
ἐπὶ τοῦτον, ἀφείην αὐτῷ, χιλίας τε δραχμὰς ἔρανον αὐτῷ
9 εἰς τὰ λύτρα εἰσοίσοιμι. καὶ τοῦτο οὐ λόγῳ μὲν ὑπεσχόμην
ἔργῳ δ' οὐκ ἐποίησα, ἀλλ' ἐπειδὴ οὐκ εὐπόρουν ἀργυρίου
διὰ τὸ διαφόρως ἔχειν τῷ Φορμίωνι καὶ ἀποστερεῖσθαι
ὑπ' αὐτοῦ τὴν οὐσίαν ἥν μοι ὁ πατὴρ κατέλιπε, κομίσας
ὡς Θεοκλέα τὸν τότε τραπεζιτεύοντα ἐκπώματα καὶ στέ-
φανον χρυσοῦν, ἃ παρ' ἐμοὶ ἐκ τῶν πατρῴων ὄντα ἐτύγ-
χανεν, ἐκέλευσα δοῦναί τούτῳ χιλίας δραχμάς, καὶ τοῦτο*

*ἔδωκα δωρεὰν αὐτῷ τὸ ἀργύριον, καὶ ὁμολογῶ δεδωκέναι.
ἡμέραις δ' οὐ πολλαῖς ὕστερον προσελθών μοι κλάων ἔλε- 10
γεν ὅτι οἱ ξένοι ἀπαιτοῖεν αὐτόν, οἱ δανείσαντες τὰ λύτρα,
τὸ λοιπὸν ἀργύριον, καὶ ἐν ταῖς συγγραφαῖς εἴη τριάκονθ'
ἡμερῶν αὐτὸν ἀποδοῦναι ἢ διπλάσιον ὀφείλειν, καὶ ὅτι τὸ
χωρίον τὸ ἐν γειτόνων μοι τοῦτο οὐδεὶς ἐθέλοι οὔτε πρία-
σθαι οὔτε τίθεσθαι· ὁ γὰρ ἀδελφὸς ὁ Ἀρεθούσιος, οὗ
τἀνδράποδ' ἐστὶ ταῦτα ἃ νῦν ἀπογέγραπται, οὐδένα ἐῴη
οὔτε ὠνεῖσθαι οὔτε τίθεσθαι ὡς ἐνοφειλομένου αὐτῷ
ἀργυρίου. σὺ οὖν μοι, ἔφη, πόρισον τὸ ἐλλεῖπον τοῦ 11
ἀργυρίου πρὶν τὰς τριάκονθ' ἡμέρας παρελθεῖν, ἵνα μὴ ὅ
τε ἀποδέδωκα, ἔφη, τὰς χιλίας δραχμάς, ἀπόλωνται, καὶ
αὐτὸς ἀγώγιμος γένωμαι. συλλέξας δ', ἔφη, τὸν ἔρανον,
ἐπειδὰν τοὺς ξένους ἀπαλλάξω, σοὶ ἀποδώσω ὃ ἄν μοι
χρήσῃς. οἶσθα δ', ‖ ἔφη, ὅτι καὶ οἱ νόμοι κελεύουσι τοῦ
λυσαμένου ἐκ τῶν πολεμίων εἶναι τὸν λυθέντα, ἐὰν μὴ
ἀποδιδῷ τὰ λύτρα. ἀκούων δ' αὐτοῦ ταῦτα καὶ δοκῶν οὐ 12
ψεύδεσθαι ἀπεκρινάμην αὐτῷ ἅπερ ἂν νέος τε ἄνθρωπος
καὶ οἰκείως χρώμενος, οὐκ ἂν νομίσας ἀδικηθῆναι, ὅτι ὦ
Νικόστρατε καὶ ἐν τῷ πρὸ τοῦ σοι χρόνῳ φίλος ἦν ἀλη-
θινός, καὶ νῦν ἐν ταῖς συμφοραῖς σου, καθ' ὅσον ἐγὼ
ἐδυνάμην, βεβοήθηκα. ἐπειδὴ δ' ἐν τῷ παρόντι οὐ δύνα-
σαι πορίσαι ἅπαντα τὰ χρήματα, ἀργύριον μὲν ἐμοὶ οὐ
πάρεστιν, οὐδ' ἔχω οὐδ' αὐτός, τῶν δὲ κτημάτων σοι τῶν
ἐμῶν κίχρημι ὅ τι βούλει, θέντα τοῦ ἐπιλοίπου ἀργυρίου
ὅσον ἐνδεῖ σοι, ἐνιαυτὸν ἀτόκῳ χρῆσθαι τῷ ἀργυρίῳ καὶ
ἀποδοῦναι τοῖς ξένοις. συλλέξας δ' ἔρανον, ὥσπερ αὐτὸς
φῄς, λῦσαί μοι. ἀκούσας δ' οὗτος ταῦτα καὶ ἐπαινέσας 13
με ἐκέλευσε τὴν ταχίστην πρᾶξαι, πρὶν ἐξήκειν τὰς ἡμέ-
ρας ἐν αἷς ἔφη δεῖν τὰ λύτρα καταθεῖναι. τίθημι οὖν
τὴν συνοικίαν ἑκκαίδεκα μνῶν Ἀρκέσαντι Παμβωτάδῃ, ὃν
αὐτὸς οὗτος προυξένησεν, ἐπὶ ὀκτὼ ὀβολοῖς τὴν μνᾶν
δανείσαντι τοῦ μηνὸς ἑκάστου. λαβὼν δὲ τὸ ἀργύριον οὐχ
ὅπως χάριν τινά μοι ἀποδίδωσιν ὧν εὖ ἔπαθεν, ἀλλ' εὐ-
θέως ἐπεβούλευσέ μοι, ἵν' ἀποστερήσειε τἀργύριον καὶ εἰς
ἔχθραν κατασταίη, καὶ ἀπορούμενος ἐγὼ τοῖς πράγμασι
νέος ὢν ὅ τι χρησαίμην, καὶ ἄπειρος πραγμάτων, ὅπως*

μὴ εἰσπράττοιμι αὐτὸν τἀργύριον οὗ ἡ συνοικία ἐτέθη,
14 ἀλλ' ἀφείην αὐτῷ. πρῶτον μὲν οὖν ἐπιβουλεύει μοι μετὰ
τῶν ἀντιδίκων, καὶ πίστιν αὐτοῖς δίδωσιν· ‖ ἔπειτ' ἀγώνων
μοι συνεστηκότων πρὸς αὐτοὺς τούς τε λόγους ἐκφέρει
μου εἰδώς, καὶ ἐγγράφει τῷ δημοσίῳ ἀπρόσκλητον ἐξ
ἐμφανῶν καταστάσεως ἐπιβολὴν ἑξακοσίας καὶ δέκα δρα-
χμάς, διὰ Λυκίδου τοῦ μυλωθροῦ ποιησάμενος τὴν δίκην.
κλητῆρα δὲ κατ' ἐμοῦ τόν τε ἀδελφὸν τὸν αὑτοῦ Ἀρεθού-
σιον τοῦτον ἐπιγράφεται, οὗπερ ἐστὶ τἀνδράποδα ταῦτα,
καὶ ἄλλον τινά· καὶ παρεσκευάζοντο, εἰ ἀνακρινοίμην κατὰ
τῶν οἰκείων τῶν ἀδικούντων με τὰς δίκας ἃς εἰλήχειν αὐ-
τοῖς, ἐνδεικνύναι με καὶ ἐμβάλλειν εἰς τὸ δεσμωτήριον.
15 ἔτι δὲ πρὸς τούτοις ὁ Ἀρεθούσιος ἀπρόσκλητόν μου δέκα
δραχμῶν δίκην καταδικασάμενος [ὡς ὀφείλοντος τῷ δη-
μοσίῳ], κλητῆρας ἐπιγραψάμενος καὶ εἰσελθὼν εἰς τὴν
οἰκίαν βίᾳ τὰ σκεύη πάντα ἐξεφόρησε, πλέον ἢ εἴκοσι
μνῶν ἄξια, καὶ οὐδ' ὁτιοῦν κατέλιπεν. ὅτε δὲ τιμωρεῖ-
σθαι ᾤμην δεῖν ἐκτίσας τῷ δημοσίῳ τὸ ὄφλημα, ἐπειδὴ
ἐπυθόμην τὴν ἐπιβουλήν, καὶ ἐβάδιζον ἐπὶ τὸν κλητῆρα
τὸν ὁμολογοῦντα κεκλητευκέναι τὸν Ἀρεθούσιον τῆς ψευ-
δοκλητείας κατὰ τὸν νόμον, ἐλθὼν εἰς τὸ χωρίον τῆς νυ-
κτός, ὅσα ἐνῆν φυτὰ ἀκροδρύων γενναῖα ἐμβεβλημένα καὶ
τὰς ἀναδενδράδας ἐξέκοψε, καὶ φυτευτήρια ἐλαῶν περι-
στοίχων κατέκλασεν, οὕτω δεινῶς ὡς οὐδ' ἂν οἱ πολέμιοι
16 διαθεῖεν. πρὸς δὲ τούτοις μεθ' ἡμέραν παιδάριον ἀστὸν
εἰσπέμψαντες διὰ τὸ γείτονες εἶναι καὶ ὅμορον τὸ χωρίον
ἐκέλευον τὴν ῥοδωνιὰν βλαστάνουσαν ἐκτίλλειν, ἵν' εἰ κατα-
λαβὼν αὐτὸν ἐγὼ δήσαιμι ἢ πατάξαιμι ὡς δοῦλον ὄντα,
‖ γραφήν με γράψαιντο ὕβρεως. ὡς δὲ τούτου διήμαρτον,
κἀγὼ μάρτυρας μὲν ὧν ἔπασχον ἐποιούμην, αὐτὸς δ' οὐ-
δὲν ἐξημάρτανον εἰς αὐτούς, ἐνταῦθα ἤδη μοι ἐπιβου-
17 λεύουσι τὴν μεγίστην ἐπιβουλήν· ἀνακεκριμένου γὰρ ἤδη
μου κατ' αὐτοῦ τὴν τῆς ψευδοκλητείας γραφὴν καὶ μέλ-
λοντος εἰσιέναι εἰς τὸ δικαστήριον, τηρήσας με ἀνιόντα
ἐκ Πειραιῶς ὀψὲ περὶ τὰς λιθοτομίας παίει τε πὺξ καὶ
ἁρπάζει μέσον, καὶ ἐώθει με εἰς τὰς λιθοτομίας, εἰ μή
τινες προσιόντες, βοῶντός μου ἀκούσαντες, παρεγένοντο

καὶ ἐβοήθησαν. ἡμέραις δ' οὐ πολλαῖς ὕστερον εἰσελθὼν εἰς τὸ δικαστήριον πρὸς ἡμέραν διαμεμετρημένην, καὶ ἐξελέγξας αὐτὸν τὰ ψευδῆ κεκλητευκότα καὶ τὰ ἄλλα ὅσα εἴρηκα ἠδικηκότα, εἷλον. καὶ ἐν τῇ τιμήσει βουλο- 18
μένων τῶν δικαστῶν θανάτου τιμῆσαι αὐτῷ, ἐδεήθην ἐγὼ τῶν δικαστῶν μηδὲν δι' ἐμοῦ τοιοῦτον πρᾶξαι, ἀλλὰ συγχωρῆσαι ὅσου περ αὐτοὶ ἐτιμῶντο, ταλάντου, οὐχ ἵνα μὴ ἀποθάνῃ ὁ Ἀρεθούσιος (ἄξια γὰρ αὐτῷ θανάτου εἴργαστο εἰς ἐμέ), ἀλλ' ἵν' ἐγὼ Πασίωνος ὢν καὶ κατὰ ψήφισμα πολίτης μηδένα Ἀθηναίων ἀπεκτονὼς εἴην. ὡς δ' ἀληθῆ εἴρηκα πρὸς ὑμᾶς, τούτων ὑμῖν μάρτυρας πάντων παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Ἃ μὲν τοίνυν ἀδικούμενος ὑπ' αὐτῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ 19
τὴν ἀπογραφὴν ἐποιησάμην, δεδήλωκα ὑμῖν· ὡς δ' ἔστιν Ἀρεθουσίου τἀνδράποδα ταῦτα καὶ ὄντα ἐν τῇ οὐσίᾳ τῇ ἐκείνου ἀπέγραψα, ἐπιδείξω ὑμῖν. τὸν μὲν γὰρ Κέρδωνα ἐκ μικροῦ παιδαρίου ἐξεθρέψατο· καὶ ὡς ἦν Ἀρεθουσίου, τούτων ὑμῖν τοὺς εἰδότας μάρτυρας παρέξομαι.

‖ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Παρ' οἷς τοίνυν εἰργάσατο πώποτε, ὡς τοὺς μισθοὺς 20
Ἀρεθούσιος ἐκομίζετο ὑπὲρ αὐτοῦ, καὶ δίκας ἐλάμβανε καὶ ἐδίδου ὁπότε κακόν τι ἐργάσαιτο, ὡς δεσπότης ὤν, τούτων ὑμῖν τοὺς εἰδότας μάρτυρας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Τὸν δὲ Μάνην, δανείσας ἀργύριον Ἀρχεπόλιδι τῷ Πειραιεῖ, ἐπειδὴ οὐχ οἷός τ' ἦν αὐτῷ ἀποδοῦναι ὁ Ἀρχέπολις οὔτε τὸν τόκον οὔτε τὸ ἀρχαῖον, ἅπαν ἐναπετίμησεν αὐτῷ. καὶ ὅτι ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν τοὺς μάρτυρας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Ἔτι τοίνυν καὶ ἐκ τῶνδε γνώσεσθε ὦ ἄνδρες δικασταὶ 21
ὅτι εἰσὶν Ἀρεθουσίου οἱ ἄνθρωποι· ὁπότε γὰρ οἱ ἄνθρωποι οὗτοι ἢ ὀπώραν πρίαιντο ἢ θέρος μισθοῖντο ἐκθερίσαι ἢ ἄλλο τι τῶν περὶ γεωργίαν ἔργων ἀναιροῖντο, Ἀρεθούσιος ἦν ὁ ὠνούμενος καὶ μισθούμενος ὑπὲρ αὐτῶν. ὡς δ' ἀληθῆ λέγω, καὶ τούτων ὑμῖν τοὺς μάρτυρας παρέξομαι.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Ὅσας μὲν τοίνυν μαρτυρίας παρασχέσθαι εἶχον ὑμῖν, 22

ὡς ἔστιν Ἀρεθουσίου τἀνδράποδα, δεδήλωκα ὑμῖν· βούλομαι δὲ καὶ περὶ τῆς προκλήσεως εἰπεῖν, ἣν οὗτοί με προυκαλέσαντο καὶ ἐγὼ τούτους. οὗτοι μὲν γάρ με προυκαλέσαντο ὅτε ἡ πρώτη ἀνάκρισις ἦν, φάσκοντες ἕτοιμοι εἶναι παραδιδόναι ἐμοὶ αὐτῷ τἀνδράποδα βασανίσαι,
23 βουλόμενοι μαρτυρίαν τινὰ αὑτοῖς ταύτην γενέσθαι. ἐγὼ δ' ἀπεκρινάμην αὐτοῖς ἐναντίον μαρτύρων ὅτι ἕτοιμός εἰμι ἰέναι εἰς τὴν βουλὴν ‖ μετ' αὐτῶν καὶ παραλαμβάνειν μετ' ἐκείνης ἢ μετὰ τῶν ἕνδεκα, λέγων ὅτι, εἰ μὲν ἰδίαν δίκην ἐδικαζόμην αὐτοῖς, εἰ ἐμοὶ ἐξεδίδοσαν, παρελάμβανον ἄν, νῦν δὲ τῆς πόλεως εἴη τἀνδράποδα καὶ ἡ ἀπογραφή· δεῖν
24 οὖν δημοσίᾳ βασανίζεσθαι. ἡγούμην γὰρ οὐ προσήκειν ἐμοὶ ἰδιώτῃ ὄντι τοὺς δημοσίους βασανίζειν· οὔτε γὰρ τῆς βασάνου κύριος ἐγιγνόμην, οὔτε καλῶς ἔχειν τὰ λεγόμενα ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐμὲ κρίνειν. ἡγούμην τε δεῖν τὴν ἀρχὴν ἢ τοὺς ᾑρημένους ὑπὸ τῆς βουλῆς γράφεσθαι, καὶ κατασημηναμένους τὰς βασάνους, ὅ τι εἴπαιεν οἱ ἄνθρωποι, παρέχειν εἰς τὸ δικαστήριον, ἵν' ἀκούσαντες ἐκ
25 τούτων ἐψηφίσασθε ὁποῖόν τι ὑμῖν ἐδόκει. ἰδίᾳ μὲν γὰρ βασανιζομένων τῶν ἀνθρώπων ὑπ' ἐμοῦ ἀντελέγετ' ἂν ἅπαντα ὑπὸ τούτων, εἰ δὲ δημοσίᾳ, ἡμεῖς μὲν ἂν ἐσιωπῶμεν, οἱ δ' ἄρχοντες ἢ οἱ ᾑρημένοι ὑπὸ τῆς βουλῆς ἐβασάνιζον ἂν μέχρι οὗ αὐτοῖς ἐδόκει. ταῦτα δ' ἐμοῦ ἐθέλοντος οὐκ ἂν ἔφασαν τῇ ἀρχῇ παραδοῦναι, οὐδ' εἰς τὴν βουλὴν ἤθελον ἀκολουθεῖν. ὡς οὖν ἀληθῆ λέγω, κάλει μοι τοὺς τούτων μάρτυρας.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

26 Κατὰ πολλὰ μὲν οὖν ἔμοιγε δοκοῦσιν εἶναι ἀναίσχυντοι ἀμφισβητοῦντες τῶν ὑμετέρων, οὐχ ἥκιστα δὲ ὑμῖν αὐτοὺς ἐπιδείξω ἐκ τῶν νόμων τῶν ὑμετέρων. οὗτοι γάρ, ὅτε οἱ δικασταὶ ἐβούλοντο θανάτου τιμῆσαι τῷ Ἀρεθουσίῳ, ἐδέοντο τῶν δικαστῶν χρημάτων τιμῆσαι καὶ ἐμοῦ συγχω-
27 ρῆσαι, καὶ ὡμολόγησαν αὐτοὶ συνεκτίσειν. τοσούτου δὴ δέουσιν ἐκτίνειν καθ' ἃ ἠγγυήσαντο, ὥστε καὶ τῶν ὑμετέρων ἀμφισβητοῦσιν. καίτοι οἵ γε νόμοι κελεύουσι τὴν οὐσίαν ‖ εἶναι δημοσίαν, ὃς ἂν ἐγγυησάμενός τι τῶν τῆς πόλεως μὴ ἀποδιδῷ τὴν ἐγγύην· ὥστε καὶ εἰ τούτων ἦν

τἀνδράποδα, προσῆκεν αὐτὰ δημόσια εἶναι, εἴπερ τι τῶν νόμων ὄφελος. καὶ πρὶν μὲν ὀφείλειν τῷ δημοσίῳ ὁ 28
Ἀρεθούσιος ὡμολογεῖτο τῶν ἀδελφῶν εὐπορώτατος εἶναι· ἐπειδὴ δ᾽ οἱ νόμοι κελεύουσι τἀκείνου ὑμέτερα εἶναι, τηνικαῦτα πένης ὢν φαίνεται ὁ Ἀρεθούσιος, καὶ τῶν μὲν ἡ μήτηρ ἀμφισβητεῖ τῶν δ᾽ οἱ ἀδελφοί. χρῆν δ᾽ αὐτούς, εἴπερ ἐβούλοντο δικαίως προσφέρεσθαι πρὸς ὑμᾶς, ἀποδείξαντας ἅπασαν τὴν οὐσίαν τὴν ἐκείνου, τὰ τούτων αὐτῶν εἴ τις ἀπέγραφεν, ἀμφισβητεῖν. ἐὰν οὖν ἐνθυμηθῆτε 29
ὅτι οὐδέποτ᾽ ἔσται ἀπορία τῶν ἀμφισβητησόντων ὑμῖν περὶ τῶν ὑμετέρων, — ἢ γὰρ ὀρφανοὺς ἢ ἐπικλήρους κατασκευάσαντες ἀξιώσουσιν ἐλεεῖσθαι ὑφ᾽ ὑμῶν, ἢ γῆρας καὶ ἀπορίας καὶ τροφὰς μητρὶ λέγοντες, καὶ ὀδυρόμενοι δι᾽ ὧν μάλιστ᾽ ἐλπίζουσιν ἐξαπατήσειν ὑμᾶς, πειράσονται ἀποστερῆσαι τὴν πόλιν τοῦ ὀφλήματος. ἐὰν οὖν ταῦτα παριδόντες πάντα καταψηφίσησθε, ὀρθῶς βουλεύσεσθε.

ΚΑΤΑ ΚΟΝΩΝΟΣ ΑΙΚΙΑΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. Ἀρίστων Ἀθηναῖος δικάζεται Κόνωνι αἰκίας, λέγων ὑπὸ αὐτοῦ καὶ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ τετυπτῆσθαι, καὶ μάρτυρας τούτου παρεχόμενος. ὁ δὲ Κόνων ἀρνεῖται ‖ τὸ πρᾶγμα καὶ μάρτυρας ἀντιπαρέχεται, οὓς ὁ Δημοσθένης οὔ φησι πιστούς· βεβιωκέναι γὰρ φαύλως καὶ εὐχερῶς ἔχειν πρὸς τὸ ψεύδεσθαι.

Ὑβρισθεὶς ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ παθὼν ὑπὸ Κόνωνος τουτουὶ τοιαῦτα ὥστε πολὺν χρόνον πάνυ μήτε τοὺς οἰκείους μήτε τῶν ἰατρῶν μηδένα προσδοκᾶν περιφεύξεσθαί με, ὑγιάνας καὶ σωθεὶς ἀπροσδοκήτως ἔλαχον αὐτῷ τὴν δίκην τῆς αἰκίας ταυτηνί. πάντων δὲ τῶν οἰκείων καὶ τῶν φίλων, οἷς συνεβουλευόμην, ἔνοχον μὲν φασκόντων αὐτὸν ἐκ τῶν πεπραγμένων εἶναι καὶ τῇ τῶν λωποδυτῶν ἀπαγωγῇ καὶ ταῖς τῆς ὕβρεως γραφαῖς, συμβουλευόντων δέ μοι καὶ παραινούντων μὴ μείζω πράγματα ἢ δυνήσομαι φέρειν ἐπάγεσθαι, μηδ᾽ ὑπὲρ τὴν ἡλικίαν ὧν ἐπεπόνθειν ἐγκαλοῦντα φαίνεσθαι, οὕτως ἐποίησα καὶ δι᾽ ἐκείνους ἰδίαν ἔλαχον δίκην, ἥδιστ᾽ ἂν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι θανάτου κρίνας τουτονί. καὶ τούτου συγγνώμην ἕξετε, 2
εὖ οἶδ᾽ ὅτι, πάντες, ἐπειδὰν ἃ πέπονθ᾽ ἀκούσητε· δεινῆς

γὰρ οὔσης τῆς τότε συμβάσης ὕβρεως οὐκ ἐλάττων ἡ μετὰ ταῦτ᾽ ἀσέλγειά ἐστι τουτουί. ἀξιῶ δὲ καὶ δέομαι πάντων ὁμοίως ὑμῶν πρῶτον μὲν εὐνοϊκῶς ἀκοῦσαί μου περὶ ὧν πέπονθα λέγοντος, ‖ εἶτ᾽, ἐὰν ἠδικῆσθαι καὶ παρανενομῆσθαι δοκῶ, βοηθῆσαί μοι τὰ δίκαια. ἐξ ἀρχῆς δ᾽ ὡς ἕκαστα πέπρακται, διηγήσομαι πρὸς ὑμᾶς, ὡς ἂν οἷός τε ὦ διὰ βραχυτάτων.

3 *Ἐξήλθομεν, ἔτος τουτὶ τρίτον, εἰς Πάνακτον φρουρᾶς ἡμῖν προγραφείσης. ἐσκήνωσαν οὖν οἱ υἱεῖς οἱ Κόνωνος τουτουὶ ἐγγὺς ἡμῶν, ὡς οὐκ ἂν ἐβουλόμην· ἡ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ἔχθρα καὶ τὰ προσκρούσματ᾽ ἐκεῖθεν ἡμῖν συνέβη, ἐξ ὧν δ᾽, ἀκούσεσθε. ἔπινον ἑκάστοτε οὗτοι τὴν ἡμέραν, ἐπειδὴ τάχιστα ἀριστήσαιεν, ὅλην, καὶ τοῦθ᾽, ἕως περ ἦμεν ἐπὶ τῇ φρουρᾷ, διετέλουν ποιοῦντες. ἡμεῖς δ᾽ ὥσπερ* 4 *ἐνθάδ᾽ εἰώθαμεν, οὕτω διήγομεν καὶ ἔξω. ἣν οὖν δειπνοποιεῖσθαι τοῖς ἄλλοις ὥραν συμβαίνοι, ταύτην ἂν ἤδη ἐπαρῴνουν οὗτοι, τὰ μὲν πολλὰ εἰς τοὺς παῖδας ἡμῶν τοὺς ἀκολούθους, τελευτῶντες δὲ καὶ εἰς ἡμᾶς αὐτούς· φήσαντες γὰρ καπνίζειν αὐτοὺς ὀψοποιουμένους τοὺς παῖδας ἢ κακῶς λέγειν, ὅ τι τύχοιεν, ἔτυπτον καὶ τὰς ἀμίδας κατεσκεδάννυσαν καὶ προσεούρουν καὶ ἀσελγείας καὶ ὕβρεως οὐδ᾽ ὁτιοῦν ἀπέλειπον. ὁρῶντες δ᾽ ἡμεῖς ταῦτα καὶ λυπούμενοι τὸ μὲν πρῶτον ἀπεπεμψάμεθα, ὡς δ᾽ ἐχλεύαζον ἡμᾶς καὶ οὐκ ἐπαύοντο, τῷ στρατηγῷ τὸ πρᾶγμα εἴπομεν κοινῇ πάντες οἱ σύσσιτοι προσελθόντες, οὐκ* 5 *ἐγὼ τῶν ἄλλων ἔξω. λοιδορηθέντος δ᾽ αὐτοῖς ἐκείνου καὶ κακίσαντος αὐτοὺς οὐ μόνον περὶ ὧν εἰς ἡμᾶς ἠσέλγαινον, ἀλλὰ καὶ περὶ ὧν ὅλως ἐποίουν ἐν τῷ στρατοπέδῳ, τοσούτου ἐδέησαν παύσασθαι ἢ αἰσχυνθῆναι ὥστ᾽ ἐπειδὴ θᾶττον συνεσκότασεν, εὐθὺς ὡς ἡμᾶς εἰσεπήδησαν ταύτῃ τῇ ἑσπέρᾳ, καὶ τὸ ‖ μὲν πρῶτον κακῶς ἔλεγον, τελευτῶντες δὲ καὶ πληγὰς ἐνέτειναν ἐμοί, καὶ τοσαύτην κραυγὴν καὶ θόρυβον περὶ τὴν σκηνὴν ἐποίησαν ὥστε καὶ τὸν στρατηγὸν καὶ τοὺς ταξιάρχους ἐλθεῖν καὶ τῶν ἄλλων στρατιωτῶν τινάς, οἵπερ ἐκώλυσαν μηδὲν ἡμᾶς ἀνήκεστον παθεῖν μηδ᾽ αὐτοὺς ποιῆσαι παροινουμένους ὑπὸ τούτων.*
6 *τοῦ δὲ πράγματος εἰς τοῦτο προελθόντος, ὡς δεῦρ᾽ ἐπ-*

ανήλθομεν, ἣν ἡμῖν, οἷον εἰκός, ἐκ τούτων ὀργὴ καὶ ἔχθρα πρὸς ἀλλήλους. οὐ μὴν ἔγωγε μὰ τοὺς θεοὺς ᾤμην δεῖν οὔτε δίκην λαχεῖν αὐτοῖς οὔτε λόγον ποιεῖσθαι τῶν συμβάντων οὐδένα, ἀλλ' ἐκεῖνο ἁπλῶς ἐγνώκειν τὸ λοιπὸν εὐλαβεῖσθαι καὶ φυλάττεσθαι μὴ πλησιάζειν τοῖς τοιούτοις.

Πρῶτον μὲν οὖν τούτων ὧν εἴρηκα βούλομαι τὰς μαρτυρίας παρασχόμενος, μετὰ ταῦτα οἷα ὑπ' αὐτοῦ τούτου πέπονθα ἐπιδεῖξαι, ἵνα εἰδῆτε ὅτι ᾧ προσῆκε τοῖς τὸ πρῶτον ἁμαρτηθεῖσιν ἐπιτιμᾶν, οὗτος αὐτὸς πρότερος πολλῷ δεινότερ' εἴργασται.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὧν μὲν τοίνυν οὐδένα ᾤμην δεῖν λόγον ποιεῖσθαι, ταῦτ' 7
ἐστίν· χρόνῳ δ' ὕστερον οὐ πολλῷ περιπατοῦντος, ὥσπερ εἰώθειν, ἑσπέρας ἐν ἀγορᾷ μου μετὰ Φανοστράτου τοῦ Κηφισιέως, τῶν ἡλικιωτῶν τινός, παρέρχεται Κτησίας ὁ υἱὸς ὁ τούτου, μεθύων, κατὰ τὸ Λεωκόριον, ἐγγὺς τῶν Πυθοδώρου. κατιδὼν δ' ἡμᾶς καὶ κραυγάσας, καὶ διαλεχθείς τι πρὸς αὐτὸν οὕτως ὡς ἂν μεθύων, ὥστε μὴ μαθεῖν ὅ τι λέγοι, παρῆλθε πρὸς Μελίτην ἄνω· ἔπινον γὰρ ἐνταῦθα (ταῦτα γὰρ ὕστερον ἐπυθόμεθα) παρὰ ‖ Παμφίλῳ τῷ κναφεῖ Κόνων οὑτοσί, Θεότιμός τις, Ἀρχεβιάδης, Σπίνθαρος ὁ Εὐβούλου, Θεογένης ὁ Ἀνδρομένους, πολλοί τινες, οὓς ἐξαναστήσας ὁ Κτησίας ἐπορεύετο εἰς τὴν ἀγοράν. καὶ ἡμῖν συμβαίνει ἀναστρέφουσιν ἀπὸ τοῦ Φερ- 8
ρεφαττίου καὶ περιπατοῦσι πάλιν κατ' αὐτό πως τὸ Λεωκόριον εἶναι, καὶ τούτοις περιτυγχάνομεν. ὡς δ' ἀνεμίχθημεν, εἷς μὲν αὐτῶν, ἀγνώς τις, τῷ Φανοστράτῳ προσπίπτει καὶ κατεῖχεν ἐκεῖνον, Κόνων δ' οὑτοσὶ καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ καὶ ὁ Ἀνδρομένους υἱὸς ἐμοὶ περιπεσόντες τὸ μὲν πρῶτον ἐξέδυσαν, εἶθ' ὑποσκελίσαντες καὶ ῥάξαντες εἰς τὸν βόρβορον οὕτω διέθηκαν ἐναλλόμενοι καὶ ὑβρίζοντες ὥστε τὸ μὲν χεῖλος διακόψαι, τοὺς δ' ὀφθαλμοὺς συγκλεῖσαι· οὕτω δὲ κακῶς ἔχοντα κατέλιπον ὥστε μήτε ἀναστῆναι μήτε φθέγξασθαι δύνασθαι. κείμενος δ' αὐτῶν ἤκουον πολλὰ καὶ δεινὰ λεγόντων. καὶ τὰ μὲν ἄλλα καὶ 9
βλασφημίαν ἔχει τινά, καὶ ὀνομάζειν ὀκνήσαιμ' ἂν ἐν ὑμῖν ἔνια, ὃ δὲ τῆς ὕβρεώς ἐστι τῆς τούτου σημεῖον καὶ τεκμή-

ριον τοῦ πᾶν τὸ πρᾶγμα ὑπὸ τούτου γεγενῆσθαι, τοῦθ' ὑμῖν ἐρῶ· ἦδε γὰρ τοὺς ἀλεκτρυόνας μιμούμενος τοὺς νενικηκότας, οἱ δὲ κροτεῖν τοῖς ἀγκῶσιν αὐτὸν ἠξίουν ἀντὶ πτερύγων τὰς πλευράς. καὶ μετὰ ταῦτα ἐγὼ μὲν ἀπεκομίσθην ὑπὸ τῶν παρατυχόντων γυμνός, οὗτοι δ' ᾤχοντο θοἰμάτιον λαβόντες μου. ὡς δ' ἐπὶ τὴν θύραν ἦλθον, κραυγὴ καὶ βοὴ τῆς μητρὸς καὶ τῶν θεραπαινίδων ἦν, καὶ μόγις ποτὲ εἰς βαλανεῖον ἐνεγκόντες με καὶ περιπλύναντες ἔδειξαν τοῖς ἰατροῖς. ὡς οὖν ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν τοὺς μάρτυρας παρέξομαι.

‖ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

10 Συνέβη τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ Εὐξίθεον τουτονὶ τὸν Χολλείδην, ὄνθ' ἡμῖν συγγενῆ, καὶ Μειδίαν μετὰ τούτου ἀπὸ δείπνου ποθὲν ἀπιόντας περιτυχεῖν πλησίον ὄντι μοι τῆς οἰκίας ἤδη, καὶ εἰς τὸ βαλανεῖον φερομένῳ παρακολουθῆσαι, καὶ ἰατρὸν ἄγουσι παραγενέσθαι. οὕτω δ' εἶχον ἀσθενῶς ὥσθ', ἵνα μὴ μακρὰν φεροίμην οἴκαδε ἐκ τοῦ βαλανείου, ἐδόκει τοῖς παροῦσιν ὡς τὸν Μειδίαν ἐκείνην τὴν ἑσπέραν κομίσαι με· καὶ ἐποίησαν οὕτως. λαβὲ οὖν καὶ τὰς τούτων μαρτυρίας, ἵν' εἰδῆθ' ὅτι πολλοὶ συνίσασιν ὡς ὑπὸ τούτων ὑβρίσθην.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Λαβὲ δὴ καὶ τὴν τοῦ ἰατροῦ μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

11 Τότε μὲν τοίνυν παραχρῆμα ὑπὸ τῶν πληγῶν ὧν ἔλαβον καὶ τῆς ὕβρεως οὕτω διετέθην ὡς ἀκούετε καὶ μεμαρτύρηται παρὰ πάντων ὑμῖν τῶν εὐθὺς ἰδόντων· μετὰ δὲ ταῦτα τῶν μὲν οἰδημάτων τῶν ἐν τῷ προσώπῳ καὶ τῶν ἑλκῶν οὐδὲν ἔφη φοβεῖσθαι λίαν ὁ ἰατρός, πυρετοὶ δὲ παρηκολούθουν μοι συνεχεῖς καὶ ἀλγήματα ὅλου μὲν τοῦ σώματος πάνυ σφοδρὰ καὶ δεινά, μάλιστα δὲ τῶν πλευ-
12 ρῶν καὶ τοῦ ἤτρου, καὶ τῶν σιτίων ἀπεκεκλείμην. καὶ ὡς μὲν ὁ ἰατρὸς ἔφη, εἰ μὴ κάθαρσις αἵματος αὐτομάτη μοι πάνυ πολλὴ συνέβη περιωδύνῳ ὄντι καὶ ἀπορουμένῳ ἤδη, κἂν ἔμπυος γενόμενος διεφθάρην· νῦν δὲ τοῦτ' ἔσωσε τὸ αἷμα ἀποχωρῆσαν. ὡς οὖν καὶ ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, καὶ παρηκολούθησέ μοι ‖ τοιαύτη νόσος ἐξ ἧς εἰς τοὔσχατον

ἦλθον, ἐξ ὧν ὑπὸ τούτων ἔλαβον πληγῶν, λέγε τὴν τοῦ
ἰατροῦ μαρτυρίαν καὶ τὴν τῶν ἐπισκοπούντων.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ὅτι μὲν τοίνυν οὐ μετρίας τινὰς καὶ φαύλας λαβὼν 13
πληγάς, ἀλλ' εἰς πᾶν ἐλθὼν διὰ τὴν ὕβριν καὶ τὴν ἀσέλ-
γειαν τὴν τούτων πολὺ τῆς προσηκούσης ἐλάττω δίκην
εἴληχα, πολλαχόθεν νομίζω δῆλον ὑμῖν γεγενῆσθαι· οἴο-
μαι δ' ὑμῶν ἐνίους θαυμάζειν, τί ποτέ ἐστιν ἃ πρὸς
ταῦτα τολμήσει Κόνων λέγειν. βούλομαι δὴ προειπεῖν
ὑμῖν ἃ ἐγὼ πέπυσμαι λέγειν αὐτὸν παρεσκευάσθαι, ἀπὸ
τῆς ὕβρεως καὶ τῶν πεπραγμένων τὸ πρᾶγμ' ἀπαγαγόντα
εἰς γέλωτα καὶ σκώμματα ἐμβαλεῖν πειράσεσθαι, καὶ ἐρεῖν 14
ὡς εἰσὶν ἐν τῇ πόλει πολλοί, καλῶν κἀγαθῶν ἀνδρῶν υἱεῖς,
οἳ παίζοντες οἷα ἄνθρωποι νέοι σφίσιν αὐτοῖς ἐπωνυμίας
πεποίηνται, καὶ καλοῦσι τοὺς μὲν ἰθυφάλλους τοὺς δὲ
αὐτοληκύθους, ἐρῶσι δ' ἐκ τούτων ἑταιρῶν τινές, καὶ δὴ
καὶ τὸν υἱὸν τὸν ἑαυτοῦ εἶναι τούτων ἕνα, καὶ πολλάκις
περὶ ἑταίρας καὶ εἰληφέναι καὶ δεδωκέναι πληγάς, καὶ
ταῦτ' εἶναι νέων ἀνθρώπων. ἡμᾶς δὲ πάντας τοὺς ἀδελ-
φοὺς παροίνους μέν τινας καὶ ὑβριστὰς κατασκευάσει,
ἀγνώμονας δὲ καὶ πικρούς. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ 15
χαλεπῶς ἐφ' οἷς πέπονθα ἐνηνοχὼς οὐχ ἧττον τοῦτ' ἀγα-
νακτήσαιμ' ἂν καὶ ὑβρισθῆναι νομίσαιμι, εἰ οἷόν τ' εἰπεῖν,
εἰ ταῦτ' ἀληθῆ δόξει Κόνων οὑτοσὶ λέγειν περὶ ἡμῶν,
καὶ τοσαύτη τις ἄγνοια παρ' ὑμῖν ἐστὶν ὥσθ', ὁποῖος ἄν
τις ἕκαστος εἶναι φῇ ἢ ὁ πλησίον αὐτὸν αἰτιάσηται, τοι-
οῦτος νομισθήσεται, τοῦ δὲ καθ' ἡμέραν ‖ βίου καὶ τῶν
ἐπιτηδευμάτων μηδ' ὁτιοῦν ἔσται τοῖς μετρίοις ὄφελος.
ἡμεῖς γὰρ οὔτε παροινοῦντες οὔθ' ὑβρίζοντες ὑπ' οὐδενὸς 16
ἀνθρώπων ἑωράμεθα· οὐδ' ἄγνωμον οὐδὲν ἡγούμεθα
ποιεῖν, εἰ περὶ ὧν ἠδικήμεθ' ἀξιοῦμεν κατὰ τοὺς νόμους
δίκην λαβεῖν. ἰθυφάλλοις δὲ καὶ αὐτοληκύθοις συγχω-
ροῦμεν εἶναι τοῖς υἱέσι τοῖς τούτου, καὶ ἔγωγ' εὔχομαι
τοῖς θεοῖς εἰς Κόνωνα καὶ τοὺς υἱεῖς τοὺς τούτου καὶ ταῦτα
καὶ τὰ τοιαῦτα ἅπαντα τρέπεσθαι. οὗτοι γάρ εἰσιν οἱ 17
τελοῦντες ἀλλήλους τῷ ἰθυφάλλῳ, καὶ τοιαῦτα ποιοῦντες

ἃ πολλὴν αἰσχύνην ἔχει καὶ λέγειν, μὴ ὅτι γε δὴ ποιεῖν
ἀνθρώπους μετρίους. ἀλλὰ τί ταῦτ᾽ ἐμοί; θαυμάζω γὰρ
ἔγωγε εἴ τίς ἐστι πρόφασις παρ᾽ ὑμῖν ἢ σκῆψις εὑρη-
μένη, δι᾽ ἥν, ἂν ὑβρίζων τις ἐξελέγχηται καὶ τύπτων, δί-
κην οὐ δώσει. οἱ μὲν γὰρ νόμοι πολὺ τἀναντία καὶ τὰς
ἀναγκαίας προφάσεις, ὅπως μὴ μείζους γίγνωνται, προ-
είδοντο, οἷον (ἀνάγκη γάρ μοι ταῦτα καὶ ζητεῖν καὶ πυν-
θάνεσθαι διὰ τοῦτον γέγονεν) εἰσὶ κακηγορίας δίκαι·
18 φασὶ τοίνυν ταύτας διὰ τοῦτο γίγνεσθαι, ἵνα μὴ λοιδο-
ρούμενοι τύπτειν ἀλλήλους προάγωνται. πάλιν αἰκίας
εἰσίν· καὶ ταύτας ἀκούω διὰ τοῦτ᾽ εἶναι τὰς δίκας, ἵνα
μηδείς, ὅταν ἥττων ᾖ, λίθῳ μηδὲ τῶν τοιούτων ἀμύνηται
μηδενί, ἀλλὰ τὴν ἐκ τοῦ νόμου δίκην ἀναμένῃ. τραύ-
ματος πάλιν εἰσὶ γραφαὶ τοῦ μὴ τιτρωσκομένων τινῶν
19 φόνους γίγνεσθαι. τὸ φαυλότατον, οἶμαι, τὸ τῆς λοι-
δορίας, πρὸ τοῦ τελευταίου καὶ δεινοτάτου προεώραται,
τοῦ μὴ φόνον γίγνεσθαι μηδὲ κατὰ μικρὸν ὑπάγεσθαι
ἐκ μὲν λοιδορίας ‖ εἰς πληγάς, ἐκ δὲ πληγῶν εἰς τραύ-
ματα, ἐκ δὲ τραυμάτων εἰς θάνατον, ἀλλ᾽ ἐν τοῖς νόμοις
εἶναι τούτων ἑκάστου τὴν δίκην, μὴ τῇ τοῦ προστυχόντος
20 ὀργῇ μηδὲ βουλήσει ταῦτα κρίνεσθαι. εἶτ᾽ ἐν μὲν τοῖς
νόμοις οὕτως· ἂν δ᾽ εἴπῃ Κόνων "ἰθύφαλλοί τινές ἐσμεν
ἡμεῖς συνειλεγμένοι, καὶ ἐρῶντες οὓς ἂν ἡμῖν δόξῃ παίο-
μεν καὶ ἄγχομεν," εἶτα γελάσαντες ὑμεῖς ἀφήσετε; οὐκ
οἴομαί γε. οὐ γὰρ ἂν γέλως ὑμῶν ἔλαβεν οὐδένα, εἰ
παρὼν ἐτύγχανεν ἡνίκα εἱλκόμην καὶ ἐξεδυόμην καὶ ὑβρι-
ζόμην, καὶ ὑγιὴς ἐξελθὼν φοράδην ἦλθον οἴκαδε, ἐξεπε-
πηδήκει δὲ μετὰ ταῦθ᾽ ἡ μήτηρ, καὶ κραυγὴ καὶ βοὴ τῶν
γυναικῶν τοσαύτη παρ᾽ ἡμῖν ἦν ὡσπερανεὶ τεθνεῶτός
τινος, ὥστε τῶν γειτόνων τινὰς πέμψαι πρὸς ἡμᾶς ἐρη-
21 σομένους ὅ τι ἐστὶ τὸ συμβεβηκός. ὅλως δ᾽ ὦ ἄνδρες
δικασταὶ δίκαιον μὲν οὐδενὶ δή που σκῆψιν οὐδεμίαν τοιαύ-
την οὐδὲ ἄδειαν ὑπάρχειν παρ᾽ ὑμῶν, δι᾽ ἣν ὑβρίζειν ἐξέ-
σται· εἰ δ᾽ ἄρ᾽ ἔστι τῳ, τοῖς δι᾽ ἡλικίαν [ἢ νεότητα] τού-
των τι πράττουσι, τούτοις ἀποκεῖσθαι προσήκει τὰς
τοιαύτας καταφυγάς, καὶ ἐκείνοις οὐκ εἰς τὸ μὴ δοῦναι

δίκην, ἀλλ᾽ εἰς τὸ τῆς προσηκούσης ἐλάττω. ὅστις δ᾽ ἐτῶν 22
μὲν ἐστι πλειόνων ἢ πεντήκοντα, παρὼν δὲ νεωτέροις
ἀνθρώποις καὶ τούτοις υἱέσιν οὐχ ὅπως ἀπέτρεψεν ἢ
διεκώλυσεν, ἀλλ᾽ αὐτὸς ἡγεμὼν καὶ πρῶτος καὶ πάντων
βδελυρώτατος γεγένηται, τίν᾽ ἂν οὗτος ἀξίαν τῶν πεπρα-
γμένων ὑπόσχοι δίκην; ἐγὼ μὲν γὰρ οὐδ᾽ ἀποθανόντα
οἴομαι. καὶ γὰρ εἰ μηδὲν αὐτὸς εἴργαστο τῶν πεπραγμέ-
νων, ἀλλ᾽ εἰ παρεστηκότος ‖ τούτου Κτησίας ὁ υἱὸς ὁ τού-
του ταῦθ᾽ ἅπερ νυνὶ πεποιηκὼς ἐφαίνετο, τοῦτον ἐμισεῖτ᾽
ἂν δικαίως. εἰ γὰρ οὕτω τοὺς ἑαυτοῦ προῆκται παῖδας 23
ὥστ᾽ ἐναντίον ἐξαμαρτάνοντας ἑαυτοῦ, καὶ ταῦτα ἐφ᾽ ὧν
ἐνίοις θάνατος ἡ ζημία κεῖται, μήτε φοβεῖσθαι μήτ᾽ αἰ-
σχύνεσθαι, τί τοῦτον οὐκ ἂν εἰκότως παθεῖν οἴεσθε; ἐγὼ
μὲν γὰρ ἡγοῦμαι ταῦτ᾽ εἶναι σημεῖα τοῦ μηδὲ τοῦτον τὸν
ἑαυτοῦ πατέρα αἰσχύνεσθαι· εἰ γὰρ ἐκεῖνον αὐτὸς ἐτίμα
καὶ ἐδεδίει, κἂν τούτους αὐτὸν ἠξίου.

Λαβὲ δή μοι καὶ τοὺς νόμους, τῆς ὕβρεως καὶ τὸν 24
περὶ τῶν λωποδυτῶν· καὶ γὰρ τούτοις ἀμφοτέροις ἐνό-
χους τούτους ὄψεσθε. λέγε.

ΝΟΜΟΙ.

Τούτοις τοῖς νόμοις ἀμφοτέροις ἐκ τῶν πεπραγμένων
ἔνοχος Κόνων ἐστὶν οὑτοσί· καὶ γὰρ ὕβριζε καὶ ἐλωπο-
δύτει. εἰ δὲ μὴ κατὰ τούτους προειλόμεθ᾽ ἡμεῖς δίκην
λαμβάνειν, ἡμεῖς μὲν ἀπράγμονες καὶ μέτριοι φαινοίμεθ᾽
ἂν εἰκότως, οὗτος δ᾽ ὁμοίως πονηρός. καὶ μὴν εἰ παθεῖν 25
τί μοι συνέβη, φόνου καὶ τῶν δεινοτάτων ἂν ἦν ὑπόδικος.
τὸν γοῦν τῆς Βραυρωνόθεν ἱερείας πατέρα ὁμολογουμέ-
νως οὐχ ἀψάμενον τοῦ τελευτήσαντος, ὅτι τῷ πατάξαντι
τύπτειν παρεκελεύσατο, ἐξέβαλεν ἡ βουλὴ ἡ ἐξ Ἀρείου
πάγου. δικαίως· εἰ γὰρ οἱ παρόντες ἀντὶ τοῦ κωλύειν
τοὺς ἢ δι᾽ οἶνον ἢ δι᾽ ὀργὴν ἤ τιν᾽ ἄλλην αἰτίαν ἐξαμαρτά-
νειν ἐπιχειροῦντας αὐτοὶ παροξυνοῦσιν, οὐδεμί᾽ ἐστὶν ἐλ-
πὶς σωτηρίας τῷ περιπίπτοντι τοῖς ἀσελγαίνουσιν, ἀλλ᾽
ἕως ἂν ἀπείπωσιν ὑβρίζεσθαι ὑπάρξει· ὅπερ ἐμοὶ συνέβη.

Ἃ τοίνυν ὅθ᾽ ἡ δίαιτα ἐγίγνετο ‖ ἐποίουν, βούλομαι 26
πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν· καὶ γὰρ ἐκ τούτων τὴν ἀσέλγειαν θεά-

σεσθε αὐτῶν. ἐποίησαν μὲν γὰρ ἔξω μέσων νυκτῶν τὴν ὥραν, οὔτε τὰς μαρτυρίας ἀναγιγνώσκειν ἐθέλοντες οὔτε ἀντίγραφα διδόναι, τῶν τε παρόντων ἡμῖν καθ' ἕνα οὑτωσὶ πρὸς τὸν βωμὸν ἄγοντες καὶ ἐξορκίζοντες, καὶ γράφοντες μαρτυρίας οὐδὲν πρὸς τὸ πρᾶγμα, ἀλλ' ἐξ ἑταίρας εἶναι παιδίον αὐτῷ. τοῦτο καὶ πεπονθέναι τὰ καὶ τά, ἃ μὰ τοὺς θεοὺς ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὐδεὶς ὅστις οὐκ ἐπετίμα τῶν παρόντων καὶ ἐμίσει, τελευτῶντες δὲ καὶ αὐτοὶ
27 *οὗτοι ἑαυτούς. ἐπειδὴ δ' οὖν ποτ' ἀπεῖπον καὶ ἐνεπλήσθησαν ταῦτα ποιοῦντες, προκαλοῦνται ἐπὶ διακρούσει καὶ τῷ μὴ σημανθῆναι τοὺς ἐχίνους ἐθέλειν ἐκδοῦναι περὶ τῶν πληγῶν παῖδας, ὀνόματα γράψαντες. καὶ νῦν οἴομαι περὶ τοῦτ' ἔσεσθαι τοὺς πολλοὺς τῶν λόγων αὐτοῖς. ἐγὼ δ' οἴομαι δεῖν πάντας ὑμᾶς ἐκεῖνο σκοπεῖν, ὅτι οὗτοι, εἰ τοῦ γενέσθαι τὴν βάσανον ἕνεκα προυκαλοῦντο καὶ ἐπίστευον τῷ δικαίῳ τούτῳ, οὐκ ἂν ἤδη τῆς διαίτης ἀποφαινομένης, νυκτός, οὐδεμιᾶς ὑπολοίπου σκή-*
28 *ψεως οὔσης προυκαλοῦντο, ἀλλὰ πρῶτον μὲν πρὸ τοῦ τὴν δίκην ληχθῆναι, ἡνίκ' ἀσθενῶν ἐγὼ κατεκείμην καὶ οὐκ εἰδὼς εἰ περιφεύξομαι πρὸς ἅπαντας τοὺς εἰσιόντας τοῦτον ἀπέφαινον τὸν πρῶτον πατάξαντα καὶ τὰ πλεῖσθ' ὧν ὑβρίσμην διαπεπραγμένον, τότ' ἂν εὐθέως ἧκεν ἔχων μάρτυρας πολλοὺς ἐπὶ τὴν οἰκίαν, τότ' ἂν τοὺς οἰκέτας παρεδίδου καὶ τῶν ἐξ Ἀρείου πάγου τινὰς παρεκάλει· εἰ*
29 *γὰρ ἀπέθανον, παρ' ἐκείνοις ‖ ἂν ἦν ἡ δίκη. εἰ δ' ἄρ' ἠγνόησε ταῦτα καὶ τοῦτο τὸ δίκαιον ἔχων, ὡς νῦν φήσει, οὐ παρεσκευάσατο ὑπὲρ τηλικούτου κινδύνου, ἐπειδή γ' ἀνεστηκὼς ἤδη προσεκαλεσάμην αὐτόν, ἐν τῇ πρώτῃ συνόδῳ πρὸς τῷ διαιτητῇ παραδιδοὺς ἐφαίνετ' ἄν· ὧν οὐδὲν πέπρακται τούτῳ. ὅτι δ' ἀληθῆ λέγω καὶ διακρούσεως ἕνεκα ἡ πρόκλησις ἦν, λέγε ταύτην τὴν μαρτυρίαν· ἔσται γὰρ ἐκ ταύτης φανερόν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

30 *Περὶ μὲν τοίνυν τῆς βασάνου ταῦτα μέμνησθε, τὴν ὥραν ἡνίκα προυκαλεῖτο, ὧν ἕνεκ' ἐκκρούων ταῦτ' ἐποίει, τοὺς χρόνους τοὺς πρώτους, ἐν οἷς οὐδαμοῦ τοῦτο βουλη-*

θεὶς τὸ δίκαιον αὐτῷ γενέσθαι φαίνεται, οὐδὲ προκαλε-
σάμενος, οὐδ᾽ ἀξιώσας. ἐπειδὴ τοίνυν ταῦτα πάντα ἠλέγ-
χετο, ἅπερ παρ᾽ ὑμῖν, πρὸς τῷ διαιτητῇ, καὶ φανερῶς
ἐδείκνυτο πᾶσιν ὧν ἔνοχος τοῖς ἐγκεκλημένοις, ἐμβάλλεται
μαρτυρίαν ψευδῆ, καὶ ἐπιγράφεται μάρτυρας ἀνθρώπους 31
οὓς οὐδ᾽ ὑμᾶς ἀγνοήσειν οἴομαι, ἐὰν ἀκούσητε, "Διότιμος
Διοτίμου Ἰκαριεύς, Ἀρχεβιάδης Δημοτέλους Ἁλαιεύς, Χαι-
ρέτιμος Χαριμένους Πιτθεὺς μαρτυροῦσιν ἀπιέναι ἀπὸ
δείπνου μετὰ Κόνωνος, καὶ προσελθεῖν ἐν ἀγορᾷ μαχο-
μένοις Ἀρίστωνι καὶ τῷ υἱεῖ τῷ Κόνωνος, καὶ μὴ πατάξαι
Κόνωνα Ἀρίστωνα," ὡς ὑμᾶς εὐθέως πιστεύσοντας, τὸ δ᾽ 32
ἀληθὲς οὐ λογιουμένους, ὅτι πρῶτον μὲν οὐδέποτ᾽ ἂν οὔθ᾽
ὁ Λυσίστρατος οὔθ᾽ ὁ Πασέας οὔθ᾽ ὁ Νικήρατος οὔθ᾽ ὁ
Διόδωρος, οἳ διαρρήδην μεμαρτυρήκασιν ὁρᾶν ὑπὸ Κόνω-
νος τυπτόμενον ἐμὲ καὶ θοἰμάτιον ἐκδυόμενον καὶ τἆλλα
ὅσα ἔπασχον ὑβριζόμενον, ἀγνῶτες ὄντες ‖ καὶ ἀπὸ ταὐτο-
μάτου παραγενόμενοι τῷ πράγματι τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν
ἠθέλησαν, εἰ μὴ ταῦθ᾽ ἑώρων πεπονθότα· ἔπειτ᾽ αὐτὸς
ἐγὼ οὐδέποτ᾽ ἄν, μὴ παθὼν ὑπὸ τούτου ταῦτ᾽, ἀφεὶς τοὺς
καὶ παρ᾽ αὐτῶν τούτων ὁμολογουμένους τύπτειν ἐμὲ πρὸς
τὸν οὐδ᾽ ἁψάμενον πρῶτον εἰσιέναι προειλόμην. τί γὰρ 33
ἄν, ἢ διὰ τί; ἀλλ᾽ ὑφ᾽ οὗ τε πρώτου ἐπλήγην καὶ μάλισθ᾽
ὑβρίσθην, τούτῳ καὶ δικάζομαι καὶ μισῶ καὶ ἐπεξέρχο-
μαι. καὶ τὰ μὲν παρ᾽ ἐμοῦ πάνθ᾽ οὕτως ἐστὶν ἀληθῆ καὶ
φαίνεται· τούτῳ δὲ μὴ παρασχομένῳ τούτους μάρτυρας
ἦν δή που λόγος οὐδείς, ἀλλ᾽ ἡλωκέναι παραχρῆμα ὑπῆρχε
σιωπῇ. συμπόται δ᾽ ὄντες τούτου καὶ πολλῶν τοιούτων
ἔργων κοινωνοὶ εἰκότως τὰ ψευδῆ μεμαρτυρήκασιν. εἰ δ᾽
ἔσται τὸ πρᾶγμα τοιοῦτον, ἐὰν ἅπαξ ἀπαναισχυντήσωσί
τινες καὶ τὰ ψευδῆ φανερῶς τολμήσωσι μαρτυρεῖν, οὐδὲν
δὲ τῆς ἀληθείας ὄφελος, πάνδεινον ἔσται πρᾶγμα. ἀλλὰ 34
νὴ Δί᾽ οὐκ εἰσὶ τοιοῦτοι. ἀλλ᾽ ἴσασιν ὑμῶν, ὡς ἐγὼ
νομίζω, πολλοὶ καὶ τὸν Διότιμον καὶ τὸν Ἀρχεβιάδην καὶ
τὸν Χαιρέτιμον τὸν ἐπιπόλιον τουτονί, οἳ μεθ᾽ ἡμέραν
μὲν ἐσκυθρωπάκασι καὶ λακωνίζειν φασὶ καὶ τρίβωνας
ἔχουσι καὶ ἁπλᾶς ὑποδέδενται, ἐπειδὰν δὲ συλλεγῶσι καὶ

μετ' ἀλλήλων γένωνται, κακῶν καὶ αἰσχρῶν οὐδὲν ἐλλεί-
35 *πουσι· καὶ ταῦτα τὰ λαμπρὰ καὶ νεανικά ἐστιν αὐτῶν*
"οὐ γὰρ ἡμεῖς μαρτυρήσομεν ἀλλήλοις; οὐ γὰρ ταῦθ'
ἑταίρων ἐστὶ καὶ φίλων; τί δὲ καὶ δεινόν ἐστιν ὧν παρ-
έξεται κατὰ σοῦ; τυπτόμενόν φασί τινες ὁρᾶν; ἡμεῖς δὲ
μηδ' ἧφθαι τὸ παράπαν μαρτυρήσομεν. ‖ ἐκδεδύσθαι θοί-
μάτιον; τοῦτ' ἐκείνους πρότερον πεποιηκέναι ἡμεῖς μαρ-
τυρήσομεν. τὸ χεῖλος ἐρράφθαι; τὴν κεφαλὴν δέ γ' ἡμεῖς
36 *ἢ ἕτερόν τι κατεαγέναι φήσομεν." ἀλλὰ καὶ μάρτυρας*
ἰατροὺς παρέχομαι. τοῦτ' οὐκ ἔστιν ὦ ἄνδρες δικασταὶ
παρὰ τούτοις· ὅσα γὰρ μὴ δι' αὐτῶν, οὐδενὸς μάρτυρος
καθ' ἡμῶν εὐπορήσουσιν. ἡ δ' ἀπ' αὐτῶν ἑτοιμότης οὐδ'
ἂν εἰπεῖν μὰ τοὺς θεοὺς δυναίμην ὅση καὶ οἵα πρὸς τὸ
ποιεῖν ὁτιοῦν ὑπάρχει. ἵνα δ' εἰδῆτε οἷα καὶ διαπραττό-
μενοι περιέρχονται, λέγε αὐτοῖς ταυτασὶ τὰς μαρτυρίας,
σὺ δ' ἐπίλαβε τὸ ὕδωρ.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

37 *Τοίχους τοίνυν διορύττοντες καὶ παίοντες τοὺς ἀπαν-*
τῶντας, ἆρ' ἂν ὑμῖν ὀκνῆσαι δοκοῦσιν ἐν γραμματειδίῳ
τὰ ψευδῆ μαρτυρεῖν ἀλλήλοις οἱ κεκοινωνηκότες τοσαύ-
της καὶ τοιαύτης φιλαπεχθημοσύνης καὶ πονηρίας καὶ
ἀναιδείας καὶ ὕβρεως; πάντα γὰρ ταῦτ' ἔμοιγ' ἐν τοῖς
ὑπὸ τούτων πραττομένοις ἐνεῖναι δοκεῖ. καίτοι καὶ
τούτων ἕτερ' ἐστὶ πεπραγμένα τούτοις δεινότερα, ἀλλ'
ἡμεῖς οὐχ οἷοί τε γενοίμεθ' ἂν πάντας ἐξευρεῖν τοὺς ἠδι-
κημένους.

38 *Ὃ τοίνυν πάντων ἀναιδέστατον μέλλειν αὐτὸν ἀκούω*
ποιεῖν, βέλτιον νομίζω προειπεῖν ὑμῖν εἶναι. φασὶ γὰρ
παραστησάμενον τοὺς παῖδας αὐτὸν κατὰ τούτων ὀμεῖ-
σθαι, καὶ ἀράς τινας δεινὰς καὶ χαλεπὰς ἐπαράσεσθαι
καὶ τοιαύτας οἵας ἀκηκοώς γέ τις θαυμάσας ἀπήγγελλεν
ἡμῖν. ἔστι δὲ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀνυπόστατα μὲν τὰ
τοιαῦτα τολμήματα· οἱ γὰρ οἶμαι βέλτιστοι καὶ ἥκιστ' ἂν
αὐτοί τι ψευσάμενοι μάλισθ' ὑπὸ τῶν τοιούτων ‖ ἐξαπα-
τῶνται· οὐ μὴν ἀλλὰ δεῖ πρὸς τὸν βίον καὶ τὸν τρόπον
39 *ἀποβλέποντας πιστεύειν. τὴν δὲ τούτου πρὸς τὰ τοιαῦτ'*

ὀλιγωρίαν ἐγὼ πρὸς ὑμᾶς ἐρῶ· πέπυσμαι γὰρ ἐξ ἀνάγκης. ἀκούω γὰρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ Βάκχιόν τέ τινα, ὃς παρ' ὑμῖν ἀπέθανε, καὶ Ἀριστοκράτην τὸν τοὺς ὀφθαλμοὺς διεφθαρμένον καὶ τοιούτους ἑτέρους καὶ Κόνωνα τουτονὶ ἑταίρους εἶναι μειράκια ὄντας καὶ Τριβαλλοὺς ἐπωνυμίαν ἔχειν· τούτους τά τε Ἑκαταῖα κατεσθίειν, καὶ τοὺς ὄρχεις τοὺς ἐκ τῶν χοίρων, οἷς καθαίρουσιν ὅταν εἰσιέναι μέλλωσι, συλλέγοντας ἑκάστοτε συνδειπνεῖν ἀλλήλοις, καὶ ῥᾷον ὀμνύναι καὶ ἐπιορκεῖν ἢ ὁτιοῦν. οὐ δὴ Κόνων ὁ 40
τοιοῦτος πιστός ἐστιν ὀμνύων· οὐδὲ πολλοῦ δεῖ· ἀλλ' ὁ μηδ' εὔορκον μηδὲν ἂν ὀμόσας, κατὰ δὲ δὴ παίδων ὧν μὴ νομίζετε μηδ' ἂν μελλήσας, ἀλλὰ κἂν ὁτιοῦν παθὼν πρότερον, εἰ δ' ἄρ' ἀναγκαῖον, ὀμνύων ὡς νόμιμον, ἀξιοπιστότερος τοῦ κατὰ τῶν παίδων ὀμνύντος καὶ διὰ τοῦ πυρός. ἐγὼ τοίνυν ὁ δικαιότερόν σου πιστευθεὶς ἂν κατὰ πάντα ὦ Κόνων ἠθέλησα ὀμόσαι ταυτί, οὐχ ὑπὲρ τοῦ μὴ δοῦναι δίκην ὧν ἠδίκηκα, καὶ ὁτιοῦν ποιῶν, ὥσπερ σύ, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς ἀληθείας καὶ ὑπὲρ τοῦ μὴ προσυβρισθῆναι, ὡς οὐ κατεπιορκησόμενος τὸ πρᾶγμα. λέγε τὴν πρόκλησιν.

ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ.

Ταῦτ' ἐγὼ καὶ τότ' ἠθέλησα ὀμόσαι, καὶ νῦν ὀμνύω 41
τοὺς θεοὺς καὶ τὰς θεὰς ἅπαντας καὶ πάσας ὑμῶν ἕνεκα ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τῶν περιεστηκότων, ἦ μὴν παθὼν ὑπὸ Κόνωνος || ταῦτα ὧν δικάζομαι, καὶ λαβὼν πληγάς, καὶ τὸ χεῖλος διακοπεὶς οὕτως ὥστε καὶ ῥαφῆναι, καὶ ὑβρισθεὶς τὴν δίκην διώκειν. καὶ εἰ μὲν εὐορκῶ, πολλά μοι ἀγαθὰ γένοιτο καὶ μηδέποτ' αὖθις τοιοῦτο μηδὲν πάθοιμι, εἰ δ' ἐπιορκῶ, ἐξώλης ἀπολοίμην αὐτός τε καὶ εἴ τί μοι ἔστιν ἢ μέλλει ἔσεσθαι. ἀλλ' οὐκ ἐπιορκῶ, οὐδ' ἂν Κόνων διαρραγῇ. ἀξιῶ τοίνυν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταί, 42
πάνθ' ὅσα ἐστὶ δίκαια ἐπιδείξαντος ἐμοῦ καὶ πίστιν προσθέντος ὑμῖν, ὥσπερ ἂν αὐτὸς ἕκαστος παθὼν τὸν πεποιηκότα ἐμίσει, οὕτως ὑπὲρ ἐμοῦ πρὸς Κόνωνα τουτονὶ τὴν ὀργὴν ἔχειν, καὶ μὴ νομίζειν ἴδιον τῶν τοιούτων μηδὲν ὃ κἂν ἄλλῳ τυχὸν συμβαίη, ἀλλ' ἐφ' ὅτου ποτ' ἂν

συμβῇ, βοηθεῖν καὶ τὰ δίκαια ἀποδιδόναι, καὶ μισεῖν τοὺς πρὸ μὲν τῶν ἁμαρτημάτων θρασεῖς καὶ προπετεῖς, ἐν δὲ τῷ δίκην ὑπέχειν ἀναισχύντους καὶ πονηροὺς καὶ μήτε δόξης μήτε ἔθους μήτ' ἄλλου μηδενὸς φροντίζοντας
43 πρὸς τὸ μὴ δοῦναι δίκην. ἀλλὰ δεήσεται Κόνων καὶ κλαιήσει. σκοπεῖτε δὴ πότερός ἐστιν ἐλεεινότερος, ὁ πεπονθὼς οἷα ἐγὼ πέπονθα ὑπὸ τούτου, εἰ προσυβρισθεὶς ἄπειμι καὶ δίκης μὴ τυχών, ἢ Κόνων, εἰ δώσει δίκην; πότερον δ' ὑμῶν ἑκάστῳ συμφέρει ἐξεῖναι τύπτειν καὶ ὑβρίζειν ἢ μή; ἐγὼ μὲν οἴομαι μή. οὐκοῦν, ἂν μὲν ἀφιῆτε, ἔσονται πολλοί, ἐὰν δὲ κολάζητε, ἐλάττους.

44 Πόλλ' ἂν εἰπεῖν ἔχοιμι, ὦ ἄνδρες δικασταί, καὶ ὡς ἡμεῖς χρήσιμοι, καὶ αὐτοὶ καὶ ὁ πατήρ, ἕως ἔζη, καὶ τριηραρχοῦντες καὶ στρατευόμενοι καὶ τὸ προστιττόμενον ‖ ποιοῦντες, καὶ ὡς οὐδὲν οὔθ' οὗτος οὔτε τῶν τούτου οὐδείς· ἀλλ' οὔτε τὸ ὕδωρ ἱκανὸν οὔτε νῦν περὶ τούτων ὁ λόγος ἐστίν. εἰ γὰρ δὴ ὁμολογουμένως ἔτι τούτων καὶ ἀχρηστοτέροις καὶ πονηροτέροις ἡμῖν εἶναι συνέβαινεν, οὐ τυπτητέοι οὐδὲ ὑβριστέοι δή που ἐσμέν.

Οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγειν· οἴομαι γὰρ ὑμᾶς μηδὲν ἀγνοεῖν τῶν εἰρημένων.

ΠΡΟΣ ΚΑΛΛΙΚΛΕΑ ΠΕΡΙ ΧΩΡΙΟΥ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Καλλικλῆς, πρὸς ὃν ὁ λόγος, καὶ ὁ τὴν δίκην ὑπ' ἐκείνου φεύγων γείτονες ἦσαν ἐν χωρίῳ, ὁδῷ μέσῃ διειργόμενοι. ἐπομβρίας δὲ συμβάσης, εἰς τὸ Καλλικλέους χωρίον ὕδωρ ἐμπεσὸν ἐκ τῆς ὁδοῦ κατελυμήνατο. ἐπὶ τούτῳ διώκει βλάβης τὸν γείτονα· εἶναι γάρ φησιν ἐν τῷ Τισίου χωρίῳ χαράδραν εἰς ὑποδοχὴν τοῦ ὕδατος τοῦ ἐκ τῆς ὁδοῦ ποιηθεῖσαν, ἣν ἀποικοδομήσαντα νῦν αἴτιον ἑαυτῷ βλάβης γενέσθαι. ὁ δὲ τοῦ Τισίου παῖς πρῶτον μὲν παλαιὸν καὶ οὐ δι' ἑαυτοῦ τὸ ἔργον δείκνυσι· ζῶντος γὰρ ἔτι καὶ τοῦ Καλλικλέους πατρὸς ἀποικοδομηθῆναι τὴν χαράδραν φησὶν ὑπὸ τοῦ Τισίου· ἔπειτα συνίστησιν ὡς οὐδὲ χαράδρα τις τὸ χωρίον ἐστί. διασύρει δὲ καὶ τὴν συμβᾶσαν τῷ Καλλικλεῖ βλάβην ὡς μικρὰν καὶ οὐκ ἀξίαν τηλικαύτης δίκης, καὶ τὸ ὅλον ἠδικῆσθαι μὲν οὐδέν φησι τὸν Καλλικλέα, ἐπιθυμεῖν δὲ τῶν χωρίων τῶν ἑαυτοῦ καὶ διὰ τοῦτο συκοφαντίας μηχανᾶσθαι πάσας.*

‖ *Οὐκ ἦν ἄρ᾽ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι χαλεπώτερον οὐδὲν ἢ
γείτονος πονηροῦ καὶ πλεονέκτου τυχεῖν, ὅπερ ἐμοὶ νυνὶ
συμβέβηκεν. ἐπιθυμήσας γὰρ τῶν χωρίων μου Καλλικλῆς
οὕτω διατέθεικέ με συκοφαντῶν ὥστε πρῶτον μὲν τὸν
ἀνεψιὸν τὸν ἑαυτοῦ κατεσκεύασεν ἀμφισβητεῖν μοι τῶν
χωρίων, ἐξελεγχθεὶς δὲ φανερῶς καὶ περιγενομένου μου* 2
*τῆς τούτων σκευωρίας πάλιν δύο δίκας ἐρήμους μου
κατεδιῃτήσατο, τὴν μὲν αὐτὸς χιλίων δραχμῶν, τὴν δὲ
τὸν ἀδελφὸν τουτονὶ πείσας Καλλικρατίδην. δέομαι δὴ
πάντων ὑμῶν ἀκοῦσαί μου καὶ προσέχειν τὸν νοῦν,
οὐχ ὡς αὐτὸς δυνησόμενος εἰπεῖν, ἀλλ᾽ ἵν᾽ ὑμεῖς ἐξ αὐ-
τῶν τῶν πραγμάτων καταμάθητε ὅτι φανερῶς συκοφαν-
τοῦμαι.*

Ἓν μὲν οὖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρὸς ἅπαντας τοὺς 3
*τούτων λόγους ὑπάρχει μοι δίκαιον. τὸ γὰρ χωρίον τοῦτο
περιῳκοδόμησεν ὁ πατὴρ μικροῦ δεῖν πρὶν ἐμὲ γενέσθαι,
ζῶντος μὲν ἔτι Καλλιππίδου τοῦ τούτων πατρὸς καὶ γει-
τνιῶντος, ὃς ἀκριβέστερον ᾔδει δή που τούτων, ὄντος δὲ
Καλλικλέους ἀνδρὸς ἤδη καὶ ἐπιδημοῦντος Ἀθήνησιν· ἐν* 4
*δὲ τούτοις τοῖς ἔτεσιν ἅπασιν οὔτ᾽ ἐγκαλῶν οὐδεὶς πώ-
ποτ᾽ ἦλθεν οὔτε μεμφόμενος (καίτοι δῆλον ὅτι καὶ τόθ᾽
ὕδατα πολλάκις ἐγένετο), οὔτ᾽ ἐκώλυσεν ἐξ ἀρχῆς, εἴπερ
ἠδίκει τινὰ ‖ περιοικοδομῶν ὁ πατὴρ τὸ ἡμέτερον χωρίον,
ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἀπηγόρευσεν οὐδὲ διεμαρτύρατο, πλέον μὲν ἢ
πεντεκαίδεκ᾽ ἔτη τοῦ πατρὸς ἐπιβιοῦντος, οὐκ ἐλάττω δὲ
τοῦ τούτων πατρὸς Καλλιππίδου. καίτοι ὦ Καλλίκλεις* 5
*ἐξῆν δή που τόθ᾽ ὑμῖν, ὁρῶσιν ἀποικοδομουμένην τὴν
χαράδραν, ἐλθοῦσιν εὐθὺς ἀγανακτεῖν καὶ λέγειν πρὸς
τὸν πατέρα "Τισία, τί ταῦτα ποιεῖς; ἀποικοδομεῖς τὴν
χαράδραν; εἶτ᾽ ἐμπεσεῖται τὸ ὕδωρ εἰς τὸ χωρίον τὸ ἡμέ-
τερον," ἵν᾽ εἰ μὲν ἐβούλετο παύσασθαι, μηδὲν ἡμῖν ἦν
δυσχερὲς πρὸς ἀλλήλους, εἰ δ᾽ ὠλιγώρησε καὶ συνέβη τι
τοιοῦτον, μάρτυσιν εἶχες τοῖς τότε παραγενομένοις χρῆ-
σθαι. καὶ νὴ Δί᾽ ἐπιδεῖξαί σε ἔδει πᾶσιν ἀνθρώποις* 6
*χαράδραν οὖσαν, ἵνα μὴ λόγῳ μόνον, ὥσπερ νῦν, ἀλλ᾽
ἔργῳ τὸν πατέρ᾽ ἀδικοῦντ᾽ ἀπέφαινες. τούτων τοίνυν οὐ-*

δὲν πώποτ᾽ οὐδεὶς ποιεῖν ἠξίωσεν. οὐ γὰρ ἂν οὔτ᾽ ἐρήμην,
ὥσπερ ἐμοῦ νῦν, κατεδιῃτήσασθε, οὔτε πλέον ἂν ἦν ὑμῖν
7 συκοφαντοῦσιν οὐδέν, ἀλλ᾽ ἀπέφαινεν ἂν ἐκεῖνος εἰδὼς
ἀκριβῶς ὅπως εἶχεν ἕκαστα τούτων, καὶ τοὺς ῥᾳδίως
τούτοις μαρτυροῦντας ἐξήλεγχεν. ἀνθρώπου δ᾽, οἶμαι,
τηλικούτου καὶ ἀπείρου τῶν πραγμάτων ἅπαντες κατα-
πεφρονήκατέ μου. ἀλλ᾽ ἐγὼ πρὸς ἅπαντας τούτους ὦ
ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὰς αὐτῶν πράξεις ἰσχυροτάτας μαρ-
τυρίας παρέχομαι. διὰ τί γὰρ οὐδεὶς οὔτ᾽ ἐπεμαρτύ-
ρατο οὔτ᾽ ἐνεκάλεσεν, ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἐμέμψατο πώποτε, ἀλλ᾽
ἐξήρκει ταῦτ᾽ αὐτοῖς ἠδικημένοις περιορᾶν;
8 Ἐγὼ τοίνυν ἱκανὰ ‖ μὲν ἡγοῦμαι καὶ ταῦτ᾽ εἶναι πρὸς
τὴν τούτων κατηγορίαν· ἵνα δ᾽ εἰδῆτε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι
καὶ περὶ τῶν ἄλλων, ὡς οὔθ᾽ ὁ πατὴρ οὐδὲν ἠδίκει πε-
ριοικοδομῶν τὸ χωρίον οὗτοί τε κατεψευσμένοι πάντ᾽
εἰσὶν ἡμῶν, ἔτι σαφέστερον ὑμᾶς πειράσομαι διδάσκειν.
τὸ μὲν γὰρ χωρίον ὁμολογεῖται καὶ παρ᾽ αὐτῶν τούτων
9 ἡμέτερον ἴδιον εἶναι· τούτου δ᾽ ὑπάρχοντος, ὦ ἄνδρες
Ἀθηναῖοι, μάλιστα μὲν ᾔδειτε ἂν ἰδόντες τὸ χωρίον ὅτι
συκοφαντοῦμαι. διὸ καὶ τοῖς εἰδόσιν ἐπιτρέπειν ἐβουλό-
μην ἐγώ, τοῖς ἴσοις. ἀλλ᾽ οὐχ οὗτοι, καθάπερ νυνὶ λέγειν
ἐπιχειροῦσι· δῆλον δ᾽ ὑμῖν καὶ τοῦτ᾽ αὐτίκ᾽ ἔσται πᾶσιν.
10 ἀλλὰ προσέχετε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρὸς Διὸς καὶ θεῶν
τὸν νοῦν. τοῦ γὰρ χωρίου τοῦ τ᾽ ἐμοῦ καὶ τοῦ τούτων
μέσον ὁδός ἐστιν, ὄρους δὲ περιέχοντος κύκλῳ τοῖς χω-
ρίοις τὸ καταρρέον ὕδωρ τῇ μὲν εἰς τὴν ὁδὸν τῇ δ᾽ εἰς
τὰ χωρία συμβαίνει φέρεσθαι. καὶ δὴ καὶ τοῦτ᾽ εἰσπῖπ-
τον εἰς τὴν ὁδόν, ᾗ μὲν ἂν εὐοδῇ, φέρεται κάτω κατὰ
τὴν ὁδόν, ᾗ δ᾽ ἂν ἐνστῇ τι, τηνικαῦτα τοῦτ᾽ εἰς τὰ χωρία
11 ὑπεραίρειν ἀναγκαῖον ἤδη. καὶ δὴ κατὰ τοῦτο τὸ χωρίον
ὦ ἄνδρες δικασταὶ γενομένης ἐπομβρίας συνέβη τὸ ὕδωρ
ἐμβαλεῖν· ἀμεληθὲν δὲ οὔπω τοῦ πατρὸς ἔχοντος αὐτό,
ἀλλ᾽ ἀνθρώπου δυσχεραίνοντος ὅλως τοῖς τόποις καὶ
μᾶλλον ἀστικοῦ, δὶς καὶ τρὶς ἐμβαλὸν τὸ ὕδωρ τά τε
χωρία ἐλυμήνατο καὶ μᾶλλον ὡδοποίει. διὸ δὴ ταῦθ᾽ ὁ
πατὴρ ὁρῶν, ὡς ἐγὼ τῶν εἰδότων ἀκούω, καὶ τῶν γειτό-

*νων ἐπινεμόντων ἅμα καὶ βαδιζόντων διὰ τοῦ χωρίου,
τὴν αἱμασιὰν περιῳκοδόμησε ταύτην. καὶ ὡς ταῦτ᾽ ἀληθῆ* 12
*λέγω, ‖ παρέξομαι μὲν καὶ μάρτυρας ὑμῖν τοὺς εἰδότας,
πολὺ δὲ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῶν μαρτύρων ἰσχυρότερα
τεκμήρια. Καλλικλῆς μὲν γάρ φησι τὴν χαράδραν ἀποι-
κοδομήσαντα βλάπτειν ἐμὲ αὐτόν· ἐγὼ δ᾽ ἀποδείξω χω-
ρίον ὂν τοῦτ᾽, ἀλλ᾽ οὐ χαράδραν. εἰ μὲν οὖν μὴ συνεχω-* 13
*ρεῖτο ἡμέτερον ἴδιον εἶναι, τάχ᾽ ἂν τοῦτο ἠδικοῦμεν, εἴ
τι τῶν δημοσίων ᾠκοδομοῦμεν· νυνὶ δ᾽ οὔτε τοῦτο ἀμφι-
σβητοῦσιν, ἔστι τ᾽ ἐν τῷ χωρίῳ δένδρα πεφυτευμένα,
ἄμπελοι καὶ συκαῖ. καίτοι τίς ἐν χαράδρᾳ ταῦτ᾽ ἂν φυ-
τεύειν ἀξιώσειεν; οὐδείς γε. τίς δὲ πάλιν τοὺς αὑτοῦ
προγόνους θάπτειν; οὐδὲ τοῦτ᾽ οἶμαι. ταῦτα τοίνυν ἀμ-* 14
*φότερ᾽ ὦ ἄνδρες δικασταὶ συμβέβηκεν· καὶ γὰρ τὰ δένδρα
πεφύτευται πρότερον ἢ τὸν πατέρα περιοικοδομῆσαι τὴν
αἱμασιάν, καὶ τὰ μνήματα παλαιὰ καὶ πρὶν ἡμᾶς κτήσα-
σθαι τὸ χωρίον γεγενημένα ἐστίν. καίτοι τούτων ὑπαρ-
χόντων τίς ἂν ἔτι λόγος ἰσχυρότερος ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι
γένοιτο; τὰ γὰρ ἔργα φανερῶς ἐξελέγχει. καί μοι λαβὲ
πάσας νυνὶ τὰς μαρτυρίας, καὶ λέγε.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Ἀκούετε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῶν μαρτυριῶν. ἆρ᾽ ὑμῖν 15
*δοκοῦσι διαρρήδην μαρτυρεῖν καὶ χωρίον εἶναι δένδρων
μεστὸν καὶ μνήματ᾽ ἔχειν τινὰ καὶ τἆλλ᾽ ἅπερ καὶ τοῖς
ἄλλοις χωρίοις συμβέβηκεν; καὶ πάλιν ὅτι περιῳκοδο-
μήθη τὸ χωρίον ζῶντος μὲν ἔτι τοῦ τούτων πατρός, οὐκ
ἀμφισβητούντων δ᾽ οὔτε τούτων οὔτ᾽ ἄλλου τῶν γειτόνων
οὐδενός;*

Ἄξιον δ᾽ ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ περὶ τῶν ἄλλων ὧν 16
*εἴρηκε Καλλικλῆς ἀκοῦσαι. καὶ ‖ σκέψασθε πρῶτον μὲν εἴ
τις ὑμῶν ἑώρακεν ἢ ἀκήκοε πώποτε παρ᾽ ὁδὸν χαράδραν
οὖσαν. οἶμαι γὰρ ἐν πάσῃ τῇ χώρᾳ μηδεμίαν εἶναι· τοῦ
γὰρ ἕνεκα, ὃ διὰ τῆς ὁδοῦ τῆς δημοσίας ἔμελλε βαδιεῖ-
σθαι φερόμενον, τούτῳ διὰ τῶν ἰδίων χωρίων χαράδραν
ἐποίησέ τις; ἔπειτα τίς ἂν ὑμῶν εἴτ᾽ ἐν ἀγρῷ νὴ Δί᾽ εἴτ᾽* 17
ἐν ἄστει τὸ διὰ τῆς ὁδοῦ ῥέον ὕδωρ εἰς τὸ χωρίον ἢ τὴν

*οἰκίαν δέξαιτ᾽ ἂν αὐτοῦ; ἀλλ᾽ οὐκ αὐτὸ τοὐναντίον, κἂν
βιάσηταί ποτε, ἀποφράττειν ἅπαντες καὶ παροικοδομεῖν
εἰώθαμεν; οὗτος τοίνυν ἀξιοῖ με ἐκ τῆς ὁδοῦ τὸ ὕδωρ
εἰσδεξάμενον εἰς τὸ ἐμαυτοῦ χωρίον, ὅταν τὸ τούτου
παραλλάξῃ χωρίον, πάλιν εἰς τὴν ὁδὸν ἐξαγαγεῖν. οὐκοῦν
πάλιν ὁ μετὰ τοῦτόν μοι γεωργῶν τῶν γειτόνων ἐγκαλεῖ·
τὸ γὰρ ὑπὲρ τούτου δίκαιον δῆλον ὅτι κἀκείνοις ὑπάρξει
18 πᾶσι λέγειν. ἀλλὰ μὴν εἴ γε εἰς τὴν ὁδὸν ὀκνήσω τὸ
ὕδωρ ἐξάγειν, ἦ που σφόδρα θαρρῶν εἰς τὸ τοῦ πλησίον
χωρίον ἀφείην ἄν. ὅπου γὰρ δίκας ἀτιμήτους φεύγω
διότι τὸ ἐκ τῆς ὁδοῦ ῥέον ὕδωρ εἰς τὸ τούτου χωρίον
διέπεσε, τί πείσομαι πρὸς Διὸς ὑπὸ τῶν ἐκ τοῦ χωρίου
τοῦ ἐμοῦ τοῦ ὕδατος εἰσπεσόντος βλαπτομένων; ὅπου δὲ
μήτ᾽ εἰς τὴν ὁδὸν μήτ᾽ εἰς τὰ χωρία ἀφιέναι μοι τὸ ὕδωρ
ἐξέσται δεξαμένῳ, τί λοιπὸν ὦ ἄνδρες δικασταὶ πρὸς
θεῶν; οὐ γὰρ ἐκπιεῖν γε δή πού με Καλλικλῆς αὐτὸ
19 προσαναγκάσει. ταῦτα τοίνυν ἐγὼ πάσχων ὑπὸ τούτων
καὶ πολλὰ ἕτερα καὶ δεινά, μὴ ὅτι δίκην λαβεῖν, ἀλλὰ μὴ
προσοφλεῖν ἀγαπήσαιμ᾽ ἄν. εἰ μὲν γὰρ ἦν ὦ ἄνδρες ‖ δι-
κασταὶ χαράδρα πάλιν ὑποδεχομένη, τάχ᾽ ἂν ἠδίκουν ἐγὼ
μὴ δεχόμενος, ὥσπερ ἀνὰ θάτερ᾽ ἅττα τῶν χωρίων εἰσὶν
ὁμολογούμεναι χαράδραι· καὶ ταύτας δέχονται μὲν οἱ
πρῶτοι καθάπερ τοὺς ἐκ τῶν οἰκιῶν χειμάρρους, παρὰ
τούτων δ᾽ ἕτεροι παραλαμβάνουσιν ὡσαύτως· ταύτην δ᾽
οὔτε παραδίδωσιν οὐδεὶς οὔτε παρ᾽ ἐμοῦ παραλαμβάνει.
20 πῶς ἂν οὖν εἴη τοῦτο χαράδρα; τὸ δ᾽ εἰσπεσὸν ὕδωρ
ἔβλαψε μέν, οἶμαι, πολλάκις ἤδη πολλοὺς μὴ φυλαξαμέ-
νους, ἔβλαψε δὲ νῦν καὶ τουτονί. ὃ καὶ πάντων ἐστὶ
δεινότατον, εἰ Καλλικλῆς μὲν εἰς τὸ χωρίον εἰσπεσόντος
τοῦ ὕδατος ἁμαξιαίους λίθους προσκομίσας ἀποικοδομεῖ,
τοῦ δὲ πατρός, ὅτι τοῦτο παθόντος τοῦ χωρίου περιῳ-
κοδόμησεν, ὡς ἀδικοῦντος ἐμοὶ βλάβης εἴληχε δίκην. καί-
τοι εἰ ὅσοι κακῶς πεπόνθασιν ὑπὸ τῶν ὑδάτων τῶν
ταύτῃ ῥεόντων ἐμοὶ λήξονται δίκας, οὐδὲ πολλαπλάσια
21 γενόμενα τὰ ὄντα ἐξαρκέσειεν ἄν μοι. τοσοῦτον τοίνυν
διαφέρουσιν οὗτοι τῶν ἄλλων ὥστε πεπονθότες μὲν οὐδέν,*

ὡς αὐτίκα ὑμῖν ἐγὼ σαφῶς ἐπιδείξω, πολλῶν δὲ πολλὰ καὶ μεγάλα βεβλαμμένων μόνοι δικάζεσθαι τετολμήκασιν οὗτοί μοι. καίτοι πᾶσι μᾶλλον ἐνεχώρει τοῦτο πράττειν· οὗτοι μὲν γάρ, εἰ καί τι πεπόνθασιν, αὐτοὶ δι' αὑτοὺς βεβλαμμένοι συκοφαντοῦσιν, ἐκεῖνοι δέ, εἰ καὶ μηδὲν ἄλλο, τοιαύτην γ' οὐδεμίαν αἰτίαν ἔχουσιν. ἀλλ' ἵνα μὴ πάντα ἅμα συνταράξας λέγω, λαβέ μοι τὰς τῶν γειτόνων μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Οὐκοῦν δεινὸν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τούτους μὲν μηδὲν 22
ἐγκαλεῖν μοι τοσαῦτα βεβλαμμένους, μηδ' ἄλλον μηδένα τῶν ἠτυχηκότων, ἀλλὰ τὴν τύχην ‖ στέργειν, τουτονὶ δὲ συκοφαντεῖν; ὃν ὅτι μὲν αὐτὸς ἐξημάρτηκε πρῶτον μὲν τὴν ὁδὸν στενωτέραν ποιήσας, ἐξαγαγὼν ἔξω τὴν αἱμασιὰν ἵνα τὰ δένδρα τῆς ὁδοῦ ποιήσειεν εἴσω, ἔπειτα δὲ τὸν χλῆδον ἐκβαλὼν εἰς τὴν ὁδόν, ἐξ ὧν ὑψηλοτέραν τὴν ὁδὸν καὶ στενωτέραν πεποιῆσθαι συμβέβηκεν, ἐκ τῶν μαρτυριῶν αὐτίκ' εἴσεσθε σαφέστερον. ὅτι δ' οὐδὲν ἀπο- 23
λωλεκὼς οὐδὲ καταβεβλαμμένος ἄξιον λόγου τηλικαύτην μοι δίκην εἴληχε, τοῦθ' ὑμᾶς ἤδη πειράσομαι διδάσκειν. τῆς γὰρ μητρὸς τῆς ἐμῆς χρωμένης τῇ τούτων μητρὶ πρὶν τούτους ἐπιχειρῆσαί με συκοφαντεῖν, καὶ πρὸς ἀλλήλας ἀφικνουμένων, οἷον εἰκὸς ἅμα μὲν ἀμφοτέρων οἰκουσῶν ἐν ἀγρῷ καὶ γειτνιωσῶν, ἅμα δὲ τῶν ἀνδρῶν χρωμένων ἀλλήλοις ἕως ἔζων, ἐλθούσης δὲ τῆς ἐμῆς μητρὸς ὡς τὴν 24
τούτων καὶ ἀποδυραμένης ἐκείνης τὰ συμβάντα καὶ δεικνυούσης, οὕτως ἐπυθόμεθα πάντα ἡμεῖς, ὦ ἄνδρες δικασταί. καὶ λέγω μὲν ἅπερ ἤκουσα τῆς μητρός, οὕτω μοι πολλὰ ἀγαθὰ γένοιτο, εἰ δὲ ψεύδομαι, τἀναντία τούτων. ἦ μὴν ὁρᾶν καὶ τῆς τούτων μητρὸς ἀκούειν ἔφη κριθῶν μὲν βρεχθῆναι, καὶ ξηραινομένους ἰδεῖν αὐτήν, μηδὲ τρεῖς μεδίμνους, ἀλεύρων δ' ὡς ἡμιμέδιμνον· ἐλαίου δ' ἀποκλιθῆναι μὲν κεράμιον φάσκειν, οὐ μέντοι παθεῖν γε οὐδέν. τοσαῦτα ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὰ συμβάντ' ἦν 25
τούτοις, ἀνθ' ὧν ἐγὼ χιλίων δραχμῶν δίκην ἀτίμητον φεύγω. οὐ γὰρ δὴ τειχίον γ' εἰ παλαιὸν ἐπῳκοδόμησεν,

*ἐμοὶ καὶ τοῦτο λογιστέον ἐστίν, ὃ μήτ' ἔπεσε μήτ' ἄλλο
δεινὸν μηδὲν ἔπαθεν. ὥστ' ‖ εἰ συνεχώρουν αὐτοῖς ἁπάν-
των αἴτιος εἶναι τῶν συμβεβηκότων, τά γε βρεχθέντα
26 ταῦτ' ἦν. ὁπότε δὲ μήτε ἐξ ἀρχῆς ὁ πατὴρ ἠδίκει τὸ
χωρίον περιοικοδομῶν, μήθ' οὗτοι πώποτε ἐνεκάλεσαν
τοσούτου χρόνου διελθόντος, οἵ τ' ἄλλοι πολλὰ καὶ δεινὰ
πεπονθότες μηδὲν μᾶλλον ἐγκαλοῦσιν ἐμοί, πάντες τε
ὑμεῖς τὸ ἐκ τῶν οἰκιῶν καὶ τὸ ἐκ τῶν χωρίων ὕδωρ εἰς
τὴν ὁδὸν ἐξάγειν εἰώθατε, ἀλλ' οὐ μὰ Δί' εἴσω τὸ ἐκ τῆς
ὁδοῦ δέχεσθαι, τί δεῖ πλείω λέγειν; οὐδὲ γὰρ ἐκ τούτων
ἄδηλον ὅτι φανερῶς συκοφαντοῦμαι, οὔτ' ἀδικῶν οὐδὲν
27 οὔτε βεβλαμμένων ἅ φασιν. ἵνα δ' εἰδῆτε ὅτι καὶ τὸν
χλῆδον εἰς τὴν ὁδὸν ἐκβεβλήκασι καὶ τὴν αἱμασιὰν προα-
γαγόντες στενωτέραν τὴν ὁδὸν πεποιήκασιν, ἔτι δ' ὡς ὅρ-
κον ἐδίδουν ἐγὼ τῇ τούτων μητρὶ καὶ τὴν ἐμαυτοῦ τὸν
αὐτὸν ὀμόσαι προυκαλούμην, λαβέ μοι τάς τε μαρτυρίας
καὶ τὴν πρόκλησιν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ. ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ.

28 *Εἶτα τούτων ἀναισχυντότεροι γένοιντ' ἂν ἄνθρωποι ἢ
περιφανέστερον συκοφαντοῦντες, οἵτινες αὐτοὶ τὴν αἱμα-
σιὰν προαγαγόντες καὶ τὴν ὁδὸν ἀνακεχωκότες ἑτέροις
βλάβης δικάζονται, καὶ ταῦτα χιλίων δραχμῶν ἀτίμητον,
οἵ γ' οὐδὲ πεντήκοντα δραχμῶν τὸ παράπαν ἅπαντα ἀπο-
λωλέκασιν; καίτοι σκοπεῖτ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ πόσους
ὑπὸ τῶν ὑδάτων ἐν τοῖς ἀγροῖς βεβλάφθαι συμβέβηκε,
τὰ μὲν Ἐλευσῖνι τὰ δ' ἐν τοῖς ἄλλοις τόποις. ἀλλ' οὐ δή
που τούτων, ὦ γῆ καὶ θεοί, παρὰ τῶν γειτόνων ἕκαστος
29 ἀξιώσει τὰς βλάβας κομίζεσθαι. καὶ ἐγὼ μέν, ὃν προσῆ-
κεν ἀγανακτεῖν τῆς ὁδοῦ στενωτέρας γεγενημένης καὶ με-
τεωροτέρας, ἡσυχίαν ἔχω· ‖ τούτοις δὲ τοσοῦτον περίεστιν,
ὡς ἔοικεν, ὥστε τοὺς ἠδικημένους προσσυκοφαντοῦσιν.
καίτοι, ὦ Καλλίκλεις, εἰ καὶ ὑμῖν περιοικοδομεῖν ἔξεστι
τὸ ὑμέτερον αὐτῶν χωρίον, καὶ ἡμῖν δή που τὸ ἡμέτερον
ἐξῆν. εἰ δ' ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς ἠδίκει περιοικοδομῶν ὑμᾶς,
30 καὶ νῦν ὑμεῖς ἐμὲ ἀδικεῖτε περιοικοδομοῦντες οὕτως· δῆ-
λον γὰρ ὅτι μεγάλοις λίθοις ἀποικοδομηθέντος πάλιν*

τὸ ὕδωρ εἰς τὸ ἐμὸν ἥξει χωρίον, εἶθ᾽ ὅταν τύχῃ κατα-
βαλεῖ τὴν αἱμασιὰν ἀπροσδοκήτως. ἀλλ᾽ οὐδὲν μᾶλλον
ἐγκαλῶ τούτοις ἐγὼ διὰ τοῦτο, ἀλλὰ στέργω τὴν τύχην
καὶ τἀμαυτοῦ φυλάττειν πειράσομαι. καὶ γὰρ τοῦτον
φράττοντα μὲν τὰ ἑαυτοῦ σωφρονεῖν ἡγοῦμαι, δικαζόμε-
νον δέ μοι πονηρότατόν τ᾽ εἶναι καὶ διεφθαρμένον ὑπὸ
νόσου νομίζω.

Μὴ θαυμάζετε δ᾽ ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὴν τούτου προ- 31
θυμίαν, μηδ᾽ εἰ τὰ ψευδῆ κατηγορεῖν τετόλμηκεν. καὶ
γὰρ τὸ πρότερον πείσας τὸν ἀνεψιὸν ἀμφισβητεῖν μοι
τοῦ χωρίου συνθήκας οὐ γενομένας ἀπήνεγκε, καὶ νῦν
αὐτὸς ἐρήμην μου καταδεδιῄτηται τοιαύτην ἑτέραν δίκην,
Κάλλαρον ἐπιγραψάμενος τῶν ἐμῶν δούλων. πρὸς γὰρ
τοῖς ἄλλοις κακοῖς καὶ τοῦτο εὕρηνται σόφισμα· Καλ-
λάρῳ τὴν αὐτὴν δίκην δικάζονται. καίτοι τίς ἂν οἰκέτης 32
τὸ τοῦ δεσπότου χωρίον περιοικοδομήσειε μὴ προστάξαν-
τος τοῦ δεσπότου; Καλλάρῳ δ᾽ ἕτερον ἐγκαλεῖν οὐδὲν
ἔχοντες, ὑπὲρ ὧν ὁ πατὴρ πλέον ἢ πεντεκαίδεκα ἔτη
φράξας ἐπεβίω δικάζονται. κἂν μὲν ἐγὼ τῶν χωρίων
ἀποστῶ τούτοις ἀποδόμενος ἢ πρὸς ἕτερα χωρία ἀλλαξά-
μενος, οὐδὲν ἀδικεῖ Κάλλαρος· ἂν δ᾽ ἐγὼ μὴ ‖ βούλωμαι
τἀμαυτοῦ τούτοις προέσθαι, πάντα τὰ δεινότατα ὑπὸ
Καλλάρου πάσχουσιν οὗτοι, καὶ ζητοῦσι καὶ διαιτητὴν
ὅστις αὐτοῖς τὰ χωρία προσκαταγνώσεται, καὶ διαλύσεις
τοιαύτας ἐξ ὧν τὰ χωρία ἕξουσιν. εἰ μὲν οὖν ὦ ἄνδρες 33
δικασταὶ τοὺς ἐπιβουλεύοντας καὶ συκοφαντοῦντας δεῖ
πλέον ἔχειν, οὐδὲν ἂν ὄφελος εἴη τῶν εἰρημένων· εἰ δ᾽
ὑμεῖς τοὺς μὲν τοιούτους μισεῖτε τὰ δὲ δίκαια ψηφίζεσθε,
μήτ᾽ ἀπολωλεκότος Καλλικλέους μηδὲν μήτ᾽ ἠδικημένου
μήθ᾽ ὑπὸ Καλλάρου μήθ᾽ ὑπὸ τοῦ πατρός, οὐκ οἶδ᾽ ὅ τι
δεῖ πλείω λέγειν. ἵνα δ᾽ εἰδῆτε ὅτι καὶ πρότερον ἐπιβου- 34
λεύων μου τοῖς χωρίοις τὸν ἀνεψιὸν κατεσκεύασε, καὶ νῦν
τὴν ἑτέραν αὐτὸς κατεδιῃτήσατο Καλλάρου ταύτην τὴν
δίκην, ἐπηρεάζων ἐμοὶ διότι τὸν ἄνθρωπον περὶ πολλοῦ
ποιοῦμαι, καὶ Καλλάρῳ πάλιν εἴληχεν ἑτέραν, ἁπάντων
ὑμῖν ἀναγνώσεται τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

35 *Μὴ οὖν πρὸς Διὸς καὶ θεῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ προῆσθέ με τούτοις μηδὲν ἀδικοῦντα. οὐ γὰρ τῆς ζημίας τοσοῦτόν τί μοι μέλει, χαλεπὸν ὂν πᾶσι τοῖς μικρὰν οὐσίαν ἔχουσιν· ἀλλ᾽ ἐκβάλλουσιν ὅλως ἐκ τοῦ δήμου με ἐλαύνοντες καὶ συκοφαντοῦντες. ὅτι δ᾽ οὐκ ἀδικοῦμεν οὐδέν, ἕτοιμοι μὲν ἦμεν ἐπιτρέπειν τοῖς εἰδόσιν, ἴσοις καὶ κοινοῖς, ἕτοιμοι δ᾽ ὀμνύναι τὸν νόμιμον ὅρκον· ταῦτα γὰρ ᾠόμεθα ἰσχυρότατα παρέχεσθαι τοῖς αὐτοῖς ὑμῖν ὀμωμοκόσιν. καί μοι λαβὲ τήν τε πρόκλησιν καὶ τὰς ὑπολοίπους ἔτι μαρτυρίας.*

ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ. ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

DEMOSTHENIS

ORATIONES.

EDIDIT

IMMANUEL BEKKER.

VOL. III. PARS II.

EDITIO STEREOTYPA.

EX OFFICINA BERNHARDI TAUCHNITZ.
LIPSIAE MDCCCLV.

‖ΚΑΤΑ ΔΙΟΝΥΣΟΔΩΡΟΥ ΒΛΑΒΗΣ.

1282. 1283.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Δαρεῖος καὶ Πάμφιλος Διονυσοδώρῳ δανείζουσι τρισχιλίας δραχμὰς ἐπὶ τῷ πλεῦσαι αὐτὸν εἰς Αἴγυπτον κἀκεῖθεν αὖθις Ἀθήναζε, καὶ λαμβάνουσι μὲν ὑποθήκην τὴν ναῦν, διομολογοῦνται δὲ καὶ τόκους ὅσους ὤφειλον Ἀθήναζε καταπλεύσαντος Διονυσοδώρου κομίσασθαι. Διονυσόδωρος δὲ ἀναπλέων ἐκ τῆς Αἰγύπτου, τῇ Ῥόδῳ προσσχών, ἐκεῖ τὸν γόμον ἐξέθετο, ὡς μὲν αὐτός φησι, διὰ τὸ ῥαγῆναι τὴν ναῦν καὶ εἶναι σαθράν, ὡς δὲ Δαρεῖος λέγει, διὰ τὸ πυθέσθαι τὸν σῖτον Ἀθήνησιν εὔωνον ὄντα· τὴν γὰρ ναῦν σῴαν ὑπάρχειν φησὶ καὶ πλεῖν ἔτι καὶ νῦν. οἱ μὲν οὖν δανείσαντες καὶ κατηγοροῦσι τοῦ Διονυσοδώρου παραβεβηκέναι τὴν συγγραφήν, διότι τὴν ὑποθήκην, τουτέστι τὴν ναῦν, οὐ παρέσχεν ἐμφανῆ, καὶ ἀπαιτοῦσιν αὐτὸν τοὺς ὁμολογηθέντας τόκους τελείους· ὁ δὲ οὐ πάντας ἀποδιδόναι βούλεται, ἀλλὰ πρὸς λόγον τοῦ πλοῦ τοῦ πλευσθέντος.*

Κοινωνός εἰμι τοῦ δανείσματος τούτου, ὦ ἄνδρες δικασταί. συμβαίνει δ' ἡμῖν τοῖς κατὰ θάλατταν τὴν ἐργασίαν προῃρημένοις καὶ τὰ ἡμέτερα ‖ αὐτῶν ἐγχειρίζουσιν ἑτέροις ἐκεῖνο μὲν σαφῶς εἰδέναι, ὅτι ὁ δανειζόμενος ἐν παντὶ προέχει ἡμῶν. λαβὼν γὰρ ἀργύριον φανερὸν καὶ ὁμολογούμενον, ἐν γραμματειδίῳ δυοῖν χαλκοῖν ἐωνημένῳ καὶ βιβλιδίῳ μικρῷ πάνυ τὴν ὁμολογίαν καταλέλοιπε τοῦ ποιήσειν τὰ δίκαια. ἡμεῖς δ' οὔ φαμεν δώσειν, ἀλλ' εὐθὺς
τῷ δανειζομένῳ δίδομεν τὸ ἀργύριον. τῷ οὖν ποτὲ πι- 2
στεύοντες καὶ τί λαβόντες τὸ βέβαιον προϊέμεθα; ὑμῖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τοῖς νόμοις τοῖς ὑμετέροις, οἳ κελεύουσιν, ὅσα ἄν τις ἑκὼν ἕτερος ἑτέρῳ ὁμολογήσῃ, κύρια εἶναι. ἀλλά μοι δοκεῖ οὔτε τῶν νόμων οὔτε συγγραφῆς οὐδεμιᾶς ὄφελος εἶναι οὐδέν, ἂν ὁ λαμβάνων τὰ χρήματα μὴ πάνυ δίκαιος ᾖ τὸν τρόπον καὶ δυοῖν θάτερον ἢ ὑμᾶς
δεδιὼς ἢ τὸν συμβαλόντα αἰσχυνόμενος. ὧν οὐδέτερον 3
πρόσεστι Διονυσοδώρῳ τούτῳ, ἀλλ' εἰς τοσοῦτον ἥκει τόλμης ὥστε δανεισάμενος παρ' ἡμῶν ἐπὶ τῇ νηὶ τρισχιλίας δραχμὰς ἐφ' ᾧ τε τὴν ναῦν καταπλεῖν Ἀθήναζε, καὶ δέον ἡμᾶς ἐν τῇ πέρυσιν ὥρᾳ κεκομίσθαι τὰ χρήματα, τὴν μὲν

*ναῦν εἰς Ῥόδον κατεκόμισε καὶ τὸν γόμον ἐκεῖσε ἐξελόμε-
νος ἀπέδοτο παρὰ τὴν συγγραφὴν καὶ τοὺς νόμους τοὺς
ὑμετέρους, ἐκ δὲ τῆς Ῥόδου πάλιν ἀπέστειλε τὴν ναῦν εἰς
Αἴγυπτον κἀκεῖθεν εἰς Ῥόδον, ἡμῖν δὲ τοῖς Ἀθήνησι δα-
νείσασιν οὐδέπω καὶ νῦν οὔτε τὰ χρήματα ἀποδίδωσιν
4 οὔτε τὸ ἐνέχυρον καθίστησιν εἰς τὸ ἐμφανές, ἀλλὰ δεύτε-
ρον ἔτος τουτὶ καρπούμενος τὰ ἡμέτερα, καὶ ἔχων τό τε
δάνειον καὶ τὴν ἐργασίαν καὶ τὴν ναῦν τὴν ὑποκειμένην
ἡμῖν, οὐδὲν ἧττον ‖ εἰσελήλυθε πρὸς ὑμᾶς δῆλον ὅτι ὡς
ζημιώσων ἡμᾶς τῇ ἐπωβελίᾳ καὶ καταθησόμενος εἰς τὸ
οἴκημα πρὸς τῷ ἀποστερεῖν τὰ χρήματα. ὑμῶν οὖν ὦ
ἄνδρες Ἀθηναῖοι ὁμοίως ἁπάντων δεόμεθα καὶ ἱκετεύομεν
βοηθῆσαι ἡμῖν, ἐὰν δοκῶμεν ἀδικεῖσθαι. τὴν δ' ἀρχὴν τοῦ
συμβολαίου διεξελθεῖν ὑμῖν πρῶτον βούλομαι· οὕτω γὰρ
καὶ ὑμεῖς ῥᾷστα παρακολουθήσετε.*

5 *Διονυσόδωρος γὰρ οὑτοσί, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ ὁ
κοινωνὸς αὐτοῦ Παρμενίσκος προσελθόντες ἡμῖν πέρυσι
τοῦ μεταγειτνιῶνος μηνὸς ἔλεγον ὅτι βούλονται δανείσα-
σθαι ἐπὶ τῇ νηί, ἐφ' ᾧ τε πλεῦσαι εἰς Αἴγυπτον καὶ ἐξ
Αἰγύπτου εἰς Ῥόδον ἢ εἰς Ἀθήνας, διομολογησάμενοι τοὺς
6 τόκους εἰς ἑκάτερον τῶν ἐμπορίων τούτων. ἀποκριναμέ-
νων δ' ἡμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὅτι οὐκ ἂν δανείσαιμεν εἰς
ἕτερον ἐμπόριον οὐδὲν ἀλλ' ἢ εἰς Ἀθήνας, οὕτω προσομο-
λογοῦσι πλευσεῖσθαι δεῦρο, καὶ ἐπὶ ταύταις ταῖς ὁμολο-
γίαις δανείζονται παρ' ἡμῶν ἐπὶ τῇ νηὶ τρισχιλίας δραχμὰς
ἀμφοτερόπλουν, καὶ συγγραφὴν ἐγράψαντο ὑπὲρ τούτων.
ἐν μὲν οὖν ταῖς συνθήκαις δανειστὴς ἐγράφη Πάμφιλος
οὑτοσί· ἐγὼ δ' ἔξωθεν μετεῖχον αὐτῷ τοῦ δανείσματος.
καὶ πρῶτον ὑμῖν ἀναγνώσεται αὐτὴν τὴν συγγραφήν.*

ΣΥΓΓΡΑΦΗ.

7 *Κατὰ ταύτην τὴν συγγραφὴν ὦ ἄνδρες δικασταὶ λαβόν-
τες παρ' ἡμῶν τὰ χρήματα Διονυσόδωρός τε οὑτοσὶ καὶ ὁ
κοινωνὸς αὐτοῦ Παρμενίσκος ἀπέστελλον τὴν ναῦν εἰς τὴν
Αἴγυπτον ἐνθένδε. καὶ ὁ μὲν Παρμενίσκος ἐπέπλει ἐπὶ
τῆς νεώς, οὑτοσὶ ‖ δὲ αὐτοῦ κατέμενεν. ἦσαν γάρ, ὦ ἄν-
δρες δικασταί, ἵνα μηδὲ τοῦτ' ἀγνοῆτε, ὑπηρέται καὶ
συνεργοὶ πάντες οὗτοι Κλεομένους τοῦ ἐν τῇ Αἰγύπτῳ*

ἄρξαντος, ὃς ἐξ οὗ τὴν ἀρχὴν παρέλαβεν οὐκ ὀλίγα κακὰ
εἰργάσατο τὴν πόλιν τὴν ὑμετέραν, μᾶλλον δὲ καὶ τοὺς
ἄλλους Ἕλληνας, παλιγκαπηλεύων καὶ συνιστὰς τὰς τιμὰς
τοῦ σίτου καὶ αὐτὸς καὶ οὗτοι μετ᾽ αὐτοῦ. οἱ μὲν γὰρ 8
αὐτῶν ἀπέστελλον ἐκ τῆς Αἰγύπτου τὰ χρήματα, οἱ δ᾽
ἐπέπλεον ταῖς ἐμπορείαις, οἱ δ᾽ ἐνθάδε μένοντες διετί-
θεντο τὰ ἀποστελλόμενα· εἶτα πρὸς τὰς καθεστηκυίας
τιμὰς ἔπεμπον γράμματα οἱ ἐπιδημοῦντες τοῖς ἀποδη-
μοῦσιν, ἵνα ἐὰν μὲν παρ᾽ ὑμῖν τίμιος ᾖ ὁ σῖτος, δεῦρο
αὐτὸν κομίσωσιν, ἐὰν δ᾽ εὐωνότερος γένηται, εἰς ἄλλο τι
καταπλεύσωσιν ἐμπόριον. ὅθεν περ οὐχ ἥκιστα ὦ ἄνδρες
δικασταὶ συνετιμήθη τὰ περὶ τὸν σῖτον ἐκ τῶν τοιούτων
ἐπιστολῶν καὶ συνεργιῶν. ὅτε μὲν οὖν ἐνθένδε ἀπέστελ- 9
λον οὗτοι τὴν ναῦν, ἐπιεικῶς ἔντιμον κατέλιπον τὸν σῖτον·
διὸ καὶ ὑπέμειναν ἐν τῇ συγγραφῇ γράψασθαι εἰς Ἀθήνας
πλεῖν, εἰς δ᾽ ἄλλο μηδὲν ἐμπόριον. μετὰ δὲ ταῦτ᾽ ὦ ἄνδρες
δικασταί, ἐπειδὴ ὁ Σικελικὸς κατάπλους ἐγένετο καὶ αἱ
τιμαὶ τοῦ σίτου ἐπ᾽ ἔλαττον ἐβάδιζον καὶ ἡ ναῦς ἡ τού-
των ἀνῆκτο εἰς Αἴγυπτον, εὐθέως οὗτος ἀποστέλλει τινὰ
εἰς τὴν Ῥόδον ἀπαγγελοῦντα τῷ Παρμενίσκῳ τῷ κοινωνῷ
τἀνθένδε καθεστηκότα, ἀκριβῶς εἰδὼς ὅτι ἀναγκαῖον εἴη
τῇ νηὶ προσέχειν εἰς Ῥόδον. πέρας δ᾽ οὖν, λαβὼν γὰρ ὁ 10
Παρμενίσκος ὁ τουτουὶ κοινωνὸς τὰ γράμματα τὰ παρὰ
τούτου ἀποσταλέντα, καὶ πυθόμενος τὰς τιμὰς τὰς ἐν-
θάδε τοῦ σίτου καθεστηκυίας, ‖ ἐξαιρεῖται τὸν σῖτον ἐν
τῇ Ῥόδῳ κἀκεῖ ἀποδίδοται, καταφρονήσαντες μὲν τῆς
συγγραφῆς ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τῶν ἐπιτιμίων ἃ συνε-
γράψαντο αὐτοὶ οὗτοι καθ᾽ αὑτῶν, ἐάν τι παραβαίνωσι,
καταφρονήσαντες δὲ τῶν νόμων τῶν ὑμετέρων, οἳ κελεύ-
ουσι τοὺς ναυκλήρους καὶ τοὺς ἐπιβάτας πλεῖν εἰς ὅ τι
ἂν συνθῶνται ἐμπόριον, εἰ δὲ μή, ταῖς μεγίσταις ζημίαις
εἶναι ἐνόχους. καὶ ἡμεῖς ἐπειδὴ τάχιστα ἐπυθόμεθα τὸ 11
γεγονός, ἐκπεπληγμένοι τῷ πράγματι προσῆμεν τούτῳ τῷ
ἀρχιτέκτονι τῆς ὅλης ἐπιβουλῆς, ἀγανακτοῦντες οἷον εἰκός,
καὶ ἐγκαλοῦντες ὅτι διαρρήδην ἡμῶν διορισαμένων ἐν ταῖς
συνθήκαις ὅπως ἡ ναῦς μηδαμοῦ καταπλευσεῖται ἀλλ᾽ ἢ
εἰς Ἀθήνας, καὶ [ὅτι] ἐπὶ ταύταις ταῖς ὁμολογίαις δανει-

*σάντων τὸ ἀργύριον, ἡμᾶς μὲν ἐν ὑποψίᾳ καταλέλοιπε
τοῖς βουλομένοις αἰτιᾶσθαι καὶ λέγειν ὡς ἄρα καὶ ἡμεῖς
κεκοινωνήκαμεν τῆς σιτηγίας τῆς εἰς τὴν Ῥόδον, αὐτοὶ δ'
οὐδὲν μᾶλλον τὴν ναῦν ἥκουσι κατακομίζοντες εἰς τὸ ὑμέ-*
12 *τερον ἐμπόριον εἰς ὃ συνεγράψαντο. ἐπειδὴ δ' οὐδὲν
ἐπεραίνομεν ὑπὲρ τῆς συγγραφῆς καὶ τῶν δικαίων δια-
λεγόμενοι, ἀλλὰ τό γε δάνειον καὶ τοὺς τόκους ἠξιοῦμεν
ἀπολαβεῖν τοὺς ἐξ ἀρχῆς ὁμολογηθέντας. οὗτος δ' οὕτως
ὑβριστικῶς ἐχρήσατο ἡμῖν ὥστε τοὺς μὲν τόκους τοὺς ἐν
τῇ συγγραφῇ γεγραμμένους οὐκ ἔφη δώσειν· "εἰ δὲ βού-
λεσθε" ἔφη "κομίζεσθαι τὸ πρὸς μέρος τοῦ πλοῦ τοῦ
πεπλευσμένου, δώσω ὑμῖν" φησὶ "τοὺς εἰς Ῥόδον τόκους·
πλείους δ' οὐκ ἂν δοίην," αὐτὸς αὑτῷ νομοθετῶν καὶ οὐχὶ*
13 *τοῖς ἐκ τῆς συγγραφῆς δικαίοις πειθόμενος. ὡς δ' ἡμεῖς
οὐκ ἂν ‖ ἔφαμεν συγχωρῆσαι οὐδὲν τούτων, λογιζόμενοι ὅτι,
ὁπότε τοῦτο πράξομεν, ὁμολογοῦμεν καὶ αὐτοὶ εἰς Ῥόδον
σεσιτηγηκέναι, ἔτι μᾶλλον ἐπέτεινεν οὗτος καὶ μάρτυρας
πολλοὺς παραλαβὼν προσῄει, φάσκων ἕτοιμος εἶναι ἀπο-
διδόναι τὸ δάνειον καὶ τοὺς τόκους τοὺς εἰς Ῥόδον, οὐδὲν
μᾶλλον ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀποδοῦναι διανοούμενος, ἀλλ'
ἡμᾶς ὑπολαμβάνων οὐκ ἂν ἐθελῆσαι ἀπολαβεῖν τὸ ἀργύ-
ριον διὰ τὰς ὑπούσας αἰτίας. ἐδήλωσε δ' αὐτὸ τὸ ἔργον.*
14 *ἐπειδὴ γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῶν ὑμετέρων πολιτῶν
τινὲς παραγενόμενοι ἀπὸ ταὐτομάτου συνεβούλευον ἡμῖν
τὸ μὲν διδόμενον λαμβάνειν, περὶ δὲ τῶν ἀντιλεγομένων
κρίνεσθαι, τοὺς δὲ εἰς Ῥόδον τόκους μὴ καθομολογεῖν
τέως ἂν κριθῶμεν, ἡμεῖς μὲν ταῦτα συνεχωροῦμεν, οὐκ
ἀγνοοῦντες ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸ ἐκ τῆς συγγραφῆς δί-
καιον, ἀλλ' ἡγούμενοι δεῖν ἐλαττοῦσθαί τι καὶ συγχωρεῖν
ὥστε μὴ δοκεῖν φιλόδικοι εἶναι, οὗτος δ' ὡς ἑώρα ἡμᾶς
ὁμόσε πορευομένους, "ἀναιρεῖσθε" φησὶ "τοίνυν τὴν συγ-*
15 *γραφήν." "ἡμεῖς ἀναιρώμεθα; οὐδέν γε μᾶλλον ἢ ὁτιοῦν·
ἀλλὰ κατὰ μὲν τἀργύριον ὃ ἂν ἀποδῷς ὁμολογήσομεν
ἐναντίον τοῦ τραπεζίτου ἄκυρον ποιεῖν τὴν συγγραφήν,
τὸ μέντοι σύνολον οὐκ ἂν ἀνελοίμεθα, ἕως ἂν περὶ τῶν
ἀντιλεγομένων κριθῶμεν. τί γὰρ ἔχοντες δίκαιον ἢ τί τὸ
ἰσχυρὸν ἀντιδικήσομεν, ἐάν τε πρὸς διαιτητὴν ἐάν τε εἰς*

δικαστήριον δέῃ βαδίζειν, ἀνελόμενοι τὴν συγγραφὴν ἐν ᾗ τὴν ὑπὲρ τῶν δικαίων βοήθειαν ἔχομεν;" ταῦτα δ' ἡμῶν 16
λεγόντων ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ ἀξιούντων Διονυσόδωρον τουτονὶ τὴν μὲν συγγραφὴν μὴ ‖ κινεῖν μηδ' ἄκυρον ποιεῖν τὴν ὁμολογουμένην καὶ ὑπ' αὐτῶν κυρίαν εἶναι, τῶν δὲ χρημάτων ὅσα μὲν αὐτὸς ὁμολογεῖ, ἀποδοῦναι ἡμῖν, περὶ δὲ τῶν ἀντιλεγομένων [ὡς] ἑτοίμων ὄντων κριθῆναι, εἴτε βούλοιντο ἐφ' ἑνὶ εἴτε καὶ πλείοσι τῶν ἐκ τοῦ ἐμπορίου, οὐκ ἔφη προσέχειν Διονυσόδωρος τούτων οὐδενί, ἀλλ' ὅτι τὴν συγγραφὴν ὅλως οὐκ ἀνῃρούμεθα ἀπολαμβάνοντες ἃ οὗτος ἐπέταττεν, ἔχει δεύτερον ἔτος τὰ ἡμέτερα καὶ χρῆται τοῖς χρήμασιν. καὶ ὃ πάντων ἐστὶ δεινότατον, ὦ ἄνδρες 17
δικασταί, ὅτι αὐτὸς μὲν οὗτος παρ' ἑτέρων εἰσπράττει ναυτικοὺς τόκους ἀπὸ τῶν ἡμετέρων χρημάτων, οὐκ Ἀθήνησι δανείσας οὐδ' εἰς Ἀθήνας ἀλλ' εἰς Ῥόδον καὶ Αἴγυπτον, ἡμῖν δὲ τοῖς δανείσασιν εἰς τὸ ὑμέτερον ἐμπόριον οὐκ οἴεται δεῖν τῶν δικαίων οὐδὲν ποιεῖν. ὅτι δ' ἀληθῆ λέγω, ἀναγνώσεται ὑμῖν τὴν πρόκλησιν ἣν ὑπὲρ τούτων προυκαλεσάμεθ' αὐτόν.

ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ.

Ταῦτα τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ προκαλεσαμένων ἡμῶν 18
Διονυσόδωρον τουτονὶ πολλάκις, καὶ ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἐκτιθέντων τὴν πρόκλησιν, εὐήθεις ἔφη παντελῶς ἡμᾶς εἶναι, εἰ ὑπολαμβάνομεν αὐτὸν οὕτως ἀλογίστως ἔχειν ὥστ' ἐπὶ διαιτητὴν βαδίζειν, προδήλου ὄντος ὅτι καταγνώσεται αὐτοῦ ἀποτῖσαι τὰ χρήματα, ἐξὸν αὐτῷ ἐπὶ τὸ δικαστήριον ἥκειν φέροντα τἀργύριον, εἶτα ἐὰν μὲν δύνηται ὑμᾶς παρακρούσασθαι, ἀπιέναι τἀλλότρια ἔχοντα, εἰ δὲ μή, τηνικαῦτα καταθεῖναι τὰ χρήματα, ὡς ἄνθρωπος οὐ τῷ δικαίῳ πιστεύων, ἀλλὰ διάπειραν ὑμῶν λαμβάνειν βουλόμενος.

Τὰ μὲν τοίνυν ‖ πεπραγμένα Διονυσοδώρῳ ἀκηκόατε, 19
ὦ ἄνδρες δικασταί· οἴομαι δ' ὑμᾶς θαυμάζειν ἀκούοντας πάλαι τὴν τόλμαν αὐτοῦ, καὶ τῷ ποτὲ πιστεύων εἰσελήλυθε δευρί. πῶς γὰρ οὐ τολμηρόν, εἴ τις ἄνθρωπος δανεισάμενος χρήματα ἐκ τοῦ ἐμπορίου τοῦ Ἀθηναίων, καὶ 20
συγγραφὴν διαρρήδην γραψάμενος ἐφ' ᾧ τε καταπλεῖν τὴν

ναῦν εἰς τὸ ὑμέτερον ἐμπόριον, εἰ δὲ μή, ἀποτίνειν δι-
πλάσια τὰ χρήματα, μήτε τὴν ναῦν κατακεκόμικεν εἰς τὸν
Πειραιᾶ, μήτε τὰ χρήματ' ἀποδίδωσι τοῖς δανείσασι, τόν
τε σῖτον ἐξελόμενος ἐν Ῥόδῳ ἀπέδοτο, καὶ ταῦτα διαπε-
πραγμένος οὐδὲν ἧττον τολμᾷ βλέπειν εἰς τὰ ὑμέτερα
21 πρόσωπα. ἃ δὴ λέγει πρὸς ταῦτ' ἀκούσατε. φησὶ γὰρ
τὴν ναῦν πλέουσαν ἐξ Αἰγύπτου ῥαγῆναι, καὶ διὰ ταῦτ'
ἀναγκασθῆναι καὶ προσσχεῖν εἰς τὴν Ῥόδον καὶ ἐκεῖ ἐξε-
λέσθαι τὸν σῖτον. καὶ τούτου τεκμήριον λέγει ὡς ἄρ' ἐκ
τῆς Ῥόδου μισθώσαιτο πλοῖα καὶ δεῦρ' ἀποστείλειε τῶν
χρημάτων ἔνια. ἓν μὲν τοῦτ' ἐστὶν αὐτῷ μέρος τῆς ἀπο-
22 λογίας, δεύτερον δ' ἐκεῖνο· φησὶ γὰρ ἑτέρους τινὰς δα-
νειστὰς συγκεχωρηκέναι αὐτῷ τοὺς τόκους τοὺς εἰς Ῥόδον·
δεινὸν οὖν εἰ ἡμεῖς μὴ συγχωρήσομεν ταὐτὰ ἐκείνοις. τρί-
τον πρὸς τούτοις τὴν συγγραφὴν κελεύειν φησὶν αὐτὸν
σωθείσης τῆς νεὼς ἀποδοῦναι τὰ χρήματα, τὴν δὲ ναῦν
οὐ σεσῶσθαι εἰς τὸν Πειραιᾶ. πρὸς ἕκαστον δὴ τούτων
ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀκούσατε ἃ λέγομεν δίκαια.

23 Πρῶτον μὲν τὸ ῥαγῆναι τὴν ναῦν ὅταν λέγῃ, οἶμαι
πᾶσιν ὑμῖν φανερὸν εἶναι ὅτι ψεύδεται. εἰ γὰρ τοῦτο
συνέβη παθεῖν τῇ νηί, οὔτ' ‖ ἂν εἰς τὴν Ῥόδον ἐσώθη οὔτ'
ἂν ὕστερον πλόιμος ἦν. νῦν δὲ φαίνεται εἰς τὴν Ῥόδον
σωθεῖσα καὶ πάλιν ἐκεῖθεν ἀποσταλεῖσα εἰς Αἴγυπτον
καὶ ἔτι καὶ νῦν πλέουσα πανταχόσε, πλὴν οὐκ εἰς Ἀθήνας.
καίτοι πῶς οὐκ ἄτοπον, ὅταν μὲν εἰς τὸ Ἀθηναίων ἐμπό-
ριον δεήσῃ κατάγειν τὴν ναῦν, ῥαγῆναι φάσκειν, ὅταν δ'
εἰς τὴν Ῥόδον τὸν σῖτον ἐξελέσθαι, τηνικαῦτα δὲ πλόιμον
οὖσαν φαίνεσθαι τὴν αὐτὴν ναῦν;

24 Διὰ τί οὖν, φησίν, ἐμισθωσάμην ἕτερα πλοῖα καὶ μετ-
εξειλόμην τὸν γόμον καὶ δεῦρο ἀπέστειλα; ὅτι ὦ ἄνδρες
Ἀθηναῖοι οὐ τῶν ἁπάντων ἀγωγίμων οὔθ' οὗτος ἦν κύ-
ριος οὔθ' ὁ κοινωνὸς αὐτοῦ, ἀλλ' οἱ ἐπιβάται τὰ ἑαυτῶν
χρήματ' ἀπέστελλον, οἶμαι, δεῦρο ἐν ἑτέροις πλοίοις ἐξ
ἀνάγκης, ἐπειδὴ προκατέλυσαν οὗτοι τὸν πλοῦν· ὧν μέν-
τοι αὐτοὶ ἦσαν κύριοι, οὐ ταῦτ' ἀπέστελλον πάντα δεῦρο,
25 ἀλλ' ἐκλεγόμενοι, τίνων αἱ τιμαὶ ἐπετέταντο. ἐπεὶ τί δή
ποτε μισθούμενοι ἕτερα πλοῖα, ὥς φατε, οὐχ ἅπαντα

τὸν γόμον τῆς νεὼς μετενέθεσθε, ἀλλὰ τὸν σῖτον αὐτοῦ ἐν τῇ Ῥόδῳ κατελίπετε; ὅτι ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοῦτον μὲν συνέφερεν αὐτοῖς ἐκεῖσε πωλεῖν· τὰς γὰρ τιμὰς ἐνθάδε ἀνεικέναι ἤκουον· τὰ δ' ἄλλα ἀγώγιμα ὡς ὑμᾶς ἀπέστελλον, ἀφ' ὧν κερδανεῖν ἤλπιζον. ὥστε τὴν μίσθωσιν τῶν πλοίων ὅταν λέγῃς, οὐ τοῦ ῥαγῆναι τὴν ναῦν τεκμήριον λέγεις, ἀλλὰ τοῦ συμφέροντος ὑμῖν.

Περὶ μὲν οὖν τούτων ἱκανά μοι τὰ εἰρημένα· περὶ δὲ 26
τῶν δανειστῶν, οὕς φασι συγκεχωρηκέναι λαβεῖν παρ' αὐτῶν τοὺς εἰς Ῥόδον τόκους, ἔστι μὲν οὐδὲν πρὸς ἡμᾶς τοῦτο. εἰ γάρ τις ὑμῖν ἀφῆκέ ‖ τι τῶν αὐτοῦ, οὐδὲν ἀδικεῖται ὁ πεισθεὶς [ἢ ὁ πείσας]· ἀλλ' ἡμεῖς οὔτ' ἀφείκαμέν σοι οὐδὲν οὔτε συγκεχωρήκαμεν τῷ πλῷ τῷ εἰς Ῥόδον, οὐδέ ἐστιν ἡμῖν οὐδὲν κυριώτερον τῆς συγγραφῆς. αὕτη 27
δὲ τί λέγει καὶ ποῖ προστάττει τὸν πλοῦν ποιεῖσθαι; Ἀθήνηθεν εἰς Αἴγυπτον καὶ ἐξ Αἰγύπτου εἰς Ἀθήνας· εἰ δὲ μή, ἀποτίνειν κελεύει διπλάσια τὰ χρήματα. ταῦτ' εἰ μὲν πεποίηκας, οὐδὲν ἀδικεῖς, εἰ δὲ μὴ πεποίηκας μηδὲ κατακεκόμικας τὴν ναῦν Ἀθήναζε, προσήκει σε ζημιοῦσθαι τῷ ἐπιτιμίῳ τῷ ἐκ τῆς συγγραφῆς· τοῦτο γὰρ τὸ δίκαιον οὐκ ἄλλος οὐδεὶς ἀλλ' αὐτὸς σὺ σαυτῷ ὥρισας. δεῖξον οὖν τοῖς δικασταῖς δυοῖν θάτερον ἢ τὴν συγγραφήν, ὡς οὐκ ἔστιν ἡμῖν κυρία, ἢ ὡς οὐ δίκαιος εἶ πάντα κατὰ ταύτην πράττειν. εἰ δέ τινες ἀφείκασί τί σοι καὶ 28
συγκεχωρήκασι τοὺς εἰς Ῥόδον τόκους ὁτῳδήποτε τρόπῳ πεισθέντες, διὰ ταῦτα οὐδὲν ἀδικεῖς ἡμᾶς, οὓς παρασυγγεγράφηκας εἰς Ῥόδον καταγαγὼν τὴν ναῦν; οὐκ οἴομαί γε· οὐ γὰρ τὰ ὑφ' ἑτέρων συγκεχωρημένα δικάζουσιν οὗτοι νῦν, ἀλλὰ τὰ ὑπ' αὐτοῦ σοῦ πρὸς ἡμᾶς συγγεγραμμένα. ἐπεὶ ὅτι γε καὶ τὸ περὶ τὴν ἄφεσιν τῶν τόκων, εἰ ἄρα γέγονεν ὡς οὗτοι λέγουσι, μετὰ τοῦ συμφέροντος τοῦ τῶν δανειστῶν γέγονε, πᾶσιν ὑμῖν φανερόν ἐστιν. οἱ γὰρ ἐκ 29
τῆς Αἰγύπτου δανείσαντες τούτοις ἑτερόπλουν τἀργύριον εἰς Ἀθήνας, ὡς ἀφίκοντο εἰς τὴν Ῥόδον καὶ τὴν ναῦν ἐκεῖσε οὗτοι κατεκόμισαν, οὐδὲν οἶμαι διέφερεν αὐτοῖς ἀφεμένοις τῶν τόκων καὶ κομισαμένοις τὸ δάνειον ἐν τῇ Ῥόδῳ πάλιν ἐνεργὸν ποιεῖν εἰς τὴν ‖ Αἴγυπτον, ἀλλ' ἐλυ-

30 σιτέλει πολλῷ μᾶλλον τοῦτο ἢ δεῦρ᾽ ἐπαναπλεῖν. ἐκεῖσε
μέν γε ἀκαριαῖος ὁ πλοῦς, καὶ δὶς ἢ τρὶς ὑπῆρχεν αὐτοῖς
ἐργάσασθαι τῷ αὐτῷ ἀργυρίῳ· ἐνταῦθα δ᾽ ἐπιδημήσαν-
τας παραχειμάζειν ἔδει καὶ περιμένειν τὴν ὡραίαν. ὥστ᾽
ἐκεῖνοι μὲν οἱ δανεισταὶ προσκεκερδήκασι καὶ οὐκ ἀφεί-
κασι τούτοις οὐδέν· ἡμῖν δ᾽ οὐχ ὅπως περὶ τοῦ τόκου ὁ
λόγος ἐστίν, ἀλλ᾽ οὐδὲ τἀρχαῖα ἀπολαβεῖν δυνάμεθα.
31 Μὴ οὖν ἀποδέχεσθε τούτου φενακίζοντος ὑμᾶς καὶ τὰ
πρὸς τοὺς ἄλλους δανειστὰς πεπραγμένα παραβάλλοντος,
ἀλλ᾽ ἐπὶ τὴν συγγραφὴν ἀνάγετ᾽ αὐτὸν καὶ τὰ ἐκ τῆς συγ-
γραφῆς δίκαια. ἔστι γὰρ ἐμοί τε λοιπὸν διδάξαι ὑμᾶς
τοῦτο, καὶ οὗτος ἰσχυρίζεται τῷ αὐτῷ τούτῳ, φάσκων
τὴν συγγραφὴν κελεύειν σωθείσης τῆς νεὼς ἀποδιδόναι
32 τὸ δάνειον· καὶ ἡμεῖς ταῦτα οὕτω φαμὲν δεῖν ἔχειν. ἡδέως
δ᾽ ἂν πυθοίμην αὐτοῦ σοῦ, πότερον ὡς ὑπὲρ διεφθαρ-
μένης τῆς νεὼς διαλέγῃ ἢ ὡς ὑπὲρ σεσωσμένης. εἰ μὲν
γὰρ διέφθαρται ἡ ναῦς καὶ ἀπόλωλε, τί περὶ τῶν τόκων
διαφέρῃ καὶ ἀξιοῖς ἡμᾶς κομίζεσθαι τοὺς εἰς Ῥόδον τό-
κους; οὔτε γὰρ τοὺς τόκους οὔτε τἀρχαῖα προσήκει ἡμᾶς
ἀπολαβεῖν. εἰ δ᾽ ἔστιν ἡ ναῦς σῴα καὶ μὴ διέφθαρται,
33 διὰ τί ἡμῖν οὐ δίδως τὰ χρήματα ἃ συνεγράψω; πόθεν
οὖν ἀκριβέστατ᾽ ἂν μάθοιτε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὅτι σέ-
σωσται ἡ ναῦς; μάλιστα μὲν ἐξ αὐτοῦ τοῦ εἶναι τὴν ναῦν
ἐν πλῷ, οὐχ ἧττον δὲ καὶ ἐξ ὧν αὐτοὶ οὗτοι λέγουσιν·
ἀξιοῦσι γὰρ ἡμᾶς τά τε ἀρχαῖα ἀπολαβεῖν καὶ μέρος τι
τῶν τόκων ὡς σεσωσμένης μὲν τῆς νεώς, οὐ ‖ πεπλευκυίας
34 δὲ πάντα τὸν πλοῦν. σκοπεῖτε δέ, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι,
πότερον ἡμεῖς τοῖς ἐκ τῆς συγγραφῆς δικαίοις χρώμεθα
ἢ οὗτοι, οἳ οὔτε εἰς τὸ συγκείμενον ἐμπόριον πεπλεύκα-
σιν, ἀλλ᾽ εἰς Ῥόδον καὶ Αἴγυπτον, σωθείσης τε τῆς νεὼς
καὶ οὐ διεφθαρμένης ἄφεσιν οἴονται δεῖν εὑρίσκεσθαι
τῶν τόκων παρασυγγεγραφηκότες, καὶ αὐτοὶ μὲν πολλὰ
χρήματ᾽ εἰργασμένοι παρὰ τὴν σιτηγίαν τὴν εἰς Ῥόδον, τὰ
δ᾽ ἡμέτερα χρήματ᾽ ἔχοντες καὶ καρπούμενοι δεύτερον ἔτος
35 τουτί. καινότατον δ᾽ ἐστὶ πάντων τὸ γιγνόμενον· τὸ μὲν
γὰρ δάνειον τὸ ἀρχαῖον ἀποδιδόασιν ἡμῖν ὡς σεσωσμένης
τῆς νεώς, τοὺς τόκους δ᾽ ἀποστερῆσαι οἴονται δεῖν ὡς

διεφθαρμένης. καίτοι ἡ συγγραφὴ οὐχ ἕτερα μὲν λέγει περὶ τῶν τόκων ἕτερα δὲ περὶ τοῦ ἀρχαίου δανείσματος, ἀλλὰ τὰ δίκαια ταὐτὰ περὶ ἀμφοῖν ἐστὶ καὶ ἡ πρᾶξις ἡ
αὐτή. ἀνάγνωθι δέ μοι πάλιν τὴν συγγραφήν. 36

ΣΥΓΓΡΑΦΗ. Ἀθήνηθεν εἰς Αἴγυπτον καὶ ἐξ Αἰγύπτου Ἀθήναζε.

Ἀκούετε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι· Ἀθήνηθεν, φησίν, εἰς Αἴγυπτον καὶ ἐξ Αἰγύπτου Ἀθήναζε. λέγε τὰ λοιπά.

ΣΥΓΓΡΑΦΗ. σωθείσης δὲ τῆς νεὼς εἰς Πειραιᾶ.

Ἄνδρες Ἀθηναῖοι, πάνυ ἁπλοῦν ἐστὶ διαγνῶναι ὑμῖν 37
ὑπὲρ ταύτης τῆς δίκης, καὶ οὐδὲν δεῖ λόγων πολλῶν. ἡ γὰρ ναῦς ὅτι μὲν σέσωσται καὶ ἔστι σῴα, καὶ παρ' αὐτῶν τούτων ὁμολογεῖται· οὐ γὰρ ἂν ἀπεδίδοσαν τό τε ἀρχαῖον δάνειον καὶ τῶν τόκων μέρος τι· οὐ κατακεκόμισται δὲ εἰς τὸν Πειραιᾶ. διὰ τοῦτο ἡμεῖς μὲν οἱ δανείσαντες ἀδικεῖσθαί φαμεν, ‖ καὶ ὑπὲρ τούτου δικαζόμεθα, ὅτι οὐ κατ-
έπλευσεν εἰς τὸ συγκείμενον ἐμπόριον· Διονυσόδωρος 38
δ' οὔ φησιν ἀδικεῖν δι' αὐτὸ τοῦτο· οὐ γὰρ δεῖν αὐτὸν ἀποδοῦναι πάντας τοὺς τόκους, ἐπειδὴ ἡ ναῦς οὐ κατέπλευσεν εἰς τὸν Πειραιᾶ. ἡ δὲ συγγραφὴ τί λέγει; οὐ μὰ Δί' οὐ ταῦθ' ἃ σὺ λέγεις, ὦ Διονυσόδωρε, ἀλλ' ἐὰν μὴ ἀποδιδῷς τὸ δάνειον καὶ τοὺς τόκους ἢ μὴ παράσχῃς τὰ ὑποκείμενα ἐμφανῆ καὶ ἀνέπαφα ἢ ἄλλο τι παρὰ τὴν συγγραφὴν ποιῇς, ἀποτίνειν κελεύει σε διπλάσια τὰ χρήματα. καί μοι λέγε αὐτὸ τοῦτο τῆς συγγραφῆς.

ΣΥΓΓΡΑΦΗ. ἐὰν δὲ μὴ παράσχωσι τὰ ὑποκείμενα ἐμφανῆ καὶ ἀνέπαφα, ἢ ποιήσωσί τι παρὰ τὴν συγγραφήν, ἀποδιδότωσαν διπλάσια τὰ χρήματα.

Ἔστιν οὖν ὅποι παρέσχηκας ἐμφανῆ τὴν ναῦν, ἀφ' οὗ 39
τὰ χρήματα ἔλαβες παρ' ἡμῶν, ὁμολογῶν σῴαν εἶναι αὐτός; ἢ καταπέπλευκας ἐξ ἐκείνου τοῦ χρόνου εἰς τὸ Ἀθηναίων ἐμπόριον, τῆς συγγραφῆς διαρρήδην λεγούσης εἰς τὸν Πειραιᾶ κατάγειν τὴν ναῦν καὶ ἐμφανῆ παρέχειν τοῖς
δανείσασιν; καὶ γὰρ τοῦτο, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι. θεάσα- 40
σθε τὴν ὑπερβολήν. ἐρράγη ἡ ναῦς, ὥς φησιν οὗτος, καὶ διὰ τοῦτο εἰς Ῥόδον κατήγαγεν αὐτήν. οὐκοῦν τὸ μετὰ τοῦτο ἐπεσκευάσθη καὶ πλόιμος ἐγένετο. διὰ τί οὖν ὦ βέλτιστε εἰς μὲν τὴν Αἴγυπτον καὶ τἆλλα ἐμπόρια ἀπέ-

στελλες αὐτήν, Ἀθήναζε δ' οὐκ ἀπέσταλκας οὐδέπω καὶ
νυνὶ πρὸς ἡμᾶς τοὺς δανείσαντας, οἷς ἡ συγγραφὴ κελεύει
σε ἐμφανῆ καὶ ἀνέπαφον τὴν ναῦν παρέχειν, καὶ ταῦτ'
41 ἀξιούντων ἡμῶν ‖ καὶ προκαλεσαμένων σε πολλάκις; ἀλλ'
οὕτως ἀνδρεῖος εἶ, μᾶλλον δ' ἀναίσχυντος, ὥστε ἐκ τῆς
συγγραφῆς ὀφείλων ἡμῖν διπλάσια τὰ χρήματα οὐκ οἴει
δεῖν οὐδὲ τοὺς τόκους τοὺς γιγνομένους ἀποδοῦναι, ἀλλὰ
τοὺς εἰς Ῥόδον προστάττεις ἀπολαβεῖν, ὥσπερ τὸ σὸν
πρόσταγμα τῆς συγγραφῆς δέον κυριώτερον γενέσθαι, καὶ
42 τολμᾷς λέγειν ὡς οὐκ ἐσώθη ἡ ναῦς εἰς τὸν Πειραιᾶ· ἐφ'
ᾧ δικαίως ἂν ἀποθάνοις ὑπὸ τῶν δικαστῶν. διὰ τίνα
γὰρ ἄλλον ὦ ἄνδρες δικασταὶ οὐ σέσωσται ἡ ναῦς εἰς τὸν
Πειραιᾶ; πότερον δι' ἡμᾶς τοὺς διαρρήδην δανείσαντας
εἰς Αἴγυπτον καὶ εἰς Ἀθήνας, ἢ διὰ τοῦτον καὶ τὸν κοι-
νωνὸν αὐτοῦ, οἳ ἐπὶ ταύταις ταῖς ὁμολογίαις δανεισάμενοι,
ἐφ' ᾧ τε καταπλεῖν Ἀθήναζε, εἰς Ῥόδον κατήγαγον τὴν
ναῦν; ὅτι δ' ἑκόντες καὶ οὐκ ἐξ ἀνάγκης ταῦτ' ἔπραξαν,
43 ἐκ πολλῶν δῆλον. εἰ γὰρ ὡς ἀληθῶς ἀκούσιον τὸ συμβὰν
ἐγένετο καὶ ἡ ναῦς ἐρράγη, τὸ μετὰ τοῦτ', ἐπειδὴ ἐπε-
σκεύασαν τὴν ναῦν, οὐκ ἂν εἰς ἕτερα δή που ἐμπόρια ἐμί-
σθωσαν αὐτὴν ἀλλ' ὡς ὑμᾶς ἀπέστελλον, ἐπανορθούμενοι
τὸ ἀκούσιον σύμπτωμα. νῦν δ' οὐχ ὅπως ἐπηνωρθώσαν-
το, ἀλλὰ πρὸς τοῖς ἐξ ἀρχῆς ἀδικήμασι πολλῷ μείζω
προσεξημαρτήκασι, καὶ ὥσπερ ἐπὶ καταγέλωτι ἀντιδικοῦν-
τες εἰσεληλύθασιν, ὡς ἐπ' αὐτοῖς ἐσόμενον, ἐὰν καταψη-
φίσησθε αὐτῶν, τἀρχαῖα μόνον ἀποδοῦναι καὶ τοὺς τόκους.
44 ὑμεῖς οὖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μὴ ἐπιτρέπετε τούτοις
οὕτως ἔχουσι, μηδ' ἐπὶ δυοῖν ἀγκύραιν ὁρμεῖν αὐτοὺς
ἐᾶτε, ὡς, ἂν ‖ μὲν κατορθῶσι, τὰ ἀλλότρια ἕξοντας, ἐὰν δὲ
μὴ δύνωνται ἐξαπατῆσαι ὑμᾶς, αὐτὰ τὰ ὀφειλόμενα ἀπο-
δώσοντας· ἀλλὰ τοῖς ἐπιτιμίοις ζημιοῦτε τοῖς ἐκ τῆς συγ-
γραφῆς· καὶ γὰρ ἂν δεινὸν εἴη αὐτοὺς μὲν τούτους διπλα-
σίαν καθ' ἑαυτῶν τὴν ζημίαν γράψασθαι, ἐάν τι παρα-
βαίνωσι τῶν ἐν τῇ συγγραφῇ, ὑμᾶς δ' ἠπιωτέρως ἔχειν
πρὸς αὐτούς, καὶ ταῦτ' οὐχ ἧττον ἡμῶν συνηδικημένους.
45 Τὰ μὲν οὖν περὶ τοῦ πράγματος δίκαια βραχέα ἐστὶ
καὶ εὐμνημόνευτα. ἐδανείσαμεν Διονυσοδώρῳ τούτῳ καὶ

τῷ κοινωνῷ αὐτοῦ τρισχιλίας δραχμὰς Ἀθήνηθεν εἰς Αἴγυπτον καὶ ἐξ Αἰγύπτου Ἀθήναζε· οὐκ ἀπειλήφαμεν τὰ χρήματα οὐδὲ τοὺς τόκους, ἀλλ᾽ ἔχουσι τὰ ἡμέτερα καὶ χρῶνται δεύτερον ἔτος· οὐ κατακεκομίκασι τὴν ναῦν εἰς τὸ ὑμέτερον ἐμπόριον οὐδέπω καὶ νῦν, οὐδ᾽ ἡμῖν παρεσχήκασιν ἐμφανῆ· ἡ δὲ συγγραφὴ κελεύει, ἐὰν μὴ παρέχωσιν ἐμφανῆ τὴν ναῦν, ἀποτίνειν αὐτοὺς διπλάσια τὰ χρήματα, τὴν δὲ πρᾶξιν εἶναι καὶ ἐξ ἑνὸς καὶ ἐξ ἀμφοῖν.
ταῦτ᾽ ἔχοντες τὰ δίκαια εἰσεληλύθαμεν πρὸς ὑμᾶς, ἀξι- 46
οῦντες τὰ ἡμέτερα αὐτῶν ἀπολαβεῖν δι᾽ ὑμῶν, ἐπειδὴ παρ᾽ αὐτῶν τούτων οὐ δυνάμεθα. ὁ μὲν παρ᾽ ἡμῶν λόγος οὗτός ἐστιν· οὗτοι δὲ δανείσασθαι μὲν ὁμολογοῦσι καὶ μὴ ἀποδεδωκέναι, διαφέρονται δ᾽ ὡς οὐ δεῖ τελεῖν αὐτοὺς τοὺς τόκους τοὺς ἐν τῇ συγγραφῇ ἀλλὰ τοὺς εἰς Ῥόδον, οὓς οὔτε συνεγράψαντο οὔτ᾽ ἔπεισαν ἡμᾶς. εἰ μὲν οὖν ὦ ἄν- 47
δρες Ἀθηναῖοι ἐν τῷ Ῥοδίων δικαστηρίῳ ἐκρινόμεθα, ἴσως ἂν οὗτοι ἐπλεονέκτουν ἡμῶν, ‖ σεσιτηγηκότες πρὸς αὐτοὺς καὶ καταπεπλευκότες τῇ νηὶ εἰς τὸ ἐκείνων ἐμπόριον· νῦν δ᾽ εἰς Ἀθηναίους εἰσεληλυθότες καὶ συγγραψάμενοι εἰς τὸ ὑμέτερον ἐμπόριον οὐκ ἀξιοῦμεν ἐλαττωθῆναι ὑπὸ τῶν καὶ ἡμᾶς καὶ ὑμᾶς ἠδικηκότων.

Χωρὶς δὲ τούτων, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, μὴ ἀγνοεῖτε ὅτι 48
νυνὶ μίαν δίκην δικάζοντες νομοθετεῖτε ὑπὲρ ὅλου τοῦ ἐμπορίου, καὶ παρεστᾶσι πολλοὶ τῶν κατὰ θάλατταν ἐργάζεσθαι προαιρουμένων ὑμᾶς θεωροῦντες, πῶς τὸ πρᾶγμα τουτὶ κρίνετε. εἰ μὲν γὰρ ὑμεῖς τὰς συγγραφὰς καὶ τὰς ὁμολογίας τὰς πρὸς ἀλλήλους γιγνομένας ἰσχυρὰς οἴεσθε δεῖν εἶναι καὶ τοῖς παραβαίνουσιν αὐτὰς μηδεμίαν συγγνώμην ἕξετε, ἑτοιμότερον προήσονται τὰ ἑαυτῶν οἱ ἐπὶ τοῦ δανείζειν ὄντες, ἐκ δὲ τούτων αὐξηθήσεται ὑμῖν τὸ ἐμπόριον. εἰ μέντοι ἐξέσται τοῖς ναυκλήροις, 49
συγγραφὴν γραψαμένοις ἐφ᾽ ᾧ τε πλεῖν εἰς Ἀθήνας, ἔπειτα κατάγειν τὴν ναῦν εἰς ἕτερα ἐμπόρια φάσκοντας ῥαγῆναι καὶ τοιαύτας προφάσεις πορίζομένους οἵαισπερ καὶ Διονυσόδωρος οὑτοσὶ χρῆται, καὶ τοὺς τόκους μερίζειν πρὸς τὸν πλοῦν ὃν ἂν φήσωσι πεπλευκέναι, καὶ μὴ πρὸς τὴν συγγραφήν, οὐδὲν κωλύσει ἅπαντα τὰ συμβόλαια δια-

50 λύεσθαι· τίς γὰρ ἐθελήσει τὰ ἑαυτοῦ προέσθαι, ὅταν ὁρᾷ τὰς μὲν συγγραφὰς ἀκύρους, ἰσχύοντας δὲ τοὺς τοιούτους λόγους, καὶ τὰς αἰτίας τῶν ἠδικηκότων ἔμπροσθεν οὔσας τοῦ δικαίου; μηδαμῶς, ὦ ἄνδρες δικασταί· οὔτε γὰρ τῷ πλήθει τῷ ὑμετέρῳ συμφέρει τοῦτο οὔτε τοῖς ἐργάζεσθαι προῃρημένοις, οἵπερ χρησιμώτατοί εἰσι ‖ καὶ κοινῇ πᾶσιν ὑμῖν καὶ ἰδίᾳ τῷ ἐντυγχάνοντι. διόπερ δεῖ ὑμᾶς αὐτῶν ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι.

Ἐγὼ μὲν οὖν, ὅσα περ οἷός τ᾽ ἦν, εἴρηκα· ἀξιῶ δὲ καὶ τῶν φίλων μοί τινα συνειπεῖν. δεῦρο, Δημόσθενες.

ΕΦΕΣΙΣ ΠΡΟΣ ΕΥΒΟΥΛΙΔΗΝ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Γράφεται νόμος παρ᾽ Ἀθηναίοις γενέσθαι ζήτησιν πάντων τῶν ἐγγεγραμμένων τοῖς ληξιαρχικοῖς γραμματείοις, εἴτε γνήσιοι πολῖταί εἰσιν εἴτε μή, τοὺς δὲ μὴ γεγονότας ἐξ ἀστοῦ καὶ ἐξ ἀστῆς ἐξαλείφεσθαι, διαψηφίζεσθαι δὲ περὶ πάντων τοὺς δημότας, καὶ τοὺς μὲν ἀποψηφισθέντας καὶ ἐμμείναντας τῇ ψήφῳ τῶν δημοτῶν ἐξαληλίφθαι καὶ εἶναι μετοίκους, τοῖς δὲ βουλομένοις ἔφεσιν εἰς δικαστὰς δεδόσθαι, κἂν μὲν ἁλῶσι καὶ παρὰ τῷ δικαστηρίῳ, πεπρᾶσθαι, ἐὰν δὲ ἀποφύγωσιν, εἶναι πολίτας. κατὰ τοῦτον τὸν νόμον τοῦ Ἁλιμουσίων δήμου διαψηφιζομένου ἀποψηφίζεται Εὐξίθεός τις, φάσκων δὲ ἑαυτὸν ὑπὸ Εὐβουλίδου ἐχθροῦ ὄντος κατεστασιάσθαι ἐφῆκεν εἰς τὸ δικαστήριον, καὶ ἐπιδεικνύει ἑαυτὸν ἐξ ἀστοῦ καὶ ἐξ ἀστῆς. εἰ δὲ ἐτίτθευσεν ἡ μήτηρ μου, δι᾽ ἀπορίαν τοῦτο ἐποίησεν. ὁ δὲ πατὴρ ἐξένιζε τῇ γλώττῃ αἰχμάλωτος γενόμενος καὶ πραθείς. δεῖ δὲ μὴ τὰ ἀτυχήματα προφέρειν, ἀλλὰ τὰ γένη ζητεῖν.*

‖ Πολλὰ καὶ ψευδῆ κατηγορηκότος ἡμῶν Εὐβουλίδου, καὶ βλασφημίας οὔτε προσηκούσας οὔτε δικαίας πεποιημένου, πειράσομαι τἀληθῆ καὶ τὰ δίκαια λέγων ὦ ἄνδρες δικασταὶ δεῖξαι καὶ μετὸν τῆς πόλεως ἡμῖν καὶ πεπονθότα ἐμαυτὸν οὐχὶ προσήκοντα ὑπὸ τούτου. δέομαι δ᾽ ἁπάντων ὑμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ ἱκετεύω καὶ ἀντιβολῶ, λογισαμένους τό τε μέγεθος τοῦ παρόντος ἀγῶνος καὶ τὴν αἰσχύνην μεθ᾽ ἧς ὑπάρχει τοῖς ἁλισκομένοις ἀπολωλέναι, ἀκοῦσαι καὶ ἐμοῦ σιωπῇ, μάλιστα μέν, εἰ δυνατόν, μετὰ πλείονος εὐνοίας ἢ τούτου (τοῖς γὰρ ἐν κινδύνῳ καθεστηκόσιν εἰκὸς εὐνοϊκωτέρους ὑμᾶς ὑπάρ-
2 χειν), εἰ δὲ μή, μετά γε τῆς ἴσης. συμβαίνει δέ μοι τὸ

μὲν καθ' ἡμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τὸ προσήκειν μοι
τῆς πόλεως θαρρεῖν καὶ πολλὰς ἔχειν ἐλπίδας καλῶς
ἀγωνιεῖσθαι, τὸν καιρὸν δὲ καὶ τὸ παρωξύνθαι τὴν πόλιν
πρὸς τὰς ἀποψηφίσεις φοβεῖσθαι· πολλῶν γὰρ ἐξεληλα-
μένων δικαίως ἐκ πάντων τῶν δήμων συγκεκοινωνήκαμεν
τῆς δόξης ταύτης οἱ κατεστασιασμένοι, καὶ πρὸς τὴν κατ'
ἐκείνων αἰτίαν, οὐ πρὸς τὸ καθ' αὑτὸν ἕκαστος ἀγωνιζό-
μεθα, ὥστ' ἐξ ἀνάγκης μέγαν ἡμῖν εἶναι τὸν φόβον. οὐ 3
μὴν ἀλλὰ καίπερ τούτων οὕτως ἐχόντων, ἃ νομίζω περὶ
τούτων αὐτῶν πρῶτον ‖ εἶναι δίκαια, ἐρῶ πρὸς ὑμᾶς. ἐγὼ
γὰρ οἴομαι δεῖν ὑμᾶς τοῖς μὲν ἐξελεγχομένοις ξένοις οὖσι
χαλεπαίνειν, εἰ μήτε πείσαντες μήτε δεηθέντες ὑμῶν
λάθρᾳ καὶ βίᾳ τῶν ὑμετέρων ἱερῶν καὶ κοινῶν μετεῖχον,
τοῖς δ' ἠτυχηκόσι καὶ δεικνύουσι πολίτας ὄντας αὑτοὺς
βοηθεῖν καὶ σώζειν, ἐνθυμουμένους ὅτι πάντων οἰκτρό-
τατον πάθος ἡμῖν ἂν συμβαίη τοῖς ἠδικημένοις, εἰ τῶν
λαμβανόντων δίκην ὄντες ἂν δικαίως μεθ' ὑμῶν ἐν τοῖς
διδοῦσι γενοίμεθα καὶ συναδικηθείημεν διὰ τὴν τοῦ πρά-
γματος ὀργήν. ᾤμην μὲν οὖν ἔγωγε ὦ ἄνδρες δικασταὶ 4
προσήκειν Εὐβουλίδῃ, καὶ πᾶσι δὲ ὅσοι νῦν ἐπὶ ταῖς ἀπο-
ψηφίσεσι κατηγοροῦσιν, ὅσα ἴσασιν ἀκριβῶς λέγειν καὶ
μηδεμίαν προσάγειν ἀκοὴν πρὸς τὸν τοιοῦτον ἀγῶνα.
οὕτω γὰρ τοῦτο ἄδικον καὶ σφόδρα πάλαι κέκριται ὥστε
οὐδὲ μαρτυρεῖν ἀκοὴν ἐῶσιν οἱ νόμοι, οὐδ' ἐπὶ τοῖς πάνυ
φαύλοις ἐγκλήμασιν, εἰκότως· ὅπου γὰρ εἰδέναι τινὲς ἤδη
φήσαντες ψευδεῖς ἐφάνησαν, πῶς, ἅ γε μηδ' αὐτὸς οἶδεν
ὁ λέγων, προσήκει πιστεύεσθαι; ἀλλὰ μὴν ὅπου γε μηδ' 5
ὑπεύθυνον καθιστάντα ἑαυτὸν ἔξεστι, δι' ὧν ἂν ἀκοῦσαί
τις φῇ, βλάπτειν μηδένα, πῶς ἀνυπευθύνῳ γε λέγοντι
προσήκει πιστεύειν ὑμᾶς; ἐπειδὴ τοίνυν οὗτος εἰδὼς τοὺς
νόμους, καὶ μᾶλλον ἢ προσῆκεν, ἀδίκως καὶ πλεονεκτικῶς
τὴν κατηγορίαν πεποίηται, ἀναγκαῖον ἐμοὶ περὶ ὧν ἐν
τοῖς δημόταις ὑβρίσθην πρῶτον εἰπεῖν. ἀξιῶ δ' ὦ ἄνδρες 6
Ἀθηναῖοι μηδέπω τὴν τῶν δημοτῶν ἀποψήφισιν ποιεῖ-
σθαι τεκμήριον ‖ ὑμᾶς, ὡς ἄρα οὐχὶ προσήκει μοι τῆς
πόλεως. εἰ γὰρ πάντ' ἐνομίζετε τὰ δίκαια δυνήσεσθαι
τοὺς δημότας διακρῖναι, οὐκ ἂν ἐδώκατε τὴν εἰς ὑμᾶς

ἔφεσιν· νῦν δὲ καὶ διὰ φιλονεικίαν καὶ διὰ φθόνον καὶ
δι' ἔχθραν καὶ δι' ἄλλας προφάσεις ἔσεσθαί τι τοιοῦτον
ἡγούμενοι τὴν εἰς ὑμᾶς τοῖς ἀδικηθεῖσιν ἐποιήσατε κατα-
φυγήν, δι' ἣν καλῶς ποιοῦντες ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοὺς
7 ἠδικημένους ἅπαντας σεσώκατε. πρῶτον μὲν οὖν ὃν
τρόπον ἐν τοῖς δημόταις συνέβη τὴν διαψήφισιν γενέσθαι,
φράσω πρὸς ὑμᾶς· τὸ γὰρ εἰς αὐτὸ τὸ πρᾶγμα πάντα
λέγειν τοῦτ' ἐγὼ ὑπολαμβάνω, ὅσα τις παρὰ τὸ ψήφισμα
πέπονθεν ἀδίκως καταστασιασθεὶς ἐπιδεῖξαι.
8 Εὐβουλίδης γὰρ οὗτος, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὡς ὑμῶν
ἴσασι πολλοί, γραψάμενος ἀσεβείας τὴν ἀδελφὴν τὴν
Λακεδαιμονίου τὸ πέμπτον μέρος τῶν ψήφων οὐ μετέ-
λαβεν. ὅτι δὴ ἐν ἐκείνῳ τῷ ἀγῶνι τὰ δίκαια τούτῳ δὲ
τἀναντία ἐμαρτύρησα, διὰ ταύτην τὴν ἔχθραν ἐπιτίθεταί
μοι. καὶ βουλεύων ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ κύριος ὢν τοῦ
θ' ὅρκου καὶ τῶν γραμματείων ἐξ ὧν ἀνεκάλει τοὺς δη-
9 μότας, τί ποιεῖ; πρῶτον μέν, ἐπειδὴ συνελέγησαν οἱ δη-
μόται, κατέτριψε τὴν ἡμέραν δημηγορῶν καὶ ψηφίσματα
γράφων. τοῦτο δ' ἦν οὐκ ἀπὸ τοῦ αὐτομάτου, ἀλλ' ἐπι-
βουλεύων ἐμοί, ὅπως ὡς ὀψιαίτατα ἡ διαψήφισις ἡ περὶ
ἐμοῦ γένοιτο· καὶ διεπράξατο τοῦτο. καὶ τῶν μὲν δημο-
τῶν οἱ ὀμόσαντες ἐγενόμεθα τρεῖς καὶ ἑβδομήκοντα, ἠρξά-
μεθα δὲ τοῦ διαψηφίζεσθαι δείλης ὀψίας, ὥστε συνέβη,
10 ἡνίκα τοὐμὸν ὄνομ' ἐκαλεῖτο, σκότος εἶναι ἤδη· || καὶ γὰρ
ἦν περὶ ἑξηκοστόν, καὶ ἐκλήθην ὕστατος ἁπάντων τῶν ἐν
ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ κληθέντων, ἡνίκα οἱ μὲν πρεσβύτεροι
τῶν δημοτῶν ἀπεληλύθεσαν εἰς τοὺς ἀγρούς· τοῦ γὰρ
δήμου ἡμῖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ πέντε καὶ τριάκοντα στά-
δια τοῦ ἄστεος ἀπέχοντος καὶ τῶν πλείστων ἐκεῖ οἰκούν-
των ἀπεληλύθεσαν οἱ πολλοί· οἱ δὲ κατάλοιποι ἦσαν οὐ
11 πλείους ἢ τριάκοντα. ἐν δὲ τούτοις ἦσαν ἅπαντες οἱ
τούτῳ παρεσκευασμένοι. ἐπειδὴ δ' ἐκλήθη τοὐμὸν ὄνομα,
ἀναπηδήσας οὗτος ἐβλασφήμει κατ' ἐμοῦ ταχὺ καὶ πολλὰ
καὶ μεγάλῃ τῇ φωνῇ, ὥσπερ καὶ νῦν, μάρτυρα μὲν ὧν
κατηγόρησεν οὐδένα παρασχόμενος οὔτε τῶν δημοτῶν οὔτε
τῶν ἄλλων πολιτῶν, παρεκελεύετο δὲ τοῖς δημόταις ἀπο-
12 ψηφίζεσθαι. ἀξιοῦντος δ' ἐμοῦ ἀναβαλέσθαι εἰς τὴν

ὑστεραίαν διά τε τὴν ὥραν καὶ τὸ μηδένα μοι παρεῖναι τό
τε πρᾶγμα ἄφνω προσπεπτωκέναι, ἵνα τούτῳ τ᾽ ἐξουσία
προσγένοιτο ὁπόσα βούλοιτο κατηγορῆσαι καὶ μάρτυρας
εἴ τινας ἔχοι παρασχέσθαι, ἐμοί τε ἐκγένοιτο ἀπολογήσα-
σθαι ἐν ἅπασι τοῖς δημόταις καὶ τοὺς οἰκείους μάρτυρας
παρασχέσθαι· καὶ ὅ τι γνοίησαν περὶ ἐμοῦ, τούτοις ἤθε-
λον ἐμμένειν· οὗτος ὧν μὲν ἐγὼ προυκαλούμην οὐδὲν 13
ἐφρόντισε, τὴν δὲ ψῆφον εὐθὺς ἐδίδου τοῖς παροῦσι τῶν
δημοτῶν, οὔτε ἀπολογίαν ἐμοὶ δοὺς οὐδεμίαν οὔτ᾽ ἔλεγχον
οὐδένα ἀκριβῆ ποιήσας. οἱ δὲ τούτῳ συνεστῶτες ἀναπη-
δήσαντες ἐψηφίζοντο. καὶ ἦν μὲν σκότος, οἱ δὲ λαμβά-
νοντες δύο καὶ τρεῖς ψήφους ἕκαστος παρὰ τούτου ἐνέ-
βαλλον εἰς τὸν καδίσκον. σημεῖον δέ· οἱ μὲν γὰρ ψηφι-
σάμενοι οὐ πλείους ἢ τριάκοντ᾽ ἦσαν, ‖ αἱ δὲ ψῆφοι
ἠριθμήθησαν πλείους ἢ ἑξήκοντα, ὥστε πάντας ἡμᾶς ἐκ-
πλαγῆναι. καὶ ταῦθ᾽ ὡς ἀληθῆ λέγω, καὶ ὅτι οὔτε ἐδόθη 14
ἡ ψῆφος ἐν ἅπασι πλείους τ᾽ ἐγένοντο τῶν ψηφισαμένων,
μάρτυρας ὑμῖν παρέξομαι. συμβαίνει δέ μοι περὶ τούτων
τῶν μὲν φίλων ἢ τῶν ἄλλων Ἀθηναίων μηδένα μάρτυρα
παρεῖναι διά τε τὴν ὥραν καὶ διὰ τὸ μηδένα παρακαλέσαι,
αὐτοῖς δὲ τοῖς ἠδικηκόσι με χρήσασθαι μάρτυσιν. ἃ οὖν οὐ
δυνήσονται ἔξαρνοι γενέσθαι, ταῦτα γέγραφα αὐτοῖς. λέγε.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Εἰ μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ συνέβαινε τοῖς Ἁλι- 15
μουσίοις περὶ ἁπάντων τῶν δημοτῶν διαψηφίσασθαι ἐν
ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, εἰκὸς ἦν καὶ εἰς ὀψὲ ψηφίζεσθαι, ἵν᾽
ἀπηλλαγμένοι ᾖεσαν ποιήσαντες τὰ ὑμῖν ἐψηφισμένα. εἰ
δὲ πλείους ἢ εἴκοσιν ὑπόλοιποι ἦσαν τῶν δημοτῶν, περὶ
ὧν ἔδει τῇ ὑστεραίᾳ διαψηφίσασθαι, καὶ ὁμοίως ἦν
ἀνάγκη συλλέγεσθαι τοὺς δημότας, τί ποτ᾽ ἦν τὸ δυσχερὲς
Εὐβουλίδῃ ἀναβαλέσθαι εἰς τὴν ὑστεραίαν καὶ περὶ ἐμοῦ
πρώτου τὴν ψῆφον διδόναι τοῖς δημόταις; διότι ὦ ἄν- 16
δρες δικασταὶ οὐκ ἠγνόει Εὐβουλίδης ὅτι, εἰ λόγος ἀπο-
δοθήσοιτο καὶ παραγένοιντό μοι πάντες οἱ δημόται καὶ
ἡ ψῆφος δικαίως δοθείη, οὐδαμοῦ γενήσονται οἱ μετὰ
τούτου συνεστηκότες. ὅθεν δ᾽ οὗτοι συνέστησαν, ταῦτα,
ἐπειδὰν περὶ τοῦ γένους εἴπω, τότε, ἂν βούλησθε ἀκούειν,

17 ἐρῶ. νῦν δὲ τί δίκαιον νομίζω καὶ τί παρεσκεύασμαι
ποιεῖν, ἄνδρες δικασταί; δεῖξαι πρὸς ὑμᾶς ἐμαυτὸν Ἀθη-
ναῖον ὄντα καὶ τὰ πρὸς πατρὸς καὶ τὰ πρὸς μητρός, καὶ
μάρτυρας τούτων, οὓς ὑμεῖς ‖ ἀληθεῖς φήσετε εἶναι, πα-
ρασχέσθαι, τὰς δὲ λοιδορίας καὶ τὰς αἰτίας ἀνελεῖν· ὑμᾶς
δ᾿ ἀκούσαντας τούτων, ἐὰν μὲν ὑμῖν πολίτης ὢν κατεστα-
σιάσθαι δοκῶ, σώζειν, εἰ δὲ μή, πράττειν ὁποῖον ἄν τι
ὑμῖν εὐσεβὲς εἶναι δοκῇ. ἄρξομαι δὲ ἐντεῦθεν.
18 Διαβεβλήκασι γάρ μου τὸν πατέρα ὡς ἐξένιζεν· καὶ
ὅτι μὲν ἁλοὺς ὑπὸ τῶν πολεμίων ὑπὸ τὸν Δεκελεικὸν πό-
λεμον καὶ πραθεὶς εἰς Λευκάδα Κλεάνδρῳ περιτυχὼν τῷ
ὑποκριτῇ πρὸς τοὺς οἰκείους ἐσώθη δεῦρο πολλοστῷ
χρόνῳ, παραλελοίπασιν, ὥσπερ δὲ δέον ἡμᾶς δι᾿ ἐκείνας
τὰς ἀτυχίας ἀπολέσθαι, τὸ ξενίζειν αὐτοῦ κατηγορήκασιν.
19 ἐγὼ δ᾿ ἐξ αὐτῶν τούτων μάλιστ᾿ ἂν οἶμαι ὑμῖν ἐμαυτὸν
Ἀθηναῖον ὄντα ἐπιδείξειν. καὶ πρῶτον μὲν ὡς ἑάλω καὶ
ἐσώθη, μάρτυρας ὑμῖν παρέξομαι, ἔπειθ᾿ ὅτι ἀφικόμενος
τῆς οὐσίας παρὰ τῶν θείων τὸ μέρος μετέλαβεν, εἶθ᾿ ὅτι
οὔτ᾿ ἐν τοῖς δημόταις οὔτ᾿ ἐν τοῖς φράτορσιν οὔτ᾿ ἄλλοθι
οὐδαμοῦ τὸν ξενίζοντα οὐδεὶς πώποτ᾿ ᾐτιάσατο ὡς εἴη
ξένος. καί μοι λαβὲ τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

20 Περὶ μὲν τῆς ἁλώσεως καὶ τῆς σωτηρίας, ἣν συνέβη
γενέσθαι τῷ πατρὶ δεῦρο, ἀκηκόατε· ὡς δ᾿ ὑμέτερος ἦν
πολίτης ὦ ἄνδρες δικασταί (τὸ γὰρ ὂν καὶ ἀληθὲς οὕτως
ὑπάρχει), μάρτυρας καλῶ τοὺς ζῶντας ἡμῖν τῶν συγγενῶν
τῶν πρὸς πατρός. κάλει δέ μοι πρῶτον μὲν Θουκριτίδην
καὶ Χαρισιάδην· ὁ γὰρ τούτων πατὴρ Χαρίσιος ἀδελφὸς
ἦν τοῦ πάππου τοῦ ἐμοῦ Θουκριτίδου καὶ Λυσαρέτης τῆς
21 ἐμῆς τήθης, θεῖος δὲ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ (ἀδελφὴν γὰρ
ὁ πάππος οὑμὸς ἔγημεν οὐχ ‖ ὁμομητρίαν)· ἔπειτα Νι-
κιάδην· καὶ γὰρ ὁ τούτου πατὴρ Λυσανίας ἀδελφὸς ἦν
τοῦ Θουκριτίδου καὶ τῆς Λυσαρέτης, θεῖος δὲ τοῦ πατρὸς
τοῦ ἐμοῦ· ἔπειτα Νικόστρατον· καὶ γὰρ ὁ τούτου πατὴρ
Νικιάδης ἀδελφιδοῦς ἦν τῷ πάππῳ τῷ ἐμῷ καὶ τῇ τή-
θῃ, ἀνεψιὸς δὲ τῷ πατρί. καί μοι κάλει τούτους πάντας.
σὺ δ᾿ ἐπίλαβε τὸ ὕδωρ.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Τῶν μὲν τοίνυν πρὸς ἀνδρῶν τῷ πατρὶ συγγενῶν ἀκη- 22
κόατε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ μαρτυρούντων καὶ διομνυ-
μένων εἶναι συγγενῆ τὸν ἐμὸν πατέρα αὐτοῖς· ὧν οὐδεὶς
δή που, παραστησάμενος τοὺς συνεισομένους αὐτῷ τὰ
ψευδῆ μαρτυροῦντι, κατ' ἐξωλείας ἐπιορκεῖ. λαβὲ δὴ καὶ
τὰς τῶν πρὸς γυναικῶν τῷ πατρὶ συγγενῶν μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Οἱ μὲν τοίνυν ζῶντες οὗτοι τῶν συγγενῶν τοῦ πατρὸς 23
καὶ πρὸς ἀνδρῶν καὶ πρὸς γυναικῶν μεμαρτυρήκασιν ὡς
ἦν ἀμφοτέρωθεν Ἀθηναῖος καὶ μετῆν τῆς πόλεως αὐτῷ
δικαίως. κάλει δή μοι καὶ τοὺς φράτορας, ἔπειτα τοὺς
γεννήτας.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Λαβὲ δὴ καὶ τὰς τῶν δημοτῶν μαρτυρίας καὶ τὰς τῶν
συγγενῶν περὶ τῶν φρατόρων, ὡς εἵλοντό με φρατρίαρχον.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Τὰ μὲν τοίνυν ὑπὸ τῶν συγγενῶν καὶ φρατόρων καὶ 24
δημοτῶν καὶ γεννητῶν, ὧν προσήκει, μαρτυρούμενα ἀκη-
κόατε· ἐξ ὧν ἔστιν ὑμῖν εἰδέναι πότερόν ποτ' ἀστὸς ἢ
ξένος ἦν ᾧ ταῦθ' ὑπῆρχεν. καὶ γὰρ εἰ μὲν εἰς ἕνα ἢ δύο
ἀνθρώπους κατεφεύγομεν, εἴχομεν ἄν τιν' ὑποψίαν παρε-
σκευάσθαι τούτους· εἰ δ' ἐν ἅπασιν, ὅσοις περ ἕκαστος
ὑμῶν, ἐξητασμένος ‖ φαίνεται καὶ ζῶν ὁ πατὴρ καὶ νῦν
ἐγώ, λέγω φράτορσι συγγενέσι δημόταις γεννήταις, πῶς
ἔνεστιν ἢ πῶς δυνατὸν τούτους ἅπαντας μὴ μετ' ἀληθείας
ὑπάρχοντας κατεσκευάσθαι; εἰ μὲν τοίνυν εὔπορος ὢν ὁ 25
πατὴρ χρήματα δοὺς τούτοις ἐφαίνετο πείσας συγγενεῖς
αὐτοὺς ἑαυτοῦ φάσκειν εἶναι, λόγον εἶχεν ὑποψίαν τιν'
ἔχειν ὡς οὐκ ἦν ἀστός· εἰ δὲ πένης ὢν ἅμα συγγενεῖς τε
παρέσχετο τοὺς αὐτοὺς καὶ μεταδιδόντας τῶν ὄντων ἐπε-
δείκνυε, πῶς οὐκ εὔδηλον ὅτι τῇ ἀληθείᾳ προσήκει τού-
τοις; οὐ γὰρ ἂν δή που, εἴ γε μηδενὶ ἦν οἰκεῖος, χρήματ'
αὐτῷ προστιθέντες οὗτοι τοῦ γένους μετεδίδοσαν. ἀλλ'
ἦν, ὡς τό τε ἔργον ἐδήλωσε καὶ ὑμῖν μεμαρτύρηται. ἔτι
τοίνυν ἀρχὰς ἔλαχε καὶ ἦρξε δοκιμασθείς. καί μοι λαβὲ
τὴν μαρτυρίαν.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

26 *Οἴεταί τις οὖν ὑμῶν ἐᾶσαί ποτ' ἂν τοὺς δημότας ἐκεῖνον τὸν ξένον καὶ μὴ πολίτην ἄρχειν παρ' αὑτοῖς, ἀλλ' οὐκ ἂν κατηγορεῖν; οὐ τοίνυν κατηγόρησεν οὐδὲ εἷς, οὐδ' ᾐτιάσατο. ἀλλὰ μὴν καὶ διαψηφίσεις ἐξ ἀνάγκης ἐγένοντο τοῖς δημόταις ὀμόσασι καθ' ἱερῶν, ὅτ' ἀπώλετο αὐτοῖς τὸ ληξιαρχικὸν γραμματεῖον δημαρχοῦντος Ἀντιφίλου τοῦ πατρὸς τοῦ Εὐβουλίδου, καί τινας ἀπήλασαν αὑτῶν· περὶ ἐκείνου δ' οὐδεὶς οὔτ' εἶπεν οὔτ' ᾐτιάσατο τοιοῦτον οὐδέν.*
27 *καίτοι πᾶσίν ἐστιν ἀνθρώποις τέλος τοῦ βίου θάνατος, καὶ περὶ ὧν μὲν ἄν τις ζῶν αἰτίαν σχῇ [περὶ τοῦ γένους], δίκαιον τοὺς παῖδας τὴν ἀειλογίαν παρέχειν· περὶ ὧν δ' ἂν μηδεὶς αὐτὸν ζῶντα καταιτιάσηται, πῶς οὐ δεινὸν εἰ τοὺς παῖδας ὁ βουλόμενος κρίνει; εἰ μὲν τοίνυν ‖ περὶ τούτων μηδεὶς λόγος ἐξητάσθη, δῶμεν τοῦτο λεληθέναι· εἰ δ' ἐδόθη καὶ διεψηφίσαντο καὶ μηδὲν ᾐτιάσατο πώποτε μηδείς, πῶς οὐ δικαίως ἂν ἐγὼ κατ' ἐκεῖνον Ἀθηναῖος εἴην τὸν τελευτήσαντα πρὶν ἀμφισβητηθῆναι τοῦ γένους αὐτῷ; ὡς δὴ ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, κάλει καὶ τούτων μάρτυρας.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

28 *Ἔτι τοίνυν παίδων αὐτῷ τεττάρων γενομένων ὁμομητρίων ἐμοὶ καὶ τελευτησάντων, ἔθαψε τούτους εἰς τὰ πατρῷα μνήματα, ὧν ὅσοι πέρ εἰσι τοῦ γένους κοινωνοῦσιν· καὶ τούτων οὐδεὶς οὐκ ἀπεῖπε πώποτε, οὐκ ἐκώλυσεν, οὐ δίκην ἔλαχεν. καίτοι τίς ἐστιν ὅστις ἂν εἰς τὰ πατρῷα αὑτῶν μνήματα τοὺς μηδὲν ἐν γένει τιθέναι ἐᾶσαι; ὡς τοίνυν καὶ ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, λαβὲ τὴν μαρτυρίαν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

29 *Περὶ μὲν τοίνυν τοῦ πατρός, ὡς Ἀθηναῖος ἦν, ταῦτ' ἔχω λέγειν, καὶ μάρτυρας παρέσχημαι τοὺς ὑπ' αὐτῶν τούτων ἐψηφισμένους εἶναι πολίτας, μαρτυροῦντας ἐκεῖνον ἑαυτοῖς ἀνεψιὸν εἶναι. φαίνεται δὲ βιοὺς ἔτη τόσα καὶ τόσα ἐνθάδε, καὶ οὐδαμοῦ πώποτε ὡς ξένος ἐξετασθείς, ἀλλὰ πρὸς τούτους ὄντας συγγενεῖς καταφεύγων, οὗτοι δὲ καὶ προσδεχόμενοι καὶ τῆς οὐσίας μεταδιδόντες ὡς αὑτῶν*
30 *ἑνί. τοῖς χρόνοις τοίνυν οὕτω φαίνεται γεγονὼς ὥστε, εἰ καὶ κατὰ θάτερα ἀστὸς ἦν, εἶναι πολίτην προσήκειν αὐ-*

τόν· γέγονε γὰρ πρὸ Εὐκλείδου. περὶ δὲ τῆς μητρός (καὶ γὰρ ταύτην διαβεβλήκασί μου) λέξω, καὶ μάρτυρας ὧν ἂν λέγω καλῶ. καίτοι, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, οὐ ‖ μόνον παρὰ τὰ ψηφίσματα τὰ περὶ τὴν ἀγορὰν διέβαλλεν ἡμᾶς Εὐβουλίδης, ἀλλὰ καὶ παρὰ τοὺς νόμους οἳ κελεύουσιν ἔνοχον εἶναι τῇ κακηγορίᾳ τὸν τὴν ἐργασίαν τὴν ἐν τῇ ἀγορᾷ ἢ τῶν πολιτῶν ἢ τῶν πολιτίδων ὀνειδίζοντά τινι. ἡμεῖς δ' 31
ὁμολογοῦμεν καὶ ταινίας πωλεῖν καὶ ζῆν οὐχ ὅντινα τρόπον βουλόμεθα. καὶ εἴ σοί ἐστι τοῦτο σημεῖον ὦ Εὐβουλίδη τοῦ μὴ Ἀθηναίους εἶναι ἡμᾶς, ἐγώ σοι τούτου ὅλως τοὐναντίον ἐπιδείξω, ὅτι οὐκ ἔξεστι ξένῳ ἐν τῇ ἀγορᾷ ἐργάζεσθαι. καί μοι λαβὼν ἀνάγνωθι πρῶτον τὸν Σόλωνος νόμον.

ΝΟΜΟΣ.

Λαβὲ δὴ καὶ τὸν Ἀριστοφῶντος· οὕτω γὰρ ὦ ἄνδρες 32
Ἀθηναῖοι τοῦτον ἔδοξεν ἐκεῖνος καλῶς καὶ δημοτικῶς νομοθετῆσαι ὥστ' ἐψηφίσασθε πάλιν ἀνανεώσασθαι.

ΝΟΜΟΣ.

Προσήκει τοίνυν ὑμῖν βοηθοῦσι τοῖς νόμοις μὴ τοὺς ἐργαζομένους ξένους νομίζειν, ἀλλὰ τοὺς συκοφαντοῦντας πονηρούς, ἐπεὶ ὦ Εὐβουλίδη ἔστι καὶ ἕτερος περὶ τῆς ἀργίας νόμος, ᾧ αὐτὸς ἔνοχος ὢν ἡμᾶς τοὺς ἐργαζομένους διαβάλλεις. ἀλλὰ γὰρ τοσαύτη τις ἀτυχία ἐστὶ περὶ ἡμᾶς 33
νῦν ὥστε τούτῳ μὲν ἔξεστιν ἔξω τοῦ πράγματος βλασφημεῖν καὶ πάντα ποιεῖν ὅπως μηδενὸς τῶν δικαίων ἐγὼ τύχω· ἐμοὶ δ' ἐπιτιμήσετε ἴσως, ἐὰν λέγω ὃν τρόπον οὗτος ἐργάζεται περιιὼν ἐν τῇ πόλει. καὶ εἰκότως· ἃ γὰρ ὑμεῖς ἴστε, τί δεῖ λέγειν; σκοπεῖτε δή· νομίζω γὰρ ἔγωγε τὸ ἐν τῇ ἀγορᾷ ἡμᾶς ἐργάζεσθαι μέγιστον εἶναι σημεῖον τοῦ ψευδεῖς ‖ ἡμῖν αἰτίας τοῦτον ἐπιφέρειν. ἣν γάρ φησι 34
ταινιόπωλιν εἶναι καὶ φανερὰν πᾶσι, προσῆκε δήπουθεν εἰδότας αὐτὴν πολλοὺς ἥτις ἐστὶ μαρτυρεῖν, καὶ μὴ μόνον ἀκοήν, ἀλλ' εἰ μὲν ξένη ἦν, τὰ τέλη ἐξετάσαντας τὰ ἐν τῇ ἀγορᾷ, εἰ ξενικὰ ἐτέλει καὶ ποδαπὴ ἦν, ἐπιδεικνύντας· εἰ δὲ δούλη, μάλιστα μὲν τὸν πριάμενον, εἰ δὲ μή, τὸν ἀποδόμενον ἥκειν καταμαρτυροῦντα, εἰ δὲ μή, τῶν ἄλλων τινά, ἢ ὡς ἐδούλευσεν ἢ ὡς ἀφείθη ἐλευθέρα. νῦν δὲ

*τούτων μὲν ἀπέδειξεν οὐδέν, λελοιδόρηκε δ', ὡς ἐμοὶ δο-
κεῖ, οὐδὲν ὅ τι οὔ. τοῦτο γάρ ἐστιν ὁ συκοφάντης, αἰ-
35 τιάσασθαι μὲν πάντα, ἐξελέγξαι δὲ μηδέν. ἔπειτα κἀκεῖνο
περὶ τῆς μητρὸς εἴρηκεν, ὅτι ἐτίτθευσεν. ἡμεῖς δέ, ὅτε ἡ
πόλις ἠτύχει καὶ πάντες κακῶς ἔπραττον, οὐκ ἀρνούμεθα
τοῦτο γενέσθαι· ὃν δὲ τρόπον καὶ ὧν ἕνεκα ἐτίτθευσεν,
ἐγὼ σαφῶς ὑμῖν ἐπιδείξω. μηδεὶς δ' ὑμῶν ὦ ἄνδρες
Ἀθηναῖοι δυσχερῶς ὑπολάβῃ· καὶ γὰρ νῦν ἀστὰς γυναῖκας
πολλὰς εὑρήσετε τιτθευούσας, ἃς ὑμῖν καὶ κατ' ὄνομα, ἐὰν
βούλησθε, ἐροῦμεν. εἰ δέ γε πλούσιοι ἦμεν, οὔτ' ἂν τὰς
ταινίας ἐπωλοῦμεν οὔτ' ἂν ὅλως ἦμεν ἄποροι. ἀλλὰ τί
36 ταῦτα κοινωνεῖ τῷ γένει; ἐγὼ μὲν οὐδὲν οἶμαι. μηδαμῶς
ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοὺς πένητας ἀτιμάζετε (ἱκανὸν γὰρ
αὐτοῖς τὸ πένεσθαι κακόν), μηδέ γε τοὺς ἐργάζεσθαι καὶ
ζῆν ἐκ τοῦ δικαίου προαιρουμένους· ἀλλ' ἀκούσαντες, ἐὰν
ὑμῖν ἐπιδεικνύω τῆς μητρὸς τοὺς οἰκείους οἵους προσῆκεν
εἶναι ἀνθρώποις ‖ ἐλευθέροις, ἃ καταιτιᾶται περὶ αὐτῆς,
ταύτας τὰς διαβολὰς ἐξομνυμένους, καὶ μαρτυροῦντας αὐ-
τὴν ἀστὴν οὖσαν εἰδέναι, οὓς ὑμεῖς φήσετε πιστοὺς εἶναι,
37 δικαίαν ἡμῖν θέσθε τὴν ψῆφον. ἐμοὶ γὰρ ἦν πάππος, ὦ
ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τῆς μητρὸς πατήρ, Δαμόστρατος Με-
λιτεύς. τούτῳ γίγνονται τέτταρες παῖδες, ἐκ μὲν ἧς τὸ
πρῶτον ἔσχε γυναικὸς θυγάτηρ καὶ υἱὸς ᾧ ὄνομα Ἀμυ-
θέων, ἐκ δὲ τῆς ὕστερον Χαιρεστράτης ἡ μήτηρ ἡ ἐμὴ καὶ
Τιμοκράτης. τούτοις δὲ γίγνονται παῖδες, τῷ μὲν Ἀμυ-
θέωνι Δαμόστρατος, τοῦ πάππου τοὔνομ' ἔχων, καὶ Καλ-
λίστρατος καὶ Δεξίθεος. καὶ ὁ μὲν Ἀμυθέων ὁ τῆς μητρὸς
ἀδελφὸς τῶν ἐν Σικελίᾳ στρατευσαμένων καὶ τελευτησάν-
38 των ἐστί, καὶ τέθαπται ἐν τοῖς δημοσίοις μνήμασιν· καὶ
ταῦτα μαρτυρήσεται· τῇ δ' ἀδελφῇ αὐτοῦ συνοικησάσῃ
Διοδώρῳ Ἁλαιεῖ υἱὸς γίγνεται Κτησίβιος. καὶ οὗτος μὲν
ἐτελεύτησεν ἐν Ἀβύδῳ μετὰ Θρασυβούλου στρατευόμενος,
ζῇ δὲ τούτων ὁ Δαμόστρατος ὁ τοῦ Ἀμυθέωνος, τῆς μη-
τρὸς ἀδελφιδοῦς τῆς ἐμῆς. τῆς δὲ Χαιρεστράτης τῆς ἐμῆς
τήθης τὴν ἀδελφὴν λαμβάνει Ἀπολλόδωρος Πλωθεύς·
τούτων γίγνεται Ὀλύμπιχος, τοῦ δ' Ὀλυμπίχου Ἀπολλό-
δωρος, καὶ οὗτος ζῇ. καί μοι κάλει αὐτούς.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

*Τούτων μὲν τοίνυν ἀκηκόατε μαρτυρούντων καὶ διο- 39
μνυμένων· τὸν δὲ καὶ ὁμομήτριον καὶ κατ' ἀμφότερ' ἡμῖν
συγγενῆ καλῶ, καὶ τοὺς υἱεῖς αὐτοῦ. τῷ γὰρ Τιμοκράτει
τῷ τῆς μητρὸς ἀδελφῷ τῆς ἐμῆς ὁμοπατρίῳ καὶ ὁμομητρίῳ
γίγνεται ‖ Εὐξίθεος, τοῦ δ' Εὐξιθέου τρεῖς υἱεῖς· οὗτοι
πάντες ζῶσιν. καί μοι κάλει τοὺς ἐπιδημοῦντας αὐτῶν.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

*Λαβὲ δή μοι καὶ τὰς μαρτυρίας τῶν φρατόρων τῶν
συγγενῶν τῶν τῆς μητρὸς καὶ δημοτῶν, καὶ ὧν τὰ μνή-
ματα ταὐτά.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

*Τὰ μὲν τοίνυν τοῦ γένους τοῦ τῆς μητρὸς οὕτως ὑμῖν 40
ἐπιδεικνύω, καὶ πρὸς ἀνδρῶν καὶ πρὸς γυναικῶν ἀστήν·
τῇ δὲ μητρὶ τῇ ἐμῇ γίγνεται ὦ ἄνδρες δικασταὶ τὸ μὲν
πρῶτον ἐκ Πρωτομάχου, ᾧ αὐτὴν ὁ Τιμοκράτης ὁμομή-
τριος καὶ ὁμοπάτριος ὢν ἀδελφὸς ἔδωκε, θυγάτηρ, εἶτα
ἐκ τοῦ πατρὸς τοῦ ἐμοῦ ἐγώ. ὃν δὲ τρόπον τῷ πατρὶ τῷ
ἐμῷ συνῴκησε, ταῦθ' ὑμᾶς ἀκοῦσαι δεῖ· καὶ γὰρ ἃ περὶ
τὸν Κλεινίαν αἰτιᾶται καὶ τὸ τιτθεῦσαι τὴν μητέρα καὶ
ταῦτα πάντα ἐγὼ σαφῶς ὑμῖν διηγήσομαι. ὁ Πρωτόμα- 41
χος πένης ἦν, ἐπικλήρου δὲ κληρονομήσας εὐπόρου, τὴν
μητέρα βουληθεὶς ἐκδοῦναι πείθει λαβεῖν αὐτὴν Θούκρι-
τον τὸν πατέρα τὸν ἐμόν, ὄντα ἑαυτοῦ γνώριμον. καὶ ἐγ-
γυᾶται ὁ πατὴρ τὴν μητέρα τὴν ἐμὴν παρὰ τοῦ ἀδελφοῦ
αὐτῆς Τιμοκράτους Μελιτέως, παρόντων τῶν τε θείων
ἀμφοτέρων τῶν ἑαυτοῦ καὶ ἄλλων μαρτύρων· καὶ τούτων
ὅσοι ζῶσι, μαρτυρήσουσιν ἡμῖν. μετὰ δὲ ταῦτα χρόνῳ 42
ὕστερον παιδίων αὐτῇ δυοῖν ἤδη γεγενημένων, καὶ τοῦ μὲν
πατρὸς στρατευομένου καὶ ἀποδημοῦντος μετὰ Θρασυβού-
λου, αὐτὴ δ' οὖσα ἐν ἀπορίαις ἠναγκάσθη τὸν Κλεινίαν
τὸν τοῦ Κλειδίκου τιτθεῦσαι, τῷ μὲν εἰς ἐμὲ ἥκοντι κιν-
δύνῳ νῦν μὰ τὸν Δία οὐχὶ συμφέρον ‖ πρᾶγμα ποιήσασα
(ἀπὸ γὰρ ταύτης τῆς τιτθείας ἅπασα ἡ περὶ ἡμᾶς γέγονε
βλασφημία), τῇ μέντοι ὑπαρχούσῃ πενίᾳ ἴσως καὶ ἀναγ-
καῖα καὶ ἁρμόττοντα ποιοῦσα. φαίνεται τοίνυν οὐχ ὁ 43
ἐμὸς πατὴρ πρῶτος ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι λαβὼν τὴν ἐμὴν*

μητέρα, ἀλλ' ὁ Πρωτόμαχος, καὶ παῖδας ποιησάμενος καὶ θυγατέρα ἐκδούς· ὃς καὶ τετελευτηκὼς ὅμως μαρτυρεῖ τοῖς ἔργοις ἀστὴν ταύτην καὶ πολῖτιν εἶναι. ὡς οὖν ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, κάλει μοι πρῶτον μὲν τοὺς τοῦ Πρωτομάχου υἱεῖς, ἔπειτα τοὺς ἐγγυωμένῳ παρόντας τῷ πατρὶ καὶ τῶν φρατόρων τοὺς οἰκείους, οἷς τὴν γαμηλίαν εἰσήνεγκεν ὑπὲρ τῆς μητρὸς ὁ πατήρ, εἶτα Εὔνικον Χολαργέα τὸν τὴν ἀδελφὴν λαβόντα τὴν ἐμὴν παρὰ τοῦ Πρωτομάχου, εἶτα τὸν υἱὸν τῆς ἀδελφῆς. κάλει τούτους.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

44 Πῶς οὖν οὐκ ἂν οἰκτρότατα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πάντων ἐγὼ πεπονθὼς εἴην, εἰ τῶν συγγενῶν ὄντων τοσούτων τούτων καὶ μαρτυρούντων καὶ διομνυμένων ἐμοὶ προσήκειν, μηδεὶς μηδενὶ τούτων ἀμφισβητῶν ὡς οὐκ εἰσὶ πολῖται, ἐμὲ ψηφίσαιντο εἶναι ξένον; λαβὲ δή μοι καὶ τὴν τοῦ Κλεινίου καὶ τὴν τῶν συγγενῶν αὐτοῦ μαρτυρίαν, οἳ ἴσασι δή που τίς οὖσά ποτε ἡ ἐμὴ μήτηρ ἐτίτθευσεν αὐτόν. οὐ γὰρ ἃ τήμερον ἡμεῖς φαμέν, εὔορκον αὐτοῖς μαρτυρεῖν, ἀλλ' ἃ πάντα τὸν χρόνον ᾔδεσαν τὴν ἡμετέραν μὲν μητέρα
45 τιτθὴν δὲ τούτου νομιζομένην. καὶ γὰρ εἰ ταπεινὸν ἡ τιτθή, τὴν ἀλήθειαν οὐ φεύγω· οὐ γὰρ εἰ πένητες ἦμεν, ἠδικήκαμεν, ἀλλ' εἰ μὴ πολῖται· οὐδὲ περὶ τύχης ‖ οὐδὲ περὶ χρημάτων ἡμῖν ἐστὶν ὁ παρὼν ἀγών, ἀλλ' ὑπὲρ γένους. πολλὰ δουλικὰ καὶ ταπεινὰ πράγματα τοὺς ἐλευθέρους ἡ πενία βιάζεται ποιεῖν, ἐφ' οἷς ἐλεοῖντ' ἂν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι δικαιότερον ἢ προσαπολλύοιντο. ὡς γὰρ ἐγὼ ἀκούω, πολλαὶ καὶ τιτθαὶ καὶ ἔριθοι καὶ τρυγήτριαι γεγόνασιν ὑπὸ τῶν τῆς πόλεως κατ' ἐκείνους τοὺς χρόνους συμφορῶν ἀσταὶ γυναῖκες, πολλαὶ δ' ἐκ πενήτων πλούσιαι νῦν. ἀλλ' αὐτίχ' ὑπὲρ τούτων. νῦν δὲ τοὺς μάρτυρας κάλει.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

46 Οὐκοῦν ὅτι μὲν καὶ τὰ πρὸς μητρός εἰμι ἀστὸς καὶ τὰ πρὸς πατρός, τὰ μὲν ἐξ ὧν ἄρτι μεμαρτύρηται μεμαθήκατε πάντες, τὰ δ' ἐξ ὧν πρότερον περὶ τοῦ πατρός. λοιπὸν δέ μοι περὶ ἐμαυτοῦ πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν τὸ μὲν ἁπλούστατον, οἶμαι, καὶ δικαιότατον, ἐξ ἀμφοτέρων ἀστὸν ὄντα με, κεκληρονομηκότα καὶ τῆς οὐσίας καὶ τοῦ γένους,

εἶναι πολίτην· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ τὰ προσήκοντα πάντα ἐπιδείξω μάρτυρας παρεχόμενος, ὡς εἰσήχθην εἰς τοὺς φράτορας, ὡς ἐνεγράφην εἰς τοὺς δημότας, ὡς ὑπ᾽ αὐτῶν τούτων προεκρίθην ἐν τοῖς εὐγενεστάτοις κληροῦσθαι τῆς ἱερωσύνης τῷ Ἡρακλεῖ, ὡς ἦρχον ἀρχὰς δοκιμασθείς. καί μοι κάλει αὐτούς.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

Οὐκοῦν δεινόν, ὦ ἄνδρες δικασταί; εἰ μὲν ἔλαχον ἱερεὺς 47
ὥσπερ προεκρίθην, ἔδει ἄν με καὶ αὐτὸν θύειν ὑπὲρ τούτων καὶ τοῦτον μετ᾽ ἐμοῦ συνθύειν, νῦν δὲ τοὺς αὐτοὺς τούτους ἐμὲ μεθ᾽ αὐτῶν μηδὲ συνθύειν ἐᾶν; φαίνομαι τοίνυν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὸν μὲν ἄλλον χρόνον ἅπαντα παρὰ πᾶσι τοῖς νῦν κατηγοροῦσι πολίτης ὡμολογημένος·
‖ οὐ γὰρ ἂν δή που τόν γε ξένον καὶ μέτοικον, ὡς νῦν φη- 48
σὶν Εὐβουλίδης, οὔτ᾽ ἀρχὰς ἄρχειν οὔθ᾽ ἱερωσύνην κληροῦσθαι μεθ᾽ ἑαυτοῦ προκριθέντα εἴασεν· καὶ γὰρ οὗτος ἦν τῶν κληρουμένων καὶ προκριθέντων. οὐδέ γ᾽ ἄν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, παλαιὸς ὢν ἐχθρὸς ἐμοὶ τοῦτον τὸν καιρὸν περιέμενεν, ὃν οὐδεὶς ᾔδει γενησόμενον, εἴπερ τι συνῄδει τοιοῦτον. ἀλλ᾽ οὐ συνῄδει· διόπερ τὸν μὲν ἄλλον 49
ἅπαντα χρόνον δημοτευόμενος μετ᾽ ἐμοῦ καὶ κληρούμενος οὐδὲν ἑώρα τούτων, ἐπειδὴ δ᾽ ἡ πόλις πᾶσα τοῖς ἀσελγῶς εἰσπηδῶσιν εἰς τοὺς δήμους ὀργιζομένη παρώξυντο, τηνικαῦτά μοι ἐπεβούλευσεν. ἦν δ᾽ ἐκεῖνος μὲν ὁ καιρὸς τοῦ συνειδότος αὐτῷ τἀληθῆ λέγειν, ὁ δὲ νυνὶ παρὼν ἐχθροῦ καὶ συκοφαντεῖν βουλομένου. ἐγὼ δ᾽ ὦ ἄνδρες 50
δικασταί, καί μοι πρὸς Διὸς καὶ θεῶν μηδεὶς θορυβήσῃ, μηδ᾽ ἐφ᾽ ᾧ μέλλω λέγειν ἀχθεσθῇ, εἰ ἐμαυτὸν Ἀθηναῖον ὑπείληφα ὥσπερ ὑμῶν ἕκαστος ἑαυτόν, μητέρα ἐξ ἀρχῆς νομίζων ἥνπερ εἰς ὑμᾶς ἀποφαίνω, καὶ οὐχ ἑτέρας μὲν ὢν ταύτης δὲ προσποιούμενος· πατέρα πάλιν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὸν αὐτὸν τρόπον. καίτοι εἰ τοῖς ἐξελεγχομένοις 51
ὧν μέν εἰσιν ἀποκρυπτομένοις, ὧν δ᾽ οὐκ εἰσὶ προσποιουμένοις δίκαιον ὑπάρχειν παρ᾽ ὑμῖν τοῦτο σημεῖον ὡς εἰσὶ ξένοι, ἐμοὶ δή που τοὐναντίον ὡς εἰμὶ πολίτης. οὐ γὰρ ἂν ξένην καὶ ξένον τοὺς ἐμαυτοῦ γονέας ἐπιγραψάμενος μετέχειν ἠξίουν τῆς πόλεως· ἀλλ᾽ εἴ τι τοιοῦτον

*συνῄδειν, ἐζήτησ' ἂν ὧν φήσω γονέων εἶναι. ἀλλ' οὐ συν-
ῄδειν, διόπερ μένων ἐπὶ τοῖς οὖσι δικαίως γονεῦσιν
ἐμαυτῷ τῆς πόλεως μετέχειν ‖ ἀξιῶ.*

52 *Ἔτι τοίνυν ὀρφανὸς κατελείφθην, καὶ φασί με εὔπορον
εἶναι καὶ τῶν μαρτύρων ἐνίους ὠφελουμένους μοι μαρτυ-
ρεῖν συγγενεῖς εἶναι. καὶ ἅμα μὲν κατ' ἐμοῦ λέγουσι τὰς
ἐκ τῆς πενίας ἀδοξίας καὶ περὶ τὸ γένος διαβάλλουσιν,
ἅμα δὲ δι' εὐπορίαν φασὶ πάντα με ὠνεῖσθαι· ὥστε πό-*
53 *τερα χρὴ αὐτοῖς πιστεύειν; ἐξῆν δὲ δή που τούτοις, εἰ
νόθος ἢ ξένος ἦν ἐγώ, κληρονόμοις εἶναι τῶν ἐμῶν πάν-
των. εἶθ' οὗτοι μικρὰ λαμβάνειν καὶ κινδυνεύειν ἐν ψευ-
δομαρτυρίαις καὶ ἐπιορκεῖν μᾶλλον αἱροῦνται ἢ πάντ'
ἔχειν, καὶ ταῦτ' ἀσφαλῶς, καὶ μηδεμιᾶς ἐξωλείας ὑπόχους
ἑαυτοὺς ποιεῖν; οὐκ ἔστι ταῦτα, ἀλλ' οἶμαι, συγγενεῖς ὄν-*
54 *τες τὰ δίκαια ποιοῦσι, βοηθοῦντες αὑτῶν ἑνί. καὶ ταῦτ'
οὐχὶ νῦν πεπεισμένοι ποιοῦσιν, ἀλλὰ παιδίον ὄντα με
εὐθέως ἦγον εἰς τοὺς φράτορας, εἰς Ἀπόλλωνος πατρῴου
ἦγον, εἰς τἆλλα ἱερά. καίτοι οὐ δή που παῖς ὢν ἐγὼ ταῦτ'
ἔπειθον αὐτοὺς ἀργύριον διδούς. ἀλλὰ μὴν ὁ πατὴρ αὐ-
τὸς ζῶν, ὀμόσας τὸν νόμιμον τοῖς φράτορσιν ὅρκον, εἰσή-
γαγέ με ἀστὸν ἐξ ἀστῆς ἐγγυητῆς αὑτῷ γεγενημένον εἰδώς,*
55 *καὶ ταῦτα μεμαρτύρηται. εἶτ' ἐγὼ ξένος; ποῦ μετοίκιον
καταθείς; ἢ τίς τῶν ἐμῶν πώποτε; ποῦ πρὸς ἄλλους δη-
μότας ἐλθὼν καὶ οὐ δυνηθεὶς ἐκείνους πεῖσαι δεῦρ' ἐμαυ-
τὸν ἐνέγραψα; ποῦ τί ποιήσας ὧν, ὅσοι μὴ καθαρῶς ἦσαν
πολῖται, πεποιηκότες φαίνονται; οὐδαμοῦ. ἀλλ' ἁπλῶς,
ἐν οἷς ὁ πάππος ὁ τοῦ πατρὸς <πατήρ>, ὁ ἐμὸς πατήρ,
ἐνταῦθα καὶ αὐτὸς φαίνομαι δημοτευόμενος. καὶ νῦν πῶς
ἄν τις ὑμῖν σαφέστερον ἐπιδείξειε ‖ μετὸν τῆς πόλεως*
56 *αὐτῷ; ἐνθυμείσθω γὰρ ἕκαστος ὑμῶν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι,
τοὺς ἑαυτῷ προσήκοντας τίν' ἄλλον ἂν δύναιτο ἐπιδεῖξαι
τρόπον ἢ τὸν αὐτὸν ἐμοί, μαρτυροῦντας, ὀμνύντας, πάλαι
τοὺς αὐτοὺς ἀπὸ τῆς ἀρχῆς ὄντας;*

*Διὰ ταῦτα τοίνυν ἐγὼ πιστεύων ἐμαυτῷ κατέφυγον
εἰς ὑμᾶς. ὁρῶ γάρ, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, οὐ μόνον τῶν
ἀποψηφισαμένων Ἁλιμουσίων ἐμοῦ κυριώτερ' ὄντα τὰ
δικαστήρια, ἀλλὰ καὶ τῆς βουλῆς καὶ τοῦ δήμου, δι-*

καίως· κατὰ γὰρ πάντα αἱ παρ' ὑμῶν εἰσὶ κρίσεις δικαιό-
ταται.
Ἐνθυμεῖσθε τοίνυν κἀκεῖνο, ὅσοι τῶν μεγάλων δήμων 57
ἐστέ, ὡς οὐδέν' ἀπεστερεῖτε οὔτε κατηγορίας οὔτ' ἀπολο-
γίας. καὶ πολλὰ ἀγαθὰ γένοιτο πᾶσιν ὑμῖν τοῖς δικαίως
τούτῳ τῷ πράγματι χρησαμένοις, ὅτι καὶ τῶν ἀναβαλέ-
σθαι δεομένων οὐκ ἀφῄρησθε τὸ παρασκευάσασθαι· ᾧ
καὶ τοὺς συκοφαντοῦντας καὶ δι' ἔχθραν ἐπιβουλεύοντας
ἐξηλέγχετε. καὶ ὑμᾶς μὲν ἄξιον ἐπαινεῖν, ὦ ἄνδρες Ἀθη- 58
ναῖοι, τοὺς δὲ καλῷ καὶ δικαίῳ πράγματι μὴ καλῶς χρη-
σαμένους ψέγειν. ἐν οὐδενὶ τοίνυν εὑρήσετε τῶν δήμων
δεινότερα γεγενημένα τῶν παρ' ἡμῖν. οὗτοι γὰρ ἀδελφῶν
ὁμομητρίων καὶ ὁμοπατρίων τῶν μέν εἰσιν ἀπεψηφισμέ-
νοι τῶν δ' οὔ, καὶ πρεσβυτέρων ἀνθρώπων ἀπόρων, ὧν
τοὺς υἱεῖς ἐγκαταλελοίπασιν· καὶ τούτων, ἂν βούλησθε,
μάρτυρας παρέξομαι. ὃ δὲ πάντων δεινότατον οἱ συνε- 59
στηκότες πεποιήκασι (καί μοι πρὸς Διὸς καὶ θεῶν μηδεὶς
ὑπολάβῃ δυσκόλως, ἐὰν τοὺς ἠδικηκότας ἐμαυτὸν || πονη-
ροὺς ὄντας ἐπιδεικνύω· νομίζω γὰρ ὑμῖν τὴν τούτων πο-
νηρίαν δεικνὺς αὐτὸ τὸ πρᾶγμα λέγειν τὸ γενόμενόν μοι)·
οὗτοι γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι βουλομένους τινὰς ἀνθρώ-
πους ξένους πολίτας γενέσθαι, Ἀναξιμένην καὶ Νικόστρα-
τον, κοινῇ διανειμάμενοι πέντε δραχμὰς ἕκαστος προσε-
δέξαντο. καὶ ταῦτ' οὐκ ἂν ἐξομόσαιτο Εὐβουλίδης οὐδ'
οἱ μετ' αὐτοῦ μὴ οὐκ εἰδέναι. καὶ νῦν τούτων οὐκ ἀπε-
ψηφίσαντο. τί οὖν οὐκ ἂν οἴεσθε τούτους ἰδίᾳ ποιῆσαι
οἳ κοινῇ ταῦτ' ἐτόλμων; πολλοὺς ὦ ἄνδρες δικασταὶ οἱ 60
μετ' Εὐβουλίδου συνεστῶτες καὶ ἀπολωλέκασι καὶ σεσώ-
κασιν ἕνεκ' ἀργυρίου, ἐπεὶ καὶ τὸ πρότερον (ἐρῶ δ' εἰς
αὐτὸ τὸ πρᾶγμα, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι) δημαρχῶν ὁ Εὐβου-
λίδου πατήρ, ὥσπερ εἶπον, Ἀντίφιλος, τεχνάζει βουλόμε-
νος παρὰ τινῶν λαβεῖν ἀργύριον, καὶ ἔφη τὸ κοινὸν γραμ-
ματεῖον ἀπολωλέναι, ὥστ' ἔπεισε διαψηφίσασθαι τοὺς
Ἁλιμουσίους περὶ αὑτῶν, καὶ κατηγορῶν δέκα τῶν δημο-
τῶν ἐξέβαλεν, οὓς ἅπαντας πλὴν ἑνὸς κατεδέξατο τὸ
δικαστήριον. καὶ ταῦτα πάντες ἴσασιν οἱ πρεσβύτεροι.
πολλοῦ γ' ἔδεόν τινας ἐγκαταλιπεῖν τῶν μὴ Ἀθηναίων, 61

ὅπου καὶ τοὺς ὄντας πολίτας συνιστάμενοι ἐξέβαλον, οὓς τὸ δικαστήριον κατεδέξατο. καὶ ὧν ἐχθρὸς τῷ ἐμῷ πατρὶ τότε οὐ μόνον οὐ κατηγόρησεν, ἀλλ' οὐδὲ τὴν ψῆφον ἤνεγκεν ὡς οὐκ ἦν Ἀθηναῖος. τῷ τοῦτο δῆλον; ὅτι ἁπάσαις ἔδοξε δημότης εἶναι. καὶ τί δεῖ περὶ τῶν πατέρων λέγειν; ἀλλ' ‖ Εὐβουλίδης αὐτὸς οὑτοσί, ἡνίκα ἐνεγράφην ἐγὼ καὶ ὀμόσαντες οἱ δημόται δικαίως πάντες περὶ ἐμοῦ τὴν ψῆφον ἔφερον, οὔτε κατηγόρησεν οὔτ' ἐναντίαν τὴν ψῆφον ἤνεγκεν· καὶ γὰρ ἐνταῦθα πάλιν ἐμὲ πάντες ἐψηφίσαντο δημότην. καὶ εἴ φασί με τοῦτο ψεύδεσθαι, ἐπὶ τοῦ ἐμοῦ ὕδατος ὅστις βούλεται τούτων τἀναντία μαρ-
62 τυρησάτω. εἰ τοίνυν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦτο δοκοῦσιν οὗτοι λέγειν μάλιστ' ἰσχυρόν, ὡς ἀπεψηφίσαντό μου νῦν οἱ δημόται, ἐγὼ τετράκις ἐπιδεικνύω πρότερον, ὅτε ὁσίως ἄνευ συστάσεως ἐψηφίσαντο, καὶ ἐμὲ καὶ τὸν πατέρα δημότας αὐτῶν εἶναι ψηφισαμένους, πρῶτον μέν γε τοῦ πατρὸς δοκιμασθέντος, εἶτ' ἐμοῦ, εἶτ' ἐν τῇ προτέρᾳ διαψηφίσει, ὅτε ἠφάνισαν οὗτοι τὸ γραμματεῖον· τὸ δὲ τελευταῖον προκρίναντες ἐμὲ ἐψηφίσαντο ἐν τοῖς εὐγενεστάτοις κληροῦσθαι τῆς ἱερωσύνης τῷ Ἡρακλεῖ. καὶ ταῦτα πάντα μεμαρτύρηται.

63 Εἰ δὲ δεῖ τὴν δημαρχίαν λέγειν, δι' ἣν ὠργίζοντό μοί τινες, ἐν ᾗ διάφορος ἐγενόμην εἰσπράττων ὀφείλοντας πολλοὺς αὐτῶν μισθώσεις τεμενῶν καὶ ἕτερ' ἃ τῶν κοινῶν διηρπάκεισαν, ἐγὼ μὲν ἂν βουλοίμην ὑμᾶς ἀκούειν, ἀλλ' ἴσως ἔξω τοῦ πράγματος ὑπολήψεσθε ταῦτ' εἶναι, ἐπεὶ καὶ τοῦτ' ἔχω δεικνύναι τεκμήριον ὡς συνέστησαν. ἔκ τε γὰρ τοῦ ὅρκου ἐξήλειψαν τὸ ψηφιεῖσθαι γνώμῃ τῇ
64 δικαιοτάτῃ καὶ οὔτε χάριτος ἕνεκ' οὔτ' ἔχθρας. καὶ γὰρ τοῦτο φανερὸν ἐγένετο καὶ ὅτι ἱεροσυλήσαντες τὰ ὅπλα (εἰρήσεται γάρ) ἃ ἐγὼ ἀνέθηκα τῇ Ἀθηνᾷ, καὶ τὸ ψήφισμα ἐκκολάψαντες ὃ ἐμοὶ ἐψηφίσαντο οἱ δημόται, ‖ συνώμνυον οὗτοι ἐπ' ἐμὲ οἱ ὑπ' ἐμοῦ τὰ κοινὰ εἰσπραχθέντες. καὶ εἰς τοσοῦτ' ἀναιδείας ἐληλύθασιν ὥστ' ἔλεγον περιιόντες ἐμὲ τῆς ἀπολογίας ἕνεκεν ταῦτα ποιῆσαι. καὶ τίς ὑμῶν ἂν καταγνοίη μου τοσαύτην μανίαν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὥστε τηλικούτων ἕνεκεν πρὸς τὸ πρᾶγμα τεκμηρίων

ἄξια θανάτου διαπράξασθαι, καὶ ἃ ἐμοὶ φιλοτιμίαν ἔφερε, ταῦτ' ἀφανίζειν; τὸ δὲ πάντων δεινότατον οὐ δή πού γε 65
φήσαιεν ἂν ἐμὲ κατασκευάσαι. οὐ γὰρ ἔφθη μοι συμβᾶσα ἡ ἀτυχία, καὶ εὐθύς, ὥσπερ φυγάδος ἤδη μου ὄντος καὶ ἀπολωλότος, τούτων τινὲς ἐπὶ τὸ οἰκίδιον ἐλθόντες ἐν ἀγρῷ νύκτωρ ἐπεχείρησαν διαφορῆσαι τἄνδοθεν· οὕτω σφόδρα ὑμῶν καὶ τῶν νόμων κατεφρόνησαν. καὶ ταῦτα τοὺς εἰδότας, ἐὰν βούλησθε, καλοῦμεν.

Πολλὰ δ' ἔχων καὶ ἄλλα ἐπιδεῖξαι ἃ τούτοις ἐστὶ δια- 66
πεπραγμένα καὶ ἃ εἰσιν ἐψευσμένοι, ἡδέως μὲν ἂν ὑμῖν λέγοιμι, ἐπειδὴ δὲ ἔξω τοῦ πράγματος νομίζετ' εἶναι, ἐάσω. ἀναμνήσθητε δ' ἐκείνων, καὶ θεάσασθε ὡς πολλὰ καὶ δίκαια ἔχων πρὸς ὑμᾶς ἥκω. ὥσπερ γὰρ τοὺς θεσμοθέτας ἀνακρίνετ', ἐγὼ τὸν αὐτὸν τρόπον ἐμαυτὸν ὑμῖν ἀνακρίνω. ὦ ἄνθρωπε, τίς ἦν σοι πατήρ; ἐμοὶ Θούκρι- 67
τος. οἰκεῖοί τινες εἶναι μαρτυροῦσιν αὐτῷ; πάνυ γε, πρῶτον μέν γε τέτταρες ἀνεψιοί, εἶτ' ἀνεψιαδοῦς, εἶθ' οἱ τὰς ἀνεψιὰς λαβόντες αὐτῶν, εἶτα φράτορες, εἶτ' Ἀπόλλωνος πατρῴου καὶ Διὸς ἑρκείου γεννῆται, εἶθ' οἷς ἠρία ταὐτά, εἶθ' οἱ δημόται πολλάκις αὐτὸν δεδοκιμάσθαι καὶ ἀρχὰς ἄρξαι καὶ αὐτοὶ διεψηφισμένοι φαίνονται. τὰ μὲν τοίνυν περὶ ‖ τοῦ πατρὸς πῶς ἂν ὑμῖν δικαιότερον ἢ καθαρώτερον ἐπιδείξαιμι; καλῶ δ' ὑμῖν τοὺς οἰκείους, εἰ βούλεσθε. τὰ δὲ περὶ τῆς μητρὸς ἀκούσατε. ἐμοὶ γάρ ἐστι μήτηρ 68
Νικαρέτη Δημοστράτου θυγάτηρ Μελιτέως. ταύτης τίνες οἰκεῖοι μαρτυροῦσιν; πρῶτον μὲν ἀδελφιδοῦ δύο υἱοί, εἶτ' ἀνεψιοὶ αὐτῆς, εἶθ' οἱ Πρωτομάχου υἱεῖς τοῦ λαβόντος τὴν ἐμὴν μητέρα πρότερον, εἶθ' ὁ τὴν ἀδελφὴν τὴν ἐμὴν τὴν ἐκ τοῦ Πρωτομάχου γήμας Εὔνικος Χολαργεύς, εἶθ' υἱὸς τῆς ἀδελφῆς. ἀλλὰ μὴν καὶ φράτορες τῶν οἰκείων 69
αὐτῆς καὶ δημόται ταῦτα μεμαρτυρήκασιν. τίνος οὖν ἂν προσδέοισθε; καὶ γὰρ ὅτι κατὰ τοὺς νόμους ὁ πατὴρ ἔγημε καὶ γαμηλίαν τοῖς φράτορσιν εἰσήνεγκε μεμαρτύρηται. πρὸς δὲ τούτοις καὶ ἐμαυτὸν ἐπέδειξα πάντων μετειληφότα ὅσων προσήκει τοὺς ἐλευθέρους. ὥστε πανταχῇ δικαίως καὶ προσηκόντως ἡμῖν ἂν προσθέμενοι τὴν ψῆφον εὐορκοίητε. ἔτι τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοὺς 70

ἐννέα ἄρχοντας ἀνακρίνετε εἰ γονέας εὖ ποιοῦσιν. ἐγὼ δὲ τοῦ μὲν πατρὸς ὀρφανὸς κατελείφθην, τὴν δὲ μητέρ᾽ ἱκετεύω ὑμᾶς καὶ ἀντιβολῶ διὰ τοῦτον τὸν ἀγῶνα ἀπόδοτέ μοι θάψαι εἰς τὰ πατρῷα μνήματα καὶ μή με κωλύσητε, μηδὲ ἄπολιν ποιήσητε, μηδὲ τῶν οἰκείων ἀποστερήσητε τοσούτων ὄντων τὸ πλῆθος, καὶ ὅλως ἀπολέσητε. πρότερον γὰρ ἢ προλείπειν τούτους, εἰ μὴ δυνατὸν ὑπ᾽ αὐτῶν εἴη σωθῆναι, ἀποκτείναιμ᾽ ἂν ἐμαυτόν, ὥστ᾽ ἐν τῇ πατρίδι γε ὑπὸ τούτων ταφῆναι.

‖ ΕΝΔΕΙΞΙΣ ΚΑΤΑ ΘΕΟΚΡΙΝΟΥ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Τοῦτον τὸν λόγον οὐκ οἶδ᾽ ὅπως ἐν τοῖς ἰδιωτικοῖς ἀναγράφουσιν οἱ πολλοὶ δημόσιον ὄντα φανερῶς· δῆλον δὲ ἔσται τοῦτο ἐξ αὐτῆς τῆς ὑποθέσεως. κατὰ τῶν ἑτέρωσέ ποι καὶ μὴ Ἀθήναζε σεσιτηγηκότων ἐμπόρων ἢ ναυκλήρων Ἀθηναίων φάσεις ἦσαν δεδομέναι. νόμος δὲ ἦν, ἐάν τίς τινα φήνας μὴ ἐπεξίῃ ἢ ἐπεξιὼν μὴ λάβῃ τὸ πέμπτον μέρος τῶν ψήφων, χιλίας ἐκτίνειν τῷ δημοσίῳ, τοῖς δὲ ὀφείλουσι μὴ ἐξεῖναι λέγειν· ... καὶ τρίτος, ἐὰν μή τις δόξῃ δικαίως εἰς ἐλευθερίαν ἀφελέσθαι τινά, τὸ ἥμισυ τοῦ τιμήματος ὀφείλειν τῷ δημοσίῳ. Ἐπιχάρης οὖν ἐνέδειξε Θεοκρίνην οὐκ ἐξὸν αὐτῷ λέγειν ἐκ τριῶν τούτων νόμων· καὶ γὰρ Μίκωνα ὡς ἑτέρωσέ ποι σεσιτηγηκότα φῆναι μὲν αὐτὸν λέγει, μὴ ἐπεξελθεῖν δέ, καὶ ἐπιμελητὴν ὑπὸ τῶν φυλετῶν ἀποδειχθέντα ἐν εὐθύναις ἁλῶναι κλοπῆς χρημάτων ἃ ἦν ἱερὰ τῶν ἐπωνύμων, καὶ τρίτον Κηφισοδώρου θεράπαιναν εἰς ἐλευθερίαν ἀδίκως ἀφελόμενον τὸν πατέρα τοῦ Θεοκρίνου προσοφλῆσαι δραχμὰς πεντακοσίας. ἐπὶ τούτοις μὲν ἡ ἔνδειξις, καὶ τὸ πρᾶγμα φανερῶς δημόσιον· τὸν δὲ λόγον οἱ πολλοὶ νομίζουσιν εἶναι Δεινάρχου, καίτοι γε οὐκ ἀπεοικότα τῶν τοῦ Δημοσθένους.*

‖ Τοῦ πατρὸς ἡμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ διὰ τουτονὶ Θεο-
κρίνην ἀτυχήσαντος πρὸς τὴν πόλιν καὶ ὀφλόντος δέκα
τάλαντα, καὶ τούτου διπλοῦ γεγενημένου ὥστε μηδ᾽ ἐλπίδα
ἡμῖν εἶναι σωτηρίας μηδεμίαν, ἡγησάμην δεῖν ἐπὶ τῷ τι-
μωρεῖσθαι μεθ᾽ ὑμῶν τοῦτον μήθ᾽ ἡλικίαν μήτ᾽ ἄλλο μη-
2 δὲν ὑπολογισάμενος δοῦναι τὴν ἔνδειξιν ταύτην· καὶ γὰρ
ὁ πατήρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, ᾧπερ πάντα πειθόμενος
πεποίηκα, πρὸς ἅπαντας ὠδύρετο τοὺς γνωρίμους, εἰ πα-
ραλιπὼν ἐγὼ τὸν καιρὸν ἐν ᾧ διὰ τὸ τὸν πατέρα ζῆν
ἔξεστί μοι τοῦτον ἀμύνασθαι, τὴν ἀπειρίαν καὶ τὴν ἡλι-

κίαν προφασιζόμενος αὐτὸν μὲν περιόψομαι πάντων ἀπεστερημένον, Θεοκρίνην δὲ παρὰ τοὺς νόμους γραφὰς γραφόμενον καὶ συκοφαντοῦντα πολλοὺς τῶν πολιτῶν, οὐκ ἐξὸν αὐτῷ. δέομαι οὖν ὑμῶν ἁπάντων ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι 3 καὶ ἱκετεύω μετ' εὐνοίας ἀκοῦσαί μου, πρῶτον μὲν ὅτι τῷ πατρὶ βοηθῶν καὶ πειθόμενος ἀγωνίζομαι, ἔπειθ' ὅτι καὶ νέος ὢν καὶ ἄπειρος, ὥστ' ἀγαπητὸν εἶναί μοι ἐὰν τῆς παρ' ὑμῶν ὑπαρξάσης εὐνοίας δυνηθῶ δηλῶσαι τὰ πεπραγμένα τούτῳ· πρὸς δὲ τούτοις, ὅτι ὦ ἄνδρες δικασταὶ 4 προδέδομαι (τὰ γὰρ ἀληθῆ πρὸς ὑμᾶς εἰρήσεται) ὑπ' ἀνθρώπων οἳ πιστευθέντες ὑφ' ἡμῶν διὰ τὴν πρὸς τοῦτον ἔχθραν καὶ πυθόμενοι τὰ πράγματα καὶ φήσαντες ἐμοὶ συναγωνιεῖσθαι ἐγκαταλελοίπασι νυνί με καὶ ‖ διαλέλυνται πρὸς τοῦτον ἐν τοῖς ἐμοῖς πράγμασιν, ὥστε μοι μηδὲ τὸν συνεροῦντα εἶναι, ἐὰν μή τις ἄρα μοι τῶν οἰκείων βοηθήσῃ.

Πολλαῖς μὲν οὖν ἐνδείξεσιν ἦν ἔνοχος οὑτοσί, καὶ ἅπαν- 5 τας τοὺς περὶ ταῦτα νόμους ἐφαίνετο παραβεβηκώς· καινότατον δὲ τῶν ἔργων τῶν τούτου τὴν περὶ τὸ πλοῖον φάσιν εὑρίσκομεν γεγονυῖαν, διόπερ ταῦτα γράψας εἰς τὴν ἔνδειξιν ἔδωκεν ὁ πατήρ μοι. πρῶτον μὲν οὖν τὸν νόμον ὑμῖν ἀναγνώσεται τὸν περὶ τῶν φαινόντων καὶ οὐκ ἐπεξιόντων, ἀλλὰ διαλυομένων παρὰ τοὺς νόμους· ἐντεῦθεν γὰρ οἶμαι προσήκειν μοι ποιήσασθαι τὴν ἀρχὴν τοῦ λόγου· εἶτα τὴν φάσιν αὐτὴν ἣν οὗτος ἐποιήσατο κατὰ τοῦ Μίκωνος. λέγε.

ΝΟΜΟΣ.

Ὁ νόμος οὗτος ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοῖς προαιρουμένοις 6 ἢ γράφεσθαι γραφὰς ἢ φαίνειν ἢ ἄλλο τι ποιεῖν τῶν ἐν τῷ νόμῳ τούτῳ γεγραμμένων προλέγει διαρρήδην ἐφ' οἷς ἕκαστόν ἐστι τούτων ποιητέον. ἔστι δὲ ταῦτα, ὥσπερ ἠκούσατ' ἐξ αὐτοῦ τοῦ νόμου, ἐὰν ἐπεξιών τις μὴ μεταλάβῃ τὸ πέμπτον μέρος τῶν ψήφων, χιλίας ἀποτίνειν, κἂν μὴ ἐπεξίῃ, ὦ Θεοκρίνη, χιλίας ἑτέρας, ἵνα μήτε συκοφαντῇ μηδεὶς μήτ' ἄδειαν ἔχων ἐργολαβῇ καὶ καθυφιῇ τὰ τῆς πόλεως. φημὶ δὴ κατὰ ταύτην τὴν ἔνδειξιν ἔνοχον εἶναι Θεοκρίνην τῷ φήναντα Μίκωνα Χολλείδην μὴ ἐπεξ-

ελθεῖν, ἀλλ' ἀργύριον λαβόντα ἀποδόσθαι τὸ πρᾶγμα.
7 καὶ τοῦτ' ἀποδείξω σαφῶς, ὡς ἐγὼ νομίζω. καίτοι Θεοκρίνης γε ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ οἱ μετὰ τούτου οὐδὲν ὅ τι οὐ πεποιήκασι προσιόντες τοῖς μάρτυσι, καὶ τὰ μὲν ἀπειλοῦντες αὐτοῖς, τὰ δὲ πείθοντες μὴ μαρτυρεῖν. ‖ ἀλλ' ὅμως ἐὰν ὑμεῖς βούλησθε τὰ δίκαια βοηθεῖν μοι καὶ κελεύητ' αὐτούς, μᾶλλον δ' ἀναγκάζοντος ἐμοῦ συναναγκάζητε ἤτοι μαρτυρεῖν ἢ ἐξόμνυσθαι, καὶ μὴ ἐᾶτε λόγους λέγειν, εὑρεθήσεται τἀληθές. λέγε οὖν πρῶτον μὲν τὴν φάσιν, εἶτα τὰς μαρτυρίας.

ΦΑΣΙΣ.

8 Ταύτην τὴν φάσιν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἔδωκε μὲν οὑτοσὶ προσκαλεσάμενος τὸν Μίκωνα, ἔλαβε δ' ὁ γραμματεὺς ὁ τῶν τοῦ ἐμπορίου ἐπιμελητῶν, Εὐθύφημος. ἐξέκειτο δὲ πολὺν χρόνον ἔμπροσθεν τοῦ συνεδρίου ἡ φάσις, ἕως λαβὼν ἀργύριον οὗτος εἴασε διαγραφῆναι καλούντων αὐτὸν εἰς τὴν ἀνάκρισιν τῶν ἀρχόντων. ὅτι δὲ ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, πρῶτον μὲν κάλει ὃς ἐγραμμάτευε τῇ ἀρχῇ, Εὐθύφημον.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

9 Λέγε δὴ καὶ τὴν τῶν ἰδόντων ἐκκειμένην τὴν φάσιν μαρτυρίαν. λέγε.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Κάλει δὲ καὶ τοὺς τοῦ ἐμπορίου ἐπιμελητάς, καὶ αὐτὸν τὸν Μίκων' οὗ ἔφηνε τὸ πλοῖον· καὶ τὰς μαρτυρίας ἀναγίγνωσκε.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

10 Ὡς μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἔφηνε Θεοκρίνης τὸ τοῦ Μίκωνος πλοῖον, καὶ ὡς ἐξέκειτο πολὺν χρόνον ἡ φάσις, καὶ ὡς εἰς τὴν ἀνάκρισιν καλούμενος οὐχ ὑπήκουσεν οὐδ' ἐπεξῆλθεν, ἀκηκόατε μαρτυρούντων τούτων οὓς εἰδέναι μάλιστα προσῆκεν· ὅτι δ' οὐ ταῖς χιλίαις μόνον ἔνοχός ἐστιν ἀλλὰ καὶ ἀπαγωγῇ καὶ τοῖς ἄλλοις ὅσα κελεύει πάσχειν ὁ νόμος οὑτοσὶ τὸν συκοφαντοῦντα ‖ τοὺς ἐμπόρους καὶ τοὺς ναυκλήρους, ῥᾳδίως ἐξ αὐτοῦ τοῦ νό-
11 μου γνώσεσθε. βουλόμενος γὰρ ὁ τὸν νόμον τιθεὶς μήτε τοὺς ἀδικοῦντας τῶν ἐμπόρων ἀθῴους εἶναι μήτε τοὺς

ἄλλους πράγματ᾽ ἔχειν, ἁπλῶς ἀπεῖπε τοῖς τοιούτοις τῶν
ἀνθρώπων μὴ φαίνειν, εἰ μὴ πιστεύει τις αὐτῷ δείξειν
ἐν ὑμῖν γεγενημένα περὶ ὧν ποιεῖται τὴν φάσιν· ἐὰν δέ
τις παρ᾽ αὐτὰ ποιῇ τῶν συκοφαντούντων, ἔνδειξιν αὐτῶν
εἶναι καὶ ἀπαγωγήν. μᾶλλον δὲ λέγε τὸν νόμον αὐτόν·
πολὺ γὰρ ἐμοῦ σαφέστερον διδάξει.

ΝΟΜΟΣ.

*Ἀκούετε τοῦ νόμου ἃ κελεύει πάσχειν ὦ ἄνδρες δικα- 12
σταὶ τὸν συκοφάντην. οὐκοῦν εἰ μέν τι πεποιηκότα τού-
των ὧν ἔγραψεν ἐν τῇ φάσει Θεοκρίνης πεποιηκέναι τὸν
Μίκωνα, καθυφεῖκε τὸ πρᾶγμα καὶ διαλέλυται πρὸς τὸν
ἄνθρωπον, ἀδικεῖ πάντας ὑμᾶς καὶ δικαίως ὀφείλει τὰς
χιλίας· εἰ δὲ πλεύσαντα αὐτὸν δικαίως οἷ προσῆκεν (ἔστω
γὰρ τοῦθ᾽ ὁπότερον οὗτος βούλεται) φαίνει καὶ προσκα-
λεῖται, συκοφαντεῖ τοὺς ναυκλήρους, καὶ τὸν νόμον οὐ
μόνον τὸν πρότερον ἀλλὰ καὶ τὸν ἀρτίως ἀναγνωσθέντα
παραβέβηκε, καὶ καταμεμαρτύρηκεν αὐτοῦ μηδὲν ὑγιὲς
μήτε λέγειν μήτε πράττειν. τίς γὰρ ἂν παρεὶς τὸ δικαίως 13
πράττοντα λαβεῖν τὸ μέρος τῶν χρημάτων κατὰ τὸν νό-
μον, διαλυσάμενος ἠβουλήθη μικρὰ κερδᾶναι καὶ τούτοις
ἔνοχον αὐτὸν καταστῆσαι τοῖς νόμοις, ἐξόν, ὅπερ ἀρτίως
εἶπον, τὰ ἡμίση τῶν φανθέντων λαβεῖν; οὐδ᾽ ἂν εἷς ὦ
ἄνδρες δικασταὶ μὴ οὐ συνειδὼς ἑαυτῷ συκοφαντοῦντι.*

*‖ Δύο μὲν τοίνυν οὗτοι νόμοι εἰσὶν οὓς παραβέβηκεν ὁ 14
τοὺς ἄλλους παρανόμων γραφόμενος· ἕτερον δὲ τὸν τρί-
τον, ὃς ὁμοίως κελεύει κατά τε τῶν ὀφειλόντων τῷ δημο-
σίῳ τὰς ἐνδείξεις τὸν βουλόμενον ποιεῖσθαι τῶν πολιτῶν,
καὶ ἐάν τις ὀφείλῃ τῇ Ἀθηνᾷ ἢ τῶν ἄλλων θεῶν ἢ τῶν ἐπω-
νύμων τῳ. ὃ φανήσεται οὗτος ὀφείλων καὶ οὐκ ἐκτετικὼς
ἑπτακοσίας δραχμάς, ἃς ὦφλεν ἐν ταῖς εὐθύναις τῷ ἐπω-
νύμῳ τῆς αὑτοῦ φυλῆς. καί μοι λέγε τοῦτ᾽ αὐτὸ τοῦ νόμου.*

ΝΟΜΟΣ.

*Ἐπίσχες. ἀκούεις, οὑτοσί; τί λέγει; "ἢ τῶν ἐπωνύμων 15
τῳ." λέγε δὴ τὴν τῶν φυλετῶν μαρτυρίαν.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

*Ταχύ γ᾽ ἂν οὗτος ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἀνθρώπων ὀλίγων
φροντίσειεν ἢ τῶν τὸν πλεῖστον τοῦ χρόνου πλεόντων,*

*ὥσπερ ὁ Μίκων, ὅστις τοὺς φυλέτας παρόντας οὔτ' ἔδει-
σεν οὔτ' ᾐσχύνθη, τοῦτο μὲν οὕτως αὐτῶν τὰ κοινὰ διοι-
κήσας ὥστ' ἐκείνους κλοπὴν αὐτοῦ καταγνῶναι, τοῦτο δ'
ὀφλὼν καὶ τοὺς νόμους ἀκριβῶς εἰδὼς ὅτι κωλύουσιν αὐ-
τὸν γράφεσθαι γραφὰς ἕως ἂν ἐκτίσῃ, βιαζόμενος, καὶ
νομίζων δεῖν τοὺς μὲν ἄλλους τοὺς ὀφείλοντας μηδενὸς
μετέχειν τῶν κοινῶν, αὐτὸν δὲ κρείττω τῶν νόμων εἶναι.
16 φήσει τοίνυν τὸν πάππον, οὐχ αὐτὸν εἶναι τὸν ἐν τῷ
γραμματείῳ γεγραμμένον, καὶ περὶ τούτου πολλοὺς ἐρεῖ
λόγους, ὡς ἐκεῖνος ἐστίν. ἐγὼ δὲ τὸ μὲν ἀκριβές, ὁπότε-
ρός ἐστιν, οὐκ ἔχω λέγειν· εἰ δ' οὖν ἐστὶν ὡς οὗτος ἐρεῖ,
πολὺ δικαιότερον εἶναι νομίζω καταψηφίσασθαι ὑμᾶς
17 αὐτοῦ, εἰ ταῦθ' οὕτως ἐστίν. εἰ γὰρ ὀφείλοντος αὐτῷ
τοῦ πάππου πάλαι, καὶ τοῦ νόμου κελεύοντος κληρονο-
μεῖν ‖ τοῦτον τῶν ἐκείνου, προσῆκον αὐτῷ μηδὲ πάλαι
γράφεσθαι γράφεται, καὶ διὰ τοῦτ' οἰήσεται δεῖν ἀπο-
φεύγειν ὅτι πονηρὸς ἐκ τριγονίας ἐστίν, οὐ δίκαια ἐρεῖ,
ὦ ἄνδρες δικασταί. ὡς οὖν καὶ παρ' αὐτοῦ Θεοκρίνου
ὁμολογεῖται τούτου εἶναι τὸ ὄφλημα καὶ κατετάξατο τοῖς
φυλέταις ὑπὲρ αὐτοῦ καὶ τοῦ ἀδελφοῦ, καὶ τοῖς βουλο-
μένοις εὐορκεῖν οὐ καλῶς ἔχει ταύτην ἀπογιγνώσκειν τὴν
ἔνδειξιν, λαβέ μοι τὸ ψήφισμ' ὃ εἶπεν ἐν τοῖς φυλέταις
18 Σκιρωνίδης, προσελθὼν δ' οὑτοσὶ Θεοκρίνης ὡμολόγησεν
ὀφείλειν καὶ ἐκτίσειν ἐναντίον τῶν φυλετῶν, ἐπειδὴ προσ-
ιόντας ἡμᾶς ᾔσθετο καὶ βουλομένους ἀντίγραφα τῶν ἐν
τῷ γραμματείῳ γεγραμμένων λαβεῖν.*

ΨΗΦΙΣΜΑ.

*Πολὺ γ' ἄν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, Λεωντίδας τοὺς ἀναγ-
κάσαντας ἀποδοῦναι Θεοκρίνην τὰς ἑπτὰ μνᾶς ἐπῃνέσατ'
ἂν μᾶλλον ἢ τοῦτον.*

19 *Τέταρτος τοίνυν νόμος ἐστὶν (ὁμολογῶ γὰρ τῶν τούτῳ
πεπραγμένων τὰ πλεῖστα ἐξητακέναι) καθ' ὃν ὀφείλει
πεντακοσίας δραχμὰς Θεοκρίνης οὑτοσί, οὐκ ἐκτετικότος
αὐτῷ τοῦ πατρὸς ἃς προσῶφλεν ἀφελόμενος τὴν Κηφι-
σοδώρου θεράπαιναν εἰς ἐλευθερίαν, ἀλλὰ διοικησαμένου
πρὸς Κτησικλέα τὸν λογογράφον, ὃς ἦν ἐπὶ τοῖς τῶν ἀν-
τιδίκων πράγμασιν, ὥστε μήτ' ἐκτῖσαι μήτ' εἰς ἀκρόπολιν*

ἀνενεχθῆναι. ἃς οὐδὲν ἧττον, οἶμαι, Θεοκρίνης ὀφείλει νυνὶ 20
κατὰ τὸν νόμον. οὐ γὰρ ἐὰν Κτησικλῆς ὁ μέτοικος συγχωρήσῃ τούτῳ, πονηρὸς πονηρῷ, μὴ παραδοθῆναι τοῖς πράκτορσι τὸν προσοφλόντα ‖ κατὰ τὸν νόμον, διὰ τοῦτο δεῖ τὴν πόλιν ἀπεστερῆσθαι τῶν ἐκ τῶν νόμων ἐπικειμένων ζημιῶν, ἀλλὰ προσήκει τοὺς ἀντιδίκους ὑπὲρ μὲν τῶν ἰδίων, ὅπως ἂν αὐτοὺς πείθωσι, διοικεῖσθαι πρὸς ἀλλήλους, ὑπὲρ δὲ τῶν πρὸς τὸ δημόσιον, ὅπως ἂν οἱ νόμοι κελεύωσιν. καί μοι λέγε τόν τε νόμον, ὃς κελεύει τὸ 21
ἥμισυ τοῦ τιμήματος ὀφείλειν τῷ δημοσίῳ ὃς ἂν δόξῃ μὴ δικαίως εἰς τὴν ἐλευθερίαν ἀφελέσθαι, καὶ τὴν τοῦ Κηφισοδώρου μαρτυρίαν.

ΝΟΜΟΣ. ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Λέγε δὴ κἀκεῖνον τὸν νόμον τὸν ἀπ' ἐκείνης κελεύοντα τῆς ἡμέρας ὀφείλειν ἀφ' ἧς ἂν ὄφλῃ, ἐάν τ' ἐγγεγραμμένος ᾖ ἐάν τε μή.

ΝΟΜΟΣ.

Πῶς οὖν ἄλλως ὦ ἄνδρες δικασταὶ προσήκει τὸν δι- 22
καίως κατηγοροῦντ' ἀποφαίνειν ὀρθῶς ἐνδεδειγμένον Θεοκρίνην τουτονὶ καὶ μὴ μόνον ἔνοχον ὄντα τῇ ἐνδείξει κατὰ τὰς χιλίας ἐφ' αἷς ἐνδέδεικται, ἀλλὰ καὶ πολλοῖς ἄλλοις ὀφλήμασιν; ἐγὼ μὲν οὐδαμῶς νομίζω. οὐ γὰρ δή γε προσδοκᾶν δεῖ Θεοκρίνην αὐτὸν ὁμολογήσειν ὀφείλειν ὑμῖν τῷ δημοσίῳ καὶ δικαίως ἐνδεδεῖχθαι φήσειν, ἀλλὰ τοὐναντίον πάντα λόγον μᾶλλον ἐρεῖν καὶ πάσας αἰτίας οἴσειν, ὡς καταστασιάζεται, ὡς διὰ τὰς τῶν παρανόμων γραφὰς εἰς ταῦθ' ἥκει. λοιπὸν γάρ ἐστι τοῦτο τοῖς ἐν αὐτοῖς τοῖς 23
πράγμασιν ἐξελεγχομένοις, αἰτίας καὶ προφάσεις εὑρίσκειν αἵτινες τοῦ παρόντος ὑμᾶς ποιήσουσι πράγματος ἐπιλαθομένους τοῖς ἔξω τῆς κατηγορίας λόγοις προσέχειν. ἐγὼ δ' ὦ ἄνδρες δικασταί, εἰ μὲν ἑώρων ἐν τοῖς ἀνεγνωσμένοις νόμοις γεγραμμένον "ταῦτα δ' εἶναι κύρια ‖ περὶ τῶν συκοφαντούντων, ἂν μὴ Θεοκρίνης ἐνδειχθεὶς αἰτιᾶσθαι βούληται Θουκυδίδην ἢ Δημοσθένην ἢ καὶ τῶν πολιτευομένων ἄλλον τιν'," ἡσυχίαν ἂν ἦγον· νῦν δὲ τούτων οὐδεμίαν ὁρῶ τῶν σκήψεων ὑπόλογον οὖσαν ἐν τοῖς νόμοις, οὐδὲ καινήν, ὥστε προσέχειν νῦν πρῶτον ἀκούσαντας, ἀλλὰ μυριάκις

24 παρὰ τῶν κρινομένων εἰρημένην. ἀκούω δὲ καὶ παρὰ τῶν
πρεσβυτέρων ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὡς ἄρα προσῆκόν ἐστιν
ὅλως μὲν μηδενὶ μηδεμίαν συγγνώμην ὑπάρχειν παραβαί-
νοντι τοὺς νόμους, εἰ δ' ἄρα δεῖ, μὴ τοῖς συνεχῶς οὖσι
πονηροῖς μηδὲ τοῖς ἐπ' ἀργυρίῳ τοὺς νόμους προϊεμένοις
(οὐ γὰρ εἰκός), ἀλλ' οἵτινες ἂν διὰ τὴν αὑτῶν ἀπραγμο-
σύνην ἄκοντές τι τῶν γεγραμμένων παραβῶσιν. ὧν οὐδεὶς
ἂν δή που Θεοκρίνην τουτονὶ φήσειεν εἶναι, ἀλλὰ τοὐναν-
25 τίον οὐδενὸς τῶν ἐν τοῖς νόμοις ἄπειρον. διὸ καὶ δεῖ φυ-
λάττειν αὐτὸν μὴ πρὸς τοὺς ἐμοὺς λόγους μηδὲ τοὺς ὑπὸ
τούτου ῥηθησομένους ἀποβλέποντας. οὐ γὰρ δίκαιον τοὺς
ὑπὲρ τῶν νόμων καθημένους μακροῖς λόγοις καὶ κατηγο-
ρίαις προσέχειν, ἀλλ' οἷς ἂν ἅπαντες ῥᾳδίως ἐπακολου-
θήσαιτε, καὶ δι' ὧν δόξετε πᾶσι τοῖς ἐν τῇ πόλει τῶν
νόμων ἀξίως ταύτην τὴν ἔνδειξιν δικάσαι, σαφῶς ἐρω-
τῶντας τί λέγεις, Θεοκρίνη καὶ πάντες οἱ τῶν αὐτῶν τούτῳ
μετέχοντες; ἀξιοῦθ' ἡμᾶς, κατὰ τοὺς νόμους ὀμωμοκότας
δικάσειν, παρὰ τούτους διὰ τοὺς ὑμετέρους λόγους ψη-
26 φίζεσθαι, μεμαρτυρηκότος μὲν ἡμῖν τοῦ Μίκωνος, καθ'
οὗ δοὺς Θεοκρίνης οὑτοσὶ τὴν φάσιν οὐκ ἐπεξῆλθε, καὶ
πεποιηκότος αὐτὸν τούτοις ὑπόδικον; ὁμολογοῦντος δὲ
τοῦ γραμματέως λαβεῖν τὴν φάσιν παρὰ τούτου, καὶ πε-
ποιηκότος καὶ τούτου ‖ διὰ τῆς μαρτυρίας τῆς ὀλίγον τι
πρότερον ἀναγνωσθείσης αὐτὸν ὑπόδικον; ἔτι δὲ τῶν τοῦ
ἐμπορίου ἐπιμελητῶν μόλις μὲν ἀλλ' οὖν ταὐτὰ τούτοις
μεμαρτυρηκότων; πρὸς δὲ τούτοις τῶν ἰδόντων ἐκκειμένην
τὴν φάσιν καὶ προσελθόντων τοῖς ἄρχουσι μαρτυρούντων,
ὥσπερ ὀλίγον τι πρότερον ἠκούσατε; ἀλλ' οὐ δίκαιον, ὦ
ἄνδρες δικασταί.
27 Οὐ γὰρ δὴ διὰ τὸν τρόπον γε τὸν τοῦ φεύγοντος καὶ
τὸν βίον ψευδεῖς ὑπολήψεσθε τὰς μαρτυρίας τὰς ἀνε-
γνωσμένας εἶναι. πολὺ γὰρ ἐκ τοῦ τρόπου σαφέστερον
ἐπιδείκνυται Θεοκρίνης τοιοῦτος ὢν ἢ διὰ τῶν εἰρημένων.
τί γὰρ οὐ πεποίηκεν οὗτος ὧν ἂν πονηρὸς καὶ συκοφάν-
της ἄνθρωπος ποιήσειεν; οὐ διὰ μὲν τὴν τούτου πονη-
ρίαν ἀδελφὸς αὐτοῦ θεσμοθετῶν καὶ τούτῳ χρώμενος
συμβούλῳ τοιοῦτος ἔδοξε παρ' ὑμῖν ἄνθρωπος εἶναι ὥστ'

οὐ μόνον αὐτὸς ἀπεχειροτονήθη τῶν ἐπιχειροτονιῶν οὐσῶν,
ἀλλὰ καὶ τὴν ἀρχὴν ἅπασαν ἐποίησεν; καὶ εἰ μὴ δεομένων
αὐτῶν καὶ ἱκετευόντων, καὶ λεγόντων ὡς οὐκέτι πρόσεισι
Θεοκρίνης πρὸς τὴν ἀρχήν, ἐπείσθηθ᾽ ὑμεῖς καὶ πάλιν
ἀπέδοτε τοὺς στεφάνους αὐτοῖς, πάντων ἂν αἴσχιστα οἱ
συνάρχοντες ἐπεπόνθεσαν; καὶ τούτων οὐδέν με δεῖ μάρ- 28
τυρας ὑμῖν παρασχέσθαι· πάντες γὰρ ἴστε τοὺς ἐπὶ Λυ-
κίσκου ἄρχοντος θεσμοθέτας ἀποχειροτονηθέντας ἐν τῷ
δήμῳ διὰ τοῦτον. ὧν ἀναμιμνησκομένους ὑμᾶς χρὴ τὸν
αὐτὸν ὑπολαμβάνειν εἶναι τοῦτον καὶ πρότερον καὶ νῦν.
οὐ πολλῷ τοίνυν χρόνῳ ὕστερον τῆς ἀποχειροτονίας τε-
λευτήσαντος αὐτῷ τοῦ ἀδελφοῦ βιαίῳ θανάτῳ, τοιοῦτος
‖ ἐγένετο περὶ αὐτὸν οὗτος ὥστε ζητήσας τοὺς δράσαντας
καὶ πυθόμενος οἵτινες ἦσαν, ἀργύριον λαβὼν ἀπηλλάγη.
καὶ τὴν μὲν ἀρχὴν ἣν ἐκεῖνος ἄρχων ἐτελεύτησεν, ἱερο- 29
ποιὸς ὤν, παρὰ τοὺς νόμους ἦρχεν οὗτος, οὔτε λαχὼν
οὔτ᾽ ἐπιλαχών· ὑπὲρ ὧν δ᾽ ἔπαθεν ἐκεῖνος μέχρι τούτου
σχετλιάζων περιῄει καὶ φάσκων εἰς Ἄρειον πάγον Δημο-
χάρην προσκαλεῖσθαι, ἕως διελύσατο πρὸς τοὺς τὴν αἰ-
τίαν ἔχοντας. χρηστός γ᾽ ἐστὶ καὶ πιστὸς καὶ κρείττων
χρημάτων. οὐδ᾽ ἂν αὐτὸς φήσειεν. οὐ γὰρ τοσούτων δεῖ-
σθαί φασι δεῖν τὸν δικαίως καὶ μετρίως τῶν κοινῶν ἐπι-
μελησόμενον, ἀλλὰ πάντων τούτων εἶναι κρείττω δι᾽ ὧν
ἀναλίσκουσιν εἰς ἑαυτοὺς ἃ λαμβάνουσιν. καὶ τὰ μὲν πρὸς 30
τὸν ἀδελφὸν αὐτῷ πεπραγμένα τοιαῦτ᾽ ἐστίν· ἃ δὲ πρὸς
τὴν πόλιν προσελθὼν διῴκηται (δευτέρους γὰρ ὑμᾶς φή-
σει φιλεῖν μετὰ τοὺς οἰκείους) ἄξιον ἀκοῦσαι. ἄρξομαι δ᾽
ἀπὸ τῶν πρὸς ἡμᾶς αὐτῷ πεπραγμένων. τοῦ γὰρ πατρὸς
κατηγορῶν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτε τὴν τῶν παρανόμων
αὐτὸν ἐδίωκε γραφήν, ἔλεγεν ὡς ἐπιβεβουλευμένος ὁ παῖς
εἴη περὶ οὗ τὸ ψήφισμα γεγραμμένον ἦν, ἐν ᾧ τὴν σίτη-
σιν ἔγραψε Χαριδήμῳ ὁ πατὴρ τῷ Ἰσχομάχου υἱεῖ, λέγων 31
ὡς ἐὰν ἐπανέλθῃ εἰς τὸν πατρῷον οἶκον ὁ παῖς, ἀπολω-
λεκὼς ἔσται τὴν οὐσίαν ἅπασαν ἣν Αἰσχύλος ὁ ποιησά-
μενος αὐτὸν υἱὸν ἔδωκεν αὐτῷ, ψευδόμενος· οὐδενὶ γὰρ
πώποτε ὦ ἄνδρες δικασταὶ τοῦτο τῶν εἰσποιηθέντων
συνέβη. καὶ τούτων πάντων αἴτιον ἔφη Πολύευκτον γε-

γενῆσθαι τὸν ἔχοντα τὴν μητέρα τοῦ παιδός, βουλόμενοι ἔχειν αὐτὸν ‖ τὴν τοῦ παιδὸς οὐσίαν. ὀργισθέντων δὲ τῶν δικαστῶν ἐπὶ τοῖς λεγομένοις, καὶ νομισάντων αὐτὸ μὲν τὸ ψήφισμα καὶ τὴν δωρεὰν κατὰ τοὺς νόμους εἶναι, τῷ δ' ὄντι τὸν παῖδα μέλλειν ἀποστερεῖσθαι τῶν χρημάτων, τῷ μὲν πατρὶ δέκα ταλάντων ἐτίμησαν ὡς μετὰ Πολυεύκτου ταῦτα πράττοντι, τούτῳ δ' ἐπίστευσαν ὡς δὴ βοη-
32 *θήσαντι τῷ παιδί. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ τοῦ δικαστηρίου γενόμενα τοιαῦτα καὶ παραπλήσια τούτοις ἦν· ὡς δ' ὁ χρηστὸς οὗτος ὠργισμένους ᾔσθετο τοὺς ἀνθρώπους καὶ πεπιστευμένον αὐτὸν ὡς οὐ παντάπασιν ἀνόσιον ὄντα, προσκαλεσάμενος τὸν Πολύευκτον ἀποφέρει γραφὴν κατ' αὐτοῦ κακώσεως πρὸς τὸν ἄρχοντα καὶ δίδωσι πρὸς τὴν λῆξιν Μνησαρχίδῃ τῷ παρέδρῳ· λαβὼν δὲ τὰς τριακοσίας δραχμὰς παρὰ τοῦ Πολυεύκτου, καὶ τὰ δεινὰ ταῦτ' ἀποδόμενος μικροῦ λήμματος ἐφ' οἷς τῷ πατρὶ ἐτιμήσατο δέκα ταλάντων, ἀπηλλάγη καὶ τὴν γραφὴν ἀνείλετο προδοὺς τὸν ὀρφανόν. καί μοι κάλει τούτων τοὺς μάρτυρας.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

33 *Εἰ τοίνυν εὔπορος ἦν ὁ πατὴρ ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ δυνατὸς πορίσαι χιλίας δραχμάς, ὅλως ἂν ἀπηλλάγη τῆς γραφῆς τῆς τῶν παρανόμων· τοσοῦτον γὰρ αὐτὸν ᾔτει οὑτοσί. καί μοι κάλει Φιλιππίδην τὸν Παιανιέα, πρὸς ὃν ἔλεγε ταῦτα Θεοκρίνης οὑτοσί, καὶ τοὺς ἄλλους οἳ συνίσασι τούτῳ ταῦτα λέγοντι.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ.

34 *Ὅτι μὲν τοίνυν ὦ ἄνδρες δικασταὶ Θεοκρίνης, εἴ τις αὐτῷ τὰς χιλίας δραχμὰς ἐδίδου, τὴν γραφὴν ἂν ἀνείλετο τὴν κατὰ τοῦ πατρός, ‖ ἡγοῦμαι πάντας ὑμᾶς πιστεύειν, καὶ εἰ μηδεὶς ἐμαρτύρησεν. ὅτι δὲ πολλὰς ἑτέρας προσκαλεσάμενος καὶ γραψάμενος καθυφεῖκε καὶ μικρὸν ἀργύριον λαμβάνων ἀπαλλάττεται, τοὺς δόντας ὑμῖν αὐτοὺς καλῶ, ἵνα μὴ πιστεύητε αὐτῷ λέγοντι ὡς αὐτὸς φυλάττει τοὺς παράνομα γράφοντας, καὶ ὡς ὅταν αἱ τῶν παρανόμων γραφαὶ ἀναιρεθῶσιν, ὁ δῆμος καταλύεται· ταῦτα γὰρ*
35 *οἱ πάντα πωλοῦντες λέγειν εἰθισμένοι εἰσίν. κάλει μοι Ἀριστόμαχον Κριτοδήμου Ἀλωπεκῆθεν· οὗτος γὰρ ἔδωκε,*

μᾶλλον δ' ἐν τῇ τούτου οἰκίᾳ ἐδόθη τρί' ἡμιμναῖα τούτῳ τῷ ἀδωροδοκήτῳ ὑπὲρ τοῦ ψηφίσματος ὃ Ἀντιμέδων ἔγραψε τοῖς Τενεδίοις.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ.

Λέγε δὴ καὶ τὰς τῶν ἄλλων ἐφεξῆς τὰς τοιαύτας μαρτυρίας, καὶ τὴν Ὑπερείδου καὶ Δημοσθένους. τοῦτο γάρ ἐστιν ὑπερβολή, τὸ παρ' ὧν οὐδ' ἂν εἷς ἀξιώσαι λαβεῖν, τοῦτον παρὰ τούτων ἥδιστα λαμβάνειν πωλοῦντα τὰς γραφάς.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Οὗτος τοίνυν αὐτίκα φήσει διὰ τοῦτο τὴν ἔνδειξιν καθ' 36
αὑτοῦ γεγονέναι, ἵνα Δημοσθένει μὴ ἐπεξέλθῃ τὴν γραφὴν ἣν ἐγράψατ' αὐτόν, μηδὲ Θουκυδίδῃ· δεινὸς γάρ ἐστι ψεύσασθαι καὶ μηδὲν ὑγιὲς εἰπεῖν. ἡμεῖς δ' ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τοῦτ' ἐπεσκεψάμεθα, καὶ δείξομεν ὑμῖν οὐδὲν τὴν πόλιν βλαπτομένην οὔτε μὰ τὸν Δία ἐὰν κύριον γένηται τὸ ψήφισμα τὸ Θουκυδίδου οὔτ' ἂν ἄκυρον. καίτοι γε τὰς τοιαύτας ἀπολογίας οὐ δίκαιόν ἐστι προσφέρειν τοῖς κατὰ τοὺς νόμους ὀμωμοκόσι δικάσειν· ἀλλ' ὅμως ἐξ αὐτῆς τῆς γραφῆς αὐτίκα γνώσεσθε διότι ‖ πρόφασίς ἐστι τῆς ἐνδείξεως ἡ γραφή. λέγε τὰς γραφὰς ταύτας.

ΨΗΦΙΣΜΑΤΑ. ΓΡΑΦΑΙ.

Τούτων τῶν ψηφισμάτων ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἢ μενόν- 37
των κατὰ χώραν ἢ ἁλόντων (οὐδὲν γὰρ ἔμοιγε διαφέρει) τί ἡ πόλις κερδαίνει ἢ βλάπτεται; ἐγὼ μὲν γὰρ οὐδὲν οἶμαι. τοὺς γὰρ Αἰνίους φασὶν οὐδὲ προσέχειν τῇ πόλει, τοῦτο δὲ γεγονέναι διὰ Θεοκρίνην τουτονί. συκοφαντούμενοι γὰρ ἐν ἐκείνοις τοῖς χρόνοις ὑπὸ τούτου ἐν οἷς οἱ μὲν ἐφιλίππιζον οἱ δ' ἠττίκιζον αὐτῶν, καὶ πυνθανόμενοι γεγράφθαι τὸ ψήφισμα παρανόμων ὃ Χαρῖνος πρότερον ἐγράψατο, τοῦτο τὸ περὶ τῆς συντάξεως, ὃ Θουκυδίδης εἶπε, καὶ πέρας τῶν πραγμάτων οὐδὲν γιγνόμενον, ἀλλὰ 38
τὸν μὲν δῆμον συγχωροῦντα τὴν σύνταξιν διδόναι τοὺς Αἰνίους ὅσην Χάρητι τῷ στρατηγῷ συνεχώρησαν, τοῦτον δὲ τὸν μιαρὸν παραδεξάμενον Χαρίνῳ τῷ προδότῃ ταῦτα πράττειν, ὅπερ ἦν ἀναγκαῖον αὐτοῖς, τοῦτ' ἔπραξαν· εἵλοντο γὰρ τῶν παρόντων κακῶν τὰ ἐλάχιστα. καίτοι τί

χρὴ νομίζειν αὐτοὺς πάσχειν ὑπὸ τῶν ἐνθάδε γραφομένων, οἷς ἦν αἱρετώτερον φρουρὰν ὑποδέχεσθαι καὶ βαρβάρων ἀκούειν, ὑμῶν ἀποστάντας; ἀλλ' οἶμαι, τὴν τούτου πονηρίαν ὑμεῖς μόνοι δύνασθε φέρειν, ἄλλος δ' οὐδεὶς τῶν Ἑλλήνων.

39 Ὅτι μὲν οὖν οὔτε διὰ τὰς γραφὰς τὰς ἀνεγνωσμένας οὔτε δι' ἄλλην αἰτίαν οὐδεμίαν ἄξιόν ἐστι παραβάντας τοὺς νόμους τοὺς περὶ τῶν ἐνδείξεων ἀφεῖναι Θεοκρίνην, σχεδὸν καὶ διὰ τῶν εἰρημένων φανερόν ἐστιν. ἐγὼ δὲ τὰς μὲν τούτων προφάσεις ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τὰς κατηγορίας καὶ τὰς προσποιήτους ταυτασὶ ‖ ἔχθρας οὐ λαν-

40 θάνειν ὑμᾶς νομίζω. οὐ γὰρ ὀλιγάκις ἑωράκατ' αὐτοὺς ἐπὶ μὲν τῶν δικαστηρίων καὶ τοῦ βήματος ἐχθροὺς εἶναι φάσκοντας ἀλλήλοις, ἰδίᾳ δὲ ταὐτὰ πράττοντας καὶ μετέχοντας τῶν λημμάτων, καὶ τοτὲ μὲν λοιδορουμένους καὶ πλύνοντας αὑτοὺς τἀπόρρητα, μικρὸν δὲ διαλείποντας τοῖς αὐτοῖς τούτοις ἐνδεκάζοντας καὶ τῶν αὐτῶν ἱερῶν κοινωνοῦντας. καὶ τούτων οὐδὲν ἴσως θαυμάσαι ἄξιον ἐστί· φύσει τε γάρ εἰσι πονηροὶ καὶ τὰς τοιαύτας προφάσεις ὁρῶσιν ὑμᾶς ἀποδεχομένους, ὥστε τί κωλύει ταύ-

41 ταις αὐτοὺς χρωμένους ἐξαπατᾶν ὑμᾶς πειρᾶσθαι; ὅλως δ' ἔγωγε οἶμαι δεῖν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες δικασταὶ ὑπὲρ αὐτοῦ τοῦ πράγματος σκεψαμένους, εἰ μὲν δίκαια λέγω καὶ κατὰ τοὺς νόμους, βοηθεῖν μοι, μηδὲν ὑπολογισαμένους εἰ μὴ Δημοσθένης ἐστὶν ὁ κατηγορῶν ἀλλὰ μειράκιον, μηδὲ νομίζειν κυριωτέρους δεῖν εἶναι τοὺς νόμους, ἂν εὖ τις τοῖς ὀνόμασι συμπλέξας αὐτοὺς τούτους ὑμῖν παράσχηται, τῶν ὅπως ἔτυχε λεγόντων, ἀλλὰ τοὺς αὐτούς, καὶ τοσούτῳ μᾶλλον τοῖς ἀπείροις καὶ τοῖς νέοις βοηθεῖν ὅσῳπερ ἂν

42 ἧττον ἐξαπατήσειαν ὑμᾶς. ἐπεὶ διότι τοὐναντίον ἐστὶ καὶ οὐχ οὗτος ἀλλ' ἐγὼ κατεστασίασμαι καὶ φησάντων τινῶν μοι συναγωνιεῖσθαι προδέδομαι διὰ τὰς τούτων ἑταιρίας, ἐκείνως δῆλον ὑμῖν ἔσται. καλείτω ὁ κῆρυξ οὗτος τὸν Δημοσθένην· οὐκ ἀναβήσεται. τούτου δ' αἴτιόν ἐστιν οὐ τὸ ἐμὲ ὑπό τινων πεπεισμένον ἐνδεῖξαι τουτονί, ἀλλὰ τὸ τοῦτον καὶ τὸν ἄρτι καλούμενον διαλελύσθαι. καὶ τοῦθ' ὅτι ἐστὶν ἀληθές, ἀναγκάσω μὲν μαρτυρεῖν καὶ Κλεινό-

μαχον τὸν συναγαγόντ' αὐτοὺς καὶ Εὐβουλίδην τὸν ἐν ‖Κυνοσάργει παραγενόμενον· οὐ μὴν ἔλαττόν γε τούτου σημεῖον ὑμῖν ἀλλὰ μεῖζον παρασχήσομαι διότι τοῦτ' ἐστὶν ἀληθές, ὃ πάντες ἀκούσαντες ὁμολογήσετε. Θεοκρίνης γὰρ 43
οὑτοσὶ τοῦτον διώκων παρανόμων τὸν μιαρόν, ὡς αὐτίκα φήσει, καὶ τῶν νῦν αὐτῷ κακῶν αἴτιον, φανερῶς ἀφῆκε τῆς γραφῆς ἐφ' ᾗ δέκα τάλαντα ἐπεγράψατο τίμημα. πῶς; οὐδὲν καινὸν διαπραξάμενος, ἀλλ' ὅπερ ἕτεροί τινες τῶν ὁμοίων τούτῳ. τὸν μὲν Δημοσθένην τις ὑπωμόσατο καλουμένης τῆς γραφῆς ὡς νοσοῦντα, τὸν περιιόντα καὶ λοιδορούμενον Αἰσχίνῃ· τοῦτον δ' οὗτος τὸν ἐχθρὸν εἴασε καὶ οὔτε τότε ἀνθυπωμόσατο οὔθ' ὕστερον ἐπήγγελκεν. ἆρ' οὐ περιφανῶς οὗτοι φενακίζουσιν ὑμᾶς τοὺς προσέχοντας τούτοις ὡς ἐχθροῖς; λέγε τὰς μαρτυρίας.

ΜΑΡΤΥΡΙΑΙ.

Οὐκοῦν δίκαιόν ἐστιν ὦ ἄνδρες δικασταὶ μηδ' ὑμᾶς τῶν 44
φησόντων Θεοκρίνῃ διὰ τὴν πρὸς Δημοσθένην ἔχθραν συνερεῖν ἐθέλειν ἀκούειν, ἀλλὰ κελεύειν αὐτούς, εἴπερ ὡς ἀληθῶς ἐχθροί εἰσι τοῦ Δημοσθένους, ἐκεῖνον αὐτοὺς γράφεσθαι καὶ μὴ ἐπιτρέπειν αὐτῷ παράνομα γράφειν. εἰσὶ δέ γε δεινοὶ καὶ οὗτοι, καὶ πιστεύονται μᾶλλον παρ' ὑμῖν. ἀλλ' οὐ ποιήσουσι τοῦτο. διὰ τί; ὅτι φασὶ πολεμεῖν ἀλλήλοις οὐ πολεμοῦντες.

Περὶ μὲν οὖν τῆς τούτων ἔχθρας ὑμεῖς ἂν ἀκριβέστερον 45
ἐμοὶ διεξέλθοιτε ἢ ἐγὼ ὑμῖν· ἡδέως δ' ἂν ἐροίμην Θεοκρίνην ἐναντίον ὑμῶν, εἴ μοι ἤμελλεν ἀποκρίνεσθαι δικαίως, τί ποτ' ἂν ἐποίησεν, ἐπειδή φησιν ἐπὶ τῷ κωλύειν τετάχθαι τοὺς παράνομα γράφοντας, εἴ τις ἐν τῷ ‖ δήμῳ διαλεχθεὶς ἅπασι τοῖς πολίταις καὶ πείσας ἔγραψεν ἐξεῖναι τοῖς ἀτίμοις καὶ τοῖς ὀφείλουσι τῷ δημοσίῳ γράφεσθαι φαίνειν ἐνδεικνύναι, ἁπλῶς ποιεῖν ὅσαπερ νῦν ὁ νόμος κωλύει πράττειν, πότερον ἐγράψατ' ἂν παρανόμων τὸν 46
ταῦτ' εἰπόντα ἢ οὔ; εἰ μὲν γὰρ φήσει μὴ γράφεσθαι, πῶς χρὴ πιστεύειν αὐτῷ λέγοντι ὡς φυλάττει τοὺς παράνομα γράφοντας; εἰ δὲ γράψαιτ' ἄν, πῶς οὐ δεινόν ἐστιν ἑτέρου μὲν γράψαντος κωλύειν τέλος ἔχειν τὸ ψήφισμα, ἵνα μὴ πάντες τοῦτο ποιῶσι, καὶ γραφὴν ἀπενεγκόντα καὶ παρα-

47 *γραψάμενον σαφῶς τοὺς νόμους κωλύειν τὸ πρᾶγμα, νυνὶ
δ' αὐτὸν τοῦτον, μήτε πείσαντα τὸν δῆμον μήτε κοινὸν
καταστήσαντα τὸ πρᾶγμα, γράφεσθαι τῶν νόμων αὐτῷ
ἀπαγορευόντων; καὶ δεινὰ φήσει αὐτίκα δὴ μάλα πάσχειν,
εἰ μὴ ταῦτ' ἐξέσται αὐτῷ ποιεῖν, καὶ διέξεισι τὰς ἐκ τῶν
νόμων ζημίας, αἷς ἔνοχος ἂν ἁλῷ γενήσεται· τῶν δὲ νό-
μων μὴ φροντίζειν, ἀλλ' ἀξιοῦν αὐτῷ τηλικαύτην δωρεὰν
δίδοσθαι παρ' ὑμῶν ὅσην οὐδ' αἰτῆσαι τετόλμηκεν οὐδείς;*

48 *Ὅτι μὲν οὖν περὶ τῆς ἐνδείξεως οὐδὲν ἕξει δίκαιον λέ-
γειν οὔτε Θεοκρίνης οὔτε τῶν ὑπὲρ τούτου λεγόντων οὐδείς,
σχεδὸν εἰδέναι πάντας ὑμᾶς νομίζω· οἶμαι δ' αὐτοὺς ἐπι-
χειρήσειν λέγειν ὡς οὐδ' εἰσὶν ἐνδείξεις τούτων ὅσοι μὴ
ἐν ἀκροπόλει ἐπιγεγραμμένοι εἰσίν, οὐδ' ἐστὶ δίκαιον τού-
τους ὑπολαμβάνειν ὀφείλειν ὧν οὐδεὶς παραδέδωκε τοῖς*
49 *πράκτορσι τὰ ὀνόματα, ὥσπερ ὑμᾶς ἀγνοήσοντας τὸν
νόμον, ὃς ὀφείλειν κελεύει ἀπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἀφ' ἧς
ἂν ὄφλῃ ἢ παραβῇ τὸν νόμον ἢ τὸ ψήφισμα. ‖ ἢ οὐ πᾶσι
δῆλον ὅτι πολλαχῶς καὶ ὀφείλουσι τῷ δημοσίῳ καὶ ἐκτί-
νουσιν οἱ βουλόμενοι τοῖς νόμοις πείθεσθαι; καὶ τοῦτ' ἐξ
αὐτοῦ τοῦ νόμου δῆλον. καί μοι πάλιν λαβὲ τὸν νόμον
τοῦτον.*

ΝΟΜΟΣ.

*Ἀκούεις, ὦ μιαρὸν σὺ θηρίον, ὅ τι κελεύει; ἀφ' ἧς ἂν
ὄφλῃ ἢ τὸν νόμον παραβῇ.*

50 *Ἀκούω τοίνυν αὐτοὺς κἀκεῖνον ὑμῖν μέλλειν δεικνύναι
τὸν νόμον, ὃς ἀπαλείφειν κελεύει τοὺς ἐγγεγραμμένους
ἀπὸ τοῦ ὀφλήματος καθ' ὅ τι ἂν ἐκτίνῃ, καὶ ἐρήσεσθαι
πῶς ἀπὸ τοῦ μηδ' ἐγγεγραμμένου ἀπαλείφουσιν, ὥσπερ
οὐ περὶ μὲν τῶν ἐγγεγραμμένων τοῦτον κείμενον, περὶ δὲ
τῶν μὴ ἐγγεγραμμένων ὀφειλόντων δ' ἐκεῖνον, ὃς κελεύει
ἀπ' ἐκείνης ὀφείλειν τῆς ἡμέρας ἀφ' ἧς ἂν ὄφλῃ ἢ παραβῇ*
51 *τὸν νόμον ἢ τὸ ψήφισμα. τί οὖν οὐκ ἀγραφίου με, φή-
σει, γράφῃ τὸν ὀφείλοντα καὶ μὴ ἐγγεγραμμένον; ὅτι ὁ
νόμος οὐ κατὰ τῶν ὀφειλόντων καὶ μὴ ἐγγραφέντων κε-
λεύει τὰς γραφὰς τοῦ ἀγραφίου εἶναι, ἀλλ' οἵτινες ἂν ἐγ-
γραφέντες καὶ μὴ ἐκτίσαντες τῇ πόλει τὸ ὄφλημα ἐξα-
λειφθῶσιν. καί μοι λαβὲ τὸν νόμον καὶ ἀνάγνωθι.*

ΝΟΜΟΣ.

Ἀκούετε τοῦ νόμου, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτι διαρρήδην 52
λέγει, ἐάν τις τῶν ὀφειλόντων τῷ δημοσίῳ μὴ ἐκτίσας τὸ ὄφλημα τῇ πόλει ἐξαλειφθῇ, εἶναι κατ' αὐτοῦ τὰς γραφὰς πρὸς τοὺς θεσμοθέτας τοῦ ἀγραφίου, καὶ οὐ κατὰ τοῦ ὀφείλοντος καὶ μὴ ἐγγεγραμμένου, ἀλλ' ἔνδειξιν κελεύει καὶ ἄλλας τιμωρίας κατὰ τούτου εἶναι. ἀλλὰ σὺ τί διδάσκεις με πάντας τοὺς τρόπους οἷς ἔξεστι τιμωρεῖσθαι τοὺς ἐχθρούς, ἀλλ' οὐ καθ' ὃν εἰσελήλυθα, τοῦτον ἀπολογῇ;

Μοιροκλῆς ‖ τοίνυν, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὁ τὸ ψήφισμα 53
γράψας κατὰ τῶν τοὺς ἐμπόρους ἀδικούντων, καὶ πείσας οὐ μόνον ὑμᾶς ἀλλὰ καὶ τοὺς συμμάχους φυλακήν τινα τῶν κακούργων ποιήσασθαι, οὐκ αἰσχυνεῖται αὐτίκα μάλα λέγων ὑπὲρ Θεοκρίνου ἐναντία τοῖς ἑαυτοῦ ψηφίσμασιν, ἀλλὰ τολμήσει πείθειν ὑμᾶς ὡς χρὴ τὸν οὕτω φανερῶς 54
ἐξεληλεγμένον φάσεις ποιούμενον ἀδίκους κατὰ τῶν ἐμπόρων ἀφεῖναι καὶ μὴ τιμωρήσασθαι, ὥσπερ ἕνεκα τούτου γράψας καθαρὰν εἶναι τὴν θάλατταν, ἵνα σωθέντες οἱ πλέοντες ἐκ τοῦ πελάγους ἐν τῷ λιμένι χρήματα τούτοις ἀποτίνωσιν, ἢ διαφέρον τι τοῖς ἐμπόροις, ἂν μακρὸν διαφυγόντες πλοῦν Θεοκρίνῃ περιπέσωσιν. ἐγὼ δ' οἶμαι τῶν 55
μὲν κατὰ πλοῦν γιγνομένων οὐχ ὑμᾶς ἀλλὰ τοὺς στρατηγοὺς καὶ τοὺς ἐπὶ τοῖς μακροῖς πλοίοις αἰτίους εἶναι, τῶν δ' ἐν τῷ Πειραιεῖ καὶ πρὸς ταῖς ἀρχαῖς ὑμᾶς, οἳ τούτων κύριοι ἁπάντων ἐστέ. διὸ καὶ μᾶλλόν ἐστι τηρητέον τοὺς ἐνθάδε παραβαίνοντας τοὺς νόμους τῶν ἔξω τοῖς ψηφίσμασιν οὐκ ἐμμενόντων, ἵνα μὴ δοκῆτε αὐτοὶ πρᾴως ἐπὶ τοῖς γιγνομένοις φέρειν καὶ συνειδέναι τούτοις ὧν πράττουσιν. οὐ γὰρ δή που Μηλίους μὲν ὦ Μοιρόκλεις κατὰ 56
τὸ σὸν ψήφισμα δέκα τάλαντα νῦν εἰσπράξομεν, ὅτι τοὺς λῃστὰς ὑπεδέξαντο, τουτονὶ δ' ἀφήσομεν, ὃς καὶ τὸ σὸν ψήφισμα καὶ τοὺς νόμους, δι' οὓς οἰκοῦμεν τὴν πόλιν, παραβέβηκεν· καὶ τοὺς μὲν τὰς νήσους οἰκοῦντας κωλύσομεν ἀδικεῖν, ἐφ' οὓς τριήρεις δεῖ πληρώσαντας ἀναγκάσαι τὰ δίκαια ποιεῖν, ὑμᾶς δὲ τοὺς μιαρούς, οἷς αὐτοῦ δεῖ καθημένους τουτουσὶ κατὰ τοὺς νόμους ‖ ἐπιθεῖναι δίκην, ἐάσαι; οὐκ ἄν γε σωφρονῆτε. λέγε τὴν στήλην.

ΣΤΗΛΗ.

57 *Περὶ μὲν οὖν τῶν νόμων καὶ τοῦ πράγματος οὐκ οἶδ'
ὅ τι δεῖ πλείω λέγειν· ἱκανῶς γάρ μοι δοκεῖτε μεμαθηκέ-
ναι· βούλομαι δὲ δεηθεὶς ὑμῶν τὰ δίκαια ὑπὲρ ἐμαυτοῦ
καὶ τοῦ πατρὸς καταβαίνειν καὶ μὴ ἐνοχλεῖν ὑμῖν. ἐγὼ
γάρ, ὦ ἄνδρες δικασταί, βοηθεῖν οἰόμενος δεῖν τῷ πατρὶ
καὶ τοῦτο δίκαιον εἶναι νομίζων τὴν ἔνδειξιν ταύτην ἐποιη-
58 σάμην, ὥσπερ ἐξ ἀρχῆς εἶπον, οὐκ ἀγνοῶν οὔτε τοὺς
βλασφημεῖν βουλομένους ὅτι λόγους εὑρήσουσι τοὺς δια-
βαλοῦντας τὴν ἐμὴν ἡλικίαν, οὔτε τοὺς ἐπαινεσομένους καὶ
σωφρονεῖν με νομιοῦντας εἰ τὸν ἐχθρὸν τοῦ πατρὸς τιμω-
ρεῖσθαι προαιροῦμαι, ἀλλ' ἡγούμενος ταῦτα μὲν οὕτως
ὅπως ἂν τύχῃ παρὰ τοῖς ἀκροωμένοις συμβήσεσθαι, ἐμοὶ
δὲ τὸ προσταχθὲν ὑπὸ τοῦ πατρός, ἄλλως τε καὶ δίκαιον
59 ὄν, τοῦτ' εἶναι ποιητέον. πότε γάρ με καὶ δεῖ βοηθεῖν
αὐτῷ; οὐχ ὅταν ἡ μὲν τιμωρία κατὰ τοὺς νόμους ᾖ, μετ-
έχων δ' αὐτὸς τυγχάνω τῆς τοῦ πατρὸς ἀτυχίας, μόνος δ'
ᾖ καταλελειμμένος ὁ πατήρ; ὅπερ νῦν συμβέβηκεν. πρὸς
γὰρ τοῖς ἄλλοις ἀτυχήμασι καὶ τοῦθ' ἡμῖν ὦ ἄνδρες δι-
κασταὶ συμβέβηκεν· παροξύνουσι μὲν ἡμᾶς ἅπαντες καὶ
συνάχθεσθαί φασι τοῖς γεγενημένοις καὶ δεινὰ πεπονθέ-
ναι λέγουσι καὶ τοῦτον εἶναι ἔνοχον τῇ ἐνδείξει, συμπράτ-
τειν δ' οὐδεὶς ἐθέλει τῶν εἰπόντων, οὐδέ φησιν ἀπεχθά-
νεσθαι βούλεσθαι φανερῶς· οὕτως ἔλαττον παρά τισι τὸ
60 δίκαιον ἰσχύει τῆς παρρησίας. πολλῶν δ' ἡμῖν ὦ ἄνδρες
δικασταὶ διὰ τουτονὶ ‖ Θεοκρίνην ἀτυχημάτων ἐν οὐκ ὀλίγῳ
χρόνῳ συμβεβηκότων, οὐδενὸς ἔλαττόν ἐστι τὸ νῦν συμ-
βαῖνον, ὅτι τὰ δεινὰ καὶ τὰ παρὰ τοὺς νόμους πεπραγμένα
Θεοκρίνῃ τῷ μὲν πατρὶ τῷ πεπονθότι καὶ δυναμένῳ ἂν
δηλῶσαι πρὸς ὑμᾶς ἐξ ἀνάγκης ἡσυχίαν ἑκτέον ἐστίν (οἱ
γὰρ νόμοι ταῦτα κελεύουσιν), ἐμοὶ δὲ τῷ πάντων τούτων
ὑστερίζοντι λεκτέον, καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις τοῖς τηλικούτοις
οἱ πατέρες βοηθοῦσιν, οὗτος δ' ἐν ἐμοὶ νῦν ἔχει τὰς ἐλ-
61 πίδας. τοιοῦτον οὖν ἀγωνιζόμενοι ἀγῶνα δεόμεθ' ὑμῶν
ἐπικουρεῖν ἡμῖν, καὶ δεῖξαι πᾶσιν ὅτι, κἂν παῖς κἂν γέρων
κἂν ἄλλην ἡντινοῦν ἡλικίαν ἔχων ἥκῃ πρὸς ὑμᾶς κατὰ τοὺς
νόμους, οὗτος τεύξεται πάντων τῶν δικαίων. καλὸν γὰρ*

ὦ ἄνδρες δικασταὶ μήτε τοὺς νόμους μήθ᾽ ὑμᾶς αὐτοὺς
ἐπὶ τοῖς λέγουσι ποιεῖν, ἀλλ᾽ ἐκείνους ἐφ᾽ ὑμῖν, καὶ χωρὶς
κρίνειν τούς τ᾽ εὖ καὶ σαφῶς καὶ τοὺς τὰ δίκαια λέγοντας·
περὶ γὰρ τούτου τὴν ψῆφον ὀμωμόκατ᾽ οἴσειν. οὐ γὰρ δὴ 62
πείσει γ᾽ ὑμᾶς οὐδεὶς ὡς ἐπιλείψουσιν οἱ τοιοῦτοι ῥήτο-
ρες, οὐδ᾽ ὡς διὰ τοῦτο χεῖρον ἡ πόλις οἰκήσεται. τοὐναν-
τίον γάρ, ὡς ἐγὼ τῶν πρεσβυτέρων ἀκούω, τότε φασὶν
ἄριστα πρᾶξαι τὴν πόλιν ὅτε μέτριοι καὶ σώφρονες ἄν-
δρες ἐπολιτεύοντο. πότερον γὰρ συμβούλους εὕροι τις ἂν
τούτους ἀγαθούς; ἀλλ᾽ οὐδὲν ἐν τῷ δήμῳ λέγουσιν, ἀλλὰ
τοὺς ἐκεῖθεν γραφόμενοι χρήματα λαμβάνουσιν. ὃ καὶ 63
θαυμάσιόν ἐστιν, ὅτι ζῶντες ἐκ τοῦ συκοφαντεῖν οὔ φασι
λαμβάνειν ἀπὸ τῆς πόλεως· καὶ πρὶν προσελθεῖν πρὸς
ὑμᾶς οὐδὲν ἔχοντες, νῦν εὐποροῦντες οὐδὲ χάριν ὑμῖν
ἔχουσιν, ἀλλὰ περιιόντες λέγουσιν ὡς ἀβέβαιός ἐστιν ὁ
δῆμος, ‖ ὡς δυσχερής, ὡς ἀχάριστος, ὡς ὑμᾶς διὰ τού-
τους εὐποροῦντας, οὐ τούτους διὰ τὸν δῆμον. ἀλλὰ γὰρ
εἰκότως ταῦθ᾽ οὗτοι λέγουσιν, ὁρῶντες τὴν ὑμετέραν ῥᾳ-
θυμίαν. οὐδένα γὰρ ἀξίως αὐτῶν τῆς πονηρίας τετιμώ-
ρησθε, ἀλλ᾽ ὑπομένετε λεγόντων αὐτῶν ὡς ἡ τοῦ δήμου
σωτηρία διὰ τῶν γραφομένων καὶ συκοφαντούντων ἐστίν·
ὧν γένος ἐξωλέστερον οὐδὲν ἐστιν. τί γὰρ ἄν τις τούτους 64
εὕροι χρησίμους ὄντας τῇ πόλει; τοὺς ἀδικοῦντας νὴ Δί᾽
οὗτοι κολάζουσι, καὶ διὰ τούτους ἐλάττους εἰσὶν ἐκεῖνοι.
οὐ δῆτ᾽ ὦ ἄνδρες δικασταί, ἀλλὰ καὶ πλείους· εἰδότες γὰρ
οἱ βουλόμενοι κακόν τι πράττειν ὅτι τούτοις ἐστὶν ἀπὸ
τῶν λημμάτων τὸ μέρος δοτέον, ἐξ ἀνάγκης μείζω προαι-
ροῦνται παρὰ τῶν ἄλλων ἁρπάζειν, ἵνα μὴ μόνον αὑτοῖς
ἀλλὰ καὶ τούτοις ἔχωσιν ἀναλίσκειν. καὶ τοὺς μὲν ἄλλους 65
ὅσοι κακουργοῦντες βλάπτουσί τι τοὺς ἐντυγχάνοντας, τοὺς
μὲν τῶν οἴκοι φυλακὴν καταστήσαντας σώζειν ἔστι, τοὺς
δ᾽ ἔνδον μένοντας τῆς νυκτὸς μηδὲν παθεῖν, τοὺς δ᾽ ἑνί γέ
τῳ τρόπῳ φυλαξαμένους ἔνεστι διώσασθαι τὴν τῶν κακόν
τι ποιεῖν βουλομένων ἐπιβουλήν· τοὺς δὲ τοιουτουσὶ συ-
κοφάντας, ποῖ χρὴ πορευθέντας ἀδείας παρὰ τούτων τυ-
χεῖν; αἱ γὰρ τῶν ἄλλων ἀδικημάτων καταφυγαὶ τούτοις
εἰσὶν ἐργασίαι, νόμοι δικαστήρια μάρτυρες ἀγοραί· ἐν οἷς

*τὰς αὑτῶν ῥώμας ἐπιδείκνυνται, φίλους μὲν τοὺς διδόντας
νομίζοντες, ἐχθροὺς δὲ τοὺς ἀπράγμονας καὶ πλουσίους.*
66 *Ἀναμνησθέντες οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τῆς τούτων
πονηρίας καὶ τῶν προγόνων τῶν ἡμετέρων, ὧν Ἐπιχάρης
μὲν ὁ πάππος ὁ ἐμὸς Ὀλυμπίασι νικήσας παῖδας ‖ στάδιον
ἐστεφάνωσε τὴν πόλιν, καὶ παρὰ τοῖς ὑμετέροις προγό-
νοις ἐπιεικῆ δόξαν ἔχων ἐτελεύτησεν· ἡμεῖς δὲ δὴ διὰ του-
τονὶ τὸν θεοῖς ἐχθρὸν ἀπεστερήμεθα ταύτης τῆς πόλεως,*
67 *ὑπὲρ ἧς Ἀριστοκράτης ὁ Σκελλίου, θεῖος ὢν Ἐπιχάρους
τοῦ πάππου τοῦ ἐμοῦ, οὗ ἔχει ἀδελφὸς οὑτοσὶ τοὔνομα,
πολλὰ καὶ καλὰ διαπραξάμενος ἔργα πολεμούσης τῆς πό-
λεως Λακεδαιμονίοις, κατασκάψας τὴν Ἠετιώνειαν, εἰς
ἣν τοὺς Λακεδαιμονίους ἤμελλον οἱ περὶ Κριτίαν ὑπο-
δέχεσθαι, καθεῖλε μὲν τὸ ἐπιτείχισμα, κατήγαγε δὲ τὸν
δῆμον κινδυνεύων αὐτὸς οὐ τοιούτους κινδύνους, ἀλλ' ἐν
οἷς καὶ παθεῖν τι καλόν ἐστιν, ἔπαυσε δὲ τοὺς ἐπιβου-*
68 *λεύοντας ὑμῖν. δι' ὅν, εἰ Θεοκρίνῃ τούτῳ ὅμοιοι ὄντες
ἐτυγχάνομεν, εἰκότως ἐσώζετ' ἂν ἡμᾶς, μὴ ὅτι βελτίους
ὄντας τούτου καὶ δίκαια λέγοντας. οὐ γὰρ πολλάκις ὑμᾶς
ταῦτα λέγοντες ἐνοχλήσομεν· οὕτω γὰρ ἡμᾶς οὗτος διατέ-
θεικεν ὥσθ', ὅπερ ἐξ ἀρχῆς εἶπον, μηδ' ἐλπίδα ἡμῖν εἶναι
μηδεμίαν τοῦ μετασχεῖν τῆς καὶ τοῖς ξένοις δεδομένης*
69 *παρρησίας. ἵν' οὖν, εἰ καὶ μηδὲν ἄλλο, ταύτην γ' ἔχωμεν
παραψυχήν, τὸ καὶ τοῦτον ὁρᾶν ἡσυχίαν ἄγοντα, βοηθή-
σαθ' ἡμῖν, ἐλεήσατε τοὺς ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἡμῶν τετε-
λευτηκότας, ἀναγκάσατ' αὐτὸν ὑπὲρ αὐτῆς τῆς ἐνδείξεως
ἀπολογεῖσθαι, καὶ τοιοῦτοι γένεσθ' αὐτῷ δικασταὶ τῶν*
70 *λεγομένων οἷος οὗτος ἐγένετο ἡμῶν κατήγορος, ὃς ἐξα-
πατήσας τοὺς δικαστὰς οὐκ ἠθέλησε τιμήσασθαι μετρίου
τινὸς τιμήματος τῷ πατρί, πόλλ' ἐμοῦ δεηθέντος καὶ τοῦ-
τον ἱκετεύσαντος πρὸς τῶν γονάτων, ἀλλ' ὥσπερ τὴν ‖ πό-
λιν προδεδωκότι τῷ πατρὶ δέκα ταλάντων ἐτιμήσατο.
δεόμεθ' οὖν ὑμῶν καὶ ἀντιβολοῦμεν, τὰ δίκαια ψηφίζεσθε.
Βοήθησον ἡμῖν ὁ δεῖνα, εἴ τι ἔχεις, καὶ σύνειπε. ἀνάβηθι.*

ΚΑΤΑ ΝΕΑΙΡΑΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ. *Καὶ τοῦτον τὸν λόγον οὐκ οἴονται Δημοσθένους εἶναι, ὕπτιον ὄντα καὶ πολλαχῇ τῆς τοῦ ῥήτορος δυνάμεως ἐνδεέστερον. ὑπόθεσιν δὲ ἔχει τοιαύτην. νόμου κελεύοντος, ἐὰν ἀνδρὶ Ἀθηναίῳ ξένη συνοικῇ, πεπρᾶσθαι ταύτην, κατὰ τοῦτον τὸν νόμον ἐπὶ Νέαιραν ἥκει Θεόμνηστος, λέγων συνοικεῖν αὐτὴν Στεφάνῳ γεγονυῖαν μὲν δούλην Νικαρέτης, ἑταιρήσασαν δὲ πρότερον, νῦν δὲ Στεφάνῳ νόμῳ συνοικοῦσαν καὶ πεπαιδοποιημένην ἐξ αὐτοῦ. ὁ δὲ Στέφανος οὐχ ὁμολογεῖ ταῦτα, ἀλλὰ συνεῖναι μὲν αὐτῇ φησίν, ὡς ἑταίρᾳ δὲ καὶ οὐ γυναικί, καὶ τοὺς παῖδας οὐκ ἐκ ταύτης ἔχειν. πρὸς ὅπερ ὁ κατήγορος ἀνθιστάμενος οὐκ ὀλίγα τεκμήρια παρέχεται ὡς γυναῖκα συνοικεῖν αὐτήν. γίνεται τοίνυν ἡ στάσις τοῦ λόγου στοχαστική· περὶ γὰρ οὐσίας τὸ ζήτημα, καὶ οὔτε περὶ ἰδιότητος οὔτε περὶ ποιότητος. τὰ μὲν οὖν πρῶτα τοῦ λόγου Θεόμνηστος λέγει, ἔπειτα συνήγορον Ἀπολλόδωρον καλεῖ κηδεστὴν ὄντα ἑαυτοῦ, κἀκεῖνος τὸν ἀγῶνα ποιεῖται.*

‖ Πολλά με τὰ παρακαλοῦντα ἦν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι γράψασθαι Νέαιραν τὴν γραφὴν ταυτηνὶ καὶ εἰσελθεῖν εἰς ὑμᾶς. καὶ γὰρ ἠδικήμεθα ὑπὸ Στεφάνου μεγάλα καὶ εἰς κινδύνους τοὺς ἐσχάτους κατέστημεν ὑπ᾿ αὐτοῦ ὅ τε κηδεστὴς καὶ ἐγὼ καὶ ἡ ἀδελφὴ καὶ ἡ γυνὴ ἡ ἐμή, ὥστ᾿ οὐχ ὑπάρχων ἀλλὰ τιμωρούμενος ἀγωνιοῦμαι τὸν ἀγῶνα τουτονί· τῆς γὰρ ἔχθρας πρότερος οὗτος ὑπῆρξεν, οὐδὲν ὑφ᾿ ἡμῶν πώποτε οὔτε λόγῳ οὔτε ἔργῳ κακὸν παθών. βούλομαι δ᾿ ὑμῖν προδιηγήσασθαι πρῶτον ἃ πεπόνθαμεν ὑπ᾿ αὐτοῦ, ἵνα μᾶλλόν μοι συγγνώμην ἔχητε ἀμυνομένῳ, καὶ ὡς εἰς ἐσχάτους κινδύνους κατέστημεν περί τε τῆς πατρίδος καὶ περὶ ἀτιμίας.

Ψηφισαμένου γὰρ τοῦ δήμου τοῦ Ἀθηναίων Ἀθηναῖον 2 εἶναι Πασίωνα καὶ ἐκγόνους τοὺς ἐκείνου διὰ τὰς εὐεργεσίας τὰς εἰς τὴν πόλιν, ὁμογνώμων καὶ ὁ πατὴρ ἐγένετο ὁ ἐμὸς τῇ τοῦ δήμου δωρεᾷ, καὶ ἔδωκεν Ἀπολλοδώρῳ τῷ υἱεῖ τῷ ἐκείνου θυγατέρα μὲν αὐτοῦ ἀδελφὴν δὲ ἐμήν, ἐξ ἧς Ἀπολλοδώρῳ οἱ παῖδές εἰσιν. ὄντος δὲ χρηστοῦ τοῦ Ἀπολλοδώρου περί τε τὴν ἀδελφὴν τὴν ἐμὴν καὶ περὶ ἡμᾶς ἅπαντας, καὶ ἡγουμένου τῇ ἀληθείᾳ οἰκείους ὄντας καὶ κοινωνεῖν πάντων τῶν ὄντων, ἔλαβον καὶ ἐγὼ γυναῖκα ‖ Ἀπολλοδώρου μὲν θυγατέρα ἀδελφιδῆν δ᾿ ἐμαυτοῦ.

3 *προεληλυθότος δὲ χρόνου λαγχάνει βουλεύειν Ἀπολλόδω-*
ρος· δοκιμασθεὶς δὲ καὶ ὀμόσας τὸν νόμιμον ὅρκον, συμ-
βάντος καιροῦ τῇ πόλει τοιούτου καὶ πολέμου, ἐν ᾧ ἦν ἢ
κρατήσασιν ὑμῖν μεγίστοις τῶν Ἑλλήνων εἶναι καὶ ἀναμ-
φισβητήτως τά τε ὑμέτερα αὐτῶν κεκομίσθαι καὶ κατα-
πεπολεμηκέναι Φίλιππον, ἢ ὑστερήσασι τῇ βοηθείᾳ καὶ
προεμένοις τοὺς συμμάχους, δι᾽ ἀπορίαν χρημάτων κατα-
λυθέντος τοῦ στρατοπέδου, τούτους τ᾽ ἀπολέσαι καὶ τοῖς
ἄλλοις Ἕλλησιν ἀπίστους εἶναι δοκεῖν καὶ κινδυνεύειν περὶ
τῶν ὑπολοίπων, περί τε Λήμνου καὶ Ἴμβρου καὶ Σκύρου
4 *καὶ Χερρονήσου, καὶ μελλόντων στρατεύεσθαι ὑμῶν παν-*
δημεὶ εἴς τε Εὔβοιαν καὶ Ὄλυνθον, ἔγραψε ψήφισμα ἐν
τῇ βουλῇ Ἀπολλόδωρος βουλεύων καὶ ἐξήνεγκε προβού-
λευμα εἰς τὸν δῆμον, λέγων διαχειροτονῆσαι τὸν δῆμον
εἴτε δοκεῖ τὰ περιόντα χρήματα τῆς διοικήσεως στρατιω-
τικὰ εἶναι εἴτε θεωρικά, κελευόντων μὲν τῶν νόμων, ὁπό-
ταν πόλεμος ᾖ, τὰ περιόντα χρήματα τῆς διοικήσεως
στρατιωτικὰ εἶναι, κύριον δ᾽ ἡγούμενος δεῖν τὸν δῆμον
εἶναι περὶ τῶν αὑτοῦ ὅ τι ἂν βούληται πρᾶξαι, ὀμωμο-
κὼς δὲ τὰ βέλτιστα βουλεύσειν τῷ δήμῳ τῷ Ἀθηναίων,
5 *ὡς ὑμεῖς πάντες ἐμαρτυρήσατε ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ. γε-*
νομένης γὰρ τῆς διαχειροτονίας οὐδεὶς ἀντεχειροτόνησεν
ὡς οὐ δεῖ τοῖς χρήμασι τούτοις στρατιωτικοῖς χρῆσθαι,
ἀλλὰ καὶ νῦν ἔτι, ἐάν που λόγος γένηται, παρὰ πάντων
ὁμολογεῖται ὡς τὰ βέλτιστα εἴπας ἄδικα πάθοι. τῷ οὖν ‖
ἐξαπατήσαντι τῷ λόγῳ τοὺς δικαστὰς δίκαιον ὀργίζεσθαι,
οὐ τοῖς ἐξαπατηθεῖσιν. γραψάμενος γὰρ παρανόμων τὸ
ψήφισμα Στέφανος οὑτοσὶ καὶ εἰσελθὼν εἰς τὸ δικαστή-
ριον, ἐπὶ διαβολῇ ψευδεῖς μάρτυρας παρασχόμενος καὶ
6 *ἔξω τῆς γραφῆς πολλὰ κατηγορῶν εἷλε τὸ ψήφισμα. καὶ*
τοῦτο μὲν εἰ αὐτῷ ἐδόκει διαπράξασθαι, οὐ χαλεπῶς φέ-
ρομεν· ἀλλ᾽ ἐπειδὴ περὶ τοῦ τιμήματος ἐλάμβανον τὴν
ψῆφον οἱ δικασταί, δεομένων ἡμῶν συγχωρῆσαι οὐκ ἤθε-
λεν ἀλλὰ πεντεκαίδεκα ταλάντων ἐτιμᾶτο, ἵνα ἀτιμώσειεν
αὐτὸν καὶ παῖδας τοὺς ἐκείνου καὶ τὴν ἀδελφὴν τὴν ἐμήν,
καὶ ἡμᾶς ἅπαντας εἰς τὴν ἐσχάτην ἀπορίαν καταστήσειε
7 *καὶ ἔνδειαν ἁπάντων. ἡ μὲν γὰρ οὐσία οὐδὲ τριῶν ταλάν-*

των πάνυ τι ἦν, ὥστε δυνηθῆναι ἐκτῖσαι τοσοῦτον ὄφλημα·
μὴ ἐκτισθέντος δὲ τοῦ ὀφλήματος ἐπὶ τῆς ἐνάτης πρυ-
τανείας διπλοῦν ἔμελλεν ἔσεσθαι τὸ ὄφλημα καὶ ἐγγρα-
φήσεσθαι Ἀπολλόδωρος τριάκοντα τάλαντα ὀφείλων τῷ
δημοσίῳ· ἐγγεγραμμένου δὲ τῷ δημοσίῳ, ἀπογραφήσε-
σθαι ἔμελλεν ἡ ὑπάρχουσα οὐσία Ἀπολλοδώρῳ δημοσία
εἶναι, πραθείσης δ' αὐτῆς εἰς τὴν ἐσχάτην ἀπορίαν κατα-
στήσεσθαι καὶ αὐτὸς καὶ παῖδες οἱ ἐκείνου καὶ γυνὴ καὶ
ἡμεῖς ἅπαντες. ἔτι δὲ καὶ ἡ ἑτέρα θυγάτηρ ἀνέκδοτος 8
ἤμελλεν ἔσεσθαι· τίς γὰρ ἄν ποτε παρ' ὀφείλοντος τῷ
δημοσίῳ καὶ ἀποροῦντος ἔλαβεν ἄπροικον; οὐκοῦν τηλι-
κούτων κακῶν αἴτιος ἡμῖν πᾶσιν ἐγίγνετο, οὐδὲν πώποτε
ὑφ' ἡμῶν ἠδικημένος. τοῖς μὲν οὖν δικασταῖς τοῖς τότε
δικάσασι πολλὴν χάριν κατά γε τοῦτ' ἔχω, ὅτι οὐ ‖ περιεῖ-
δον αὐτὸν ἀναρπασθέντα ἀλλ' ἐτίμησαν ταλάντου, ὥστε
δυνηθῆναι ἂν ἐκτῖσαι μόλις· τούτῳ δὲ δικαίως τὸν αὐτὸν
ἔρανον ἐνεχειρήσαμεν ἀποδοῦναι. καὶ γὰρ οὐ μόνον ταύτῃ 9
ἐζήτησεν ἀνελεῖν ἡμᾶς, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς πατρίδος αὐτὸν
ἠβουλήθη ἐκβαλεῖν. ἐπενέγκας γὰρ αὐτῷ αἰτίαν ψευδῆ,
[ὡς ὦφλε τῷ δημοσίῳ ἐκ πέντε καὶ εἴκοσιν ἐτῶν] ὡς Ἀφι-
δναζέ ποτε ἀφικόμενος ἐπὶ δραπέτην αὐτοῦ ζητῶν πα-
τάξειε γυναῖκα καὶ ἐκ τῆς πληγῆς τελευτήσειεν ἡ ἄνθρω-
πος, παρασκευασάμενος ἀνθρώπους δούλους καὶ κατα-
σκευάσας ὡς Κυρηναῖοι εἴησαν, προεῖπεν αὐτῷ ἐπὶ Παλ-
λαδίῳ φόνου. καὶ ἔλεγε τὴν δίκην Στέφανος οὑτοσὶ διομο- 10
σάμενος ὡς ἔκτεινεν Ἀπολλόδωρος τὴν γυναῖκα αὐτοχειρίᾳ,
ἀρώμενος ἐξώλειαν αὐτῷ καὶ γένει καὶ οἰκίᾳ, ἐπαρασά-
μενος ἃ οὔτ' ἐγένετο οὔτ' εἶδεν οὔτ' ἤκουσεν οὐδενὸς πώ-
ποτ' ἀνθρώπων. ἐξελεγχθεὶς δ' ἐπιορκῶν καὶ ψευδῆ αἰ-
τίαν ἐπιφέρων, καὶ καταφανὴς γενόμενος μεμισθωμένος
ὑπὸ Κηφισοφῶντος καὶ Ἀπολλοφάνους ὥστ' ἐξελάσαι
Ἀπολλόδωρον ἢ ἀτιμῶσαι ἀργύριον εἰληφώς, ὀλίγας ψή-
φους μεταλαβὼν ἐκ πεντακοσίων ἀνδρῶν, ἀπῆλθεν ἐπιωρ-
κηκὼς καὶ δόξας πονηρὸς εἶναι.

Σκοπεῖτε δὴ ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἐκ τῶν εἰκότων λογι- 11
ζόμενοι πρὸς ὑμᾶς αὐτούς, τί ἂν ἐχρησάμην ἐμαυτῷ καὶ
τῇ γυναικὶ καὶ τῇ ἀδελφῇ, εἴ τι Ἀπολλοδώρῳ συνέβη

παθεῖν ὧν Στέφανος οὑτοσὶ ἐπεβούλευσεν αὐτῷ, ἢ ἐν τῷ
προτέρῳ ἢ ἐν τῷ ὑστέρῳ ἀγῶνι; ἢ ποίᾳ αἰσχύνῃ οὐκ ἂν
12 καὶ συμφορᾷ περιπεπτωκὼς ἂν ἦν; παρακαλούντων δή
με ἁπάντων, ‖ ἰδίᾳ τε προσιόντων μοι, ἐπὶ τιμωρίαν
τρέπεσθαι ὧν ἐπάθομεν, καὶ ὀνειδιζόντων μοι ἀνανδρό-
τατον ἀνθρώπων εἶναι, εἰ οὕτως οἰκείως ἔχων τὰ πρὸς
τούτους μὴ λήψομαι δίκην ὑπὲρ ἀδελφῆς καὶ κηδεστῶν
καὶ ἀδελφιδῶν καὶ γυναικὸς ἐμαυτοῦ, μηδὲ τὴν περιφανῶς
εἰς τοὺς θεοὺς ἀσεβοῦσαν καὶ εἰς τὴν πόλιν ὑβρίζουσαν
καὶ τῶν νόμων καταφρονοῦσαν τῶν ὑμετέρων εἰσαγαγὼν
εἰς ὑμᾶς, καὶ ἐξελέγξας τῷ λόγῳ ὡς ἀδικεῖ, κυρίους κα-
13 ταστήσω ὅ τι ἂν βούλησθε χρῆσθαι αὐτῇ· καὶ ὥσπερ
Στέφανος οὑτοσὶ ἐμὲ ἀφῃρεῖτο τοὺς οἰκείους παρὰ τοὺς
νόμους καὶ τὰ ψηφίσματα τὰ ὑμέτερα, οὕτω καὶ ἐγὼ τοῦ-
τον ἥκω ἐπιδείξων εἰς ὑμᾶς ξένῃ μὲν γυναικὶ συνοικοῦντα
παρὰ τὸν νόμον, ἀλλοτρίους δὲ παῖδας εἰσαγαγόντα εἴς
τε τοὺς φράτορας καὶ εἰς τοὺς δημότας, ἐγγυῶντα δὲ τὰς
τῶν ἑταιρῶν θυγατέρας ὡς αὑτοῦ οὔσας, ἠσεβηκότα δ'
εἰς τοὺς θεούς, ἄκυρον δὲ ποιοῦντα τὸν δῆμον τῶν αὑτοῦ,
ἄν τινα βούληται πολίτην ποιήσασθαι· τίς γὰρ ἂν ἔτι
παρὰ τοῦ δήμου ζητήσειε λαβεῖν δωρεὰν μετὰ πολλῶν
ἀναλωμάτων καὶ πραγματείας πολίτης μέλλων ἔσεσθαι,
ἐξὸν παρὰ Στεφάνου ἀπ' ἐλάττονος ἀναλώματος, εἴ γε τὸ
αὐτὸ τοῦτο γενήσεται αὐτῷ;
14 Ἃ μὲν οὖν ἀδικηθεὶς ἐγὼ ὑπὸ Στεφάνου πρότερος
ἐγραψάμην τὴν γραφὴν ταύτην, εἴρηκα πρὸς ὑμᾶς· ὡς δ'
ἐστὶ ξένη Νέαιρα αὕτη καὶ συνοικεῖ Στεφάνῳ τούτῳ καὶ
πολλὰ παρανενόμηκεν εἰς τὴν πόλιν, ταῦτ' ἤδη δεῖ μαθεῖν
ὑμᾶς. δέομαι οὖν ὑμῶν ὦ ἄνδρες δικασταὶ ἅπερ ἡγοῦμαι
προσήκειν δεηθῆναι νέον τε ὄντα καὶ ἀπείρως ἔχοντα τοῦ
λέγειν, συνήγορόν με κελεῦσαι καλέσαι τῷ ἀγῶνι τούτῳ
15 Ἀπολλόδωρον. καὶ γὰρ πρεσβύτερός ἐστιν ἢ ἐγώ, καὶ ‖
ἐμπειροτέρως ἔχει τῶν νόμων, καὶ ἠδίκηται ὑπὸ Στεφά-
νου τούτου, καὶ μεμέληκεν αὐτῷ περὶ τούτων ἁπάντων
ἀκριβῶς, ὥστε καὶ ἀνεπίφθονον αὐτῷ τιμωρεῖσθαι τὸν
ὑπάρξαντα. δεῖ δ' ὑμᾶς ἐξ αὐτῆς τῆς ἀληθείας τὴν ἀκρί-
βειαν ἀκούσαντας τῆς τε κατηγορίας καὶ τῆς ἀπολογίας,

οὕτως ἤδη τὴν ψῆφον φέρειν ὑπέρ τε τῶν θεῶν καὶ τῶν νόμων καὶ τοῦ δικαίου καὶ ὑμῶν αὐτῶν.

ΣΥΝΗΓΟΡΙΑ. Ἃ μὲν ἠδικημένος ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι 16 ὑπὸ Στεφάνου ἀναβέβηκα κατηγορήσων Νεαίρας ταυτησί, Θεόμνηστος εἴρηκε πρὸς ὑμᾶς· ὡς δ' ἐστὶ ξένη Νέαιρα καὶ παρὰ τοὺς νόμους συνοικεῖ Στεφάνῳ, τοῦτο ὑμῖν βούλομαι σαφῶς ἐπιδεῖξαι. πρῶτον μὲν οὖν τὸν νόμον ὑμῖν ἀναγνώσεται, καθ' ὃν τήν τε γραφὴν ταυτηνὶ Θεόμνηστος ἐγράψατο καὶ ὁ ἀγὼν οὗτος εἰσέρχεται εἰς ὑμᾶς.

ΝΟΜΟΣ. Ἐὰν δὲ ξένος ἀστῇ συνοικῇ τέχνῃ ἢ μηχανῇ ἡτινιοῦν, γραφέσθω πρὸς τοὺς θεσμοθέτας Ἀθηναίων ὁ βουλόμενος, οἷς ἔξεστιν. ἐὰν δὲ ἁλῷ, πεπράσθω καὶ αὐτὸς καὶ ἡ οὐσία αὐτοῦ, καὶ τὸ τρίτον μέρος ἔστω τοῦ ἑλόντος. ἔστω δὲ καὶ ἐὰν ἡ ξένη τῷ ἀστῷ συνοικῇ, κατὰ ταὐτά, καὶ ὁ συνοικῶν τῇ ξένῃ τῇ ἁλούσῃ ὀφειλέτω χιλίας δραχμάς.

Τοῦ μὲν νόμου τοίνυν ἀκηκόατε ὦ ἄνδρες δικασταί, ὃς 17 οὐκ ἐᾷ τὴν ξένην τῷ ἀστῷ συνοικεῖν οὐδὲ τὴν ἀστὴν τῷ ξένῳ, οὐδὲ παιδοποιεῖσθαι, τέχνῃ οὐδὲ μηχανῇ οὐδεμιᾷ· ἐὰν δέ τις παρὰ ταῦτα ποιῇ, γραφὴν πεποίηκε κατ' αὐτῶν εἶναι πρὸς τοὺς θεσμοθέτας, κατά τε τοῦ ξένου καὶ τῆς ξένης, κἂν ἁλῷ, πεπρᾶσθαι ‖ κελεύει. ὡς οὖν ἐστὶ ξένη Νέαιρα αὕτη, τοῦθ' ὑμῖν βούλομαι ἐξ ἀρχῆς ἀκριβῶς ἐπιδεῖξαι.

Ἑπτὰ γὰρ ταύτας παιδίσκας ἐκ μικρῶν παιδίων ἐκτή- 18 σατο Νικαρέτη, Χαρισίου μὲν οὖσα τοῦ Ἠλείου ἀπελευθέρα, Ἱππίου δὲ τοῦ μαγείρου τοῦ ἐκείνου γυνή, δεινὴ δὲ [καὶ δυναμένη] φύσιν μικρῶν παιδίων συνιδεῖν εὐπρεπῆ, καὶ ταῦτα ἐπισταμένη θρέψαι καὶ παιδεῦσαι ἐμπείρως, τέχνην ταύτην κατεσκευασμένη καὶ ἀπὸ τούτων τὸν βίον συνειλεγμένη. προσειποῦσα δ' αὐτὰς ὀνόματι θυγατέρας, 19 ἵν' ὡς μεγίστους μισθοὺς πράττοιτο τοὺς βουλομένους πλησιάζειν αὐταῖς ὡς ἐλευθέραις οὔσαις, ἐπειδὴ τὴν ἡλικίαν ἐκαρπώσατο αὐτῶν ἑκάστης, συλλήβδην καὶ τὰ σώματα ἀπέδοτο ἁπασῶν, ἑπτὰ οὐσῶν, Ἄντειαν καὶ Στρατόλαν καὶ Ἀριστόκλειαν καὶ Μετάνειραν καὶ Φίλαν καὶ Ἰσθμιάδα καὶ Νέαιραν ταυτηνί. ἣν μὲν οὖν ἕκαστος αὐ- 20 τῶν ἐκτήσατο καὶ ὡς ἠλευθερώθησαν ὑπὸ τῶν πριαμένων αὐτὰς παρὰ τῆς Νικαρέτης, προϊόντος τοῦ λόγου, ἂν

*βούλησθε ἀκούειν καί μοι περιουσία ᾖ τοῦ ὕδατος, δη-
λώσω ὑμῖν· ὡς δὲ Νέαιρα αὕτη Νικαρέτης ἦν καὶ εἰργά-
ζετο τῷ σώματι μισθαρνοῦσα τοῖς βουλομένοις αὐτῇ πλη-
21 σιάζειν, τοῦθ᾽ ὑμῖν βούλομαι πάλιν ἐπανελθεῖν. Λυσίας
γὰρ ὁ σοφιστὴς Μετανείρας ὢν ἐραστὴς ἠβουλήθη πρὸς
τοῖς ἄλλοις ἀναλώμασιν οἷς ἀνήλισκεν εἰς αὐτὴν καὶ μυῆ-
σαι, ἡγούμενος τὰ μὲν ἄλλα ἀναλώματα τὴν κεκτημένην
αὐτὴν λαμβάνειν, ἃ δ᾽ ἂν εἰς τὴν ἑορτὴν καὶ τὰ μυστήρια
ὑπὲρ αὐτῆς ἀναλώσῃ, πρὸς αὐτὴν τὴν ἄνθρωπον χάριν
καταθήσεσθαι. ἐδεήθη οὖν τῆς Νικαρέτης ‖ ἐλθεῖν εἰς τὰ
μυστήρια ἄγουσαν τὴν Μετάνειραν, ἵνα μυηθῇ, καὶ αὐ-
22 τὸς ὑπέσχετο μυήσειν. ἀφικομένας δ᾽ αὐτὰς ὁ Λυσίας εἰς
μὲν τὴν αὑτοῦ οἰκίαν οὐκ εἰσάγει, αἰσχυνόμενος τήν τε
γυναῖκα ἣν εἶχε, Βραχύλλου μὲν θυγατέρα ἀδελφιδῆν δὲ
αὑτοῦ, καὶ τὴν μητέρα τὴν αὑτοῦ πρεσβυτέραν τε οὖσαν
καὶ ἐν τῷ αὐτῷ διαιτωμένην· ὡς Φιλόστρατον δὲ τὸν Κο-
λωνῆθεν, ἠθεον ἔτι ὄντα καὶ φίλον αὑτῷ, καθίστησιν ὁ
Λυσίας αὐτάς, τήν τε Μετάνειραν καὶ τὴν Νικαρέτην.
συνηκολούθει δὲ καὶ Νέαιρα αὕτη, ἐργαζομένη μὲν ἤδη
τῷ σώματι, νεωτέρα δὲ οὖσα διὰ τὸ μήπω τὴν ἡλικίαν
23 αὐτῇ παρεῖναι. ὡς οὖν ἀληθῆ λέγω, ὅτι Νικαρέτης ἦν καὶ
ἠκολούθει ἐκείνῃ καὶ ἐμισθάρνει τῷ βουλομένῳ ἀναλί-
σκειν, τούτων ὑμῖν αὐτὸν τὸν Φιλόστρατον μάρτυρα καλῶ.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Φιλόστρατος Διονυσίου Κολωνῆθεν μαρτυρεῖ εἰδέναι
Νέαιραν Νικαρέτης οὖσαν, ἧσπερ καὶ Μετάνειρα ἐγένετο, καὶ κατά-
γεσθαι παρ᾽ αὑτῷ ὅτε εἰς τὰ μυστήρια ἐπεδήμησαν ἐν Κορίνθῳ οἰ-
κοῦσαι· καταστῆσαι δὲ αὐτὰς ὡς αὐτὸν Λυσίαν τὸν Κεφάλου, φίλον
ὄντα ἑαυτῷ καὶ ἐπιτήδειον.*

24 *Πάλιν τοίνυν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, μετὰ ταῦτα Σῖμος ὁ
Θετταλὸς ἔχων Νέαιραν ταυτηνὶ ἀφικνεῖται δεῦρο εἰς τὰ
Παναθήναια τὰ μεγάλα. συνηκολούθει δὲ καὶ ἡ Νικαρέτη
αὐτῇ, κατήγοντο δὲ παρὰ Κτησίππῳ τῷ Γλαυκωνίδου τῷ
Κυδαντίδῃ, καὶ συνέπινε καὶ συνεδείπνει ἐναντίον πολλῶν
Νέαιρα αὕτη ὡς ἂν ἑταίρα οὖσα. καὶ ὅτι ἀληθῆ λέγω,
25 τούτων ὑμῖν τοὺς μάρτυρας καλῶ. καί μοι ‖ κάλει Εὐφί-
λητον Σίμωνος Αἰξωνέα καὶ Ἀριστόμαχον Κριτοδήμου Ἀλω-
πεκῆθεν.*

ΜΑΡΤΥΡΕΣ. *Εὐφίλητος Σίμωνος Αἰξωνεύς, Ἀριστόμαχος Κριτοδήμου Ἀλωπεκῆθεν μαρτυροῦσιν εἰδέναι Σῖμον τὸν Θετταλὸν ἀφικόμενον Ἀθήναζε εἰς τὰ Παναθήναια τὰ μεγάλα, καὶ μετ' αὐτοῦ Νικαρέτην καὶ Νέαιραν τὴν νυνὶ ἀγωνιζομένην· καὶ κατάγεσθαι αὐτοὺς παρὰ Κτησίππῳ τῷ Γλαυκωνίδου, καὶ συμπίνειν μετ' αὐτῶν Νέαιραν ὡς ἑταίραν οὖσαν καὶ ἄλλων πολλῶν παρόντων καὶ συμπινόντων παρὰ Κτησίππῳ.*

Μετὰ ταῦτα τοίνυν ἐν τῇ Κορίνθῳ αὐτῆς ἐπιφανῶς 26
ργαζομένης καὶ οὔσης λαμπρᾶς ἄλλοι τε ἐρασταὶ γίγνονται καὶ Ξενοκλείδης ὁ ποιητὴς καὶ Ἵππαρχος ὁ ὑποκριτής, καὶ εἶχον αὐτὴν μεμισθωμένοι. καὶ ὅτι ἀληθῆ λέγω, οῦ μὲν Ξενοκλείδου οὐκ ἂν δυναίμην ὑμῖν μαρτυρίαν ταρασχέσθαι· οὐ γὰρ ἐῶσιν αὐτὸν οἱ νόμοι μαρτυρεῖν·
τε γὰρ Λακεδαιμονίους ὑμεῖς ἐσῴζετε πεισθέντες ὑπὸ 27
Καλλιστράτου, τότε ἀντείπας ἐν τῷ δήμῳ τῇ βοηθείᾳ, ωνημένος τὴν πεντηκοστὴν τοῦ σίτου ἐν εἰρήνῃ, καὶ δέον ιὐτὸν καταβάλλειν τὰς καταβολὰς εἰς τὸ βουλευτήριον ατὰ πρυτανείαν, καὶ οὔσης αὐτῷ ἀτελείας ἐκ τῶν νόμων, ὐκ ἐξελθὼν ἐκείνην τὴν στρατείαν, γραφεὶς ὑπὸ Στεφάου τούτου ἀστρατείας καὶ διαβληθεὶς τῷ λόγῳ ἐν τῷ ικαστηρίῳ ἥλω καὶ ἠτιμώθη. καίτοι πῶς οὐκ οἴεσθε 28
εινὸν εἶναι, εἰ τοὺς μὲν φύσει πολίτας καὶ γνησίως μετχοντας τῆς πόλεως ἀπεστέρηκε τῆς παρρησίας Στέφαος οὑτοσί, ‖ τοὺς δὲ μηδὲν προσήκοντας βιάζεται Ἀθηαίους εἶναι παρὰ πάντας τοὺς νόμους; τὸν δ' Ἵππαρχον ὑτὸν ὑμῖν καλῶ, καὶ ἀναγκάσω μαρτυρεῖν ἢ ἐξόμνυσθαι ατὰ τὸν νόμον, ἢ κλητεύσω αὐτόν. καί μοι κάλει Ἵπαρχον.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Ἵππαρχος Ἀθμονεὺς μαρτυρεῖ Ξενοκλείδην καὶ αὐτὸν μισθώσασθαι Νέαιραν ἐν Κορίνθῳ τὴν νῦν ἀγωνιζομένην, ὡς ἑταίραν οὖσαν τῶν μισθαρνουσῶν, καὶ συμπίνειν ἐν Κορίνθῳ Νέαιραν μεθ' αὐτοῦ καὶ Ξενοκλείδου τοῦ ποιητοῦ.*

Μετὰ ταῦτα τοίνυν αὐτῆς γίγνονται ἐρασταὶ δύο, Τι- 29
ανορίδας τε ὁ Κορίνθιος καὶ Εὐκράτης ὁ Λευκάδιος, οἳ πειδήπερ πολυτελὴς ἦν ἡ Νικαρέτη τοῖς ἐπιτάγμασιν, ξιοῦσα τὰ καθ' ἡμέραν ἀναλώματα ἅπαντα τῇ οἰκίᾳ αρ' αὐτῶν λαμβάνειν, κατατιθέασιν αὐτῆς τιμὴν τριάκοντα μνᾶς τοῦ σώματος τῇ Νικαρέτῃ, καὶ ὠνοῦνται αὐ-

*τὴν παρ' αὐτῆς νόμῳ πόλεως καθάπαξ αὐτῶν δούλην εἶ-
ναι. καὶ εἶχον καὶ ἐχρῶντο ὅσον ἠβούλοντο αὐτῇ χρόνον.
30 μέλλοντες δὲ γαμεῖν, προαγορεύουσιν αὐτῇ ὅτι οὐ βού-
λονται αὐτὴν σφῶν αὐτῶν ἑταίραν γεγενημένην ὁρᾶν ἐν
Κορίνθῳ ἐργαζομένην οὐδ' ὑπὸ πορνοβοσκῷ οὖσαν, ἀλλ'
ἡδέως ἂν αὐτοῖς εἴη ἔλαττόν τε τἀργύριον κομίσασθαι
παρ' αὐτῆς ἢ κατέθεσαν, καὶ αὐτὴν ταύτην ὁρᾶν τι ἀγα-
θὸν ἔχουσαν. ἀφιέναι οὖν αὐτῇ ἔφασαν εἰς ἐλευθερίαν
χιλίας δραχμάς, πεντακοσίας ἑκάτερος· τὰς δ' εἴκοσι μνᾶς
ἐκέλευον αὐτὴν ἐξευροῦσαν αὐτοῖς ἀποδοῦναι. ἀκούσασα
δ' αὕτη τοὺς λόγους τούτους τοῦ τε Εὐκράτους καὶ Τιμα-
νορίδου, μεταπέμπεται εἰς τὴν Κόρινθον || ἄλλους τε τῶν
ἐραστῶν τῶν γεγενημένων αὐτῇ καὶ Φρυνίωνα τὸν Παια-
νιέα, Δήμωνος μὲν ὄντα υἱὸν Δημοχάρους δὲ ἀδελφόν,
ἀσελγῶς δὲ καὶ πολυτελῶς διάγοντα τὸν βίον, ὡς ὑμῶν
31 οἱ πρεσβύτεροι μνημονεύουσιν. ἀφικομένου δ' ὡς αὐτὴν
τοῦ Φρυνίωνος, λέγει πρὸς αὐτὸν τοὺς λόγους οὓς εἶπον
πρὸς αὐτὴν ὅ τε Εὐκράτης καὶ Τιμανορίδας, καὶ δίδωσιν
αὐτῷ τἀργύριον ὃ παρὰ τῶν ἄλλων ἐραστῶν ἐδασμολόγη-
σεν ἔρανον εἰς τὴν ἐλευθερίαν συλλέγουσα, καὶ εἴ τι ἄρα
αὐτὴ περιεποιήσατο, καὶ δεῖται αὐτοῦ προσθέντα τὸ
ἐπίλοιπον, οὗ προσέδει εἰς τὰς εἴκοσι μνᾶς, καταθεῖναι
αὑτῆς τῷ τε Εὐκράτει καὶ τῷ Τιμανορίδᾳ ὥστε ἐλευθέραν
32 εἶναι. ἄσμενος δ' ἀκούσας ἐκεῖνος τοὺς λόγους τούτους
αὐτῆς, καὶ λαβὼν τἀργύριον ὃ παρὰ τῶν ἐραστῶν τῶν
ἄλλων εἰσηνέχθη αὐτῇ, καὶ προσθεὶς τὸ ἐπίλοιπον αὐτὸς
κατατίθησιν αὐτῆς τὰς εἴκοσι μνᾶς τῷ Εὐκράτει καὶ τῷ
Τιμανορίδᾳ ἐπ' ἐλευθερίᾳ καὶ ἐφ' ᾧ ἐν Κορίνθῳ μὴ ἐργά-
ζεσθαι. καὶ ὅτι ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, τοῦτον ὑμῖν τὸν
παραγενόμενον μάρτυρα καλῶ. καί μοι κάλει Φίλαγρον
Μελιτέα.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Φίλαγρος Μελιτεὺς μαρτυρεῖ παρεῖναι ἐν Κορίνθῳ ὅτε Φρυνίων ὁ Δημοχάρους ἀδελφὸς κατετίθει εἴκοσι μνᾶς Νεαίρας τῆς νῦν ἀγωνιζομένης Τιμανορίδᾳ τῷ Κορινθίῳ καὶ Εὐκράτει τῷ Λευκαδίῳ· καὶ καταθεὶς τὸ ἀργύριον ᾤχετο ἀπάγων Ἀθήναζε Νέαιραν.*

*33 Ἀφικόμενος τοίνυν δεῦρο ἔχων αὐτὴν ἀσελγῶς καὶ προ-
πετῶς ἐχρῆτο αὐτῇ, κἀπὶ τὰ δεῖπνα ἔχων αὐτὴν πανταχοῖ*

ἐπορεύετο ὅπου πίνοι, ‖ ἐκώμαζέ τ' ἀεὶ μετ' αὐτοῦ, συνῆν τ' ἐμφανῶς ὁπότε βουληθείη πανταχοῦ, φιλοτιμίαν τὴν ἐξουσίαν πρὸς τοὺς ὁρῶντας ποιούμενος. καὶ ὡς ἄλλους τε πολλοὺς ἐπὶ κῶμον ἔχων ἦλθεν αὐτὴν καὶ ὡς Χαβρίαν τὸν Αἰξωνέα, ὅτε ἐνίκα ἐπὶ Σωκρατίδου ἄρχοντος τὰ Πύθια τῷ τεθρίππῳ ὃ ἐπρίατο παρὰ τῶν παίδων τῶν Μίτυος τοῦ Ἀργείου, καὶ ἥκων ἐκ Δελφῶν εἱστία τὰ ἐπινίκια ἐπὶ Κωλιάδι. καὶ ἐκεῖ ἄλλοι τε πολλοὶ συνεγίγνοντο αὐτῇ μεθυούσῃ καθεύδοντος τοῦ Φρυνίωνος, καὶ οἱ διάκονοι οἱ Χαβρίου τράπεζαν παραθέμενοι. καὶ ὅτι ταῦτ' ἀληθῆ 34 *λέγω, τοὺς ὁρῶντας ὑμῖν καὶ παρόντας μάρτυρας παρέξομαι. καί μοι κάλει Χιωνίδην Ξυπεταιῶνα καὶ Εὐθετίωνα Κυδαθηναιᾶ.*

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Χιωνίδης Ξυπεταιών, Εὐθετίων Κυδαθηναιεὺς μαρτυροῦσι κληθῆναι ὑπὸ Χαβρίου ἐπὶ δεῖπνον ὅτε τὰ ἐπινίκια εἱστία Χαβρίας τῆς νίκης τοῦ ἅρματος, καὶ εἱστιᾶσθαι ἐπὶ Κωλιάδι, καὶ εἰδέναι Φρυνίωνα παρόντα ἐν τῷ δείπνῳ τούτῳ ἔχοντα Νέαιραν τὴν νυνὶ ἀγωνιζομένην, καὶ καθεύδειν σφᾶς αὐτοὺς καὶ Φρυνίωνα καὶ Νέαιραν, καὶ αἰσθάνεσθαι αὐτοὶ ἀνισταμένους τῆς νυκτὸς πρὸς Νέαιραν ἄλλους τε καὶ τῶν διακόνων τινάς, οἳ ἦσαν Χαβρίου οἰκέται.*

Ἐπειδὴ τοίνυν ἀσελγῶς προυπηλακίζετο ὑπὸ τοῦ Φρυ- 35 *νίωνος καὶ οὐχ ὡς ᾤετο ἠγαπᾶτο, οὐδ' ὑπηρέτει αὐτῇ ἃ ἐβούλετο, συσκευασαμένη αὐτοῦ τὰ ἐκ τῆς οἰκίας καὶ ὅσα ἦν αὐτῇ ὑπ' ἐκείνου περὶ τὸ σῶμα κατεσκευασμένα ἱμάτια καὶ χρυσία, καὶ θεραπαίνας δύο, Θρᾷτταν καὶ ‖ Κοκκαλίνην, ἀποδιδράσκει εἰς Μέγαρα. ἦν δὲ ὁ χρόνος οὗτος ᾧ Ἀστεῖος μὲν ἦν ἄρχων Ἀθήνησιν, ὁ καιρὸς δὲ ἐν ᾧ ἐπολεμεῖθ' ὑμεῖς πρὸς τοὺς Λακεδαιμονίους τὸν ὕστερον πόλεμον. διατρίψασα δ' ἐν τοῖς Μεγάροις δύ' ἔτη, τόν τ' ἐπ'* 36 *Ἀστείου ἄρχοντος καὶ Ἀλκισθένους ἐνιαυτόν, ὡς αὐτῇ ἡ ἀπὸ τοῦ σώματος ἐργασία οὐχ ἱκανὴν εὐπορίαν παρεῖχεν ὥστε διοικεῖν τὴν οἰκίαν, — πολυτελὴς δ' ἦν, οἱ Μεγαρεῖς δ' ἀνελεύθεροι καὶ μικρολόγοι, ξένων δὲ οὐ πάνυ ἐπιδημία ἦν αὐτόθι διὰ τὸ πόλεμον εἶναι καὶ τοὺς Μεγαρέας λακωνίζειν, τῆς δὲ θαλάττης ὑμᾶς ἄρχειν· εἰς δὲ τὴν Κόρινθον οὐκ ἐξῆν αὐτῇ ἐπανελθεῖν διὰ τὸ ἐπὶ τούτῳ ἀπηλλάχθαι ἀπὸ τοῦ Εὐκράτους καὶ τοῦ Τιμανορίδου, ὥστ' ἐν Κορίνθῳ μὴ ἐργάζεσθαι. ὡς οὖν γίγνεται ἡ εἰρήνη ἡ ἐπὶ* 37

τὴν παρ' αὐτῆς νόμῳ πόλεως ἐν Λεύκτροις Θη-
ναι. καὶ εἶχον καὶ ἐχρῶν- ημήσαντα Στέφανον
30 μέλλοντες δὲ γαμεῖν μενον ὡς αὐτὴν ἑταίραν
λονται αὐτὴν σφί ηγησαμένη πάντα τὰ πε-
Κορίνθῳ ἐργαζο ρυνίωνος, καὶ ἐπιδοῦσα ἃ
ἡδέως ἂν αὐτ ἐπιθυμοῦσα μὲν τῆς ἐνθάδε
παρ' αὐτῆς ἣ ὸν Φρυνίωνα διὰ τὸ ἠδικηκέναι
θὸν ἔχουσα ίλως ἔχειν αὐτῇ, σοβαρὸν δὲ καὶ
χιλίας δρα τὸν τρόπον ὄντα, προΐσταται Στέ-
ἐκέλευον ἐπάρας δὲ αὐτὴν οὗτος ἐν τοῖς
δ' αὐτ καὶ φυσήσας, ὡς κλαύσοιτο ὁ Φρυνίων
νορίδ αὐτὸς δὲ γυναῖκα αὐτὴν ἕξων, τούς τε
ἐραι ὄντας αὐτῇ τότε εἰσάξων ‖ εἰς τοὺς φράτορας
νι ὄντας καὶ πολίτας ποιήσων, ἀδικήσοι δὲ οὐδείς
ἐ ἀφικνεῖται αὐτὴν ἔχων δεῦρο ἐκ τῶν Μεγάρων,
παιδία μετ' αὐτῆς τρία, Πρόξενον καὶ Ἀρίστωνα καὶ
31 ἣν νυνὶ Φανὼ καλοῦσιν. καὶ εἰσάγει αὐτὴν καὶ
παιδία εἰς τὸ οἰκίδιον ὃ ἦν αὐτῷ παρὰ τὸν ψιθυρι-
Ἑρμῆν, μεταξὺ τῆς Δωροθέου τοῦ Ἐλευσινίου οἰκίας
Κλεινομάχου, ἣν νυνὶ Σπίνθαρος παρ' αὐτοῦ ἐώ-
νηται ἑπτὰ μνῶν, ὥστε ἡ μὲν ὑπάρχουσα Στεφάνῳ οὐσία
αὕτη ἦν καὶ ἄλλο οὐδέν. δυοῖν δ' οὕνεκα ἦλθεν ἔχων αὐ-
τήν, ὡς ἐξ ἀτελείας τε ἕξων καλὴν ἑταίραν, καὶ τὰ ἐπι-
τήδεια ταύτην ἐργασομένην καὶ θρέψουσαν τὴν οἰκίαν· οὐ
γὰρ ἦν αὐτῷ ἄλλη πρόσοδος, ὅ τι μὴ συκοφαντήσας τι
40 λάβοι. πυθόμενος δὲ ὁ Φρυνίων ἐπιδημοῦσαν αὐτὴν καὶ οὖσαν παρὰ τούτῳ, παραλαβὼν νεανίσκους μεθ' ἑαυτοῦ καὶ ἐλθὼν ἐπὶ τὴν οἰκίαν τὴν τοῦ Στεφάνου ἦγεν αὐτήν. ἀφαιρουμένου δὲ τοῦ Στεφάνου κατὰ τὸν νόμον εἰς ἐλευθερίαν κατηγγύησεν αὐτὴν πρὸς τῷ πολεμάρχῳ. καὶ ὡς ἀληθῆ λέγω, τούτων αὐτὸν μάρτυρα ὑμῖν τὸν τότε πολέμαρχον παρέξομαι. καί μοι κάλει Αἰήτην Κειριάδην.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Αἰήτης Κειριάδης μαρτυρεῖ πολεμαρχοῦντος αὐτοῦ κατεγγυηθῆναι Νέαιραν τὴν νυνὶ ἀγωνιζομένην ὑπὸ Φρυνίωνος τοῦ Δημοχάρους ἀδελφοῦ, καὶ ἐγγυητὰς γενέσθαι Νεαίρας Στέφανον Ἐροιάδην, Γλαυκέτην Κηφισιέα, Ἀριστοκράτην Φαληρέα.*

41 Διεγγυηθεῖσα δ' ὑπὸ Στεφάνου καὶ οὖσα παρὰ τούτῳ

ν μὲν αὐτὴν ἐργασίαν οὐδὲν ἧττον ἢ πρότερον ‖ εἰργάτοὺς δὲ μισθοὺς μείζους ἐπράττετο τοὺς βουλομέὐτῇ πλησιάζειν, ὡς ἐπὶ προσχήματος ἤδη τινὸς ὶ ἀνδρὶ συνοικοῦσα. συνεσυκοφάντει δὲ καὶ οὗτος, ια ξένον ἀγνῶτα πλούσιον λάβοι ἐραστὴν αὐτῆς, ὡς ιχὸν ἐπ' αὐτῇ ἔνδον ἀποκλείων καὶ ἀργύριον πραττόμενος πολύ, εἰκότως. οὐσία μὲν γὰρ οὐχ ὑπῆρχε Στεφάνῳ 42
οὐδὲ Νεαίρᾳ, ὥστε τὰ καθ' ἡμέραν ἀναλώματα δύνασθαι ὑποφέρειν, ἡ δὲ διοίκησις συχνή, ὁπότε δέοι τοῦτόν τε καὶ αὐτὴν τρέφειν καὶ παιδάρια τρία, ἃ ἦλθεν ἔχουσα ὡς αὐτόν, καὶ θεραπαίνας δύο καὶ οἰκέτην διάκονον, ἄλλως τε καὶ μεμαθηκυῖα μὴ κακῶς ἔχειν τὰ ἐπιτήδεια ἑτέρων ἀναλισκόντων αὐτῇ τὸ πρότερον. οὔτε γὰρ ἀπὸ τῆς πολι- 43
τείας προσῄει Στεφάνῳ τούτῳ ἄξιον λόγου· οὐ γάρ πω ἦν ῥήτωρ, ἀλλ' ἔτι συκοφάντης τῶν παραβοώντων παρὰ τὸ βῆμα καὶ γραφομένων μισθοῦ καὶ φαινόντων καὶ ἐπιγραφομένων ταῖς ἀλλοτρίαις γνώμαις, ἕως ὑπέπεσε Καλλιστράτῳ τῷ Ἀφιδναίῳ· ἐξ ὅτου δὲ τρόπου καὶ δι' ἣν αἰτίαν, ἐγὼ ὑμῖν καὶ περὶ τούτου διέξειμι, ἐπειδὰν περὶ ταυτησὶ Νεαίρας ἐπιδείξω ὡς ἔστι ξένη καὶ ὡς μεγάλα ὑμᾶς ἠδίκηκε καὶ ὡς ἠσέβηκεν εἰς τοὺς θεούς, ἵν' εἰδῆτε 44
ὅτι καὶ αὐτὸς οὗτος ἄξιός ἐστιν οὐκ ἐλάττω δοῦναι δίκην ἢ καὶ Νέαιρα αὕτη, ἀλλὰ καὶ πολλῷ μείζω καὶ μᾶλλον, ὅσῳ Ἀθηναῖος φάσκων εἶναι οὕτω πολὺ τῶν νόμων καταπεφρόνηκε καὶ ὑμῶν καὶ τῶν θεῶν, ὥστ' οὐδ' ὑπὲρ τῶν ἡμαρτημένων αὐτῷ αἰσχυνόμενος τολμᾷ ἡσυχίαν ἄγειν, ἀλλὰ συκοφαντῶν ἄλλους τε καὶ ἐμὲ τουτονὶ πεποίηκεν αὐτὸν καὶ ταύτην εἰς ‖ τηλικοῦτον ἀγῶνα καταστῆσαι, ὥστε ἐξετασθῆναι μὲν ταύτην ἥτις ἐστίν, ἐξελεγχθῆναι δὲ τὴν αὐτοῦ πονηρίαν.

Λαχόντος τοίνυν αὐτῷ τοῦ Φρυνίωνος δίκην, ὅτι αὐτοῦ 45
ἀφείλετο Νέαιραν ταυτηνὶ εἰς ἐλευθερίαν, καὶ ὅτι, ἃ ἐξῆλθεν ἔχουσα παρ' αὐτοῦ αὕτη, ὑπεδέξατο, συνῆγον αὐτοὺς οἱ ἐπιτήδειοι καὶ ἔπεισαν δίαιταν ἐπιτρέψαι αὐτοῖς. καὶ ὑπὲρ μὲν τοῦ Φρυνίωνος διαιτητὴς ἐκαθέζετο Σάτυρος Ἀλωπεκῆθεν ὁ Λακεδαιμονίου ἀδελφός, ὑπὲρ δὲ Στεφάνου τουτουὶ Σαυρίας Λαμπτρεύς· κοινὸν δὲ αὐτοῖς προσ-

Φρασικλείδου ἄρχοντος καὶ ἡ μάχη ἡ ἐν Λεύκτροις Θη-
βαίων καὶ Λακεδαιμονίων, τότ᾽ ἐπιδημήσαντα Στέφανον
τουτονὶ εἰς τὰ Μέγαρα καὶ καταγόμενον ὡς αὐτὴν ἑταίραν
οὖσαν καὶ πλησιάσαντα αὐτῇ, διηγησαμένη πάντα τὰ πε-
πραγμένα καὶ τὴν ὕβριν τοῦ Φρυνίωνος, καὶ ἐπιδοῦσα ἃ
ἐξῆλθεν ἔχουσα παρ᾽ αὐτοῦ, ἐπιθυμοῦσα μὲν τῆς ἐνθάδε
οἰκήσεως, φοβουμένη δὲ τὸν Φρυνίωνα διὰ τὸ ἠδικηκέναι
μὲν αὐτήν, ἐκεῖνον δὲ ὀργίλως ἔχειν αὐτῇ, σοβαρὸν δὲ καὶ
ὀλίγωρον εἰδυῖα αὐτοῦ τὸν τρόπον ὄντα, προΐσταται Στέ-
38 *φανον τουτονὶ αὐτῆς. ἐπάρας δὲ αὐτὴν οὗτος ἐν τοῖς*
Μεγάροις τῷ λόγῳ καὶ φυσήσας, ὡς κλαύσοιτο ὁ Φρυνίων
εἰ ἅψαιτο αὐτῆς, αὐτὸς δὲ γυναῖκα αὐτὴν ἕξων, τούς τε
παῖδας τοὺς ὄντας αὐτῇ τότε εἰσάξων ‖ εἰς τοὺς φράτορας
ὡς αὑτοῦ ὄντας καὶ πολίτας ποιήσων, ἀδικήσοι δὲ οὐδεὶς
ἀνθρώπων, ἀφικνεῖται αὐτὴν ἔχων δεῦρο ἐκ τῶν Μεγάρων,
καὶ παιδία μετ᾽ αὐτῆς τρία, Πρόξενον καὶ Ἀρίστωνα καὶ
39 *θυγατέρα, ἣν νυνὶ Φανὼ καλοῦσιν. καὶ εἰσάγει αὐτὴν καὶ*
τὰ παιδία εἰς τὸ οἰκίδιον ὃ ἦν αὐτῷ παρὰ τὸν ψιθυρι-
στὴν Ἑρμῆν, μεταξὺ τῆς Δωροθέου τοῦ Ἐλευσινίου οἰκίας
καὶ τῆς Κλεινομάχου, ἣν νυνὶ Σπίνθαρος παρ᾽ αὐτοῦ ἐώ-
νηται ἑπτὰ μνῶν, ὥστε ἡ μὲν ὑπάρχουσα Στεφάνῳ οὐσία
αὕτη ἦν καὶ ἄλλο οὐδέν. δυοῖν δ᾽ οὕνεκα ἦλθεν ἔχων αὐ-
τήν, ὡς ἐξ ἀτελείας τε ἕξων καλὴν ἑταίραν, καὶ τὰ ἐπι-
τήδεια ταύτην ἐργασομένην καὶ θρέψουσαν τὴν οἰκίαν· οὐ
γὰρ ἦν αὐτῷ ἄλλη πρόσοδος, ὅ τι μὴ συκοφαντήσας τι
40 *λάβοι. πυθόμενος δὲ ὁ Φρυνίων ἐπιδημοῦσαν αὐτὴν καὶ*
οὖσαν παρὰ τούτῳ, παραλαβὼν νεανίσκους μεθ᾽ ἑαυτοῦ
καὶ ἐλθὼν ἐπὶ τὴν οἰκίαν τὴν τοῦ Στεφάνου ἦγεν αὐτήν.
ἀφαιρουμένου δὲ τοῦ Στεφάνου κατὰ τὸν νόμον εἰς ἐλευ-
θερίαν κατηγγύησεν αὐτὴν πρὸς τῷ πολεμάρχῳ. καὶ ὡς
ἀληθῆ λέγω, τούτων αὐτὸν μάρτυρα ὑμῖν τὸν τότε πολέ-
μαρχον παρέξομαι. καί μοι κάλει Αἰήτην Κειριάδην.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Αἰήτης Κειριάδης μαρτυρεῖ πολεμαρχοῦντος αὐτοῦ κατεγγυηθῆναι Νέαιραν τὴν νυνὶ ἀγωνιζομένην ὑπὸ Φρυνίωνος τοῦ Δημοχάρους ἀδελφοῦ, καὶ ἐγγυητὰς γενέσθαι Νεαίρας Στέφανον Ἐροιάδην, Γλαυκέτην Κηφισιέα, Ἀριστοκράτην Φαληρέα.*

41 *Διεγγυηθεῖσα δ᾽ ὑπὸ Στεφάνου καὶ οὖσα παρὰ τούτῳ*

τὴν μὲν αὐτὴν ἐργασίαν οὐδὲν ἧττον ἢ πρότερον ‖ εἰργά-
ζετο, τοὺς δὲ μισθοὺς μείζους ἐπράττετο τοὺς βουλομέ-
νους αὐτῇ πλησιάζειν, ὡς ἐπὶ προσχήματος ἤδη τινὸς
οὖσα καὶ ἀνδρὶ συνοικοῦσα. συνεσυκοφάντει δὲ καὶ οὗτος,
εἴ τινα ξένον ἀγνῶτα πλούσιον λάβοι ἐραστὴν αὐτῆς, ὡς
μοιχὸν ἐπ' αὐτῇ ἔνδον ἀποκλείων καὶ ἀργύριον πραττόμε-
νος πολύ, εἰκότως. οὐσία μὲν γὰρ οὐχ ὑπῆρχε Στεφάνῳ 42
οὐδὲ Νεαίρᾳ, ὥστε τὰ καθ' ἡμέραν ἀναλώματα δύνασθαι
ὑποφέρειν, ἡ δὲ διοίκησις συχνή, ὁπότε δέοι τοῦτόν τε
καὶ αὐτὴν τρέφειν καὶ παιδάρια τρία, ἃ ἦλθεν ἔχουσα ὡς
αὐτόν, καὶ θεραπαίνας δύο καὶ οἰκέτην διάκονον, ἄλλως
τε καὶ μεμαθηκυῖα μὴ κακῶς ἔχειν τὰ ἐπιτήδεια ἑτέρων
ἀναλισκόντων αὐτῇ τὸ πρότερον. οὔτε γὰρ ἀπὸ τῆς πολι- 43
τείας προσῄει Στεφάνῳ τούτῳ ἄξιον λόγου· οὐ γάρ πω
ἦν ῥήτωρ, ἀλλ' ἔτι συκοφάντης τῶν παραβοώντων παρὰ
τὸ βῆμα καὶ γραφομένων μισθοῦ καὶ φαινόντων καὶ ἐπι-
γραφομένων ταῖς ἀλλοτρίαις γνώμαις, ἕως ὑπέπεσε Καλ-
λιστράτῳ τῷ Ἀφιδναίῳ· ἐξ ὅτου δὲ τρόπου καὶ δι' ἣν
αἰτίαν, ἐγὼ ὑμῖν καὶ περὶ τούτου διέξειμι, ἐπειδὰν περὶ
ταυτησὶ Νεαίρας ἐπιδείξω ὡς ἔστι ξένη καὶ ὡς μεγάλα
ὑμᾶς ἠδίκηκε καὶ ὡς ἠσέβηκεν εἰς τοὺς θεούς, ἵν' εἰδῆτε 44
ὅτι καὶ αὐτὸς οὗτος ἄξιός ἐστιν οὐκ ἐλάττω δοῦναι δίκην
ἢ καὶ Νέαιρα αὐτη, ἀλλὰ καὶ πολλῷ μείζω καὶ μᾶλλον,
ὅσῳ Ἀθηναῖος φάσκων εἶναι οὕτω πολὺ τῶν νόμων κατα-
πεφρόνηκε καὶ ὑμῶν καὶ τῶν θεῶν, ὥστ' οὐδ' ὑπὲρ τῶν
ἡμαρτημένων αὐτῷ αἰσχυνόμενος τολμᾷ ἡσυχίαν ἄγειν,
ἀλλὰ συκοφαντῶν ἄλλους τε καὶ ἐμὲ τουτονὶ πεποίηκεν
αὐτὸν καὶ ταύτην εἰς ‖ τηλικοῦτον ἀγῶνα καταστῆσαι, ὥστε
ἐξετασθῆναι μὲν ταύτην ἥτις ἐστίν, ἐξελεγχθῆναι δὲ τὴν
αὐτοῦ πονηρίαν.

Λαχόντος τοίνυν αὐτῷ τοῦ Φρυνίωνος δίκην, ὅτι αὐτοῦ 45
ἀφείλετο Νέαιραν ταυτηνὶ εἰς ἐλευθερίαν, καὶ ὅτι, ἃ ἐξῆλ-
θεν ἔχουσα παρ' αὐτοῦ αὕτη, ὑπεδέξατο, συνῆγον αὐτοὺς
οἱ ἐπιτήδειοι καὶ ἔπεισαν δίαιταν ἐπιτρέψαι αὐτοῖς. καὶ
ὑπὲρ μὲν τοῦ Φρυνίωνος διαιτητὴς ἐκαθέζετο Σάτυρος
Ἀλωπεκῆθεν ὁ Λακεδαιμονίου ἀδελφός, ὑπὲρ δὲ Στεφά-
νου τουτουὶ Σαυρίας Λαμπτρεύς· κοινὸν δὲ αὐτοῖς προσ-

46 αἱροῦνται Διογείτονα Ἀχαρνέα. συνελθόντες δ' οὗτοι ἐν τῷ ἱερῷ, ἀκούσαντες ἀμφοτέρων καὶ αὐτῆς τῆς ἀνθρώπου τὰ πεπραγμένα, γνώμην ἀπεφήναντο, καὶ οὗτοι ἐνέμειναν αὐτῇ, τὴν μὲν ἄνθρωπον ἐλευθέραν εἶναι καὶ αὐτὴν αὑτῆς κυρίαν, ἃ δ' ἐξῆλθεν ἔχουσα Νέαιρα παρὰ Φρυνίωνος χωρὶς ἱματίων καὶ χρυσίων καὶ θεραπαινῶν, ἃ αὐτῇ τῇ ἀνθρώπῳ ἠγοράσθη, ἀποδοῦναι Φρυνίωνι πάντα· συνεῖναι δ' ἑκατέρῳ ἡμέραν παρ' ἡμέραν· ἐὰν δὲ καὶ ἄλλως πως ἀλλήλους πείθωσι, ταῦτα κύρια εἶναι· τὰ δ' ἐπιτήδεια τῇ ἀνθρώπῳ τὸν ἔχοντα ἀεὶ παρέχειν, καὶ ἐκ τοῦ λοιποῦ χρόνου φίλους εἶναι ἀλλήλοις καὶ μὴ μνησικακεῖν.

47 ἡ μὲν οὖν γνωσθεῖσα διαλλαγὴ ὑπὸ τῶν διαιτητῶν Φρυνίωνι καὶ Στεφάνῳ περὶ Νεαίρας ταυτησὶ αὕτη ἐστίν· ὅτι δ' ἀληθῆ λέγω ταῦτα, τούτων ὑμῖν τὴν μαρτυρίαν ἀναγνώσεται. κάλει μοι Σάτυρον Ἀλωπεκῆθεν, Σαυρίαν Λαμπτρέα, Διογείτονα Ἀχαρνέα.

|| ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Σάτυρος Ἀλωπεκῆθεν, Σαυρίας Λαμπτρεύς, Διογείτων Ἀχαρνεὺς μαρτυροῦσι διαλλάξαι διαιτηταὶ γενόμενοι περὶ Νεαίρας τῆς νυνὶ ἀγωνιζομένης Στέφανον καὶ Φρυνίωνα· τὰς δὲ διαλλαγὰς εἶναι, καθ' ἃς διήλλαξαν, οἵας παρέχεται Ἀπολλόδωρος.*

ΔΙΑΛΛΑΓΑΙ. *Κατὰ τάδε διήλλαξαν Φρυνίωνα καὶ Στέφανον, χρῆσθαι ἑκάτερον Νεαίρᾳ τὰς ἴσας ἡμέρας τοῦ μηνὸς παρ' ἑαυτοῖς ἔχοντας, ἂν μή τι ἄλλο αὐτοὶ αὑτοῖς συγχωρήσωσιν.*

48 Ὡς δ' ἀπηλλαγμένοι ἦσαν οἱ παρόντες ἑκατέρῳ ἐπὶ τῇ διαίτῃ καὶ τοῖς πράγμασιν, οἷον οἶμαι φιλεῖ γίγνεσθαι ἑκάστοτε, ἄλλως τε καὶ περὶ ἑταίρας οὔσης αὐτοῖς τῆς διαφορᾶς, ἐπὶ δεῖπνον ᾖεσαν ὡς ἑκάτερον αὐτῶν, ὁπότε καὶ Νέαιραν ἔχοιεν, καὶ αὐτὴ συνεδείπνει καὶ συνέπινεν ὡς ἑταίρα οὖσα. καὶ ὅτι ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, κάλει μοι μάρτυρας τοὺς συνόντας αὐτοῖς, Εὔβουλον Προβαλίσιον, Διοπείθην Μελιτέα, Κτήσωνα ἐκ Κεραμέων.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Εὔβουλος Προβαλίσιος, Διοπείθης Μελιτεύς, Κτήσων ἐκ Κεραμέων μαρτυροῦσιν, ἐπειδὴ αἱ διαλλαγαὶ ἐγένοντο αἱ περὶ Νεαίρας Φρυνίωνι καὶ Στεφάνῳ, πολλάκις συνδειπνῆσαι αὐτοῖς καὶ συμπίνειν μετὰ Νεαίρας τῆς νυνὶ ἀγωνιζομένης, καὶ ὁπότε παρὰ Στεφάνῳ εἴη Νέαιρα καὶ ὁπότε παρὰ Φρυνίωνι.*

49 Ὅτι μὲν τοίνυν ἐξ ἀρχῆς δούλη ἦν καὶ ἐπράθη δὶς καὶ εἰργάζετο τῷ σώματι ὡς ἑταίρα οὖσα, καὶ ἀπέδρα τὸν Φρυνίωνα εἰς Μέγαρα, καὶ ἥκουσα κατηγγυήθη ὡς ξένη

*οὖσα πρὸς τῷ πολεμάρχῳ, ‖ τῷ τε λόγῳ ἀποφαίνω ὑμῖν
καὶ μεμαρτύρηται· βούλομαι δ' ὑμῖν καὶ αὐτὸν Στέφανον
τουτονὶ ἐπιδεῖξαι καταμεμαρτυρηκότ' αὐτῆς ὡς ἔστι ξένη.
τὴν γὰρ θυγατέρα τὴν ταυτησὶ Νεαίρας, ἣν ἦλθεν ἔχουσα* 50
*ὡς τουτονὶ παιδάριον μικρόν, ἣν τότε μὲν Στρυβήλην ἐκά-
λουν νυνὶ δὲ Φανώ, ἐκδίδωσι Στέφανος οὑτοσὶ ὡς οὖσαν
αὑτοῦ θυγατέρα ἀνδρὶ Ἀθηναίῳ Φράστορι Αἰγιλιεῖ, καὶ
προῖκα ἐπ' αὐτῇ δίδωσι τριάκοντα μνᾶς. ὡς δ' ἦλθεν ὡς
τὸν Φράστορα, ἄνδρα ἐργάτην καὶ ἀκριβῶς τὸν βίον συν-
ειλεγμένον, οὐκ ἠπίστατο τοῖς τοῦ Φράστορος τρόποις
ἀρέσκειν, ἀλλ' ἐζήτει τὰ τῆς μητρὸς ἔθη καὶ τὴν παρ' αὐτῇ
ἀκολασίαν, ἐν τοιαύτῃ οἶμαι ἐξουσίᾳ τεθραμμένη. ὁρῶν* 51
*δ' ὁ Φράστωρ αὐτὴν οὔτε κοσμίαν οὖσαν οὔτ' ἐθέλουσαν
αὑτοῦ ἀκροᾶσθαι, ἅμα δὲ καὶ πεπυσμένος σαφῶς ἤδη ὅτι
Στεφάνου μὲν οὐκ εἴη θυγάτηρ Νεαίρας δέ, τὸ μὲν πρῶ-
τον ἐξηπατήθη, ὅτ' ἠγγυᾶτο ὡς Στεφάνου θυγατέρα λαμ-
βάνων καὶ οὐ Νεαίρας, ἀλλὰ τούτῳ ἐξ ἀστῆς αὐτὴν γυναι-
κὸς οὖσαν πρότερον πρὶν ταύτῃ συνοικῆσαι· ὀργισθεὶς δ'
ἐπὶ τούτοις ἅπασι, καὶ ὑβρίσθαι ἡγούμενος καὶ ἐξηπα-
τῆσθαι, ἐκβάλλει τὴν ἄνθρωπον ὡς ἐνιαυτὸν συνοικήσας
αὐτῇ, κυοῦσαν, καὶ τὴν προῖκα οὐκ ἀποδίδωσιν. λαχόντος* 52
*δὲ τοῦ Στεφάνου αὐτῷ δίκην σίτου εἰς ᾠδεῖον κατὰ τὸν
νόμον ὃς κελεύει, ἐὰν ἀποπέμπῃ τὴν γυναῖκα, ἀποδιδόναι
τὴν προῖκα, ἐὰν δὲ μή, ἐπ' ἐννέ' ὀβολοῖς τοκοφορεῖν, καὶ
σίτου εἰς ᾠδεῖον εἶναι δικάσασθαι ὑπὲρ τῆς γυναικὸς τῷ
κυρίῳ, γράφεται ὁ Φράστωρ Στέφανον τουτονὶ γραφὴν
πρὸς τοὺς θεσμοθέτας, ‖ Ἀθηναῖον ὄντα ξένης θυγατέρα
αὑτῷ ἐγγυῆσαι ὡς αὑτῷ προσήκουσαν, κατὰ τὸν νόμον
τουτονί. καί μοι ἀνάγνωθι αὐτόν.*

ΝΟΜΟΣ. *Ἐὰν δέ τις ἐκδῷ ξένην γυναῖκα ἀνδρὶ Ἀθηναίῳ ὡς ἑαυτῷ προσήκουσαν, ἄτιμος ἔστω, καὶ ἡ οὐσία αὐτοῦ δημοσία ἔστω, καὶ τοῦ ἑλόντος τὸ τρίτον μέρος. γραφέσθων δὲ πρὸς τοὺς θεσμοθέτας οἷς ἔξεστι, καθάπερ τῆς ξενίας.*

Τὸν μὲν τοίνυν νόμον ἀνέγνω ὑμῖν, καθ' ὃν ἐγράφη 53
*Στέφανος οὑτοσὶ ὑπὸ τοῦ Φράστορος πρὸς τοὺς θεσμο-
θέτας· γνοὺς δ' ὅτι κινδυνεύσει ἐξελεγχθεὶς ξένης θυγα-
τέρα ἐγγεγυηκέναι [καὶ] ταῖς ἐσχάταις ζημίαις περιπεσεῖν,*

63 *βόντα, Φράστορα δ' ἐκβαλόντα τὴν θυγατέρα τὴν Νεαίρας
ταυτησὶ γήμαντά γε, ἐπειδὴ ἐπύθετο οὐ Στεφάνου οὖσαν,
καὶ τὴν προῖκα οὐκ ἀποδόντα, ἐπειδή τε ἐπείσθη ὕστερον
διὰ τὴν ἀσθένειαν τὴν αὑτοῦ καὶ τὴν ἀπαιδίαν καὶ τὴν
ἔχθραν τὴν πρὸς τοὺς οἰκείους ποιήσασθαι τὸν υἱόν, καὶ
ἐπεὶ εἰσῆγεν εἰς τοὺς γεννήτας, ἀποψηφισαμένων τῶν
γεννητῶν καὶ διδόντων ὅρκον αὐτῷ οὐκ ἐθελήσαντα ὀμό-
σαι, ἀλλὰ μᾶλλον εὐορκεῖν προελόμενον, καὶ ἑτέραν ὕστε-
ρον γήμαντα γυναῖκα ἀστὴν κατὰ τὸν νόμον· αὗται γὰρ αἱ
πράξεις περιφανεῖς οὖσαι μεγάλας μαρτυρίας δεδώκασι
κατ' αὐτῶν ὅτι ἔστι ξένη Νέαιρα αὕτη.*

64 *Σκέψασθε δὲ καὶ τὴν αἰσχροκέρδειαν τὴν Στεφάνου
τουτουὶ καὶ τὴν πονηρίαν, ἵνα καὶ ἐκ ταύτης εἰδῆτε ὅτι
οὐκ ἔστι Νέαιρα αὕτη ἀστή. Ἐπαίνετον γὰρ τὸν Ἄνδριον
ἐραστὴν ὄντα Νεαίρας ταυτησὶ παλαιὸν καὶ πολλὰ ἀνη-
λωκότα εἰς αὐτὴν καὶ καταγόμενον παρὰ τούτοις ὁπότε
65 ἐπιδημήσειεν Ἀθήναζε διὰ τὴν φιλίαν τὴν Νεαίρας, ‖ ἐπι-
βουλεύσας ὁ Στέφανος οὑτοσί, μεταπεμψάμενος εἰς ἀγρὸν
ὡς θύων, λαμβάνει μοιχὸν ἐπὶ τῇ θυγατρὶ τῆς Νεαίρας
ταυτησί, καὶ εἰς φόβον καταστήσας πράττεται μνᾶς τριά-
κοντα, καὶ λαβὼν ἐγγυητὰς τούτων Ἀριστόμαχόν τε τὸν
θεσμοθετήσαντα καὶ Ναυσίφιλον τὸν Ναυσινίκου τοῦ ἄρ-
ξαντος υἱὸν ἀφίησιν ὡς ἀποδώσοντ' αὐτῷ τὸ ἀργύριον.
66 ἐξελθὼν δὲ ὁ Ἐπαίνετος καὶ αὐτὸς αὑτοῦ κύριος γενόμε-
νος γράφεται πρὸς τοὺς θεσμοθέτας γραφὴν Στέφανον
τουτονί, ἀδίκως εἰρχθῆναι ὑπ' αὐτοῦ, κατὰ τὸν νόμον ὃς
κελεύει, ἐάν τις ἀδίκως εἵρξῃ ὡς μοιχόν, γράψασθαι πρὸς
τοὺς θεσμοθέτας ἀδίκως εἰρχθῆναι, κἂν μὲν ἕλῃ τὸν εἵρ-
ξαντα καὶ δόξῃ ἀδίκως ἐπιβεβουλεῦσθαι, ἀθῷον εἶναι
αὐτὸν καὶ τοὺς ἐγγυητὰς ἀπηλλάχθαι τῆς ἐγγύης· ἐὰν δὲ
δόξῃ μοιχὸς εἶναι, παραδοῦναι αὐτὸν κελεύει τοὺς ἐγγυη-
τὰς τῷ ἑλόντι, ἐπὶ δὲ τοῦ δικαστηρίου ἄνευ ἐγχειριδίου
67 χρῆσθαι ὅ τι ἂν βουληθῇ ὡς μοιχῷ ὄντι. κατὰ δὴ τοῦτον
τὸν νόμον γράφεται αὐτὸν ὁ Ἐπαίνετος, καὶ ὡμολόγει μὲν
χρῆσθαι τῇ ἀνθρώπῳ, οὐ μέντοι μοιχός γε εἶναι· οὔτε
γὰρ Στεφάνου θυγατέρα αὐτὴν εἶναι ἀλλὰ Νεαίρας, τήν
τε μητέρα αὐτῆς συνειδέναι πλησιάζουσαν αὐτῷ, ἀνηλω-*

κέναι τε πολλὰ εἰς αὐτάς, τρέφειν τε ὁπότε ἐπιδημήσειε
τὴν οἰκίαν ὅλην· τόν τε νόμον ἐπὶ τούτοις παρεχόμενος, ὃς
οὐκ ἐᾷ ἐπὶ ταύταις μοιχὸν λαβεῖν ὁπόσαι ἂν ἐπ' ἐργαστη-
ρίου καθῶνται ἢ ἐν τῇ ἀγορᾷ πωλῶσί τι ἀποπεφασμένως,
ἐργαστήριον φάσκων καὶ τοῦτο εἶναι, τὴν Στεφάνου οἰκίαν,
καὶ τὴν ἐργασίαν ταύτην εἶναι καὶ ἀπὸ τούτων αὐτὸν εὐπο-
ρεῖν ‖ μάλιστα. τούτους δὲ τοὺς λόγους λέγοντος τοῦ Ἐπαι- 68
νέτου καὶ τὴν γραφὴν γεγραμμένου, γνοὺς Στέφανος οὑτοσὶ
ὅτι ἐξελεγχθήσεται πορνοβοσκῶν καὶ συκοφαντῶν, δίαιταν
ἐπιτρέπει πρὸς τὸν Ἐπαίνετον αὐτοῖς τοῖς ἐγγυηταῖς, ὥστε
τῆς μὲν ἐγγύης αὐτοὺς ἀφεῖσθαι, τὴν δὲ γραφὴν ἀνελέσθαι
τὸν Ἐπαίνετον. πεισθέντος δὲ τοῦ Ἐπαινέτου ἐπὶ τούτοις 69
καὶ ἀνελομένου τὴν γραφὴν ἣν ἐδίωκε Στέφανον, γενομένης
συνόδου αὐτοῖς καὶ καθεζομένων διαιτητῶν τῶν ἐγγυητῶν
δίκαιον μὲν οὐδὲν εἶχε λέγειν Στέφανος, εἰς ἔκδοσιν δ' ἠξίου
τὸν Ἐπαίνετον τῇ τῆς Νεαίρας θυγατρὶ συμβαλέσθαι, λέ-
γων τὴν ἀπορίαν τὴν αὑτοῦ καὶ τὴν ἀτυχίαν τὴν πρότερον
γενομένην τῇ ἀνθρώπῳ πρὸς τὸν Φράστορα, καὶ ὅτι ἀπο-
λωλεκὼς εἴη τὴν προῖκα καὶ οὐκ ἂν δύναιτο πάλιν αὐτὴν
ἐκδοῦναι· "σὺ δὲ καὶ κέχρησαι" ἔφη "τῇ ἀνθρώπῳ, καὶ δί- 70
καιος εἶ ἀγαθόν τι ποιῆσαι αὐτήν," καὶ ἄλλους ἐπαγωγοὺς
λόγους, οὓς ἄν τις δεόμενος ἐκ πονηρῶν πραγμάτων εἴπειεν
ἄν. ἀκούσαντες δ' ἀμφοτέρων αὐτῶν οἱ διαιτηταὶ διαλλάτ-
τουσιν αὐτούς, καὶ πείθουσι τὸν Ἐπαίνετον χιλίας δραχμὰς
εἰσενεγκεῖν εἰς τὴν ἔκδοσιν τῇ θυγατρὶ τῆς Νεαίρας. καὶ
ὅτι πάντα ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, τούτων ὑμῖν μάρτυρας αὐ-
τοὺς τοὺς ἐγγυητὰς καὶ διαιτητὰς γενομένους καλῶ.

ΜΑΡΤΥΡΕΣ. *Ναυσίφιλος Κεφαλῆθεν, Ἀριστόμαχος Κεφαλῆθεν* 71
*μαρτυροῦσιν ἐγγυηταὶ γενέσθαι Ἐπαινέτου τοῦ Ἀνδρίου, ὅτ' ἔφη
Στέφανος μοιχὸν εἰληφέναι Ἐπαίνετον· καὶ ἐπειδὴ ἐξῆλθεν Ἐπαίνε-
τος παρὰ Στεφάνου καὶ κύριος ἐγένετο αὑτοῦ, γράψασθαι ‖ γραφὴν
Στέφανον πρὸς τοὺς θεσμοθέτας, ὅτι αὐτὸν ἀδίκως εἷρξε· καὶ αὐτοὶ
διαλλακταὶ γενόμενοι διαλλάξαι Ἐπαίνετον καὶ Στέφανον· τὰς δὲ
διαλλαγὰς εἶναι ἃς παρέχεται Ἀπολλόδωρος.*

ΔΙΑΛΛΑΓΑΙ. *Ἐπὶ τοῖσδε διήλλαξαν Στέφανον καὶ Ἐπαίνετον οἱ
διαλλακταί, τῶν μὲν γεγενημένων περὶ τὸν εἱργμὸν μηδεμίαν μνείαν
ἔχειν, Ἐπαίνετον δὲ δοῦναι χιλίας δραχμὰς Φανοῖ εἰς ἔκδοσιν, ἐπειδὴ
κέχρηται αὐτῇ πολλάκις· Στέφανον δὲ παρέχειν Φανὼ Ἐπαινέτῳ,
ὁπόταν ἐπιδημῇ καὶ βούληται συνεῖναι αὐτῇ.*

72 *Τὴν τοίνυν περιφανῶς ἐγνωσμένην ξένην εἶναι καὶ ἐφ'*
ᾗ μοιχὸν οὗτος ἐτόλμησε λαβεῖν, εἰς τοσοῦτον ὕβρεως καὶ
ἀναιδείας ἦλθε Στέφανος οὑτοσὶ καὶ Νέαιρα αὕτη ὥστ'
ἐτόλμησαν μὴ ἀγαπᾶν εἰ ἔφασκον αὐτὴν ἀστὴν εἶναι· ἀλλὰ
κατιδόντες Θεογένην Κοθωκίδην λαχόντα βασιλέα, ἄνθρω-
πον εὐγενῆ μὲν πένητα δὲ καὶ ἄπειρον πραγμάτων, συμ-
παραγενόμενος αὐτῷ δοκιμαζομένῳ καὶ συνευπορήσας ἀνα-
λωμάτων, ὅτε εἰσῄει εἰς τὴν ἀρχήν, Στέφανος οὑτοσί, καὶ
ὑπελθὼν καὶ τὴν ἀρχὴν παρ' αὐτοῦ πριάμενος, πάρεδρος
γενόμενος, δίδωσι τὴν ἄνθρωπον ταύτην γυναῖκα, τὴν τῆς
Νεαίρας θυγατέρα, καὶ ἐγγυᾷ Στέφανος οὑτοσὶ ὡς αὑτοῦ
θυγατέρα οὖσαν· οὕτω πολὺ τῶν νόμων καὶ ὑμῶν κατε-
73 *φρόνησεν. καὶ αὕτη ἡ γυνὴ ὑμῖν ἔθυε τὰ ἄρρητα ἱερὰ*
ὑπὲρ τῆς πόλεως, καὶ εἶδεν ἃ οὐ προσῆκεν αὐτὴν ὁρᾶν
ξένην οὖσαν, καὶ τοιαύτη οὖσα εἰσῆλθεν οἷ οὐδεὶς ἄλλος
Ἀθηναίων τοσούτων ὄντων εἰσέρχεται ἀλλ' ἡ τοῦ βασι-
λέως γυνή, ἐξώρκωσέ τε τὰς γεραιρὰς τὰς ὑπηρετούσας
τοῖς ἱεροῖς, ἐξεδόθη δὲ τῷ ‖ Διονύσῳ γυνή, ἔπραξε δὲ
ὑπὲρ τῆς πόλεως τὰ πάτρια τὰ πρὸς τοὺς θεούς, πολλὰ
καὶ ἅγια καὶ ἀπόρρητα. ἃ δὲ μηδ' ἀκοῦσαι πᾶσιν οἷόν τ'
ἐστί, πῶς ποιῆσαί γε τῇ ἐπιτυχούσῃ εὐσεβῶς ἔχει, ἄλλως
τε καὶ τοιαύτῃ γυναικὶ καὶ τοιαῦτα ἔργα διαπεπραγμένῃ;
74 *Βούλομαι δ' ὑμῖν ἀκριβέστερον περὶ αὐτῶν ἄνωθεν*
διηγήσασθαι καθ' ἕκαστον, ἵνα μᾶλλον ἐπιμέλειαν ποιή-
σησθε τῆς τιμωρίας, καὶ εἰδῆτε ὅτι οὐ μόνον ὑπὲρ ὑμῶν
αὐτῶν καὶ τῶν νόμων τὴν ψῆφον οἴσετε ἀλλὰ καὶ τῆς
πρὸς τοὺς θεοὺς εὐλαβείας, τιμωρίαν ὑπὲρ τῶν ἠσεβη-
μένων ποιούμενοι καὶ κολάζοντες τοὺς ἠδικηκότας. τὸ
γὰρ ἀρχαῖον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι δυναστεία ἐν τῇ πόλει
ἦν καὶ ἡ βασιλεία τῶν ἀεὶ ὑπερεχόντων διὰ τὸ αὐτόχθο-
νας εἶναι, τὰς δὲ θυσίας ἁπάσας ὁ βασιλεὺς ἔθυε, καὶ
τὰς σεμνοτάτας καὶ ἀρρήτους ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἐποίει, εἰκό-
75 *τως, βασίλιννα οὖσα. ἐπειδὴ δὲ Θησεὺς συνῴκισεν αὐτοὺς*
καὶ δημοκρατίαν ἐποίησε καὶ ἡ πόλις πολυάνθρωπος ἐγέ-
νετο, τὸν μὲν βασιλέα οὐδὲν ἧττον ὁ δῆμος ᾑρεῖτο ἐκ
προκρίτων κατ' ἀνδραγαθίαν χειροτονῶν, τὴν δὲ γυναῖκα
αὐτοῦ νόμον ἔθεντο ἀστὴν εἶναι καὶ μὴ ἐπιμεμιγμένην

ἑτέρῳ ἀνδρὶ ἀλλὰ παρθένον γαμεῖν, ἵνα κατὰ τὰ πάτρια θύηται τὰ ἄρρητα ἱερὰ ὑπὲρ τῆς πόλεως καὶ τὰ νομιζόμενα γίγνηται τοῖς θεοῖς εὐσεβῶς καὶ μηδὲν καταλύηται μηδὲ καινοτομῆται. καὶ τοῦτον τὸν νόμον γράψαντες ἐν 76
στήλῃ λιθίνῃ ἔστησαν ἐν τῷ ἱερῷ τοῦ Διονύσου παρὰ τὸν βωμὸν ἐν Λίμναις. καὶ αὕτη ἡ στήλη ἔτι καὶ νῦν ἕστηκεν, ἀμυδροῖς γράμμασιν Ἀττικοῖς δηλοῦσα τὰ γεγραμμένα· ἣν μαρτυρίαν ποιούμενος ὁ δῆμος ὑπὲρ τῆς αὑτοῦ εὐσεβείας ‖ πρὸς τὸν θεὸν καὶ παρακαταθήκην καταλείπων τοῖς ἐπιγιγνομένοις, ὅτι τήν γε σοὶ γυναῖκα δοθησομένην καὶ ποιήσουσαν τὰ ἱερὰ τοιαύτην ἀξιοῦμεν εἶναι. καὶ διὰ ταῦτα ἐν τῷ ἀρχαιοτάτῳ ἱερῷ τοῦ Διονύσου καὶ ἁγιωτάτῳ ἐν Λίμναις ἔστησαν, ἵνα μὴ πολλοὶ εἰδῶσι τὰ γεγραμμένα· ἅπαξ γὰρ τοῦ ἐνιαυτοῦ ἑκάστου ἀνοίγεται, τῇ δωδεκάτῃ τοῦ ἀνθεστηριῶνος μηνός. ὑπὲρ τοίνυν ἁγίων καὶ σεμνῶν 77
ἱερῶν, ὧν οἱ πρόγονοι ὑμῶν οὕτω καλῶς καὶ μεγαλοπρεπῶς ἐπεμελήθησαν, ἄξιον καὶ ὑμᾶς σπουδάσαι ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ τοὺς ἀσελγῶς μὲν καταφρονοῦντας τῶν νόμων τῶν ὑμετέρων ἀναιδῶς δ' ἠσεβηκότας εἰς τοὺς θεοὺς ἄξιον τιμωρήσασθαι, δυεῖν ἕνεκα, ἵνα οὗτοί τε τῶν ἠδικημένων δίκην δῶσιν, οἵ τ' ἄλλοι πρόνοιαν ποιῶνται καὶ φοβῶνται μηδὲν εἰς τοὺς θεοὺς καὶ τὴν πόλιν ἁμαρτάνειν.

Βούλομαι δὲ ὑμῖν καὶ τὸν ἱεροκήρυκα καλέσαι, ὃς ὑπη- 78
ρετεῖ τῇ τοῦ βασιλέως γυναικί, ὅταν ἐξορκοῖ τὰς γεραιρὰς ἐν κανοῖς πρὸς τῷ βωμῷ πρὶν ἅπτεσθαι τῶν ἱερῶν, ἵνα καὶ τοῦ ὅρκου καὶ τῶν λεγομένων ἀκούσητε, ὅσα οἷόν τ' ἐστὶν ἀκούειν, καὶ εἰδῆτε ὡς σεμνὰ καὶ ἅγια καὶ ἀρχαῖα τὰ νόμιμα ἐστίν.

ΟΡΚΟΣ ΓΕΡΑΙΡΩΝ. *Ἁγιστεύω καὶ εἰμὶ καθαρὰ καὶ ἁγνὴ ἀπὸ τῶν ἄλλων τῶν οὐ καθαρευόντων καὶ ὑπ' ἀνδρὸς συνουσίας, καὶ τὰ θεόγνια καὶ τὰ ἰοβάκχεια γεραίρω τῷ Διονύσῳ κατὰ τὰ πάτρια καὶ ἐν τοῖς καθήκουσι χρόνοις.*

Τοῦ μὲν ὅρκου τοίνυν καὶ τῶν νομιζομένων πατρίων, 79
ὅσα οἷόν τ' ἐστὶν εἰπεῖν, ἀκηκόατε, καὶ ὡς ἣν Στέφανος ἠγγύησε τῷ Θεογένει γυναῖκα βασιλεύοντι ὡς αὑτοῦ οὖσαν θυγατέρα, αὕτη ἐποίει ‖ τὰ ἱερὰ ταῦτα καὶ ἐξώρκου τὰς γεραιράς, καὶ ὅτι οὐδ' αὐταῖς ταῖς δρώσαις τὰ ἱερὰ ταῦτα

οἷόν τ᾽ ἐστὶ λέγειν πρὸς ἄλλον οὐδένα. φέρε δὴ καὶ μαρ-
τυρίαν παράσχωμαι ὑμῖν δι᾽ ἀπορρήτου μὲν γεγενημένην,
ὅμως δὲ αὐτοῖς τοῖς πεπραγμένοις ἐπιδείξω φανερὰν οὖ-
80 σαν αὐτὴν καὶ ἀληθῆ. ὡς γὰρ ἐγένετο τὰ ἱερὰ ταῦτα καὶ
ἀνέβησαν εἰς Ἄρειον πάγον οἱ ἐννέα ἄρχοντες ταῖς καθη-
κούσαις ἡμέραις, εὐθὺς ἡ βουλὴ ἡ ἐν Ἀρείῳ πάγῳ, ὥσ-
περ καὶ τἆλλα πολλοῦ ἀξία ἐστὶ τῇ πόλει περὶ εὐσέβειαν,
ἐζήτει τὴν γυναῖκα ταύτην τοῦ Θεογένους ἥτις ἦν, καὶ ἐξή-
λεγχε, καὶ περὶ τῶν ἱερῶν πρόνοιαν ἐποιεῖτο, καὶ ἐζημίου
τὸν Θεογένην ὅσα κυρία ἐστίν, ἐν ἀπορρήτῳ δὲ καὶ διὰ
κοσμιότητος· οὐ γὰρ αὐτοκράτορές εἰσιν, ὡς ἂν βούλων-
81 ται, Ἀθηναίων τινὰ κολάσαι. γενομένων δὲ λόγων, καὶ χα-
λεπῶς φερούσης τῆς ἐν Ἀρείῳ πάγῳ βουλῆς καὶ ζημιούσης
τὸν Θεογένην ὅτι τοιαύτην ἔλαβε γυναῖκα καὶ ταύτην εἴασε
ποιῆσαι τὰ ἱερὰ τὰ ἄρρητα ὑπὲρ τῆς πόλεως, ἐδεῖτο ὁ
Θεογένης ἱκετεύων καὶ ἀντιβολῶν, λέγων ὅτι οὐκ ᾔδει
Νεαίρας αὐτὴν οὖσαν θυγατέρα ἀλλ᾽ ἐξαπατηθείη ὑπὸ
Στεφάνου, ὡς αὐτοῦ θυγατέρα οὖσαν αὐτὴν λαμβάνων
γνησίαν κατὰ τὸν νόμον, καὶ διὰ τὴν ἀπειρίαν τῶν πρα-
γμάτων καὶ τὴν ἀκακίαν τὴν ἑαυτοῦ τοῦτον πάρεδρον
ποιήσαιτο, ἵνα διοικήσῃ τὴν ἀρχήν, ὡς εὔνουν ὄντα, καὶ
82 διὰ τοῦτο κηδεύσειεν αὐτῷ. ὅτι δέ, ἔφη, οὐ ψεύδομαι,
μεγάλῳ τεκμηρίῳ καὶ περιφανεῖ ἐπιδείξω ὑμῖν· τὴν γὰρ
ἄνθρωπον ἀποπέμψω ἐκ τῆς οἰκίας, ἐπειδὴ οὐκ ἔστι Στε-
φάνου θυγάτηρ ἀλλὰ Νεαίρας. κἂν μὲν ταῦτα ποιήσω,
ἤδη || πιστοὶ ὑμῖν ἔστωσαν οἱ λόγοι οἱ παρ᾽ ἐμοῦ λεγόμε-
νοι, ὅτι ἐξηπατήθην· ἐὰν δὲ μὴ ποιήσω, τότ᾽ ἤδη με κο-
λάζετε ὡς πονηρὸν ὄντα καὶ εἰς τοὺς θεοὺς ἠσεβηκότα.
83 ὑποσχομένου δὲ ταῦτα τοῦ Θεογένους καὶ δεομένου, ἅμα
μὲν καὶ ἐλεήσασα αὐτὸν ἡ ἐν Ἀρείῳ πάγῳ βουλὴ διὰ τὴν
ἀκακίαν τοῦ τρόπου, ἅμα δὲ καὶ ἐξηπατῆσθαι τῇ ἀλη-
θείᾳ ἡγουμένη ὑπὸ τοῦ Στεφάνου, ἐπέσχεν. ὡς δὲ κατέβη
ἐξ Ἀρείου πάγου ὁ Θεογένης, εὐθὺς τήν τε ἄνθρωπον τὴν
ταυτησὶ Νεαίρας θυγατέρα ἐκβάλλει ἐκ τῆς οἰκίας, τόν
τε Στέφανον τὸν ἐξαπατήσαντα αὐτὸν τουτονὶ ἀπελαύνει
ἀπὸ τοῦ συνεδρίου. καὶ οὕτως ἐπαύσαντο οἱ Ἀρεοπαγῖται
κρίνοντες τὸν Θεογένην καὶ ὀργιζόμενοι αὐτῷ, καὶ συγ-

γνώμην εἶχον ἐξαπατηθέντι. καὶ ὅτι ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, 84
τούτων ὑμῖν μάρτυρα αὐτὸν τὸν Θεογένην καλῶ καὶ ἀναγκάσω μαρτυρεῖν. κάλει μοι Θεογένην Ἐρχιέα.

ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Θεογένης Ἐρχιεὺς μαρτυρεῖ, ὅτε αὐτὸς ἐβασίλευε, γῆμαι Φανὼ ὡς Στεφάνου οὖσαν θυγατέρα, ἐπεὶ δὲ ᾔσθετο ἐξηπατημένος, τήν τε ἄνθρωπον ἐκβαλεῖν καὶ οὐκέτι συνοικεῖν αὐτῇ, καὶ Στέφανον ἀπελάσαι ἀπὸ τῆς παρεδρίας καὶ οὐκ ἐᾶν ἔτι παρεδρεύειν αὐτῷ.*

Λαβὲ δή μοι τὸν νόμον ἐπὶ τούτοις τουτονὶ καὶ ἀνά- 85
γνωθι, ἵν' εἰδῆτε ὅτι οὐ μόνον προσῆκεν αὐτὴν ἀπέχεσθαι τῶν ἱερῶν τούτων τοιαύτην οὖσαν καὶ τοιαῦτα διαπεπραγμένην, τοῦ ὁρᾶν καὶ θύειν καὶ ποιεῖν τι τῶν νομιζομένων ὑπὲρ τῆς πόλεως πατρίων, ἀλλὰ καὶ τῶν ἄλλων τῶν Ἀθήνησιν ἁπάντων. ἐφ' ᾗ γὰρ ἂν μοιχὸς ἁλῷ γυναικί, οὐκέτ' ‖ ἔξεστιν αὐτῇ ἐλθεῖν εἰς οὐδὲν τῶν ἱερῶν τῶν δημοτελῶν, εἰς ὃ καὶ τὴν ξένην καὶ τὴν δούλην ἐλθεῖν ἐξουσίαν ἔδοσαν οἱ νόμοι καὶ θεασομένην καὶ ἱκετεύσουσαν εἰσιέναι· ἀλλὰ μόναις ταύταις ἀπαγορεύουσιν οἱ νόμοι 86
ταῖς γυναιξὶ μὴ εἰσιέναι εἰς τὰ ἱερὰ τὰ δημοτελῆ, ἐφ' ᾗ ἂν μοιχὸς ἁλῷ, ἐὰν δ' εἰσίωσι καὶ παρανομῶσι, νηποινεὶ πάσχειν ὑπὸ τοῦ βουλομένου ὅ τι ἂν πάσχῃ, πλὴν θανάτου. καὶ ἔδωκεν ὁ νόμος τὴν τιμωρίαν ὑπὲρ αὐτῶν τῷ ἐντυχόντι. διὰ τοῦτο δ' ἐποίησεν ὁ νόμος, πλὴν θανάτου, τἆλλα ὑβρισθεῖσαν αὐτὴν μηδαμοῦ λαβεῖν δίκην, ἵνα μὴ μιάσματα μηδ' ἀσεβήματα γίγνηται ἐν τοῖς ἱεροῖς, ἱκανὸν φόβον ταῖς γυναιξὶ παρασκευάζων τοῦ σωφρονεῖν καὶ μηδὲν ἁμαρτάνειν ἀλλὰ δικαίως οἰκουρεῖν, διδάσκων ὡς, ἄν τι ἁμάρτῃ τούτων, ἅμα ἔκ τε τῆς οἰκίας τοῦ ἀνδρὸς ἐκβεβλημένη ἔσται καὶ ἐκ τῶν ἱερῶν τῶν τῆς πόλεως. καὶ 87
ὅτι ταῦθ' οὕτως ἔχει, τοῦ νόμου αὐτοῦ ἀκούσαντες ἀναγνωσθέντος εἴσεσθε. καί μοι λαβὲ τὸν νόμον.

ΝΟΜΟΣ ΜΟΙΧΕΙΑΣ. *Ἐπειδὰν δὲ ἕλῃ τὸν μοιχόν, μὴ ἐξέστω τῷ ἑλόντι συνοικεῖν τῇ γυναικί· ἐὰν δὲ συνοικῇ, ἄτιμος ἔστω. μηδὲ τῇ γυναικὶ ἐξέστω εἰσιέναι εἰς τὰ ἱερὰ τὰ δημοτελῆ, ἐφ' ᾗ ἂν μοιχὸς ἁλῷ· ἐὰν δ' εἰσίῃ, νηποινεὶ πασχέτω ὅ τι ἂν πάσχῃ, πλὴν θανάτου.*

Βούλομαι τοίνυν ὑμῖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ τοῦ δή- 88
μου τοῦ Ἀθηναίων μαρτυρίαν παρασχέσθαι, ὡς σπουδάζει περὶ τὰ ἱερὰ ταῦτα καὶ ὡς πολλὴν πρόνοιαν περὶ αὐτῶν

πεποίηται. ὁ γὰρ δῆμος ὁ Ἀθηναίων ‖ κυριώτατος ὢν τῶν
ἐν τῇ πόλει ἁπάντων, καὶ ἐξὸν αὐτῷ ποιεῖν ὅ τι ἂν βού-
ληται, οὕτω καλὸν καὶ σεμνὸν ἡγήσατ᾽ εἶναι δῶρον τὸ
Ἀθηναῖον γενέσθαι ὥστε νόμους ἔθετο αὐτῷ καθ᾽ οὓς
ποιεῖσθαι δεῖ, ἐάν τινα βούλωνται, πολίτην, οἳ νῦν προ-
πεπηλακισμένοι εἰσὶν ὑπὸ Στεφάνου τουτουὶ καὶ τῶν οὕτω
89 γεγαμηκότων. ὅμως δ᾽ ἀκούοντες αὐτῶν βελτίους ἔσεσθε,
καὶ τὰ κάλλιστα καὶ τὰ σεμνότατα δῶρα τοῖς εὐεργετοῦσι
τὴν πόλιν διδόμενα γνώσεσθε ὡς λελυμασμένοι εἰσίν.
πρῶτον μὲν γὰρ νόμος ἐστὶ τῷ δήμῳ κείμενος μὴ ἐξεῖναι
ποιήσασθαι Ἀθηναῖον ὃν ἂν μὴ δι᾽ ἀνδραγαθίαν εἰς τὸν
δῆμον τὸν Ἀθηναίων ἄξιον ᾖ γενέσθαι πολίτην. ἔπειτ᾽
ἐπειδὰν πεισθῇ ὁ δῆμος καὶ δῷ τὴν δωρεάν, οὐκ ἐᾷ κυ-
ρίαν γενέσθαι τὴν ποίησιν ἐὰν μὴ τῇ ψήφῳ εἰς τὴν ἐπιοῦ-
σαν ἐκκλησίαν ὑπερεξακισχίλιοι Ἀθηναῖοι ψηφίσωνται
90 κρύβδην ψηφιζόμενοι. τοὺς δὲ πρυτάνεις κελεύει τιθέναι
τοὺς καδίσκους ὁ νόμος καὶ τὴν ψῆφον διδόναι προσιόντι
τῷ δήμῳ πρὶν τοὺς ξένους εἰσιέναι καὶ τὰ γέρρα ἀναιρεῖν,
ἵνα κύριος ὢν αὐτὸς αὑτοῦ ἕκαστος σκοπῆται πρὸς αὑτὸν
ὅντινα μέλλει πολίτην ποιήσεσθαι, εἰ ἄξιός ἐστι τῆς δω-
ρεᾶς ὁ μέλλων λήψεσθαι. ἔπειτα μετὰ ταῦτα παρανόμων
γραφὴν ἐποίησε κατ᾽ αὐτοῦ τῷ βουλομένῳ Ἀθηναίων, καὶ
ἔστιν εἰσελθόντα εἰς τὸ δικαστήριον ἐξελέγξαι ὡς οὐκ
ἄξιός ἐστι τῆς δωρεᾶς, ἀλλὰ παρὰ τοὺς νόμους Ἀθηναῖος
91 γέγονεν. καὶ ἤδη τισὶ τοῦ δήμου δόντος τὴν δωρεάν, λόγῳ
ἐξαπατηθέντος ὑπὸ τῶν αἰτούντων, παρανόμων γραφῆς
γενομένης καὶ εἰσελθούσης εἰς ‖ τὸ δικαστήριον ἐξελεγχθῆ-
ναι συνέβη τὸν εἰληφότα τὴν δωρεὰν μὴ ἄξιον εἶναι αὐ-
τῆς, καὶ ἀφείλετο τὸ δικαστήριον. καὶ τοὺς μὲν πολλοὺς
καὶ παλαιοὺς ἔργον διηγήσασθαι, ἃ δὲ πάντες μνημονεύετε,
Πειθόλαν τε τὸν Θετταλὸν καὶ Ἀπολλωνίδην τὸν Ὀλύνθιον
πολίτας ὑπὸ τοῦ δήμου γενομένους ἀφείλετο τὸ δικαστή-
ριον· ταῦτα γὰρ οὐ πάλαι ἐστὶ γεγενημένα ὥστε ἀγνοεῖν
92 ὑμᾶς. οὕτω τοίνυν καλῶς καὶ ἰσχυρῶς τῶν νόμων κειμέ-
νων ὑπὲρ τῆς πολιτείας, δι᾽ ὧν δεῖ Ἀθηναῖον γενέσθαι,
ἕτερός ἐστιν ἐφ᾽ ἅπασι τούτοις κυριώτατος νόμος κείμε-
νος· οὕτω πολλὴν ὁ δῆμος πρόνοιαν ἐποιεῖτο ὑπὲρ αὑτοῦ

καὶ τῶν θεῶν, ὥστε δι' εὐσεβείας τὰ ἱερὰ θύεσθαι ὑπὲρ
τῆς πόλεως. ὅσους γὰρ ἂν ποιήσηται ὁ δῆμος ὁ Ἀθηναίων
πολίτας, ὁ νόμος ἀπαγορεύει διαρρήδην μὴ ἐξεῖναι αὐτοῖς
τῶν ἐννέα ἀρχόντων γενέσθαι μηδὲ ἱερωσύνης μηδεμιᾶς
μετασχεῖν· τοῖς δ' ἐκ τούτων μετέδωκεν ἤδη ὁ δῆμος ἁπάν-
των, καὶ προσέθηκεν ἐὰν ὦσιν ἐκ γυναικὸς ἀστῆς καὶ ἐγ-
γυητῆς κατὰ τὸν νόμον. καὶ ὅτι ταῦτ' ἀληθῆ λέγω, μεγάλη 93
καὶ περιφανεῖ μαρτυρίᾳ ἐγὼ ὑμῖν δηλώσω. βούλομαι δ'
ὑμῖν τὸν νόμον πόρρωθεν προδιηγήσασθαι, ὡς ἐτέθη καὶ
πρὸς οὓς διωρίσθη, ὡς ἄνδρας ἀγαθοὺς ὄντας καὶ βε-
βαίους φίλους περὶ τὸν δῆμον γεγονότας. ἐκ τούτων γὰρ
ἁπάντων εἴσεσθε τήν τε τοῦ δήμου δωρεὰν τὴν ἀπόθετον
τοῖς εὐεργέταις προπηλακιζομένην, καὶ ὅσων ὑμᾶς ἀγαθῶν
κωλύουσι κυρίους ‖ εἶναι Στέφανός τε οὑτοσὶ καὶ οἱ τὸν αὐ-
τὸν τρόπον τούτῳ γεγαμηκότες καὶ παιδοποιούμενοι.

Πλαταιεῖς γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μόνοι τῶν Ἑλλή- 94
νων ὑμῖν ἐβοήθησαν Μαραθωνάδε, ὅτε Δᾶτις ὁ βασιλέως
Δαρείου στρατηγὸς ἀναχωρῶν ἐξ Ἐρετρίας, Εὔβοιαν ἐφ'
ἑαυτῷ ποιησάμενος, ἀπέβη εἰς τὴν χώραν πολλῇ δυνάμει
καὶ ἐπόρθει. καὶ ἔτι καὶ νῦν τῆς ἀνδραγαθίας αὐτῶν ὑπο-
μνήματα ἡ ἐν τῇ ποικίλῃ στοᾷ γραφὴ δεδήλωκεν· ὡς ἕκαστος
γὰρ τάχους εἶχεν, εὐθὺς προσβοηθῶν γέγραπται, οἱ τὰς
κυνᾶς τὰς Βοιωτίας ἔχοντες. πάλιν δὲ Ξέρξου ἰόντος ἐπὶ 95
τὴν Ἑλλάδα, Θηβαίων μηδισάντων, οὐκ ἐτόλμησαν ἀπο-
στῆναι τῆς ἡμετέρας φιλίας, ἀλλὰ μόνοι τῶν ἄλλων Βοιω-
τῶν οἱ μὲν ἡμίσεις αὐτῶν μετὰ Λακεδαιμονίων καὶ Λεω-
νίδου ἐν Θερμοπύλαις παραταξάμενοι τῷ βαρβάρῳ ἐπιόντι
συναπώλοντο, οἱ δὲ λοιποὶ ἐμβάντες εἰς τὰς ἡμετέρας τριή-
ρεις, ἐπειδὴ αὐτοῖς οἰκεῖα σκάφη οὐχ ὑπῆρχε, συνεναυμά-
χουν ὑμῖν ἐπί τε Ἀρτεμισίῳ καὶ ἐν Σαλαμῖνι. καὶ τὴν τε- 96
λευταίαν μάχην Πλαταιᾶσι Μαρδονίῳ τῷ βασιλέως στρα-
τηγῷ μεθ' ὑμῶν καὶ τῶν συνελευθερούντων τὴν Ἑλλάδα
μαχεσάμενοι, εἰς κοινὸν τὴν ἐλευθερίαν τοῖς ἄλλοις Ἕλ-
λησι κατέθηκαν. ἐπεὶ δὲ Πανσανίας ὁ Λακεδαιμονίων βα-
σιλεὺς ὑβρίζειν ἐνεχείρει ὑμᾶς, καὶ οὐκ ἠγάπα ὅτι τῆς
ἡγεμονίας μόνοι ἠξιώθησαν Λακεδαιμόνιοι ὑπὸ τῶν Ἑλ-
λήνων, καὶ ἡ πόλις τῇ μὲν ἀληθείᾳ ἡγεῖτο τῆς ἐλευθερίας

τοῖς Ἕλλησι, τῇ δὲ φιλοτιμίᾳ οὐκ ἠναντιοῦτο τοῖς Λακε-
97 δαιμονίοις, ἵνα μὴ φθονηθῶσιν ὑπὸ τῶν συμμάχων· ἐφ'
οἷς φυσηθεὶς ‖ Παυσανίας ὁ τῶν Λακεδαιμονίων βασιλεὺς
ἐπέγραψεν ἐπὶ τὸν τρίποδα ἐν Δελφοῖς, ὃν οἱ Ἕλληνες
οἱ συμμαχεσάμενοι τὴν Πλαταιᾶσι μάχην καὶ τὴν ἐν Σα-
λαμῖνι ναυμαχίαν ναυμαχήσαντες κοινῇ ποιησάμενοι ἀν-
έθηκαν ἀριστεῖον τῷ Ἀπόλλωνι ἀπὸ τῶν βαρβάρων,

Ἑλλήνων ἀρχηγὸς ἐπεὶ στρατὸν ὤλεσε Μήδων
Παυσανίας Φοίβῳ μνῆμ' ἀνέθηκε τόδε,

ὡς αὐτοῦ τοῦ ἔργου ὄντος καὶ τοῦ ἀναθήματος, ἀλλ' οὐ
98 κοινοῦ τῶν συμμάχων. ὀργισθέντων δὲ τῶν Ἑλλήνων οἱ
Πλαταιεῖς λαγχάνουσι δίκην τοῖς Λακεδαιμονίοις εἰς τοὺς
Ἀμφικτύονας χιλίων ταλάντων ὑπὲρ τῶν συμμάχων, καὶ
ἠνάγκασαν αὐτοὺς ἐκκόψαντας τὰ ἐλεγεῖα ἐπιγράψαι τὰς
πόλεις τὰς κοινωνούσας τοῦ ἔργου. διόπερ αὐτοῖς οὐχ
ἥκιστα παρηκολούθει ἡ ἔχθρα παρὰ Λακεδαιμονίων καὶ
ἐκ τοῦ γένους τοῦ βασιλείου. καὶ ἐν μὲν τῷ παρόντι οὐκ
εἶχον αὐτοῖς ὅ τι χρήσωνται οἱ Λακεδαιμόνιοι, ὕστερον
δὲ ὡς πεντήκοντα ἔτεσιν Ἀρχίδαμος ὁ Ζευξιδάμου Λακε-
δαιμονίων βασιλεὺς εἰρήνης οὔσης ἐνεχείρησεν αὐτῶν κα-
99 ταλαβεῖν τὴν πόλιν. ἔπραξε δὲ ταῦτ' ἐκ Θηβῶν δι' Εὐρυ-
μάχου τοῦ Λεοντιάδου βοιωταρχοῦντος, ἀνοιξάντων τὰς
πύλας τῆς νυκτὸς Ναυκλείδου καὶ ἄλλων τινῶν μετ' αὐ-
τοῦ, πεισθέντων χρήμασιν. αἰσθόμενοι δ' οἱ Πλαταιεῖς
ἔνδον ὄντας τοὺς Θηβαίους τῆς νυκτὸς καὶ ἐξαπίνης αὐ-
τῶν τὴν πόλιν ἐν εἰρήνῃ κατειλημμένην, προσεβοήθουν καὶ
αὐτοὶ καὶ συνετάττοντο. καὶ ἐπειδὴ ἡμέρα ἐγένετο καὶ
εἶδον οὐ πολλοὺς ὄντας τοὺς Θηβαίους ἀλλὰ τοὺς πρώ-
τους αὐτῶν εἰσεληλυθότας (ὕδωρ γὰρ ‖ γενόμενον τῆς νυ-
κτὸς πολὺ ἐκώλυσεν αὐτοὺς πάντας εἰσελθεῖν· ὁ γὰρ Ἀσω-
πὸς ποταμὸς μέγας ἐρρύη καὶ διαβῆναι οὐ ῥᾴδιον ἦν,
100 ἄλλως τε καὶ νυκτός) — ὡς οὖν εἶδον οἱ Πλαταιεῖς τοὺς
Θηβαίους ἐν τῇ πόλει καὶ ἔγνωσαν ὅτι οὐ πάντες πάρει-
σιν, ἐπιτίθενται καὶ εἰς μάχην ἐλθόντες κρατοῦσι καὶ
φθάνουσιν ἀπολέσαντες αὐτοὺς πρὶν τοὺς ἄλλους προσ-
βοηθῆσαι, καὶ ὡς ὑμᾶς πέμπουσιν εὐθὺς ἄγγελον τήν τε
πρᾶξιν φράσοντα καὶ τὴν μάχην δηλώσοντα ὅτι νικῶσι,

καὶ βοηθεῖν ἀξιοῦντες ἂν οἱ Θηβαῖοι τὴν χώραν αὐτῶν δῃῶσιν. ἀκούσαντες δὲ οἱ Ἀθηναῖοι τὰ γεγονότα διὰ τάχους ἐβοήθουν εἰς τὰς Πλαταιάς· καὶ οἱ Θηβαῖοι ὡς ἑώρων τοὺς Ἀθηναίους βεβοηθηκότας τοῖς Πλαταιεῦσιν, ἀνεχώρησαν ἐπ' οἴκου. ὡς οὖν ἀπέτυχον οἱ Θηβαῖοι τῆς πείρας 101
καὶ οἱ Πλαταιεῖς τοὺς ἄνδρας οὓς ἔλαβον αὐτῶν ἐν τῇ μάχῃ ζῶντας ἀπέκτειναν, ὀργισθέντες οἱ Λακεδαιμόνιοι ἀπροφασίστως ἤδη στρατεύουσιν ἐπὶ τὰς Πλαταιάς, Πελοποννησίοις μὲν ἅπασι πλὴν Ἀργείων τὰ δύο μέρη τῆς στρατιᾶς ἀπὸ τῶν πόλεων ἑκάστων πέμπειν ἐπιτάξαντες, Βοιωτοῖς δὲ τοῖς ἄλλοις ἅπασι καὶ Λοκροῖς καὶ Φωκεῦσι καὶ Μαλιεῦσι καὶ Οἰταίοις καὶ Αἰνιᾶσι πανδημεὶ ἐπαγγείλαντες στρατεύειν. καὶ περικαθεζόμενοι αὐτῶν τὸ τεῖ- 102
χος πολλῇ δυνάμει ἐπηγγέλλοντο, εἰ βούλοιντο τὴν μὲν πόλιν αὐτοῖς παραδοῦναι, τὴν δὲ χώραν ἔχειν καὶ καρποῦσθαι τὰ αὑτῶν, ἀφίστασθαι δὲ τῆς Ἀθηναίων συμμαχίας. οὐκ ἐθελησάντων δὲ τῶν Πλαταιέων, ἀλλ' ἀποκριναμένων ὅτι ἄνευ Ἀθηναίων οὐδὲν ἂν πράξειαν, ἐπολιόρκουν αὐτοὺς ‖ διπλῷ τείχει περιτειχίσαντες δύο ἔτη, πολλὰς καὶ παντοδαπὰς πείρας προσάγοντες. ἐπεὶ δ' ἀπειρήκεσαν οἱ 103
Πλαταιεῖς καὶ ἐνδεεῖς ἦσαν ἁπάντων καὶ ἠποροῦντο τῆς σωτηρίας, διακληρωσάμενοι πρὸς σφᾶς αὐτοὺς οἱ μὲν ὑπομείναντες ἐπολιορκοῦντο, οἱ δὲ τηρήσαντες νύκτα καὶ ὕδωρ καὶ ἄνεμον πολύν, ἐξελθόντες ἐκ τῆς πόλεως καὶ ὑπερβάντες τὸ περιτείχισμα, τῶν πολεμίων λαθόντες τὴν στρατιάν, ἀποσφάξαντες τοὺς φύλακας διασώζονται δεῦρο, δεινῶς διακείμενοι καὶ ἀπροσδοκήτως· οἱ δ' ὑπομείναντες αὐτῶν ἁλούσης τῆς πόλεως κατὰ κράτος ἀπεσφάγησαν πάντες οἱ ἡβῶντες, παῖδες δὲ καὶ γυναῖκες ἐξηνδραποδίσθησαν, ὅσοι μὴ αἰσθανόμενοι ἐπιόντας τοὺς Λακεδαιμονίους ὑπεξῆλθον Ἀθήναζε. τοῖς οὖν οὕτω φανερῶς ἐν- 104
δεδειγμένοις τὴν εὔνοιαν τῷ δήμῳ, καὶ προεμένοις ἅπαντα τὰ αὑτῶν καὶ παῖδας καὶ γυναῖκας, πάλιν σκοπεῖτε πῶς μετέδοτε τῆς πολιτείας. ἐκ γὰρ τῶν ψηφισμάτων τῶν ὑμετέρων καταφανὴς πᾶσιν ἔστιν ὁ νόμος, καὶ γνώσεσθ' ὅτι ἀληθῆ λέγω. καί μοι λαβὲ τὸ ψήφισμα τοῦτο καὶ ἀνάγνωθι αὐτοῖς.

ΨΗΦΙΣΜΑ ΠΕΡΙ ΠΛΑΤΑΙΕΩΝ. *Ἱπποκράτης εἶπε Πλαταιέας εἶναι Ἀθηναίους ἀπὸ τῆσδε τῆς ἡμέρας, ἐντίμους καθάπερ οἱ ἄλλοι Ἀθηναῖοι, καὶ μετεῖναι αὐτοῖς ὧνπερ Ἀθηναίοις μέτεστι πάντων, καὶ ἱερῶν καὶ ὁσίων, πλὴν εἴ τις ἱερωσύνη ἢ τελετή ἐστιν ἐκ γένους, μηδὲ τῶν ἐννέα ἀρχόντων, τοῖς δ' ἐκ τούτων. κατανεῖμαι δὲ τοὺς Πλαταιέας εἰς τοὺς δήμους καὶ τὰς φυλάς. ἐπειδὰν δὲ νεμηθῶσι, μὴ ‖ ἐξέστω ἔτι Ἀθηναίῳ μηδενὶ γίγνεσθαι Πλαταιέων, μὴ εὑρομένῳ παρὰ τοῦ δήμου τοῦ Ἀθηναίων.*

105 *Ὁρᾶτε δὴ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι ὡς καλῶς καὶ δικαίως ἔγραψεν ὁ ῥήτωρ ὑπὲρ τοῦ δήμου τοῦ Ἀθηναίων, καὶ ἠξίωσε τοὺς Πλαταιέας λαμβάνοντας τὴν δωρεὰν πρῶτον μὲν δοκιμασθῆναι ἐν τῷ δικαστηρίῳ κατ' ἄνδρα ἕκαστον, εἰ ἔστι Πλαταιεὺς καὶ εἷς τῶν φίλων τῶν τῆς πόλεως, ἵνα μὴ ἐπὶ ταύτῃ τῇ προφάσει πολλοὶ μεταλάβωσι τῆς πολιτείας, ἔπειτα τοὺς δοκιμασθέντας ἀναγραφῆναι ἐν στήλῃ λιθίνῃ, καὶ στῆσαι ἐν ἀκροπόλει πρὸς τῇ θεῷ, ἵνα σώζηται ἡ δωρεὰ τοῖς ἐπιγιγνομένοις καὶ ᾖ ἐξελέγξαι ὅτου*

106 *ἂν ἕκαστος ᾖ συγγενής. καὶ ὕστερον οὐκ ἐᾷ γίγνεσθαι Ἀθηναῖον ἐξεῖναι ὃς ἂν μὴ νῦν γένηται καὶ δοκιμασθῇ ἐν τῷ δικαστηρίῳ, τοῦ μὴ πολλοὺς φάσκοντας Πλαταιέας εἶναι κατασκευάζειν αὑτοῖς πολιτείαν. ἔπειτα καὶ τὸν νόμον διωρίσατο ἐν τῷ ψηφίσματι πρὸς αὐτοὺς εὐθέως ὑπέρ τε τῆς πόλεως καὶ τῶν θεῶν, καὶ μὴ ἐξεῖναι αὐτῶν μηδενὶ τῶν ἐννέα ἀρχόντων λαχεῖν μηδὲ ἱερωσύνης μηδεμιᾶς, τοῖς δ' ἐκ τούτων, ἂν ὦσιν ἐξ ἀστῆς γυναικὸς καὶ ἐγγυητῆς κατὰ τὸν νόμον.*

107 *Οὐκοῦν δεινὸν πρὸς μὲν τοὺς ἀστυγείτονας καὶ ὁμολογουμένως ἀρίστους τῶν Ἑλλήνων εἰς τὴν πόλιν γεγενημένους οὕτω καλῶς καὶ ἀκριβῶς διορίσασθαι περὶ ἑκάστου, ἐφ' οἷς δεῖ ἔχειν τὴν δωρεάν, τὴν δὲ περιφανῶς ἐν ἁπάσῃ τῇ Ἑλλάδι πεπορνευμένην οὕτως αἰσχρῶς καὶ ὀλιγώρως ἐάσετε ὑβρίζουσαν εἰς τὴν πόλιν καὶ ἀσεβοῦσαν ‖ εἰς τοὺς θεοὺς ἀτιμώρητον, ἣν οὔτε οἱ πρόγονοι ἀστὴν κατέλιπον*

108 *οὔθ' ὁ δῆμος πολῖτιν ἐποιήσατο. ποῦ γὰρ αὕτη οὐκ εἴργασται τῷ σώματι; ἢ ποῖ οὐκ ἐλήλυθεν ἐπὶ τῷ καθ' ἡμέραν μισθῷ; οὐκ ἐν Πελοποννήσῳ μὲν πάσῃ, ἐν Θετταλίᾳ δὲ καὶ Μαγνησίᾳ μετὰ Σίμου τοῦ Λαρισαίου καὶ Εὐρυδάμαντος τοῦ Μηδίου, ἐν Χίῳ δὲ καὶ ἐν Ἰωνίᾳ τῇ πλείστῃ*

μετὰ Σωτάδου τοῦ Κρητὸς ἀκολουθοῦσα, μισθωθεῖσα ὑπὸ τῆς Νικαρέτης, ὅτε ἔτι ἐκείνης ἦν; τὴν δὲ ὑφ' ἑτέροις οὖσαν καὶ ἀκολουθοῦσαν τῷ διδόντι τί οἴεσθε ποιεῖν; ἆρ' οὐχ ὑπηρετεῖν τοῖς χρωμένοις εἰς ἁπάσας ἡδονάς; εἶτα τὴν τοιαύτην καὶ περιφανῶς ἐγνωσμένην ὑπὸ πάντων γῆς περίοδον εἰργασμένην ψηφιεῖσθε ἀστὴν εἶναι; καὶ τί καλὸν φήσετε πρὸς τοὺς ἐρωτῶντας διαπεπρᾶχθαι, 109
ἢ ποίᾳ αἰσχύνῃ καὶ ἀσεβείᾳ οὐκ ἔνοχοι αὐτοὶ εἶναι; πρὶν μὲν γὰρ γραφῆναι ταύτην καὶ εἰς ἀγῶνα καταστῆναι καὶ πυθέσθαι πάντας ἥτις ἦν καὶ οἷα ἠσέβηκε, τὰ μὲν ἀδικήματα ταύτης ἦν ἄν, ἡ δ' ἀμέλεια τῆς πόλεως· καὶ οἱ μὲν οὐκ ᾔδεσαν ὑμῶν, οἱ δὲ πυθόμενοι τῷ μὲν λόγῳ ἠγανάκτουν, τῷ δ' ἔργῳ οὐκ εἶχον ὅ τι χρήσαιντο αὐτῇ οὐδενὸς εἰς ἀγῶνα καθιστάντος οὐδὲ διδόντος περὶ αὐτῆς τὴν ψῆφον. ἐπειδὴ δὲ καὶ ἴστε πάντες καὶ ἔχετε ἐφ' ὑμῖν αὐτοῖς καὶ κύριοί ἐστε κολάσαι, ὑμέτερον ἤδη τὸ ἀσέβημα γίγνεται τὸ πρὸς τοὺς θεούς, ἐὰν μὴ ταύτην κολάσητε.
τί δὲ καὶ φήσειεν ἂν ὑμῶν ἕκαστος εἰσιὼν πρὸς τὴν ἑαυ- 110
τοῦ γυναῖκα ἢ θυγατέρα ἢ μητέρα, ἀποψηφισάμενος ταύτης, ἐπειδὰν ἔρηται ὑμᾶς ποῦ ἦτε; καὶ εἴπητε ὅτι ἐδικάζομεν. ‖ τῷ; ἐρήσεται εὐθύς. Νεαίρᾳ δῆλον ὅτι φήσετε (οὐ γάρ;) ὅτι ξένη οὖσα ἀστῷ συνοικεῖ παρὰ τὸν νόμον, καὶ ὅτι τὴν θυγατέρα μεμοιχευμένην ἐξέδωκε Θεογένει τῷ βασιλεύσαντι, καὶ αὕτη ἔθυσε τὰ ἱερὰ τὰ ἄρρητα ὑπὲρ τῆς πόλεως καὶ τῷ Διοσύσῳ γυνὴ ἐδόθη, καὶ τἆλλα, διηγούμενοι τὴν κατηγορίαν αὐτῆς, ὡς καὶ μνημονικῶς καὶ ἐπιμελῶς περὶ ἑκάστου κατηγορήθη. αἱ δὲ ἀκούσασαι 111
ἐρήσονται τί οὖν ἐποιήσατε; ὑμεῖς δὲ φήσετε ἀπεψηφίσμεθα. οὐκοῦν ἤδη αἱ μὲν σωφρονέσταται τῶν γυναικῶν ὀργισθήσονται ὑμῖν, διότι ὁμοίως αὐταῖς ταύτην κατηξιοῦτε μετέχειν τῶν τῆς πόλεως καὶ τῶν ἱερῶν· ὅσαι δ' ἀνόητοι, φανερῶς ἐπιδείκνυτε ποιεῖν ὅ τι ἂν βούλωνται, ὡς ἄδειαν ὑμῶν καὶ τῶν νόμων δεδωκότων. δόξετε γὰρ ὀλιγώρως καὶ ῥᾳθύμως φέροντες ὁμογνώμονες καὶ αὐτοὶ εἶναι τοῖς ταύτης τρόποις. ὥστε πολὺ μᾶλλον ἐλυσιτέλει 112
μὴ γενέσθαι τὸν ἀγῶνα τουτονὶ ἢ γενόμενον ἀποψηφίσασθαι ὑμᾶς. κομιδῇ γὰρ ἤδη παντελῶς ἐξουσία ἔσται ταῖς

πόρναις συνοικεῖν οἷς ἂν βούλωνται, καὶ τοὺς παῖδας φά-
σκειν οὗ ἂν τύχωσιν εἶναι· καὶ οἱ μὲν νόμοι ἄκυροι ὑμῖν
ἔσονται, οἱ δὲ τρόποι τῶν ἑταιρῶν κύριοι ὅ τι ἂν βού-
λωνται διαπράττεσθαι. ὥστε καὶ ὑπὲρ τῶν πολιτίδων
σκοπεῖτε, τοῦ μὴ ἀνεκδότους γίγνεσθαι τὰς τῶν πενήτων
113 θυγατέρας. νῦν μὲν γάρ, κἂν ἀπορηθῇ τις, ἱκανὴν προῖκ'
αὐτῇ ὁ νόμος συμβάλλεται, ἂν καὶ ὁπωστιοῦν μετρίαν ἡ
φύσις ὄψιν ἀποδῷ· προπηλακισθέντος δὲ τοῦ νόμου ὑφ'
ὑμῶν ἀποφυγούσης ταύτης, καὶ ἀκύρου γενομένου, παν-
τελῶς ἤδη ἡ μὲν τῶν || πορνῶν ἐργασία ἥξει εἰς τὰς τῶν
πολιτίδων θυγατέρας, δι' ἀπορίαν ὅσαι ἂν μὴ δύνωνται
ἐκδοθῆναι, τὸ δὲ τῶν ἐλευθέρων γυναικῶν ἀξίωμα εἰς τὰς
ἑταίρας, ἂν ἄδειαν λάβωσι τοῦ ἐξεῖναι αὐταῖς παιδοποι-
εῖσθαι ὡς ἂν βούλωνται καὶ τελετῶν καὶ ἱερῶν καὶ τιμῶν
114 μετέχειν τῶν ἐν τῇ πόλει. ὥστε εἷς ἕκαστος ὑμῶν νομι-
ζέτω, ὁ μὲν ὑπὲρ γυναικός, ὁ δ' ὑπὲρ θυγατρός, ὁ δ' ὑπὲρ
μητρός, ὁ δ' ὑπὲρ τῆς πόλεως καὶ τῶν νόμων καὶ τῶν
ἱερῶν τὴν ψῆφον φέρειν, τοῦ μὴ ἐξ ἴσου φανῆναι ἐκείνας
τιμωμένας ταύτῃ τῇ πόρνῃ, μηδὲ τὰς μετὰ πολλῆς καὶ
καλῆς σωφροσύνης καὶ ἐπιμελείας τραφείσας ὑπὸ τῶν
προσηκόντων καὶ ἐκδοθείσας κατὰ τοὺς νόμους ταύτας ἐν
τῷ ἴσῳ φαίνεσθαι μετεχούσας τῇ μετὰ πολλῶν καὶ ἀσελ-
γῶν τρόπων πολλάκις πολλοῖς ἑκάστης ἡμέρας συγγεγε-
115 νημένῃ, ὡς ἕκαστος ἠβούλετο. ἡγεῖσθε δὲ μήτ' ἐμὲ τὸν
λέγοντα εἶναι Ἀπολλόδωρον μήτε τοὺς ἀπολογησομένους
καὶ συνεροῦντας πολίτας, ἀλλὰ τοὺς νόμους καὶ Νέαιραν
ταυτηνὶ περὶ τῶν πεπραγμένων αὐτῇ πρὸς ἀλλήλους δι-
κάζεσθαι. καὶ ὅταν μὲν ἐπὶ τῆς κατηγορίας γένησθε, τῶν
νόμων αὐτῶν ἀκούετε, δι' ὧν οἰκεῖται ἡ πόλις καὶ καθ'
οὓς ὀμωμόκατε δικάσειν, τί κελεύουσι καὶ τί παραβεβή-
κασιν· ὅταν δὲ ἐπὶ τῆς ἀπολογίας ἦτε, μνημονεύοντες τὴν
τῶν νόμων κατηγορίαν καὶ τὸν ἔλεγχον τῶν εἰρημένων,
τήν τε ὄψιν αὐτῆς ἰδόντες, ἐνθυμεῖσθε τοῦτο μόνον, εἰ
Νέαιρα οὖσα ταῦτα διαπέπρακται.
116 Ἄξιον δὲ κἀκεῖνο ἐνθυμηθῆναι, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι,
ὅτι Ἀρχίαν τὸν ἱεροφάντην γενόμενον, ἐξελεγχθέντα ἐν τῷ
δικαστηρίῳ ἀσεβεῖν θύοντα παρὰ τὰ πάτρια τὰς θυσίας,

ἐκολάσατε ὑμεῖς, ‖ καὶ ἄλλα τε κατηγορήθη αὐτοῦ καὶ ὅτι
Σινώπῃ τῇ ἑταίρᾳ ἁλῴοις ἐπὶ τῆς ἐσχάρας τῆς ἐν τῇ
αὐλῇ Ἐλευσῖνι προσαγούσῃ ἱερεῖον θύσειεν, οὐ νομίμου
ὄντος ἐν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ ἱερεῖα θύειν, οὐδὲ ἐκείνου οὔσης
τῆς θυσίας ἀλλὰ τῆς ἱερείας. οὐκοῦν δεινὸν τὸν μὲν καὶ 117
ἐκ γένους ὄντα τοῦ Εὐμολπιδῶν καὶ προγόνων καλῶν κἀ-
γαθῶν καὶ πολίτην τῆς πόλεως, ὅτι ἐδόκει τι παραβῆναι
τῶν νομίμων, δοῦναι δίκην· καὶ οὔθ᾽ ἡ τῶν συγγενῶν οὔθ᾽
ἡ τῶν φίλων ἐξαίτησις ὠφέλησεν αὐτόν, οὔθ᾽ αἱ λειτουρ-
γίαι ἃς ἐλειτούργησε τῇ πόλει αὐτὸς καὶ οἱ πρόγονοι αὐ-
τοῦ, οὔτε τὸ ἱεροφάντην εἶναι, ἀλλ᾽ ἐκολάσατε δόξαντα
ἀδικεῖν· Νέαιραν δὲ ταυτηνὶ εἴς τε τὸν αὐτὸν θεὸν τοῦ-
τον ἠσεβηκυῖαν καὶ τοὺς νόμους, καὶ αὐτὴν καὶ τὴν θυγα-
τέρα αὐτῆς, οὐ τιμωρήσεσθε;

Θαυμάζω δ᾽ ἔγωγε τί ποτε καὶ ἐροῦσι πρὸς ὑμᾶς ἐν 118
τῇ ἀπολογίᾳ, πότερον ὡς ἀστή ἐστι Νέαιρα αὕτη καὶ
κατὰ τοὺς νόμους συνοικεῖ αὐτῷ; ἀλλὰ μεμαρτύρηται
ἑταίρα οὖσα καὶ δούλη Νικαρέτης γεγενημένη. ἀλλ᾽ οὐ γυ-
ναῖκα εἶναι αὐτοῦ, ἀλλὰ παλλακὴν ἔχειν ἔνδον; ἀλλ᾽ οἱ
παῖδες ταύτης ὄντες καὶ εἰσηγμένοι εἰς τοὺς φράτορας
ὑπὸ Στεφάνου καὶ ἡ θυγάτηρ ἀνδρὶ Ἀθηναίῳ ἐκδοθεῖσα
περιφανῶς αὐτὴν ἀποφαίνουσι γυναῖκα ἔχοντα. ὡς μὲν 119
τοίνυν οὐκ ἀληθῆ ἐστὶ τὰ κατηγορημένα καὶ μεμαρτυρη-
μένα, οὔτ᾽ αὐτὸν Στέφανον οὔτ᾽ ἄλλον ὑπὲρ τούτου οἶμαι
ἐπιδείξειν, ὡς ἔστιν ἀστὴ Νέαιρα αὕτη· ἀκούω δὲ αὐτὸν
τοιοῦτόν τι μέλλειν ἀπολογεῖσθαι, ὡς οὐ γυναῖκα ἔχει
αὐτὴν ἀλλ᾽ ἑταίραν, καὶ οἱ παῖδες οὐκ εἰσὶ ταύτης ἀλλ᾽ ἐξ
ἑτέρας γυναικὸς αὐτῷ ἀστῆς, ἥν φησι πρότερον γῆμαι
συγγενῆ ‖ αὐτοῦ. πρὸς δὴ τὴν ἀναίδειαν αὐτοῦ τοῦ λόγου 120
καὶ τὴν παρασκευὴν τῆς ἀπολογίας καὶ τῶν μαρτυρεῖν
αὐτῷ παρεσκευασμένων πρόκλησιν αὐτὸν προεκαλεσάμην
ἀκριβῆ καὶ δικαίαν, δι᾽ ἧς ἐξῆν ὑμῖν πάντα τἀληθῆ εἰδέ-
ναι, παραδοῦναι τὰς θεραπαίνας τὰς Νεαίρᾳ τότε προσ-
καρτερούσας ὅτ᾽ ἦλθεν ὡς Στέφανον ἐκ Μεγάρων, Θρᾷτ-
ταν καὶ Κοκκαλίνην, καὶ ἃς ὕστερον παρὰ τούτῳ οὖσα
ἐκτήσατο, Ξεννίδα καὶ Δροσίδα· αἳ ἴσασιν ἀκριβῶς Πρό- 121
ξενόν τε τὸν τελευτήσαντα καὶ Ἀρίστωνα τὸν νῦν ὄντα

καὶ Ἀντιδωρίδην τὸν σταδιαδρομοῦντα καὶ Φανὼ τὴν Στρυβήλην καλουμένην, ἣ Θεογένει τῷ βασιλεύσαντι συνῴκησε, Νεαίρας ὄντας. καὶ ἐὰν φαίνηται ἐκ τῆς βασάνου γήμας Στέφανος οὑτοσὶ ἀστὴν γυναῖκα καὶ ὄντες αὐτῷ οἱ παῖδες οὗτοι ἐξ ἑτέρας γυναικὸς ἀστῆς καὶ μὴ Νεαίρας, ἤθελον ἀφίστασθαι τοῦ ἀγῶνος καὶ μὴ εἰσιέναι

122 *τὴν γραφὴν ταύτην. τὸ γὰρ συνοικεῖν τοῦτ' ἐστίν, ὃς ἂν παιδοποιῆται καὶ εἰσάγῃ εἴς τε τοὺς φράτορας καὶ δημότας τοὺς υἱεῖς, καὶ τὰς θυγατέρας ἐκδιδῷ ὡς αὑτοῦ οὔσας τοῖς ἀνδράσιν. τὰς μὲν γὰρ ἑταίρας ἡδονῆς ἕνεκ' ἔχομεν, τὰς δὲ παλλακὰς τῆς καθ' ἡμέραν θεραπείας τοῦ σώματος, τὰς δὲ γυναῖκας τοῦ παιδοποιεῖσθαι γνησίως καὶ τῶν ἔνδον φύλακα πιστὴν ἔχειν. ὥστ' εἰ πρότερον ἔγημε γυναῖκα ἀστὴν καὶ εἰσὶν οὗτοι οἱ παῖδες ἐξ ἐκείνης καὶ μὴ Νεαίρας, ἐξῆν αὐτῷ ἐκ τῆς ἀκριβεστάτης μαρτυ-*

123 *ρίας ἐπιδεῖξαι, παραδόντι τὰς θεραπαίνας ταύτας. ὡς δὲ προεκαλεσάμην, τούτων ὑμῖν τήν τε μαρτυρίαν καὶ τὴν πρόκλησιν ἀναγνώσεται. λέγε τὴν μαρτυρίαν, ἔπειτα τὴν πρόκλησιν.*

‖ ΜΑΡΤΥΡΙΑ. *Ἱπποκράτης Ἱπποκράτους Προβαλίσιος, Δημοσθένης Δημοσθένους Παιανιεύς, Διοφάνης Διοφάνους Ἀλωπεκῆθεν, Διομένης Ἀρχελάου Κυδαθηναιεύς, Δεινίας Φορμίδου Κυδαντίδης, Λυσίμαχος Λυσίππου Αἰγιλιεὺς μαρτυροῦσι παρεῖναι ἐν ἀγορᾷ ὅτ' Ἀπολλόδωρος προυκαλεῖτο Στέφανον, ἀξιῶν παραδοῦναι εἰς βάσανον τὰς θεραπαίνας περὶ ὧν ᾐτιᾶτο Ἀπολλόδωρος Στέφανον περὶ Νεαίρας· Στέφανον δ' οὐκ ἐθελῆσαι παραδοῦναι τὰς θεραπαίνας· τὴν δὲ πρόκλησιν εἶναι ἣν παρέχεται Ἀπολλόδωρος.*

124 *Λέγε δὴ αὐτὴν τὴν πρόκλησιν, ἣν προυκαλούμην ἐγὼ Στέφανον τουτονί.*

ΠΡΟΚΛΗΣΙΣ. *Τάδε προυκαλεῖτο Ἀπολλόδωρος Στέφανον περὶ ὧν τὴν γραφὴν γέγραπται, Νέαιραν ξένην οὖσαν ἀστῷ συνοικεῖν, ἕτοιμος ὢν τὰς θεραπαίνας παραλαμβάνειν τὰς Νεαίρας, ἃς ἐκ Μεγάρων ἔχουσα ἦλθε, Θρᾷτταν καὶ Κοκκαλίνην, καὶ ἃς ὕστερον παρὰ Στεφάνῳ ἐκτήσατο, Ξεννίδα καὶ Δροσίδα, τὰς εἰδυίας ἀκριβῶς περὶ τῶν παίδων τῶν Στεφάνου ὅτι ἐκ Νεαίρας εἰσί, Πρόξενός τε ὁ τελευτήσας καὶ Ἀρίστων ὁ νῦν ὢν καὶ Ἀντιδωρίδης ὁ σταδιαδρομῶν καὶ Φανώ, ἐφ' ᾧ τε βασανίσαι αὐτάς. καὶ εἰ μὲν ὁμολογοῖεν ἐκ Στεφάνου εἶναι καὶ Νεαίρας τούτους τοὺς παῖδας, πεπρᾶσθαι Νέαιραν κατὰ τοὺς νόμους καὶ τοὺς παῖδας ξένους εἶναι· εἰ δὲ μὴ ὁμολογοῖεν*

ἐκ ταύτης εἶναι αὐτοὺς ἀλλ' ἐξ ἑτέρας γυναικὸς ἀστῆς, ἀφίστασθαι τοῦ ἀγῶνος ἤθελον τοῦ Νεαίρας, καὶ εἴ τι ἐκ τῶν βασάνων βλαφθείησαν αἱ ἄνθρωποι, ἀποτίνειν ὅ τι βλαβείησαν.

Ταῦτα ‖ προκαλεσαμένου ἐμοῦ ἄνδρες δικασταὶ Στέφα- 125
νον τουτονὶ οὐκ ἠθέλησε δέξασθαι. οὔκουν ἤδη δοκεῖ ὑμῖν δεδικάσθαι ὑπ' αὐτοῦ Στεφάνου τουτουί, ὦ ἄνδρες δικασταί, ὅτι ἔνοχός ἐστι τῇ γραφῇ Νέαιρα ἣν ἐγὼ αὐτὴν ἐγραψάμην, καὶ ὅτι ἐγὼ μὲν ἀληθῆ εἴρηκα πρὸς ὑμᾶς καὶ τὰς μαρτυρίας παρεσχόμην ἀληθεῖς, οὗτοσὶ δ' ὅ τι ἂν λέγῃ ἅπαντα ψεύσεται, καὶ ἐξελέγξει αὐτὸς αὑτὸν ὅτι οὐδὲν ὑγιὲς λέγει, οὐκ ἐθελήσας παραδοῦναι εἰς βασάνους τὰς θεραπαίνας, ἐγὼ δ' ἐξῄτουν αὐτόν;

Ἐγὼ μὲν οὖν ὦ ἄνδρες δικασταὶ καὶ τοῖς θεοῖς, εἰς 126
οὓς οὗτοι ἠσεβήκασι, καὶ ἐμαυτῷ τιμωρῶν κατέστησά τε τουτουσὶ εἰς ἀγῶνα καὶ ὑπὸ τὴν ὑμετέραν ψῆφον ἤγαγον. καὶ ὑμᾶς δὲ χρὴ νομίσαντας μὴ λαθεῖν τοὺς θεούς, εἰς οὓς οὗτοι παρανενομήκασιν, ὅ τι ἂν ἕκαστος ὑμῶν ψηφίσηται, ψηφίσασθαι τὰ δίκαια καὶ τιμωρεῖν μάλιστα μὲν τοῖς θεοῖς ἔπειτα δὲ καὶ ὑμῖν αὐτοῖς. καὶ ταῦτα ποιήσαντες δόξετε πᾶσι καλῶς καὶ δικαίως δικάσαι ταύτην τὴν γραφήν, ἣν Νέαιραν ἐγὼ ἐγραψάμην, ξένην οὖσαν ἀστῷ συνοικεῖν.

ΕΠΙΤΑΦΙΟΣ.

Ἐπειδὴ τοὺς ἐν τῷδε τῷ τάφῳ κειμένους, ἄνδρας ἀγαθοὺς ἐν τῷ πολέμῳ γεγονότας, ἔδοξε τῇ πόλει δημοσίᾳ θάπτειν καὶ προσέταξεν ἐμοὶ τὸν νομιζόμενον λόγον εἰπεῖν ἐπ' αὐτοῖς, ἐσκόπουν ‖ μὲν εὐθὺς ὅπως τοῦ προσήκοντος ἐπαίνου τεύξονται, ἐξετάζων δὲ καὶ σκοπῶν ἀξίως εἰπεῖν τῶν τετελευτηκότων ἕν τι τῶν ἀδυνάτων εὕρισκον ὄν· οἳ γὰρ τὴν ὑπάρχουσαν πᾶσιν ἔμφυτον τοῦ ζῆν ὑπερεῖδον ἐπιθυμίαν, καὶ τελευτῆσαι καλῶς μᾶλλον ἠβουλήθησαν ἢ ζῶντες τὴν Ἑλλάδα ἰδεῖν ἀτυχοῦσαν, πῶς οὐκ ἀνυπέρβλητον παντὶ λόγῳ τὴν αὑτῶν ἀρετὴν καταλελοίπασιν; ὁμοίως μέντοι διαλεχθῆναι τοῖς πρότερόν ποτε εἰρηκόσιν ἐνθαδὶ κἀμοὶ δοκεῖ. ὡς μὲν οὖν ἡ πόλις σπουδάζει περὶ 2

τοὺς ἐν τῷ πολέμῳ τελευτῶντας, ἔκ τε τῶν ἄλλων ἔστιν
ἰδεῖν καὶ μάλιστα ἐκ τοῦδε τοῦ νόμου, καθ' ὃν αἱρεῖται
τὸν ἐροῦντα ἐπὶ ταῖς δημοσίαις ταφαῖς· εἰδυῖα γὰρ παρὰ
τοῖς χρηστοῖς ἀνδράσι τὰς μὲν τῶν χρημάτων κτήσεις καὶ
τῶν κατὰ τὸν βίον ἡδονῶν ἀπολαύσεις ὑπερεωραμένας,
τῆς δ' ἀρετῆς καὶ τῶν ἐπαίνων πᾶσαν τὴν ἐπιθυμίαν
οὖσαν, ἐξ ὧν ταῦτ' ἂν αὐτοῖς μάλιστα γένοιτο λόγων,
τούτοις ᾠήθησαν δεῖν αὐτοὺς τιμᾶν, ἵν' ἣν ζῶντες ἐκτή-
σαντο εὐδοξίαν, αὕτη καὶ τετελευτηκόσιν αὐτοῖς ἀποδο-
3 θείη. εἰ μὲν οὖν τὴν ἀνδρίαν μόνον αὐτοῖς τῶν εἰς ἀρετὴν
ἀνηκόντων ὑπάρχουσαν ἑώρων, ταύτην ἂν ἐπαινέσας ἀπηλ-
λαττόμην τῶν λοιπῶν· ἐπειδὴ δὲ καὶ γεγενῆσθαι καλῶς
καὶ πεπαιδεῦσθαι σωφρόνως καὶ βεβιωκέναι φιλοτίμως
συμβέβηκεν αὐτοῖς, ἐξ ὧν εἰκότως ἦσαν σπουδαῖοι, αἰσχυ-
νοίμην ἂν εἴ τι τούτων φανείην παραλιπών. ἄρξομαι δ'
ἀπὸ τῆς τοῦ γένους αὐτῶν ἀρχῆς.

4 Ἡ γὰρ εὐγένεια τῶνδε τῶν ἀνδρῶν ἐκ πλείστου χρόνου
παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις ἀνωμολόγηται. οὐ γὰρ μόνον εἰς
πατέρ' ‖ αὐτοῖς καὶ τῶν ἄνω προγόνων κατ' ἄνδρα ἀνε-
νεγκεῖν ἑκάστῳ τὴν φύσιν ἔστιν, ἀλλ' εἰς ὅλην κοινῇ τὴν
ὑπάρχουσαν πατρίδα, ἧς αὐτόχθονες ὁμολογοῦνται εἶναι.
μόνοι γὰρ πάντων ἀνθρώπων, ἐξ ἧσπερ ἔφυσαν, ταύτην
ᾤκησαν καὶ τοῖς ἐξ αὐτῶν παρέδωκαν, ὥστε δικαίως ἄν
τις ὑπολάβοι τοὺς μὲν ἐπήλυδας ἐλθόντας εἰς τὰς πόλεις
καὶ τούτων πολίτας προσαγορευομένους ὁμοίους εἶναι τοῖς
εἰσποιητοῖς τῶν παίδων, τούτους δὲ γνησίους γόνῳ τῆς
5 πατρίδος πολίτας εἶναι. δοκεῖ δέ μοι καὶ τὸ τοὺς καρ-
πούς, οἷς ζῶσιν ἄνθρωποι, παρ' ἡμῖν πρώτοις φανῆναι,
χωρὶς τοῦ μέγιστον εὐεργέτημ' εἰς πάντας γενέσθαι, ὁμο-
λογούμενον σημεῖον ὑπάρχειν τοῦ μητέρα τὴν χώραν εἶναι
τῶν ἡμετέρων προγόνων. πάντα γὰρ τὰ τίκτοντα ἅμα καὶ
τροφὴν τοῖς γιγνομένοις ἀπ' αὐτῆς τῆς φύσεως φέρει·
ὅπερ ἥδε ἡ χώρα πεποίηκεν.

6 Τὰ μὲν οὖν εἰς γένος ἀνήκοντα τοιαῦτα δι' αἰῶνος
ὑπάρχει τοῖς τῶνδε τῶν ἀνδρῶν προγόνοις· τὰ δ' εἰς ἀν-
δρίαν καὶ τὴν ἄλλην ἀρετὴν πάντα μὲν κατοκνῶ λέγειν,
φυλαττόμενος μὴ μῆκος ἄκαιρον ἐγγένηται τῷ λόγῳ· ἃ δὲ

καὶ τοῖς εἰδόσι χρήσιμα ἀναμνησθῆναι καὶ τοῖς ἀπείροις
κάλλιστα ἀκοῦσαι, καὶ ζῆλον ἔχει πολὺν [καὶ] μῆκος λό-
γου ἄλυπον ἔχοντα, ταῦτα ἐπὶ κεφαλαίων εἰπεῖν πειρά-
σομαι. οἱ γὰρ τῆς κατὰ τὸν παρόντα χρόνον γενεᾶς πρό- 7
γονοι καὶ πατέρες καὶ τούτων ἐπάνω τὰς προσηγορίας
ἔχοντες, αἷς ὑπὸ τῶν ἐν γένει γνωρίζονται, ἠδίκησαν μὲν
οὐδένα πώποτε οὔτε Ἕλληνα οὔτε βάρβαρον, ἀλλ' ὑπῆρ-
χεν αὐτοῖς πρὸς ἅπασι τοῖς ἄλλοις καλοῖς κἀγαθοῖς καὶ
δικαιοτάτοις ‖ εἶναι, ἀμυνόμενοι δὲ πολλὰ καὶ λαμπρὰ
διεπράξαντο. καὶ γὰρ τὸν Ἀμαζόνων στρατὸν ἐλθόντ'
ἐκράτησαν οὕτως ὥστ' ἔξω Φάσιδος ἐκβαλεῖν, καὶ τὸν Εὐ- 8
μόλπου καὶ τὸν πολλῶν ἄλλων στόλον οὐ μόνον ἐκ τῆς
οἰκείας ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς τῶν ἄλλων Ἑλλήνων χώρας ἐξή-
λασαν, οὓς οἱ πρὸ ἡμῶν οἰκοῦντες πρὸς ἑσπέραν πάντες
οὔθ' ὑπέμειναν οὔτ' ἠδυνήθησαν κωλῦσαι. καὶ μὴν καὶ
τῶν Ἡρακλέους παίδων, ὃς τοὺς ἄλλους ἔσωζε, σωτῆρες
ὠνομάσθησαν, ἡνίκ' ἦλθον εἰς τήνδε τὴν γῆν ἱκέται, φεύ-
γοντες Εὐρυσθέα. καὶ πρὸς πᾶσι τούτοις καὶ πολλοῖς
ἄλλοις καὶ καλοῖς ἔργοις τὰ τῶν κατοιχομένων νόμιμα οὐ
περιεῖδον ὑβριζόμενα, ὅτε τοὺς ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας θάπτειν
ἐκώλυε Κρέων. τῶν μὲν οὖν εἰς μύθους ἀνενηνεγμένων 9
ἔργων πολλὰ παραλιπὼν τούτων ἐπεμνήσθην, ὧν οὕτως
ἕκαστον εὐσχήμονας καὶ πολλοὺς ἔχει λόγους ὥστε καὶ
τοὺς ἐμμέτρους καὶ τοὺς τῶν ᾀδομένων ποιητὰς καὶ πολ-
λοὺς τῶν συγγραφέων ὑποθέσεις τἀκείνων ἔργα τῆς αὐ-
τῶν μουσικῆς πεποιῆσθαι· ἃ δὲ τῇ μὲν ἀξίᾳ τῶν ἔργων
οὐδέν ἐστι τούτων ἐλάττω, τῷ δ' ὑπογυιότερ' εἶναι τοῖς
χρόνοις οὔπω μεμυθολόγηται οὐδ' εἰς τὴν ἡρωικὴν ἐπαν-
ῆκται τάξιν, ταῦτ' ἤδη λέξω. ἐκεῖνοι τὸν ἐξ ἁπάσης τῆς 10
Ἀσίας στόλον ἐλθόντα μόνοι δὶς ἠμύναντο καὶ κατὰ γῆν
καὶ κατὰ θάλατταν, καὶ διὰ τῶν ἰδίων κινδύνων κοινῆς
σωτηρίας πᾶσι τοῖς Ἕλλησιν αἴτιοι κατέστησαν. καὶ προ-
είρηται μὲν ὃ μέλλω λέγειν ὑπ' ἄλλων πρότερον, δεῖ δὲ
μηδὲ νῦν τοῦ δικαίου ‖ καὶ καλῶς ἔχοντος ἐπαίνου τοὺς
ἄνδρας ἐκείνους στερηθῆναι· τοσούτῳ γὰρ ἀμείνους τῶν
ἐπὶ Τροίαν στρατευσαμένων νομίζοιντ' ἂν εἰκότως, ὅσον
οἱ μὲν ἐξ ἁπάσης τῆς Ἑλλάδος ὄντες ἀριστεῖς δέκ' ἔτη

11 τῆς Ἀσίας ἓν χωρίον πολιορκοῦντες μόλις εἷλον, οὗτοι δὲ τὸν ἐκ πάσης τῆς ἠπείρου στόλον ἐλθόντα μόνοι, τἆλλα πάντα κατεστραμμένον, οὐ μόνον ἠμύναντο, ἀλλὰ καὶ τιμωρίαν ὑπὲρ ὧν τοὺς ἄλλους ἠδίκουν ἐπέθηκαν. ἔτι τοίνυν τὰς ἐν αὐτοῖς τοῖς Ἕλλησι πλεονεξίας κωλύοντες πάντας ὅσους συνέβη γενέσθαι κινδύνους ὑπέμειναν, ὅπου τὸ δίκαιον εἴη τεταγμένον, ἐνταῦθα προσνέμοντες ἑαυτούς, ἕως εἰς τὴν νῦν ζῶσαν ἡλικίαν ὁ χρόνος προήγαγεν ἡμᾶς.

12 Μηδεὶς δ' ἡγείσθω με ἀποροῦντα ὅ τι χρὴ περὶ τούτων εἰπεῖν ἑκάστου, ταῦτα τὰ πραχθέντα ἀπηριθμηκέναι. εἰ γὰρ ἁπάντων ἀμηχανώτατος ἦν ὅ τι χρὴ λέγειν πορίσασθαι, ἡ κείνων ἀρετὴ δείκνυσιν αὐτὴ ἃ καὶ πρόχειρα καὶ ῥάδιον ἐπελθεῖν ἐστίν. ἀλλὰ προαιροῦμαι τῆς εὐγενείας καὶ τῶν παρὰ τοῖς προγόνοις μεγίστων μνησθεὶς ὡς τάχιστα συνάψαι τὸν λόγον πρὸς τὰ τοῖσδε πεπραγμένα, ἵν' ὥσπερ τὰς φύσεις ἦσαν συγγενεῖς, οὕτω τοὺς ἐπαίνους ἐπ' αὐτῶν κοινοὺς ποιήσωμαι, ὑπολαμβάνων ταῦτ' ἂν εἶναι κεχαρισμένα κἀκείνοις καὶ μάλιστ' ἀμφοτέροις, εἰ τῆς ἀλλήλων ἀρετῆς μὴ μόνον τῇ φύσει μετάσχοιεν ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐπαίνοις.

13 Ἀνάγκη δ' ἐν τῷ μεταξὺ διαλαβεῖν, καὶ πρὸ τοῦ τὰ τοῖσδε πεπραγμένα τοῖς ἀνδράσι δηλοῦν καὶ τοὺς ἔξω τοῦ γένους πρὸς τὸν τάφον ἠκολουθηκότας πρὸς ‖ εὔνοιαν παρακαλέσαι. καὶ γὰρ εἰ μὲν εἰς χρημάτων δαπάνην ἤ τιν' ἄλλην θεωρίαν ἱππικῶν ἢ γυμνικῶν ἄθλων ἐτάχθην κοσμῆσαι τὸν τάφον, ὅσῳπερ ἂν προθυμότερον καὶ ἀφειδέστερον ταῦτα παρεσκευάσμην, τοσούτῳ μᾶλλον ἂν προσήκοντα ἔδοξα πεποιηκέναι· λόγῳ δ' ἐπαινέσαι τούτους τοὺς ἄνδρας αἱρεθείς, ἐὰν μὴ τοὺς ἀκούοντας συμβουλομένους λάβω, φοβοῦμαι μὴ τῇ προθυμίᾳ τοὐναντίον οὗ
14 δεῖ ποιήσω. ὁ μὲν γὰρ πλοῦτος καὶ τὸ τάχος καὶ ἡ ἰσχύς, καὶ ὅσα ἄλλα τούτοις ὅμοια, αὐτάρκεις ἔχει τὰς ὀνήσεις τοῖς κεκτημένοις, καὶ κρατοῦσιν ἐν αὐτοῖς οἷς ἂν παρῇ, κἂν μηδεὶς τῶν ἄλλων βούληται· ἡ δὲ τῶν λόγων πειθὼ τῆς τῶν ἀκουόντων εὐνοίας προσδεῖται, καὶ μετὰ μὲν ταύτης, κἂν μετρίως ῥηθῇ, δόξαν ἤνεγκε καὶ χάριν προσ-

ποιεῖ, ἄνευ δὲ ταυτης, κἂν ὑπερβάλῃ τῷ λέγειν καλῶς, προσέστη τοῖς ἀκούουσιν.

Πολλὰ τοίνυν ἔχων εἰπεῖν ὧν οἵδε πράξαντες δικαίως 15
ἐπαινεθήσονται, ἐπειδὴ πρὸς αὐτοῖς εἰμὶ τοῖς ἔργοις, ἀπορῶ τί πρῶτον εἴπω· προϊστάμενα γὰρ πάντα εἰς ἕνα καιρὸν δύσκριτον καθίστησί μοι τὴν αἵρεσιν αὐτῶν. οὐ μὴν ἀλλὰ πειράσομαι τὴν αὐτὴν ποιήσασθαι τοῦ λόγου τάξιν ἥπερ ὑπῆρξε τοῦ βίου τούτοις. οἵδε γὰρ ἐξ ἀρχῆς 16
ἐν πᾶσι τοῖς παιδεύμασιν ἦσαν ἐπιφανεῖς, τὰ πρέποντα καθ' ἡλικίαν ἀσκοῦντες ἑκάστην, καὶ πᾶσιν ἀρέσκοντες οἷς χρή, γονεῦσι φίλοις οἰκείοις. τοιγαροῦν ὥσπερ ἴχνη γνωρίζουσα νῦν ἡ τῶν οἰκείων αὐτοῖς καὶ φίλων μνήμη πᾶσαν ὥραν ἐπὶ τούτους φέρεται τῷ πόθῳ, πολλὰ ὑπομνήματα λαμβάνουσα ἐν οἷς συνῄδει τούτοις ‖ ἀρίστοις οὖσιν. ἐπειδὴ δὲ εἰς ἄνδρας ἀφίκοντο, οὐ μόνον τοῖς πο- 17
λίταις γνώριμον τὴν αὐτῶν φύσιν ἀλλὰ καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις κατέστησαν. ἔστι γάρ, ἔστιν ἁπάσης ἀρετῆς ἀρχὴ μὲν σύνεσις, πέρας δὲ ἀνδρία· καὶ τῇ μὲν δοκιμάζεται τί πρακτέον ἐστί, τῇ δὲ σώζεται. ἐν τούτοις ἀμφοτέροις οἵδε πολὺ διήνεγκαν. καὶ γὰρ εἴ τις ἐφύετο κοινὸς πᾶσι 18
κίνδυνος τοῖς Ἕλλησιν, οὗτοι πρῶτοι προείδοντο καὶ πολλάκις εἰς σωτηρίαν ἅπαντας παρεκάλεσαν· ὅπερ γνώμης ἀπόδειξίς ἐστιν εὖ φρονούσης. καὶ τῆς παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ἀγνοίας μεμιγμένης κακίᾳ, ὅτ' ἐνῆν ταῦτα κωλύειν ἀσφαλῶς, τὰ μὲν οὐ προορώσης τὰ δ' εἰρωνευομένης, ὅμως, ἡνίχ' ὑπήκουσαν καὶ τὰ δέοντα ποιεῖν ἠθέλησαν, οὐκ ἐμνησικάκησαν, ἀλλὰ προστάντες καὶ παρασχόντες ἅπαντα προθύμως, καὶ σώματα καὶ χρήματα καὶ συμμάχους, εἰς πεῖραν ἦλθον ἀγῶνος, εἰς ὃν οὐδὲ τῆς ψυχῆς ἐφείσαντο. ἐξ ἀνάγκης δὲ συμβαίνει, ὅταν μάχη γίγνηται, 19
τοῖς μὲν ἡττᾶσθαι τοῖς δὲ νικᾶν. οὐκ ἂν ὀκνήσαιμι δ' εἰπεῖν ὅτι μοι δοκοῦσιν οἱ τελευτῶντες ἑκατέρων ἐν τάξει τῆς μὲν ἥττης οὐ μετέχειν, νικᾶν δὲ ὁμοίως ἀμφότεροι. τὸ μὲν γὰρ κρατεῖν ἐν τοῖς ζῶσιν, ὡς ἂν ὁ δαίμων παραδῷ, κρίνεται· ὃ δ' εἰς τοῦτο ἕκαστον ἔδει παρασχέσθαι, πᾶς ὁ μένων ἐν τάξει πεποίηκεν. εἰ δὲ θνητὸς ὢν τὴν εἱμαρμένην ἔσχε, τῇ τύχῃ πέπονθε τὸ συμβαῖνον, οὐχὶ

20 τὴν ψυχὴν ἥττηται τῶν ἐναντίων. νομίζω τοίνυν καὶ τοῦ
τῆς χώρας ἡμῶν μὴ ἐπιβῆναι ‖ τοὺς πολεμίους πρὸς τῇ
τῶν ἐναντίων ἀγνωμοσύνῃ τὴν τούτων ἀρετὴν αἰτίαν γε-
γενῆσθαι· κατ' ἄνδρα γὰρ πεῖραν εἰληφότες οἱ τότε συμ-
μίξαντες ἐκεῖ οὐκ ἠβούλοντο αὖθις εἰς ἀγῶνα καθίστασθαι
τοῖς ἐκείνων οἰκείοις, ὑπολαμβάνοντες ταῖς μὲν φύσεσι
ταῖς ὁμοίαις ἀπαντήσεσθαι, τύχην δὲ οὐκ εὔπορον εἶναι
τὴν ὁμοίαν λαβεῖν. δηλοῖ δὲ οὐχ ἥκιστα, ὅτι ταῦθ' οὕτως
ἔχει, καὶ τὰ τῆς γεγονυίας εἰρήνης· οὐ γὰρ ἔνεστιν εἰπεῖν
οὔτ' ἀληθεστέραν οὔτε καλλίω πρόφασιν τοῦ τῆς τῶν
τετελευτηκότων ἀγασθέντα ἀρετῆς τὸν τῶν ἐναντίων κύ-
ριον φίλον γενέσθαι τοῖς ἐκείνων οἰκείοις βούλεσθαι μᾶλ-
21 λον ἢ πάλιν τὸν ὑπὲρ τῶν ὅλων κίνδυνον ἄρασθαι. οἶμαι
δ' ἄν, εἴ τις αὐτοὺς τοὺς παραταξαμένους ἐρωτήσειε πό-
τερ' ἡγοῦνται ταῖς αὑτῶν ἀρεταῖς ἢ τῇ παραδόξῳ καὶ χα-
λεπῇ τύχῃ κατωρθωκέναι καὶ τῇ τοῦ προεστηκότος αὐτῶν
ἐμπειρίᾳ καὶ τόλμῃ, οὐδένα οὕτ' ἀναίσχυντον οὔτε τολμη-
ρὸν οὕτως εἶναι ὅντιν' ἀντιποιήσεσθαι τῶν πεπραγμένων.
ἀλλὰ μὴν ὑπὲρ ὧν ὁ πάντων κύριος δαίμων ὡς ἠβούλετο
ἔνειμε τὸ τέλος, ἅπαντας ἀφεῖσθαι κακίας ἀνάγκη τοὺς
λοιπούς, ἀνθρώπους γε ὄντας· περὶ ὧν δ' ὁ τῶν ἐναντίων
ἡγεμὼν ὑπερῆρε τοὺς ἐπὶ τούτῳ ταχθέντας, οὐχὶ τοὺς
πολλοὺς οὔτ' ἐκείνων οὔθ' ἡμῶν αἰτιάσαιτ' ἄν τις εἰκό-
22 τως. εἰ δ' ἄρα ἔστι τις ἀνθρώπων ὅτῳ περὶ τούτων ἐγκα-
λέσαι προσήκει, τοῖς ἐπὶ τούτῳ ταχθεῖσι Θηβαίων, οὐχὶ
τοῖς πολλοῖς οὔτ' ἐκείνων οὔθ' ἡμῶν ἐγκαλέσειεν ἄν τις
εἰκότως, οἳ ‖ δύναμιν λαβόντες ἔχουσαν θυμὸν ἀήττητον
καὶ ἀπροφάσιστον καὶ φιλοτιμίαν ἐφάμιλλον οὐδενὶ τού-
23 των ὀρθῶς ἐχρήσαντο. καὶ τὰ μὲν ἄλλ' ἔστι τούτων, ὡς
ἕκαστος ἔχει γνώμης, οὕτως ὑπολαμβάνειν· ὃ δὲ ἅπασιν
ὁμοίως τοῖς οὖσιν ἀνθρώποις γεγένηται φανερόν, ὅτι ἡ
πᾶσα τῆς Ἑλλάδος ἄρα ἐλευθερία ἐν ταῖς τῶνδε τῶν ἀν-
δρῶν ψυχαῖς διεσώζετο· ἐπειδὴ γοῦν ἡ πεπρωμένη τού-
τους ἀνεῖλεν, οὐδεὶς ἀντέστη τῶν λοιπῶν. καὶ φθόνος
μὲν ἀπείη τοῦ λόγου, δοκεῖ δέ μοί τις ἂν εἰπὼν ὡς ἡ
τῶνδε τῶν ἀνδρῶν ἀρετὴ τῆς Ἑλλάδος ἦν ψυχὴ τἀληθὲς
24 εἰπεῖν· ἅμα γὰρ τά τε τούτων πνεύματα ἀπηλλάγη τῶν

οἰκείων σωμάτων, καὶ τὸ τῆς Ἑλλάδος ἀξίωμα ἀνῄρηται. μεγάλην μὲν οὖν ἴσως ὑπερβολὴν δόξομεν λέγειν, ῥητέον δ' ὅμως· ὥσπερ γάρ, εἴ τις ἐκ τοῦ καθεστηκότος κόσμου τὸ φῶς ἐξέλοι, δυσχερὴς καὶ χαλεπὸς ἅπας ὁ λειπόμενος ἂν ἡμῖν βίος γένοιτο, οὕτω τῶνδε τῶν ἀνδρῶν ἀναιρεθέντων ἐν σκότει καὶ πολλῇ δυσκλείᾳ πᾶς ὁ πρὸ τοῦ ζῆλος τῶν Ἑλλήνων γέγονεν.

Διὰ πολλὰ δ' εἰκότως ὄντες τοιοῦτοι, διὰ τὴν πολι- 25
*τείαν οὐχ ἥκιστα ἦσαν σπουδαῖοι. αἱ μὲν γὰρ διὰ τῶν
ὀλίγων δυναστεῖαι δέος μὲν ἐνεργάζονται τοῖς πολίταις,
αἰσχύνην δ' οὐ παριστᾶσιν· ἡνίκα γοῦν ὁ ἀγὼν ἔλθῃ τοῦ
πολέμου, πᾶς τις εὐχερῶς ἑαυτὸν σῴζει, συνειδὼς ὅτι, ἐὰν
τοὺς κυρίους ἢ δώροις ἢ δι' ἄλλης ἡστινοσοῦν ὁμιλίας ἐξα-
ρέσηται, κἂν τὰ δεινότατα ἀσχημονήσῃ, μικρὸν ὄνειδος τὸ
λοιπὸν αὐτῷ καταστήσεται· αἱ δὲ δημοκρατίαι πολλά τε* 26
*ἄλλα καὶ καλὰ καὶ δίκαια ἔχουσιν, ὧν τὸν εὖ φρονοῦντα
ἀντέχεσθαι ‖ δεῖ, καὶ τὴν παρρησίαν ἐκ τῆς ἀληθείας ἠρ-
τημένην οὐκ ἔστιν ἀποτρέψαι τἀληθὲς δηλοῦν. οὔτε γὰρ
πάντας ἐξαρέσασθαι τοῖς αἰσχρόν τι ποιήσασι δυνατόν,
οὔτε μόνος ὁ τἀληθὲς ὄνειδος λέγων λυπεῖ· καὶ γὰρ οἱ
μηδὲν ἂν εἰπόντες αὐτοὶ βλάσφημον ἄλλου γε λέγοντος
χαίρουσιν ἀκούοντες. ἃ φοβούμενοι πάντες, εἰκότως τῇ
τῶν μετὰ ταῦτα ὀνειδῶν αἰσχύνῃ τόν τε προσιόντα ἀπὸ
τῶν ἐναντίων κίνδυνον εὐρώστως ὑπέμειναν, καὶ θάνατον
καλὸν εἵλοντο μᾶλλον ἢ βίον αἰσχρόν.*

Ἃ μὲν οὖν κοινῇ πᾶσιν ὑπῆρχε τοῖσδε τοῖς ἀνδράσιν 27
*εἰς τὸ καλῶς ἐθέλειν ἀποθνήσκειν, εἴρηται, γένος, παι-
δεία, χρηστῶν ἐπιτηδευμάτων συνήθεια, τῆς ὅλης πολι-
τείας ὑπόθεσις· ἃ δὲ κατὰ φυλὰς παρεκάλεσεν ἑκάστους
εὐρώστους εἶναι, ταῦτ' ἤδη λέξω. ᾔδεσαν πάντες Ἐρεχθεῖ-
δαι τὸν ἐπώνυμον αὑτῶν Ἐρεχθέα ἕνεκα τοῦ σῶσαι τὴν
χώραν τὰς αὑτοῦ παῖδας, ἃς Ὑακινθίδας καλοῦσιν, εἰς
προῦπτον θάνατον δόντα ἀναλῶσαι. αἰσχρὸν οὖν ἡγοῦντο
τὸν μὲν ἀπ' ἀθανάτων πεφυκότα πάντα ποιεῖν ἕνεκα τοῦ
τὴν πατρίδα ἐλευθερῶσαι, αὐτοὶ δὲ φανῆναι θνητὸν σῶμα
ποιούμενοι περὶ πλείονος ἢ δόξαν ἀθάνατον. οὐκ ἠγνό-* 28
ουν Αἰγεῖδαι Θησέα τὸν Αἰγέως πρῶτον ἰσηγορίαν κατα-

στησάμενον τῇ πόλει. δεινὸν οὖν ἡγοῦντο προδοῦναι
τὴν ἐκείνου προαίρεσιν, καὶ τεθνάναι μᾶλλον ᾑροῦντο ἢ
καταλυομένης ταύτης παρὰ τοῖς Ἕλλησι ζῆν φιλοψυχή-
σαντες. παρειλήφεσαν Πανδιονίδαι Πρόκνην καὶ Φιλομή-
λαν τὰς Πανδίονος θυγατέρας, ὡς ἐτιμωρήσαντο Τηρέα
‖ διὰ τὴν εἰς αὐτὰς ὕβριν. οὐ βιωτὸν οὖν ἐνόμιζον αὐ-
τοῖς, εἰ μὴ συγγενεῖς ὄντες θυμὸν ἔχοντες ὅμοιον ἐκεί-
ναις φανήσονται ἐφ᾽ οἷς τὴν Ἑλλάδα ἑώρων ὑβριζομένην.
29 ἠκηκόεσαν Λεοντίδαι μυθολογουμένας τὰς Λεὼ κόρας,
ὡς αὑτὰς ἔδοσαν σφάγιον τοῖς πολίταις ὑπὲρ τῆς χώρας.
ὅτε δ᾽ οὖν γυναῖκες ἐκεῖναι τοιαύτην ἔσχον ἀνδρείαν, οὐ
θεμιτὸν αὐτοῖς ὑπελάμβανον χείροσιν ἀνδράσιν οὖσιν
ἐκείνων φανῆναι. ἐμέμνηντο Ἀκαμαντίδαι τῶν ἐπῶν ἐν
οἷς Ὅμηρος ἕνεκα τῆς μητρός φησιν Αἴθρας Ἀκάμαντα
εἰς Τροίαν στεῖλαι. ὃ μὲν οὖν παντὸς ἐπειρᾶτο κινδύνου
τοῦ σῶσαι τὴν ἑαυτοῦ μητέρα ἕνεκα· οἱ δὲ τοὺς οἴκοι σύμ-
παντας οἰκείους ὑπὲρ τοῦ σῶσαι πῶς οὐκ ἤμελλον πάντα
30 κίνδυνον ὑπομένειν; οὐκ ἐλάνθανεν Οἰνεΐδας ὅτι Κάδμου
μὲν Σεμέλη, τῆς δὲ ὃν οὐ πρέπον ἐστὶν ὀνομάζειν ἐπὶ τοῦδε
τοῦ τάφου, τοῦ δὲ Οἰνεὺς γέγονεν, ὃς ἀρχηγὸς αὐτῶν ἐκα-
λεῖτο. κοινοῦ δ᾽ ὄντος ἀμφοτέραις ταῖς πόλεσι τοῦ παρόν-
τος κινδύνου, ὑπὲρ ἀμφοτέρων ἅπασαν ᾤοντο δεῖν ἀγωνίαν
ἐκτῖσαι. ᾔδεσαν Κεκροπίδαι τὸν ἑαυτῶν ἀρχηγὸν τὰ μὲν
ὡς ἔστι δράκων τὰ δ᾽ ὡς ἔστιν ἄνθρωπος λεγόμενον οὐκ
ἄλλοθέν ποθεν ἢ τῷ τὴν σύνεσιν αὐτοῦ προσομοιοῦν ἀν-
θρώπῳ, τὴν ἀλκὴν δὲ δράκοντι. ἄξια δὴ τούτων πράττειν
31 ὑπελάμβανον αὐτοῖς προσήκειν. ἐμέμνηντο Ἱπποθοωντί-
δαι τῶν Ἀλόπης γάμων, ἐξ ὧν Ἱπποθόων ἔφυ, καὶ τὸν
ἀρχηγὸν ᾔδεσαν· ὧν, τὸ πρέπον φυλάττων ἐγὼ τῷδε τῷ
καιρῷ, τὸ σαφὲς εἰπεῖν ὑπερβαίνω. ἄξια δὴ τούτων ᾤοντο
‖ δεῖν ποιοῦντες ὀφθῆναι. οὐκ ἐλάνθανεν Αἰαντίδας ὅτι
τῶν ἀριστείων στερηθεὶς Αἴας ἀβίωτον ἑαυτῷ ἡγήσατο
τὸν βίον. ἡνίκ᾽ οὖν ὁ δαίμων ἄλλῳ τἀριστεῖα ἐδίδου, τότε
τοὺς ἐχθροὺς ἀμυνόμενοι τεθνάναι δεῖν ᾤοντο ὥστε μη-
δὲν ἀνάξιον αὑτῶν παθεῖν. οὐκ ἠμνημόνουν Ἀντιοχίδαι
Ἡρακλέους ὄντα Ἀντίοχον. δεῖν οὖν ἡγήσαντο ἢ ζῆν ἀξίως
τῶν ὑπαρχόντων ἢ τεθνάναι καλῶς.

Οἱ μὲν οὖν ζῶντες οἰκεῖοι τούτων ἐλεεινοὶ τοιούτων 32
ἀνδρῶν ἐστερημένοι καὶ συνηθείας πολλῆς καὶ φιλανθρώ-
που διεζευγμένοι, καὶ τὰ τῆς πατρίδος πράγματ' ἔρημα
καὶ δακρύων καὶ πένθους πλήρη. οἳ δ' εὐδαίμονες τῷ
δικαίῳ λογισμῷ, <οἵ γε> πρῶτον μὲν ἀντὶ μικροῦ χρόνου
πολὺν καὶ τὸν ἅπαντα εὔκλειαν ἀγήρω καταλείπουσιν, ἐν
ᾗ καὶ παῖδες οἱ τούτων ὀνομαστοὶ τραφήσονται καὶ γο-
νεῖς οἱ τούτων περίβλεπτοι γηροτροφήσονται, παραψυ-
χὴν τῷ πένθει τὴν τούτων εὔκλειαν ἔχοντες. ἔπειτα νό- 33
σων ἀπαθεῖς τὰ σώματα καὶ λυπῶν ἄπειροι τὰς ψυχάς,
ἃς ἐπὶ τοῖς συμβεβηκόσιν οἱ ζῶντες ἔχουσιν, ἐν μεγάλῃ
τιμῇ καὶ πολλῷ ζήλῳ τῶν νομιζομένων τυγχάνουσιν. οὓς
γὰρ ἅπασα μὲν ἡ πατρὶς θάπτει δημοσίᾳ, κοινῶν δ'
ἐπαίνων μόνοι τυγχάνουσι, ποθοῦσι δ' οὐ μόνον οἱ συγ-
γενεῖς καὶ πολῖται ἀλλὰ πᾶσαν ὅσην Ἑλλάδα χρὴ προσει-
πεῖν, συμπεπένθηκε δὲ καὶ τῆς οἰκουμένης τὸ πλεῖστον
μέρος, πῶς οὐ χρὴ τούτους εὐδαίμονας νομίζεσθαι; οὓς 34
παρέδρους εἰκότως ἄν τις φήσαι τοῖς κάτω θεοῖς εἶναι,
τὴν αὐτὴν τάξιν ἔχοντας τοῖς προτέροις || ἀγαθοῖς ἀνδρά-
σιν ἐν μακάρων νήσοις. οὐ γάρ ἰδών τις οὐδὲ περὶ ἐκεί-
νων ταῦτ' ἀπήγγελκεν, ἀλλ' οὓς οἱ ζῶντες ἀξίους ὑπειλή-
φαμεν τῶν ἄνω τιμῶν, τούτους τῇ δόξῃ καταμαντευόμενοι
κἀκεῖ τῶν αὐτῶν τιμῶν ἡγούμεθ' αὐτοὺς τυγχάνειν. ἔστι 35
μὲν οὖν ἴσως χαλεπὸν τὰς παρούσας συμφορὰς λόγῳ κου-
φίσαι, δεῖ δ' ὅμως πειρᾶσθαι καὶ πρὸς τὰ παρηγοροῦντα
τρέπειν τὴν ψυχήν, ὡς τοὺς τοιούτους ἄνδρας γεγονότας
αὐτοὺς καὶ πεφυκότας ἐκ τοιούτων ἑτέρων καλόν ἐστι τὰ
δεινὰ εὐσχημονέστερον τῶν ἄλλων φέροντας ὁρᾶσθαι καὶ
πάσῃ τύχῃ χρωμένους ὁμοίους εἶναι. καὶ γὰρ ἐκείνοις 36
ταῦτ' ἂν εἴη μάλιστ' ἐν κόσμῳ καὶ τιμῇ, καὶ πάσῃ τῇ
πόλει καὶ τοῖς ζῶσι ταῦτ' ἂν ἐνέγκοι πλείστην εὐδοξίαν.
χαλεπὸν πατρὶ καὶ μητρὶ παίδων στερηθῆναι καὶ ἐρήμοις
εἶναι τῶν οἰκειοτάτων γηροτρόφων, σεμνὸν δέ γε ἀγήρως
τιμὰς καὶ μνήμην ἀρετῆς δημοσίᾳ κτησαμένους ἐπιδεῖν,
καὶ θυσιῶν καὶ ἀγώνων ἠξιωμένους ἀθανάτων. λυπηρὸν 37
παισὶν ὀρφανοῖς γεγενῆσθαι πατρός, καλὸν δέ γε κληρο-
νομεῖν πατρῴας εὐδοξίας. καὶ τοῦ μὲν λυπηροῦ τούτου

τὸν δαίμονα αἴτιον εὑρήσομεν ὄντα, ᾧ φύντας ἀνθρώπους εἴκειν ἀνάγκη, τοῦ δὲ τιμίου καὶ καλοῦ τὴν τῶν ἐθελησάντων καλῶς ἀποθνήσκειν αἵρεσιν.

Ἐγὼ μὲν οὖν οὐχ ὅπως πολλὰ λέξω, τοῦτ᾽ ἐσκεψάμην, ἀλλ᾽ ὅπως τἀληθῆ· ὑμεῖς δὲ ἀποδυράμενοι, καὶ τὰ προσήκοντα ὡς χρὴ καὶ νόμιμα ποιήσαντες, ἄπιτε.

‖ ΕΡΩΤΙΚΟΣ.

Ἀλλ᾽ ἐπειδήπερ ἀκούειν βούλει τοῦ λόγου, δείξω σοι καὶ ἀναγνώσομαι. δεῖ δέ σε τὴν προαίρεσιν αὐτοῦ πρῶτον εἰδέναι. βούλεται μὲν γὰρ ὁ τὸν λόγον ποιῶν ἐπαινεῖν Ἐπικράτην, ὃν ᾤετο πολλῶν κἀγαθῶν ὄντων νέων ἐν τῇ πόλει χαριέστατον εἶναι, καὶ πλεῖον τῇ συνέσει προέχειν ἢ τῷ κάλλει τῶν ἡλικιωτῶν· ὁρῶν δ᾽ ὡς ἔπος εἰπεῖν τὰ πλεῖστα τῶν ἐρωτικῶν συνταγμάτων αἰσχύνην μᾶλλον ἢ τιμὴν περιάπτοντα τούτοις περὶ ὧν ἐστὶ γεγραμμένα, τοῦτο ὅπως μὴ πείσεται πεφύλακται, καὶ ὅπερ καὶ πεπεῖσθαί φησι τῇ γνώμῃ, τοῦτο καὶ γέγραφεν, ὡς δίκαιος ἐραστὴς οὔτ᾽ ἂν ποιήσειεν οὐδὲν αἰσχρὸν οὔτ᾽
2 ἀξιώσειεν. ὃ μὲν οὖν ὥσπερ εἰ μάλιστ᾽ ἂν ἐρωτικὸν λάβοις τοῦ λόγου, περὶ τοῦτ᾽ ἐστίν· ὁ δ᾽ ἄλλος λόγος τὰ μὲν αὐτὸν ἐπαινεῖ τὸν νεανίσκον, τὰ δὲ αὐτῷ συμβουλεύει περὶ παιδείας τε καὶ προαιρέσεως τοῦ βίου. πάντα δὲ ταῦτα γέγραπται τὸν τρόπον ὅν τις ἂν εἰς βιβλίον καταθεῖτο. τοῖς μὲν γὰρ λεκτικοῖς τῶν λόγων ἁπλῶς καὶ ὁμοίως οἷς ἂν ἐκ τοῦ παραχρῆμά τις εἴποι πρέπει γεγράφθαι, τοῖς δ᾽ εἰς τὸν πλείω χρόνον τεθησομένοις ποιητικῶς καὶ περιττῶς ἁρμόττει συγκεῖσθαι· τοὺς μὲν γὰρ πιθανοὺς τοὺς δὲ ἐπιδεικτικοὺς εἶναι προσήκει. ἵν᾽ οὖν μὴ παρὰ τὸν λόγον σοι λέγω, μηδὲ ἅπερ γιγνώσκω ‖ περὶ τούτων αὐτὸς διεξίω, πρόσεχ᾽ ὡς αὐτοῦ τοῦ λόγου ἤδη ἀκουσόμενος, ἐπειδὴ καὶ αὐτὸς ἥκει, ὃν ἠβουλήθην ἀκούειν, Ἐπικράτης.

3 Ὁρῶν ἐνίους τῶν ἐρωμένων καὶ κάλλους μετεσχηκότων οὐδετέρᾳ δὴ τῶν εὐτυχιῶν τούτων ὀρθῶς χρωμένους, ἀλλ᾽ ἐπὶ μὲν τῇ τῆς ὄψεως εὐπρεπείᾳ σεμνυνομένους, τὴν δὲ

πρὸς τοὺς ἐραστὰς ὁμιλίαν δυσχεραίνοντας, καὶ τοσοῦτον
διημαρτηκότας τοῦ τὰ βέλτιστα κρίνειν ὥστε διὰ τοὺς
λυμαινομένους τῷ πράγματι καὶ πρὸς τοὺς μετὰ σωφρο-
σύνης πλησιάζειν ἀξιοῦντας δυσκόλως διακεῖσθαι, ἡγησά-
μην τοὺς μὲν τοιούτους οὐ μόνον αὑτοῖς ἀλυσιτελῶς ἔχειν,
ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις μοχθηρὰς συνηθείας ἐνεργάζεσθαι,
τοῖς δὲ καλῶς φρονοῦσιν οὐκ ἐπακολουθητέον εἶναι τῇ 4
τούτων ἀπονοίᾳ, μάλιστα μὲν ἐνθυμουμένοις ὅτι τῶν
πραγμάτων οὔτε καλῶν οὔτ' αἰσχρῶν ἀποτόμως ὄντων,
ἀλλὰ παρὰ τοὺς χρωμένους τὸ πλεῖστον διαλλαττόντων,
ἄλογον μιᾷ γνώμῃ περὶ ἀμφοτέρων χρῆσθαι, ἔπειθ' ὅτι
πάντων ἀτοπώτατόν ἐστι ζηλοῦν μὲν τοὺς πλείστους φί-
λους καὶ βεβαιοτάτους ἔχοντας, ἀποδοκιμάζειν δὲ τοὺς
ἐραστάς, ὃ μόνον ἴδιον ἔθνος οὐχ ἅπασιν ἀλλὰ τοῖς κα-
λοῖς καὶ σώφροσιν οἰκειοῦσθαι πέφυκεν. ἔτι δὲ τοῖς μὲν 5
μηδεμίαν πω τοιαύτην φιλίαν ἑωρακόσι καλῶς ἀποβᾶσαν,
ἢ σφόδρα κατεγνωκόσιν αὑτῶν ὡς οὐκ ἂν δυνηθεῖεν σω-
φρόνως τοῖς ἐντυγχάνουσιν ὁμιλεῖν, ἴσως οὐκ ἄλογον ταύ-
την ἔχειν τὴν διάνοιαν· τοῖς δ' ὥσπερ σὺ διακειμένοις,
καὶ μήτε παντάπασιν ἀνηκόοις οὖσιν ὅσαι δὴ χρεῖαι δι'
ἔρωτος χωρὶς αἰσχύνης ηὐξήθησαν, καὶ μετὰ τῆς ἀκρι-
βεστάτης ‖ εὐλαβείας τὸν ἄλλον χρόνον βεβιωκόσιν, οὐδ'
ὑποψίαν ἔχειν εὔλογον ὡς ἄν τι πράξειαν αἰσχρόν. διὸ 6
δὴ καὶ μᾶλλον ἐπήρθην τοῦτον γράψαι τὸν λόγον, ἡγού-
μενος δυοῖν τοῖν καλλίστοιν οὐ διαμαρτήσεσθαι. τὰ μὲν
γὰρ ὑπάρχοντά σοι ἀγαθὰ διελθὼν ἅμα σέ τε ζηλωτὸν
καὶ ἐμαυτὸν οὐκ ἀνόητον ἐπιδείξειν ἐλπίζω, εἴ σε τοιοῦ-
τον ὄντα ἀγαπῶ· συμβουλεύσας δ' ἃ μάλιστα κατεπείγει,
νομίζω τῆς μὲν εὐνοίας τῆς ἐμῆς δεῖγμα τῆς δὲ κοινῆς
φιλίας ἀφορμὴν ἀμφοτέροις εἰσοίσειν. καίτοι μ' οὐ λέλη- 7
θεν ὅτι χαλεπὸν μέν ἐστι καὶ τὴν σὴν φύσιν ἀξίως τῶν
ὑπαρχόντων διελθεῖν, ἔτι δὲ ἐπικινδυνότερον τὸ συμβου-
λεύειν μέλλοντα αὑτὸν ὑπεύθυνον τῷ πεισθέντι καταστῆ-
σαι. ἀλλὰ νομίζω τοῖς μὲν δικαίως ἐγκωμίων τυγχάνουσι
περιγενέσθαι τῆς τῶν ἐπαινούντων δυνάμεως προσήκειν
τῇ τῆς ἀληθείας ὑπερβολῇ, τῆς δὲ συμβουλῆς οὐ διαμαρ-
τήσεσθαι, συνειδὼς ὅτι διὰ μὲν ἀνοήτων καὶ παντελῶς

ὑπ᾽ ἀκρασίας διεφθαρμένων οὐδὲ τῶν καθ᾽ ὑπερβολὴν
ὀρθῶς βουλευθέντων οὐδὲν ἂν καλῶς ἐξενεχθείη, διὰ δὲ
τῶν σωφρόνως καὶ καθαρῶς ζῆν αἱρουμένων οὐδὲ τὰ με-
8 τρίως ἐσκεμμένα διαμαρτάνεσθαι πέφυκεν. τὰς μὲν οὖν
ἐλπίδας ἔχων τοιαύτας ἐγχειρῶ τῷ λόγῳ, ἡγοῦμαι δὲ
πάντας ἂν ὁμολογῆσαί μοι τοῖς τηλικούτοις μάλιστα
κατεπείγειν κάλλος μὲν ἐπὶ τῆς ὄψεως, σωφροσύνην δ᾽
ἐπὶ τῆς ψυχῆς, ἀνδρίαν δ᾽ ἐπ᾽ ἀμφοτέρων τούτων, χάριν
δὲ ἐπὶ τῶν λόγων διατελεῖν ἔχοντας· ὧν τὰ μὲν τῆς φύ-
σεως οὕτω καλῶς ἡ τύχη σοι παραδέδωκεν ὥστε περί-
βλεπτον καὶ θαυμαζόμενον διατελεῖν, ‖ τὰ δ᾽ αὐτὸς παρὰ
τὴν ἐπιμέλειαν εἰς τοῦτο προαγαγὼν ἥκεις ὥστε μηδὲν
9 ἄν σοι τῶν εὖ φρονούντων ἐπιτιμῆσαι. καίτοι τί χρὴ τὸν
τῶν μεγίστων ἐπαίνων ἄξιον; οὐχ ὑπὸ μὲν τῶν θεῶν
ἠγαπημένον φαίνεσθαι, παρὰ δὲ τοῖς ἀνθρώποις τὰ μὲν
δι᾽ αὑτὸν τὰ δὲ διὰ τὴν τύχην θαυμάζεσθαι; καθ᾽ ὅλου
μὲν τοίνυν τῶν ὑπαρχόντων σοι πρὸς ἀρετὴν ἴσως ὕστερον
ἁρμόσει τὰ πλείω διελθεῖν· ἃ δ᾽ ἑκάστου τούτων ἐγκώμια
εἰπεῖν ἔχω, ταῦτα δηλῶσαι πειράσομαι μετ᾽ ἀληθείας.

10 Ἄρξομαι δὲ πρῶτον ἐπαινεῖν ὅπερ πρῶτον ἰδοῦσιν
ἅπασιν ἔστι γνῶναί σου, τὸ κάλλος, καὶ τούτου τὸ χρῶμα,
δι᾽ οὗ καὶ τὰ μέλη καὶ ὅλον τὸ σῶμα φαίνεται. ᾧ τίν᾽ ἂν
ἁρμόττουσαν εἰκόνα ἐνέγκω, σκοπῶν οὐχ ὁρῶ, ἀλλὰ παρί-
σταταί μοι δεῖσθαι τῶν ἀναγνόντων τόνδε τὸν λόγον σὲ
θεωρῆσαι καὶ ἰδεῖν, ἵνα συγγνώμης τύχω μηδὲν ὅμοιον
11 ἔχων εἰπεῖν. τῷ γὰρ <ἂν> εἰκάσειέ τις θνητῷ, ὃ ἀθάνατον
τοῖς ἰδοῦσιν ἐργάζεται πόθον, καὶ ὁρώμενον οὐκ ἀποπλη-
ροῖ, καὶ μεταστὰν μνημονεύεται, καὶ τὴν τῶν θεῶν ἀξίαν
ἐπ᾽ ἀνθρώπου φύσιν ἔχει, πρὸς μὲν τὴν εὐπρέπειαν ἀν-
θηρόν, πρὸς δὲ τὰς αἰτίας ἀνυπονόητον; ἀλλὰ μὴν οὐδὲ
ταῦτ᾽ ἔστιν αἰτιάσασθαι πρὸς τὴν σὴν ὄψιν, ἃ πολλοῖς
12 ἄλλοις ἤδη συνέπεσε τῶν κάλλους μετασχόντων. ἢ γὰρ
διὰ ῥᾳθυμίαν τοῦ σώματος ἅπασαν συνετάραξαν τὴν
ὑπάρχουσαν εὐπρέπειαν, ἢ δι᾽ ἀτύχημά τι καὶ τὰ καλῶς
πεφυκότα συνδιέβαλον αὐτῷ. ὧν οὐδενὶ τὴν σὴν ὄψιν
εὕροιμεν ἂν ἔνοχον γεγενημένην· οὕτω γὰρ σφόδρα ἐφυ-
λάξατο ‖ πάσας τὰς τοιαύτας κῆρας ὅστις ποτ᾽ ἦν θεῶν ὁ

τῆς σῆς ὄψεως προνοηθείς, ὥστε μηδὲν μέμψεως ἄξιον
τὰ δὲ πλεῖστα περίβλεπτά σου καταστῆσαι. καὶ μὲν δὴ 13
καὶ τῶν ὁρωμένων ἐπιφανεστάτου μὲν ὄντος τοῦ προσ-
ώπου, τούτου δὲ αὐτοῦ τῶν ὀμμάτων, ἔτι μᾶλλον ἐν τού-
τοις ἐπεδείξατο τὴν εὔνοιαν ἣν εἶχεν εἰς σὲ τὸ δαιμόνιον.
οὐ γὰρ μόνον πρὸς τὸ τὰ κατεπείγονθ' ὁρᾶν αὐτάρκη
παρέσχηται, ἀλλ' ἐνίων οὐδ' ἐκ τῶν πραττομένων γιγνω-
σκομένης τῆς ἀρετῆς, σοῦ διὰ τῶν τῆς ὄψεως σημείων
τὰ κάλλιστα τῶν ἠθῶν ἐνεφάνισε, πρᾶον μὲν καὶ φιλάν-
θρωπον τοῖς ὁρῶσι, μεγαλοπρεπῆ δὲ καὶ σεμνὸν τοῖς
ὁμιλοῦσιν, ἀνδρεῖον δὲ καὶ σώφρονα πᾶσιν ἐπιδείξας. ὃ 14
καὶ μάλιστ' ἄν τις θαυμάσειεν· τῶν γὰρ ἄλλων ἐπὶ μὲν
τῆς πραότητος ταπεινῶν ἐπὶ δὲ τῆς σεμνότητος αὐθαδῶν
ὑπολαμβανομένων, καὶ διὰ μὲν τὴν ἀνδρίαν θρασυτέρων
διὰ δὲ τὴν ἡσυχίαν ἀβελτέρων εἶναι δοκούντων, τοσαύτας
ὑπεναντιώσεις πρὸς ἄλληλα λαβοῦσα ἡ τύχη πρὸς τὸ δέον
ἅπανθ' ὁμολογούμενα ἀπέδωκεν, ὥσπερ εὐχὴν ἐπιτελοῦσα
ἢ παράδειγμα τοῖς ἄλλοις ἐπιδεῖξαι βουληθεῖσα, ἀλλ' οὐ
θνητήν, ὡς εἴθιστο, φύσιν ἱστᾶσα. εἰ μὲν οὖν οἷόν τ' ἦν 15
ἐφικέσθαι τῷ λόγῳ τοῦ κάλλους τοῦ σοῦ ἢ τοῦτο ἦν μό-
νον τῶν σῶν ἀξιέπαινον, οὐδὲν ἂν παραλιπεῖν ᾠόμεθα
δεῖν ἐπαινοῦντες τῶν προσόντων σοι· νῦν δὲ δέδοικα μὴ
πρὸς τὰ λοιπὰ ἀπειρηκόσι χρησώμεθα τοῖς ἀκροαταῖς
καὶ περὶ τούτου μάτην τερθρευώμεθα. πῶς γὰρ ἄν τις 16
ὑπερβάλοι τῷ λόγῳ τὴν σὴν ‖ ὄψιν, ἧς μηδ' ἃ τέχνη πε-
ποίηται τῶν ἔργων τοῖς ἀρίστοις δημιουργοῖς δύναται
ὑπερτεῖναι; καὶ θαυμαστὸν οὐδέν· τὰ μὲν γὰρ ἀκίνητον
ἔχει τὴν θεωρίαν, ὥστ' ἄδηλον εἶναι τί ποτ' ἂν ψυχῆς
μετασχόντα φανείη, σοῦ δὲ τὸ τῆς γνώμης ἦθος ἐν πᾶσιν
οἷς ποιεῖς μεγάλην εὐπρέπειαν ἐπαυξάνει τῷ σώματι.

Περὶ μὲν οὖν τοῦ κάλλους πολλὰ παραλιπὼν τοσαῦτα
ἐπαινέσαι ἔχω· περὶ δὲ τῆς σωφροσύνης κάλλιστον μὲν 17
τοῦτ' ἔχοιμ' ἂν εἰπεῖν, ὅτι τῆς ἡλικίας τῆς τοιαύτης εὐ-
διαβόλως ἐχούσης σοὶ μᾶλλον ἐπαινεῖσθαι συμβέβηκεν.
οὐ γὰρ μόνον οὐδὲν ἐξαμαρτάνειν, ἀλλὰ καὶ φρονιμώτερον
ἢ κατὰ τὴν ὥραν ζῆν προήρησαι. καὶ τούτου μέγιστον
τεκμήριον ἡ πρὸς τοὺς ἀνθρώπους ὁμιλία· πολλῶν γὰρ

ἐντυγχανόντων σοι καὶ παντοδαπὰς φύσεις ἐχόντων, ἔτι
δὲ προσαγομένων ἁπάντων ἐπὶ τὰς ἑαυτῶν συνηθείας,
οὕτω καλῶς προέστης τῶν τοιούτων ὥστε πάντας τὴν
18 πρὸς σὲ φιλίαν ἠγαπηκότας ἔχειν. ὃ σημεῖον τῶν ἐνδόξως
καὶ φιλανθρώπως ζῆν προαιρουμένων ἐστίν. καίτοι τινὲς
εὐδοκίμησαν ἤδη τῶν τε συμβουλευσάντων ὡς οὐ χρὴ τὰς
τῶν τυχόντων ὁμιλίας προσδέχεσθαι, καὶ τῶν πεισθέντων
τούτοις· ἢ γὰρ πρὸς χάριν ὁμιλοῦντα τοῖς φαύλοις ἀναγ-
καῖον εἶναι διαβάλλεσθαι παρὰ τοῖς πολλοῖς, ἢ διευλα-
βούμενον τὰς τοιαύτας ἐπιπλήξεις ὑπ' αὐτῶν τῶν ἐντυγ-
19 χανόντων δυσχεραίνεσθαι συμπίπτει. ἐγὼ δὲ διὰ τοῦτο
καὶ μᾶλλον οἶμαί σε δεῖν ἐγκωμιάζειν, ὅτι τῶν ἄλλων ἕν
τι τῶν ἀδυνάτων οἰομένων εἶναι τὸ τοῖς ἄλλων τρόποις
ἀρέσκειν σὺ τοσοῦτο τούτων διήνεγκας ‖ ὥστε τῶν χαλε-
πῶν καὶ δυσκόλων ἁπάντων περιγεγενῆσθαι, τοῦ μὲν
συνεξαμαρτάνειν τισὶν οὐδ' ὑποψίαν ἐνδοὺς τοῖς ἄλλοις,
τῆς δὲ πρὸς αὐτοὺς δυσχερείας τῇ τῶν τρόπων εὐαρμοστίᾳ
20 κρατήσας. πρὸς τοίνυν τοὺς ἐραστάς, εἰ χρὴ καὶ περὶ
τούτων εἰπεῖν, οὕτω καλῶς μοι δοκεῖς καὶ σωφρόνως
ὁμιλεῖν ὥστε, τῶν πλείστων οὐδὲ ὃν ἂν προέλωνται με-
τρίως ἐνεγκεῖν δυναμένων, σοὶ πᾶσι καθ' ὑπερβολὴν ἀρέ-
σκειν συμβέβηκεν. ὃ τῆς σῆς ἀρετῆς σημεῖον ἐναργέστατον
ἐστίν· ὧν μὲν γὰρ δίκαιον καὶ καλόν, οὐδεὶς ἄμοιρος αὐ-
τῶν παρὰ σοῦ καθέστηκεν, ἃ δ' εἰς αἰσχύνην ἥκει, τούτων
οὐδ' εἰς ἐλπίδα οὐδεὶς ἔρχεται· τοσαύτην τοῖς μὲν τῶν
βελτίστων ὀρεγομένοις ἐξουσίαν τοῖς δ' ἀποθρασύνεσθαι
21 βουλομένοις ἀτολμίαν ἡ σὴ σωφροσύνη παρεσκεύακεν. ἔτι
τοίνυν τῶν πλείστων ἐκ τῆς σιωπῆς, ὅταν ὦσι νέοι, τὴν
τῆς σωφροσύνης δόξαν θηρωμένων, σὺ τοσοῦτον τῇ φύσει
διενήνοχας ὥστε ἐξ ὧν λέγεις καὶ ὁμιλεῖς τοῖς ἐντυγχά-
νουσι μηδὲν ἐλάττω τὴν περὶ σεαυτοῦ εὐδοξίαν ἢ διὰ
πάντα τὰ λοιπὰ πεποιῆσθαι· τοσαύτη πειθὼ καὶ χάρις
καὶ ἐν οἷς σπουδάζεις ἔστι σοι καὶ ἐν οἷς παίζεις. καὶ
γὰρ εὐήθης ἀναμαρτήτως καὶ δεινὸς οὐ κακοήθως καὶ
φιλάνθρωπος ἐλευθερίως, καὶ τὸ σύνολον τοιοῦτος εἶ
οἷος ἂν τις ἐξ Ἀρετῆς υἱὸς Ἔρωτι γένοιτο.
22 Τὴν τοίνυν ἀνδρείαν — οὐδὲ γὰρ τοῦτο ἄξιόν ἐστι

παραλιπεῖν, οὐχ ὡς οὐ πολλὴν ἐπίδοσιν ἐχούσης ἔτι τῆς
σῆς φύσεως, καὶ τοῦ μέλλοντος χρόνου πλείους ἀφορμὰς
παραδώσοντος λόγων τοῖς ἐπαινεῖν σε βουλομένοις, ἀλλ'
ὡς καλλίστων ‖ ὄντων τῶν μετὰ ταύτης τῆς ἡλικίας ἐπαί-
νων ἐν ᾗ τὸ μηδὲν ἐξαμαρτάνειν τοῖς ἄλλοις εὐκτόν ἐστι.
σοῦ δ' ἐπὶ πολλῶν μὲν ἄν τις καὶ ἑτέρων τὴν ἀνδρείαν
διέλθοι, μάλιστα δ' ἐπὶ τῆς ἀσκήσεως, ἧς καὶ πλεῖστοι
γεγένηνται μάρτυρες. ἀνάγκη δ' ἴσως πρῶτον εἰπεῖν, ταύ- 23
την τὴν ἀγωνίαν ὡς καλῶς προείλου. τὸ γὰρ ὀρθῶς, ὅ τι
πρακτέον ἐστί, νέον ὄντα δοκιμάσαι καὶ ψυχῆς ἀγαθῆς
καὶ γνώμης φρονίμου κοινόν ἐστι σημεῖον· δι' ὧν οὐδέτε-
ρον παραλιπεῖν ἄξιον τὸν τῆς προαιρέσεως ἔπαινον. συν-
ειδὼς τοίνυν τῶν μὲν ἄλλων ἀθλημάτων καὶ δούλους καὶ
ξένους μετέχοντας, τοῦ δ' ἀποβαίνειν μόνοις μὲν τοῖς
πολίταις ἐξουσίαν οὖσαν ἐφιεμένους δὲ τοὺς βελτίστους,
οὕτως ἐπὶ τοῦτον τὸν ἀγῶνα ὥρμησας. ἔτι δὲ κρίνων 24
τοὺς μὲν τὰ δρομικὰ γυμναζομένους οὐδὲν πρὸς ἀνδρείαν
οὐδ' εὐψυχίαν ἐπιδιδόναι, τοὺς δὲ τὴν πυγμὴν καὶ τὰ
τοιαῦτα ἀσκήσαντας πρὸς τῷ σώματι καὶ τὴν γνώμην
διαφθείρεσθαι, τὸ σεμνότατον καὶ κάλλιστον τῶν ἀγω-
νισμάτων καὶ μάλιστα πρὸς τὴν σαυτοῦ φύσιν ἁρμόττον
ἐξελέξω, τῇ μὲν συνηθείᾳ τῶν ὅπλων καὶ τῇ τῶν δρόμων
φιλοπονίᾳ τοῖς ἐν τῷ πολέμῳ συμβαίνουσιν ὡμοιωμένον,
τῇ δὲ μεγαλοπρεπείᾳ καὶ τῇ σεμνότητι τῆς παρασκευῆς
πρὸς τὴν τῶν θεῶν δύναμιν εἰκασμένον, πρὸς δὲ τούτοις 25
ἡδίστην μὲν θέαν ἔχον, ἐκ πλείστων δὲ καὶ παντοδαπῶν
συγκείμενον, μεγίστων δ' ἄθλων ἠξιωμένον· πρὸς γὰρ
τοῖς τιθεμένοις τὸ γυμνασθῆναι καὶ μελετῆσαι τοιαῦτα
οὐ μικρὸν ἆθλον προφανήσεται τοῖς καὶ ‖ μετρίως ἀρετῆς
ἐφιεμένοις. τεκμήριον δὲ μέγιστον ἄν τις ποιήσαιτο τὴν
Ὁμήρου ποίησιν, ἐν ᾗ καὶ τοὺς Ἕλληνας καὶ τοὺς βαρβά-
ρους μετὰ τοιαύτης παρασκευῆς πολεμήσαντας πεποίηκεν
ἀλλήλοις· ἔτι δὲ καὶ νῦν τῶν πόλεων τῶν Ἑλληνίδων οὐ
ταῖς ταπεινοτάταις ἀλλὰ ταῖς μεγίσταις ἐν τοῖς ἀγῶσι
χρῆσθαι σύνηθές ἐστιν. ἡ μὲν οὖν προαίρεσις οὕτω καλὴ 26
καὶ παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις ἠγαπημένη· νομίζων δ' οὐδὲν
εἶναι προύργου τῶν σπουδαιοτάτων ἐπιθυμεῖν οὐδὲ καλῶς

*πρὸς ἅπαντα πεφυκέναι τὸ σῶμα μὴ τῆς ψυχῆς φιλοτίμως
παρεσκευασμένης, τὴν μὲν φιλοπονίαν ἐν τοῖς γυμνασίοις
εὐθέως ἐπιδειξάμενος οὐδ᾽ ἐν τοῖς ἔργοις ἐψεύσω, τὴν δ᾽
ἄλλην ἐπιφάνειαν τῆς σαυτοῦ φύσεως καὶ τὴν τῆς ψυχῆς
27 ἀνδρείαν ἐν τοῖς ἀγῶσι μάλιστ᾽ ἐνεδείξω. περὶ ὧν ὀκνῶ
μὲν ἄρξασθαι λέγειν, μὴ λειφθῶ τῷ λόγῳ τῶν τότε γεγε-
νημένων, ὅμως δ᾽ οὐ παραλείψω· καὶ γὰρ αἰσχρόν, ἃ θεω-
ροῦντας ἡμᾶς εὐφραίνει, ταῦτ᾽ ἀπαγγεῖλαι μὴ ἐθέλειν.
ἅπαντας μὲν οὖν εἰ διεξιοίην τοὺς ἀγῶνας, ἴσως ἂν ἄκαι-
ρον μῆκος ἡμῖν ἐπιγένοιτο τῷ λόγῳ· ἑνὸς δ᾽, ἐν ᾧ πολὺ
διήνεγκας, μνησθεὶς ταῦτά τε δηλώσω καὶ τῇ τῶν ἀκου-
28 όντων δυνάμει συμμετρότερον φανήσομαι χρώμενος. τῶν
γὰρ ζευγῶν ἀφεθέντων, καὶ τῶν μὲν προορμησάντων τῶν
δ᾽ ὑφηνιοχουμένων, ἀμφοτέρων περιγενόμενος ὡς ἑκατέ-
ρων προσῆκε, τὴν νίκην ἔλαβες, τοιούτου στεφάνου τυχὼν
ἐφ᾽ ᾧ, καίπερ καλοῦ τοῦ νικᾶν ὄντος, κάλλιον ἐδόκει καὶ
παραλογώτερον εἶναι τὸ σωθῆναι. φερομένου γὰρ ἐναν-
τίου ‖ μέν σοι τοῦ τῶν ἀντιπάλων ἅρματος, ἁπάντων δ᾽
ἀνυπόστατον οἰομένων εἶναι τὴν τῶν ἵππων δύναμιν, ὁρῶν
αὐτῶν ἐνίους καὶ μηδενὸς δεινοῦ παρόντος ὑπερηγωνιακό-
τας, οὐχ ὅπως ἐξεπλάγης ἢ κατεδειλίασας, ἀλλὰ τῇ μὲν
ἀνδρείᾳ καὶ τῆς τοῦ ζεύγους ὁρμῆς κρείττων ἐγένου, τῷ
δὲ τάχει καὶ τοὺς διευτυχηκότας τῶν ἀνταγωνιστῶν παρ-
29 ῆλθες. καὶ γάρ τοι τοσοῦτον μετήλλαξας τῶν ἀνθρώπων
τὰς διανοίας ὥστε πολλῶν θρυλούντων ὡς ἐν τοῖς ἱππι-
κοῖς ἀγῶσιν ἡδίστην θέαν παρέχεται τὰ ναυαγοῦντα, καὶ
δοκούντων ἀληθῆ ταῦτα λέγειν, ἐπὶ σοῦ τοὐναντίον τοὺς
θεατὰς φοβεῖσθαι πάντας μή τι συμπέσῃ τοιοῦτο περὶ
σέ: τοιαύτην εὔνοιαν καὶ φιλοτιμίαν ἡ σὴ φύσις αὐτοῖς
παρέσχεν.*

30 *Εἰκότως· καλὸν μὲν γὰρ καὶ τὸ καθ᾽ ἕν τι περίβλεπτον
γενέσθαι,. πολὺ δὲ κάλλιον τὸ πάντα περιλαβεῖν, ἐφ᾽ οἷς
ἄν τις νοῦν ἔχων φιλοτιμηθείη. δῆλον δ᾽ ἐκεῖθεν· εὑρή-
σομεν γὰρ Αἰακὸν μὲν καὶ Ῥαδάμανθυν διὰ σωφροσύνην,
Ἡρακλέα δὲ καὶ Κάστορα καὶ Πολυδεύκην δι᾽ ἀνδρείαν,
Γανυμήδην δὲ καὶ Ἄδωνιν καὶ ἄλλους τοιούτους διὰ κάλ-
λος ὑπὸ θεῶν ἀγαπηθέντας. ὥστε ἔγωγε οὐ θαυμάζω*

τῶν ἐπιθυμούντων τῆς σῆς φιλίας, ἀλλὰ τῶν μὴ τοῦτον
τὸν τρόπον διακειμένων· ὅπου γὰρ ἑνὸς ἑκάστου τῶν
προειρημένων μετασχόντες τινὲς τῆς τῶν θεῶν ὁμιλίας
ἠξιώθησαν, ἦ που τοῦ γ' ἁπάντων κυρίου καταστάντος
εὐκτὸν θνητῷ φύντι φίλον γενέσθαι. δίκαιον μὲν οὖν καὶ 31
πατέρα καὶ μητέρα καὶ τοὺς ἄλλους οἰκείους τοὺς σοὺς
ζηλοῦσθαι, τοσοῦτον ὑπερέχοντός ‖ σου τῶν ἡλικιωτῶν
ἀρετῇ, πολὺ δὲ μᾶλλον οὓς σὺ ὁ τῶν τηλικούτων ἀγαθῶν
ἠξιωμένος σαυτοῦ προκρίνας ἀξίους εἶναι φίλους ἐξ ἁπάν-
των αἱρῇ. τοὺς μὲν γὰρ ἡ τύχη σοι μετόχους κατέστησε,
τοὺς δ' ἡ σφετέρα καλοκαγαθία προσσυνέστησεν· οὓς οὐκ 32
οἶδα πότερον ἐραστὰς ἢ μόνους ὀρθῶς γιγνώσκοντας προσ-
αγορεῦσαι χρή. δοκεῖ γάρ μοι καὶ κατ' ἀρχὰς ἡ τύχη, τῶν
μὲν φαύλων καταφρονοῦσα, τὰς δὲ τῶν σπουδαίων ἀν-
δρῶν διανοίας ἐρεθίσαι βουληθεῖσα, τὴν σὴν φύσιν οὐ
πρὸς ἡδονὴν ἐξαπατηθῆναι καλὸν ποιῆσαι, ἀλλὰ πρὸς
ἀρετὴν εὐδαιμονῆσαι χρήσιμον.

Πολλὰ δ' ἔχων ἔτι περὶ σοῦ διελθεῖν, αὐτοῦ καταλύ- 33
σειν μοι δοκῶ τὸν ἔπαινον, δεδιὼς μὴ καθ' ὑπερβολὴν
τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως ὑπὲρ σοῦ διαλέγεσθαι δόξω·
τοσοῦτον γάρ, ὡς ἔοικεν, ἡ τῶν λόγων δύναμις ἔλαττον
ἔχει τῆς ὄψεως ὥστε τοῖς μὲν ὁρατοῖς οὐδεὶς ἀπιστεῖν
ἀξιοῖ, τοὺς δὲ τούτων ἐπαίνους οὐδ' ἂν ἐλλείπωσιν ἀλη-
θεῖς εἶναι νομίζουσι. παυσάμενος οὖν περὶ τούτων, ἤδη 34
πειράσομαι σοι συμβουλεύειν ἐξ ὧν ἂν ἐντιμότερον ἔτι
τὸν σαυτοῦ βίον καταστήσαις. βουλοίμην δ' ἄν σε μὴ
πάρεργον ποιήσασθαι τὸ προσέχειν τὸν νοῦν τοῖς μέλ-
λουσι ῥηθήσεσθαι, μηδ' ὑπολαμβάνειν τοῦθ', ὡς ἄρα
ἐγὼ τούτοις κέχρημαι τοῖς λόγοις οὐ τῆς σῆς ὠφελείας
ἕνεκα ἀλλ' ἐπιδείξεως ἐπιθυμῶν, ἵνα μήτε διαμάρτῃς τῆς
ἀληθείας, μήτ' ἀντὶ τῶν βελτίστων τὰ τυχόντα ἑλόμενος
χεῖρον περὶ σαυτοῦ βουλεύσῃ· καὶ γὰρ τοῖς μὲν ἀφανῆ 35
καὶ ταπεινὴν τὴν φύσιν ἔχουσιν οὐδ' ὅταν ‖ μὴ καλῶς τι
πράξωσιν ἐπιπλήττομεν, τοῖς δ' ὥσπερ σὺ περιβλέπτοις
γεγενημένοις καὶ τὸ παραμελῆσαί τινος τῶν καλλίστων
αἰσχύνην φέρει. ἔτι δ' οἱ μὲν ἐπὶ τῶν ἄλλων λόγων ψευ-
σθέντες καθ' ἑνὸς μόνου πράγματος οὐ τὰ κράτιστα

ἔγνωσαν, οἱ δὲ τῆς τῶν ἐπιτηδευμάτων συμβουλίας διαμαρτόντες ἢ καταφρονήσαντες παρ' ὅλον τὸν βίον τῆς ἑαυτῶν ἀγνωσίας ὑπομνήματα ἔχουσιν.

36 Τούτων μὲν οὖν οὐδὲν δεῖ σε παθεῖν, σκοπεῖσθαι δὲ
τί τῶν ἀνθρωπείων μεγίστην δύναμιν ἔχει, καὶ τίνος καλῶς μὲν ἀποβάντος πλεῖστ' ἂν κατορθοῖμεν, διαφθαρέντος δὲ μέγιστ' ἂν βλαπτοίμεθα παρὰ τὸν βίον· οὐ γὰρ ἄδηλον ὅτι τούτου καὶ μάλιστ' ἐπιμέλειαν ποιητέον, ὃ
37 μεγίστην ῥοπὴν ἐφ' ἑκάτερον ἐργάζεσθαι πέφυκεν. τὴν
μὲν τοίνυν ἐν ἀνθρώποις διάνοιαν ἁπάντων εὑρήσομεν ἡγεμονεύουσαν, ταύτην δὲ φιλοσοφίαν μόνην παιδεῦσαί τε ὀρθῶς καὶ γυμνάσαι δυναμένην. ἧς οἴομαί σε δεῖν μετασχεῖν, καὶ μὴ κατοκνῆσαι μηδὲ φυγεῖν τὰς ἐνούσας ἐν αὐτῇ πραγματείας, ἐνθυμούμενον ὅτι διὰ μὲν ἀργίας καὶ ῥᾳθυμίας καὶ τὰ παντελῶς ἐπιπολῆς δυσχείρωτά ἐστι, διὰ δὲ καρτερίας καὶ φιλοπονίας οὐδὲν τῶν ὄντων ἀγα-
38 θῶν ἀνάλωτον πέφυκε, καὶ διότι πάντων ἀλογώτατόν
ἐστι πρὸς μὲν χρηματισμὸν καὶ ῥώμην καὶ τὰ τοιαῦτα φιλοτίμως ἔχειν καὶ πολλὰς ὑπομένειν κακοπαθείας, ἃ πάντα θνητά ἐστι καὶ τῇ διανοίᾳ δουλεύειν εἴωθε, τὴν δ' ἐπιστατοῦσαν μὲν τῶν ἄλλων, συνδιατελοῦσαν δὲ τοῖς ἔχουσιν, ὅλον δ' ἡγεμονεύουσαν τοῦ ‖ βίου μὴ ζητεῖν ὅπως
39 διακείσεται βέλτιον. καίτοι καλὸν μὲν καὶ διὰ τύχην ἐν
τοῖς σπουδαιοτάτοις θαυμάζεσθαι, πολὺ δὲ κάλλιον διὰ τὴν ἐπιμέλειαν τὴν αὑτοῦ μηδενὸς τῶν ἐνδόξων ἄμοιρον γενέσθαι· τῆς μὲν γὰρ ἐνίοτε καὶ τοῖς φαύλοις μετασχεῖν συνέβη, τῆς δ' οὐκ ἔστιν ἄλλοις μετουσία πλὴν τοῖς ἐν
40 ἀνδραγαθίᾳ διαφέρουσιν. ἀλλὰ μὴν περί γε τῆς φιλοσο-
φίας ἀκριβῶς μὲν ἕκαστα διελθεῖν ἡγοῦμαι τὸν μέλλοντα χρόνον ἡμῖν ἐπιτηδειοτέρους καιροὺς παραδώσειν· συντόμως δ' εἰπεῖν οὐδὲ νῦν οὐδὲν κωλύσει περὶ αὐτῆς. ἓν οὖν πρῶτον ἐκεῖνό σε δεῖ καταμαθεῖν ἀκριβῶς, ὅτι πᾶσα μὲν παιδεία δι' ἐπιστήμης καὶ μελέτης τινὸς συνέστηκεν, ἡ δὲ φιλοσοφία καὶ μᾶλλον τῶν ἄλλων· ὅσῳ γὰρ ἀκριβεστέρους ἔχει τοὺς ἐφεστῶτας, τοσούτῳ κάλλιον αὐτὴν συγκεῖσθαι
41 προσήκει. καίτοι τί ποτ' ἂν βουληθείημεν, τῆς μὲν δια-
νοίας ἐπὶ τοῦ λέγειν καὶ βουλεύεσθαι τεταγμένης, τῆς δὲ

φιλοσοφίας ἑκατέρου τούτων ἐμπειρίαν παραδιδούσης, μὴ
ταύτην κατασχεῖν τὴν πραγματείαν δι᾿ ἧς ἀμφοτέρων τού-
των ἐγκρατῶς ἕξομεν; τότε γὰρ εἰκὸς καὶ τὸν βίον ἡμῶν
μεγίστην ἐπίδοσιν λαβεῖν, ὅταν τῶν κρατίστων ὀρεγόμενοι
τὰ μὲν διδακτὰ τέχνῃ τὰ δὲ λοιπὰ γυμνασίᾳ καὶ συνηθείᾳ
κατασχεῖν δυνηθῶμεν. οὐ γὰρ δή που τοῦτό γ᾿ ἔστιν εἰπεῖν, 42
ὡς οὐδὲν πρὸς τὸ φρονεῖν εὖ παρὰ τὴν ἐπιστήμην διά-
φερομεν ἀλλήλων· ὅλως μὲν γὰρ ἅπασα φύσις βελτίων
γίγνεται παιδείαν προσλαβοῦσα τὴν προσήκουσαν, πολὺ
δὲ μάλισθ᾿ ὅσαις ἐξ ‖ ἀρχῆς εὐφυέστερον τῶν ἄλλων ἔχειν
ὑπῆρξε· ταῖς μὲν γὰρ αὐτῶν μόνον βελτίοσι γίγνεσθαι,
ταῖς δὲ καὶ τῶν ἄλλων συμβαίνει διενεγκεῖν. εὖ δ᾿ ἴσθι 43
τὴν μὲν ἐκ τῶν πράξεων ἐμπειρίαν γιγνομένην σφαλερὰν
οὖσαν καὶ πρὸς τὸν λοιπὸν βίον ἀχρήστως ἔχουσαν, τὴν
δ᾿ ἐκ τοῦ φιλοσοφεῖν παιδείαν πρὸς ἅπαντα ταῦτα εὐκαί-
ρως συγκεκραμένην. καίτοι τινὲς ἤδη καὶ δι᾿ εὐτυχίαν πρα-
γμάτων γυμνασθέντες ἐθαυμάσθησαν. σοὶ δὲ προσήκει
τούτων μὲν καταφρονεῖν σαυτοῦ δ᾿ ἐπιμέλειαν ἔχειν· οὐ
γὰρ αὐτοσχεδιάζειν ἀλλ᾿ ἐπίστασθαί σε δεῖ περὶ τῶν με-
γίστων, οὐδ᾿ ἐπὶ τῶν καιρῶν μελετᾶν, ἀλλ᾿ ἀγωνίζεσθαι
καλῶς ἐπίστασθαι. νόμιζε δὲ πᾶσαν μὲν τὴν φιλοσοφίαν 44
μεγάλα τοὺς χρωμένους ὠφελεῖν, πολὺ δὲ μάλιστα τὴν
περὶ τὰς πράξεις καὶ τοὺς πολιτικοὺς λόγους ἐπιστήμην.
τῆς γὰρ γεωμετρίας καὶ τῆς ἄλλης τῆς τοιαύτης παιδείας
ἀπείρως μὲν ἔχειν αἰσχρόν, ἄκρον δὲ ἀγωνιστὴν γενέσθαι
ταπεινότερον τῆς σῆς ἀξίας· ἐν ἐκείνῃ δὲ τὸ μὲν διενεγκεῖν
ζηλωτόν, τὸ δ᾿ ἄμοιρον γενέσθαι παντελῶς καταγέλαστον.
γνοίης δ᾿ ἂν ἐξ ἄλλων τε πολλῶν καὶ παραθεωρήσας τοὺς 45
πρὸ σαυτοῦ γεγενημένους ἐνδόξους ἄνδρας. τοῦτο μὲν
Περικλέα τὸν συνέσει πλεῖστον τῶν καθ᾿ αὑτὸν διενεγκεῖν
δόξαντα πάντων ἀκούσει πλησιάσαντα Ἀναξαγόρᾳ τῷ
Κλαζομενίῳ καὶ μαθητὴν ἐκείνου γενόμενον ταύτης τῆς
δυνάμεως μετασχόντα· τοῦτο δ᾿ Ἀλκιβιάδην εὑρήσεις φύ-
σει μὲν πρὸς ἀρετὴν πολλῷ χεῖρον διακείμενον, καὶ τὰ
μὲν ὑπερηφάνως τὰ δὲ ταπεινῶς τὰ ‖ δ᾿ ὑπεράκρως ζῆν
προῃρημένον, ἀπὸ δὲ τῆς Σωκράτους ὁμιλίας πολλὰ μὲν
ἐπανορθωθέντα τοῦ βίου, τὰ δὲ λοιπὰ τῷ μεγέθει τῶν

46 ἄλλων ἔργων ἐπικρυψάμενον. εἰ δὲ δεῖ μὴ παλαιὰ λέγον-
τας διατρίβειν, ἔχοντας ὑπογυιοτέροις παραδείγμασι χρῆ-
σθαι, τοῦτο μὲν Τιμόθεον οὐκ ἐξ ὧν νεώτερος ὢν ἐπετή-
δευσεν, ἀλλ' ἐξ ὧν Ἰσοκράτει συνδιατρίψας ἔπραξε, με-
γίστης δόξης καὶ πλείστων τιμῶν εὑρήσεις ἀξιωθέντα·
τοῦτο δὲ Ἀρχύταν τὴν Ταραντίνων πόλιν οὕτω καλῶς καὶ
φιλανθρώπως διοικήσαντα καὶ κύριον αὐτῆς καταστάντα
ὥστ' εἰς ἅπαντας τὴν ἐκείνου μνήμην διενεγκεῖν· ὃς ἐν
ἀρχῇ καταφρονούμενος ἐκ τοῦ Πλάτωνι πλησιάσαι τοσαύ-
47 την ἔλαβεν ἐπίδοσιν. καὶ τούτων οὐδὲν ἀλόγως ἀποβέ-
βηκεν· πολὺ γὰρ ἦν ἀτοπώτερον, εἰ τὰ μὲν μικρὰ δι' ἐπι-
στήμης καὶ μελέτης ἠναγκαζόμεθα ἐπιτελεῖν, τὰ δὲ μέ-
γιστα ἄνευ ταύτης τῆς πραγματείας ἠδυνάμεθα πράττειν.
περὶ μὲν οὖν τούτων οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγειν· οὐδὲ
γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὡς παντελῶς ἀπείρως ἔχοντός σου περὶ
αὐτῶν ἐμνήσθην, ἀλλ' ἡγούμενος τὰς τοιαύτας παρακλή-
σεις τοὺς μὲν ἀγνοοῦντας προτρέπειν τοὺς δ' εἰδότας παρ-
48 οξύνειν. μηδὲν δὲ ὑπολάβῃς τοιοῦτον, ὡς ἄρα ἐγὼ ταῦτ'
εἴρηκα διδάξειν αὐτὸς ἐπαγγελλόμενός σέ τι τούτων· οὐ
γὰρ ἂν αἰσχυνθείην εἰπὼν ὅτι πολλὰ μαθεῖν αὐτὸς ἔτι
δέομαι, καὶ μᾶλλον ἀγωνιστὴς προῄρημαι τῶν πολλῶν ἢ
διδάσκαλος εἶναι τῶν ἄλλων. οὐχ ὡς ἀναινόμενος δὲ ταῦτα
διαιροῦμαι τὴν τῶν σοφιστεύειν ἑλομένων δόξαν, ἀλλ' ὅτι
49 τἀληθὲς τοῦτον ἔχον τυγχάνει ‖ τὸν τρόπον, ἐπεὶ σύνοιδά
γε πολλοὺς μὲν ἐξ ἀδόξων καὶ ταπεινῶν ἐπιφανεῖς διὰ
τῆς πραγματείας ταύτης γεγενημένους, Σόλωνα δὲ καὶ
ζῶντα καὶ τελευτήσαντα μεγίστης δόξης ἠξιωμένον· ὃς
οὐκ ἀπεληλαμένος τῶν ἄλλων τιμῶν, ἀλλὰ τῆς μὲν ἀν-
δρείας τὸ πρὸς Μεγαρέας τρόπαιον ὑπόμνημα καταλιπών,
50 τῆς δ' εὐβουλίας τὴν Σαλαμῖνος κομιδήν, τῆς δ' ἄλλης
συνέσεως τοὺς νόμους οἷς ἔτι καὶ νῦν οἱ πλεῖστοι τῶν
Ἑλλήνων χρώμενοι διατελοῦσιν, ὅμως τοσούτων αὐτῷ
καλῶν ὑπαρχόντων ἐπ' οὐδενὶ μᾶλλον ἐσπούδασεν ἢ τῶν
ἑπτὰ σοφιστῶν ὅπως γένηται, νομίζων τὴν φιλοσοφίαν
οὐκ ὄνειδος ἀλλὰ τιμὴν τοῖς χρωμένοις φέρειν, καλῶς ἐγνω-
κὼς αὐτὸ τοῦτο οὐχ ἧττον ἢ καὶ τἄλλα ἐφ' οἷς διήνεγκεν.
51 Ἐγὼ μὲν οὖν οὔτ' αὐτὸς ἄλλως γιγνώσκω, σοί τε παρ-

αινῶ φιλοσοφεῖν, μεμνημένῳ τῶν ἐξ ἀρχῆς ὑπαρξάντων
σαυτῷ· τούτου γὰρ ἕνεκα διῆλθον ἐν ἀρχῇ τοῦ λόγου κἀγὼ
περὶ αὐτῶν, οὐχ ὡς ἐκ τοῦ τὴν σὴν φύσιν ἐπαινεῖν ἀνα-
κτήσεσθαί σε προσδοκῶν, ἀλλ' ἵνα μᾶλλον προτρέψω σε
πρὸς τὴν φιλοσοφίαν, ἐὰν μὴ παρὰ μικρὸν ποιήσῃ, μηδ'
ἐπὶ τοῖς ὑπάρχουσιν ἀγαθοῖς μέγα φρονήσας τῶν μελλόν-
των ὀλιγωρήσῃς. μηδ' εἰ τῶν ἐντυγχανόντων κρείττων εἶ, 52
μηδὲν τῶν ἄλλων ζήτει διενεγκεῖν, ἀλλ' ἡγοῦ κράτιστον
μὲν εἶναι τὸ πρωτεύειν ἐν ἅπασι, τούτου δ' ὀρεγόμενον
ὀφθῆναι μᾶλλον συμφέρειν ἢ προέχοντα ἐν τοῖς τυχοῦσι.
καὶ μὴ καταισχύνῃς τὴν φύσιν, μηδὲ ψευσθῆναι ποιήσῃς
τῶν ἐλπίδων τοὺς ἐπὶ σοὶ μέγα φρονοῦντας, ἀλλ' ὑπερ-
βάλλεσθαι πειρῶ τῇ ‖ σαυτοῦ δυνάμει τὴν τῶν εὐνουστά-
των ἐπιθυμίαν. καὶ νόμιζε τοὺς μὲν ἄλλους λόγους, ὅταν 53
ἐπιεικῶς ἔχωσι, τοῖς εἰποῦσι δόξαν περιτιθέναι, τὰς δὲ
συμβουλίας τοῖς πεισθεῖσιν ὠφέλειαν καὶ τιμὴν προσά-
πτειν· καὶ τὰς μὲν περὶ τῶν ἄλλων κρίσεις τὴν αἴσθησιν
ἣν ἔχομεν δηλοῦν, τὰς δὲ τῶν ἐπιτηδευμάτων αἱρέσεις
τὴν ὅλην φύσιν ἡμῶν δοκιμάζειν. ἐν οἷς ἅμα κρίνων αὐτὸς
κριθήσεσθαι προσδόκα παρὰ πᾶσι, κἀμὲ τὸν οὕτως ἐγκω-
μιάσαντά σε ἑτοίμως ἐν ἀγῶνι γενήσεσθαι τῆς σῆς δοκι-
μασίας. διὸ δεῖ σέ τε τῶν ἐπαίνων ἄξιον εἶναι δόξαντα 54
κἀμὲ τῆς σῆς φιλίας ἀνεπιτίμητον εἶναι. οὐχ οὕτω δ' ἂν
σε προθύμως ἐπὶ τὴν φιλοσοφίαν παρεκάλουν, εἰ μὴ τῆς
μὲν εὐνοίας τῆς ἐμῆς τοῦτον ἄν σοι κάλλιστον ἔρανον εἰσ-
ενεγκεῖν ᾤμην, τὴν δὲ πόλιν ἑώρων διὰ μὲν ἀπορίαν τῶν
καλῶν κἀγαθῶν ἀνδρῶν τοῖς τυχοῦσι πολλάκις χρωμένην,
διὰ δὲ τὰς τούτων ἁμαρτίας αὐτὴν ταῖς μεγίσταις ἀτυχίαις
περιπίπτουσαν. ἵν' οὖν ἡ μὲν τῆς σῆς ἀρετῆς σὺ δὲ τῶν 55
παρὰ ταύτης τιμῶν ἀπολαύσῃς, προθυμότερόν σοι παρ-
εκελευσάμην. καὶ γὰρ οὐδ' ἐπὶ σοὶ νομίζω γενήσεσθαι
ζῆν ὡς ἔτυχεν, ἀλλὰ προστάξειν σοι τὴν πόλιν τῶν αὑτῆς
τι διοικεῖν, καὶ ὅσῳ τὴν φύσιν ἐπιφανεστέραν ἔχεις, το-
σούτῳ μειζόνων ἀξιώσειν καὶ θᾶττον βουλήσεσθαι πεῖράν
σου λαμβάνειν. καλὸν οὖν παρεσκευάσθαι τὴν γνώμην,
ἵνα μὴ τότε πλημμελῇς.

Τὸ μὲν οὖν ἐμὸν ἦν ἔργον εἰπεῖν ἅ σοι συμφέρειν 56

μὲν ὀρθότερον φανῇ τις λέγων ὧν ὑμεῖς ὡρμήκατε, χρήσησθε τούτῳ, ἂν δ' ἀπολειφθῇ καὶ μὴ δύνηται διδάξαι, δι' αὑτὸν ἀλλὰ μὴ δι' ὑμᾶς οὐκ ἐθέλοντας ἀκούειν τοῦτο πεπονθέναι δοκῇ. ἔτι δ' οὐδὲ πάθοιτ' ἂν ἀηδὲς οὐδὲν τοσοῦτον, εἰ πολλά τινος ληροῦντος ἀκούσαιτε, ὅσον εἰ
3 τῶν δεόντων τι λέγειν ‖ ἔχοντά τινα εἰπεῖν κωλύσαιτε. ἡ μὲν οὖν ἀρχὴ τοῦ δοκιμάζειν ὀρθῶς ἅπαντ' ἐστὶ μηδὲν οἴεσθαι πρότερον γιγνώσκειν πρὶν μαθεῖν, ἄλλως τε καὶ συνειδότας πολλάκις ἤδη πολλοὺς μετεγνωκότας. ἂν τοίνυν ὑμεῖς ταῦθ' ὑπάρξητε νῦν πεπεισμένοι, οἶμαι μετὰ βραχέων λόγων καὶ αὐτὸς ἄν τι λέγειν εἰκότως δόξαι καὶ ὑμῖν τὰ βέλτιστα φαίνεσθαι λέγων.

6. Πολλῶν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι λόγων εἰρημένων παρὰ πάντων τῶν συμβεβουλευκότων, οὐδὲν ὑμᾶς νῦν ὁρῶ ὄντας ἐγγυτέρω τοῦ τί πρακτέον εὑρῆσθαι ἢ πρὶν εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἀναβῆναι. αἴτιον δὲ τούτου ταὐτὸ ὅπερ, οἶμαι, τοῦ κακῶς ἔχειν τὰ ὅλα· οὐ γὰρ παραινοῦσιν ὑμῖν ὑπὲρ τῶν παρόντων οἱ λέγοντες, ἀλλ' ἑαυτῶν κατηγοροῦσι καὶ λοιδοροῦνται, ὡς μὲν ἐγὼ κρίνω, συνεθίζοντες ὑμᾶς ἄνευ κρίσεως, ὅσων εἰσὶν αἴτιοι κακῶν, ἀκούειν, ἵν' ἄν ποτ' ἄρα εἰς ἀγῶνα καθιστῶνται, μηδὲν ἡγούμενοι καινὸν ἀκούειν ἀλλ' ὑπὲρ ὧν ὠργισθε πολλάκις, πραότεροι δικασταὶ καὶ κριταὶ γίγνησθε τῶν πεπραγμένων αὐτοῖς.
2 τὴν μὲν οὖν αἰτίαν, δι' ἣν ταῦτα ποιοῦσιν, ἴσως ἀνόητον ἀκριβῶς ζητεῖν εἴη ἂν ἐν τῷ παρόντι· ὅτι δὲ ὑμῖν οὐχὶ συμφέρει, διὰ τοῦτο ἐπιτιμῶ. ἐγὼ δ' οὔτε κατηγορήσω τήμερον οὐδενός, οὔτε ὑποσχήσομαι τοιοῦτον οὐδὲν ὃ μὴ παραχρῆμα ἐπιδείξω, οὐδ' ὅλως τῶν αὐτῶν τούτοις οὐδὲν ποιήσω, ἀλλ' ἃ βέλτιστα μὲν τοῖς πράγμασι συμφέροντα δὲ τοῖς βουλευομένοις ὑμῖν ἡγοῦμαι, ταῦθ' ὡς ἂν δύνωμαι διὰ βραχυτάτων εἰπὼν καταβήσομαι.

7. ‖ Οἱ μὲν ἐπαινοῦντες ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοὺς προγόνους ὑμῶν λόγον εἰπεῖν μοι δοκοῦσι προαιρεῖσθαι κεχαρισμένον, οὐ μὴν συμφέροντά γε ἐκείνοις οὓς ἐγκωμιάζουσι ποιεῖν· περὶ γὰρ πραγμάτων ἐγχειροῦντες ὧν οὐδ' ἂν εἷς ἀξίως ἐφικέσθαι δύναιτο τῷ λόγῳ, αὐτοὶ μὲν τοῦ δύνασθαι λέγειν δόξαν ἐκφέρονται, τὴν δ' ἐκείνων ἀρετὴν ἐλάττω τῆς ὑπειλημμένης παρὰ τοῖς ἀκούουσι φαίνεσθαι ποιοῦσιν.
2 ἐγὼ δὲ τῆς μὲν ἐκείνων ἀρετῆς μέγιστον ἔπαινον ἡγοῦμαι τὸν χρόνον, οὗ πολλοῦ γεγενημένου μείζω τῶν ὑπ' ἐκείνων πραχθέντων οὐδένες ἄλλοι παραδείξασθαι δεδύνηνται· αὐτὸς δὲ πειράσομαι τὸν τρόπον εἰπεῖν ὃν ἄν μοι δοκεῖτε μάλιστα δύνασθαι παρασκευάσασθαι. καὶ
3 γὰρ οὕτως ἔχει· εἰ μὲν ἡμεῖς ἅπαντες οἱ λέγοντες δεινοὶ φανείημεν, οὐδὲν ἂν τὰ ὑμέτερ' εὖ οἶδ' ὅτι βέλτιον σχοίη· εἰ δὲ παρελθὼν ὁστισοῦν δύναιτό τι διδάξαι, καὶ πεῖσαι τίς παρασκευὴ καὶ πόση καὶ πόθεν ποριςθεῖσα χρήσιμος ἔσται τῇ πόλει, πᾶς ὁ παρὼν λέλυται φόβος. ἐγὼ δὲ τοῦτο, ἂν ἄρα οἷός τε ὦ, πειράσομαι ποιῆσαι, μικρὰ προειπὼν ὑμῖν ὡς ἔχω γνώμης περὶ τῶν πρὸς βασιλέα.

8. Ἀμφότεροί μοι δοκοῦσιν ἁμαρτάνειν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ οἱ τοῖς Ἀρκάσι καὶ οἱ τοῖς Λακεδαιμονίοις συνειρηκότες· ὥσπερ γὰρ

ἀφ' ἑκατέρων ἥκοντες, οὐχ ὑμῶν ὄντες, πρὸς οὓς ἀμφότεροι πρεσβεύον-
ται, κατηγοροῦσι καὶ διαβάλλουσιν ἀλλήλους. ἦν δὲ τοῦτο μὲν τῶν
ἀφιγμένων ἔργον, τὸ δὲ κοινῶς ὑπὲρ τῶν πραγμάτων λέγειν καὶ τὰ
βέλτιστα ὑπὲρ ὑμῶν σκοπεῖν ἄνευ φιλονεικίας τῶν ἐνθάδε συμβου-
λεύειν ‖ ἀξιούντων. νῦν δ' ἔγωγε, εἴ τις αὐτῶν ἀφέλοι τὸ γιγνώσκεσθαι 2
καὶ τὸ τῇ φωνῇ λέγειν ἀττικιστί, πολλοὺς ἂν οἶμαι τοὺς μὲν Ἀρκάδας
τοὺς δὲ Λάκωνας αὐτῶν εἶναι νομίσαι. ἐγὼ δ' οἶδα μὲν ὡς χαλεπὸν
τὸ τὰ βέλτιστα λέγειν ἐστί· συνεξηπατημένων γὰρ ὑμῶν, καὶ τῶν μὲν
ταυτὶ τῶν δὲ ταυτὶ βουλομένων, ἐὰν μεταξύ τις ἐγχειρῇ λέγειν καὶ ταῦθ'
ὑμεῖς μὴ περιμένητε μαθεῖν, χαριεῖται μὲν οὐδετέροις, διαβεβλήσεται
δὲ πρὸς ἀμφοτέρους. οὐ μὴν ἀλλ' αἱρήσομαι μᾶλλον αὐτός, ἂν ἄρα τοῦτο 3
πάθω, δοκεῖν φλυαρεῖν, ἢ παρ' ἃ βέλτιστα νομίζω τῇ πόλει προέσθαι
τισὶν ὑμᾶς ἐξαπατῆσαι. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ὕστερον, ἐὰν ὑμῖν βουλομέ-
νοις ᾖ, λέξω· ἐκ δὲ τῶν ὁμολογουμένων ὑπ' αὐτῶν ἄρξομαι, ἃ κράτιστα
νομίζω, διδάσκειν.

9. Οὐχὶ ταὐτὰ γιγνώσκων ἐνίοις τῶν εἰρηκότων ἀνέστηκα, ὦ ἄν-
δρες Ἀθηναῖοι. οὐ μὴν οὐδὲ τούτους αἰτιάσομαι κακίᾳ τἀναντία τοῖς
βελτίστοις εἰρηκέναι, ἀλλ' ὅτι πολλοὶ τοῦ τὰ πράγματα κρίνειν ἀμελή-
σαντες τοὺς λόγους σκοπεῖν, οὓς ἐροῦσιν, εἰώθασι, κἂν τούτοις
ἀφθόνως ἐντύχωσιν, ἑτοίμως δημηγορεῖν, οὐκ ὀρθῶς ἐγνωκότες, οὐδὲ
λογιζόμενοι παρ' ἑαυτοῖς ὅτι πολλῶν πράξεων ἐν πολλῷ χρόνῳ πᾶσι
πεπραγμένων καὶ διὰ τοὺς καιροὺς ἐνίων ὑπεναντίων αὐταῖς, ἂν τὰς
προτέρας τις ὑπερβαίνων τὰς ὑστέρας λέγῃ, λήσει τὸ ῥᾷστον τῶν
ἔργων ποιῶν, αὐτὸν ἐξαπατῶν. οἱ μὲν οὖν οὕτω χρώμενοι τῷ συμβου- 2
λεύειν δοκοῦσί μοι τὴν ἀπὸ τῶν ῥηθέντων τοῦ δύνασθαι λέγειν δόξαν
γιγνομένην αὐτοῖς ‖ ἱκανὴν φιλοτιμίαν ἡγεῖσθαι· ἐγὼ δὲ νομίζω χρῆναι
τὸν πόλει περὶ πραγμάτων ἐπιχειροῦντα συμβουλεύειν μᾶλλον, ὅπως
τὰ δόξαντα συνοίσει, σκοπεῖν, ἢ ὅπως οἱ παραχρῆμα λόγοι χάριν
ἕξουσι. δεῖ γὰρ τοῖς ἐπὶ τῶν λόγων εὐδοκιμοῦσι συμφέροντός τινος ἔρ-
γου πρᾶξιν προσεῖναι, ἵνα μὴ νῦν μόνον ἀλλ' ἀεὶ τὰ ῥηθέντα καλῶς ἔχῃ.

10. Εἰ μὲν ἐγνώκατ' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τί βέλτιστον ὂν τυγχάνει
πρᾶξαι περὶ τῶν παρόντων, ἁμάρτημα τὸ συμβουλεύειν προτιθέναι·
ἃ γὰρ αὐτοὶ πρὶν ἀκοῦσαι δοκιμάζετε συμφέρειν, τί δεῖ ταῦτα ἀκούον-
τας μάτην ἐνοχλεῖσθαι; εἰ δὲ σκοπεῖτε καὶ βουλεύεσθε ὡς ἐκ τῶν
ῥηθησομένων δοκιμάσαι δέον, οὐκ ὀρθῶς ἔχει τὸ κωλύειν τοὺς βουλο-
μένους λέγειν. παρὰ μὲν γὰρ τῶν ὅλως ἀποστερεῖσθε ἐκ τοῦ τοῦτο 2
ποιεῖν, εἴ τι χρήσιμον ἐντεθύμηνται· τοὺς δ' ἀφέντας ἃ τυγχάνουσιν
ἐγνωκότες, ὧν ὑμᾶς ἐπιθυμεῖν οἴονται, ταῦτα ποιεῖτε συμβουλεύειν.
ἔστι δὲ ἁμαρτάνειν μὲν βουλομένων τὸ συναναγκάζειν τὸν παριόντα,
ἃ βούλεσθε, λέγειν, βουλευομένων δὲ ἀκούσαντας ἃ γιγνώσκει σκοπεῖν,
κἄν τι καλῶς ἔχῃ, χρῆσθαι. λέγω δὲ ταῦτα οὐκ ἐναντία τοῖς ὑμῖν ἀρέ- 3
σκουσι μέλλων παραινεῖν, ἀλλ' ἐκεῖνο εἰδώς, ὅτι ἂν μὲν μὴ θελήσητε τῶν
ἀντιλεγόντων ἀκοῦσαι, ἐξηπατῆσθαι φήσουσιν ὑμᾶς, ἂν δ' ἀκούσαντες
μὴ πεισθῆτε, ἐξεληλεγμένοι παραχρῆμ' ἔσονται τὰ χείρω παραινοῦντες.

μὲν ὀρθότερον φανῇ τις λέγων ὧν ὑμεῖς ὡρμήκατε, χρήσησθε τούτῳ, ἂν δ' ἀπολειφθῇ καὶ μὴ δύνηται διδάξαι, δι' αὐτὸν ἀλλὰ μὴ δι' ὑμᾶς οὐκ ἐθέλοντας ἀκούειν τοῦτο πεπονθέναι δοκῇ. ἔτι δ' οὐδὲ πάθοιτ' ἂν ἀηδὲς οὐδὲν τοσοῦτον, εἰ πολλά τινος ληροῦντος ἀκούσαιτε, ὅσον εἰ
3 τῶν δεόντων τι λέγειν ‖ ἔχοντά τινα εἰπεῖν κωλύσαιτε. ἡ μὲν οὖν ἀρχὴ τοῦ δοκιμάζειν ὀρθῶς ἅπαντ' ἐστὶ μηδὲν οἴεσθαι πρότερον γιγνώσκειν πρὶν μαθεῖν, ἄλλως τε καὶ συνειδότας πολλάκις ἤδη πολλοὺς μετεγνωκότας. ἂν τοίνυν ὑμεῖς ταῦθ' ὑπάρξητε νῦν πεπεισμένοι, οἶμαι μετὰ βραχέων λόγων καὶ αὐτὸς ἄν τι λέγειν εἰκότως δόξαι καὶ ὑμῖν τὰ βέλτιστα φαίνεσθαι λέγων.

6. Πολλῶν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι λόγων εἰρημένων παρὰ πάντων τῶν συμβεβουλευκότων, οὐδὲν ὑμᾶς νῦν ὁρῶ ὄντας ἐγγυτέρω τοῦ τί πρακτέον εὑρῆσθαι ἢ πρὶν εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἀναβῆναι. αἴτιον δὲ τούτου ταὐτὸ ὅπερ, οἶμαι, τοῦ κακῶς ἔχειν τὰ ὅλα· οὐ γὰρ παραινοῦσιν ὑμῖν ὑπὲρ τῶν παρόντων οἱ λέγοντες, ἀλλ' ἑαυτῶν κατηγοροῦσι καὶ λοιδοροῦνται, ὡς μὲν ἐγὼ κρίνω, συνεθίζοντες ὑμᾶς ἄνευ κρίσεως, ὅσων εἰσὶν αἴτιοι κακῶν, ἀκούειν, ἵν' ἄν ποτ' ἄρα εἰς ἀγῶνα καθιστῶνται, μηδὲν ἡγούμενοι καινὸν ἀκούειν ἀλλ' ὑπὲρ ὧν ὠργισθε πολλάκις, πρᾳότεροι δικασταὶ καὶ κριταὶ γίγνησθε τῶν πεπραγμένων αὐτοῖς.
2 τὴν μὲν οὖν αἰτίαν, δι' ἣν ταῦτα ποιοῦσιν, ἴσως ἀνόητον ἀκριβῶς ζητεῖν εἴη ἂν ἐν τῷ παρόντι· ὅτι δὲ ὑμῖν οὐχὶ συμφέρει, διὰ τοῦτο ἐπιτιμῶ. ἐγὼ δ' οὔτε κατηγορήσω τήμερον οὐδενός, οὔτε ὑποσχήσομαι τοιοῦτον οὐδὲν ὃ μὴ παραχρῆμα ἐπιδείξω, οὐδ' ὅλως τῶν αὐτῶν τούτοις οὐδὲν ποιήσω, ἀλλ' ἃ βέλτιστα μὲν τοῖς πράγμασι συμφέροντα δὲ τοῖς βουλευομένοις ὑμῖν ἡγοῦμαι, ταῦθ' ὡς ἂν δύνωμαι διὰ βραχυτάτων εἰπὼν καταβήσομαι.

7. ‖ Οἱ μὲν ἐπαινοῦντες ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοὺς προγόνους ὑμῶν λόγον εἰπεῖν μοι δοκοῦσι προαιρεῖσθαι κεχαρισμένον, οὐ μὴν συμφέροντά γε ἐκείνοις οὓς ἐγκωμιάζουσι ποιεῖν· περὶ γὰρ πραγμάτων ἐγχειροῦντες ὧν οὐδ' ἂν εἷς ἀξίως ἐφικέσθαι δύναιτο τῷ λόγῳ, αὐτοὶ μὲν τοῦ δύνασθαι λέγειν δόξαν ἐκφέρονται, τὴν δ' ἐκείνων ἀρετὴν ἐλάττω τῆς ὑπειλημμένης παρὰ τοῖς ἀκούουσι φαίνεσθαι ποιοῦσιν.
2 ἐγὼ δὲ τῆς μὲν ἐκείνων ἀρετῆς μέγιστον ἔπαινον ἡγοῦμαι τὸν χρόνον, οὗ πολλοῦ γεγενημένου μείζω τῶν ὑπ' ἐκείνων πραχθέντων οὐδένες ἄλλοι παραδείξασθαι δεδύνηνται· αὐτὸς δὲ πειράσομαι τὸν τρόπον εἰπεῖν ὃν ἄν μοι δοκεῖτε μάλιστα δύνασθαι παρασκευάσασθαι. καὶ
3 γὰρ οὕτως ἔχει· εἰ μὲν ἡμεῖς ἅπαντες οἱ λέγοντες δεινοὶ φανείημεν, οὐδὲν ἂν τὰ ὑμέτερ' εὖ οἶδ' ὅτι βέλτιον σχοίη· εἰ δὲ παρελθὼν ὁστισοῦν δύναιτό τι διδάξαι, καὶ πεῖσαι τίς παρασκευὴ καὶ πόση καὶ πόθεν πορισθεῖσα χρήσιμος ἔσται τῇ πόλει, πᾶς ὁ παρὼν λέλυται φόβος. ἐγὼ δὲ τοῦτο, ἂν ἄρα οἷός τε ὦ, πειράσομαι ποιῆσαι, μικρὰ προειπὼν ὑμῖν ὡς ἔχω γνώμης περὶ τῶν πρὸς βασιλέα.

8. Ἀμφότεροί μοι δοκοῦσιν ἁμαρτάνειν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ οἱ τοῖς Ἀρκάσι καὶ οἱ τοῖς Λακεδαιμονίοις συνειρηκότες· ὥσπερ γὰρ

ἀφ' ἑκατέρων ἥκοντες, οὐχ ὑμῶν ὄντες, πρὸς οὓς ἀμφότεροι πρεσβεύονται, κατηγοροῦσι καὶ διαβάλλουσιν ἀλλήλους. ἦν δὲ τοῦτο μὲν τῶν ἀφιγμένων ἔργον, τὸ δὲ κοινῶς ὑπὲρ τῶν πραγμάτων λέγειν καὶ τὰ βέλτιστα ὑπὲρ ὑμῶν σκοπεῖν ἄνευ φιλονεικίας τῶν ἐνθάδε συμβουλεύειν ‖ ἀξιούντων. νῦν δ' ἔγωγε, εἴ τις αὐτῶν ἀφέλοι τὸ γιγνώσκεσθαι 2
καὶ τὸ τῇ φωνῇ λέγειν ἀττικιστί, πολλοὺς ἂν οἶμαι τοὺς μὲν Ἀρκάδας τοὺς δὲ Λάκωνας αὐτῶν εἶναι νομίσαι. ἐγὼ δ' οἶδα μὲν ὡς χαλεπὸν τὸ τὰ βέλτιστα λέγειν ἐστί· συνεξηπατημένων γὰρ ὑμῶν, καὶ τῶν μὲν ταυτὶ τῶν δὲ ταυτὶ βουλομένων, ἐὰν μεταξύ τις ἐγχειρῇ λέγειν καὶ ταῦθ' ὑμεῖς μὴ περιμένητε μαθεῖν, χαριεῖται μὲν οὐδετέροις, διαβεβλήσεται δὲ πρὸς ἀμφοτέρους. οὐ μὴν ἀλλ' αἱρήσομαι μᾶλλον αὐτός, ἂν ἄρα τοῦτο 3
πάθω, δοκεῖν φλυαρεῖν, ἢ παρ' ἃ βέλτιστα νομίζω τῇ πόλει προέσθαι τισὶν ὑμᾶς ἐξαπατῆσαι. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ὕστερον, ἐὰν ὑμῖν βουλομένοις ᾖ, λέξω· ἐκ δὲ τῶν ὁμολογουμένων ὑπ' αὐτῶν ἄρξομαι, ἃ κράτιστα νομίζω, διδάσκειν.

9. Οὐχὶ ταὐτὰ γιγνώσκων ἐνίοις τῶν εἰρηκότων ἀνέστηκα, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι. οὐ μὴν οὐδὲ τούτους αἰτιάσομαι κακίᾳ τἀναντία τοῖς βελτίστοις εἰρηκέναι, ἀλλ' ὅτι πολλοὶ τοῦ τὰ πράγματα κρίνειν ἀμελήσαντες τοὺς λόγους σκοπεῖν, οὓς ἐροῦσιν, εἰώθασι, κἂν τούτοις ἀφθόνως ἐντύχωσιν, ἑτοίμως δημηγορεῖν, οὐκ ὀρθῶς ἐγνωκότες, οὐδὲ λογιζόμενοι παρ' ἑαυτοῖς ὅτι πολλῶν πράξεων ἐν πολλῷ χρόνῳ πᾶσι πεπραγμένων καὶ διὰ τοὺς καιροὺς ἐνίων ὑπεναντίων αὐταῖς, ἂν τὰς προτέρας τις ὑπερβαίνων τὰς ὑστέρας λέγῃ, λήσει τὸ ῥᾷστον τῶν ἔργων ποιῶν, αὐτὸν ἐξαπατῶν. οἱ μὲν οὖν οὕτω χρώμενοι τῷ συμβου- 2
λεύειν δοκοῦσί μοι τὴν ἀπὸ τῶν ῥηθέντων τοῦ δύνασθαι λέγειν δόξαν γιγνομένην αὐτοῖς ‖ ἱκανὴν φιλοτιμίαν ἡγεῖσθαι· ἐγὼ δὲ νομίζω χρῆναι τὸν πόλει περὶ πραγμάτων ἐπιχειροῦντα συμβουλεύειν μᾶλλον, ὅπως τὰ δόξαντα συνοίσει, σκοπεῖν, ἢ ὅπως οἱ παραχρῆμα λόγοι χάριν ἕξουσι. δεῖ γὰρ τοῖς ἐπὶ τῶν λόγων εὐδοκιμοῦσι συμφέροντός τινος ἔργου πρᾶξιν προσεῖναι, ἵνα μὴ νῦν μόνον ἀλλ' ἀεὶ τὰ ῥηθέντα καλῶς ἔχῃ.

10. Εἰ μὲν ἐγνώκατ' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τί βέλτιστον ὂν τυγχάνει πρᾶξαι περὶ τῶν παρόντων, ἁμάρτημα τὸ συμβουλεύειν προτιθέναι· ἃ γὰρ αὐτοὶ πρὶν ἀκοῦσαι δοκιμάζετε συμφέρειν, τί δεῖ ταῦτα ἀκούοντας μάτην ἐνοχλεῖσθαι; εἰ δὲ σκοπεῖτε καὶ βουλεύεσθε ὡς ἐκ τῶν ῥηθησομένων δοκιμάσαι δέον, οὐκ ὀρθῶς ἔχει τὸ κωλύειν τοὺς βουλομένους λέγειν. παρὰ μὲν γὰρ τῶν ὅλως ἀποστερεῖσθε ἐκ τοῦ τοῦτο 2
ποιεῖν, εἴ τι χρήσιμον ἐντεθύμηνται· τοὺς δ' ἀφέντας ἃ τυγχάνουσιν ἐγνωκότες, ὧν ὑμᾶς ἐπιθυμεῖν οἴονται, ταῦτα ποιεῖτε συμβουλεύειν. ἔστι δὲ ἁμαρτάνειν μὲν βουλομένων τὸ συναναγκάζειν τὸν παριόντα, ἃ βούλεσθε, λέγειν, βουλευομένων δὲ ἀκούσαντας ἃ γιγνώσκει σκοπεῖν, κἂν τι καλῶς ἔχῃ, χρῆσθαι. λέγω δὲ ταῦτα οὐκ ἐναντία τοῖς ὑμῖν ἀρέ- 3
σκουσι μέλλων παραινεῖν, ἀλλ' ἐκεῖνο εἰδώς, ὅτι ἂν μὲν μὴ θελήσητε τῶν ἀντιλεγόντων ἀκοῦσαι, ἐξηπατῆσθαι φήσουσιν ὑμᾶς, ἂν δ' ἀκούσαντες μὴ πεισθῆτε, ἐξεληλεγμένοι παραχρῆμ' ἔσονται τὰ χείρω παραινοῦντες.

εἴ τις ὑπόσχοιτο ὑμῖν ταὐτὰ δίκαια ‖ καὶ συμφέροντα δείξειν ὄντα ὑπὲρ ὧν βουλευόμεθα. ἐγὼ τοίνυν οἴομαι τοῦτο ποιήσειν οὐ χαλεπῶς,
2 ἂν ὑμεῖς βραχύ τί μοι πεισθῆτε πάνυ. μὴ πάνθ', ὡς ἕκαστος ἔχει γνώμης ὑμῶν περὶ τῶν παρόντων, ὀρθῶς ἐγνωκέναι πεπείσθω, ἀλλ' ἐὰν παρὰ ταῦτά τι συμβαίνῃ λέγεσθαι, σκοπείτω πάντα ὑπομείνας ἀκοῦσαι, εἶτ' ἐὰν ὀρθῶς εἰρῆσθαί τι δοκῇ, χρήσθω. οὐ γὰρ ἧττον ὑμέτερον ἔσται τῶν χρησομένων τὸ κατορθωθὲν ἢ τοῦ πρὸς ὑμᾶς
3 εἰπόντος. ἡ μὲν οὖν ἀρχὴ τοῦ σκοπεῖν ὀρθῶς ἐστὶ μὴ βεβουλεῦσθαι πρὶν ἐξ ὧν δεῖ βουλεύσασθαι ἀκοῦσαι. οὐ γὰρ ὁ αὐτὸς οὔτε καιρὸς οὔτε τρόπος τοῦ τ' ἐπικυρῶσαι τὰ δοκοῦντα καὶ τοῦ σκέψασθαι τί πρῶτον δοκεῖ συμφέρειν.

19. Μεθ' ὑμῶν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι παρελήλυθα βουλευσόμενος πότερον χρή με λέγειν ἢ μή. διὸ δ' αὐτὸς τοῦτ' ἀπορῶ κρῖναι, φράσω πρὸς ὑμᾶς. ἀναγκαῖον εἶναί μοι δοκεῖ τῷ μήθ' αὐτῷ μήτε τισὶ χαρίσασθαι βουλομένῳ, ἀλλ' ὑπὲρ ὑμῶν εἰπεῖν ἃ πέπεικεν ἑαυτὸν μάλιστα συμφέρειν, καὶ συνειπεῖν ἃ καλῶς λέγουσιν ἀμφότεροι, καὶ τοὐναντίον
2 ἀντειπεῖν ὅσα μὴ δίκαια ἀξιοῦσιν. εἰ μὲν οὖν ὑμεῖς ὑπομείναιτε ἀκοῦσαι ταῦτ' ἀμφότερα διὰ βραχέων, πολλῷ βέλτιον ἂν περὶ τῶν λοιπῶν βουλεύσαισθε· εἰ δὲ πρὶν μαθεῖν ἀποσταίητε, γένοιτ' ἂν ἐμοὶ μηδετέρους ἀδικοῦντι πρὸς ἀμφοτέρους διαβεβλῆσθαι. τοῦτο δ' οὐχὶ δίκαιός εἰμι παθεῖν. ἐὰν μὲν οὖν κελεύητε, ἕτοιμός εἰμι λέγειν· εἰ δὲ μή, καὶ σιωπᾶν ἔχει μοι καλῶς.

20. ‖ Καὶ δίκαιον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ συμφέρον ὑμῖν ἡγοῦμαι τὰς μὲν αἰτίας καὶ τὰς κατηγορίας, ὅταν βουλεύεσθαι δέῃ, παραλείπειν, περὶ τῶν παρόντων δὲ λέγειν ὅ τι βέλτιστον ἕκαστος ἡγεῖται. ὅτι μὲν γὰρ τινῶν αἰτίων ὄντων κακῶς τὰ πράγματα ἔχει, πάντες ἐπιστάμεθα· ἐξ ὅτου δὲ τρόπου βελτίω δύναιτ' ἂν γενέσθαι, τοῦτο τοῦ συμβουλεύ-
2 οντος ἔργον εἰπεῖν. ἔπειτ' ἔγωγε νομίζω καὶ κατηγόρους εἶναι τῶν ἀδικούντων χαλεποὺς οὐ τοὺς ἐν τοιούτοις καιροῖς ἐξετάζοντας τὰ πεπραγμένα ὅτ' οὐδεμίαν δώσουσι δίκην, ἀλλὰ τοὺς τοιοῦτό τι συμβουλεῦσαι δυνηθέντας ἀφ' οὗ βελτίω τὰ παρόντα γένοιτ' ἄν· διὰ γὰρ τούτους ἐφ' ἡσυχίας καὶ παρ' ἐκείνων ἐγγένοιτ' ἂν ὑμῖν δίκην λαβεῖν.
3 τοὺς μὲν οὖν ἄλλους λόγους πάντας περιέργους ἡγοῦμαι, ἃ δ' ἂν οἶμαι συνενεγκεῖν περὶ ὧν νυνὶ σκοπεῖτε, ταῦτ' εἰπεῖν πειράσομαι, τοσοῦτον ἀξιώσας μόνον, ἂν ἄρα του μεμνῶμαι τῶν πεπραγμένων, μὴ κατηγορίας με ἕνεκα ἡγεῖσθαι λέγειν, ἀλλ' ἵνα δείξας ἃ τότε ἡμάρτετε, νῦν ἀποτρέψω ταὐτὰ παθεῖν.

21. Εἰ καὶ τὸν ἄλλον χρόνον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μηδενὶ συμπολιτευόμενοι τοσαύτην ἤγομεν ἡσυχίαν ὅσηνπερ ἐν τῷ παρόντι, οὔτε τὰ νῦν ἂν γεγενημένα συμβῆναι νομίζω, τῶν τε ἄλλων οἶμαι πολλὰ βέλτιον ἂν ἡμῖν ἔχειν. νῦν δ' ὑπὸ τῆς ἐνίων ἀσελγείας οὔτε παρελθεῖν οὔτε εἰπεῖν οὐδ' ὅλως λόγου τυχεῖν ἔστιν. ὅθεν συμβαίνει πολλὰ καὶ οὐκ
2 ἐπιτήδεια ἴσως. εἰ μὲν οὖν δεῖ ταῦτα πυνθάνεσθαι, καὶ σκοπεῖν ὅ τι χρὴ ποιῆσαι, καὶ πάσχειν οἷάπερ νυνὶ ‖ βούλεσθε, ψηφιεῖσθε ἅπερ ἐκ

τῶν παρεληλυθότων χρόνων, καθέλκειν τριήρεις, ἐμβαίνειν, εἰσφέρειν, πάντα ταῦτ' ἤδη· ἃ τριῶν ἡμερῶν ἢ πέντε, ἂν σιωπηθῇ τὰ παρὰ τῶν πολεμίων καὶ σχῶσιν ἡσυχίαν ἐκεῖνοι, πάλιν οὐκέτι καιρὸν εἶναι πράττειν ὑπολήψεσθε. ὅπερ, ἡνίκα ἐν Ἑλλησπόντῳ Φίλιππον ἠκούσαμεν, συνέβη, καὶ πάλιν ἡνίκ' εἰς Μαραθῶνα τριήρεις αἱ λῃστρίδες προσέσχον.
ὡς γὰρ ἂν χρήσαιτό τις ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καλῶς δυνάμει παρεσκευα- 3
σμένῃ, οὕτως ὑμεῖς εἰώθατε τῷ βουλεύεσθαι χρῆσθαι, ὀξέως. δεῖ δὲ βουλεύεσθαι μὲν ἐφ' ἡσυχίας, ποιεῖν δὲ τὰ δόξαντα μετὰ σπουδῆς, καὶ λογίσασθαι τοῦθ', ὅτι εἰ μὴ καὶ τροφὴν ἱκανὴν ποριεῖτε καὶ στρατηγόν τινα τοῦ πολέμου νοῦν ἔχοντα προστήσεσθε καὶ μένειν ἐπὶ τῶν οὕτω δοξάντων ἐθελήσετε, ψηφίσμαθ' ὑμῖν περιέσται, καὶ παραναλώσετε μὲν πάνθ' ὅσ' ἂν δαπανήσητε, βελτίω δ' οὐδ' ὁτιοῦν τὰ πράγματα ἔσται, κρινεῖτε δὲ ὃν ἂν βούλησθε ὀργισθέντες. ἐγὼ δὲ βούλομαι τοὺς ἐχθροὺς 4
ὑμᾶς ἀμυνομένους ὀφθῆναι πρότερον ἢ τοὺς πολίτας κρίνοντας· οὐ γὰρ ἡμῖν αὐτοῖς πολεμεῖν μᾶλλον ἢ ἐκείνοις ἐσμὲν δίκαιοι. ἵν' οὖν μή, τὸ ῥᾷστον ἁπάντων, ἐπιτιμήσω μόνον, ὃν τρόπον ἄν μοι δοκεῖτε ταῦτα ποιῆσαι διδάξω, δεηθεὶς ὑμῶν μὴ θορυβῆσαι μηδ' ἀναβάλλειν νομίσαι με καὶ χρόνον ἐμποιεῖν. οὐ γὰρ οἱ ταχὺ καὶ τήμερον εἰπόντες μάλιστ' 5
εἰς τὸ δέον λέγουσιν· οὐ γὰρ ἂν τά γ' ἤδη γεγενημένα κωλῦσαι δυνηθείημεν τῇ νῦν βοηθείᾳ· ἀλλ' ὃς ἂν δείξῃ τίς πορισθεῖσα παρασκευὴ νυνὶ διαμεῖναι δυνήσεται, τέως ἂν ἢ περιγενώμεθα τῶν ‖ ἐχθρῶν ἢ πεισθέντες διαλυσώμεθα τὸν πόλεμον. οὕτω γὰρ οὐκέτι τοῦ λοιποῦ σχοῖμεν ἂν κακῶς.

22. Οἶμαι πάντας ἂν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι ὁμολογῆσαι ὅτι δεῖ τὴν πόλιν ἡμῶν, ὅταν μὲν περὶ τῶν ἰδίων τινὸς τῶν αὐτῆς βουλεύηται, ἴσην πρόνοιαν ἔχειν τοῦ συμφέροντος ὅσηνπερ τοῦ δικαίου, ὅταν δ' ὑπὲρ τῶν συμμαχικῶν ἢ τῶν κοινῶν, οἷον καὶ τὸ νυνὶ παρόν, μηδενὸς
οὕτως ὡς τοῦ δικαίου φροντίζειν. ἐν μὲν γὰρ ἐκείνοις τὸ λυσιτελὲς 2
ἐξαρκεῖ, ἐν δὲ τοιούτοις καὶ τὸ καλὸν προσεῖναι δεῖ. τῶν μὲν γὰρ πράξεων, εἰς οὓς ἂν ἥκωσι, κύριοι καθίστανται· τῆς δ' ὑπὲρ τούτων δόξης οὐδεὶς τηλικοῦτός ἐσθ' ὅστις ἔσται κύριος, ἀλλ' ὁποίαν ἄν τινα τὰ πραχθέντα ἔχῃ δόξαν, τοιαύτην οἱ πολλοὶ περὶ τῶν πραξάντων διήγγειλαν.
διὸ δεῖ σκοπεῖν καὶ προσέχειν ὅπως δίκαια φανεῖται. χρὴ μὲν οὖν οὕ- 3
τως ἅπαντας ἔχειν τὴν διάνοιαν περὶ τῶν ἀδικουμένων ὥσπερ ἄν, εἴ τι γένοιτο, ὃ μὴ συμβαίη, τοὺς ἄλλους ἀξιώσειε πρὸς αὐτὸν ἕκαστος ἔχειν. ἐπειδὴ δὲ καὶ παρὰ τὴν αὐτῶν γνώμην ἐναντιοῦνταί τινες, μικρὰ πρὸς τούτους εἰπών, ἃ βέλτισθ' ὑμῖν ὑπολαμβάνω, ταῦτ' ἤδη συμβουλεύσω.

23. Οὐ μικρὰν ἄν μοι δοκεῖτε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι ζημίαν νομίσαι, εἴ τις ἀηδὴς δόξα καὶ μὴ προσήκουσα τῇ πόλει παρὰ τοῖς πολλοῖς περιγίγνοιτο. τοῦτο τοίνυν οὕτω καλῶς ἐγνωκότες οὐκ ἀκόλουθα ποιεῖτε τὰ λοιπά, ἀλλ' ὑπάγεσθε ἑκάστοτε πράττειν ἔνια ἃ οὐδ' ἂν αὐτοὶ φήσαιτε καλῶς ἔχειν. ἐγὼ δ' οἶδα μὲν τοῦθ', ὅτι τοὺς ἐπαινοῦντας ἥδιον 2
προσδέχονται πάντες τῶν ἐπιτιμώντων· οὐ μὴν οἴομαι δεῖν, ταύτην

τὴν φιλανθρωπίαν ‖ διώκων, λέγειν παρ' ἃ συμφέρειν ὑμῖν ἡγοῦμαι.
τὴν μὲν οὖν ἀρχὴν εἰ καλῶς ἐγιγνώσκετε, οὐδὲν ἔδει κοινῇ ποιεῖν [ὑπο-
ληπτέον εἶναι] ὧν ἰδίᾳ μέμφεσθε, ἵνα μὴ συνέβαινεν ὅπερ νυνὶ γίγνε-
ται. περὶ ὧν μὲν ἕκαστος, ὡς αἰσχρὰ καὶ δεινά, λέγει, καὶ "μέχρι τοῦ
προβήσεται τὰ πράγματα;" συγκαθιζόμενος δ' αὐτὸς ἕκαστός ἐστι τῶν
2 τὰ τοιαῦτα ποιούντων. ἐγὼ μὲν οὖν ἐβουλόμην ἄν, ὥσπερ ὅτι ὑμῖν
συμφέρει τοῦ τὰ βέλτιστα λέγοντος ἀκούειν οἶδα, οὕτως εἰδέναι συνοῖ-
σον καὶ τῷ τὰ βέλτιστα λέγοντι· πολλῷ γὰρ ἂν ἥδιον εἶπεν. νῦν δὲ
φοβοῦμαι μέν, ὅμως δὲ ἅ γε πιστεύω χρηστὰ φανεῖσθαι, κἂν ὑμεῖς μὴ
πεισθῆτε, οὐκ ἀποτρέψομαι λέγειν.

24. Εἰ καὶ μηδὲν ἄλλο τις ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρότερον παρ' ὑμῖν
εἰρηκὼς εἴη, νῦν γε λέγων περὶ ὧν οὐκ ὀρθῶς ἐγκαλοῦσιν οἱ πρέσβεις
τῇ πόλει παρὰ πάντων ἄν μοι δοκεῖ δικαίως συγγνώμης τυχεῖν. καὶ
γὰρ ἐν ἄλλοις μέν τισιν ἡττᾶσθαι τῶν ἐναντίων οὐχ οὕτως ὄνειδος ὡς
ἀτύχημα ἂν φαίη· καὶ γὰρ τῇ τύχῃ καὶ τοῖς ἐφεστηκόσι καὶ πολλοῖς
μέτεστι τοῦ καλῶς ἢ μὴ [πρότερον] ἀγωνίσασθαι· ἐν δὲ τῷ τὰ δίκαια
ὑπὲρ αὐτῶν μὴ λέγειν ἀξίως τῶν ὑπαρχόντων αὐτῆς τῆς γνώμης τῆς
2 τῶν τοῦτο παθόντων τὸ ὄνειδος εὑρήσομεν. εἰ μὲν οὖν ἕτεροί τινες
ἦσαν ἐν οἷς ἐγίγνονθ' οἱ λόγοι περὶ ὑμῶν, οὔτε τούτους ἂν οἶμαι ῥᾳ-
δίως οὕτω ψεύδεσθαι, οὔτε τοὺς ἀκούοντας πολλὰ τῶν εἰρημένων
ἀνασχέσθαι. νῦν δὲ τἆλλά τε, οἶμαι, τῆς ὑμετέρας πλεονεκτοῦσιν εὐη-
θείας ἅπαντες, καὶ δὴ καὶ τοῦτο νῦν οὗτοι· ἀκροαταῖς γὰρ ἐχρήσαντο
καθ' ‖ ὑμῶν ὑμῖν οἵοις οὐδέσιν ἂν τῶν ἄλλων, ἀκριβῶς οἶδα τοῦτ' ἐγώ.
ἄξιον δ' εἶναί μοι δοκεῖ διὰ ταῦτα τοῖς θεοῖς χάριν ὑμᾶς ἔχειν, ὦ ἄνδρες
3 Ἀθηναῖοι, καὶ τούτους μισεῖν. τὸ μὲν γὰρ ὁρᾶν τούτους τὸν Ῥοδίων
δῆμον, τὸν πολὺ τούτων ποτ' ἀσελγεστέρους λόγους λέγοντα πρὸς
ὑμᾶς, ἱκέτην ὑμέτερον γεγενημένον εὐτύχημα εἶναι νομίζω τῆς πόλεως·
τὸ δὲ τοὺς ἀνοήτους τούτους μήτε τοῦτο λογίζεσθαι, παρὸν οὕτως
ἐναργὲς ἰδεῖν, μήθ' ὅτι πολλάκις καθ' ἓν αὐτῶν ἕκαστον ὑμεῖς σεσώ-
κατε, καὶ πλείω πράγματ' ἐσχήκατε τὴν τούτων θρασύτητα καὶ κακο-
δαιμονίαν ἐπανορθοῦντες, ἐπειδὰν δι' αὐτοὺς ἀνέλωνται πόλεμον, ἢ
τὰ ὑμέτερ' αὐτῶν πράττοντες, τοῦτο παμπόλλην ὑμῖν ὀργὴν εἰκότως
4 ἂν παραστῆσαί μοι δοκεῖ. οὐ μὴν ἀλλ' ἴσως τούτοις μὲν εἵμαρται μηδέ-
ποτ' εὖ πράττουσιν εὖ φρονῆσαι· ἡμῖν δὲ προσήκει καὶ δι' ἡμᾶς αὐτούς,
καὶ διὰ τἆλλ' ἃ πέπρακται τῇ πόλει, σπουδάσαι δεῖξαι πᾶσιν ἀνθρώ-
ποις ὅτι καὶ πρότερον καὶ νῦν καὶ ἀεὶ ἡμεῖς μὲν τὰ δίκαια προαιρού-
μεθα πράττειν, ἕτεροι δέ τινες καταδουλοῦσθαι βουλόμενοι τοὺς αὐ-
τῶν πολίτας διαβάλλουσι πρὸς ἡμᾶς.

25. Εἰ μετὰ τῆς αὐτῆς γνώμης ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τούς τε λόγους
ἠκούετε τῶν συμβουλευόντων καὶ τὰ πράγματα ἐκρίνετε, πάντων
ἀσφαλέστατον ἦν ἂν τὸ συμβουλεύειν· καὶ γὰρ εὐτυχῶς καὶ ἄλλως πρά-
ξασι (λέγειν γὰρ εὐφήμως πάντα δεῖ) κοινὰ ἂν ἦν τὰ τῆς αἰτίας ὑμῖν καὶ
2 τῷ πείσαντι. νῦν δ' ἀκούετε μὲν τῶν ἃ βούλεσθε λεγόντων ἥδιστα,
αἰτιᾶσθε δὲ πολλάκις ἐξαπατᾶν ὑμᾶς αὐτούς, ἂν μὴ πάνθ' ὃν ἂν ὑμεῖς

‖ τρόπον βούλησθε γένηται, οὐ λογιζόμενοι τοῦθ᾽, ὅτι τοῦ μὲν ζητῆσαι
καὶ λογίσασθαι τὰ βέλτισθ᾽, ὡς ἄνθρωπος, καὶ πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν αὐτὸς
ἕκαστός ἐστι κύριος, τοῦ δὲ πραχθῆναι ταῦτα καὶ συνενεγκεῖν ἐν τῇ
τύχῃ τὸ πλεῖστον μέρος γίγνεται. ἔστι δὲ ἄνθρωπον ὄντα ἀγαπητὸν 3
τῆς αὑτοῦ διανοίας λόγον ὑπέχειν· τῆς δὲ τύχης προσυποσχεῖν ἕν τι
τῶν ἀδυνάτων. εἰ μὲν οὖν εὑρημένον ἦν πῶς ἄν τις ἀσφαλῶς ἄνευ κιν-
δύνου δημηγοροίη, μανία παραλείπειν τοῦτον ἦν τὸν τρόπον· ἐπεὶ δ᾽
ἀνάγκη τὸν περὶ τῶν μελλόντων πραγμάτων γνώμην ἀποφαινόμενον
κοινωνεῖν τοῖς ἀπ᾽ αὐτῶν γενομένοις καὶ μετέχειν τῆς ἀπὸ τούτων αἰ-
τίας, αἰσχρὸν ἡγοῦμαι λέγειν μὲν ὡς εὔνους, μὴ ὑπομένειν δὲ εἴ τις ἐκ
τούτου κίνδυνος ἔσται. εὔχομαι δὲ τοῖς θεοῖς, ἃ καὶ τῇ πόλει κἀμοὶ 4
συμφέρειν μέλλει, ταῦτ᾽ ἐμοί τε εἰπεῖν ἐλθεῖν ἐπὶ νοῦν καὶ ὑμῖν ἑλέ-
σθαι. τὸ γὰρ πάντα τρόπον ζητεῖν νικῆσαι, δυοῖν θάτερον, ἢ μανίας
ἢ κέρδους ἕνεκα ἐσπουδακότος φήσαιμ᾽ ἂν εἶναι.

26. Εἴη μέν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ περὶ ὧν νυνὶ τυγχάνετε ἐκ-
κλησιάζοντες καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἁπάντων ταὐτὰ καὶ δοκοῦντα βέλ-
τισθ᾽ ὑμῖν εἶναι καὶ ὄνθ᾽ ὡς ἀληθῶς· δεῖ μέντοι περὶ πραγμάτων
μεγάλων βουλευομένους καὶ κοινῶς ἁπάντων ἐθέλειν ἀκούειν τῶν
συμβουλευόντων, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἐνθυμουμένους ὅτι αἰσχρόν ἐστιν, ὦ
ἄνδρες Ἀθηναῖοι, νῦν μὲν βουλομένων τι παραινεῖν ἐνίων θορυβεῖν,
ὕστερον δὲ κατηγορούντων τῶν αὐτῶν τούτων τῶν πεπραγμένων
ἡδέως ἀκούειν. ἐγὼ γὰρ οἶδα, νομίζω δὲ καὶ ὑμᾶς, ὅτι νῦν ‖ μὲν ἀρέ- 2
σκουσι μάλισθ᾽ ὑμῖν οἱ ταῦτα οἷα ὑμεῖς βούλεσθε λέγοντες· ἂν δέ τι
συμβῇ παρ᾽ ἃ νῦν οἴεσθε, ὃ μὴ συμβαίη, τούτους μὲν ἐξηπατηκέναι
νομιεῖτε ὑμᾶς, ὧν δὲ νῦν οὐκ ἀνέχεσθε, τότε ὀρθῶς δόξουσι λέγειν.
ἔστι δὲ τοῖς μάλιστα πεπεικόσιν ὑμᾶς ταῦτα ἐφ᾽ ὧν νῦν ἐστέ, τούτοις
καὶ μάλιστα συμφέρον τὸ λόγου τυχεῖν τοὺς ἀντιλέγοντας. ἂν μὲν γὰρ 3
διδάξαι δυνηθῶσιν ὡς οὐκ ἔστιν ἄριστα ἃ τούτοις δοκεῖ, ὅτ᾽ οὐδὲν
ἡμάρτηταί πω, τοῦτο πράξαντες ἀθῴους τοὺς κινδύνους ποιήσουσιν
αὐτοῖς· ἐὰν δὲ μὴ δυνηθῶσιν, οὔκουν ὕστερόν γε ἐπιτιμᾶν ἕξουσιν,
ἀλλ᾽ ὅσα ἀνθρώπων ἦν ἔργον, ἀκοῦσαι, τούτων τετυχηκότες, ἂν ἡτ-
τῶνται δικαίως, στέρξουσι, καὶ μεθ᾽ ἁπάντων τῶν ἀποβαινόντων,
ὁποῖ᾽ ἄττ᾽ ἂν ᾖ, κοινωνήσουσιν.

27. Οἶμαι δεῖν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι περὶ τηλικούτων βουλευο-
μένους διδόναι παρρησίαν ἑκάστῳ τῶν συμβουλευόντων. ἐγὼ δὲ οὐδὲ
πώποθ᾽ ἡγησάμην χαλεπὸν τὸ διδάξαι τὰ βέλτισθ᾽ ὑμᾶς (ὡς γὰρ ἁπλῶς
εἰπεῖν, πάντες ὑπάρχειν ἐγνωκότες ἔμοιγε δοκεῖτε), ἀλλὰ τὸ πεῖσαι
πράττειν ταῦτα. ἐπειδὰν γάρ τι δόξῃ καὶ ψηφισθῇ, τότε ἴσον τοῦ
πραχθῆναι ἀπέχει ὅσον περ πρὶν δόξαι. ἔστι μὲν οὖν ὧν ἐγὼ νομίζω 2
χάριν ὑμᾶς τοῖς θεοῖς ὀφείλειν, τὸ τοὺς διὰ τὴν αὑτῶν ὕβριν ὑμῖν πολε-
μήσαντας πάλαι νῦν ἐν ὑμῖν μόνοις τῆς αὑτῶν σωτηρίας ἔχειν τὰς ἐλ-
πίδας. ἄξιον δ᾽ ἡσθῆναι τῷ παρόντι καιρῷ· συμβήσεται γὰρ ὑμῖν, ἂν
ἃ χρὴ βουλεύσησθε ὑπὲρ αὐτοῦ, τὰς παρὰ τῶν διαβαλλόντων τὴν πόλιν
ἡμῶν ‖ βλασφημίας ἔργῳ μετὰ δόξης καλῆς ἀπολύσασθαι.

28. *Αἱ μὲν ἐλπίδες ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μεγάλαι καὶ καλαὶ τῶν προ-
ειρημένων, πρὸς ἃς οἴομαι τοὺς πολλοὺς ἄνευ λογισμοῦ τι πεπονθέναι·
ἐγὼ δὲ οὐδὲ πώποτε ἔγνων ἕνεκα τοῦ παραχρῆμα ἀρέσαι λέγειν τι πρὸς
ὑμᾶς, ὅ τι ἂν μὴ καὶ μετὰ ταῦτα συνοίσειν ἡγῶμαι. ἔστι μὲν οὖν τὸ
κοινὸν ἔθος τῶν πλείστων τοὺς μὲν συνεπαινοῦντας ἑαυτοῖς ὅ τι ἂν
2 πράττωσι φιλεῖν, πρὸς δὲ τοὺς ἐπιτιμῶντας ἀηδῶς ἔχειν· οὐ μὴν ἀλλὰ
δεῖ τὸν εὖ φρονοῦντα τὸν λογισμὸν ἀεὶ τῶν ἐπιθυμιῶν κρείττω πειρᾶ-
σθαι ποιεῖν. ἐγὼ δὲ ἡδέως ⟨μὲν ἂν⟩ ἑώρων, ἃ καὶ συνοίσειν ἤμελλε,
ταῦτ' ἐν ἡδονῇ πράττειν ὑμῖν, ἵνα καὶ χαριζόμενος καὶ χρηστὰ
λέγων ἐφαινόμην· ἐπειδὴ δὲ τἀναντία ὁρῶ τούτων ἐπιχειροῦντας ὑμᾶς,
3 οἴομαι δεῖν ἀντειπεῖν, εἰ καί τισι μέλλω ἀπεχθήσεσθαι. ἂν μὲν οὖν
μηδ' ὑπομείνητε ἀκοῦσαι μηδὲ ἕν, οὐ τῷ δοκιμάζοντες διαμαρτεῖν ἀλλὰ
τῷ φύσει πονηρὰ ἐπιθυμεῖν πράττειν τοιαῦτα προαιρεῖσθαι δόξετε.
ἐὰν δ' ἀκούσητε, τυχὸν μὲν ἴσως κἂν μεταπεισθείητε, ὃ μάλιστα ἐγὼ
νομίζω συνενεγκεῖν ἂν ὑμῖν· εἰ δὲ μή, οἱ μὲν ἀγνοεῖν τὸ συμφέρον, οἱ
δ', ὅ τι ἄν τις βούληται, τοῦτ' ἐρεῖ.*

29. *Πρῶτον μὲν οὐδέν ἐστι καινόν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τοῖς δόξασι
παρ' ὑμῖν εἶναί τινας οἵτινες ἀντεροῦσιν, ἐπειδὰν πράττειν τι δέῃ. εἰ
μὲν οὖν ἀποδόντων ὑμῶν λόγον αὐτοῖς, ὅτ' ἐβουλεύεσθε, τοῦτ' ἐποί-
ουν, τούτων ἂν ἦν ἄξιον κατηγορεῖν, εἰ περὶ ὧν ἥττηντο ‖ ἐβιάζοντο
2 πάλιν λέγειν· νῦν δὲ τούτους μὲν οὐδέν ἐστ' ἄτοπον εἰπεῖν βουληθῆναι
ταῦτα ἃ τότε οὐχ ὑπεμείνατε ἀκοῦσαι, ὑμῖν δ' ἄν τις εἰκότως ἐπιτιμή-
σειεν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὅτι ὁπόταν περί του βουλεύησθε, οὐκ ἐᾶτε
λέγειν ἕκαστον ἃ γιγνώσκει, ἀλλ' ἂν ἕτεροι τῷ λόγῳ προλάβωσιν ὑμᾶς,
οὐδενὸς ἂν τῶν ἑτέρων ἀκούσαιτε. ἐκ δὲ τούτου συμβαίνει πρᾶγμα
ἀηδὲς ὑμῖν· οἷς γὰρ πρὶν ἁμαρτεῖν ὑμῖν ἐξῆν συμβουλεύουσι πείθε-
3 σθαι, τούτους ὕστερον κατηγοροῦντας ἐπαινεῖτε. τοῦτο δή, τοῦτό μοι
πάλιν δοκεῖτε πείσεσθαι, εἰ μὴ παρασχόντες ἴσους ἀκροατὰς πάντων
ὑμᾶς αὐτοὺς ἐν τῷ παρόντι, καὶ τοῦτον τὸν πόνον ὑπομείναντες, ἑλό-
μενοι τὰ κράτιστα τοὺς ὁτιοῦν τούτοις ἐπιτιμῶντας φαύλους νομιεῖτε.
ἐγὼ μὲν δὴ δίκαιον ὑπείληφα πρῶτον ἁπάντων αὐτὸς εἰπεῖν τί μοι
δοκεῖ περὶ ὧν σκοπεῖσθε, ἵνα, ἂν μὲν ὑμῖν ἀρέσκῃ, καὶ τὰ λοιπὰ δι-
δάσκω, εἰ δὲ μή, μήθ' ὑμῖν ἐνοχλῶ μήτ' ἐμαυτὸν κόπτω.*

30. *Ἔδει μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρὸ τοῦ πολεμεῖν ἐσκέφθαι τίς
ὑπάρξει παρασκευὴ τῷ γενησομένῳ πολέμῳ· εἰ δ' ἄρα μὴ πρόδηλος ἦν,
ὅτε πρῶτον ἐβουλεύεσθε ὑπὲρ αὐτοῦ φανεροῦ γενομένου, τότε καὶ
περὶ τῆς παρασκευῆς ἐσκέφθαι. εἰ δὲ φήσετε πολλὰς ἐγκεχειρικέναι
δυνάμεις, ἃς λελυμάνθαι τοὺς ἐπιστάντας, οὐκ ἀποδέξεται τοῦθ' ὑμῶν
οὐδείς· οὐ γάρ ἐστι τῶν αὐτῶν τοὺς ἐπὶ τῶν πραγμάτων ἀπολύειν, καὶ
2 λέγειν ὡς διὰ τούτους κακῶς ταῦτ' ἔχει. ἐπειδὴ δὲ τὰ μὲν παρεληλυθότα
οὐκ ἂν ἄλλως ἔχοι, δεῖ δ' ἐκ τῶν παρόντων ἐπαμῦναι τοῖς πράγμασι,
τοῦ μὲν κατηγορεῖν ‖ οὐδένα καιρὸν ὁρῶ, πειράσομαι δ', ἃ κράτιστα
νομίζω, συμβουλεῦσαι. πρῶτον μὲν οὖν ὑμᾶς ἐκεῖνο ἐγνωκέναι δεῖ, ὅτι
τὴν ἴσην ὑπερβολὴν τῆς σπουδῆς καὶ φιλονεικίας ἐπὶ τοῖς πράγμασι*

πάντ' ἄνδρα παρασχέσθαι δεῖ ὅσηνπερ ἐκ τῶν ἄνωθεν χρόνων ἀμελείας· μόλις γὰρ οὕτως ἐλπὶς ἐκ πολλοῦ διώκοντας τὰ προειμένα ἑλεῖν δυνηθῆναι. ἔπειτ' οὐκ ἀθυμητέον τοῖς γεγενημένοις· ὃ γάρ ἐστι τῶν 3
παρεληλυθότων χείριστον, τοῦτο πρὸς τὰ μέλλοντα βέλτιστον ὑπάρχει. τί οὖν τοῦτ' ἔστιν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι; ὅτι οὐδὲν ὑμῶν τῶν δεόντων ποιούντων κακῶς ἔχει τὰ πράγματα· ἐπεὶ εἴ γε πάνθ' ἃ προσῆκε πραττόντων οὕτως εἶχεν, οὐδ' ἂν ἐλπὶς ἦν αὐτὰ γενέσθαι βελτίω.

31. Οὐδέν ἐστιν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι χαλεπώτερον ἢ τοῖς αὐτοῖς ἔθεσιν ἐπιτιμᾶν τε καὶ χρῆσθαι τοὺς δημηγοροῦντας. τὸ γὰρ στασιάζειν πρὸς αὑτοὺς καὶ κατηγορεῖν ἀλλήλων ἄνευ κρίσεως, οὐδείς ἐστιν οὕτως ἀγνώμων ὅστις οὐ φήσειεν ἂν βλάβην εἶναι τοῖς πράγμασιν. ἐγὼ δ' οἴομαι τούτους μὲν ἂν εἶναι βελτίους, εἰ τὴν πρὸς αὑτοὺς φιλονεικίαν ἐπὶ τοὺς τῆς πόλεως ἐχθροὺς τρέψαντες ἐδημηγόρουν· ὑμῖν δὲ παραινῶ 2
μὴ συστασιάζειν μηδετέροις τούτων, μηδ' ὅπως ἅτεροι κρατήσουσι σκοπεῖν, ἀλλ' ὅπως ὑμεῖς ἅπαντες τῶν ἐχθρῶν περιέσεσθε. εὔχομαι δὲ τοῖς θεοῖς τοὺς ἢ φιλονεικίας ἢ ἐπηρείας ἤ τινος ἄλλης ἕνεκα αἰτίας ἄλλο τι, πλὴν ἅ ποθ' ἡγοῦνται συμφέρειν, λέγοντας παύσασθαι· τὸ γὰρ καταρᾶσθαι συμβουλεύοντ' ἴσως ἔστ' ‖ ἄτοπον. αἰτιασαίμην μὲν οὖν ἔγωγ' ἂν 3
οὐδένα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦ κακῶς τὰ πράγματ' ἔχειν, ἀλλ' ἢ πάντας τούτους· οἴομαι δὲ δεῖν παρὰ μὲν τούτων ἐφ' ἡσυχίας λόγον ὑμᾶς λαβεῖν, νῦν δ' ὑπὲρ τῶν παρόντων, ὅπως ἔσται βελτίω, σκοπεῖν.

32. Ἠβουλόμην ἂν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὴν ἴσην σπουδὴν ἐνίους τῶν λεγόντων ποιεῖσθαι ὅπως τὰ βέλτιστ' ἐροῦσιν, ὅσηνπερ ὅπως εὖ δόξουσι λέγειν, ἵν' οὗτοι μὲν ἀντὶ τοῦ δεινοὶ λέγειν ἐπιεικεῖς ἐνομίζοντο εἶναι, τὰ δ' ὑμέτερα, ὥσπερ ἐστὶ προσῆκον, βέλτιον εἶχε. νῦν δ' ἔνιοί μοι δοκοῦσι παντάπασι τὴν ἀπὸ τοῦ λόγου δόξαν ἠγαπηκότες τῶν μετὰ ταῦτα συμβησομένων ὑμῖν οὐδὲν φροντίζειν. καὶ δῆτα θαυμάζω, 2
πότερά ποθ' οἱ τοιοῦτοι λόγοι τὸν λέγονθ' ὁμοίως πεφύκασιν ἐξαπατᾶν ὥσπερ πρὸς οὓς ἂν λέγωνται, ἢ συνιέντες οὗτοι τἀναντία τοῖς δοκοῦσιν ἑαυτοῖς εἶναι βελτίστοις δημηγοροῦσιν. εἰ μὲν γὰρ ἀγνοοῦσιν ὅτι τὸν μέλλοντα πράξειν τὰ δέοντα οὐκ ἐπὶ τῶν λόγων θρασὺν ἀλλ' ἐπὶ τῆς παρασκευῆς ἰσχυρὸν εἶναι δεῖ, οὐδ' ἐπὶ τῷ τοὺς ἐχθροὺς μὴ δυνήσεσθαι θαρρεῖν, ἀλλ' ἐπὶ τῷ κἂν δύνωνται κρατῆσαι, τὰ τῶν λόγων ἀστεῖα, ὡς ἔοικε, τοῦ τὰ μέγιστα αἰσθάνεσθαι κεκώλυκεν αὐτούς. εἰ δὲ ταῦτα μὲν μηδ' ἂν φήσαιεν ἀγνοεῖν, πρόφασις δ' ἄλλη τις ὕπεστι 3
δι' ἣν ταῦτα προαιροῦνται, πῶς οὐ χρὴ φαύλην ταύτην ὑπολαμβάνειν, ἥτις ποτ' ἐστίν; ἐγὼ δ' οὐκ ἀποτρέψομαι λέγειν ἃ δοκεῖ μοι, καίπερ ὁρῶν ἡγμένους ὑμᾶς· καὶ γὰρ εὔηθες, λόγῳ ψυχαγωγηθέντων ‖ ὑμῶν οὐκ ὀρθῶς, λόγον αὖ τὸν μέλλοντα βελτίω λέγειν καὶ μᾶλλον συμφέρονθ' ὑμῖν καταδεῖσαι. ἀξιῶ δὲ καὶ ὑμᾶς ὑπομεῖναι, ἐνθυμηθέντας ὅτι οὐδὲ τὰ νῦν δοκοῦντα ἔδοξεν ἂν ὑμῖν, εἰ μὴ τοὺς λόγους ἠκούσατ' ἐξ ὧν ἐπείσθητε. ὥσπερ ἂν τοίνυν, εἰ νόμισμα ἐκρίνετο ὁποῖόν τί ποτ' 4
ἐστί, δοκιμάσαι δεῖν ἂν ᾠήθητε, οὕτω καὶ τὸν λόγον ἀξιῶ τὸν εἰρημένον ἐξ ὧν ἀντειπεῖν ἡμεῖς ἔχομεν σκεψαμένους, ἐὰν μὲν συμφέροντα

εὕρητε, ἀγαθῇ τύχῃ πείθεσθαι, ἂν δ' ἄρα ἕκαστα λογιζομένοις ἀλλοιό-
τερος φανῇ, πρὶν ἁμαρτεῖν μεταβουλευσαμένους, τοῖς ὀρθῶς ἔχουσι
χρήσασθαι.

33. Μάλιστα μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι βουλοίμην ἂν ὑμᾶς ἃ μέλλω
λέγειν πεισθῆναι· εἰ δ' ἄρα τοῦτ' ἄλλῃ πῃ συμβαίνοι, ἐμαυτῷ γ' ἂν εἰ-
ρῆσθαι πρὸ παντὸς αὐτὸ δεξαίμην. ἔστι δὲ οὐ μόνον, ὡς δοκεῖ, τὸ πρὸς
ὑμᾶς εἰπεῖν χαλεπὸν τὰ δέοντα, ἀλλὰ καὶ καθ' αὑτὸν σκοπούμενον εὑ-
2 ρεῖν. γνοίη δ' ἄν τις, εἰ μὴ τὸν λόγον ὑμᾶς ἀλλὰ τὰ πράγματα ἐφ' ὧν
ἐστὲ σκέψασθαι νομίσαι, καὶ πλείω σπουδὴν τοῦ δοκεῖν ἐπιεικὴς εἶναι
ἢ τοῦ δεινὸς εἰπεῖν φανῆναι ποιοῖτο. ἐγὼ γοῦν (οὕτω τί μοι ἀγαθὸν
γένοιτο), ἐπειδὴ περὶ τῶν παρόντων ἐπῄει μοι σκοπεῖν, λόγοις μὲν καὶ
3 μάλ' ἀφθόνοις, οὓς οὐκ ἂν ἀηδῶς ἠκούετε ὑμεῖς, ἐνετύγχανον. καὶ γὰρ
ὡς δικαιότατοι τῶν Ἑλλήνων ἐστέ, πολλὰ εἰπεῖν καὶ ἑώρων καὶ ὁρῶ,
καὶ ὡς ἀρίστων προγόνων, καὶ πολλὰ τοιαῦτα. ἀλλὰ ταῦτα μὲν τὸν
χρόνον ἡσθῆναι ποιήσαντα ὅσον ἂν ῥηθῇ, μετὰ δὲ ταῦτ' οἴχεται. δεῖ
‖ δὲ πράξεώς τινος τὸν λέγοντα φανῆναι σύμβουλον, δι' ἣν καὶ μετὰ
4 ταῦτα ἀγαθοῦ τινὸς ὑμῖν ἔσται παρουσία. τοῦτο δ' ἤδη καὶ σπάνιον
καὶ χαλεπὸν πεπειραμένος οἶδα ὂν εὑρεῖν· οὐδὲ γὰρ αὔταρκες τὸ ἰδεῖν
ἐστὶ τὰ τοιαῦτα, ἂν μὴ καὶ πεῖσαί τις τοὺς συναιρομένους ὑμᾶς δυνηθῇ.
οὐ μὴν ἀλλ' ἐμὸν μὲν ἔργον εἰπεῖν ἴσως ἃ πέπεικ' ἐμαυτὸν συμφέρειν,
ὑμέτερον δὲ ἀκούσαντας κρῖναι, κἂν ἀρέσκῃ, χρῆσθαι.

34. Οὐκ ἄδηλον ἦν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρῴην, ὅτε τῶν ἀντιλέγειν
βουλομένων οἷς ὁ δεῖνα ἔλεγεν οὐκ ᾤεσθε ἀκούειν χρῆναι, ὅτι συμβήσε-
ται τοῦτο ὃ νυνὶ γίγνεται, ὅτι οἱ τότε κωλυθέντες ἐροῖεν εἰς ἑτέραν ἐκ-
κλησίαν. ἂν τοίνυν ταὔθ' ἅπερ πρότερον ποιήσητε, καὶ τῶν τοῖς τότε
δόξασι συνειπεῖν βουλομένων μὴ θελήσητε ἀκοῦσαι, πάλιν ταῦτα εἰς
2 τὴν ἑτέραν ἐκκλησίαν οὗτοι λαβόντες τούτων κατηγορήσουσιν. οὐδα-
μῶς ἄν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, οὔτε τὰ πράγματα χεῖρω γένοιτο, οὔθ'
ὑμεῖς ἀτοπώτεροι φανείητε, εἰ μήτε τῶν δοξάντων ὑμῖν πέρας μηδὲν
ἔχειν δοκοίη, μήτ', ἀφέντες ἃ συμφέρει, τῶν πρὸ ὁδοῦ τι περαίνοιτε,
3 εἴητε δ' ὥσπερ τῶν τὰ θέατρα προκαταλαμβανόντων. μηδαμῶς, ὦ ἄν-
δρες Ἀθηναῖοι, ἀλλὰ πονήσαντες τὸν πόνον τοῦτον καὶ παρασχόντες
ἴσους ἀκροατὰς ἀμφοτέροις ὑμᾶς αὐτοὺς πρῶτον μὲν ἕλεσθε ὅ τι καὶ
ποιήσετε, ἔπειθ' ὑπολαμβάνετε, ἐάν τις ἐναντιῶται τοῖς ἅπαξ οὕτω
4 δοκιμασθεῖσι, πονηρὸν καὶ κακόνουν ὑμῖν. τὸ μὲν γὰρ λόγου μὴ τυ-
χόντα πεπεῖσθαι βέλτιον τῶν ὑμῖν δοκούντων αὐτὸν ἐντεθυμῆσθαι
συγγνώμη· τὸ δὲ ἀκουσάντων ὑμῶν ‖ καὶ διακρινάντων ἔτι ἀναισχυν-
τεῖν, καὶ μὴ συγχωρεῖν ἐνδόντα τῇ τῶν πλειόνων γνώμῃ, ἄλλην τιν' ἂν
ὑποψίαν οὐχὶ δικαίαν ἔχειν φανείη. ἐγὼ μὲν δὴ σιωπᾶν ᾤμην δεῖν ἐν
5 τῷ παρόντι, εἰ μένοντας ὑμᾶς ἑώρων ἐφ' ὧν ἔδοξεν· εἰμὶ γὰρ τῶν
ἐκεῖνα πεπεισμένων συμφέρειν ὑμῖν· ἐπειδὴ δ' ὑπὸ τῶν παρὰ τούτων
λόγων μεταβεβλῆσθαί μοί τινες δοκοῦσιν, ὡς οὔτ' ἀληθῆ λέγουσιν οὔθ'
ὑμῖν συμφέροντα, ἴσως μὲν εἰδότας, οὐ μὴν ἀλλ' εἰ καὶ τυγχάνετε ἀγνο-
οῦντες, διδάξω.

35. Ἔδει μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ δίκαιον ἦν τότε πείθειν ὑμᾶς
ὅ τι ἄριστον ἕκαστος ἡγεῖτο, ὅτε ἐβουλεύεσθε τὸ πρῶτον περὶ τούτων,
ἵνα μὴ συνέβαινεν ἃ δὴ δύο πάντων ἐστὶν ἀλυσιτελέστατα τῇ πόλει,
μήτε πέρας μηδὲν ἔχειν τῶν ὑμῖν δοξάντων, παρανοίας θ' ὑμεῖς κατε-
γιγνώσκετε ὑμῶν αὐτῶν μεταβουλευόμενοι· ἐπειδὴ δὲ σιωπήσαντες 2
τότε νῦν ἐπιτιμῶσί τινες, βούλομαι μικρὰ πρὸς αὐτοὺς εἰπεῖν. ἐγὼ γὰρ
θαυμάζω τὸν τρόπον τῆς πολιτείας τῆς τούτων, μᾶλλον δ' ἡγοῦμαι
φαῦλον. εἰ γὰρ ἐξὸν παραινεῖν ὅταν σκοπῆτε, βεβουλευμένων κατη-
γορεῖν αἱροῦνται, συκοφαντῶν ἔργον, οὐχ ὥς φασιν, εὐνόων ποιοῦ-
σιν ἀνθρώπων. ἡδέως δ' ἂν ἐροίμην αὐτούς (καὶ μηδεμιᾶς λοιδορίας ὅ 3
μέλλω λέγειν ἀρχὴ γενέσθω) τί δὴ τἆλλα ἐπαινοῦντες Λακεδαιμονίους,
ὃ μάλιστα ἄξιόν ἐστι τῶν παρ' ἐκείνοις ἄγασθαι, τοῦτο οὐ μιμοῦνται,
μᾶλλον δ' αὐτὸ τοὐναντίον ποιοῦσιν; φασὶ γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι
παρ' ἐκείνοις μέχρι μὲν τοῦ δόξαι γνώμην, ἣν ἂν ἕκαστος ἔχῃ, λέγειν,
ἐπειδὰν δ' ἐπικυρωθῇ, || ταῦτα ἅπαντας ἐπαινεῖν καὶ συμπράττειν, καὶ
τοὺς ἀντειπόντας. τοιγάρτοι πολλῶν μὲν ὄντες οὐ πολλοὶ περιγίγνον- 4
ται, λαμβάνουσι δ', ὅσ' ἂν μὴ τῷ πολέμῳ δύνωνται, τοῖς καιροῖς, οὐδεὶς
δ' αὐτοὺς ἐκφεύγει χρόνος οὐδὲ τρόπος τοῦ τὰ συμφέρονθ' ἑαυτοῖς
περαίνειν, οὐ μὰ Δί' οὐχ ὥσπερ ἡμεῖς καὶ διὰ τούτους καὶ τοὺς ὁμοίους
τούτοις, ἀλλήλων περιγιγνόμενοι καὶ οὐχὶ τῶν ἐχθρῶν, πάντα ἀνηλώ-
καμεν τὸν χρόνον, κἂν μὲν εἰρήνην τις ἐκ πολέμου ποιήσῃ, τοῦτον μι- 5
σοῦντες, ἂν δ' ἐξ εἰρήνης πόλεμόν τις λέγῃ, τούτῳ μαχόμενοι, ἂν δ' ἔχειν
ἡσυχίαν τις παραινῇ καὶ τὰ ἡμέτερα αὐτῶν πράττειν, οὐδὲ τοῦτον
ὀρθῶς λέγειν φάσκοντες, ὅλως δ' αἰτιῶν καὶ κενῶν ἐλπίδων ὄντες πλή-
ρεις. τί οὖν, ἄν τις εἴποι, σὺ παραινεῖς, ἐπειδὴ ταῦτ' ἐπιτιμᾷς; ἐγὼ νὴ
Δί' ἐρῶ.

36. Πρῶτον μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι οὐ πάνυ μοι δοκεῖ τις ἂν εἰ-
κότως περὶ ὑμῶν δεῖσαι, μὴ παρὰ τὸ τῶν συμβουλευόντων οὐκ ἐθέλειν
ἀκούειν χεῖρον βουλεύσησθε. πρῶτον μὲν γὰρ ἡ τύχη, καλῶς ποιοῦσα,
πολλὰ τῶν πραγμάτων ὑμῖν αὐτόματα, ὡς ἂν εὔξαισθε, παρίστησιν,
ἐπεὶ τῇ γε τῶν προεστηκότων προνοίᾳ βραχέα αὐτῶν εἶχεν ἂν καλῶς·
ἔπειθ' ὑμεῖς οὐ μόνον τοὺς λόγους οὓς ἂν ἕκαστος εἴποι πρόιστε, ἀλλὰ 2
καὶ ὧν ἕνεκ' αὐτῶν ἕκαστος δημηγορεῖ, εἰ δὲ μὴ φιλαπέχθημον ἦν,
εἶπον ἂν καὶ πόσου. τὸν δὴ τοῦ φενακίζεσθαι χρόνον ὡς εἰς μικρότα-
τον συνάγοντες σωφρονεῖν ἔμοιγε δοκεῖτε. εἰ μὲν δή τι τῶν αὐτῶν 3
ἔμελλον τοῖς ἄλλοις ἐρεῖν, οὐκ ἂν ᾤμην δεῖν λέγων ἐνοχλεῖν· νῦν δὲ
συμφέροντα μὲν ὑμῖν ἀκοῦσαι, παντάπασι || δὲ ἀφεστηκότα τῶν ὑπὸ
τῶν πολλῶν προσδοκωμένων οἴομαι λόγον ἔχειν. βραχὺς δ' ἔσται.
σκέψασθε δὲ ἀκούσαντες, κἂν ὑμῖν ἀρέσκῃ, χρήσασθε.

37. Καὶ βραχεῖαν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ δικαίαν ποιήσομαι τὴν
ἀρχὴν τοῦ λόγου· καὶ οὐδὲ τὰ πάντα ἐρῶ. ἡγοῦμαι γὰρ ἐξαπατᾶν μὲν
εἶναι βουλομένου σκοπεῖν ὅντιν' ὑμᾶς τρόπον τοὺς ἀκούοντας [καὶ] τὰ
τοῦ πράγματος δυσχερῆ τῷ λόγῳ συγκρύψεται, ἁπλῶς δὲ πεπεικότος
αὐτὸν ὑμῖν προσφέρεσθαι τοῦτο πρῶτον εἶναι, εἰπεῖν πότερα ἐγνω-

2 κὼς παρελήλυθεν, ἵν᾽ ἐὰν μὲν ἀκούσαντες τοῦτο τοὺς μετὰ ταῦτα λόγους βούλησθε ἀκούειν, καὶ διδάσκῃ καὶ φράζῃ τὰ βέλτιστα αὐτῷ δοκοῦντα, ἂν δ᾽ ἀποδοκιμάσητε, ἀπηλλαγμένος ᾖ καὶ μήτε ὑμῖν ἐνοχλῇ μήτε αὐτὸν κόπτῃ. ἐγὼ δὲ τοῦτο πρῶτον ἐρῶ. ἐμοὶ δοκεῖ Μυτιληναίων ὁ δῆμος ἠδικῆσθαι, καὶ δίκην ὑμῖν ὑπὲρ αὐτοῦ προσήκειν λαβεῖν. καὶ ὅπως λήψεσθε, ἔχω λέγειν, ἐπειδὰν ὡς ἠδίκηνται καὶ ὑμῖν προσήκει βοηθεῖν ἐπιδείξω.

38. Πρῶτον μὲν οὐ πάνυ θαυμαστόν ἐστιν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὸ μὴ ῥᾳδίους τοῖς συμβουλεύειν βουλομένοις εἶναι τοὺς λόγους· ὅταν γὰρ τὰ πράγματα ἔχῃ φαύλως περὶ ὧν δεῖ σκοπεῖν, δυσχερεῖς ἀνάγκη
2 περὶ αὐτῶν εἶναι καὶ τὰς συμβουλίας. εἰ μὲν οὖν ἐκ τοῦ μὴ ἐθέλειν ἀκούειν ἐλπὶς ταῦτα γενέσθαι βελτίω, τοῦτο χρὴ πράττειν· εἰ δὲ χείρω μὲν ἅπαντα βέλτιον δ᾽ οὐδὲν ἐκ τούτου γενήσεται, τί δεῖ, πρὸς τὸ φαυλότατον ἐλθεῖν ἐάσαντας, ἐκ πλείονος ἢ νῦν καὶ χαλεπωτέρου σώζειν πειρᾶσθαι, ἐξὸν ἐκ ‖ τῶν παρόντων ἔτι καὶ νῦν ἐπανορθώσα-
3 σθαι καὶ προαγαγεῖν ἐπὶ τὸ βέλτιον; τὸ μὲν οὖν ὀργίλως ὑμᾶς ἔχειν εἰκός ἐστι ταῦτα πάσχοντας· τὸ δὲ μὴ τοῖς αἰτίοις ἀλλὰ πᾶσιν ἐφεξῆς ὀργίζεσθαι, τοῦτο οὐκέτι εἰκὸς οὐδ᾽ ὀρθῶς ἔχον ἐστίν. οἱ γὰρ μηδενὸς μὲν αἴτιοι τῶν παρεληλυθότων, τὰ δὲ λοιπὰ πῶς ἔσται βελτίω λέγειν ἔχοντες χάριν, οὐκ ἀπέχθειαν κομίσαιντ᾽ ἂν δικαίως παρ᾽ ὑμῶν· οὕς,
4 ἐὰν ἀκαίρως δυσκολαίνητε, ὀκνεῖν ἀνίστασθαι ποιήσετε. καίτοι ἔγωγε οὐκ ἀγνοῶ ὅτι πολλάκις οὐ τοῖς αἰτίοις ἀλλὰ τοῖς ἐμποδὼν οὖσι τοῖς ὀργιζομένοις ἀηδές τι παθεῖν συνέβη. ὅμως δ᾽ ἀνέστην συμβουλεύσων· πιστεύω γὰρ ἔγωγε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, φλαύρου μὲν μηδενὸς αἴτιος ὢν εὑρεθήσεσθαι, βελτίω δ᾽ ἑτέρων ὑμῖν ἔχειν συμβουλεῦσαι.

39. Τὰ μὲν γεγενημένα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοιαῦτα οἷα πάντες ἀκηκόατε· δεῖ δ᾽ ὑμᾶς μηδὲν ἐκπεπληγμένως διακεῖσθαι, λογιζομένους ὅτι πρὸς μὲν τὰ παρόντα ἀθύμως ἔχειν οὔτε τοῖς πράγμασι συμφέρει οὔθ᾽ ὑμῶν ἄξιόν ἐστι, τὸ δὲ ταῦτ᾽ ἐπανορθοῦν αὐτοὺς ἡγεῖσθαι προσῆκον καὶ τῆς ὑμετέρας δόξης ἄξιον ἂν φανείη. χρὴ δὲ τοὺς ὄντας οἵους φήσαιτ᾽ ἂν ὑμεῖς εἶναι ἐν τοῖς δεινοῖς ἑτέρων διαφέροντας φαίνεσθαι.
2 ἐγὼ δὲ οὐδαμῶς μὲν ἂν ἠβουλόμην ταῦτα συμβῆναι τῇ πόλει, οὐδ᾽ ἀτυχεῖν ὑμᾶς οὐδέν· εἰ δ᾽ ἄρα ἔδει γενέσθαι καί τι δαιμόνιον τοῦτ᾽ ἀπέκειτο, ὥσπερ πέπρακται, τὰ γεγενημένα λυσιτελεῖν οἴομαι. τὰ μὲν γὰρ τῆς τύχης ὀξείας ἔχει τὰς μεταβολὰς καὶ κοινὰς ἀμφοτέροις ‖ τὰς παρουσίας· ἃ δ᾽ ἂν δι᾽ ἀνδρῶν κακίαν πραχθῇ, βεβαίους ποιεῖ
3 τὰς ἥττας. οἴομαι μὲν οὖν οὐδὲ τοὺς κεκρατηκότας ἀγνοεῖν ὅτι βουληθέντων ὑμῶν, καὶ παροξυνθέντων τῷ γεγενημένῳ, οὐ πάνυ πω δῆλον πότερον εὐτύχημα ἢ καὶ τοὐναντίον αὐτοῖς ἐστὶ τὸ πεπραγμένον· εἰ δ᾽ ἄρα ἐπῆρκε τὸ πρᾶγμα αὐτοὺς θρασύνεσθαι, κἂν τοῦτο πρὸς ὑμᾶν ἤδη γίγνοιτο. ὅσῳ γὰρ ἂν μᾶλλον καταφρονήσωσι, τοσούτῳ θᾶττον ἁμαρτήσονται.

40. Οὔ μοι δοκεῖτε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, περὶ ἧς οἴεσθε πόλεως νυνὶ μόνον βουλεύεσθαι, ἀλλ᾽ ὑπὲρ πασῶν τῶν συμμαχίδων· ὅπως

γὰρ ἂν περὶ ταύτης γνῶτε, πρὸς ταῦτ' εἰκὸς ἀποβλέποντας τοὺς ἄλλους
καὶ αὐτοὺς τῶν αὐτῶν τεύξεσθαι νομίζειν. ὥστε δεῖ καὶ τοῦ βελτίστου
καὶ τῆς ὑμετέρας αὐτῶν ἕνεκα δόξης σπουδάσαι ὅπως ἅμα καὶ συμ-
φέροντα καὶ δίκαια φανήσεσθε βουλευόμενοι. ἡ μὲν οὖν ἀρχὴ τῶν 2
τοιούτων πραγμάτων ἁπάντων ἐστὶ τῶν στρατηγῶν· ὧν οἱ πλεῖστοι
τῶν παρ' ὑμῶν ἐκπλεόντων οὐ τοὺς ὑμετέρους φίλους, οὓς διὰ παντὸς
τοῦ χρόνου τῶν αὐτῶν κινδύνων μετεσχηκότας παρειλήφασι, θερα-
πεύειν τούτους οἴονται δεῖν, ἀλλὰ καὶ ἰδίους φίλους ἕκαστος ἑαυτῷ
κατασκευάσας ὑμᾶς ἀξιοῖ τοὺς αὐτῶν κόλακας καὶ ὑμετέρους ἡγεῖσθαι
φίλους. οὐ πᾶν ἐστὶ τοὐναντίον· οὔτε γὰρ ἐχθροτέρους οὔτ' ἀναγ- 3
καίους μᾶλλον ἐχθροὺς ἂν τούτων εὕροιτε. ὅσῳ γὰρ πλείω παρα-
κρουόμενοι πλεονεκτοῦσι, τοσούτῳ πλεόνων ὀφείλειν ἡγοῦνται δίκην
δοῦναι. οὐδεὶς δ' ἂν γένοιτο εὔνους ‖ τούτοις ὑφ' ὧν ἄν τι κακὸν πείσε-
σθαι προσδοκᾷ. τοῦ μὲν οὖν κατηγορεῖν ἴσως οὐχ ὁ παρὼν καιρός· ἃ
δ' ἡγοῦμαι συμφέρειν ὑμῖν, ταῦτα συμβουλεύσω.

41. Οὐδένα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῶν πάντων ὑμῶν οὕτως οἴομαι
κακόνουν εἶναι τῇ πόλει ὥστε μὴ χαλεπῶς φέρειν μηδὲ λυπεῖσθαι τοῖς
γεγενημένοις. εἰ μὲν τοίνυν ἀγανακτοῦντας ἦν ἄπρακτόν τι ποιῆσαι
τούτων, τοῦτ' ἂν ἔγωγε παρῄνουν ὑμῖν ἅπασιν· ἐπειδὴ δὲ ταῦτα μὲν 2
οὐκ ἂν ἄλλως ἔχοι, δεῖ δ' ὑπὲρ τῶν λοιπῶν προνοηθῆναι ὅπως μὴ
ταὐτὰ πείσεσθε, ὥσπερ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι νῦν γεγενημένων ἀγανα-
κτεῖτε, οὕτω χρὴ σπουδάσαι ὑπὲρ τοῦ μὴ πάλιν ταῦτα συμβῆναι, καὶ
νομίζειν μηδένα ἔχειν λόγον εἰπεῖν τῶν συμβουλευόντων τοιοῦτον ὃς
δυνήσεται σῶσαι τὰ παρόντα μηδενὸς ὑμῶν μηδὲν συναραμένου· οὐ γὰρ
ἂν λόγος ἀλλὰ θεὸς ὁ τοιοῦτος εἴη. ἡ μὲν οὖν ἀρχὴ τοῦ ταῦθ' οὕτως ἔχειν 3
ἐκεῖθεν ἤρτηται, ἐκ τοῦ τῆς παραχρῆμα πρὸς ὑμᾶς ἕνεκα χάριτος ἐνίους
τῶν λεγόντων ἐνταυθοῖ δημηγορεῖν, ὡς οὔτε εἰσφέρειν οὔτε στρα-
τεύεσθαι δεῖ, πάντα δὲ αὐτόματ' ἔσται. ἔδει μὲν οὖν ταῦθ' ὑπ' ἄλλου
τινὸς ἐξελέγχεσθαι μετὰ τοῦ λυσιτελοῦντος ἐλέγχου τῇ πόλει· δοκεῖ δέ
μοι τρόπον τινὰ καὶ νῦν ἀμείνων ἡ τύχη περὶ ὑμᾶς τῶν ἐφεστηκότων
εἶναι. τὸ μὲν γὰρ ἕκαστα ἀπόλλυσθαι τῆς τῶν ἐπιμελουμένων κακίας 4
σημεῖον προσήκει ποιεῖσθαι, τὸ δὲ μὴ πάλαι πάντ' ἀπολωλέναι τῆς
ὑμετέρας τύχης εὐεργέτημ' ἔγωγε κρίνω. ἐν ᾧ τοίνυν ἡ τύχη διαλείπει
καὶ τοὺς ἐχθροὺς ἀνέχει, τῶν λοιπῶν ἐπιμελήθητε. εἰ ‖ δὲ μή, σκοπεῖτε 5
ὅπως μὴ ἅμα τούς τ' ἐφεστῶτας ἑκάστοις ὑμεῖς κρίνητε, καὶ τὰ πράγ-
μαθ' ὑμῶν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι κλινεῖ. οὐ γὰρ ἔσθ' ὅπως ταῦτ' ἄνευ
μεγάλου τινὸς στήσεται, μηδενὸς ἀντιλαμβανομένου.

42. Οὐδέν ἐστιν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦτο ἄλογον, τοὺς ἀεὶ καὶ
συνεχῶς ὑπὲρ τῶν ὀλιγαρχιῶν πολιτευομένους καὶ νῦν ταῦτα ποιοῦν-
τας ἐξελέγχεσθαι. ἀλλ' ἐκεῖνο μᾶλλον ἄν τις εἰκότως θαυμάσαι, τὸ
τοὺς εἰδότας ὑμᾶς ταῦτα πολλάκις ἥδιον τούτων ἀκούειν ἢ τῶν ὑπὲρ
ὑμῶν λεγόντων. ἴσως μὲν οὖν ὥσπερ οὐδ' ἰδίᾳ ῥᾴδιόν ἐστιν ἅπαντ'
ὀρθῶς πράττειν, οὕτως οὐδὲ κοινῇ· ἀλλ' οὐ δὴ τὰ μέγιστά γε χρὴ 2
παρορᾶν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα πάντ' ἐστὶν ἐλάττω· ὅταν δ' ὑπὲρ πολιτείας

καὶ σφαγῶν καὶ δήμου καταλύσεως εὐχερῶς ἀκούητε, πῶς οὐκ ἔξω χρὴ
τοῦ φρονεῖν ὑμᾶς αὐτοὺς ἡγεῖσθαι; οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι πάντες ἄνθρω-
ποι τοῖς ἑτέρων παραδείγμασι χρώμενοι μᾶλλον εὐλαβεῖς αὐτοὶ γίγνον-
3 ται· ὑμεῖς δὲ οὐδὲ τὰ τοῖς ἄλλοις συμβαίνοντα ἀκούοντες φοβηθῆναι
δύνασθε, ἀλλ' ἃ τοὺς ἰδίᾳ περιμένοντας ἀβελτέρους νομίζετε, ταῦτ'
αὐτοὶ δημοσίᾳ μοι δοκεῖτε ἀναμένειν παθόντες αἰσθέσθαι.

43. Οὐδεὶς πώποτε ἴσως ὑμῶν ἐζήτησεν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τί δή
ποτε οἱ κακῶς πράττοντες ἄμεινον περὶ τῶν πραγμάτων τῶν εὖ πραττόντων βουλεύονται. ἔστι δ' οὐχ ἑτέρωθέν ποθεν τοῦτο γιγνόμενον,
ἀλλ' ὅτι συμβαίνει τοῖς μὲν μήτε φοβεῖσθαι μηδὲν μήθ' ἅ τις ἂν λέγοι
δεινὰ προσήκονθ' αὐτοῖς ἡγεῖσθαι· τοὺς δὲ πλησίον ὄντας τῶν ἁμαρ-
τημάτων, ὅταν εἰς τὸ κακῶς πράττειν || ἀφίκωνται, σώφρονας πρὸς
2 τὰ λοιπὰ καὶ μετρίους παρέχει. σπουδαίων τοίνυν ἐστὶν ἀνθρώπων,
ὅταν βελτίστῃ τῇ παρούσῃ τύχῃ χρῶνται, τότε πλείω τὴν σπουδὴν
πρὸς τὸ σωφρονεῖν ἔχειν· οὐδὲν γὰρ οὔτε φυλαττομένοις οὕτω δεινὸν
ὥστ' ἄφυκτον εἶναι, οὔτε ὀλιγωροῦσιν ἀπροσδόκητον παθεῖν. λέγω
δὲ ταῦτα οὐχ ἵνα τὴν ἄλλως ὑμᾶς δεδίττωμαι, ἀλλ' ἵνα μὴ διὰ τὴν παρ-
οῦσαν εὐπραξίαν, ἃ γένοιτ' ἂν εἰ μὴ προνοήσεσθε τῶν πραγμάτων
δεινά, ἀκούοντες καταφρονῆτε, ἀλλ' ἄνευ τοῦ παθεῖν, ὥσπερ ἐστὶ προσ-
ῆκον φάσκοντάς γε μηδένων ἀπολείπεσθαι τῷ σωφρονεῖν, φυλάξησθε.

44. Οὐχὶ τὸν αὐτὸν εἶναι καιρὸν ὑπείληφα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῦ
χαρίζεσθαι καὶ τοῦ τὰ δοκοῦντά μοι βέλτιστα παραινεῖν· πολλάκις γὰρ
ὁρῶ τὸ χαρίζεσθαί τι παρὰ γνώμην πλείονα ἀπέχθειαν ἐνεγκὸν τοῦ τὸ
2 πρῶτον ἐναντιωθῆναι. εἰ μὲν οὖν ἅπαντες ἐγιγνώσκετε ταὐτά, οὔτ' ἂν
εἴ μοι τὰ δέοντα ἐδοκεῖτε προαιρεῖσθαι, παρῆλθον, περίεργον ἡγούμε-
νος τοῖς ἀφ' αὑτῶν ἃ χρὴ ποιοῦσι λέγειν, οὔτ' ἂν εἰ τοὐναντίον· μᾶλλον
γὰρ ἂν ἡγησάμην ἕνα ὄντ' ἐμαυτὸν ἀγνοεῖν τὰ κράτιστα ἢ πάντας ὑμᾶς·
ἐπειδὴ δὲ ὁρῶ τινὰς ὑμῶν ταὐτὰ μὲν γιγνώσκοντας ἐμοὶ τἀναντία δ'
3 ἄλλοις, πειράσομαι μετὰ τούτων τοὺς ἑτέρους πεῖσαι. εἰ μὲν οὖν οἰή-
σεσθε δεῖν μὴ ἐθέλειν ἀκούειν, οὐκ ὀρθῶς ποιήσετε· ἂν δ' ἀκούσητε
σιωπῇ καὶ τοῦθ' ὑπομείνητε, δυοῖν ἀγαθοῖν θάτερον ὑμῖν ὑπάρξει.
ἢ γὰρ πεισθήσεσθε, ἄν τι δοκῶμεν λέγειν συμφέρον, ἢ βεβαιότερον ||
περὶ ὧν ἐγνώκατε ἔσεσθε πεπεισμένοι. ἂν γάρ, οἷς τι διαμαρτάνειν
οἰόμεθ' ἡμεῖς ὑμᾶς, ταῦτα μηδενὸς ἄξια φανῇ, μετ' ἐλέγχου τὰ δεδο-
γμένα νῦν ὑμεῖς ἔσεσθ' ᾑρημένοι.

45. Βουλοίμην ἄν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, περὶ ὧν εὐδοκίμηκε λέγων
παρ' ὑμῖν ὁ δεῖνα, ἐπὶ τῶν ἔργων τῶν πραττομένων ἴσον αὐτῷ τὸν
ἔπαινον γενέσθαι· οὔτε γὰρ τούτῳ κακόνους εἰμὶ μὰ τοὺς θεούς, ὑμῖν
τε ἀγαθὸν βούλομαι ἂν γενέσθαι. ἀλλ' ὁρᾶτε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, μὴ
κεχωρισμένον ᾖ λόγον εἰπεῖν εὖ καὶ προελέσθαι πράγματα συμφέρον-
2 τα, καὶ τὸ μὲν ῥήτορος ἔργον ᾖ, τὸ δὲ νοῦν ἔχοντος ἀνθρώπου. ὑμεῖς
τοίνυν οἱ πολλοί, καὶ μάλισθ' οἱ πρεσβύτατοι, λέγειν μὲν οὐκ ὀφείλετε
ὁμοίως δύνασθαι τοῖς δεινοτάτοις· τῶν γὰρ εἰθισμένων τοῦτο τὸ πρᾶ-
γμα· νοῦν δ' ἔχειν ὀφείλετε ὁμοίως καὶ μᾶλλον τούτων· αἱ γὰρ ἐμπει-

ρίαι καὶ τὸ πολλὰ ἑωρακέναι τοῦτ' ἐμποιοῦσιν. μὴ τοίνυν ὦ ἄνδρες 3
Ἀθηναῖοι φανῆτε ἀγνοοῦντες ἐν τῷ παρόντι νῦν ὅτι αἱ διὰ τῶν λόγων
ἀνδρίαι καὶ θρασύτητες, ἐὰν μὴ μεθ' ὑπαρχούσης ὦσι παρασκευῆς καὶ
ῥώμης, ἀκοῦσαι μέν εἰσιν ἡδεῖαι πράττειν δ' ἐπικίνδυνοι. αὐτίκα γὰρ
τὸ μὴ ἐπιτρέπειν τοῖς ἀδικοῦσιν, ὁρᾶτε ὡς καλὸν τὸ ῥῆμα. ἀποβλέ- 4
ψατε δὴ πρῶτον πρὸς τὸ ἔργον αὐτό. δεῖ κρατῆσαι μαχομένους τῶν
ἐχθρῶν τοὺς τὴν τοῦ ῥήματος τούτου σεμνότητα ἔργῳ ληψομένους.
εἰπεῖν μὲν γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πάντα πέφυκε ῥᾴδιον, πρᾶξαι δ'
οὐχ ἅπαντα· οὐ γὰρ ἴσος πόνος καὶ ἱδρὼς πρό τε τοῦ λέγειν καὶ πρὸ
τοῦ πράττειν || ἐστιν. ἐγὼ δ' οὐ χείρους ὑμᾶς ἡγοῦμαι φύσει Θηβαίων 5
(καὶ γὰρ ἂν μαινοίμην) ἀλλ' ἀπαρασκευοτέρους. φημὶ δὴ δεῖν τοῦ πα-
ρασκευάζεσθαι νῦν ποιεῖσθαι τὴν ἀρχήν, ἐπειδὴ τέως ἠμελεῖτε τοῦ
διαγωνίζεσθαι. οὐ γὰρ ἀντιλέγω τὸ ὅλον, ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ τρόπου τῆς
ἐγχειρήσεως ἐναντιοῦμαι.

46. Ὅσην μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πεποίηνται σπουδὴν οἱ πρέσβεις
κατηγορῆσαι τῆς πόλεως ἡμῶν, ἅπαντες ἑωράκατε· πλὴν γὰρ οὐκ ἔχω
τίνος εἴπω, τἄλλα πάντα ὑμῖν ἀναθεῖναι πεπείρανται. εἰ μὲν οὖν
ἦσαν αὐτῶν ἀληθεῖς αἱ κατηγορίαι, χάριν γε εἴχετε εἰκότως ἂν εἰ πρὸς
ὑμᾶς οὕτως ὑμῶν κατηγόρουν καὶ μὴ πρὸς ἄλλους· ἐπειδὴ δὲ διαστρέ- 2
ψαντες τἀληθῆ, καὶ τὰ μὲν παραβαίνοντες ἀφ' ὧν ἂν μεγάλους ἐπαί-
νους κομίσαισθε δικαίως, τὰ δ' αἰτιασάμενοι ψευδῆ καὶ οὐ προσήκονθ'
ὑμῖν, κέχρηνται τῷ λόγῳ, πονηροὺς δίκαιον αὐτούς, ἐπειδὰν ἐξελεγ-
χθῶσι ταῦτα πεποιηκότες, νομίζειν. εἰ γὰρ ῥήτορες δεινοὶ μᾶλλον εἶναι
δοκεῖν ἢ μετ' ἀληθείας ἐπιεικεῖς ἄνθρωποι νομίζεσθαι προείλοντο,
οὐδ' αὐτοὶ καλοκαγαθίας ἄν, ὡς ἔοικεν, ἀμφισβητοῖεν. ἔστι μὲν οὖν 3
χαλεπὸν τὸ παρ' ὑμῖν ὑπὲρ ὑμῶν ἐροῦντα ἀνεστηκέναι, ὥσπερ ῥᾴδιον
τὸ καθ' ὑμῶν. ἐγὼ γὰρ μὰ τὴν Ἀθηνᾶν οὐδένας τῶν ἄλλων ἀνθρώπων
οὕτως οἶμαι τὰ προσόντα αὐτοῖς ἀκοῦσαι νουθετουμένους ὡς ὑμεῖς
τὰ μὴ προσόντα, κακῶς ἀκούοντες. οὐ μὴν οὐδὲ τούτους θρασέως ἂν
οὕτως ἡγοῦμαι ψεύδεσθαι, εἰ μὴ συνῄδεσαν ταῦτα, καὶ πρόδηλον ἦν
ὅτι δεινότατοι πάντων ὑμεῖς ἐστὲ ἀκούειν ὅ τι ἄν τις καθ' ὑμῶν λέγῃ. εἰ 4
μὲν οὖν ταύτης τῆς || εὐηθείας δίκην ὑμᾶς δεῖ διδόναι, λόγους οὐ προσ-
ήκοντας κατὰ τῆς πόλεως ἀκούειν, τοῦτ' ἂν εἴη· εἰ δ' ὑπὲρ τῶν ἀληθῶν
εἴ τι δίκαιον ῥητέον, ἐπὶ τοῦτ' ἐγὼ παρελήλυθα, πιστεύων οὐκ αὐτὸς
ἀξίως τῶν ὑμῖν πεπραγμένων εἰπεῖν δυνήσεσθαι, ἀλλὰ τὰ πράγματα,
ὅπως ἄν τις εἴπῃ, δίκαια φανεῖσθαι. βουλοίμην δ' ἂν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες 5
Ἀθηναῖοι ἴσους ἀκροατὰς ὑπὲρ ὑμῶν αὐτῶν γενέσθαι, καὶ μὴ τῷ
προῆχθαι τοὺς λόγους ἐπαινέσαι τοὺς τούτων φιλονεικεῖν. οὐ γὰρ ἂν
ὑμετέραν κακίαν οὐδεὶς ἔτι κρίναι, εἰ λέγοντός τινος εὖ παρεκρού-
σθητε, ἀλλὰ τῶν ἐπὶ τούτῳ σπουδὴν ποιησαμένων, ὅπως ὑμᾶς
ἐξαπατήσωσιν.

47. Οἶμαι πάντας ἂν ὑμᾶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι φῆσαι, ἃ βέλτιστα
ἕκαστος ἡγεῖται τῇ πόλει, βούλεσθαι ταῦτα πραχθῆναι. συμβαίνει δέ
γε μὴ κατὰ ταὐτὸ κεκρίσθαι παρὰ πᾶσι τὸ βέλτιστον· οὐ γὰρ ἂν ὑμῶν

οἳ μὲν λέγειν οἳ δὲ μὴ λέγειν ἐκέλευον. πρὸς μὲν τοίνυν τοὺς ὑπειληφότας ταὐτὰ συμφέρειν οὐδενὸς δεῖ λόγου τῷ μέλλοντι λέγειν· πεπεισμένοι γὰρ ὑπάρχουσι· πρὸς δὲ τοὺς τἀναντία συμφέρειν ἡγουμένους
2 βραχέα εἰπεῖν βούλομαι. μὴ θέλουσι μὲν οὖν ἀκούειν οὐκ ἔνι δή που μαθεῖν, οὐδὲν μᾶλλον ἢ σιωπῶσι μηδενὸς λέγοντος· ἀκούσασι δὲ δυοῖν ἀγαθοῖν οὐκ ἔνι θατέρου διαμαρτεῖν. ἢ γὰρ πεισθέντες πάντες καὶ ταὐτὰ ἐγνωκότες κοινότερον βουλεύσεσθε, οὗ μεῖζον εἰς τὰ παρόντα οὐδὲν ἂν γένοιτο ἀγαθόν· ἢ μὴ δυνηθέντος τοῦ λέγοντος δι-
3 δάξαι βεβαιότερον τοῖς ἐγνωσμένοις πιστεύσετε. χωρὶς δὲ τούτων οὐδὲ καλὴν ὑποψίαν ἔχει ἥκειν μὲν εἰς τὴν ἐκκλησίαν ὡς ἐκ τῶν ῥηθησομένων ‖ τὸ κράτιστον ἑλέσθαι δέον, φανῆναι δέ, πρὶν ἐκ τῶν λόγων δοκιμάσαι, παρ' ὑμῖν αὐτοῖς τι πεπεισμένους, καὶ τοῦθ' οὕτως ἰσχυρὸν ὥστε μηδ' ἐθέλειν παρὰ ταῦτ' ἀκούειν.

48. Ἴσως ὀχληρὸς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοί τισιν ὑμῶν εἶναι δοκῶ πολλάκις λέγων περὶ τῶν αὐτῶν ἀεί. ἀλλ' ἐὰν ὀρθῶς σκοπῆτε, οὐκ ἐγὼ φανήσομαι τούτου δίκαιος ὢν ἔχειν τὴν αἰτίαν, ἀλλ' οἱ μὴ πειθόμενοι τοῖς ὑμετέροις ψηφίσμασιν. εἰ γὰρ ἐκεῖνοι τὸ πρῶτον ἐποίησαν ἃ ὑμεῖς προσετάξατε, οὐδὲν ἂν τὸ δεύτερον ἡμᾶς ἔδει λέγειν, οὐδ' εἰ τὸ δεύτε-
2 ρον, αὖθις. νῦν δ' ὅσῳ πλεονάκις τὰ προσήκονθ' ὑμῖν ὑμεῖς ἐψηφίσασθε, τοσούτῳ μοι δοκοῦσιν ἧττον ἐκεῖνοι παρεσκευάσθαι ποιεῖν. πρότερον μὲν οὖν ἔγωγε μὰ τοὺς θεοὺς οὐκ ᾔδειν πρὸς τί ποτ' εἴη τοῦτ' εἰρημένον "ἀρχὴ ἄνδρα δείκνυσι·" νῦν δὲ κἂν ἄλλον μοι δοκῶ διδάξαι. οἱ γὰρ ἄρχοντες ἤ τινες αὐτῶν, ἵνα μὴ πάντας λέγω, τῶν μὲν ὑμετέρων ψηφισμάτων ἀλλ' οὐδὲ τὸ μικρότατον φροντίζουσιν, ὅπως δὲ λήψον-
3 ται. εἰ μὲν οὖν ἐνῆν δοῦναι, δικαίως ἂν αὐτὸ τοῦτό μοί τις ἐπέπληξεν, εἰ διὰ μικρὸν ἀνάλωμα ἐνοχλεῖν ὑμῖν ᾑρούμην· νῦν δὲ οὐκ ἔνι, καθάπερ οὐδὲ τούτους λέληθεν. εἰ δ' ὑπὲρ ὧν ὑμῖν λειτουργεῖν δεῖ, προσθήσειν αὐτοῖς οἴονταί με, ληροῦσι. καὶ ταῦτα ἴσως βούλονται ἃ καὶ προσδοκῶσιν· ἐγὼ δ' οὐ ποιήσω ταῦτα, ἀλλ' ἐὰν μὲν δῶσι, καθέλξω τὴν ναῦν καὶ τὰ προσήκοντα ποιήσω, εἰ δὲ μή, τοὺς αἰτίους ὑμῖν ἀποφανῶ.

49. Οὐδένα ἂν εὖ φρονοῦντα ἀντειπεῖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι νομίζω, ὡς οὐχ ἁπάντων ἄριστόν ἐστι τῇ πόλει ‖ μάλιστα μὲν ἐξ ἀρχῆς μηδὲν ἀσύμφορον πράττειν, εἰ δὲ μή, παρεῖναι εὐθὺς τοὺς ἐναντιωσομένους. δεῖ μέντοι τούτῳ προσεῖναι ἐθέλοντας ἀκούειν ὑμᾶς καὶ διδάσκεσθαι· οὐδὲν γὰρ πλέον εἶναι τὸν ἐροῦντα τὰ βέλτιστα, ἂν μὴ τοὺς ἀκουσομέ-
2 νους ἔχῃ. οὐ μὴν οὐδὲ ἐκεῖνο ἀλυσιτελὲς μετὰ ταῦτ' ἂν φανείη, ὅσ' ἄν τις ὑμᾶς ἢ διὰ καιρὸν ἢ δι' ὥραν ἡμέρας ἢ δι' ἄλλην τινὰ αἰτίαν παρακρούσηται, ταῦθ' ὅταν ποτὲ βούλησθε ὑμῶν αὐτῶν ὄντες ἀκούειν, εἶναι τὸν ἐξετάσοντα πάλιν, ἵνα ἐὰν μὲν οἷά φασιν οἱ τότε πείσαντες φανῇ, προθυμότερον πράττητε ὡς ἔλεγχον δεδωκότα, ἐὰν δ' ἄρα μὴ
3 τοιαῦτα εὑρεθῇ, πρὶν πορρωτέρω προελθεῖν ἐπίσχητε. καὶ γὰρ ἂν δεινὸν εἴη εἰ τοῖς τοῦ κρατίστου διαμαρτοῦσι τὸ χείριστον ἀνάγκη πράττειν εἴη, καὶ μὴ τὸ δεύτερον ἐκ τῶν λοιπῶν ἐξείη μεταβουλεύσα-

σθαι. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ἅπαντας ἔγωγε ὁρῶ τὴν ἀειλογίαν προτει-
νομένους, ὅταν τι πιστεύωσι δικαίως αὐτοῖς πεπρᾶχθαι· οὗτοι δ' αὖ
τοὐναντίον ἐγκαλοῦσιν, εἰ περὶ ὧν ἡμάρτετε νῦν ἀναθέσθαι βούλεσθε,
τὴν ἀπάτην κυριωτέραν οἰόμενοι δεῖν εἶναι τῆς μετὰ τοῦ χρόνου βασά-
νου. τὴν μὲν οὖν τούτων σπουδὴν οὐδ' ὑμῶν ἴσως ἀγνοοῦσιν οἱ πολλοί· 4
δεῖ δ' ὑπὲρ τῶν πραγμάτων, ἐπειδήπερ γέγονε λόγου τυχεῖν, ἅ τις
ἡγεῖται κράτιστα, λέγειν.

50. Ὅ τι μὲν μέλλει συνοίσειν πάσῃ τῇ πόλει, τοῦτο καὶ λέγειν
εὔχομαι πάντας ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ ὑμᾶς ἑλέσθαι· ἐγὼ δ' οὖν, ἃ
πεπεικὼς ἐμαυτὸν τυγχάνω μάλιστα συμφέρειν ὑμῖν, ταῦτ' ἐρῶ, δεη-
θεὶς ‖ ὑμῶν τοσοῦτον, μήτε τοὺς ἐξιέναι κελεύοντας ὑμᾶς διὰ τοῦτο
νομίζειν ἀνδρείους, μήτε τοὺς ἀντιλέγειν ἐπιχειροῦντας διὰ τοῦτο
κακούς. οὐ γὰρ ὁ αὐτὸς ἔλεγχος ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τῶν τε λόγων καὶ 2
τῶν πραγμάτων ἐστίν, ἀλλὰ δεῖ νῦν εὖ βεβουλευμένους ἡμᾶς φανῆναι,
τότε δέ, ἂν ἄρα ταῦτα δοκῇ, τὰ τῆς ἀνδρείας ἀποδείξασθαι. ἡ μὲν οὖν
ὑμετέρα προθυμία παντὸς ἀξία, καὶ τοιαύτη πάρεστιν οἵαν ἄν τις
εὔξαιτο εὔνους ὢν τῇ πόλει· νῦν δ' ὅσῳ τυγχάνει σπουδαιοτέρα, το-
σούτῳ δεῖ μᾶλλον προϊδεῖν ὅπως εἰς δέον καταχρήσεσθε αὐτῇ. οὐδενὸς 3
γὰρ εὐδοκιμεῖ πράγματος ἡ προαίρεσις, ἂν μὴ καὶ τὸ τέλος συμφέρον
καὶ καλὸν λάβῃ. ἐγὼ δὲ οἶδά ποτε ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι παρ' ὑμῖν ἀκού-
σας ἀνδρὸς οὔτε ἀνοήτου δοκοῦντος εἶναι οὔτ' ἀπείρου πολέμου, Ἰφι-
κράτους λέγω, ὃς ἔφη δεῖν οὕτω προαιρεῖσθαι κινδυνεύειν τὸν στρατη-
γὸν ὅπως μὴ τὰ ἢ τὰ γενήσεται, ἀλλ' ὅπως τά· οὕτω γὰρ εἶπε τῷ
ῥήματι. ἦν δὲ τοῦτο γνώριμον, ὅτι ὅπως καλῶς ἀγωνιεῖται ἔλεγεν. 4
ἐπειδὰν μὲν τοίνυν ἐξέλθητε, ὃς ἂν ἡγῆται, κύριος ὑμῶν ἐστί· νῦν
δ' ἕκαστος ὑμῶν αὐτῷ στρατηγεῖ. δεῖ δὴ τοιαῦτα φανῆναι βεβουλευ-
μένους δι' ὧν πανταχῶς συνοίσει τῇ πόλει καὶ μὴ μελλουσῶν ἕνεκ'
ἐλπίδων τῆς παρούσης εὐδαιμονίας χεῖρόν τι ποιήσετε.

51. Οὐδέν' ἂν ᾠόμην ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πιστεύοντα τοῖς πεπρα-
γμένοις ἐγκαλέσαι τοῖς καθιστᾶσιν εἰς λόγον ταῦτα· ὅσῳ γὰρ ἂν πλεο-
νάκις ἐξετάζῃ τις αὐτά, ἀνάγκη τοὺς τούτων αἰτίους εὐδοκιμεῖν. οὐ
μὴν ‖ ἀλλά μοι δοκοῦσιν αὐτοὶ φανερὸν καθιστάναι οὐκ ἐπὶ τῷ τῇ
πόλει συμφέροντι πράξαντες. ὡς γοῦν ἐξελέγχεσθαι μέλλοντες, ἂν
πάλιν εἰς λόγον ἔλθωσι, φεύγουσι καὶ δεινὰ ποιεῖν ἡμᾶς φασίν. καίτοι
ὅταν τοὺς ἐξελέγχειν βουλομένους δεινὰ ποιεῖν αἰτιᾶσθε, τί ἡμεῖς τοὺς
ἡμᾶς αὐτοὺς ἐξηπατηκότας τηνικαῦτα λέγωμεν;

52. Ἦν μὲν οὖν δίκαιον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τὴν ἴσην ὑπάρχειν παρ'
ὑμῶν ὀργὴν τοῖς ἐπιχειροῦσιν ὅσηνπερ τοῖς δυνηθεῖσιν ἐξαπατῆσαι· ὃ
μὲν γὰρ ἦν ἐπὶ τούτοις, πεποίηται, καὶ προήγαγον ὑμᾶς· τοῦ δὲ μὴ
τέλος ταῦτα ἔχειν ἡ τύχη, καὶ τὸ βέλτιον νῦν ὑμᾶς φρονεῖν ἢ ὅτ' ἐξή-
χθητε ὑπὸ τούτων, γέγονεν αἰτία. οὐ μὴν ἀλλ' ἔγωγ' οὕτω πόρρω 2
νομίζω τὴν πόλιν εἶναι τοῦ δίκην παρὰ τῶν ἀδικούντων λαμβάνειν
ὥστ' ἀγαπητὸν εἶναί μοι δοκεῖ, ἂν ὅπως μὴ πείσεσθε κακῶς δύνησθε
φυλάττεσθαι· τοσαῦται τέχναι καὶ γοητεῖαι καὶ ὅλως ὑπηρεσίαι τινές

εἰσιν ἐφ' ὑμᾶς κατεσκευασμέναι. τῆς μὲν οὖν τούτων κακίας οὐκ ἂν ἐν
τῷ παρόντι τις ἐν δέοντι μάλιστα κατηγορήσειε· βούλομαι δ' ὑπὲρ ὧν
ἀνέστην, ἃ νομίζω συμφέροντ', εἰπεῖν.

53. Ἡ μὲν οὖν εἰωθυῖα πάντα τὸν χρόνον βλάπτειν ὦ ἄνδρες Ἀθη-
ναῖοι τὴν πόλιν λοιδορία καὶ ταραχὴ καὶ νυνὶ γέγονε παρὰ τῶν αὐτῶν
ὧνπερ ἀεί· ἄξιον δ' οὐχ οὕτω τούτοις ἐπιτιμῆσαι (ἴσως γὰρ ὀργῇ καὶ φι-
λονεικίᾳ ταῦτα πράττουσι, καὶ τὸ μέγιστον ἁπάντων, ὅτι συμφέρει
2 ταῦτα ποιεῖν αὐτοῖς) ἀλλ' ὑμῖν, εἰ περὶ κοινῶν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι
πραγμάτων || καὶ μεγάλων συνειλεγμένοι τὰς ἰδίας λοιδορίας ἀκροώ-
μενοι κάθησθε, καὶ οὐ δύνασθε πρὸς ὑμᾶς αὐτοὺς λογίσασθαι τοῦθ',
ὅτι αἱ τῶν ῥητόρων ἁπάντων ἄνευ κρίσεως πρὸς ἀλλήλους λοιδορίαι,
3 ὧν ἂν ἀλλήλους ἐξελέγξωσιν, ὑμᾶς τὰς εὐθύνας διδόναι ποιοῦσι. πλὴν
γὰρ ὀλίγων ἴσως, ἵνα μὴ πάντας εἴπω, οὐδεὶς αὐτῶν ἅτερος θατέρῳ
λοιδορεῖται, ἵνα βέλτιόν τι τῶν ὑμετέρων γίγνηται· πολλοῦ γε καὶ δεῖ·
ἀλλ' ἵνα, ἃ τὸν δεῖνά φησι ποιοῦντα ἂν δέῃ δεινότατ' ἀνθρώπων
4 ποιεῖν, ταῦτ' αὐτὸς μετὰ πλείονος ἡσυχίας διαπράττηται. ὅτι δ' οὕτω
ταῦτ' ἔχει, μὴ ἐμοὶ πιστεύσητε, ἀλλ' ἐν βραχεῖ λογίσασθε. ἔστιν ὅπου
τις ἀναστὰς εἶπε παρ' ὑμῖν πώποτε "βουλόμενός τι λαβεῖν τῶν ὑμετέ-
ρων παρελήλυθα, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, οὐχ ὑπὲρ ὑμῶν;" οὐδεὶς δή
που, ἀλλ' ὑπὲρ ὑμῶν καὶ δι' ὑμᾶς, καὶ τοιαύτας προφάσεις λέγουσι.
5 φέρε δὴ σκέψασθε, τί δή ποτε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὑπὲρ ὧν ἅπαντες
λέγουσιν, οὐδὲν βέλτιον τοῖς ὅλοις νῦν ἢ πρότερον πράττετε· οὗτοι δ'
οἱ πάνθ' ὑπὲρ ὑμῶν, ὑπὲρ αὑτῶν δ' οὐδεὶς οὐδὲν πώποτ' εἰρηκώς, ἐκ
πτωχῶν πλούσιοι γεγόνασιν; ὅτι φασὶ μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι φιλεῖν
ὑμᾶς, φιλοῦσι δ' οὐχ ὑμᾶς ἀλλ' αὑτούς. καὶ γελάσαι καὶ θορυβῆσαι καὶ
ποτ' ἐλπίσαι μετέδωκαν ὑμῖν, λαβεῖν δὲ ἢ κτήσασθαι τῇ πόλει κυρίως
6 ἀγαθὸν οὐδὲν ἂν βούλοιντο. ᾗ γὰρ ἂν ἡμέρᾳ τῆς λίαν ἀρρωστίας ἀπαλ-
λαγῆτε, ταύτῃ τούτους οὐδ' ὁρῶντες ἀνέξεσθε. νῦν δὲ δραχμῇ καὶ χοῖ
καὶ τέτταρσιν ὀβολοῖς ὥσπερ || ἀσθενοῦντα τὸν δῆμον διάγουσιν,
ὁμοιότατα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοῖς παρὰ τῶν ἰατρῶν σιτίοις διδόντες
ὑμῖν. καὶ γὰρ ἐκεῖνα οὔτ' ἰσχὺν ἐντίθησιν οὔτε ἀποθνήσκειν ἐᾷ· καὶ
ταῦτα οὔτ' ἀπογνόντας ἄλλο τι μεῖζον πράττειν ἐᾷ, οὔτε αὐτὰ ἐξαρ-
κεῖν δύναται.

54. Καὶ δίκαιον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι καὶ καλὸν καὶ σπουδαῖον, ὅπερ
ὑμεῖς εἰώθατε, καὶ ἡμᾶς προνοεῖν, ὅπως τὰ πρὸς τοὺς θεοὺς εὐσεβῶς
ἕξει. ἡ μὲν οὖν ἡμετέρα γέγονεν ἐπιμέλεια ὑμῖν εἰς δέον· καὶ γὰρ ἐθύ-
σαμεν τῷ Διὶ τῷ σωτῆρι καὶ τῇ Ἀθηνᾷ καὶ τῇ Νίκῃ, καὶ γέγονε καλὰ
2 καὶ σωτήρια ταῦθ' ὑμῖν τὰ ἱερά. ἐθύσαμεν δὲ καὶ τῇ Πειθοῖ καὶ τῇ
μητρὶ τῶν θεῶν καὶ τῷ Ἀπόλλωνι, καὶ ἐκαλλιεροῦμεν καὶ ταῦτα. ἦν δ'
ὑμῖν καὶ τὰ τοῖς ἄλλοις θεοῖς τυθέντα ἱερὰ ἀσφαλῆ καὶ βέβαια καὶ καλὰ
καὶ σωτήρια. δέχεσθε οὖν παρὰ τῶν θεῶν διδόντων τἀγαθά.

55. Ἦν τις, ὡς ἔοικε, χρόνος παρ' ὑμῖν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὅτε
ἐπηνάγκαζεν ὁ δῆμος, ὃν ἂν ἄνθρωπον ἴδοι σώφρονα καὶ χρηστόν,
πράττειν τὰ κοινὰ καὶ ἄρχειν, οὐ σπάνει τῶν τοῦτο βουλομένων ποιεῖν

(πάντα γὰρ τἄλλα εὐτυχῆ τὴν πόλιν κρίνων, ἓν οὐδέποτ' εὐτυχῆσαι τοῦτο νομίζω, ἐπιλείπειν αὐτὴν τοὺς τὰ κοινὰ καρποῦσθαι βουλομένους), ἀλλ' ὅραμα τοῦτο ἐποιεῖτο ὁ δῆμος αὑτοῦ καλόν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ λυσιτελὲς τῇ πόλει. οἵ τε γὰρ συνεχεῖς οἵδε παραζευγνυμένων σφίσιν ἐξ ἰδίων ‖ σπουδαίων καὶ δικαίων ἀνδρῶν εὐλαβεστέρους αὑτοὺς παρεῖχον· οἵ τε χρηστοὶ μὲν ὑμῶν καὶ δικαίως ἂν ἄρχοντες, μὴ πάνυ δ' οἷοί τ' ἐνοχλεῖν καὶ παραγγέλλειν, οὐκ ἀπηλαύνοντο τῶν τιμῶν. νῦν δὲ παντάπασι τὸν αὐτὸν τρόπον ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι 3 ὅνπερ τοὺς ἱερεῖς, οὕτω καθίστατε καὶ τοὺς ἄρχοντας. εἶτα θαυμάζετε ἐπειδὰν ὁ δεῖνα εὐδαίμων καὶ ὁ δεῖνα ὑμῖν ᾖ, συνεχῶς πολλὰ λαμβάνων, οἱ δ' ἄλλοι περιίητε τὰ τούτων ἀγαθὰ ζηλοῦντες. δεινότατοι γάρ ἐστ' ἀφελέσθαι μὲν ὅσα ὑμῖν ὑπάρχει, καὶ νόμους περὶ τούτων θεῖναι, ἄν τις ἀστυνομήσῃ δὶς ἢ τὰ τοιαῦτα, στρατηγεῖν δ' ἀεὶ τοὺς αὐτοὺς ἐᾶν. καὶ τὸ μὲν τοὺς ἐπὶ τῶν πράξεων ὄντας ἴσως ἔχει 4 πρόφασιν, τὸ δὲ τοὺς ἄλλους, οἳ ποιοῦσι μὲν οὐδέν, χώραν δὲ ἀτέλεστον ἔχουσιν αὐτοὶ τετελεσμένοι, μωρία. ἀλλὰ καὶ ὑμῶν αὐτῶν, εἰσὶ δ' οὐκ ὀλίγοι, προσάγειν χρή. ἂν γὰρ ὥσπερ εἰ ζυγὸν ἱστῆτε, πρόεισιν ὃς ἂν ἄξιος ᾖ του μετὰ ταῦτα αὐτός.

56. Τὸ μὲν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πεπεικότα ἑαυτὸν ἔχειν τι συμφέρον εἰπεῖν ἀνίστασθαι καὶ καλὸν καὶ προσῆκον εἶναί μοι δοκεῖ, τὸ δὲ μὴ βουλομένους ἀκούειν βιάζεσθαι παντελῶς ἔγωγε αἰσχρὸν ἡγοῦμαι εἶναι. οἶμαι δέ, ἐὰν ἐθελήσητέ μοι πείθεσθαι τήμερον, καὶ τὰ βέλτιστα μᾶλλον ὑμᾶς ἑλέσθαι δυνήσεσθαι καὶ τοὺς τῶν ἀναβαινόντων λόγους βραχεῖς ποιήσειν. τί οὖν συμβουλεύω; πρῶτον μέν, ὦ ἄνδρες Ἀθη- 2 ναῖοι, περὶ αὐτῶν ὧν σκοπεῖτε τὸν παριόντα λέγειν ἀξιοῦν. πολλὰ γὰρ ἄλλα τις ἂν περιέλθοι τῷ λόγῳ καὶ πόλλ' ἂν ἀστεῖα ‖ εἴποι, ἄλλως τε καὶ ὥσπερ τούτων ἔνιοι δεινῶν ὄντων. ἀλλ' εἰ μὲν ῥημάτων ἥκετε ἀκουσόμενοι, ταῦτα λέγειν καὶ ἀκούειν χρή· εἰ δ' ὑπὲρ πραγμάτων αἱρέσεως βουλευσόμενοι, αὐτὰ καθ' ἑαυτὰ παραινῶ τὰ πράγματα ὡς μάλιστα κρίνειν, ἀφελόντας ὅσοι λόγοι πεφύκασιν ἐξαπατᾶν. ἓν μὲν 3 οὖν τοῦτο λέγω, δεύτερον δέ, ὃ τισιν ἴσως παράδοξον ἔσται πρὸς τὸ τοὺς λόγους ἐλάττους εἶναι, σιωπῶντας ἀκούειν. περὶ μὲν γὰρ τοῦ ταῦτα ἢ κεῖνα συμφέρειν, καὶ πότερα δικαιότερα ἂν προέλοιθ' ἡ πόλις, οὔτ' εἰσὶ λόγοι πολλοὶ μὴ βουλομένοις μάτην ἀδολεσχεῖν οὔτε πάλιν τις ἂν αὐτοὺς εἰπεῖν ἔχοι· ὡς δὲ καὶ δίκαιον ἀκούειν καὶ πρὸς τὸν θόρυβον 4 ἀποκρίνεσθαι καὶ λόγον ἐκ λόγου λέγειν, οὐδεὶς ὅστις οὐχὶ δύναιτ' ἄν. ἐκ δὲ τοῦ θορυβεῖν οὐκ ἀπαλλάττεσθε λόγων, ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν οὐδὲν εἰς χρείαν ἐπαναγκάζεσθε ἀκούειν. ἡ μὲν οὖν ἐμὴ γνώμη περὶ ὧν βουλεύεσθε ἥδ' ἐστίν.

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

1. ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΟΜΟΝΟΙΑΣ.

Παντὸς ἀρχομένῳ σπουδαίου καὶ λόγου καὶ ἔργου ἀπὸ τῶν θεῶν ὑπολαμβάνω προσήκειν πρῶτον ἄρχεσθαι. εὔχομαι δὴ τοῖς θεοῖς πᾶσι καὶ πάσαις, ὅ τι τῷ δήμῳ τῷ Ἀθηναίων ἄριστόν ἐστι καὶ τοῖς ‖ εὐνοοῦσι τῷ δήμῳ καὶ νῦν καὶ ἐς τὸν ἔπειτα χρόνον, τοῦτ' ἐμοὶ μὲν ἐπὶ νοῦν ἐλθεῖν γράψαι, τοῖς δ' ἐκκλησιάσασιν Ἀθηναίων ἑλέσθαι. εὐξάμενος δὲ ταῦτα, τῆς ἀγαθῆς ἐπινοίας ἐλπίδα ἔχων παρὰ τῶν θεῶν, τάδ' ἐπιστέλλω.

2 *Δημοσθένης τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ χαίρειν. περὶ μὲν τῆς ἐμῆς οἴ-*
καδε ἀφίξεως ἀεὶ νομίζω πᾶσιν ὑμῖν ἔσεσθαι βουλεύσασθαι, διόπερ
νῦν οὐδὲν περὶ αὐτῆς γέγραφα· τὸν δὲ παρόντα καιρὸν ὁρῶν ἑλομένων
μὲν ὑμῶν τὰ δέοντα ἅμα δόξαν καὶ σωτηρίαν καὶ ἐλευθερίαν δυνάμενον
κτήσασθαι οὐ μόνον ὑμῖν ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν Ἕλλησιν, ἀγνοη-
σάντων δὲ ἢ παρακρουσθέντων οὐ ῥᾴδιον αὖθις τὸν αὐτὸν ἀναλαβεῖν,
ᾠήθην χρῆναι τὴν ἐμαυτοῦ γνώμην ὡς ἔχω περὶ τούτων εἰς μέσον
3 *θεῖναι. ἔστι μὲν οὖν ἔργον ἐξ ἐπιστολῆς ἐμμεῖναι συμβουλῇ· πολλοῖς*
γὰρ εἰώθατε ἀπαντᾶν ὑμεῖς πρὸ τοῦ περιμεῖναι μαθεῖν. λέγοντι μὲν
οὖν ἐστὶν αἰσθέσθαι τί βούλεσθε καὶ διορθώσασθαι τἀγνοούμενα ῥᾴ-
διον· τὸ δὲ βιβλίον οὐδεμίαν ἔχει βοήθειαν τοιαύτην πρὸς τοὺς θορυ-
βοῦντας. οὐ μὴν ἀλλ' ἐὰν ἐθελήσητε ἀκοῦσαι σιγῇ καὶ περιμείνητε
πάντα μαθεῖν, οἴομαι [καὶ] σὺν θεοῖς εἰρῆσθαι, καίπερ βραχέων τῶν
γεγραμμένων ὄντων, αὐτός τε φανήσεσθαι μετὰ πάσης εὐνοίας τὰ
δέοντα περὶ ὑμῶν πράττων καὶ τὰ συμφέρονθ' ὑμῖν ἐμφανῆ δείξειν.
4 *οὐχ ὡς ἀπορούντων δὲ ὑμῶν ῥητόρων, οὐδὲ τῶν ἄνευ λογισμοῦ ῥᾳδίως*
ὅ τι ἂν τύχωσιν ἐρούντων, ἔδοξέ μοι τὴν ἐπιστολὴν πέμπειν· ἀλλ' ὅσα
τυγχάνω δι' ἐμπειρίαν καὶ τὸ παρηκολουθηκέναι τοῖς πράγμασιν εἰδώς,
ταῦτ' ἐβουλήθην τοῖς ‖ μὲν προαιρουμένοις λέγειν ἐμφανῆ ποιήσας
ἀφθόνους ἀφορμὰς ὧν ὑπολαμβάνω συμφέρειν ὑμῖν δοῦναι, τοῖς δὲ
πολλοῖς ῥᾳδίαν τὴν τῶν βελτίστων αἵρεσιν καταστῆσαι. ὧν μὲν οὖν
ἕνεκα ἐπῆλθέ μοι τὴν ἐπιστολὴν γράφειν, ταῦτ' ἐστί.

5 *Δεῖ δὲ ὑμᾶς ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι πρῶτον μὲν ἁπάντων πρὸς ὑμᾶς*
αὐτοὺς ὁμόνοιαν εἰς τὸ κοινῇ συμφέρον τῇ πόλει παρασχέσθαι καὶ τὰς
ἐκ τῶν πρότερον ἐκκλησιῶν ἀμφισβητήσεις ἐᾶσαι, δεύτερον δὲ πάντας
ἐκ μιᾶς γνώμης τοῖς δόξασι προθύμως συναγωνίζεσθαι· ὡς τὸ μηδὲ ἓν
μηδ' ἁπλῶς πράττειν οὐ μόνον ἐστὶν ἀνάξιον ὑμῶν καὶ ἀγεννές, ἀλλὰ
6 *καὶ τοὺς μεγίστους κινδύνους ἔχει. δεῖ δὲ μηδὲ ταῦτα λαθεῖν ὑμᾶς ἃ*
καθ' αὑτὰ μὲν οὐκ ἔστιν αὐτάρκη κατασχεῖν πράγματα, προστεθέντα
δὲ ταῖς δυνάμεσι πολλῷ πάντ' εὐκατεργαστότερα ὑμῖν ποιήσει. τίνα
οὖν ἐστὶ ταῦτα; μήτε πόλει μηδεμιᾷ μήτε τῶν ἐν ἑκάστῃ τῶν πό-
λεων συνηγωνισμένων τοῖς καθεστηκόσι ⟨μηδενὶ⟩ μήτε πικραίνεσθαι

μήτε μνησικακεῖν. ὁ γὰρ τοιοῦτος φόβος τοὺς συνειδότας αὐτοῖς
ὡς ἀναγκαίοις τοῖς συνεστηκόσι καὶ κίνδυνον ἔχουσι πρόδηλον προ-
θύμους συναγωνιστὰς ποιεῖ· ἀφεθέντες δὲ τοῦ δέους τούτου πάντες
ἠπιώτεροι γενήσονται. τοῦτο δὲ οὐ μικρὰν ὠφέλειαν ἔχει. κατὰ μὲν 7
δὴ πόλεις τὰ τοιαῦτα εὔηθες προλέγειν, μᾶλλον δ' οὐδ' ἐν δυνατῷ· ὡς
δ' ἂν ὑμῖν αὐτοῖς ὀφθῆτε χρώμενοι, τοιαύτην καὶ κατὰ τῶν ἄλλων
προσδοκίαν παραστήσετε ἑκάστοις. φημὶ δὲ χρῆναι [μήτε πόλει] μήτε
στρατηγῷ μήτε ῥήτορι μήτ' ἰδιώτῃ μηδενὶ τῶν τὰ πρὸ τοῦ γε δοκούν-
των συνηγωνίσθαι τοῖς ‖ καθεστηκόσι μήτε μέμφεσθαι μήτ' ἐπιτιμᾶν
μηδένα μηδὲν ὅλως, ἀλλὰ συγχωρῆσαι πᾶσι τοῖς ἐν τῇ πόλει πεπολιτεῦ- 8
σθαι τὰ δέοντα, ἐπειδήπερ οἱ θεοί, καλῶς ποιοῦντες, σώσαντες τὴν
πόλιν ἀποδεδώκασιν ὑμῖν ὅ τι ἂν βούλησθε ἐξ ἀρχῆς βουλεύσασθαι,
καὶ νομίζειν, ὥσπερ ἂν ἐν πλοίῳ τῶν μὲν ἱστίῳ τῶν δὲ κώπαις ἀπο-
φαινομένων κομίζεσθαι, λέγεσθαι μὲν ὑπ' ἀμφοτέρων ἅπαντα ἐπὶ σω-
τηρίᾳ, γεγενῆσθαι δὲ τὴν χρείαν πρὸς τὰ συμβάντα ἀπὸ τῶν θεῶν. ἐὰν 9
τοῦτον τὸν τρόπον περὶ τῶν παρεληλυθότων ἐγνωκότες ἦτε, καὶ
πιστοὶ πᾶσι γενήσεσθε, καὶ καλῶν καὶ ἀγαθῶν ἀνδρῶν ἔργα πράξετε,
καὶ τὰ πράγματα ὠφελήσετε οὐ μικρά, καὶ τοὺς ἐναντιωθέντας ἐν ταῖς
πόλεσιν ἢ μεταγνῶναι ποιήσετε πάντας ἢ κομιδῇ τινὰς αὐτοὺς τοὺς
αἰτίους καταλειφθῆναι. μεγαλοψύχως τοίνυν καὶ πολιτικῶς τὰ κοινῇ
συμφέροντα πράττετε, καὶ τῶν ἰδίων μέμνησθε. παρακαλῶ δ' εἰς ταῦτα 10
οὐ τυχὼν αὐτὸς τῆς τοιαύτης φιλανθρωπίας παρ' ἐνίων, ἀλλ' ἀδίκως
καὶ στασιαστικῶς εἰς τὴν ἑτέρων χάριν προποθείς. ἀλλ' οὔτε τὴν ἰδίαν
ὀργὴν ἀναπληρῶν τὸ κοινῇ συμφέρον οἴομαι δεῖν βλάπτειν, οὔτε μί-
γνυμι τῆς ἰδίας ἔχθρας εἰς τὰ κοινῇ συμφέροντα οὐδέν, ἀλλ' ἐφ' ἃ τοὺς
ἄλλους παρακαλῶ, ταῦτα αὐτὸς οἴομαι δεῖν πρῶτος ποιεῖν.

Αἱ μὲν οὖν παρασκευαὶ καὶ ἃ δεῖ φυλάξασθαι, καὶ ἃ πράττων τις 11
ἂν κατ' ἀνθρώπινον λογισμὸν μάλιστα κατορθοίη, σχεδὸν εἴρηταί μοι·
τοῖς δὲ καθ' ἡμέραν ἐπιστατῆσαι, καὶ τοῖς ἐκ τοῦ παραχρῆμα συμβαί-
νουσιν ὀρθῶς χρῆσθαι, καὶ γνῶναι ‖ τὸν ἑκάστου καιρὸν καὶ κρῖναι τί
τῶν πραγμάτων ἐξ ὁμιλίας δυνατὸν προσαγαγέσθαι καὶ τί βίας προσ-
δεῖται, τῶν ἐφεστηκότων στρατηγῶν ἔργον ἐστί. διὸ καὶ χαλεπωτάτην 12
τάξιν ἔχει τὸ συμβουλεύειν· τὰ γὰρ ὀρθῶς βουλευθέντα καὶ δοκιμα-
σθέντα σὺν πολλῇ σπουδῇ καὶ πόνῳ πολλάκις τῷ τοὺς ἐπιστάντας
ἄλλως χρήσασθαι διελυμάνθη. νῦν μέντοι πάνθ' ἕξειν καλῶς ἐλπίζω.
καὶ γὰρ εἴ τις ὑπείληφεν εὐτυχῆ τὸν Ἀλέξανδρον τῷ πάντα κατορθοῦν,
ἐκεῖνο λογισάσθω ὅτι πράττων καὶ πονῶν καὶ τολμῶν, οὐχὶ καθήμε-
νος εὐτύχει. νῦν τοίνυν τεθνεῶτος ἐκείνου ζητεῖ τινὰς ἡ τύχη μεθ' ὧν 13
ἔσται. τούτους δὲ ὑμᾶς δεῖ γενέσθαι. τούς τε ἡγεμόνας, δι' ὧν ἀνάγκη
τὰ πράγματα πράττεσθαι, ὡς εὐνουστάτους ἐπὶ τὰς δυνάμεις ἐφί-
στατε· καὶ ὅ τι ποιεῖν αὐτὸς ἕκαστος ὑμῶν δυνήσεται καὶ βουλήσεται,
τοῦτο πρὸς αὐτὸν εἰπάτω καὶ ὑποσχέσθω. καὶ τοῦθ' ὅπως μὴ ψεύσε-
ται, μηδ' ἐξηπατῆσθαι μηδὲ πεισθῆναι παρακρουσθεὶς φήσας ἀναδύ-
σεται. ὡς τὴν ἔνδειαν ὧν ἂν ἐλλίπηθ' ὑμεῖς οὐχ εὑρήσετε τοὺς ἀναπλη- 14

ῥᾳσοντας· οὐδὲ τὸν αὐτὸν ἔχει κίνδυνον, περὶ ὧν ἐφ' ὑμῖν ἐστιν ὅπως ἂν βούλησθε πρᾶξαι μεταβουλεύεσθαι πολλάκις, καὶ περὶ ὧν ἂν ἐνστῇ πόλεμος· ἀλλ' ἡ περὶ τούτων μετάγνωσις ἧττα τῆς προαιρέσεως γίγνεται. μὴ δὴ ποιήσητε τοιοῦτο μηδέν, ἀλλ' ὅ τι πράξετε γενναίως καὶ ἑτοίμως ταῖς ψυχαῖς, τοῦτο χειροτονεῖτε, κἂν ἅπαξ ψηφίσησθε, τὸν Δία τὸν Δωδωναῖον καὶ τοὺς ἄλλους θεούς, οἳ πολλὰς καὶ καλὰς καὶ ἀγαθὰς καὶ ἀληθεῖς ὑμῖν μαντείας ἀνῃρήκασιν, ἡγεμόνας ποιησάμενοι καὶ ‖ παρακαλέσαντες, καὶ κατὰ τῶν νικητηρίων ἅπασιν αὐτοῖς εὐξάμενοι, μετὰ τῆς ἀγαθῆς τύχης ἐλευθεροῦτε τοὺς Ἕλληνας. εὐτυχεῖτε.

2. ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΙΔΙΑΣ ΚΑΘΟΔΟΥ.

Δημοσθένης τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ χαίρειν. ἐνόμιζον μὲν ἀφ' ὧν ἐπολιτευόμην, οὐχ ὅπως μηδὲν ὑμᾶς ἀδικῶν τοιαῦτα πείσεσθαι, ἀλλὰ καὶ μέτρια ἂν ἐξαμαρτὼν συγγνώμης τεύξεσθαι. ἐπειδὴ δὲ οὕτω γέγονεν, ἕως μὲν ἑώρων ὑμᾶς, οὐδεμιᾶς ἀποδείξεως φανερᾶς οὐδ' ἐλέγχου γιγνομένου παρὰ τῆς βουλῆς, πρὸς τὰ ταύτης ἀπόρρητα καταψηφιζομένους, ἁπάντων οὐδὲν ἔλαττον παραχωρεῖν ὑμᾶς ἡγούμενος ἢ ἐμαυτὸν ἀποστερεῖσθαι, στέργειν ἡγούμην· τὸ γὰρ οἷς ἂν ἡ βουλὴ φήσῃ τοὺς ὀμωμοκότας δικαστὰς προστίθεσθαι μηδεμιᾶς ἀποδείξεως ῥηθεί-
2 σης, τῆς πολιτείας παραχωρεῖν ἦν. ἐπειδὴ δὲ καλῶς ποιοῦντες ᾔσθησθε τὴν δυναστείαν ἥν τινες τῶν ἐν τῇ βουλῇ κατεσκευάζοντο ἑαυτοῖς, καὶ πρὸς τὰς ἀποδείξεις τοὺς ἀγῶνας κρίνετε, τὰ δ' ἀπόρρητα τούτων ἐπιτιμήσεως ἄξια εὑρήκατε, οἴομαι δεῖν, ἐὰν καὶ ὑμῖν βουλομένοις ᾖ, τῆς ὁμοίας τυχεῖν σωτηρίας τοῖς τῶν ὁμοίων αἰτιῶν τετυχηκόσι, καὶ μὴ μόνος δι' αἰτίαν ψευδῆ τῆς πατρίδος καὶ τῶν ὄντων καὶ τῆς τῶν οἰκειοτάτων συνηθείας ἀποστερηθῆναι.

3 Εἰκότως δ' ἂν ὑμῖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μέλοι τῆς ἐμῆς σωτηρίας, οὐ μόνον κατὰ τοῦτο ὅτι οὐδὲν ‖ ὑμᾶς ἀδικῶν δεινὰ πέπονθα, ἀλλὰ καὶ τῆς παρὰ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ἕνεκ' εὐδοξίας. μὴ γάρ, εἰ μηδεὶς ὑμᾶς ἀναμιμνήσκει τοὺς χρόνους μηδὲ τοὺς καιροὺς ἐν οἷς τὰ μέγιστ' ἐγὼ χρήσιμος ἦν τῇ πόλει, τοὺς ἄλλους Ἕλληνας ἀγνοεῖν νομίζετε μηδ' ἐπιλελῆσθαι τῶν ἐμοὶ πεπραγμένων ὑπὲρ ὑμῶν, ἃ ἐγὼ δυοῖν ἕνεκα νῦν ὀκνῶ γράφειν καθ' ἕκαστον, ἑνὸς μέν, τὸν φθόνον δεδιώς, πρὸς ὃν οὐδέν ἐστι προύργου τἀληθῆ λέγειν, ἑτέρου δέ, ὅτι πολλὰ καὶ ἀνάξια ἐκείνων διὰ τὴν τῶν ἄλλων Ἑλλήνων κακίαν νῦν πράττειν ἀναγκαζό-
4 μεθα. ἐν κεφαλαίῳ δὲ τοιαῦτ' ἐστὶν ἐφ' οἷς ἐξηταζόμην ὑπὲρ ὑμῶν ἐγώ, ὥσθ' ὑμᾶς μὲν ἐπ' αὐτοῖς ὑπὸ πάντων ζηλοῦσθαι, ἐμοὶ δ' ἐλπίδα τῶν μεγίστων δωρεῶν προσδοκᾶσθαι παρ' ὑμῶν. τῆς δὲ ἀναγκαίας μὲν ἀγνώμονος δὲ τύχης οὐχ ὡς δίκαιον ἦν, ἀλλ' ὡς ἐβούλετο, κρινάσης τὸν ὑπὲρ τῆς τῶν Ἑλλήνων ἐλευθερίας ἀγῶνα ὃν ὑμεῖς ἠγωνίσασθε, οὐδὲ ἐν τοῖς μετὰ ταῦτα χρόνοις ἀπέστην τῆς εἰς ὑμᾶς εὐνοίας, οὐδ' ἀντηλλαξάμην ἀντὶ ταύτης οὐδέν, οὐ χάριν, οὐκ ἐλπίδας, οὐ πλοῦτον, οὐ δυ-
5 ναστείαν, οὐκ ἀσφάλειαν. καίτοι πάντα ταῦθ' ἑώρων ὑπάρχοντα τοῖς

καθ' ὑμῶν βουλομένοις πολιτεύεσθαι. ὃ δέ, πολλῶν ὄντων καὶ μεγά-
λων ἐφ' οἷς εἰκότως ἐπέρχεταί μοι παρρησιάζεσθαι, μέγιστον ἡγούμην,
οὐκ ὀκνήσω γράψαι πρὸς ὑμᾶς, ὅτι ἐν ἅπαντι τῷ αἰῶνι τῶν μνημο-
νευομένων ἀνθρώπων δεινοτάτου γεγενημένου Φιλίππου καὶ δι' ὁμι-
λίας πεῖσαι προσέχειν αὑτῷ τὸν νοῦν, ὡς βούλοιτο, καὶ διαφθεῖραι
χρήμασι τοὺς ἐν ἑκάστῃ τῶν Ἑλληνίδων πόλεων γνωρίμους, ἐγὼ || μόνος 6
οὐδετέρου τούτων ἡττήθην, ὃ κοινὴν ὑμῖν φιλοτιμίαν φέρει, πολλὰ
μὲν ἐντυχὼν Φιλίππῳ καὶ διαλεχθεὶς ἐφ' οἷς ὑμεῖς ἐπέμπετε πρεσβεύ-
οντά με, πολλῶν δ' ἀποσχόμενος χρημάτων διδόντος ἐκείνου, ἃ τῶν
συνειδότων ἔτι πολλοὶ ζῶσιν. οὓς τίνα γνώμην ἔχειν περὶ ὑμῶν εἰκός,
λογίσασθε· τὸ γὰρ τῷ τοιούτῳ τοῦτον τὸν τρόπον κεχρῆσθαι ἐμοὶ μὲν
ἂν εὖ οἶδ' ὅτι φανείη συμφορά, κακία δὲ οὐδεμία, ὑμετέρα δὲ ἀγνωμο-
σύνη· ἣν τῷ μεταγνῶναι λύσετε. πάντα τοίνυν τὰ προειρημένα ἐλάττω 7
νομίζω τῆς συνεχοῦς καὶ καθ' ἡμέραν πολιτείας, ἐν ᾗ παρεῖχον ἐμαυτὸν
ἐγὼ πολιτευόμενον, οὐδεμιᾶς ὀργῆς οὐδὲ δυσμενείας οὐδὲ ἀδίκου πλεον-
εξίας οὔτε κοινῆς οὔτε ἰδίας προϊστάμενος, οὐδὲ συκοφαντήσας οὐ-
δένα πώποτε οὔτε πολίτην οὔτε ξένον, οὐδὲ καθ' ὑμῶν ἰδίᾳ δεινὸς ὤν,
ἀλλ' ὑπὲρ ὑμῶν, εἴ τι δεήσειεν, ἐξεταζόμενος δημοσίᾳ. εἰδεῖεν δ' ἂν οἱ 8
πρεσβύτεροι, καὶ λέγειν τοῖς νεωτέροις ἐστὲ δίκαιοι τὴν πρὸς Πύθωνα
τὸν Βυζάντιον ἐκκλησίαν, ὅτε τοὺς ἀπὸ τῶν Ἑλλήνων ἦλθε πρέσβεις
ἔχων ὡς ἀδικοῦσαν δείξων τὴν πόλιν, ἀπῆλθε δὲ τἀναντία τούτων πα-
θών, μόνου τῶν τότε ῥητόρων ἐξετάσαντος ἐμοῦ τὰ ὑπὲρ ὑμῶν δίκαια.
καὶ ἐῶ πρεσβείας ὅσας ὑπὲρ ὑμῶν ἐπρέσβευσα, ἐν αἷς οὐδὲν ἠλαττώ-
θητε πώποτε οὐδὲ καθ' ἕν. ἐπολιτευόμην γὰρ ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι οὐχ 9
ὅπως ἀλλήλων ὑμεῖς περιγένησθε σκοπῶν, οὐδ' ἐφ' ἑαυτὴν ἀκονῶν τὴν
πόλιν, ἀλλ' ἀφ' ὧν δόξαν καὶ μεγαλοψυχίαν ὑμῖν ὑπάρξειν ἐνόμιζον.
ἐφ' οἷς ἅπασι μέν, μάλιστα δὲ τοῖς νέοις, ἄγασθαι προσήκει, καὶ σκο-
πεῖν || μὴ μόνον τὸν διακονήσοντα πρὸς χάριν πάντ' ἐν τῇ πολιτείᾳ
(τούτου μὲν γὰρ οὐδέποτ' ἔστ' ἀπορῆσαι) ἀλλὰ καὶ τὸν ἐπ' εὐνοίᾳ περὶ
ὧν ἂν ἀγνοῆτε ἐπιτιμήσοντα. ἔτι τοίνυν παραλείπω πολλά, ἐφ' οἷς 10
ἕτερος καὶ μηδὲν ἄλλο χρήσιμος γεγονὼς δικαίως ἂν ἠξίου τυγχάνειν
σωτηρίας, χορηγίας καὶ τριηραρχίας καὶ χρημάτων ἐπιδόσεις ἐν πᾶσι
τοῖς καιροῖς· ἐν οἷς ἐγὼ φανήσομαι οὐ μόνον αὐτὸς ἐξητασμένος πρῶ-
τος, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἄλλους παρακεκληκώς. ὧν ἕκαστον ὦ ἄνδρες Ἀθη-
ναῖοι λογίσασθε, ὡς ἀνάξιόν ἐστι τῆς περιεστηκυίας νῦν ἐμοὶ συμφορᾶς.
ἀφθόνων δ' ὄντων, ἀπορῶ τί πρῶτον ὀδύρωμαι τῶν παρόντων κα-
κῶν. πότερον τὴν ἡλικίαν ἐν ᾗ φυγῆς ἐπικινδύνου πειρᾶσθαι παρ' 11
ἔθος καὶ παρὰ τὴν ἀξίαν ἀναγκάζομαι; ἢ τὴν αἰσχύνην ἐφ' ᾗ κατ' οὐ-
δένα ἔλεγχον οὐδ' ἀπόδειξιν ἁλοὺς ἀπόλωλα; ἢ τὰς ἐλπίδας ὧν διαμαρ-
τών, ὧν ἑτέροις προσῆκε, κεκληρονόμηκα κακῶν, οὔτε ἐφ' οἷς ἐπολι-
τεύθην πρότερον δίκην ὀφείλων δοῦναι, οὔτε τῶν ἐφ' οἷς ἐκρινόμην
ἐξελεγχθέντων· οὔτε γὰρ ἔγωγε τῶν Ἁρπάλου φίλων φανήσομαι γεγο-
νώς, τῶν τε γραφέντων περὶ Ἁρπάλου μόνα τὰ ἐμοὶ πεπραγμένα
ἀνέγκλητον πεποίηκε τὴν πόλιν. ἐξ ὧν πάντων δῆλόν ἐστιν ὅτι καιρῷ 12

τινὶ ληφθεὶς καὶ οὐκ ἀδικήματι τῇ πρὸς ἅπαντας τοὺς ἐν ταῖς αἰτίαις
ὀργῇ περιπέπτωκα ἀδίκως, τῷ πρῶτος εἰσιέναι, ἐπεὶ τί τῶν δικαίων
οὐκ εἶπον ἐγὼ τῶν σεσωκότων τοὺς ὕστερον κρινομένους; ἢ τίνα ἔλεγ-
χον εἶπεν ἡ βουλὴ κατ᾽ ἐμοῦ; ἢ τίνα νῦν ἂν εἰπεῖν ἔχοι; οὐ ‖ γάρ ἐστιν
13 οὐδείς· τὰ γὰρ μὴ γενόμενα οὐκ ἔστι ποιῆσαι γεγενῆσθαι. ἀλλὰ περὶ
μὲν τούτων παύομαι, πολλὰ γράφειν ἔχων· τὸ γὰρ μηδὲν ἐμαυτῷ συν-
ειδέναι πεῖράν μοι δέδωκεν εἰς μὲν ὠφέλειαν ἀσθενὲς ὄν, εἰς δὲ τὸ μᾶλ-
λον λυπεῖσθαι πάντων ὀδυνηρότατον. ἐπειδὴ δὲ καλῶς ποιοῦντες
πᾶσι τοῖς ἐν ταῖς αἰτίαις διήλλαχθε, κἀμοὶ διαλλάγητε, ὦ ἄνδρες Ἀθη-
ναῖοι· οὔτε γὰρ ἠδίκηχ᾽ ὑμᾶς οὐδέν, ὡς ἴστωσαν οἱ θεοὶ καὶ ἥρωες·
μαρτυρεῖ δέ μοι πᾶς ὁ πρόσθε παρεληλυθὼς χρόνος, ὃς δικαιότερον ἂν
πιστεύοιθ᾽ ὑφ᾽ ὑμῶν τῆς ἀνελέγκτου νῦν ἐπενεχθείσης αἰτίας· οὔτ᾽
ἐγὼ χείριστος οὐδ᾽ ἀπιστότατος φανήσομαι τῶν διαβληθέντων.
14 Καὶ μὴν τὸ ἀπελθεῖν οὐκ ἂν εἰκότως ὀργὴν πρός με ποιήσειεν· οὐ
γὰρ ἀπεγνωκὼς ὑμᾶς οὐδ᾽ ἑτέρωσε βλέπων οὐδαμοῖ μετέστην, ἀλλὰ
πρῶτον μὲν τοὔνειδος τῆς εἱρκτῆς χαλεπῶς τῷ λογισμῷ φέρων, εἶτα
διὰ τὴν ἡλικίαν οὐκ ἂν οἷός τ᾽ ὢν τῷ σώματι τὴν κακοπάθειαν ὑπε-
νεγκεῖν. ἔτι δ᾽ οὐδ᾽ ὑμᾶς ἐνόμιζον ἀβουλεῖν ἔξω με προπηλακισμοῦ
15 γενέσθαι, ὃς οὐδὲν ὑμᾶς ὠφελῶν ἐμὲ ἀπώλλυεν. ἔπειθ᾽ ὅτι γε ὑμῖν
προσεῖχον τὸν νοῦν καὶ οὐδέσιν ἄλλοις, πολλὰ ἂν ἴδοιτε σημεῖα. εἴς τε
γὰρ πόλιν ἦλθον, οὐκ ἐν ᾗ μέγιστα πράξειν αὐτὸς ἔμελλον, ἀλλ᾽ εἰς ἣν
καὶ τοὺς προγόνους ἐλθόντας ᾔδειν, ὅτε ὁ πρὸς τὸν Πέρσην κατελάμ-
βανεν αὐτοὺς κίνδυνος, καὶ παρ᾽ ᾗ πλείστην εὔνοιαν ὑπάρχουσαν ὑμῖν
ἠπιστάμην. ἔστι δ᾽ ἡ Τροιζηνίων αὕτη, ᾗ μάλιστα μὲν οἱ θεοὶ καὶ τῆς
πρὸς ὑμᾶς εὐνοίας ‖ ἕνεκα καὶ τῆς εἰς ἐμὲ εὐεργεσίας εὖνοι πάντες εἴη-
16 σαν, εἶτα κἀγὼ σωθεὶς ὑφ᾽ ὑμῶν δυνηθείην ἀποδοῦναι χάριτας. ἔν τε
ταύτῃ τινῶν, ὡς ἐμοὶ χαριζομένων, ἐπιτιμᾶν ὑμῖν τι πειρωμένων τῇ
κατ᾽ ἐμὲ ἀγνοίᾳ, ἐγὼ πᾶσαν εὐφημίαν, ὥσπερ ἐμοὶ προσῆκε, παρειχό-
μην· ἐξ ὧν καὶ μάλιστα νομίζω πάντας ἀγασθέντας με δημοσίᾳ τιμῆ-
σαι. ὁρῶν δὲ τὴν μὲν εὔνοιαν τῶν ἀνδρῶν μεγάλην τὴν δὲ εἰς τὸ παρὸν
δύναμιν καταδεεστέραν, μετελθὼν εἰς τὸ τοῦ Ποσειδῶνος ἱερὸν ἐν Κα-
17 λαυρίᾳ κάθημαι, οὐ μόνον τῆς ἀσφαλείας ἕνεκα, ἣν διὰ τὸν θεὸν ἐλπίζω
μοι ὑπάρχειν (οὐ γὰρ εὖ οἶδά γε· ἃ γὰρ ἐφ᾽ ἑτέροις ἐστὶν ὡς ἂν βούλων-
ται πρᾶξαι, λεπτὴν καὶ ἄδηλον ἔχει τῷ κινδυνεύοντι τὴν ἀσφάλειαν),
ἀλλ᾽ ὅτι καὶ τὴν πατρίδα ἐντεῦθεν ἑκάστης ἡμέρας ἀφορῶ, εἰς ἣν το-
σαύτην εὔνοιαν ἐμαυτῷ σύνοιδα ὅσης παρ᾽ ὑμῶν εὔχομαι τυχεῖν.
18 Ὅπως οὖν ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μηκέτι πλείω χρόνον τοῖς παροῦσι
κακοῖς συνέχωμαι, ψηφίσασθέ μοι ταῦτα ἃ καὶ ἄλλοις τισὶν ἤδη, ἵνα
μήτε ἀνάξιον ὑμῶν μηδέν μοι συμβῇ, μήτε ἱκέτης ἑτέρων ἀναγκασθῶ
γενέσθαι· οὐδὲ γὰρ ὑμῖν τοῦτο γένοιτ᾽ ἂν καλόν. ἐπεὶ εἴγε μοι τὰ πρὸς
ὑμᾶς ἀδιάλλακτα ὑπάρχει, τεθνάναι με κρεῖττον ἦν. εἰκότως δ᾽ ἄν μοι
πιστεύοιτε ταύτην τὴν διάνοιαν ἔχειν καὶ μὴ νῦν μάτην θρασύνεσθαι·
19 καὶ γὰρ ἐμαυτοῦ κυρίους ὑμᾶς ἐποίησα καὶ οὐκ ἔφυγον τὸν ἀγῶνα, ἵνα
μήτε προδῶ τὴν ἀλήθειαν μήτ᾽ ἄκυρος ὑμῶν ἐμοῦ μηδεὶς ‖ γένηται, ἀλλ᾽

ὅ τι βούλοισθε, τοῦτο χρήσαισθε· παρ' ὧν γὰρ ἁπάντων καλῶν κἀγα-
θῶν ἔτυχον, τούτους ᾤμην δεῖν ἔχειν καὶ ἁμαρτεῖν, εἰ βούλοιντο, εἰς
ἐμέ. ἐπειδὴ δὲ καλῶς ποιοῦσα ἡ δικαία τύχη τῆς ἀδίκου κρατήσασα δὶς
περὶ τῶν αὐτῶν ἀπέδωκεν ὑμῖν βουλεύσασθαι τῷ μηδὲν ἀνήκεστον
ἐψηφίσθαι περὶ ἐμοῦ, σώσατέ με ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, καὶ ψηφίσασθε
καὶ ὑμῶν αὐτῶν ἄξια καὶ ἐμοῦ. ἐπ' οὐδενὶ γὰρ τῶν πεπραγμένων ἠδι- 20
κηκότα με εὑρήσετε, οὐδ' ἐπιτήδειον ἄτιμον εἶναι οὐδ' ἀπολωλέναι,
ἀλλὰ καὶ εὔνουν τῷ πλήθει τῷ ὑμετέρῳ τοῖς μάλισθ' ὁμοίως, ἵνα μηδὲν
ἐπίφθονον γράψω, καὶ πλεῖστα πεπραγματευμένον τῶν νυνὶ ζώντων
ὑπὲρ ὑμῶν, καὶ μέγιστα ὑπάρχοντά μοι κατ' ἐμαυτὸν σύμβολα εὐνοίας
πρὸς ὑμᾶς.

Μηδεὶς δ' ὑμῶν ἡγείσθω με ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι μήτε ἀνανδρίᾳ μήτε 21
ἄλλῃ προφάσει φαύλῃ μηδεμιᾷ παρ' ὅλην τὴν ἐπιστολὴν ὀδύρεσθαι.
ἀλλὰ τοῖς παροῦσιν ἕκαστος ἀφθόνως χρῆται, ἐμοὶ δὲ ταῦτα νῦν πάρ-
εστιν, ὡς μήποτ' ὤφελε, λῦπαι καὶ δάκρυα καὶ τῆς πατρίδος καὶ ὑμῶν
πόθος καὶ ὧν πέπονθα λογισμός, ἃ πάντα ποιεῖ με ὀδύρεσθαι· ἃ ἐπι-
σκοποῦντες δικαίως, ἐν οὐδενὶ τῶν πεπολιτευμένων ὑπὲρ ὑμῶν οὔτε
μαλακίαν οὔτε ἀνανδρίαν προσοῦσαν εὑρήσετέ μοι.

Πρὸς μὲν δὴ πάντας ὑμᾶς τοσαῦτα· ἰδίᾳ δὲ τοῖς ἐμοὶ προσκρούου- 22
σιν ἐναντίον ὑμῶν βούλομαι διαλεχθῆναι. ὅσα μὲν γὰρ τοῖς ὑφ' ὑμῶν
ἀγνοηθεῖσιν ὑπηρετοῦντες ἐποίουν, ἔστω δι' ὑμᾶς αὐτοῖς πεπρᾶχθαι,
καὶ οὐδὲν ἐγκαλῶ. ‖ ἐπειδὴ δὲ ἐγνώκαθ' ὑμεῖς οἷα ταῦτ' ἐστίν, ἐὰν μέν,
ὥσπερ ὑπὲρ τῶν λοιπῶν ἐῶσι, καὶ ἐμοὶ συγχωρήσωσι, καλῶς ποιήσου-
σιν· ἐὰν δ' ἐπηρεάζειν ἐγχειρῶσιν, ὑμᾶς ἀξιῶ μοι βοηθεῖν ἅπαντας καὶ
μὴ κυριωτέραν τὴν τούτων ἔχθραν τῆς παρ' ὑμῶν χάριτός μοι γενέ-
σθαι. εὐτυχεῖτε.

3. ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΛΥΚΟΥΡΓΟΥ ΠΑΙΔΩΝ.

Δημοσθένης τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ χαίρειν. περὶ μὲν τῶν κατ'
ἐμαυτόν, ἅ μοι παρ' ὑμῶν ἐνόμιζον δίκαιον εἶναι γενέσθαι, τὴν προ-
τέραν ἔπεμψα πρὸς ὑμᾶς· ὑπὲρ ὧν ὅταν ὑμῖν δοκῇ, τότε συγχωρήσετε.
περὶ δὲ ὧν νῦν ἐπέσταλκα, βουλοίμην ἂν ὑμᾶς μὴ παριδεῖν, μηδὲ πρὸς
φιλονεικίαν ἀλλὰ πρὸς τὸ δίκαιον ἀκοῦσαι. συμβαίνει γάρ μοι, καίπερ
ἐκποδὼν διατρίβοντι, πολλῶν ἀκούειν ἐπιτιμώντων ὑμῖν ἐπὶ τοῖς
περὶ τοὺς Λυκούργου παῖδας γιγνομένοις. ἐπέστειλα μὲν οὖν ἂν τὴν 2
ἐπιστολὴν καὶ τῶν ἐκείνῳ ζῶντι πεπραγμένων ἕνεκα, ὧν ὁμοίως ἐμοὶ
πάντες ἂν αὐτῷ δικαίως ἔχοιτε χάριν, εἰ τὰ προσήκοντα βούλοισθε
ποιεῖν. ἐκεῖνος γὰρ αὑτὸν ἐν τῷ περὶ τὴν διοίκησιν μέρει τάξας τῆς
πολιτείας τὸ κατ' ἀρχάς, καὶ περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καὶ συμμαχικῶν οὐ-
δὲν εἰωθὼς γράφειν, ὅτε καὶ τῶν δημοτικῶν εἶναι προσποιουμένων οἱ
πολλοὶ κατέλιπον ὑμᾶς, τότε ταῖς τοῦ ‖ δήμου προαιρέσεσι προσένειμεν
ἑαυτόν, οὐχ ὅτι δωρεὰς καὶ προσόδους ἐκ τούτων ὑπῆρχε λαμβάνειν· 3
ἀπὸ γὰρ τῶν ἐναντίων πάντα τὰ τοιαῦτα ἐγίγνετο· οὐδ' ὅτι ταύτην

ἀσφαλεστέραν τὴν προαίρεσιν οὖσαν ἑώρα· πολλοὺς γὰρ καὶ προδή-
λους εἶχε κινδύνους, οὓς ἀναγκαῖον ἦν ὑπομεῖναι τὸν ὑπὲρ τοῦ δήμου
λέγειν καὶ πράττειν προαιρούμενον· ἀλλ' ὅτι δημοτικὸς καὶ φύσει
4 χρηστὸς ἀνὴρ ἦν. καίτοι παρὼν ἑώρα τοὺς μὲν βοηθήσαντας ἂν τῷ
δήμῳ ἀσθενεῖς ἐπὶ τοῖς συμβεβηκόσιν ὄντας, τοὺς δὲ τἀναντία πράτ-
τοντας κατὰ πάντα ἐρρωμένους. ἀλλ' ὅμως οὐδὲν ἧττον ἐκεῖνος εἴχετο
τούτων ἃ συμφέρειν ἡγεῖτο τῷ δήμῳ, καὶ μετὰ ταῦτα ἀόκνως καὶ λέγων
καὶ πράττων ἃ προσῆκεν ἦν φανερός, ἐφ' οἷς εὐθὺς ἐξητεῖτο, ὡς ἅπαν-
τες ἴσασιν.

5 Ἐπέστειλα μὲν οὖν ἄν, ὥσπερ εἶπον ἐν ἀρχῇ, καὶ διὰ τὴν ἐκείνου
χάριν· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ ὑμῖν νομίζων συμφέρειν τὰς παρὰ τοῖς ἔξω
γιγνομένας ἐπιτιμήσεις εἰδέναι, πολλῷ προθυμότερον πρὸς τὸ πέμψαι
τὴν ἐπιστολὴν ἔσχον. παραιτοῦμαι δὲ τοὺς ἰδίᾳ πρὸς ἐκεῖνον ἔχοντας
δυσκόλως ὑπομεῖναι τἀληθῆ καὶ τὰ δίκαια ἀκούειν ὑπὲρ αὐτοῦ. εὖ γὰρ
ἴστε, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, ὅτι νῦν ἐκ τῶν περὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ γεγε-
6 νημένων φαύλην δόξαν ἡ πόλις λαμβάνει. οὐδεὶς γὰρ τῶν Ἑλλήνων
ἀγνοεῖ ὅτι ζῶντα Λυκοῦργον ἐτιμᾶθ' ὑμεῖς εἰς ὑπερβολήν, καὶ πολλῶν
αἰτιῶν ἐπενεχθεισῶν ὑπὸ τῶν φθονούντων αὐτῷ οὐδεμίαν πώποθ'
εὕρετ' ἀληθῆ, οὕτω δ' ἐπιστεύετε αὐτῷ καὶ δημοτικὸν παρὰ πάντας
ἡγεῖσθε ὥστε πολλὰ τῶν δικαίων ἐν τῷ φῆσαι || Λυκοῦργον ἐκρίνετε
7 καὶ τοῦθ' ὑμῖν ἐξήρκει· οὐ γὰρ ἄν, καὶ τοιοῦτον μὴ δοκοῦν ὑμῖν. νῦν
τοίνυν ἅπαντες ἀκούοντες τοὺς υἱεῖς αὐτοῦ δεδέσθαι τὸν μὲν τεθνεῶτα
ἐλεοῦσι, τοῖς παισὶ δ' ὡς ἀνάξια πάσχουσι συνάχθονται, ὑμῖν δ' ἐπιτι-
μῶσι πικρῶς, ὡς οὐκ ἂν τολμήσαιμι γράφειν ἐγώ· ἃ γὰρ ἄχθομαι τοῖς
λέγουσι καὶ ἀντιλέγω καθ' ὅσον δύναμαι βοηθῶν ὑμῖν, ταῦτα ἄχρι μὲν
τοῦ δῆλον ὑμῖν ποιῆσαι ὅτι πολλοὶ μέμφονται, συμφέρειν ὑμῖν νομί-
8 ζων εἰδέναι, γέγραφα, ἀκριβῶς δὲ διεξιέναι δυσχερὲς κρίνω. ὅσα μέντοι
λοιδορίας χωρίς ἐστιν ὧν λέγουσί τινες, καὶ ἀκηκοέναι συμφέρειν ὑμῖν
ἡγοῦμαι, ταῦτα δηλώσω. οὐδεὶς γὰρ ὑπείληφεν ὡς ἄρα ἠγνοήκατε καὶ
διεψεύσθητε τῆς ἀληθείας περὶ αὐτοῦ Λυκούργου· τό τε γὰρ τοῦ χρό-
νου πλῆθος, ὃν ἐξεταζόμενος οὐδὲν πώποθ' εὑρέθη περὶ ὑμᾶς οὔτε
φρονῶν οὔτε ποιῶν ἄδικον, καὶ τὸ μηδένα ἀνθρώπων εἰς μηδὲν τῶν
ἄλλων ἀναισθησίαν ὑμῶν καταγνῶναι, εἰκότως ἀναιρεῖ τὴν ὑπὲρ τῆς
9 ἀγνοίας σκῆψιν. λείπεται τοίνυν ὃ πάντες ἂν εἶναι φαύλων ἀνθρώπων
ἔργον φήσαιεν, τὸ ὅσον ἂν χρῆσθε χρόνον, τοσοῦτον ἑκάστου φροντί-
ζειν δοκεῖν, μετὰ ταῦτα δὲ μηδένα ἔχειν λόγον. εἰς τί γὰρ τῶν ἄλλων
χρὴ προσδοκᾶν τῷ τετελευτηκότι τὴν παρ' ὑμῶν ἔσεσθαι χάριν, ὅταν
εἰς τοὺς παῖδας καὶ τὴν εὐδοξίαν τἀναντία ὁρᾷ τις γιγνόμενα, ὧν μό-
10 νων καὶ τελευτῶσι πᾶσιν, ὅπως ἕξει καλῶς, μέλει; καὶ μὴν οὐδὲ χρη-
μάτων ποιεῖν ἕνεκα ταῦτα δοκεῖν τῶν καλῶν κἀγαθῶν ἐστιν. οὔτε γὰρ
τῆς || μεγαλοψυχίας οὔτε τῆς ἄλλης προαιρέσεως τῆς ὑμετέρας ἀκόλου-
θον ἂν φανείη. εἰ γὰρ ὑμᾶς λύσασθαι παρ' ἑτέρων ἔδει δόντας ἐκ τῶν
προσιόντων τὰ χρήματα ταῦτα, πάντας ἂν ἡγοῦμαι προθύμους εἶναι·
τίμημα δ' ὁρῶν ὀκνοῦντας ἀφεῖναι, ὃ λόγῳ καὶ φθόνῳ γέγονεν, οὐκ

ἔχω τί καταγνῶ, εἰ μὴ ὅλως πικρῶς καὶ ταραχωδῶς ἔχειν πρὸς τοὺς δημοτικοὺς ὡρμήκατε. εἰ δὲ τοῦτ' ἔστιν, οὔτ' ὀρθῶς οὔτε συμφερόντως βουλεύεσθαι ἐγνώκατε.

Θαυμάζω δ' εἰ μηδεὶς ὑμῶν ἐννοεῖ ὅτι τῶν αἰσχρῶν ἐστὶ τὸν δῆμον 11
τὸν Ἀθηναίων, συνέσει καὶ παιδείᾳ πάντων προέχειν δοκοῦντα, ὃς καὶ τοῖς ἀτυχήσασιν ἀεὶ κοινὴν ἔχει καταφυγήν, ἀγνωμονέστερον φαίνεσθαι Φιλίππου, ὃς ἀνουθέτητος ὢν εἰκότως, τραφεὶς γ' ἐν ἐξουσίᾳ, ὅμως ᾤετο δεῖν, ἡνίκ' εὐτύχησε μάλιστα, τότ' ἀνθρώπινα πράττων φαίνεσθαι, καὶ τοὺς παραταξαμένους, πρὸς οὓς περὶ τῶν ὅλων διεκινδύνευσεν, οὐκ ἐτόλμησε δηλῶσαι, τὸ τίνων καὶ τίνες εἰσὶν ἐξετάσας· οὐ γάρ, 12
ὡς ἔοικεν, ὁμοίως τῶν παρ' ὑμῖν ῥητόρων ἐνίοις οὔτε δίκαια ἂν εἶναι πρὸς ἅπαντας τὰ αὐτὰ οὔτε καλὰ ἡγεῖτο, ἀλλὰ τὴν τῆς ἀξίας προσθήκην συλλογιζόμενος τὰ τοιαῦτ' ἐπέκρινεν. ὑμεῖς δ' ὄντες Ἀθηναῖοι καὶ παιδείας μετέχοντες, ἣ καὶ τοὺς ἀναισθήτους ἀνεκτοὺς ποιεῖν δοκεῖ δύνασθαι, πρῶτον μέν, ὃ πάντων ἀγνωμονέστατόν ἐστι, περὶ ὧν τὸν πατέρα αἰτιῶνταί τινες, τοὺς υἱεῖς δεδέκατε, εἶτα τὸ ταῦτα ποιεῖν ἴσον 13
εἶναί φατε, ὥσπερ ὑπὲρ σταθμῶν ἢ μέτρων τὸ ἴσον σκοπούμενοι, ἀλλ' οὐχ ὑπὲρ ἀνδρῶν προαιρέσεως καὶ πολιτείας βουλευόμενοι, ἐν οἷς ἐξεταζομένοις || εἰ μὲν χρηστὰ καὶ δημοτικὰ καὶ ἐπ' εὐνοίᾳ τὰ Λυκούργῳ πεπραγμένα φαίνεται, μηδενὸς κακοῦ ἀλλὰ καὶ πάντων τῶν ἀγαθῶν τοὺς παῖδας αὐτοῦ δίκαιόν ἐστι τυγχάνειν παρ' ὑμῶν· εἰ δὲ τἀναντία τούτων, ἐκεῖνον, ὅτ' ἔζη, ἔδει δίκην διδόναι, τούτους δὲ μηδ' οὕτως, ἐφ' οἷς ἐκείνῳ τις ἐγκαλεῖ, τυγχάνειν ὀργῆς· πᾶσι γὰρ πάντων τῶν ἁμαρτημάτων ὅρος ἐστὶ τελευτή. ἐπεὶ εἴγ' οὕτως ἕξετε ὥσθ' οἱ μὲν ἀχθε- 14
σθέντες τι τοῖς ὑπὲρ τοῦ δήμου πολιτευομένοις μηδὲ πρὸς τελευτήσαντας διαλλαγήσονται, ἀλλὰ καὶ τοῖς παισὶ τὴν ἔχθραν διαφυλάξουσιν, ὁ δὲ δῆμος, ᾧ συναγωνίζεται τῶν δημοτικῶν ἕκαστος, μέχρι τοῦ παρόντος χρῆσθαι μνημονεύσει τὰς χάριτας, μετὰ ταῦτα δὲ μηδὲν φροντιεῖ, οὐδὲν ἀθλιώτερον ἔσται τοῦ τὴν ὑπὲρ τοῦ δήμου τάξιν αἱρεῖσθαι.

Εἰ δὲ Μοιροκλῆς ἀποκρίνεται ταῦτα μὲν σοφώτερα ἢ καθ' ἑαυτὸν 15
εἶναι, ἵνα δὲ μὴ ἀποδρῶσιν, αὐτὸς αὐτοὺς δῆσαι, ἐρωτήσατ' αὐτόν, ἡνίκα Ταυρέας καὶ Πάταικος καὶ Ἀριστογείτων καὶ αὐτὸς εἰς τὸ δεσμωτήριον παραδοθέντες οὐ μόνον οὐκ ἐδέδεντο ἀλλὰ καὶ ἐδημηγόρουν, τί δήποτε οὐχ ἑώρα τὰ δίκαια ταῦτα. εἰ δὲ μὴ φήσει τότ' ἄρχειν, οὐδὲ λέγειν ἔκ γε τῶν νόμων αὐτῷ προσήκει. ὥστε πῶς ἴσον ἐστὶ τοὺς μὲν ἄρχειν, οἷς μηδὲ λέγειν ἔξεστι, τοὺς δὲ δεδέσθαι, ὧν πολλὰ χρήσιμος ἦν ὑμῖν ὁ πατήρ; ἐγὼ μὲν οὐκ ἔχω συλλογίσασθαι, εἰ μὴ τοῦτο δεῖξαι δημοσίᾳ βού- 16
λεσθε, ὅτι βδελυρία καὶ ἀναίδεια καὶ προαίρεσις πονηρίας ἐν τῇ πόλει ἰσχύει καὶ διασωθῆναι πλείω προσδοκίαν ἔχει, κἄν τι συμβῇ χαλεπὸν τοῖς || τοιούτοις, ἀπόλυσις γίγνεται, ἐν δὲ προαιρέσει χρηστῇ καὶ βίῳ σώφρονι καὶ δημοτικῷ προελέσθαι ζῆν σφαλερόν, κἄν τι γένηται πταῖσμα, ἄφυκτον ἔσται.

Ἔτι τοίνυν τὸ μὲν μὴ δίκαιον εἶναι τὴν ἐναντίαν δόξαν ἔχειν ἢ περὶ 17
ζῶντος εἴχετ' ἐκείνου, καὶ τὸ τῶν τετελευτηκότων ἢ τῶν παρόντων

*γράψας ἐπέσταλκα, πρῶτον μὲν καὶ πλεῖστον λόγον ποιούμενος τοῦ
καλοῦ καὶ τοῦ συμφέροντος ὑμῖν, δεύτερον δ' ὅτι τὴν αὐτὴν εὔνοιαν,
ἣν πρὸς ζῶντα Λυκοῦργον εἶχον, δίκαιον εἶναι νομίζω καὶ πρὸς τοὺς
32 παῖδας αὐτοῦ φαίνεσθαι ἔχων. εἰ δέ τῳ παρέστηκεν ὡς πολύ μοι πε-
ρίεστι τῶν ἐμαυτοῦ πραγμάτων, οὐκ ἂν ὀκνήσαιμι πρὸς τοῦτον εἰπεῖν
ὅτι τῶν συμφερόντων ὑμῖν καὶ τοῦ μηδένα τῶν φίλων ἐγκαταλείπειν
ὁμοίως ὥσπερ τῆς ἐμαυτοῦ σωτηρίας φροντίζω. οὔκουν ἐκ τοῦ περιόν-
τος ταῦτα ποιῶ, ἀλλ' ἀπὸ τῆς αὐτῆς σπουδῆς καὶ προαιρέσεως καὶ
ταῦτα κἀκεῖνα μιᾷ γνώμῃ πραγματεύομαι. περίεστι δέ μοι τοιαῦτα
οἷα τοῖς κακόν τι νοοῦσιν ὑμῖν περιγένοιτο.*

33 *Καὶ περὶ μὲν τούτων ἱκανά· ἡδέως δ' ἂν ὑμῖν τὴν ἐπ' εὐνοίᾳ καὶ
φιλίᾳ μέμψιν ποιησαίμην νῦν μὲν ἐν κεφαλαίῳ, μικρῷ δ' ὕστερον δι'
ἐπιστολῆς μακρᾶς, ἣν ἐάνπερ ἐγὼ ζῶ προσδοκᾶτε, ἂν μὴ τὰ δίκαια
γίγνηταί μοι παρ' ὑμῶν πρότερον· οἵτινες, ὦ (τί ἂν εἰπὼν μήθ' ἁμαρ-
τεῖν δοκοίην μήτε ψευσαίμην;) λίαν ὀλίγωροι, οὔτε τοὺς ἄλλους οὔθ'
ὑμᾶς αὐτοὺς αἰσχύνεσθε, ἐφ' οἷς Ἀριστογείτονα ἀφείκατε, ἐπὶ τούτοις
34 Δημοσθένην ἐκβεβληκότες, καὶ ἃ τοῖς τολμῶσι μηδὲν ὑμῶν φροντίζειν
μὴ λαβοῦσι παρ' ὑμῶν ἔξεστιν ἔχειν, || ταῦτ' οὐ διδόντες ἐμοί, ἵν' (ἂν)
οἷός τε ὦ, τά τε ὀφειλόμενα εἰσπράξας καὶ τοὺς φίλους ἐρανίσας τὰ
πρὸς ὑμᾶς διοικήσω, καὶ μὴ γῆρας καὶ φυγὴν ἐπίχειρα τῶν ὑπὲρ ὑμῶν
πεπονημένων ἔχων, κοινὸν ὄνειδος τῶν ἀδικησάντων, ἐπὶ ξένης
35 περιιὼν ὁρῶμαι. βουλομένου δέ μου ἐν μὲν ὑμετέρας χάριτος καὶ μεγα-
λοψυχίας τάξει τὴν οἴκαδέ μοι ἄφιξιν γενέσθαι, ἐμαυτῷ δὲ λύσιν τῆς
γεγονυίας οὐ δικαίως βλασφημίας πορίσασθαι, καὶ μόνον αἰτοῦντος
ἄδειαν ὅσονπερ χρόνον τὴν ἔκτισιν δεδώκατε, ταῦτα μὲν οὐ συγχω-
ρεῖτε, ἐρωτᾶτε δέ, ὡς ἀπαγγέλλεται πρὸς ἐμέ, τίς οὖν αὐτὸν κωλύει
36 παρεῖναι καὶ ταῦτα πράττειν; τὸ ἐπίστασθαι αἰσχύνεσθαι, ὦ ἄνδρες
Ἀθηναῖοι, καὶ τὸ ἀναξίως τῶν ὑπὲρ ὑμῶν πεπολιτευμένων πράττειν,
καὶ τὸ τὰ ὄντα ἀπολωλεκέναι διὰ τούτους (ὑφ' ὧν), ἵνα μὴ διπλᾶ κατά-
θωνται ἃ οὐκ ἠδύναντο ἁπλᾶ, ἐπείσθην ὑπογράψασθαι τὴν ἀρχὴν τὰς
καταβολάς, παρ' ὧν μετὰ μὲν τῆς ὑμετέρας εὐνοίας ἀφικόμενος μέρος,
εἰ καὶ μὴ πάντα, ἴσως ἂν κομισαίμην, ὥστε μηδὲν ἀσχημονεῖν τὸ λοι-
πὸν τοῦ βίου, ἂν δ' ὡς οἱ ταῦτα λέγοντες ἀξιοῦσί με ἔλθω, ἅμα ἀδοξίᾳ
37 καὶ ἀπορίᾳ καὶ φόβῳ συνέξομαι. ὧν οὐδὲν ὑμεῖς συλλογίζεσθε, ἀλλὰ
ῥημάτων μοι καὶ φιλανθρωπίας φθονοῦντες, ἂν οὕτω τύχῃ, δι' ὑμᾶς
περιόψεσθε ἀπολούμενον· οὐ γὰρ ἂν δεηθείην ἄλλων ἢ ὑμῶν. καὶ
τότε φήσετε δεινὰ πεπονθέναι με, ἀκριβῶς οἶδα, ὅτε οὔτ' ἐμοὶ πλέον
οὐδὲν οὔθ' ὑμῖν ἔσται. || οὐ γὰρ δὴ χρήματά γ' εἶναί μοι προσδοκᾶτε
ἔξω τῶν φανερῶν, ὧν ἀφίσταμαι. καὶ τὰ λοιπὰ βούλομαι συναγαγεῖν,
ἐάν μοι μὴ φιλονείκως ἀλλ' ἀνθρωπίνως δῶτε τὸ πρὸς τούτοις ἀσφα-
38 λῶς εἶναι. οὐ μὴν οὐδὲ παρ' Ἁρπάλου με λαβόντα δείξετε· οὔτε γὰρ
ἠλέγχθην οὔτ' ἔλαβον. εἰ δὲ τὸ περιφανὲς ἀξίωμα τῆς βουλῆς ἢ τὸν
Ἄρειον πάγον προσβλέπετε, τῆς Ἀριστογείτονος κρίσεως ἀναμνη-
σθέντες ἐγκαλύψασθε· οὐ γὰρ ἔχω τούτου πρᾳότερον πρόσταγμα*

τοῖς τοιαῦτ᾽ ἐξημαρτηκόσιν εἰς ἐμέ. οὐ γὰρ δή που τοῖς αὐτοῖς γε λόγοις ὑπὸ τῆς αὐτῆς βουλῆς ἀποφανθέντα ἐκεῖνον μὲν ἀφεῖσθαι δίκαιον εἶναι φήσετε, ἐμὲ δὲ ἀπολωλέναι· οὐχ οὕτως ὑμεῖς ἀλογίστως 39
ἔχετε. οὔτε γὰρ ἄξιος οὔτε ἐπιτήδειος οὔτε χείρων, ἀτυχὴς μέντοι δι᾽ ὑμᾶς. ὁμολογῶ· πῶς γὰρ οὐκ ἀτυχὴς ᾧ πρὸς τοῖς ἄλλοις κακοῖς καὶ πρὸς Ἀριστογείτονα ἐμαυτὸν ἐξετάζειν συμβαίνει, καὶ ταῦτ᾽ ἀπολωλότι πρὸς σωτηρίας τετυχηκότα;

Καὶ μή με ὑπολαμβάνετε ὀργίζεσθαι τοῖς λόγοις τούτοις. οὐ γὰρ ἂν 40
πάθοιμι τοῦτο πρὸς ὑμᾶς ἐγώ· ἀλλ᾽ ἔχει τινὰ τοῖς ἀδικουμένοις ῥᾳστώνην τὸ λέγειν ἃ πάσχουσιν, ὥσπερ τοῖς ἀλγοῦσι τὸ στένειν, ἐπεὶ τῇ γε εὐνοίᾳ οὕτως ἔχω πρὸς ὑμᾶς ὡς ὑμᾶς ἂν εὐξαίμην πρὸς ἐμέ. καὶ τοῦτ᾽ ἐν πᾶσι πεποίηκα καὶ ποιήσω φανερόν. ἔγνωκα γὰρ ἐξ ἀρχῆς 41
παντὶ τῷ πολιτευομένῳ προσήκειν, ἄνπερ ᾖ δίκαιος πολίτης, ὥσπερ οἱ παῖδες πρὸς τοὺς γονέας, οὕτω πρὸς ἅπαντας τοὺς ‖ πολίτας ἔχειν, εὔχεσθαι μὲν ὡς εὐγνωμονεστάτων τυγχάνειν, φέρειν δὲ τοὺς ὄντας εὐμενῶς· ἡ γὰρ ἐν τοῖς τοιούτοις ἧττα καλὴ καὶ προσήκουσα νίκη παρὰ τοῖς εὖ φρονοῦσι κρίνεται. εὐτυχεῖτε.

4. ΠΡΟΣ ΤΑΣ ΘΗΡΑΜΕΝΟΥΣ ΒΛΑΣΦΗΜΙΑΣ.

Δημοσθένης τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ χαίρειν. ἀκούω περὶ ἐμοῦ Θηραμένην ἄλλους τε λόγους βλασφήμους εἰρηκέναι καὶ δυστυχίαν προφέρειν. τὸ μὲν οὖν τοῦτον ἀγνοεῖν ὅτι λοιδορίας, ἣ μηδεμίαν κακίαν, καθ᾽ ὅτου λέγεται, δείκνυσιν, οὐδέν ἐστ᾽ ὄφελος παρ᾽ εὖ φρονοῦσιν ἀνθρώποις, οὐχὶ θαυμάζω· τὸν γὰρ θρασὺν μὲν τῷ βίῳ, μὴ πολίτην δὲ τὴν φύσιν, ἐν ἐργαστηρίῳ δὲ τεθραμμένον ἐκ παιδὸς αἰσθάνεσθαί τι τῶν τοιούτων ἀλογώτερον ἦν ἢ μὴ συνιέναι. τούτῳ μὲν οὖν, ἐὰν 2
ἀφίκωμαί ποτε καὶ σωθῶ, πειράσομαι διαλεχθῆναι περὶ ὧν εἰς ἐμὲ καὶ περὶ ὧν εἰς ὑμᾶς παροινεῖ, καὶ νομίζω, καίπερ οὐδὲν μετέχοντα τοῦ αἰσχύνεσθαι, μετριώτερον αὐτὸν ποιήσειν· ὑμῖν δὲ τοῦ κοινῇ συμφέροντος ἕνεκα βούλομαι δι᾽ ἐπιστολῆς, οὓς περὶ τούτων ἔχω λόγους, δηλῶσαι. οἷς πάνυ τὸν νοῦν προσέχοντες ἀκούσατε· οἴομαι γὰρ αὐτοὺς οὐκ ἀκοῆς μόνον ἀλλὰ καὶ μνήμης ἀξίους εἶναι.

Ἐγὼ τὴν πόλιν τὴν ὑμετέραν εὐτυχεστάτην πασῶν πόλεων ὑπο- 3
λαμβάνω καὶ ‖ θεοφιλεστάτην, καὶ ταῦτα οἶδα καὶ τὸν Δία τὸν Δωδωναῖον καὶ τὴν Διώνην καὶ τὸν Ἀπόλλω τὸν Πύθιον ἀεὶ λέγοντας ἐν ταῖς μαντείαις, καὶ προσεπισφραγιζομένους τὴν ἀγαθὴν τύχην ἐν τῇ πόλει εἶναι παρ᾽ ὑμῖν. ὅσα τοίνυν περὶ τῶν ἐπιόντων δηλοῦσιν οἱ θεοί, δῆλον ὡς προλέγουσι· τὰς δὲ ἀπὸ τῶν παρεληλυθότων προσηγορίας ἐπὶ ταῖς γεγονυίαις πράξεσι τίθενται. ἃ τοίνυν ἐγὼ πεπολίτευ- 4
μαι παρ᾽ ὑμῖν, τῶν ἤδη γεγενημένων ἐστίν, ἀφ᾽ ὧν εὐτυχεῖς ὑμᾶς προσηγορεύκασιν οἱ θεοί. πῶς οὖν δίκαιον τοὺς μὲν πεισθέντας εὐτυχεῖς ὀνομάζεσθαι, τὸν δὲ πείσαντα τῆς ἐναντίας προσηγορίας τυγχάνειν; πλὴν εἰ τοῦτο τις εἴποι, τὴν μὲν κοινὴν εὐτυχίαν, ἧς ἐγὼ σύμ-

βουλος, θεοὺς τοὺς λέγοντας εἶναι, οἷς οὐ θέμις ψεύδεσθαι, τὴν δ'
ἰδίαν βλασφημίαν, ᾗ κατ' ἐμοῦ κέχρηται Θηραμένης, θρασὺν καὶ ἀναιδῆ
καὶ οὐδὲ νοῦν ἔχοντ' ἄνθρωπον εἰρηκέναι.

5 Οὐ τοίνυν μόνον ταῖς παρὰ τῶν θεῶν μαντείαις ἀγαθὴν οὖσαν
εὑρήσετε ᾗ κέχρησθε τύχῃ, ἀλλὰ καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν ἔργων θεωροῦντες,
ἂν ἐξετάζητε ὀρθῶς. ὑμεῖς γὰρ εἰ μὲν ὡς ἄνθρωποι τὰ πράγματα βού-
λεσθε θεωρεῖν, εὐτυχεστάτην εὑρήσετε ἀφ' ὧν ἐγὼ συνεβούλευσα τὴν
πόλιν γεγονυῖαν· εἰ δὲ ἃ τοῖς θεοῖς ἐξαίρεθ' ὑπάρχει μόνοις, τούτων
6 ἀξιώσετε τυγχάνειν, ἀδυνάτων ἐφίεσθε. τί οὖν ἐστι θεοῖς ἐξαίρετον,
ἀνθρώποις δ' οὐ δυνατόν; ἁπάντων τῶν ἀγαθῶν ἐγκρατεῖς ὄντας
κυρίους εἶναι καὶ αὐτοὺς ἔχειν καὶ δοῦναι τοῖς ἄλλοις, φλαῦρον δὲ μηδὲν
μηδέποτ' ἐν παντὶ τῷ αἰῶνι μήτε || παθεῖν μήτε μελλῆσαι. καὶ μὴν
ὑποκειμένων τούτων, ὥσπερ προσήκει, σκοπεῖτε τὰ ὑμέτερα αὐτῶν
7 πρὸς τὰ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων. οὐδεὶς γὰρ οὕτως ἐστὶν ἀγνώμων
ὅστις ἂν ἢ τὰ Λακεδαιμονίοις συμβεβηκότα, οἷς οὐκ ἐγὼ συνεβούλευον,
ἢ τὰ Πέρσαις, πρὸς οὓς οὐδὲ ἀφικόμην πώποτε, αἱρετώτερα φήσειεν
εἶναι τῶν ὑμῖν παρόντων. καὶ ἐῶ Καππάδοκας καὶ Σύρους καὶ τοὺς
τὴν Ἰνδικὴν χώραν κατοικοῦντας ἀνθρώπους ἐπ' ἔσχατα γῆς· οἷς ἅπασι
8 συμβέβηκε πολλὰ καὶ δεινὰ πεπονθέναι καὶ χαλεπά. ἀλλὰ νὴ Δία τού-
των μὲν ἄμεινον ὑμᾶς πράττειν ἅπαντες ὁμολογήσουσι, Θετταλῶν δὲ
καὶ Ἀργείων καὶ Ἀρκάδων χεῖρον, ἢ τινῶν ἄλλων, οἷς ἐν συμμαχίᾳ
συνέβη γενέσθαι Φιλίππῳ; ἀλλὰ τούτων καὶ πολὺ βέλτιον ἀπηλλάχατε
οὐ μόνον τῷ μὴ δεδουλευκέναι (καίτοι τί τηλικοῦθ' ἕτερον;) ἀλλὰ καὶ
τῷ τοὺς μὲν πάντας αἰτίους εἶναι δοκεῖν τῶν τοῖς Ἕλλησι κακῶν συμ-
βεβηκότων διὰ Φιλίππου καὶ τῆς δουλείας, ἐξ ὧν εἰκότως μισοῦνται,
9 ὑμᾶς δ' ὁρᾶσθαι ὑπὲρ τῶν Ἑλλήνων καὶ σώμασι καὶ χρήμασι καὶ
πόλει καὶ χώρᾳ καὶ πᾶσιν ἠγωνισμένους, ἀνθ' ὧν εὔκλειαν εἰκὸς
ὑπάρχειν καὶ χάριν ἀθάνατον παρὰ τῶν τὰ δίκαια βουλομένων
ποιεῖν. οὐκοῦν ἀφ' ὧν ἐγὼ συνεβούλευσα, τῶν μὲν ἀντιστάντων
ἄριστα πράττειν τῇ πόλει συμβέβηκε, τῶν δὲ συνηγωνισμένων ἐνδοξο-
τέραν εἶναι περίεστι.

10 Τοιγαροῦν ἐπὶ τούτοις οἱ θεοὶ τὰς μὲν μαντείας τὰς ἀγαθὰς ὑμῖν
διδόασι, τὴν δ' ἄδικον βλασφημίαν εἰς κεφαλὴν τῷ λέγοντι τρέπουσι.
γνοίη δ' ἄν τις, εἰ || προέλοιτο ἐξετάσαι τὰ ἐπιτηδεύματα ἐν οἷς ζῇ. ἃ
11 γὰρ ἂν καταράσαιτό τις αὐτῷ, ταῦτ' ἐκ προαιρέσεως ποιεῖ. ἐχθρὸς μὲν
ἐστι τοῖς γονεῦσι, φίλος δὲ Πανσανίᾳ τῷ πόρνῳ· καὶ θρασύνεται μὲν
ὡς ἀνήρ, πάσχει δ' ὡς γυνή· καὶ τοῦ μὲν πατρός ἐστι κρείττων, τῶν δ'
αἰσχρῶν ἥττων· οἷς δ' ὑπὸ πάντων δυσχεραίνεται, τούτοις τὴν διά-
νοιαν ἀγάλλεται, αἰσχρορρημοσύνῃ καὶ τῷ διηγεῖσθαι ταῦτ' ἐφ'
οἷς ἀλγοῦσιν οἱ ἀκούοντες· ὃ δ', ὡς ἀφελὴς καὶ παρρησίας μεστός,
12 οὐ παύεται. καὶ ταῦτα οὐκ ἂν ἔγραψα, εἰ μὴ κινῆσαι τὴν ἐν ὑμῖν
μνήμην τῶν προσόντων αὐτῷ κακῶν ἠβουλόμην. ἃ γὰρ εἰπεῖν ἄν
τις ὀκνήσαι καὶ γράψαι φυλάξαιτ' ἄν, οἴομαι δὲ κἂν ἀκούσαντα δυσχε-
ρᾶναι, ταῦτα ἀπὸ τούτων μνησθεὶς οἶδεν ἕκαστος ὑμῶν πολλὰ καὶ

δεινὰ καὶ αἰσχρὰ τούτῳ προσόντα, ὥστ' ἐμοί τε μηδὲν ἀναιδὲς εἰρῆ-
σθαι, καὶ τοῦτον ὑπόμνημα τῶν ἑαυτοῦ κακῶν ὀφθέντα πᾶσιν εἶναι.
εὐτυχεῖτε.

5.

Δημοσθένης Ἡρακλεοδώρῳ εὖ πράττειν. οὐθ' ὅπως χρὴ πιστεύειν
οἷς ἀπήγγειλέ μοι Μενεκράτης οὐθ' ὅπως ἀπιστεῖν, ἔχω· ἔφη γὰρ Ἐπί-
τιμον ἐνδεδεῖχθαι μὲν καὶ ἀπῆχθαι ὑπὸ Ἀράτου, σὲ δὲ ἀγωνίζεσθαι ‖
καὶ ἁπάντων αὐτῷ χαλεπώτατον εἶναι. δέομαι δή σου πρὸς Διὸς ξενίου
καὶ πάντων τῶν θεῶν, μή με καταστήσῃς ἀηδεῖ καὶ δεινῷ μηδενὶ περι-
πετῆ. εὖ γὰρ ἴσθι, χωρὶς τοῦ μέλειν μοι τῆς Ἐπιτίμου σωτηρίας καὶ 2
νομίσαι μεγάλην ἂν συμφορὰν εἴ τι πάθοι καὶ τούτου σὺ συναίτιος
εἴης, αἰσχύνομαι τοὺς συνειδότας μοι τοὺς λόγους οὓς ἐγὼ περὶ σοῦ
πρὸς ἅπαντας ἀνθρώπους ἔλεγον, πεπεικὼς ἐμαυτὸν ἀληθῆ λέγειν,
οὐκ ἐκ τοῦ πεπλησιακέναι σοι πεῖραν ἔχων, ἀλλ' ὁρῶν ὅτι δόξης ἐπι- 3
τυγχάνων καὶ παιδείαν ἀπεδέχου, καὶ ταῦτα [τὴν] ἀπὸ τῆς Πλάτωνος
διατριβῆς, ἥπερ ἐστὶν ὡς ἀληθῶς τῶν μὲν πλεονεκτημάτων καὶ τῶν
περὶ ταῦτα σοφισμάτων ἔξω, τοῦ βελτίστου δὲ καὶ τοῦ δικαιοτάτου
πάνθ' ἕνεκα ἐξητασμένη· ἧς μὰ τοὺς θεοὺς τῷ μετασχόντι μὴ οὐχὶ
ἀψευδεῖν καὶ πρὸς ἅπαντας ἀγαθῷ εἶναι οὐχ ὅσιον ἡγοῦμαι. γένοιτο 4
δ' ἄν μοι κἀκεῖνο τῶν χαλεπωτάτων· εἰ γὰρ ὡρμηκὼς κατ' ἐμαυτὸν εὐ-
νοϊκῶς ἔχειν σοι τὴν ἐναντίαν γνώμην μεταλαβεῖν ἀναγκασθείην, ἃ δὴ
ὑπολαμβάνω παρεωρᾶσθαι καὶ πεφενακίσθαι, κἂν μὴ φῶ, νόμιζε οὕ-
τως ἕξειν. εἰ δὲ ἡμῶν καταπεφρόνηκας ὅτι τῶν πρώτων οὐκ ἐσμέν πω,
λόγισαι ὅτι καὶ σύ ποτ' ἦσθα νέος καὶ τὴν ἡλικίαν εἶχες ἣν ἡμεῖς νῦν,
ἐκ δὲ τοῦ συμβουλεύειν καὶ πράττειν γεγένησαι τηλικοῦτος. κἂν ἡμῖν 5
τοῦτο συμβαίη· τὸ μὲν γὰρ εὖ βουλεύεσθαι πάρεστι, τῆς δὲ τύχης συλ-
λαμβανούσης καὶ τοὔργον γένοιτ' ἄν. καλὸς οὖν ἔρανος ‖ χάρις δικαία·
ἣν καὶ σὺ ποίησαι πρὸς ἐμέ. καὶ μηδ' ὑφ' ἑνὸς τῶν σοῦ φρονούντων
χεῖρον ἄγου μηδὲ ἧττω, ἀλλ' ἐκείνους ἄγε ἐπὶ τὰ σοὶ δοκοῦντα· καὶ
πρᾶττε οὕτως ὅπως μηδενὸς τῶν ὁμολογηθέντων στερηθῶμεν, ἀλλ'
Ἐπιτίμῳ γένηται σωτηρία τις καὶ ἀπαλλαγὴ τῶν κινδύνων. παρέσομαι
δὲ εἰς τὸν χρόνον κἀγώ, καθ' ὃν σὺ φῂς καιρὸν εἶναι. γράψας δέ μοι
πέμψον, ἢ καὶ ὡς φίλῳ ἐπίστελλε. εὐτύχει.

6.

Δημοσθένης τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ χαίρειν. ἦλθεν ἐπιστολὴ παρ'
Ἀντιφίλου πρὸς τοὺς τῶν συμμάχων συνέδρους, τοῖς μὲν βουλομένοις
ἀγαθὰ προσδοκᾶν ἱκανῶς γεγραμμένη, τοῖς δ' ὑπηρετοῦσιν Ἀντιπάτρῳ
πολλοὺς καὶ δυσχερεῖς ἀπολείπουσα λόγους, οἳ παραλαβόντες τὰ παρ'
Ἀντιπάτρου γράμματα πρὸς Δείναρχον ἐς Κόρινθον ἐλθόντα ἁπάσας
τὰς ἐν Πελοποννήσῳ πόλεις τοιούτων λόγων ἔπλησαν οἵων εἰς κεφα-

2 *λὴν αὐτῶν τρέψειαν οἱ θεοί. ἀφικομένου δὲ τοῦ νῦν ἥκοντος μετὰ τοῦ παρ' ἐμοῦ φέροντος γράμματα παρὰ Πολεμαίστου πρὸς τὸν ἀδελφὸν Ἐπίνικον, ἄνδρα ‖ ὑμῖν εὔνουν καὶ ἐμοὶ φίλον, κἀκείνου πρὸς ἐμὲ ἀγαγόντος, ἀκούσαντί μοι ἃ ἔλεγεν ἐδόκει πρὸς ὑμᾶς αὐτὸν ἀποστεῖλαι, ὅπως πάντα σαφῶς ἀκούσαντες τὰ ἐν τῷ στρατοπέδῳ γεγονότα τοῦ περὶ τὴν μάχην παραγεγενημένου τότε εἰς τὸ παρὸν θαρρῆτε, καὶ τὰ λοιπὰ τῶν θεῶν θελόντων, ἃ βούλεσθε, ἔχειν ὑπολαμβάνητε. εὐτυχεῖτε.*

INDEX ORATIONUM DEMOSTHENICARUM.

Librorum Demosthenis orationes continentium, praeterquam quod alii aliis integriores sunt atque aliter alii ipsas ordinatas exhibent, — nostrum enim ordinem a Callimacho institutum esse probabiliter coniecit H. Sauppius epist. crit. ad G. Hermannum p. 49. — duo sunt genera, alterum interpolatorum, non interpolatorum alterum. Atque illos quidem non refert omnes enumerare. Etenim alii aut nullius aut parvi sunt pretii, de aliis praestantioribus nondum satis liquet. Id quod de Voemelii libris Vindobonensibus, Romanis, ceteris dictum volumus. Qui etsi praeter *prolegomenorum apparatus sui critici specimen* (Francof. 1849) partem orationis XIV. cum ipso illo apparatu edidit ac partem lectionum ex Vindobonensibus libris excerptarum in altera Philippicarum orationum editione in usum suum convertit Frankius, apparet tamen de singulis non ante posse iudicari quam quae in uno quoque libro perscripta sunt integra publici iuris facta fuerint. Eorum igitur, quos novimus integros, potissimi sunt, quamquam diversis admodum gradibus iidem ab archetypo suo distantes — qua de re verba fecerunt L. Spengel in comm. de Philippica tertia p. 2, C. H. Funkhaenel in Iahnii annal. suppl. t. VII. p. 27, Voemel in praef. ed. Paris. p. III. — ab Imm. Bekkero collati Marciani duo 416 (F) et 418 (*Φ*), uterque saec. XI, Parisini decem, bibl. imper. 2935 (*Υ*) saec. XI, 2043 (o) saec. XVI, 2508 (p) saec. XIV, 2844 (q) saec. XV, 2936 (r) saec. XIII, 2940 (s) saec. XIII, 2994 (t) saec. XII, 2998 (k) saec. XIV, bibl. Coislin. 324 (u) et 339 (*v*) saec. XV. uterque, Antverpiensis soc. Iesu 43 (*Ω*), Laurentianus LIX, 9. (*Π*) saec. XI. eadem manu qua Aristophanes Ravennas scriptus, quibusque usus est Reiskius, Bavaricus, nunc bibl. Monacensis 85, Marciani F omni ex parte simillimus, et Augustanus I, nunc item bibl. Monacensis 485, uterque a Gu. Dindorfio denuo excussus. Reliquos recensent A. G. Becker *Literatur des Dem.* p. 74—86 et I. T. Voemel in quinque commentationibus *Notitia codicum Demosthenicorum* inscriptis, Francof. 1833—1836, ad quas accessit tamquam supplementum edita ab eodem Th. Heysii diss., *Beschreibung der griech. Codices des Dem. zu Rom,* 1838. Quibus libris quae subest recensio, satis antiqua et ipsa est, ut qua iam usum videmus Dionysium Halicarnassensem, eaque mala grammaticorum oratoris verba in scholis explicantium sedulitate iam primis post illius mortem saeculis orta, — cf. Turicensium editorum praef. ad Dem. p. IV sq. — moxque tamquam vulgata — δημώδη vocat Ulpianus qui dicitur in adn. ad or. XXI, 133. p. 618 ed. Dind. — usu trita et recepta. Eandem ut interpolatis a libris profectae editiones exhibent nostri saeculi anno XXIII. antiquiores omnes. Harum igitur, ad ipsa oratoris verba quod attinet, ex quo meliora inventa sunt, exiguus sane et pene nullus adhuc usus est, ut verbo satis sit singulas indicasse. Ac primus Demosthenis orationes Scip. Carteromachi studio ex libro, ut videtur, Marciano F edidit Aldus Venet. 1504; quem annum prae se ferentes Aldinae distinguuntur tres, eaeque non multum inter se discrepantes. Repetita est additis Ulpiani commentariis per Io. Hervagium Basil. 1532. Tum ex libris nescio quibus correctas edidit I. B. Felicianus Ven. 1543. Ex hac expressae sunt Hervagiana altera Bas. 1547 et Aldina altera Ven.

1554. Mox quam a. 1558 laudabili consilio inchoaverat Gu. Morelius collatis bibl. reg. Paris. libris octo editionem post eius mortem parum accurate absolvit D. Lambinus Paris. 1570. Sed primus de explicando oratore praeclare meruit Hier. Wolfius edito cum Ulpianeis suisque commentariis Demosthene Basil. 1572 (Francof. 1604. Aurel. Allobr. 1607), eodemque nomine laudandus est Io. Taylor, quamquam editionis ab ipso inchoatae duo tantum volumina prodierunt Cantabr. 1748 et 1757, quorum alterum decem iudiciales, alterum orationes Demosthenis et Aeschinis de male gesta legatione deque corona habitas continet. Novam textus recensionem quum libris manu scriptis, maxime Augustano I. et Bavarico, tum sua coniectura usus condidit I. I. Reiskius Lips. 1770. Hunc antevertisset, si librorum quibus instructus erat copiae pari iudicio fuisset, Ath. Augerus: sed is neque de libris suis, eisque ne collatis quidem accurate, recte iudicavit, neque absolvit quam paravit editionem, cuius prodiit tantum vol. I. Philippicas orationes continens Paris. 1790. Reliqui, quum non nossent meliora, in Reiskiano textu acquieverunt: ex quibus satis est unum nominare G. H. Schaeferum, cuius editio prodiit Lond. 1822. Accessit eiusdem ex Bekkeri, quae interea prodierat, editione auctus *Apparatus criticus et exegeticus ad Dem.*, Lond. 1824—1826. V voll., cum E. E. Seileri indicibus, Lips. 1833.

Alterius generis unus tantum exstat liber Parisinus bibl. imper. 2934 (*Σ*) saec. X. Descripserunt hunc librum Turicenses editores praef. p. I sqq., Dindorfius praef. ed. Oxon. t. I. p. VI sqq., Voemelius notit. cod. II. p. 16 sqq., praef. ed. Paris. p. I sq., comment. *de Σ codicis conditione*, Francof. 1853. Contulit primum — nam Augerum, qui novit quidem, sed nec momento suo ponderavit et passim tantum negligenter inspexit, missum facimus, — Imm. Bekkerus (cf. *Monatsber. der k. preuss. Akad. der Wissensch.* 1854. p. 252—260), iterum Voemelius, cuius tamen adhuc in scriniis latet collatio, denuo Dindorfio Fr. Duebnerus. Qui liber non solum innumerabilium lectionum bonitate, verum eo quoque, quod rhetorum commentis illis vulgatoque textui assutis pannis liber est, reliquis adeo praestat omnibus, ut pro singulari plane haberi debeat, eque archetypo emanasse videatur antiquissimo et purissimo. Accedit quod eadem recensione antiqui iam scriptores passim usi sunt, velut Diod. Sic. XVI, 85. coll. or. XVIII, 136, A. Gellius II, 27. coll. or. XVIII, 67, Galenus t. V. p. 503 ed. Kuehn. coll. or. XXI, 41, Aristides art. rhet. I. p. 347 ed. Walz. coll. or. IX, 37, p. 353. coll. eiusd. or. §. 36, p. 354. coll. eiusd. or. §. 18, p. 359. coll. eiusd. or. §. 65, Harpocratio p. 156, 26. coll. or. XVIII, 149, p. 183, 16. coll. eiusd. or. §. 87, Helladius ap. Phot. bibl. cod. CCLXXIX. p. 532 a. coll. or. XXI, 133. Eandem *ἀρχαίαν* vocat Ulpianus in adn. ad or. XXI, 147. p. 625. Quin fontem, ex quo Parisinus derivatus est, accuratius etiam licet indicare. Nam quas tribus locis Harpocr. p. 20, 2. 69, 7. 131, 1. *ἐν τοῖς Ἀττικιανοῖς* exstare dicit Demosthenis lectiones, eaedem in ipso hoc libro deprehenduntur or. XXII, 20. III, 7. XXIV, 11. Quo accedit quod extremae orat. XI. in cod. Bavarico subscriptum legitur *διωρθώθη πρὸς δύο Ἀττικιανά*, interprete Cobeto in diario Mnemosyne inscripto t. III. p. 166. Atticiana autem exemplaria, id quod primum intellexit Hemsterhusius Anecd. I. p. 244 et confirmavit Sauppius epist. crit. p. 50 (cf. Philolog. t. III. p. 126), dubitari non potest quin fuerint quae manu sua scripsit Atticus, quem tamquam celebrem sui temporis bibliographum laudat Lucian. adv. indoct. c. 1. et 24. Itaque hoc in libro quae continetur recensio, etiamsi non ea dici possit quae ab ipso Demosthene profecta sit, tamen talis sine dubio habenda est, quae nobis quidem ab illa absit proxime. Quod enim non interpola-

tum Parisinum diximus, hoc sane non ita intelligendum est, quasi puram putam Demosthenis manum referat: quamquam, si ipsa verba oratoris spectas, tam ille purus tamque parum ista labe infectus est, ut nequeat ullus cum ipso comparari. Unum tantum cum his commune ei est genus interpolationis, litium dico instrumenta, legum, populi scitorum, testimoniorum, epistolarum, quaeque sunt id genus alia, formulas, quas ab ipso oratore adscriptas non esse certum est, quasque erant qui ex tabulariis atticis depromptas crederent, alii confictas et supposititias esse omnes quum sibi tum aliis persuasere. Ac maxime quidem de formulis, quae or. XVIII. insertae leguntur, disceptatum est: de quibus postquam suspicionem movit C. A. F. Brueckneerus in libro *König Philipp und die hellen. Staaten* inscripto p. 364 sqq., copiosa disputatione, quae legitur in diar. antiq. stud. 1839, I. G. Droysen fraudem detexit (adde F. Frankii comm. *de decretis Amphictyonum, quae apud Dem. reperiuntur*, Lips. 1844), nec tamen I. T. Voemelio et I. G. Boehneckio persuasit, quorum ille in dissertationibus quinque, *über die Aechtheit der Urkunden in Dem. Rede vom Kranz*, Francof. 1841—1845 (quibuscum conferenda sunt quae disserit idem in diar. ant. stud. 1851. p. 243 sqq.), hic in libro *Forschungen auf dem Gebiete der att. Redner* t. I. P. 2. vulgari opinioni patrocinati sunt. Dubitat nunc certe A. Boeckhius *Staatsh. d. Ath.* ed. 2. t. I. p. 737. 743. 764. Sed mox exstitere qui alias quoque Demosthenis orationes eodem conatu excuterent, quaeque in eis continentur formulas in dubium vocarent. Vid. F. Frankii diss. *de legum formulis quae in Dem. Aristocratea reperiuntur*, Misen. 1848 et A. Westermanni comm. *de litis instrumentis quae exstant in Dem. or. in Midiam*, Lips. 1844, eiusdemque *Untersuchungen über die in die Attischen Redner eingelegten Urkunden*, in Comm. reg. soc. litt. Sax. t. I. p. 1–136. Cf. Turicensium editorum praef. ad Dem. p. VI. et Dindorfii praef. ad ed. Oxon. t. V. p. V. Praeterea vero Parisinus neque ipse vitiorum, quibus laborare solent libri manu scripti, immunis est, quo pertinent maxime verba singula modo traiecta modo omissa atque litterae forma vel pronuntiatione consimiles, ut α λ δ, η ν, αι ε, ει η, ο ω, confusae, et manus correctrices expertus est complures. Etenim non solum margines eius variis lectionibus oppletae sunt a diversis manibus inde ab XI. saeculo adscriptis, notaque γρ, h. e. γράφεται, modo adiecta modo non adiecta, sed etiam ipsa verba oratoris saepe numero correcta sunt, et ita quidem ut erasa scriptura vetus modo indagari etiamnum possit, modo prorsus evanuerit. Quarum correctionum, licet per se non omnino inutilium ut ex libris ipsarum quoque ac partim vetustis admodum repetitarum,—velut quas manus adpinxit eius, qui nota Δ (h. e. διώρθωται) vel Δ μετρίως orationibus tredecim subscripta se codicem hunc ad alium exegisse indicavit—tamen ad ipsam libri naturam atque indolem cognoscendam apparet nullum esse usum, idque potissimum quaeri, quid a prima manu scriptum fuerit. Etsi vero, ex quo Imm. Bekkerus in ed. Oxon. 1823, ex qua expressa est ed. Berolin. 1824, huius libri thesauros aperuit, eiusque fide plus tria millia locorum correxit, de eius bonitate omnino inter viros doctos convenit (excepto solo quod sciam C. G. Cobeto, qui in Mnemos. l. l. data opera eam nec sine ira atque studio detrectat, — quasi vero quis vitiorum omnino impunem et omni numero absolutum hunc librum esse unquam dixerit), adeo ut iam non ubi sequendus, sed ubi deserendus sit agatur, tamen quum in aestimandis singulis lectionibus, tum in tractando toto illo genere, quod in plurium verborum et integrarum sententiarum praetermissione versatur — cuius exemplum luculentissimum praebet or. IX. — mirum

quantum iidem inter se discrepant. Ac proxime quidem ad eius auctoritatem sese applicuerunt, qui Turici cum reliquis oratoribus Atticis Demosthenem ediderunt 1850, I. G. Baiterus et H. Sauppius (cf. diar. ant. stud. 1842. p. 1223 sqq. ephem. litt. Ien. 1844. n. 53 sq. Mageri *pädag. Revue* 1846. Dec. p. 333 sqq.): hi enim eam sibi scripserunt legem, ut primam ubique manum Parisini restituerent, reliquos libros demum, ubi illa plane ferri non posset, in auxilium vocarent, eandemque in sententiam quum ipsi tum Funkhaenelius, Scheibius, Doberenzius, alii copiosius disputaverunt in libris infra suo loco nominandis. Longius aliquanto a Parisino recesserunt, et ita quidem ut diversis inter se intervallis ab illo libro absint, qui suum iudicium in edendis Demosthenis orationibus sequi quam ex unius libri quantumvis boni fide suspensum habere maluere, I. Th. Voemelius, cuius editio prodiit Paris. 1843 (cf. ephem. litt. Ien. 1844. n. 290 sq. annal. Heidelb. 1844. 3. p. 393 sqq. Iahnii annal. phil. t. XLII. p. 226 sqq. LII. p. 83 sqq. diar. ant. stud. 1845. p. 673 sqq.), Gu. Dindorfius, qui postquam in ed. prima Lips. 1825 Imm. Bekkeri textum ex libro Parisino passim correctum exhibuit, in altera, quae Oxon. 1846—1851. IX voll., quorum I—IV textum, V—VII editorum adnotationes, VIII. IX. scholia graeca continent, et in tertia, quae Lips. 1852. III voll. prodiit, iam denuo verba oratoris ad eiusdem libri iterum collati auctoritatem exegit (cf. Iahnii annal. phil. t. LXII. p. 352 sqq. LXIII. p. 292 sqq.), ipse denique Imm. Bekkerus, qui quomodo iam de Parisino libro iudicet, hac ipsa ex editione eque adnotatione critica singulis voluminibus praemissa apparet, in qua quae recensentur emendationes, eidem tantum non omnes libro debentur.

Praeterea in emendandis singulis complurium Demosthenis orationum locis operam posuere F. G. Engelhardt *adnotationes criticae in Dem. orr.*, Berol. 1828. J. A. C. Schaefer *observationes ad aliquot Dem. locos*, Erlang. 1829. R. Klotz *quaestiones criticae*, Lips. 1831. C. H. Funkhaenel *quaestiones Demosthenicae*, Lips. 1831. et *symbolae criticae* in diar. scholast. 1832. II. p. 793—800 et in edit. Turic. minor. t. IV. et VI. P. P. Dobree *Adversaria*, P. II., Cantabr. 1832, p. 347—552, quarum pars iam prodierat in St. Dobsoni edit. Dem. t. VII. Lond. 1828. A. Doberenz *observationes Demosthenicae*, Lips. 1836. C. F. Scheibe *observationes in oratores Atticos*, Hal. 1836. E. Benseler *de hiatu in oratoribus atticis*, Friberg. 1841, p. 62—107 et *de hiatu in Dem. orationibus*, Frib. 1848. H. Sauppe *epistola critica ad G. Hermannum*, Lips. 1840. G. A. Hirschig *annotationes ad comicos, Aeschylum, Isocratem, Demosthenem* etc. Trai. 1849. et in Philol. t. V. p. 329—344.

De ipsis Demosthenis rebus qui exposuere, indicatos vide in comment. praemissa vol. I. p. V, quibus adde C. T(hirlwall) *on the birth-year of Dem.*, in *the philol. Museum* 1833. 5. p. 389—411, cuius ex calculo natus est ol. XCVIII, 4. I. Bake, *quaeritur quo anno D. natus sit*, in Scholic. hypomnemat. t. III. 1844. p. 340—385, qui Boeckhii calculo probato totus versatur in refutandis Boehneckii rationibus. I. E. Heinrichs *quaestt. Demosthenicae*, Berol. 1853, qui hoc maxime agit, ut Demosthenem ol. XCIX, 1. natum esse demonstret. — Prolegomena in Demosthenis orationes scripsit E. Schaumann Primisl. 1829, in orr. de rep. habitas F. Goeller Colon. 1822. — De arte Dem. oratoria exposuit I. H. Scholten *disquis. de Demostheneae eloquentiae charactere*, Trai. 1835. — Denique germanice interpretati sunt universas orr. I. I. Reiske Lemg. 1764 sqq., V voll., H. A. Pabst Stuttg. 1839 sqq., orr. de rep. habitas F. Iacobs Lips. 1805, denuo addita or. XVIII. 1833, Philippicas A. G. Becker Hal. 1824.

Restat ut de singulis breviter exponatur.

ORATIONES.

I—IX (XII). *Φιλιππικοὶ λόγοι.* Harum orationum ordinem et tempora exponit Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 10. Cf. C. A. Ruediger *de canone Philippicarum Dem.*, Friberg. 1820, rep. in Schaeferi Appar. crit. I. p. 122 sqq. et in auctoris ed. Philipp. t. II. p. 190 sqq. De ordine quo citantur a grammaticis veteribus vid. Boehnecke *Forschungen* p. 232 sq. — Ediderunt singulatim Imm. Bekker Berol. 1816. 1835, partim integras partim selectas, easque commentariis instructas C. A. Ruediger Lips. 1818, iterum 1829 sqq. (cf. Seebood. bibl. crit. 1830. n. 53 sq. ephem. litt. Lips. 1832. n. 216 sq. diar. scholast. 1830. II. n. 82. diar. ant. stud. 1834. p. 1201 sqq. Iahnii annal. phil. t. XII. p. 386 sqq.), tertium 1848. vol. I. (cf. Iahnii annal. t. LV. p. 241 sqq. diar. erud. Monac. 1849. n. 223 sqq. diar. gymn. III. p. 679 sqq.), ad quod tamquam supplementum accedunt *lectiones Demostheneae* (ex decem quibus usus est libris excerptae) in Iahnii annal. suppl. t. XVIII. p. 451—464. I. H. Bremi Goth. 1829 (cf. Seebod. bibl. crit. 1830. n. 53. nov. bibl. crit. V, 1. p. 174 sqq. diar. scholast. 1830. II. n. 81), iterum cura H. Sauppii 1845 (cf. diar. ant. stud. 1848. p. 845 sqq. Iahnii annal. t. LX. p. 3 sqq.). I. Th. Voemel Francof. 1829 sqq. (cf. nov. bibl. crit. V, 1. p. 174 sqq. Seebod. bibl. crit. 1830. n. 53 sq. diar. scholast. 1830. II. n. 81 sq. 1833. n. 26 sqq. Iahnii annal. t. XI. p. 147 sqq. annal. Heidelb. 1830. 3. p. 302 sqq. ephem. litt. Lips. 1832. n. 216 sq.). Gu. A. Klinkmüller Sorav. 1832 (cf. diar. scholast. 1832. II. p. 1246 sqq.). F. I. Reuter Aug. Vind. 1833 (cf. Iahnii annal. t. XIV. p. 175 sqq.). F. Franke Lips. 1842 (cf. diar. ant. stud. 1843. p. 318 sqq.), iterum 1850 (cf. ibid. 1852. p. 169 sqq. diar. erud. Monac. 1852. n. 75. diar. gymn. 1852. p. 563 sqq.). A. Doberenz Hal. 1848 sqq. (cf. diar. erud. Monac. 1849. n. 49 sq. 1852. n. 62 sq. Iahnii annal. t. LVII. p. 349 sqq. diar. gymn. 1851. p. 722 sqq.). A. Westermann in orr. select. t. I. Lips. 1851 (cf. diar. erud. Monac. 1852. n. 75 sq.), iterum 1853.

I—III. *Ὀλυνθιακὸς α΄. β΄. γ΄.* Olymp. CVII 3/4. 349: contra a. 350 habitas omnes tres ait Boehnecke *Forschungen* p. 159 sqq. Cf. O. Haupt *Demosthenische Studien*, I. Coeslin. 1852. p. 44 sqq. Ordinem a Dionysio ep. ad Amm. I, 4. institutum (β΄ γ΄ α΄), sed iam a Caecilio rhetore aequali impugnatum (vid. Schol. cod. Σ ad or. II. init. p. 71 ed. Dind.) defendit R. Rauchenstein *de orr. Olynth. ordine*, Lips. 1821, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. I. p. 150 sqq. et in Dem. orr. sel. ed. Bremi p. V sqq., vulgari, quem et libri praebent manu scripti et grammatici veteres sequuntur, patrocinati sunt A. G. Becker in interpret. orr. Philipp. germ. t. I. p. 105 sqq., A. Westermann *quaestt. Demosth.* P. I. Lips. 1830. A. Ziemann *in Dem. de bello Philippi Olynthico comm.*, Quedlinb. 1832. C. F. Ranke *comm. de Dem.* in Encycl. litt. t. XXIV. p. 93—95, et dissertationibus *de orr. Olynth. ordine* inscriptis C. G. A. Stueve Osnabr. 1830. F. Gu. Th. Petrenz Gumb. 1833 sq., C. A. F. Brueckner Schweidn. 1833. Cf. eiusd. *König Philipp* p. 340—352 et comment. vol. I. praemissam p. XVII sq. — Singulatim ediderunt C. H. Frotscher et C. H. Funkhaenel Lips. 1834 (cf. diar. ant. stud. 1835. p. 297 sqq.).

IV. *κατὰ Φιλίππου α΄.* In duas disiungit Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. et 10, §§. 1—29. et 30—51, quarum alteram ol. CVII, 1. 352/351, alteram ol. CVIII, 2. 347/346 habitam esse ait. De qua re multum in utramque partem disputatum est. Nostra aetate cum Dionysio eatenus, ut in duas hanc orationem separandam crederent, fecerunt I. Held *prolegg. ad Dem. or. quae vulgo prima Philippicarum dicitur*, Vratisl. 1831, et M. Seebeck in diar. ant. stud. 1838. n. 91—97, contra disputarunt maxime A. G. Becker, *Dem. als Staatsm. u. Redner*, p. 268 sqq. et I. H. Bremi, *des Dem. I. Philipp. Rede ist nur ein Ganzes*, in *Philol. Beitr. a. d. Schweiz* I. 1819. p. 21—34. Reliquos recenset Boehnecke For-

schungen p. 222 sqq., qui, dum alii hanc orationem ol. CVII, 1. aut 2. aut 3. aut CVIII, 1. habitam censent, ipse ante captam Olynthum ponit CVII, 4. 348. Nuper in ol. CVII, 1. reiecit Schoening *über die rednerische Kunst in der I. Phil. des Dem.*, Gott. 1849, in ol. CVII, 2. 351/350 O. Haupt *Demosth. Studien* I. p. 4 sqq., quae iam fuerat sententia Zimmermanni in comm. de Dem. reip. administr. p. 44 sq. Tractant singulos locos C. Gu. Krueger *annott. ad Dem. Phil. I. spec.*, Bernb. 1826, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. V. p. 761—772, I. Held *annott. in or. quae vulgo I. Phil. dicitur*, Vratisl. 1831, H. Sauppe epist. crit. p. 35—49.

V. *περὶ εἰρήνης*. Ol. CVIII, 3. 346. Scriptam quidem, sed non habitam sibi videri praeter rem monet Liban. argum. p. 56. Cf. Photii bibl. cod. CCLXV. p. 492 a. De re vid. Ranke *Dem.* p. 99, Brueckner *K. Philipp* p. 198 sq., comment. vol. I. praemiss. p. XXII. Enarrat orationem L. Mezger in Iahnii annal. suppl. t. XIII. p. 581—590. Singulos locos tractat C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1841. p. 404—406.

VI. *κατὰ Φιλίππου β΄*. Ol. CIX, 1. 344/343. Cf. Boehnecke l. l. p. 437 sq. Brueckner l. l. p. 211 sqq. et comm. vol. I. p. XXIV. Adde I. Th. Voemel, *integram esse Dem. Phil. II. apparet ex dispositione*, Francof. 1828. Singulos locos tractant L. Spengel in diar. scholast. 1833. II. p. 884—887. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1841. p. 401—404. et in diar. gymn. 1852. p. 91.

VII. [*περὶ Ἁλοννήσου.*] Ol. CIX, 2. 343. De auctore, argumento, inscriptione dictum est in comm. vol. I. p. XXIV. Hegesippi esse credi monent Liban. argum. p. 75. Harpocr. p. 92, 10. Etym. M. p. 418, 46. Suid. s. v. *Ἡγήσιππος*, dubitat certe Photius bibl. cod. CCLXV. p. 491 a. Non persuaserunt hi B. G. Weiskio pro Demosthene pugnanti in diss. *super or. de Halonneso*, Lubben. 1808, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. I. p. 437 sqq. Sed Hegesippo quum alii tum Winiewski comm. in or. d. cor. p. 130 sqq., Brueckner l. l. p. 224 sqq., Voemel in comm. qua *ostenditur Hegesippi esse or. de Hal.*, Francof. 1830, qui et ipsius sub nomine hanc or. Francof. 1833 edidit, recte tribuerunt. Cf. Sauppii fragm. oratt. att. p. 257 sq.

VIII. *περὶ τῶν ἐν Χερρονήσῳ.* Ol. CIX, 3. 341. Cf. Winiewski l. l. p. 174. Brueckner l. l. p. 254 sqq. et comm. vol. I. p. XXV. Singulos locos tractant A. Doberenz *Anmerk. zu der Rede des D. üb. die Angelegenh. im Chersones*, Hildburgh. 1844. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1850. p. 213.

IX. *κατὰ Φιλίππου γ΄*. Ol. CIX, 3. 341. Ante Chersonesiticam habitam esse, id quod iam opinatus est Zimmermann in comm. de Dem. reip. administr. p. 95 sq., demonstrare studuerunt Voemel dissert. Francof. 1837 et I. G. Droysen in diar. ant. stud. 1839. p. 714 sq. Sed vid. Winiewski l. l. p. 175 sqq., Boehnecke l. l. p. 453, Spengel in comm. mox laudanda p. 10 sq. Tractant hanc orationem L. Spengel in diss. *über die III. phil. Rede des D.*, in comm. acad. Bavar. III, 1., separatim edita Monac. 1839 (cf. diar. ant. stud. 1840. p. 1154 sq.) et C. H. Funkhaenel in *epistola gratulatoria ad G. Hermannum*, quae inserta est Iahnii annal. suppl. t. VII. p. 21—32, in *Observv. crit. in Dem. Phil. III.*, Isenac. 1841, et in diar. ant. stud. 1841. p. 305—315.

X. [*κατὰ Φιλίππου δ΄.*] Ol. CIX 3/4. 341. habita creditur. Cf. Boehnecke l. l. p. 453. Hermogeni licet non suspectam — nec magis sane Dionysio, Aristidi, Harpocrationi aliisque grammaticis — pro spuria hanc orationem habuisse Anastasium Ephesium et nonnullos technographorum ait Ioannes Siceliota comm. in Hermog. t. VI. p. 253 ed. Walz. Defendit quidem Ulpianus p. 190 ed. Dind., sed magna ex parte ex aliis Demosthenis orationibus conflatam, ex quo in suspicionem vocavit Valckenarius diatr. de Phil. p. 251, praeter Boehneckium et Benselerum de hiatu p. 78 sq., qui interpolatam tantum esse vult,

hodie non est qui non supposititiam esse credat. Cf. Wolfii prolegg. ad Lept. p. LX, Boeckh *Staatshaush. d. Ath.* t. I. p. 248. 307, Weiske de hyperbole I. p. 10. III. p. 33, Bremi in *philol. Beitr.* I. p. 28, A. G. Becker interpr. orr. Phil. germ. II. p. 491—510, Brueckner l. l. p. 353, W. H. Veersteg spec. litt. *quo oratio Phil. IV. Demostheni abiudicatur*, Groning. 1818, A. Krause *über die Unechtheit der IV. Phil. Rede*, Neu-Stettin 1847.

XI. [πρὸς τὴν ἐπιστολὴν τὴν τοῦ Φιλίππου.] Ol. CX, 1. 339. ponit Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 10, Ol. CIX, 4. 340. Boehneckius, qui solus ab ipso Demosthene compositam esse demonstrare studuit l. l. p. 463 sqq., suppositam existimantibus post Taylorum Valckenario l. l. p. 270, Boeckhio *Staatshaush. d. Ath.* t. I. p. 543, Larchero in *Mém. de l'acad. des Inscr.* t. II. 1815. p. 243—269, A. G. Beckero interpr. orr. Phil. germ. II. p. 516—519, Benselero de hiatu p. 81 sq., Cobeto in Mnemos. t. III. p. 110, aliis.

XII. [ἐπιστολὴ Φιλίππου.] Satis inepte haec inter Demosthenis orationes numeratur. Sed ipsa quoque, ut recte iam Taylorus sensit, supposititia est. Accedit quod non legitur in optimo codice Parisino. Nec profecisse quicquam putandus est Boehneckius, qui tutari eam conatus est l. l. p. 461 sqq. Contra Taylorum secuti sunt Funkhaenel quaestt. Dem. p. 34 sq., Benseler de hiatu p. 84, A. Westermann comm. de epist. scriptt. graec. P. VI. p. 17.

XIII. [περὶ συντάξεως.] Quod in tempus haec inciderit oratio iam veteribus interpretibus non liquebat. Vid. Ulpian. p. 216 ed. Dind. Habitam olim credidere ol. CVI, 4, sed post CVII, 2. scriptam fingi patet ex §. 8, ubi Rhodiorum democratia sublata memoratur. Ol. CVII, 3. 349. ponunt Boehnecke l. l. p. 170 sqq. 230 sq. et O. Haupt *Demosth. Studien* I. p. 28—34, uterque ab ipso Demosthene profectam ratus, quamquam Hauptius ita ut tantum §§. 1—18. 32—36 a summo oratore scriptas, reliqua ex aliis eius orationibus temere compilata esse contendat. Supposita tota est Wolfio prolegg. ad Lept. p. LXXIV, Boeckhio *Staatshaush. d. Ath.* t. I. p. 93. 310. 584, Benselero de hiatu p. 85, aliis.

XIV. περὶ συμμοριῶν. Ol. CVI, 3. 354. Vid. Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Illustrant I. H. Amersfoordt diss. *de symmoriarum ap. Athen. instituto*, Lugd. Bat. 1821, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. I. p. 718 sqq., F. G. Parreidt disp. *de instituto eo Atheniensium, cuius ordinationem et correctionem in or. π. σ. suadet Dem.*, Magdeb. 1836, quam tamquam prolegomena hanc in or. recepit Dindorfius ed. Oxon. t. V. p. 228—254. Huius orat. §. 14—30. tamquam sui apparatus critici specimen edidit I. Th. Voemel in prolus. scholast. Francof. 1852. Eandem orationem tractat C. A. Ruediger diss. *de codice Dem. Dresdensi*, Dresd. 1845, rep. in Iahnii annal. phil. suppl. t. XI. p. 152—159.

XV. περὶ τῆς Ῥοδίων ἐλευθερίας. Ol. CVII, 2. 351. Vid. Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Cf. Brueckner l. l. p. 137 sqq.

XVI. ὑπὲρ Μεγαλοπολιτῶν. Ol. CVI, 4. 352. Cf. Brueckner l. l. p. 77 sqq. — Ad orr. XIV—XVI spectant C. A. Ruedigeri *lectionum Demosthenicarum spec. duo*, Friberg. 1836.

XVII. [περὶ τῶν πρὸς Ἀλέξανδρον συνθηκῶν.] Ol. CXIII, 4. 325. habita vulgo creditur, sed CXI, 3. 334. ponit Clinton fast. hell. t. II. p. 360, aestate ol. CXI 1/2. 335. Boehnecke l. l. p. 629. Inter suppositas numerat Dion. Halic. iud. de Dem. 57; propius ab Hyperidis scribendi genere quam a Demosthenis abesse dicit Liban. argum. p. 211. Adde Phot. bibl. cod. CCLXV. p. 491 a. et Schol. cod. Bavar. ad orationis titulum. Cf. Sauppii fragm. orr. att. p. 277. Hyperid. fragm. ed. Schneidewin p. XVIII sq. L. Kayser in annal. Heidelb. 1853. p. 656. Hegesippo tribuit Ulpianus p. 254 ed. Dind. Contra Demostheni non eripiendam existimaverunt Turicenses.

XVIII. ὑπὲρ Κτησιφῶντος περὶ τοῦ στεφάνου. Ol. CXII, 3.

schungen p. 222 sqq., qui, dum alii hanc orationem ol. CVII, 1. aut 2. aut 3. aut CVIII, 1. habitam censent, ipse ante captam Olynthum ponit CVII, 4. 348. Nuper in ol. CVII, 1. reiecit Schoening *über die rednerische Kunst in der I. Phil. des Dem.*, Gott. 1849, in ol. CVII, 2. 351/350 O. Haupt *Demosth. Studien* I. p. 4 sqq., quae iam fuerat sententia Zimmermanni in comm. de Dem. reip. administr. p. 44 sq. Tractant singulos locos C. Gu. Krueger *annott. ad Dem. Phil. I. spec.*, Bernb. 1826, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. V. p. 761—772, I. Held *annott. in or. quae vulgo I. Phil. dicitur*, Vratisl. 1831, H. Sauppe epist. crit. p. 35—49.

V. *περὶ εἰρήνης*. Ol. CVIII, 3. 346. Scriptam quidem, sed non habitam sibi videri praeter rem monet Liban. argum. p. 56. Cf. Photii bibl. cod. CCLXV. p. 492 a. De re vid. Ranke *Dem.* p. 99, Brueckner *K. Philipp* p. 198 sq., comment. vol. I. praemiss. p. XXII. Enarrat orationem L. Mezger in Iahnii annal. suppl. t. XIII. p. 581—590. Singulos locos tractat C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1841. p. 404—406.

VI. *κατὰ Φιλίππου β'*. Ol. CIX, 1. 344/343. Cf. Boehnecke l. l. p. 437 sq. Brueckner l. l. p. 211 sqq. et comm. vol. I. p. XXIV. Adde I. Th. Voemel, *integram esse Dem. Phil. II. apparet ex dispositione*, Francof. 1828. Singulos locos tractant L. Spengel in diar. scholast. 1833. II. p. 884—887. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1841. p. 401—404. et in diar. gymn. 1852. p. 91.

VII. [*περὶ Ἀλοννήσου.*] Ol. CIX, 2. 343. De auctore, argumento, inscriptione dictum est in comm. vol. I. p. XXIV. Hegesippi esse credi monent Liban. argum. p. 75. Harpocr. p. 92, 10. Etym. M. p. 418, 46. Suid. s. v. *Ἡγήσιππος*, dubitat certe Photius bibl. cod. CCLXV. p. 491 a. Non persuaserunt hi B. G. Weiskio pro Demosthene pugnanti in diss. *super or. de Halonneso*, Lubben. 1808, rep. in Schaeferi Appar. crit. t. I. p. 437 sqq. Sed Hegesippo quum alii tum Winiewski comm. in or. d. cor. p. 130 sqq., Brueckner l. l. p. 224 sqq., Voemel in comm. *qua ostenditur Hegesippi esse or. de Hal.*, Francof. 1830, qui et ipsius sub nomine hanc or. Francof. 1833 edidit, recte tribuerunt. Cf. Sauppii fragm. oratt. att. p. 257 sq.

VIII. *περὶ τῶν ἐν Χερρονήσῳ*. Ol. CIX, 3. 341. Cf. Winiewski l. l. p. 174. Brueckner l. l. p. 254 sqq. et comm. vol. I. p. XXV. Singulos locos tractant A. Doberenz *Anmerk. zu der Rede des D. üb. die Angelegenh. im Chersones*, Hildburgh. 1844. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1850. p. 213.

IX. *κατὰ Φιλίππου γ'*. Ol. CIX, 3. 341. Ante Chersonesiticam habitam esse, id quod iam opinatus est Zimmermann in comm. de Dem. reip. administr. p. 95 sq., demonstrare studuerunt Voemel dissert. Francof. 1837 et I. G. Droysen in diar. ant. stud. 1839. p. 714 sq. Sed vid. Winiewski l. l. p. 175 sqq., Boehnecke l. l. p. 453, Spengel in comm. mox laudanda p. 10 sq. Tractant hanc orationem L. Spengel in diss. *über die III. phil. Rede des D.*, in comm. acad. Bavar. III, 1., separatim edita Monac. 1839 (cf. diar. ant. stud. 1840. p. 1154 sq.) et C. H. Funkhaenel in *epistola gratulatoria ad G. Hermannum*, quae inserta est Iahnii annal. suppl. t. VII. p. 21—32, in *Observv. crit. in Dem. Phil. III.*, Isenac. 1841, et in diar. ant. stud. 1841. p. 305—315.

X. [*κατὰ Φιλίππου δ'.*] Ol. CIX 3/4. 341. habita creditur. Cf. Boehnecke l. l. p. 453. Hermogeni licet non suspectam — nec magis sane Dionysio, Aristidi, Harpocrationi aliisque grammaticis — pro spuria hanc orationem habuisse Anastasium Ephesium et nonnullos technographorum ait Ioannes Siceliota comm. in Hermog. t. VI. p. 253 ed. Walz. Defendit quidem Ulpianus p. 190 ed. Dind., sed magna ex parte ex aliis Demosthenis orationibus conflatam, ex quo in suspicionem vocavit Valckenarius diatr. de Phil. p. 251, praeter Boehneckium et Benselerum de hiatu p. 78 sq., qui interpolatam tantum esse vult,

965. C. Rehdantz in Philol. t. 9—576. F. Franke diss. *de mulis quae in Dem. Aristocr. ur*, Mis. 1848.

V. κατὰ Τιμοκράτους. VI, 4. 353. Vid. Dionys. Halic. ad Amm. I, 4. Prolegomena scrit C. L. Blume Berol. 1823. Singulos locos tractant C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1842. p. 311—316. A. Westermann in Comm. reg. soc. litt. Sax. t. I. p. 1—60. Partem huius orationis, quae est §§. 110—187, ex Androtionea partim repetitam ab aliena manu insertam censet Benseler de hiatu p. 126 sq., tamquam suspectam significat in sua editione Voemelius. De ipsis repetitis in Dem. orr. locis commentati sunt Ch. G. Gersdorf *synops. repetitorum Dem. locorum*, Altenb. 1833. A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 127—166.

XXV. XXVI. [κατὰ Ἀριστογείτονος α'. β'.] Scriptae finguntur post Ol. CX, 3. 338. Vid. XXV, 37. In supposititiis habet Poll. X, 155, primam certe in dubium vocant Harpocr. p. 97, 21. 131, 16. Photius lex. p. 90, 10, alteram Dionys. Halic. iud. de Dem. 57: sed idem teste Libanio arg. p. 769 primam quoque. Utramque ab illius suspicione defendit Photius bibl. cod. CCLXV. p. 491a. Nostra aetate utramque alii, alii alterutram a Dem. scriptam negarunt. Cf. Ranke *Dem.* p. 110. Priorem Alexandrina aetate a rhetore compositam esse censet Boeckhius *Staatshaush. d. Ath.* t. I. p. 51 et *Urk. üb. d. Seewesen* p. 537 sq. Eidem, quam Hyperidi praeter rem tribuerat Reiskius animadv. ad Dem. p. 1199, patrocinatus est C. E. A. Schmidt in exc. *de duabus orr. in Aristog. Demostheni vulgo adscriptis*, eiusdem Dinarchi editioni (Lips. 1826) p. 106—117 adiecto. Cf. F. G. Kiessling quaestt. Attic. p. 6 sqq., A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 94—108 (rep. in Dindorfii ed. t. VI. p. 1013 sqq.).

XXVII—XXIX. κατὰ Ἀφόβου ἐπιτροπῆς α'. β'. et πρὸς Ἄφοβον ψευδομαρτυριῶν. Ol. CIV, 1. 364. Cf. comm. vol. I. p. VII. Litem enarrat A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 5—18 (cf. Dindorfii ed. t. VII. p. 1045 sqq.). Or. XXIX cum eodem (l. l. p. 11 sq.) suppositam iudicarunt Turicenses editores praef. p. XIII. Cf. Schoemanni antiq. iuris publ. Graecor. p. 274, 3. Singulos harum trium orationum locos tractat C. H. Funkhaenel in symbolis criticis ed. Turic. minoris vol. IV. p. VII—XII praemissis, primae A. Westermann in diar. ant. stud. 1845. p. 769—779. Adde I. N. Schmeisser *de re tutelari Atheniens. obss. quaedam ex Dem. orr. adv. Aph. et Onet. haustae*, Friburg. 1829.

XXX. XXXI. πρὸς Ὀνήτορα ἐξούλης α'. β'. Ol. CIV, 3. 362. Cf. XXX, 33. — Orr. XXVII—XXXI. edidit I. H. Bremi in orr. sel. Gott. 1829.

XXXII. πρὸς Ζηνόθεμιν παραγραφή. Scripta Demoni, quem patruum Demosthenis vulgo arbitrantur (cf. Ranke *Dem.* p. 112), aliquanto post ol. CVI, 2. 355. Vid. §. 31. Suspecta est Rankio l. l. p. 113.

XXXIII. πρὸς Ἀπατούριον παραγραφή. Temporis est incerti. Ob hiatum immoderate usurpatum ut aliae complures supposita est Benselero l. l. p. 151.

XXXIV. πρὸς Φορμίωνα περὶ δανείου. Scripta aliquanto post ol. CXI, 2. 335. Vid. §. 38. Ol. CXII, 1. 332. ponit Ranke l. l. p. 114. Sub titulo ὑπὲρ Χρυσίππου laudat Harpocr. p. 90, 12 et ὑπὲρ Χρυσίππου πρὸς τὴν Φορμίωνος παραγραφήν id. p. 80, 6, eademque inscriptio est in cod. Aug. I. Supposita est Benselero p. 149. Scripsit in eam prolegomena A. Baumstark Heidelb. 1826.

XXXV. πρὸς τὴν Λακρίτου παραγραφήν. Temporis est incerti. Non recte a nonnullis in suspicionem vocatam esse monet Liban. arg. p. 923. Supposita tamen Benselero est l. l. p. 151.

XXXVI. παραγραφὴ ὑπὲρ Φορμίωνος. Ol. CVII, 2. 351. ponit Boehnecke l. l. p. 43. 67, Ol. CVII, 3. 350. Clinton fast. hell. t. II. ad h. a. et Append. p. 358, item I. Herr-

330. Vid. comm. vol. I. p. XXXI. Ediderunt E. C. F. Wunderlich Gott. 1810. 1820. 1826. 1838. Imm. Bekker una cum Aeschinis or. in Ctesiphontem Hal. 1815. Berol. 1825. I. H. Bremi Gott. 1834. (cf. diar. ant. stud. 1835. p. 577 sqq. ephem. litt. Hal. 1836. n. 23 sq.). C. Dissen Gott. 1837. (cf. Iahnii annal. phil. t. XXII. p. 371 sqq.). A. Westermann in orr. select. t. II. Lips. 1850 (cf. diar. ant. stud. 1851. p. 421 sqq.), iterum 1855.— De forma huius orationis disputavere A. F. Wolper Lips. 1825. et Petersen Glueckst. 1844, de eius praestantia L. Ch. A. Briegleb Isenac. 1832. Prolegomena ad eam edidit F. G. Hertel Zwicc. 1838, commentarios histor. et chronol. F. Winiewski Monast. 1829. Singulos locos tractant L. Ph. Huepeden *annot. ad Dem. or. d. cor. spec.*, Cell. 1827. C. Foertsch *comm. crit. de locis nonnullis Lysiae et Dem.*, Lips. 1827, rep. in eiusd. ed. Lysiae 1829. R. Rauchenstein *obss. crit.*, Tur. 1829. I. G. Baiter in ed. Lycurgi Turic. 1834. p. 124 sqq. I. Th. Voemel prolus. schol. Francof. 1840. (§. 260.) et 1849 (§. 169). F. I. Reuter *quaestt. in Dem. or. de cor.*, Straubing. 1842. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1847. p. 404, in Philol. t. VI. p. 565 sqq., in diar. gymn. VI. p. 800 sqq.

XIX. *περὶ τῆς παραπρεσβείας.* Ol. CIX, 2. 343. Vid. comm. vol. I. p. XXII sqq., quaeque ibi praeter alia laudata sunt F. Frankii *prolegomena*, Misn. 1846. — Edidit cum commentario R. Shiletto Cantabr. 1845.

XX. *περὶ τῆς ἀτελείας πρὸς Λεπτίνην.* Ol. CVI, 2. 355. Vid. Dion. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Ediderunt F. A. Wolf Hal. 1789 (repeti hanc ed. curavit I. H. Bremi Tur. 1831) et A. Westermann in orr. sel. t. II. 1850, iterum 1855. Singulos locos tractant idem in diar. ant. stud. 1844. p. 577—587. 769—779 et comm. crit. in scriptt. graec. P. I. p. 1 sq., I. Bake scholic. hypomn. t. III. 1844. p. 120—128.

XXI. *κατὰ Μειδίου περὶ τοῦ κονδύλου.* Ol. CVII, 4. 348. secundum Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4, cui quum alii tum Boehneckius l. l. p. 8 sqq. patrocinati sunt, rectius ol. CVI, 4/CVII, 1. 352 ex Boeckhii rationibus in comm. *über die Zeitverhältnisse in der Rede des D. gegen M.* inserta Comm. acad. Berol. 1818 p. 60—100 expositis atque ex eis quae supra in comm. vol. I. p. VI sq. disputata sunt. Litem enarravit A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 18—30 (cf. Dindorfii ed. t. VI. p. 724 sqq.), ipsam probolen I. Bake schol. hypomn. t. III. p. XXXI sq., adversus quem disputant C. F. Hermann ind. lectt. Gott. 1847/8. G. F. Schoemann in Philol. t. V. p. 593—607. Ediderunt G. L. Spalding Berol. 1794, Ph. Buttmann Berol. 1823. 1841. Gu. A. Blume Sund. 1828. M. H. E. Meier Hal. 1831. Singulos locos tractant C. F. Hermann ind. lectt. Marb. 1833. (rep. in Iahnii annal. suppl. t. IV. p. 331 sqq.). I. Bake schol. hypomn. t. III. p. 129—185. A. Westermann in diar. ant. stud. 1845. p. 676—695, comm. crit. in scriptt. gr. P. II. p. 6 sqq., Act. reg. soc. litt. Sax. t. I. p. 432 sqq. et comm. *de litis instrumentis quae exstant in or. Mid.*, Lips. 1844.

XXII. *κατὰ Ἀνδροτίωνος παρανόμων.* Ol. CVI, 2. 355. Vid. Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Edidit C. H. Funkhaenel Lips. 1832. Huius orationis locum in prolus. scholast. tractat M. Mohr, Muenstereif. 1845.

XXIII. *κατὰ Ἀριστοκράτους.* Ol. CVII, 1. 352. Vid. Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Cf. F. C. Rumpf *de Charidemo Orita*, Giess. 1815. Ediderunt E. Gu. Weber Ien. 1845 (cf. Iahnii annal. phil. t. XLVII. p. 168 sqq. 400 sqq. diar. erud. Monac. 1846. n. 213 sqq. annal. Berol. 1846. n. 99 sq. annal. Heidelb. 1846. 2. p. 270 sqq. diar. ant. stud. 1848. p. 622 sqq. M. H. E. Meier obss. in Dem. or. in Aristocr. ed. Weber, Hal. 1849) et A. Westermann in orr. sel. t. III. 1852. Singulos locos tractant I. D. de Riemer *spec. crit. in Dem. or. adv. Arist.*, Rotterod. 1833. C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1841. p.

956—965. C. Rehdantz in Philol. t. I. p. 569—576. F. Franke diss. *de legum formulis quae in Dem. Aristocr. reperiuntur*, Mis. 1848.

XXIV. κατὰ Τιμοκράτους. Ol. CVI, 4. 353. Vid. Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 4. Prolegomena scripsit C. L. Blume Berol. 1823. Singulos locos tractant C. H. Funkhaenel in diar. ant. stud. 1842. p. 311—316. A. Westermann in Comm. reg. soc. litt. Sax. t. I. p. 1—60. Partem huius orationis, quae est §§. 110—187, ex Androtionea partim repetitam ab aliena manu insertam censet Benseler de hiatu p. 126 sq., tamqùam suspectam significat in sua editione Voemelius. De ipsis repetitis in Dem. orr. locis commentati sunt Ch. G. Gersdorf *synops. repetitorum Dem. locorum*, Altenb. 1833. A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 127—166.

XXV. XXVI. [κατὰ Ἀριστογείτονος α'. β'.] Scriptae finguntur post Ol. CX, 3. 338. Vid. XXV, 37. In supposititiis habet Poll. X, 155, primam certe in dubium vocant Harpocr. p. 97, 21. 131, 16. Photius lex. p. 90, 10, alteram Dionys. Halic. iud. de Dem. 57: sed idem teste Libanio arg. p. 769 primam quoque. Utramque ab illius suspicione defendit Photius bibl. cod. CCLXV. p. 491a. Nostra aetate utramque alii, alii alterutram a Dem. scriptam negarunt. Cf. Ranke *Dem.* p. 110. Priorem Alexandrina aetate a rhetore compositam esse censet Boeckhius *Staatshaush. d. Ath.* t. I. p. 51 et *Urk. üb. d. Seewesen* p. 537 sq. Eidem, quam Hyperidi praeter rem tribuerat Reiskius animadv. ad Dem. p. 1199, patrocinatus est C. E. A. Schmidt in exc. *de duabus orr. in Aristog. Demostheni vulgo adscriptis*, eiusdem Dinarchi editioni (Lips. 1826) p. 106—117 adiecto. Cf. F. G. Kiessling quaestt. Attic. p. 6 sqq., A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 94—108 (rep. in Dindorfii ed. t. VI. p. 1013 sqq.).

XXVII—XXIX. κατὰ Ἀφόβου ἐπιτροπῆς α'. β'. et πρὸς Ἄφοβον ψευδομαρτυριῶν. Ol. CIV, 1. 364. Cf. comm. vol. I. p. VII. Litem enarrat A. Westermann quaestt. Dem. P. III. p. 5—18 (cf. Dindorfii ed. t. VII. p. 1045 sqq.). Or. XXIX cum eodem (l. l. p. 11 sq.) suppositam iudicarunt Turicenses editores praef. p. XIII. Cf. Schoemanni antiq. iuris publ. Graecor. p. 274, 3. Singulos harum trium orationum locos tractat C. H. Funkhaenel in symbolis criticis ed. Turic. minoris vol. IV. p. VII—XII praemissis, primae A. Westermann in diar. ant. stud. 1845. p. 769—779. Adde I. N. Schmeisser *de re tutelari Atheniens. obss. quaedam ex Dem. orr. adv. Aph. et Onet. haustae*, Friburg. 1829.

XXX. XXXI. πρὸς Ὀνήτορα ἐξούλης α'. β'. Ol. CIV, 3. 362. Cf. XXX, 33. — Orr. XXVII—XXXI. edidit I. H. Bremi in orr. sel. Gott. 1829.

XXXII. πρὸς Ζηνόθεμιν παραγραφή. Scripta Demoni, quem patruum Demosthenis vulgo arbitrantur (cf. Ranke *Dem.* p. 112), aliquanto post ol. CVI, 2. 355. Vid. §. 31. Suspecta est Rankio l. l. p. 113.

XXXIII. πρὸς Ἀπατούριον παραγραφή. Temporis est incerti. Ob hiatum immoderate usurpatum ut aliae complures supposita est Benselero l. l. p. 151.

XXXIV. πρὸς Φορμίωνα περὶ δανείου. Scripta aliquanto post ol. CXI, 2. 335. Vid. §. 38. Ol. CXII, 1. 332. ponit Ranke l. l. p. 114. Sub titulo ὑπὲρ Χρυσίππου laudat Harpocr. p. 90, 12 et ὑπὲρ Χρυσίππου πρὸς τὴν Φορμίωνος παραγραφήν id. p. 80, 6, eademque inscriptio est in cod. Aug. I. Supposita est Benselero p. 149. Scripsit in eam prolegomena A. Baumstark Heidelb. 1826.

XXXV. πρὸς τὴν Λακρίτου παραγραφήν. Temporis est incerti. Non recte a nonnullis in suspicionem vocatam esse monet Liban. arg. p. 923. Supposita tamen Benselero est l. l. p. 151.

XXXVI. παραγραφὴ ὑπὲρ Φορμίωνος. Ol. CVII, 2. 351. ponit Boehnecke l. l. p. 43. 67, Ol. CVII, 3. 350. Clinton fast. hell. t. II. ad h. a. et Append. p. 358, item I. Herr-

mann diss. *de tempore quo orationes quae feruntur Demosthenis pro Apollodoro et Phormione scriptae sunt*, Erf. 1842.

XXXVII. παραγραφὴ πρὸς Πανταίνετον. Scripta est post Theophilum archontem ol. CVIII, 1. 348/7. Vid. §. 6.

XXXVIII. παραγραφὴ πρὸς Ναυσίμαχον καὶ Ξενοπείθη. Temporis est incerti.

XXXIX. πρὸς Βοιωτὸν περὶ τοῦ ὀνόματος. Ol. CVII 2/3. 350. Vid. Clinton fast. hell. t. II. ad ol. CVII,3. Boeckh *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 679 sqq. et *Urk. üb. d. Seew.* p. 22 sq. Boehnecke l. l. p. 49. Dinarcho non recte a nonnullis tribui ostendit Dionys. Halic. iud. de Din. 13.

XL. πρὸς Βοιωτὸν περὶ προικὸς μητρῴας. Hanc quoque non recte Dinarcho tribui Dionys. l. l. monet, 'qui habitam dicit duobus vel tribus annis post eam, de qua modo dictum est. Incidit igitur fere in ol. CVIII, 1/2. 347. Cf. Boeckh *Urk. üb. d. Seew.* p. 23. Supposita est Benselero l. l. p. 151.

XLI. πρὸς Σπουδίαν ὑπὲρ προικός. Temporis est incerti.

XLII. [πρὸς Φαίνιππον περὶ ἀντιδόσεως.] Temporis est incerti. Non pro Demosthenica haberi a nonnullis monet Liban. argum. p. 1037. Supposita est Clintoni fast. hell. t. II. p. 358, Schaefero, Turicensibus, Dindorfio, Benselero l. l. p. 151.

XLIII. πρὸς Μακάρτατον περὶ Ἁγνίου κλήρου. Non multo post ol. CV, 1. 360/359, quo Isaei de Hagniae hereditate oratio scripta videtur, ponit Boehnecke l. l. p. 675, contra ol. CIX, 2. 343. C. de Boor in libro *über das att. Intestat-Erbrecht, zunächst als Prolegg. z. der Rede des D. gegen M.*, Hamb. 1838. p. 139 sqq. (cf. diar. ant. stud. 1840. p. 21 sqq. ephem. litt. Hal. 1840. suppl. n. 65—68). Supposita est Benselero l. l. p. 151.

XLIV. πρὸς Λεωχάρη. Temporis est incerti. Suppositam censent Turicenses editores atque **Benseler l. l. p. 151.**

XLV. XLVI. κατὰ Στεφάνου ψευδομαρτυριῶν α'. [β'.] Circa ol. CVIII, 1. 348. ponit C. D. Beels *diatr. in Dem. orr. in Steph.*, Lugd. Bat. 1825. (cf. Dindorfii ed. t. VII. p. 1226 sqq.), eodemque tempore I. Herrmann l. l., ol. CVII, 2. Boehnecke l. l. p. 43. Supposita est altera etiam Benselero l. l. p. 147 sq. et Dindorfio, utraque Turicensibus. Defendit Clinton fast. hell. t. II. p. 358.

XLVII. [κατὰ Εὐέργου καὶ Μνησιβούλου ψευδομαρτυριῶν.] Scripta est post Agathoclem archontem ol. CV, 4. 357. Suspecta est Harpocrationi p. 67, 8. 94, 5. Nostra aetate in dubium vocarunt Boeckh *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 63. 463, Clinton fast. hell. t. II. p. 358, Schaeferus, Turicenses, Benseler p. 149, alii.

XLVIII. κατὰ Ὀλυμπιοδώρου βλάβης. Scripta est post Pythodotum archontem ol. CIX, 2. 343. Vid. §. 26. Supposita est Benselero l. l. p. 151.

XLIX. [πρὸς Τιμόθεον ὑπὲρ χρέως.] Exponunt litem F. C. Rumpf comm. *de or. adv. Tim.*, Giess. 1821. et C. Rehdantz vit. Iphicratis, Chabriae, Timothei p. 193—198. Intra ol. CV. 360—356 ponit Rehdantz p. 196, ol. CV, 3/4. I. Herrmann l. l. p. 18. In dubium vocatam ab Harpocr. p. 105, 8 damnaverunt Schaeferus, Turicenses, Dindorfius, Benseler l. l. p. 148, defenderunt Clinton fast. hell. t. II. p. 259 et Rumpfius l. l.; rem in medio reliquit Rehdantz p. 195.

L. [πρὸς Πολυκλέα περὶ τοῦ τριηραρχήματος.] Scripta est post ol. CIV, 4. 361. Vid. §. 48. Cf. Clinton fast. hell. t. II. ad h. a. et p. 359. Boeckh *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 715. Ol. CV, 1. ponit Ranke *Dem.* p. 116, inter ol. CV, 2 et CVII, 2. I. Herrmann l. l. p. 19. Supposita est Benselero l. l. p. 150.

LI. περὶ τοῦ στεφάνου τῆς τριηραρχίας. Temporis est incerti. Cf. Parreidt disp. de symmoriis p. 28, I. Herrmann l. l. p. 20. Ol. CIV, 4. 361. ponit Ranke *Dem.* p.

116. Suspecta est A. G. Beckero *Dem. als Staatsmann u. Redner* t. II. p. 415, Turicensibus, Benselero l. l. p. 152.

LII. [πρὸς Κάλλιππον.] Intra ol. CV, 1—CVI, 2. 360—355. ponit I. Herrmann l. l. p. 15 sq. Supposita est Benselero l. l. p. 149.

LIII. [πρὸς Νικόστρατον περὶ τῶν Ἀρεθουσίου ἀνδραπόδων.] Brevi post ol. CVII, 1. habitam censet Droysen in diar. ant. stud. 1839. p. 931, Ol. CVII, 2. Boehnecke l. l. p. 675, post ol. CVIII, 1. I. Herrmann l. l. p. 20 sq. Suspectam Harpocrationi p. 26, 21 damnaverunt Boeckh *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 471. 495. 502, Clinton fast. hell. t. II. p. 357, Benseler l. l. p. 150.

LIV. κατὰ Κόνωνος αἰκίας. Ol. CIX, 3. 341. Vid. §. 3. Cf. Clinton fast. hell. t. II. p. 360. Edidit A. Westermann in orr. sel. t. III. 1852.

LV. [πρὸς Καλλικλέα περὶ χωρίου.] Temporis est incerti.

LVI. κατὰ Διονυσοδώρου βλάβης. Scripta est post ol. CXII, 2. 331. Vid. §. 7. Ol. CXII, 4. 329 ponit Clinton ad h. a. Supposita est Benselero l. l. p. 150, suspecta certe Turicensibus praef. p. XIV.

LVII. ἔφεσις πρὸς Εὐβουλίδην. Ol. CVIII, 3. 346/5. Cf. Clinton ad h. a. Supposita est Benselero l. l. p. 130, qui non recte inter publicas orationes refert. Edidit A. Westermann in orr. sel. t. III. 1852. Cf. Eiusd. comm. crit. in scriptt. gr. P. II. p. 10 sqq.

LVIII. [ἔνδειξις κατὰ Θεοκρίνου.] Scripta est post Lyciscum archontem ol. CIX, 1. 344. Vid. §. 28. Post ol. CXI, 1. 336, ex quo Dinarchus orationes scribere coepit, ponit Clinton fast. hell. t. II. ad ol. CXI, 4, si quidem in Dinarcheis orationibus recenset Dionys. Halic. iud. de Din. 10. Dinarcho tribui a plurimis monet Liban. argum. p. 1321. Eidem an Demostheni tribuat incertus est Harpocr. p. 3, 23. 95, 17. cf. Apostol. prov. XVII, 21. Suppositam Demostheni quum editores tum Boeckhius *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 471 aliique iudicant.

LIX. [κατὰ Νεαίρας.] Post ol. CIX, 2. 343. ponit I. Herrmann l. l., ol. CX, 1. 340 Clinton fast. hell. t. II. p. 359. Hanc quoque non esse Demosthenis credi aiunt Liban. argum. p. 1344, Photius bibl. cod. CCLXV. p. 492a: in suppositis numerat Dionys. Halic. iud. de Dem. 57, damnat Phrynichus eclog. p. 225 ed. Lob., in suspicionem vocat Harpocr. p. 49, 8. 56, 2. 61, 1. 101, 18. 118, 11. Nec nostra aetate, postquam patrocinium eius suscepit Reiskius in interpr. germ. t. IV. p. 1, amplius est qui a Demosthene scriptam credat. Vid. Gu. Fittbogen, *or. c. N. Demosthenes non est auctor*, in diar. scholast. 1830. II. p. 273—286.

LX. [ἐπιτάφιος.] Scripta fingitur ol. CX, 3. 338. Vid. comm. vol. I. p. XXIX. Demosthene indignam hanc orationem iudicavere Dionys. Halic. iud. de Dem. 23. 44, Liban. d. partt. rhet. p. 6, in dubium vocarunt Harpocr. p. 7, 20. 109, 10, Gramm. ap. Bekk. anecd. p. 354, 10, alii. Cf. Phot. bibl. cod. CCLXV. p. 492a. Recentiorum suppositam censuerunt inde ab H. Wolfio plurimi, quorum ex sententia copiosius disputavit A. Westermann quaestt. Dem. P. II. p. 49—70 (cf. Dindorfii ed. t. VII. p. 1393 sqq.). Demosthenis tamen caussam egere A. G. Becker *Dem. als Staatsmann u. Redner* t. II. p. 466 sqq. et in adnot. ad interpr. germ. libri Dionysii de Dem. p. 120, C. Gu. Krueger in Seebodii *Archiv* I. 2. p. 227 et *hist. philol. Studien* p. 107, Benseler l. l. p. 154.

LXI. [ἐρωτικός.] Supposita Dionysio et Libanio ll. ll., suspecta Polluci III, 144. Cf. Photius l. l. Quo a iudicio qui defendere Demosthenem voluerit nemo exstitit. Exposuit rem A. Westermann quaestt. Dem. P. II. p. 70—83 (cf. Dindorfii ed. t. VII. p. 1413 sqq.). Androtioni tribuerunt Wesseling ad Herod. I, 29, Coraes ad Isocr. t. II. p. 40, I. C. Orelli ed. Isocr. de permut. p. 248, Bernhardy *wissensch. Syntax* p. 21. Sed vide Ranke *Dem.* p. 117.

ORATIONES DEPERDITAE.

De his commentati sunt Clinton fast. hell. t. II. p. 355 sq. A. Westermann hist. eloqu. Graec. p. 305 sq. Voemel ed. Paris. p. 787—794. H. Sauppe fragm. oratt. att. p. 250—257.

LXII. *πρὸς Ἀλκίμαχον*. Anaximenes apud Harpocr. p. 12, 17.

LXIII. [*περὶ τοῦ μὴ ἐκδοῦναι Ἅρπαλον*.] In suppositis recenset Dionys. Halic. iud. de Dem. 57. Cf. comm. vol. I. p. XXXII.

LXIV. *κατὰ Δημάδου*. *Bekk. anecd. p. 335, 30. Ad eandem fortasse pertinent quae auctore non nominato proferunt *Alexander et Herodianus in libris de figuris orationis apud Walz rhett. gr. t. VIII. p. 478. 602. cf. Boehnecke l. l. p. 554.

LXV. *Διφίλῳ δημηγορικὸς αἰτοῦντι δωρεάς*. Dionys. Halic. iud. de Din. 11.

LXVI. [*ἀπολογία δώρων*.] Dionys. Halic. ep. ad Amm. I, 14. Suppositiția est eidem iud. de Dem. 57. Eadem *περὶ χρυσίου* inscribitur apud Athen. XIII. p. 592e. Cf. comm. vol. I. p. XXXII. adn. 215.

LXVII. [*πρὸς Κριτίαν περὶ τοῦ ἐνεπισκήμματος*.] In canonem receptam a Callimacho in dubium vocavit Dionysius Halicarnassensis. Vid. Harpocr. p. 72, 12.

LXVIII. *κατὰ Μέδοντος*. Poll. VIII, 53. *Harpocr. p. 54, 3.

LXIX. [*Πανσανίου ἐγκώμιον*.] In suppositis recenset Dionys. Halic. iud. de Dem. 44. Sed hunc memoriae errore videri Pausaniam pro Epicrate nominasse, ut cogitandum sit de declamatione amatoria (LXI), monui in quaestt. Dem. P. II. p. 74. Eandem in Dionysii exemplo Pausaniae nomine inscriptam fuisse suspicatus est Voemelius.

LXX. *πρὸς Πολύευκτον παραγραφή*. Bekker. Anecd. p. 90, 28. Cf. Boehnecke l. l. p. 643, 4.

LXXI. *ὑπὲρ τῶν ῥητόρων*. Diod. XVII, 15. *Plut. vit. Dem. 23. *Suid. s. v. *ἅμα*. Eadem ex oratione Voemelius p. 788 repetit quae habet *Agatharchides ap. Phot. bibl. cod. CCL. p. 446b. 447a, quorum locorum alterum certe ex eadem aut ex or. *περὶ τῶν τριήρων*, quam ex verbis Auctoris vit. dec. orr. p. 847c et Plut. vit. Phoc. 21 exprimit, depromptum putat Boehnecke l. l. p. 647. coll. p. 568. Eundem ad or. LXVI. refert Clinton fast. hell. t. II. p. 357. Pro rhetoris cuiusdam artificio hanc orationem habet Sauppe l. l. p. 252. De re vid. comm. vol. I. p. XXX.

LXXII. *ὑπὲρ Σατύρου ἐπιτροπικός*. Dinarchi Callimachus, alii Demosthenis esse censuerunt. Vid. Photii bibl. cod. CCLXV. p. 491b.

Ceterum saepius Demosthenem, in contione maxime, verba fecisse certum est. Vide quae in pace ol. CVIII, 2 facienda ad populum se dixisse refert locis orr. XVIII. et XIX. pluribus, quae ad Messenios ol. CIX, 1. 344. or. VI, 20 sqq. (cf. comm. vol. I. p. XXIV), quae ad Pythonem, Philippi legatum, refellendum eodem anno or. XVIII, 136 (cf. comm. l.l.), quae post captam Elateam ol. CX, 2. 339. or. XVIII, 174 sqq. (cf. comm. p. XXVIII), quae Thebis paullo post or. XVIII, 214 (cf. comm. l. l.), quibus adde quae habet Aeschines or. II, 112. III, 72. 160. 166. Verum haec idque genus alia ita comparata sunt, ut an ex scriptis editisque orationibus non deprompta sint iure dubites.

[PROOEMIA.]

Ab ipso Demosthene ad futuros usus elaborata censuerunt Schaeferus, A. G. Beckerus *Literatur des D.* p. 59 sq. 215 sq., Boehnecke l. l. p. 259, alii, maiorem certe partem ex Demosthenis orationibus deperditis concisa et passim aucta ab inferioris aetatis magistris L. Spengel artt. scriptt. p. 110, ex aliorum oratorum scriptis collecta I. G. Kiessling in ephem. litt. Hal. 1832. suppl. p. 364 sq., simpliciter supposita cum editoribus plurimis Boeckh *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 314, Ranke *Dem.* p. 117 sq., alii.

[EPISTOLAE.]

Has a Cicerone iam (Brut. 31. Or. 4) et graecis rhetoribus grammati-

cisque pro Demosthenicis habitas in dubium non vocandas censuere cum H. Wolfio maxime Reiskius interpr. germ. t. II. p. 783, A. G. Becker *Literatur des D.* p. 61 sqq. 216 sqq. Confictas, ut plerasque omnes reliquas clarorum virorum nomine inscriptas epistolas, et Demostheni suppositas intellexere Taylorus, Dobree Advers. I, 2. p. 525, Boeckh *Urk. üb. d. Seew.* p. 244. 427, Ranke *Dem.* p. 118, A. Westermann comm. de epist. scriptt. graec. P. IV. p. 12 sq., editores Demosthenis novissimi omnes, alii. Exstant etiam in Aldina (1499) et Genevensi (1606) epistolarum graecarum collectionibus. Locos nonnullos tractat Funkhaenel in symb. crit. edit. Turic. min. t. VI. praemissis p. XI sq.

ARGUMENTA.

Argumenta in Demosthenis orationes rhetorum veterum plures scripserunt, e quibus Numenium et Posidonium Suidas nominat. Exstant etiamnum, quae inde ab Aldo usque ad novissima tempora una cum Demosthene edi solita prorsus cum ipso oratore coaluere, argumenta Libanii in orationes omnes, eaque instructa praefatione, in qua brevis inest de vita Demosthenis narratio, quaeque ignotus quidam scriptor — Ulpianum esse suspicatur Taylorus, credas potius Zosimum — composuit in orr. XVIII—XXIV, multo illis prolixiora, sed vanis eadem commentis plena. Et haec quidem insunt in libris quattuor Parisinis, quarum lectiones protulit Dindorfius ed. Oxon. t. IX. p. 851—854. Aliorum exemplum habes argumentum or. V, quod ex cod. Augustano post Wolfium et Reiskium edidere Voemelius orr. Phil. V. p. 287—291, Dindorfius ed. Oxon. t. VIII. p. 158 sq.

SCHOLIA.

In Demosthenis orationibus explicandis rhetorum complures operam posuerunt. Exposuerunt de eis M. H. E. Meier praef. ad ed. or. in Midiam p. XIV sqq., A. Westermann hist. eloqu. graec. §. 57, 4, Gu. Dindorf ed. Oxon. t. VIII. praef. p. XIII sqq. In his fuerunt Alexander, Numenii f., Ulp. ad or. X. p. 191. or. XX. p. 468 ed. Dind. Anastasius Ephesius, cf. Rhett. gr. ed. Walz t. VI. p. 253. Apollonides Nicaeensis, qui scripsit *ὑπόμνημα τοῦ περὶ παραπρεσβείας* sec. Ammon. s. v. *ὄφλων*. Apsines Gadarenus, Ulp. ad or. XX. p. 460. cf. Rhett. gr. t. V. p. 517. Asclepius, Ulp. ad or. IV. p. 141. or. XIX. p. 341. 392. 397. Aspasius Byblius, Ulp. ad or. XX. p. 460. cf. Photii bibl. cod. CCLXV. p. 492a. Rhett. gr. t. V. p. 517. Athanasius, Ulp. ad or. XXIV. p. 771. Basilicus, Rhett. gr. t. VII. p. 878. Idem nomen fortasse reponendum t. VI. p. 435. Caecilius Calactinus, Schol. ad or. II. p. 71. Eiusdem ex commentariis excerpta, quae contra Dionysium Halicarnassensem disputantur apud Ulp. ad or. IV. p. 155, suspicatur Dindorfius. Praeterea Caecilii *σύγκρισις Δημοσθένους καὶ Αἰσχίνου, σύγκρισις Δημοσθένους καὶ Κικέρωνος* (cf. Plut. vit. Dem. 3) et liber *περὶ Δημοσθένους ποῖοι αὐτοῦ γνήσιοι λόγοι καὶ ποῖοι νόθοι* laudantur a Suida. Didymus Alexandrinus, cognomine Chalcenterus, qui scripsit *ὑπομνήματα εἰς Δημοσθένην*, Harp. p. 47, 20. 73, 6. cf. p. 54, 5. 74, 27. 87, 8. 91, 3. 116, 28. 122, 14. 135, 11. 136, 10. 140, 9. 147, 21. 151, 26. 156, 10. 158, 27. 163, 21. 180, 26. Schol. cod. Bavar. ad or. XXI, 17. cod. Aug. ad or. XXIV, 105. Diodorus Alexandrinus, qui scripsit *ἐξήγησιν τῶν ζητουμένων παρὰ τοῖς ι' ῥήτορσιν* teste Suida s. v. *Πωλίων*, et *λεξικὸν τῶν παρὰ τοῖς ι' ῥήτορσι λέξεων* teste Photio bibl. cod. CL. p. 99b. Dioscorus, Ulp. ad or. X. p. 191. Epiphanius, Ulp. ad. or. VIII. p. 177. or. XVIII. p. 266. Gymnasius, qui scripsit *ὑπόμνημα εἰς Δημοσθένην* auctore Suida. Hermogenes Tarsensis, qui ut in scriptis rhetoricis, quae adhuc exstant, Demosthenis orationes diligenter explicat, ita singularia *ὑπομνήματα εἰς Δημοσθένην*

composuit teste Syriano in Hermog. t. VII. p. 90. Horum pars fuisse videtur commentarius in Leptineam, quam significat ipse de form. orat. I, 12. p. 290 et de method. dic. 24. p. 430 ed. Walz. Cf. Ioann. Sic. t. VI. p. 444. Ioannes Atheniensis, Schol. cod. Bavar. ad or. II. p. 77. Longinus, qui scripsit περὶ τοῦ κατὰ Μειδίου auctore Suida, si vera est Langbaenii emendatio, quam sane commendat Photius bibl. cod. CCLXV. p. 492a: libri enim Φειδίου habent. Cf. Ruhnken de vita et scriptis Longini §. 14. Menander, Ulp. ad or. XIX. p. 334 (eadem leguntur in argum. eiusd. orat. p. 740 Reisk. et Rhett. gr. t. VII. p. 374). 341. 392. or. XXI. p. 618. or. XXIV. p. 775. Adde Rhett. gr. t. VI. p. 382. VII. p. 1080. 1184. Minucianus, Rhett. gr. t. VI. p. 435. coll. Hermog. d. form. orat. II, 7. p. 348. Sallustius, qui εἰς Δημοσθένην ὑπόμνημα scripsit auctore Suida. Sopater, auctor libri μεταβολαὶ καὶ μεταποιήσεις τῶν Δημοσθενικῶν χωρίων inscripti, Rhett. gr. t. VII. p. 1294. Aelius Theon Alexandrinus, qui scripsit ὑπόμνημα εἰς Δημοσθένην teste Suida. Tiberius, qui περὶ Δημοσθένους scripsit eodem teste. Zeno Citiensis, quem item ὑπόμνημα εἰς Δημοσθένην composuisse tradit Suidas. Cf. Ulp. prolegg. p. 16. ad or. I. p. 43. or. X. p. 191. or. XX. p. 484. Rhett. gr. t. VI. p. 111. VII. p. 878. Zosimus Gazaeus sive Ascalonita, cuius ὑπόμνημα εἰς Δημοσθένην laudat Suidas, ex quo deprompta est, quae adhuc exstat, vita Demosthenis.

Horum ex libris atque aliorum, quorum nomina non traduntur — simpliciter τῶν ὑπομνηματιστῶν vel ἐξηγητῶν nomine citatorum iis locis, quos in indice s. v. *Demosthenis anonymi interpretes* Dindorfius collegit — multo plura sine dubio quam quae modo indicavimus tacito recepta sunt in farraginem scholiorum, quae nunc quidem sub Ulpiani nomine circumferuntur. Ulpianus ipse quinam fuerit non liquet. Antiochenum *esse*, *saeculi* p. Chr. n. III. rhetorem, credebant Valesius ad Harpocr. p. 92 et Kusterus ad Suid. s. v. Οὐλπιανός. Obstat tamen quae locis supra indicatis fit mentio Zenonis saeculi IV. rhetoris. Immo idipsum, quo iure Ulpiani nomine haec scholia inscribantur, admodum est dubium, nec longe a veritate abesse videtur Dobraei coniectura in Auctar. ad Porsoni Miscell. p. 387 ab Ulpiano sola in orationes Olynthiacas et Philippicas prolegomena scripta, scholiorum vero quae vulgo Ulpiano tribuatur collectionem non huius, sed Zosimi rhetoris esse suspicantis. Scilicet non modo ipsum Ulpiani nomen in libris manu scriptis, ut videtur, rarissimum est, — Dindorfius certe tredecim quibus usus est librorum in uno tantum Parisino 2995 deprehendit, qui sic inscribitur: Οὐλπιανοῦ ῥήτορος προλεγόμενα εἰς τοὺς Ὀλυνθιακοὺς καὶ Φιλιππικοὺς λόγους — verum etiam in Parisino 2935. saec. XI. parti scholiorum priori praescriptum est Ζωσίμου Ἀσκαλωνίτου εἰς Δημοσθένην, similisque huic est liber Vaticanus, in quo Zosimi ad XVIII priores Demosthenis orationes continentur commentarii; quorum qui tamquam specimen eam partem, quae ad or. I. pertinet, sibi comparavit Reiskius, verbum in eis non legi, quod in editis Ulpiani non legatur, asseverat. Accedit quod in schol. ad or. I, 1. p. 30 et 33 ad ea respicit auctor, quae dixit ἐν τοῖς Ἰσοκρατικοῖς, qualia Zosimum scripsisse ex eis colligas, quae in vita Demosthenis habet statim ab initio, quodque in schol. ad or. XXIV, 135. p. 785 de Demosthene a Callistrato ad studium eloquentiae incenso in ipsius oratoris vita se verba fecisse ait, quae leguntur illic p. 298 vit. scriptt. Gr. min. ed. Westerm. Cf. Dindorfii praef. ad ed. Oxon. t. VIII. p. XII. Quod ut ut est, ea in libris horum scholiorum nunc quidem est condicio, ut ad unum auctorem referri omnino nequeant, nec quae primaria eorum forma fuerit ad liquidum perduci possit: adeo singula in aliis aliter conformata,

immutata, contracta, decurtata, amplificata, interpolata sunt. Ceterum ea tantum, quae ad orationes priores XXIV pertinent, ita comparata sunt, ut aliquem tenorem agnoscas explicationis; reliquarum orationum haud paucae scholiis prorsus carent, quaeque in libris exstant, brevissima sunt et prorsus futilia paucissimis exceptis omnia. Tota autem farrago in rhetoricis maxime rebus versatur exponendis; quae ad antiquitatem spectant et historiam, et pauca sunt admodum et inutilia pleraque omnia plenaque commentis et erroribus. Exempla vide apud Boeckh. *Staatsh. d. Ath.* t. I. p. 426. 445. 458. 595. 682. 713. 719. *Urk. üb. d. Seew.* p. 62. 169. 179. Edidit Ulpianum primus Aldus 1503 et 1527, hinc Io. Hervagius cum Demosthene 1532, Gu. Morelius Paris. 1570 partim ex coniectura partim ex libris Parisinis correctum, H. Wolf Bas. 1572 adhibito Augustano I. (rep. Francof. 1604. Aur. Allobr. 1607), St. Dobson ed. Dem. t. VI. Lond. 1828, Gu. Dindorf ed. Oxon. t. VIII. IX. 1851 collatis libris duobus Monacensibus, uno Florentino, decem Parisinis. Sola quae in Monacensibus (Augustano I. et Bavarico) leguntur scholia, a Reiskio iam, nec tamen satis accurate evulgata, utroque libro denuo collato edidit H. Sauppe in ed. Turic. P. II. p. 49—126.

INDEX NOMINUM ET RERUM.

(Signum * adpositum indicat quae suspecta sunt.)

Ἀβδηρῖται XVII, 23.
Ἅβρων, Buseli f., XLIII, 19. 73.
Ἁβρώνιχος, Aristotelis f., XLIV, 10.
Ἄβυδος, Troadis oppidum ad Hellespontum situm, XVIII, 302. XXIII, 158. 160. LVII, 38. *Ἀβυδηνοί* XXIII, 59. 160. 202.
Ἀγάθαρχος, pictor, XXI, 147.
Ἀγαθοκλῆς, archon ol. 105, 4, XLVII, 44.
Ἀγάθων, mercator, XXV, 47.
Ἀγαπαῖος, Philippi satelles, IX, 59.
Ἀγανός, Abydenus, XXIII, 202.
Ἄγλαυρος, Cecropis f.: eius fanum XIX, 303.
Ἁγνίας ἐξ Οἴου I., Buseli f., XLIII, 19 sqq.
Ἁγνίας II., Polemonis f., XLIII, 15 sqq.
Ἁγνίας, trierarchus, L, 41 sq.
Ἁγνούσιοι, Hagnuntis, pagi Attici, incolae, XLIII, 7.
Ἁγνόφιλος XLVII, 60.
Ἀγορά, Thraciae oppidum, VII, 39. 41.
ἀγορά, forum Athenarum, X, 40. XVIII, 169. 323. XIX, 122. 225. 314. 330. XX, 9. 158. XXI, 104. 158. 171. XXII, 52. 68. 77. XXIII, 80. XXIV, 15. 60. 103. 126. 164 sq. 185. XXV, 51. 52. 85. XXVI, 23. XXVII, 58. XXIX, 12. XLIV, 4. XLVII, 16. LIV, 7. 31. LVII, 30 sq. 33 sq. LIX, 67. 123. *Ἱπποδάμεια* Piraeei XLIX, 22. Thasi L, 29. 37. 51. *ἀρχόντων* = *ἀρχαιρεσίαι* XLIV, 36. *ἀγορὰ ἐφορία* XXIII, 37 sqq.
ἀγορανόμοι XXIV, 112.
Ἀγύρριος Κολλυτεύς XXIV, 134.
ἀγχιστεία XX, 102. XLIII, 3. 27. 50 sq. XLIV, 2. 6 sq. 11. 63.
ἀγωνοθέται IX, 32. XVIII, 84. 116. 118.
ἄδεια XXI, 33. XXIV, 45.
Ἀδείμαντος, praetor, XIX, 191.
Ἅιδης XVIII, 289. XXIV, 104. XXV, 52 sq.
adoptio XXXIX, 6. 18. 20. 29. 35. XL, 2. 10. 27 sqq. XLI, 3. XLII, 21. XLIII, 11 sqq. 41. 78. 81. XLIV, 2. 6 sq. 15. 19 sqq. XLVI, 14 sq. LVIII, 31. LIX, 57. 63. LX, 4.
Ἀδράστεια XXV, 37.
adulterium LIX, 41. 65 sqq. 85 sqq.

Ἄδωνις LXI, 30.
aedes privatae et publicae III, 26. 29. XIII, 28 sqq. XIX, 275. XXIII, 207 sq. privatarum pretia XXVII, 10.
Ἀζηνιεῖς, Azeniae, pagi Attici, incolae, XX, 146.
Ἀήτης Κειριάδης LIX, 40.
Ἀθηνᾶ XIX, 272. XXIV, 22. 180. XXV, 97. XXXVI, 15. LVII, 64. LVIII, 14. Pr. 54, 1. Ἀθηναία XXII, 72. Ἀ. Πρόνοια XXV, 34. ὑπάτη XLIII, 66.
Ἀθῆναι VII, 13. VIII, 66. IX, 27. 43. X, 68. XVII, 28. XVIII, 66. 197. XIX, 81. 229. XX, 29. 31. XXXII, 1. 8 sq. XXXIII, 9. XXXIV, 4. 7. 11. 23 sqq. 36. 42. XXXV, 3. 10 sq. 24 sq. 31 sq. 50 sqq. XLIII, 71. XLV, 17. XLVI, 26. XLIX, 26. L, 17. LV, 4. LVI, 3. 5 sqq. LIX, 32. 35. 65. 85. 103.
Ἀθηναῖοι: eorum agendi ratio in rebus publicis I, 10. 16. II, 23. 25 sqq. III, 22 sqq. IV, 2. 7. 10. 20. 25. 40. 44. V, 2. VI, 3. 34. VIII, 11. 23. 30. 42. 52. 67. IX, 35. X, 3. 26. 29. 46 sqq. 55 sqq. XI, 17. XIII, 14 sqq. XVIII, 138. indoles VI, 30. XX, 13. 140 sq. XXI, 184. XXII, 76. XL, 32. Ep. 3, 11. facile falli se patiuntur XX, 3. XXIII, 95 sq. 145. ad Aegospotamos victi XXIII, 212. Alexandri Pheraei amici XXIII, 120. antiquissimo tempore qualis eorum condicio LIX, 74 sq. Argaeum adversus Philippum iuvant XXIII, 121. αὐτόχθονες XIX, 261. LIX, 74. bella gerunt cum Amphipolitanis XXIII, 149 sqq. cum Byzantiis, Chiis, Rhodiis (bellum sociale) XV, 3. cum Chersonesitis XXIII, 150. cum Corinthiis III, 20. IV, 23. cum Lacedaemoniis II, 24. IV, 3. 24. IX, 24. 47. 51. XI, 6. 21. XV, 22. XVI, 6. XVIII, 96. XX, 42. 51. 68. 77. XXII, 15. XLIX, 13. LVIII, 67. LIX, 35. cum Megarensibus III, 20. XIII, 32. LIX, 36. cum Persis LIX, 94 sqq. cum eisdem bellum moliuntur XIV, 3 sqq. cum Philippo I—XII. LIX, 3. in quo quae amiserint VIII, 64. X, 65. XVIII, 69 sqq. soli in bellis caesos publice sepeliunt laudantque XX, 141. cum Byzantiis foedus faciunt XVIII, 230. Byzantium occupant XX, 60. tuentur XVIII, 80. 88. 90. eorum res cum Charidemo in Thracia XXIII, 148 sqq. cives faciunt exteros, v. πολιτεία. Chersonesum a Philippo defendunt VIII. IX, 16. 73. XVIII, 80. 92. a Cleomene Aegypti praefecto iniuriis affecti LVI, 7. in discrimen adducti a quibusnam IX, 2. 54 sq. XIII, 12 sqq. XXIII, 210. LI, 16 sqq. Euboeis auxilium ferunt I, 8. IV, 17. V, 5. VIII, 74. IX, 66. XVI, 14. XVIII, 79. 100. XIX, 75. XXI, 132 sq. 161. 174. XXII, 14. 72. XXIII, 173. 192. XXIV, 180. LIX, 4. expeditiones faciunt in Acarnaniam XLVIII, 24. in Haliartum IV, 17. XVIII, 96. in Hellespontum L, 11 sqq. LVII, 38. in Olynthum XXI, 197. LIX, 4. in Pylas IV, 17. XVIII, 32. XIX, 84. 319. frumento alieno indigent XVIII, 87. 301. XIX, 123. XX, 31 sqq. L, 17. 19. 58 sq. Graeciam a Persis defendunt XIX, 312. Graecis imperant III, 24. IX, 23. 25. XI, 16. XIII, 26. XVIII, 202. XIX, 288. XX, 68. Graecis quibus rebus praestent XXIV, 216. premunt Graecos IX, 30. Graecorum pro iuribus et libertate propugnant II, 24. IV, 3. VI, 8. 10. VII, 7. VIII, 42. 49. IX, 24. 25. 70. X, 14. 46. XV, 30. XVI, 15. XVIII, 66. 94 sqq. 203. 238. XX, 10. XXIII, 124. XXIV, 184. LX, 11. 18. Pr. 16, 2. Hellesponto potiuntur XX, 60. immunitatem in Bosporo habent XX, 31. 33. imperare soliti VIII, 60. X, 62. XI, 22. cum Lacedaemoniis comparati XX, 105 sq. Pr. 35, 3. cum eis de principatu certant XX, 68. Lacedaemonios a Thebanis defendunt XVI, 11 sq. XVIII, 98. XIX, 75. XXIII, 191. LIX, 27. legatos mittunt ad Graecos XIX, 10. 16. ad Peloponnesios IX, 72. ad regem Persarum XII, 6. XIX, 273. ad Philippum V, 9. VII, 38. XVIII, 25 sqq. 74. 75. 164. 165. XIX, 12 sqq. 121. 139. 163. 234. 331. in Siciliam LIII, 5.

ad Thebanos XVIII, 178. 184 sqq. 211 sqq. 244. in Thessaliam, Ambraciam, Illyricum, Thraciam, Byzantium XVIII, 244. in legatos quales XIX, 273 sqq. legibus optimis instructi XXI, 150. XXIV, 210. Macedonia olim eis paruit VII, 12. XI, 16. cum maioribus comparati III, 21 sq. IX, 41 sqq. XIII, 21 sqq. XVIII, 199 sqq. XIX, 66. 269 sqq. 288. XX, 10. 112 sqq. XXI, 143 sqq. XXIII, 196 sqq. 204 sqq. XXV, 97. XXVI, 6 sqq. 23. maris imperium obtinent VII, 8. LIX, 36. muros dirutos reficiunt XX, 68. 73. eorum res navales XIV, 13. 18 sqq. 29. XVIII, 102. 238. XIX, 89. XX, 68. XXII, 8 sqq. XLVII, 19 sqq. L, 6 sqq. LI, 4 sqq. LIX, 95. eorum numerus XXV, 50. ab oligarchis oppressi XX, 48. Olynthiis opem ferunt I—III. XIX, 266. pacem faciunt cum Lacedaemoniis V, 18. XX, 54. 60. cum Olynthiis III, 7. XXIII, 109. cum Persis XV, 29. cum Philippo V. XVIII, 19 sqq. 285. XIX, 18 sqq. in qua quae amiserint XIX, 143. pecunia indigent XX, 24 sq. 115. XXIII, 209. Perinthum a Philippo defendunt XVIII, 90. a Persis nunquam victi XV, 23. Philippum in Amphictyones recipi nolunt XIX, 113. 181. Phocensibus favent XVIII, 18. XIX, 319. XXIII, 102. foedus cum eis faciunt XIX, 61. decepti ab Aeschine eos deserunt XVIII, 142. XIX, 18 sqq. Plataeensibus opem ferunt LIX, 100 sqq. populi imperium instaurant XIX, 280. XX, 11. 68. XXIV, 135. eorum praeclare facta III, 24. VI, 11. XI, 21. XIII, 21 sq. XV, 35. XVIII, 68. 204 sqq. 316. XIX, 311 sq. XXIII, 198 sq. LX, 7 sqq. reditus X, 37 sq. XIII, 4. XVIII, 234. XXIII, 209. XXIV, 216. in Sicilia cladem accipiunt XX, 42. LVII, 35. 45. eorum socii IV, 24. 29. 34. 45. VII, 31. VIII, 33. 46. IX, 42. X, 8. XIII, 6. 27. XV, 33. XVIII, 27. 80. 84. 195. 234. 237. XIX, 15. 78. 84. 90. 97. 101. 104. 128. 143. 145. 146. 159. 257. 271. 275. 278 sq. 287. 293. 310. XX, 3. 53. 60. 69. XXI, 133. XXII, 65. 72. XXIII, 17. 35. 139. 148. XXIV, 172. 180. XLIX, 10. 13. 49. L, 5. 18. 58. LVIII, 53. LIX, 3. 96. 102. Pr. 2, 3. 22, 1. 40, 1. Ep. 3, 2. 6, 1. de Thebanis olim bene meriti XVIII, 186. eorum et Phocensium exules recipiunt V, 18. 19. Corinthiornm XX, 54. Thebanis infensi XVI, 4 sq. XVIII, 18 sq. XXI, 174. XXII, 14. XXIII, 102 (cf. *Θηβαῖοι*). cum eis contra Lacedaemonios faciunt XVIII, 96. XXIII, 191. de Oropo certant V, 16. XVI, 11. 18. XVIII, 99. foedus facere gestiunt XVIII, 162. faciunt XVIII, 187. 215 sq. XXII, 14. Salaminem recuperant XIX, 252. LXI, 49. Thasum occupant XX, 59. eorum res cum Thraciae regulis XXIII, 8 sqq. 129 sqq. L, 5. 11. de tributis cum Aeniis agunt LVIII, 38. triginta virorum imperio tenentur XIX, 196. XX, 11. 42. XXII, 52. XXIV, 56 sq. 90. 164. XL, 32. eorum victoriae, v. *Ἀρτεμίσιον, Μαραθών, Νάξος, Πλαταιαί, Σαλαμίς*. — *Ἀθηναῖος* = *πολίτης* IV, 21. XII, 8. XVIII, 130. XXII, 68. XLVI, 13. LVII, 17. 19. 23. 27. 31. 50. 61. LIX, 2. 28. 44. 52. 81. 88 sqq. 104 sqq.

**Ἀθήνιππος*, Halicarnassensis, XXXV, 20. 34.

Ἀθηνόδωρος, Berisadis uxoris frater, XXIII, 10 sq. 17. 123. 170 sqq. 180. 189.

ἆθλοι XXIII, 37. 38. 40. 53 sq. LX, 13. LXI, 24 sq.

ἀθλοθέται XXXIX, 9.

Ἀθμονεῖς, Athmoni, pagi Attici, incolae, XLV, 55. LIX, 28.

Αἰακός XVIII, 127. LXI, 30.

Αἰαντίδης Φλυεύς XLII, 28. 29.

Αἰαντίς, tribus Atheniensium, XVIII, 181. *Αἰαντίδαι* LX, 31.

Αἴας, Salaminius, LX, 31.

Αἰγεῖδαι, tribus Atheniensium, LX, 28.

Αἰγεύς, Thesei pater, LX, 28.

Αἰγιλιεῖς, Aegiliae, pagi Attici, incolae, XLIX, 31. LIX, 50. 61. 123.

Αἴγινα, insula, XVIII, 96. XX,

76. XXVI, 6. XXXV, 28. XXXVI, 29. LIII, 6. *Αἰγινῆται* XXIII, 211.
Αἰγὸς ποταμός, Chersonesi oppidum, XXIII, 212.
Αἴγυπτος XII, 6. XIV, 31. XV, 11. XIX, 287. XX, 76. XXIV, 127. XLIX, 25. LVI, 3 sqq. *Αἰγύπτιοι* XV, 5. XXI, 163.
Αἴθρα LX, 29.
αἰκία XXXVII, 33. XLVII, 7 sq. 40. 45. 47. LIV.
Αἰνιᾶνες, Thessaliae gens, LIX, 101.
Αἴνιοι, Aeni, Thraciae urbis, incolae, XXIII, 119. LVIII, 37 sq.
Αἰξωνεῖς, Aexonae, pagi Attici, incolae, L, 47. LIX, 24. 25. 33.
Αἴσιος, Aphobi frater, XXIX, 15. 18. 55.
Αἴσιος alius XXXVIII, 28.
Αἰσίων, Euctemonis pater, XXI, 165.
Αἰσχίνης Ἀτρομήτου Κοθωκίδης: eius animus, indoles, mores XVIII, 127 sq. 196 sqq. 217. 226. 243. 263. 277 sqq. 291 sqq. 306 sqq. 323. natales et familia 129 sqq. XIX, 199. 249. fratres XVIII, 318. XIX, 124. 237. 249. res privatae XVIII, 258 sqq. XIX, 199. cum Anaxino rem habet XVIII, 137. Antiphonti patrocinatur 132 sq. ab Areopago tamquam proditor repudiatur 134 sq. Clitarchi et Philistidis legatos excipit 82. in concione verba facit XIX, 13 sq. 15. 18. 19. 35. 46. 254. 283. 304. Ctesiphontem accusat XVIII. Demosthenis adversarius XVIII. XIX. LVIII, 43. eiusdem legem trierarchicam pessumdat XVIII, 312. dives 312. ab Eubulo defendendus XIX, 290 sqq. histrionalem artem exercet XVIII, 129. 180. 209. 242. 262. 265. 313. XIX, 189. 200. 246. 247. 337. legatos ad Arcades mittere suadet 10. 306. 310. quam legationem obit ipse 11. 304. legatus ad Philippum XVIII, 282. XIX, 12 sqq. 17 sqq. 121 sq. legatus non lectus a populo Thebas proficiscitur 126. male gestae legationis accusatur XIX. a Philippo largitione corruptus XVIII, 82. 149. 284. 297. 320. XIX, 8. 13. 28. 68. 96. 105. 109 sq. 114—127. 133. 145. 147. 178. 207 sq. 244. 254. 258. 282. 302. 316. 328 sq. 333. item ab Alexandro XVIII, 297. primum contra Philippum verba facit XIX, 9 sqq. 302 sq., extemplo mutatus 307 sq. 311. postea nunquam 108. 112. 118. 191. neque rogavit adversus eum quicquam XVIII, 139. coram eo verba facit XIX, 253. eum in Amphictyones recipi suadet 113. eius cum Philippo consuetudo XVIII, 248. XIX, 175. summam belli adversus Locros gerendi ad eundem confert XVIII, 143 sqq. summam rerum Graecarum ei tradit XIX, 34. populum fallit XVIII, 142. XIX, 20 sqq. 26. 42 sq. 56. 68 sq. 76. 84. 97. 107. 220. 320 sqq. 333. post pugnam Chaeronensem quomodo se gesserit XVIII, 284. pylagoras 149. scribae munere fungitur XVIII, 127. (162.) 209. 261. 265. XIX, 70. 98. 200. 237. 249. 314. in Thebanos odium simulat 21. 35. 74. 127. Timarchum in ius vocat 233. 241. 283. vocem habet splendidam XVIII, 259. 285. 313. XIX, 126. 199. 206. 216. 337.
Αἰσχρίων, servus, XLIX, 22 sqq. 55 sqq.
Αἰσχύλος LVIII, 31.
αἰτία et *ἔλεγχος* quibus rebus differant XXII, 22.
Αἰτωλοί IX, 34.
Ἀκαδήμεια XXIV, 114.
Ἀκαμαντίς, tribus Atheniensium, XXXIX, 24. 25. 30. XLIII, 64.
Ἀκαμαντίδαι LX, 29.
Ἀκάμας, Thesei f., LX, 29.
Ἄκανθος, Thraciae urbs, XXXIV, 36.
Ἀκαρνανία XLVIII, 24.
accusatores publici XXV, 13.
ἀκρόπολις, arx Athenarum, IX, 41. XIII, 26. XIX, 272. XXIV, 120. 129. XXV, 4. 99. XXXVI, 16. LVIII, 19. 48. LIX, 105.
Ἁλαιεῖς, Halarum, pagi Attici, incolae, XLVIII, 5. LIV, 31. LVII, 38.
Ἀλέξανδρος, Macedoniae rex Philhellen, VI, 11. XII, 21.
Ἀλέξανδρος, Philippi frater, XIX, 195.

Ἀλέξανδρος, Philippi affinis, VII, 32.
Ἀλέξανδρος, Philippi f., XVII, 4 sqq. XVIII, 51. 52. 270. 296. 297. XXXIV, 38. Ep. 1, 12. 3, 21 sq.
Ἀλέξανδρος, Pherarum tyrannus, XXIII, 120. 162. L, 4. LI, 8.
Ἀλίαρτος, Boeotiae oppidum, IV, 17. XVIII, 96.
Ἀλικαρνασσεῖς XXXV, 20. 23. 33. 34.
Ἁλιμοῦς, pagus Atticae, LVII, 10. Ἁλιμούσιοι 15. 56. 60.
Ἁλιρρόθιος, Neptuni f., XXIII, 66.
Ἀλκέτας, Molossorum rex, XLIX, 10. 22. 24. 31. 62.
Ἀλκιβιάδης XX, 115. XXI, 143 sqq. LXI, 45.
Ἀλκίμαχος, praetor, XLVII, 50. 78.
Ἀλκισθένης, archon ol. 102, 1, XLIX, 30. 59. 60. 62. LIX, 36.
Ἀλκμαιωνίδαι XXI, 144.
Ἀλόννησος, insula ad Thraciae oram sita, VII. XII, 12. XVIII, 69.
Ἀλόπη, Hippothoontis mater, LX, 31.
Ἅλος, Thessaliae oppidum, XI, 1. XIX, 163. 334. Ἁλεῖς XIX, 36. 39. 159. 174.
ἁλῷα, festum Cereris, LIX, 116.
Ἀλωπεκή, pagus Atticae, XVIII, 164. XXI, 82. 121. XXII, 60. XXIII, 13. XXV, 71. LVIII, 35. LIX, 24. 25. 45. 47. 123.
Ἀλωπεκόννησος, Chersonesi oppidum, XVIII, 92. promontorium XXIII, 166. 168.
Ἀμάδοκος, Thraciae regulus, XXIII, 8 sqq. 170. 183.
Ἀμαζόνες LX, 7.
Ἀμβρακία IX, 27. 34. 72. X, 9. XVIII, 244.
Ἀμεινίας, mercenariorum dux, XL, 36.
Ἀμυνθέων, Demostrati f., LVII, 37 sq.
Ἀμύντας, Philippi pater, VII, 11.
Ἀμύντας, Philippi praetor, XVIII, 73. 74. XLIX, 26. 36 sq.
Ἀμφίας, Cephisophontis affinis, XLV, 8. 10. 17. XLVI, 5.
Ἀμφικτύονες V, 14. IX, 32. XVIII, 135. 143. 147. 149 sqq. 322. XIX, 20. 49. 50. 63. 111. 132. 181. 288. 327. XXIII, 40. LIX, 98. eorum δόγματα V, 19. XVIII. *154. *155. XIX, 61. 64. Ἀμφικτυονία V, 19.
Ἀμφικτυονικός: ἱερά XXIII, 37. 38. 40. πόλεμος XVIII, 143. προφάσεις 158.
Ἀμφίλοχος, Philippi legatus, XII, 3.
*Ἀμφίονες XLIII, 66.
Ἀμφίπολις, Thraciae oppidum, I, 8. 12. II, 6. 28. IV, 12. V, 10. 14. 25. VI, 17. 30. VII, 23 sqq. VIII, 66. X, 12. 68. XII, 20. XIII, 23. XVIII, 69. XIX, 22. 137. 220. 253. 326. XXIII, 14. 111. 116. 149. 154. 199. 208. Ἀμφιπολῖται I, 5. 8. XXIII, 149.
Ἄμφισσα, Locrorum urbs, XVIII, 143. 155. 157. 163. Ἀμφισσεῖς, XVIII, 140. 150 sqq.
Ἀναγυράσιοι, Anagyruntis, pagi Attici, incolae, XVIII, 75. 164. XXI, 200. XXVIII, 17. XXXV, 14. XLII, 28. L, 52.
ἀναδασμοὶ γῆς XVII, 15. XXIV, 149.
ἀνακεῖον, templum Dioscurorum, XLV, 80.
ἀνάκρισις XLVII, 10. XLVIII, 23. 31. LIII, 14. 17. 22. LVIII, 8. 10. cf. probatio.
Ἀναξαγόρας, Clazomenius, LXI, 45.
Ἀναξιμένης, peregrinus, LVII, 59.
Ἀνάξινος, speculator Philippi, XVIII, 137.
Ἀναφλύστιοι, Anaphlysti, pagi Attici, incolae, XVIII, 29. 54. 75. 118. 165. L, 17. 41.
ἀνδραποδισταί IV, 47.
Ἄνδριοι LIX, 64. 71.
Ἀνδροκλείδης Ἀχαρνεύς XLVIII, 11 sq. 17. 32. 46 sqq.
*Ἀνδροκλῆς Σφήττιος XXXV, 10. 14. 23.
ἀνδροληψία (ἀνδρολήψιον) XXIII, 82 sq. 218. LI, 13.
Ἀνδρομένης, Theogenis pater, LIV, 7. alius XXXVI, 15.
Ἀνδροτίων, orator, XXII. XXIV, 6. 12 sq. 111. 121. 125. 136 sq. 145. 158. 160 sqq. 177 sqq. 197 sq.
Ἀνεμοίτας, Thebanus, XVIII, 295.
Ἀνθεμίων XLVII, 60.
Ἀνθεμόκριτος, caduceator, XII, 4.

Ἀνθεμοῦς, Macedoniae oppidum, VI, 20.
ἀνθυπωμοσία, v. iusiurandum.
Ἀνταλκίδας, Spartanus, XX, 54.
Ἄντεια, meretrix, LIX, 19.
Ἀντιγένης XXII, 38.
Ἀντιγένης, servus, XXXVII, 22. 25.
ἀντιγραφεύς XXII, 38. 70. XXIV, 178.
ἀντιγραφή (ἀντιγράφεσθαι), exceptio, XLII, 17. XLIV, 39. XLV, 45. 46. 88. XLVIII, 31. eius formula *XLV, 46.
ἀντίδοσις IV, 36. XX, 40. XXI, 78 sq. 156. XXVIII, 17. XLII.
Ἀντιδωρίδης, cursor stadii, LIX, 121. 124.
Ἀντίδωρος XXVII, 58.
Ἀντίμαχος, Archestrati f., XXXVI, 45.
Ἀντίμαχος, Timothei quaestor, XLIX, 6 sqq. 44 sq. 47.
Ἀντιμέδων, rogator, LVIII, 35.
Ἀντιοχίδαι, tribus Atheniensium, LX, 31.
Ἀντίοχος, Herculis f., LX, 31.
Ἀντίπατρος, Citiensis, XXXV, 32. 33.
Ἀντίπατρος, Macedo, Philippi familiaris, XIX, 69. Ep. 6, 1.
Ἀντισθένης, argentarius, XXXVI, 43.
Ἄντισσα, Lesbi oppidum, XVII, 7. XXIII, 132.
Ἀντιφάνης Λαμπτρεύς XLIX, 14 sq. 18. 48.
Ἀντιφάνης Φρεάρριος XVIII, 187.
Ἀντίφιλος Ἁλιμούσιος LVII, 26. 60.
*Ἀντίφιλος Παιανιεύς XXI, 107.
Ἀντίφιλος alius Ep. 6, 1.
Ἀντιφῶν, incendiarius, XVIII, 132.
Ἀντρῶνες, Thessaliae oppidum, X, 9.
ἀντωμοσία, v. iusiurandum.
*Ἄνυτος Λακιάδης LIX, 61.
ἄξονες XXIII, 28. 31.
ἀπαγωγή (ἀπάγειν) XIX, 279. XX, 156. XXII, 26. 27. 28. 52. 68. XXIII, 28. 30 sq. 80. 216. XXIV, 113. 146. 164. XXXIX, 14. XLV, 81. LIV, 1. LVIII, 10. 11. Ep. 5, 1.
Ἀπατούρια XXXIX, 4.
Ἀπατούριος XXXIII.
*Ἀπήμαντος Κοθωκίδης XVIII, 75.
ἀπογραφή (ἀπογράφειν): publicanorum XX, 32. XXXIV, 7. 34. in publicatione bonorum XXII, 54. XXIV, 166. XXV, 71. XXXV, 51. XL, 22. XLII, 16. 24. 27. 29. LIII, 1 sqq. LIX, 7.
ἀποδέκται XXIV, 162. 197.
ἀποινᾶν quid XXIII, 33.
ἀποκήρυξις XXXIX, 39.
ἀποκοπαὶ χρεῶν XVII, 15. XXIV, 149.
Ἀπόληξις Προσπάλτιος XLIII, 48. 65. XLV, 64.
Ἀπολλόδωρος Ἀχαρνεύς, Pasionis f., actor orr. XLV. XLVI. XLIX—LIII. LIX, 16 sqq. cf. XXXVI, 2 sqq. 53 sqq. LIX, 2 sqq.
Ἀπολλόδωρος Λευκονοεύς L, 27.
Ἀπολλόδωρος, Olympichi f., LVII, 38.
Ἀπολλόδωρος, Phaselites, XXXV, 7 sqq.
Ἀπολλόδωρος Πλωθεύς LVII, 38.
Ἀπολλοφάνης, Atheniensis, XIX, 168. alius LIX, 10.
Ἀπολλοφάνης, Pydnaeus, XIX, 194. 195.
Ἀπόλλων LII, 9. LIX, 10. Pr. 54, 2. ἀγυιεύς XXI, 52. XLIII, 66. ἀποτροπαῖος XXI, 53. πατρῷος LVII, 54. 67. προστατήριος XXI, 52. Πύθιος XVIII, 141. 155. 157. XIX, 21. 327. XXV, 34. LIX, 97. Ep. 4, 3. σωτήρ XLIII, 66.
Ἀπολλωνία, Thraciae oppidum, VII, 28. IX, 26.
Ἀπολλωνίδης, Cardianus, VII, 39. XXIII, 183.
Ἀπολλωνίδης, *Halicarnassensis, XXXV, 33.
Ἀπολλωνίδης, Mytilenaeus, XL, 36.
Ἀπολλωνίδης, Olynthius, IX, 56. 66. LIX, 91.
ἀποστάσιον XXV, 65. XXXV, 48.
ἀποστολεῖς XVIII, 107. XLVII, 26. 33. 37. L, 10.
ἀποτιμᾶν (ἀποτίμημα, ἀποτίμησις) XXX, 4. 7 sq. 18. 26 sqq. XXXI, 3 sq. 11. XLI, 5. 7. 10. 19. XLIX, 11.
*Ἄρατος, Halicarnassensis, XXXV, 23.
Ἄρατος alius Ep. 5, 1.

Ἀραφήν, pagus Atticae, XLIII, 70.
arbitri civitatum controversias iudicantes VII, 7. 36. XII, 11. 14. 16.
Ἀργαῖος, Macedo, XXIII, 121.
ἀργία LVII, 32.
Ἄργος LII, 5. 10. Ἀργεῖοι V, 14. 18. VI, 9. 10. 11. 15. 19. X, 52. XV, 22 sq. XVIII, 64. 295. XIX, 261. LII, 10. LIX, 33. 101. Ep. 4, 8. Ἀργολικὸς κόλπος LII, 5.
Ἄργουρα, Euboeae oppidum, XXI, 132. 164.
Ἀρεθούσιος LIII, 2. 10. 14 sqq.
Ἄρειος πάγος XXIII, 22. 65 sqq. XXIV, 22. XXVI, 5. XL, 32. 57. LIV, 28. LVIII, 29. LIX, 80. 83. Ep. 3, 38. ἡ βουλὴ ἡ ἐξ Ἀρείου πάγου XVIII, 133. 134. XX, 157. XXIII, 24. 26. 30. 215. XXV, 23. XL, 33. LIV, 25. LIX, 80 sqq.
Ἀρεοπαγῖται LIX, 83.
Ἀρετή LXI, 21.
Ἄρης XXIII, 66.
Ἄρθμιος, Zelita, IX, 42 sq. XIX, 271.
Ἀριοβαρζάνης, Persa, XV, 9. XXIII, 141. 202.
Ἀρίσταιχμος, Atheniensis, XXXVIII, 12. 15.
Ἀρίσταιχμος, Eleus, XVIII, 295.
Ἀρίσταρχος, Moschi f., XXI, 104. 107. 116 sqq.
Ἀριστείδης III, 21. 25. XIII, 29. XXIII, 209. XXVI, 6. Ep. 3, 17.
Ἀριστείδης, de tribu Oeneide, XXI, 60.
Ἀριστογείτων, sycophanta, XXV. XXVI. Ep. 3, 15. 33. 38 sq.
Ἀριστογείτων, tyrannicida eiusque posteri, XIX, 280. XX, 18. 29. 70. 127 sq. 159. 160. XXI, 170.
Ἀριστογένης XLI, 8. 10, 18 sq. 21.
Ἀριστόδημος, Aristotelis f., XLIV, 10.
Ἀριστόδημος, histrio, XVIII, 21. XIX, 12. 18. 97. 246. 315.
Ἀριστόκλεια, meretrix, LIX, 19.
*Ἀριστοκλῆς Μυρρινούσιος XXIV, 71. [sqq.
Ἀριστοκλῆς Οἰῆθεν XXXIII, 14
*Ἀριστοκλῆς Παιανιεύς XXI, 168.
Ἀριστοκράτης, Charidemi patronus, XXIII.
Ἀριστοκράτης, Scelliae f., LVIII, 67.
*Ἀριστοκράτης Φαληρεύς LIX, 40. alii XXXVIII, 27. LIV, 39.
Ἀριστόλεως, Thasi tyrannus, XVIII, 197.
Ἀριστόλοχος, argentarius, XLV, 63.
Ἀριστόμαχος Κριτοδήμου Ἀλωπεκῆθεν XXIII, 13 sq. 110. LVIII, 35. LIX, 24. 25.
Ἀριστόμαχος *Κεφαλῆθεν LIX, 65. *71.
Ἀριστομένης Ἀναγυράσιος XLII, 28.
Ἀριστομήδης X, 70.
Ἀριστόνικος *Φρεάρριος XVIII, 83. *84. 223. 312.
Ἀριστονόη, Philostrati f., XLII, 27.
Ἀριστόνους Δεκελεύς LII, 3. 11.
Ἀριστοτέλης Παλληνεύς XLIV, 10.
Ἀριστοφῶν Ἀζηνιεύς, orator, VIII, 30. XVIII, 70. 75. 162. 219. XIX, 291. 297. XX, 146. 148. XXI, 218. XXIV, 11. L, 6. LI, 9. 16. LVII, 32.
*Ἀριστοφῶν Κολλυτεύς XVIII, 75.
Ἀριστοφῶν, sycophanta, XXXII, 11. 14. 24.
Ἀρίστρατος, Naxi tyrannus, XVIII, 197.
Ἀρίστρατος, Sicyonius, XVIII, 48. 295.
Ἀρίστων, actor or. LIV (31).
Ἀρίστων Ἀλωπεκῆθεν XXV, 71. 73.
Ἀρίστων, Neaerae f., LIX, 38. 121. 124.
Ἀρκαδία XVI, 4. XVIII, 304. XIX, 10. 11. 198. 261. 303. 306. 310. Ἀρκάδες X, 52. XVI, 1 sqq. XVIII, 64. 295. XIX, 261. 288. 305. Pr. 8, 1 sq. Ep. 4, 8.
Ἀρκέσας Παμβωτάδης LIII, 13.
Ἀρκτοῦρος, sidus, XXXV, 10. L, 19.
*Ἁρματεὺς Κυδαθηναιεύς XLV, 8.
Ἁρμόδιος, tyrannicida eiusque posteri, XIX, 280. XX, 18. 29. 70. 127 sq. 159. 160. XXI, 170.
ἁρμοσταί XVIII, 96. XX, 68. XXIV, 128.
Ἅρπαλος, Macedo, Ep. 2, 11. 3, 58. alius (?) XXIII, 149.
Ἀρτάβαζος, Persa, IV, 24. XXIII, 154 sq. 157. 159. 163.
Ἄρτεμις XXI, 52. XLIII, 66.

Ἀρτεμισία, Mausoli coniux, XV, 11. 27.
Ἀρτεμίσιον, Euboeae promontorium, XVIII, 208. LIX, 95.
Ἀρτέμων, Phaselita, XXXV, 3 sqq.
Ἀρύμβας, Epiri rex, I, 13.
ἀρχαί (ἄρχοντες), magistratus, XVIII, 114. 117. XIX, 249. XXIV, 150. XXV, 20. 23. 30. XXVI, 1 sqq. XXXV, 51. XXXVII, 33. XXXIX, 9. 10. XLII, 13. XLIII, 71. XLIV, 36. XLV, 58. XLVII, 18. 21 sq. 35. LII, 30. LIII, 24 sq. LVII, 25. 46. 48. 67. LVIII, 8. 55. Pr. 48, 2. 55, 3. Ep. 3, 15. κληρωταί XXII, 48. XXIV, 112. 160. XXV, 50. ἀρχή = archontis munus XLIV, 68. XLVI, 14. LVIII, 27. LIX, 72. 81.
ἀρχίδια XVIII, 261.
ἀρχαιρεσίαι XIII, 19. XXIII, 171. XLIV, 39.
Ἀρχεβιάδης Δημοτέλους Ἁλαιεύς LIV, 7. 31. 34.
Ἀρχεβιάδης Λαμπτρεύς LII, 3 sq. 6. 11 sqq.
Ἀρχέβιος, Atheniensis, XXIV, 11.
Ἀρχέβιος, Byzantius, XX, 60. 61. XXIII, 189.
*Ἀρχεδάμας Ἀναγυράσιος XXXV, 14.
Ἀρχέδημος Ἀναφλύστιος L, 17. alius XLV, 70.
*Ἀρχέλαος Κυδαθηναιεύς LIX, 123.
Ἀρχένεως XXIX, 58. L, 13. 28.
*Ἀρχενομίδης Ἀρχεδάμαντος Ἀναγυράσιος XXXV, 14.
Ἀρχέπολις Πειραιεύς LIII, 20.
Ἀρχέστρατος, argentarius, XXXVI, 43. 45. 48.
Ἀρχετίων XXI, 134.
Ἀρχιάδης, Euthymachi f., XLIV, 2 sqq.
Ἀρχίας, hierophanta, LIX, 116.
Ἀρχίας Χολαργεύς XXII, 40.
Ἀρχίδαμος, rex Lacedaemonis, LIX, 98.
Ἀρχιδίκη, Euthymachi f., XLIV, 9.
ἀρχιθεωρία XXI, 115.
Ἀρχίλοχος, Charidemi f., XXXVI, 49. * alius XLIII, 37. 45.
Ἀρχῖνος XXIV, 135. Ep. 3, 17.
Ἀρχίππη, Pasionis uxor, XLV, 28. 74.
Ἄρχιππος, Euthymachi f., XLIV, 9.
Ἄρχιππος Μυρρινούσιος XXXIII, 15. 22.
Ἀρχύτας, Tarentinus, LXI, 46.
ἄρχοντες: οἱ ἐννέα XVIII, 112. XX, 27 sq. XXI, 85. XXII, 26. XXIV, 20. 150. LVII, 70. LVIII, 8. LIX, 80. 92. 104. 106. — ὁ ἄρχων XXI, 13. 17. 33. 60. 178 sq. XXIV, 43 sq. XXX, 6. 26. XXXV, 48. XXXVII, 33. 46. XXXIX, 8. 9. XLIII, 7 sq. 15 sq. 75. XLIV, 1. 11. 34. 39. 42. 52. XLVI, 22 sq. XLVIII, 23. 25. 31. LVIII, 32. — ὁ βασιλεύς XXII, 27. XXXV, 48. XXXIX, 9. XLVII, 69. LIX, 72 sqq. 110. 121. (ἡ βασίλιννα, eius coniux, LIX, 73. 74. 78.) — ὁ πολέμαρχος XVIII, 165. XXXII, 29. XXXV, 48. XLVI, 22. 23. LIX, 40. 49. — οἱ θεσμοθέται XVIII, 116. XIX, 128. XX, 90. 98. 99. 100. XXI, 32. 36. 38 sqq. 47. XXII, 21. 23. 29. XXIII, 31 sq. 216. XXIV, 22. 63. XXV, 28. XXVI, 5. 8. XXXIII, 1. XXXIV, 45. XXXVII, 33. 34. XXXIX, 10. XLV, 4. XLVI, 26. LVII, 66. LVIII, 27. 28. 52. LIX, 16 sq. 52 sq. 62. 65. 66. Cf. ἀρχαί.
ἀσέβεια (ἀσεβεῖν) XVIII, 155. XIX, 21. XXI, 55. 104. 147. 199. XXII, 2. 27. 69. 78. XXIV, 7. 104. 177. XXV, 52. XXXV, 48. LVII, 8. LIX, 12 sq. 74. 77. 107. 109. 116.
Ἀσία VIII, 24. 27. XI, 5. XXIII, 140. 154. 156. 158. LX, 10.
Ἀστεῖος, archon ol. 101, 4, XLIX, 22. 28. 60. 62. LIX, 35 sq.
ἀστράτεια XXI, 58. XXIV, 102. 103. 105. 107. 119. XXXIX, 16. LIX, 27.
ἀστυνόμοι XXIV, 112. Pr. 55, 3.
Ἀσωπός, Boeotiae fluvius, LIX, 99.
ἀτέλεια (ἀτελεῖς) XIII, 23. 24. XVIII, 91. 102. XX. XXI, 155. 166. XXIII, 211. XXXIV, 36. XLII, 18. L, 35. LIX, 27.
ἀτίμητος, v. δίκη.
ἀτιμία (ἄτιμοι) IX, 42 sqq. XV, 32. XIX, 32. 262. 284. XX, 156. XXI, 32. 33. 58. 87. 90 sqq. 95 sq. 99. 103. 113. 182 sq. XXII, 34. XXIII, 62. XXIV, 45 sq. 50. 138. 201. XXV, 30. XXVI, 11. XXVII, 67. 68. XXVIII, 21. XXIX, 16. XXXVII,

49. XLIII, 58. LI, 12. LVIII, 45. LIX, 2. 6. 10. 27. 52. 87. Ep. 2, 20.
Ἀτρόμητος, Aeschinis pater, XVIII, 54. 130. 137. XIX, 281.
Ἀτρεστίδας, Arcas, XIX, 305 sq. 309.
Ἀττική VI, 35. 36. VII, 4. VIII, 7. 8. 18. 36. IX, 10. X, 8. XVIII, 71. 96. 139. 141. 143. 146. 164. 165. 176. 195. 213. 230. 241. 300. 301. XIX, 83. 87. 153. 220. 334. *Ἀττικός*: *ἐμπόριον* XXXIV, 36 sq. XXXV, 28. 50 sq. *γράμματα* (=antiqua) LIX, 76. *δραχμαί* XXXIV, 23. *ἀττικῶς* XVI, 2. *ἀττικιστί* Pr. 8, 2. *ἀττικίζειν* LVIII, 37.
Αὐτοκλῆς, praetor, XXIII, 104. XXXVI, 53. L, 12.
Αὐτομέδων, Eretriae tyrannus, IX, 58.
Αὐτόνομος, scriba, XLIX, 7 sq.
Αὐτοφραδάτης, Persa, XXIII, 154 sq.
αὐτόχθονες XIX, 261. LIX, 74. LX, 4.
ἀφαιρεῖσθαι, in libertatem vindicare, XIX, 198. XXI, 36. XXVII, 25. XLVII, 38. LVIII, 19. 21. LIX, 40. 45.
Ἀφαρεύς XLVII, 31 sq. LII, 14.
Ἀφεψίων (*Ἀψηφίων* s. *Ἀψεφίων*, cf. Boeckh Corp. Inscr. t. II. p. 340), accusator Leptinis, XX, 144.
Ἄφιδνα, pagus Atticae, XVIII, 38. LIX, 9. *Ἀφιδναῖοι* XXI, 93. 107. XXXV, 34. XLV, 19. LIX, 43.
Ἀφόβητος, Aeschinis frater, XIX, 237. 285. 287.
Ἄφοβος, Demosthenis tutor, XXVII—XXXI. [237.
Ἀχαιοί IX, 34. XVII, 10. XVIII,
Ἀχαρνεῖς, Acharnarum, pagi Attici, incolae, XX, 146. XXXV, 20. XLV, 8. 28. 46. XLVIII, 11. L, 27. LIX, 45. 47. Ep. 3, 21.
Ἀχερδούσιοι, Acherduntis, pagi Attici, incolae, XXI, 168.
**Ἀχράδης Μνησωνίδου Ἀχαρνεύς* XXXV, 20.

Βάθιππος, accusator Leptinis, XX, 144.
Βάθυλλος, Polyarati f., XL, 6 sq. 25.
Βάκχιος LIV, 39.
Βάκχος XXI, 52.
βαλανεῖα L, 35. LIV, 9 sq.
βάρβαροι III, 24. IV, 40. VI, 11. VIII, 6. 67. IX, 27. 31. 38. 45. X, 33. 69. XIII, 24. XIV, 6. 10. 31 sq. XV, 15. 23. XVII, 23. XVIII, 182. 202. 253. 270. XIX, 244. 268. 272. 308. 312. 317. 319. 327. XXI, 41. 48. 50. 106. 150. XXII, 13. XXIII, 132. 135. 200. XXIV, 129. XXVI, 17. XXXV, 2. XLIII, 22. XLV, 30. 73. 81. L, 22. LVIII, 38. LIX, 95. 97. LX, 7. LXI, 25.
βάσανοι (*βασανίζειν*) XXIX, 5. 11 sqq. 17. 21. 25. 29. 35 sq. 38 sqq. 52. 55 sq. XXX, 27. 35 sqq. XXI, 13. XXXVII, 40. 42. 51. XL, 15. XLV, 16. 61 sq. XLVI, 21. XLVII, 8 sqq. 17. 39. 47. XLVIII, 16. 18 sq. 27. 32. 34. XLIX, 55 sq. LII, 22. LIII, 22 sqq. LIV, 27. LIX, 121 sqq.
βασιλεύς, v. *ἄρχοντες*.
βασιλεύς = rex Persarum IV, 48. VI, 11. IX, 16. 47. X, 31 sq. 51 sq. XIII, 10. 24. XIV, 3 sqq. XV, 5 sqq. XIX, 137. 253. XX, 68. XXIII, 140. XLIX, 3. 25 sqq. LIX, 96. Pr. 7, 3.
Βάταλος, Demosthenis cognomen, XVIII, 180.
Βηρισάδης, Thraciae regulus, XXIII, 8 sqq. 170. 174.
βίαια XXXVII, 33.
Βιάνωρ, Amadoci uxoris frater, XXIII, 10. 17. 123. 180. 189.
βλάβη XXI, 25. 43. XXIII, 50. XXXVIII, 2. XLIX, 20. LII, 14. LV, 20. LVI.
Βλεπαῖος, argentarius, XXI, 215. XL, 52.
βοηδρόμια III, 31.
Βοιωτία VIII, 63. 65. X, 64. 67. XVIII, 41. 96. 213. 301. XIX, 20. 74. 127. 318. XXIII, 182. *Βοιωτοί* XVIII, 166. 230. XLIX, 14 sqq. 21. 48 sqq. LIX, 95. 101. *Βοιώτιος* adi. XLIX, 14 sqq. 48 sqq. LIX, 94. *βοιωταρχεῖν* LIX, 99.
**Βοιώτιοι* XXXV, 13. 14.
Βοιωτὸς Μαντίου Θορίκιος XXXIX. XL.
Βοιωτός, Plangonis frater, XXXIX, 32.
Βοιωτός alius XXI, 71. 72.
Βορυσθένης, Sarmatiae fluvius, XXXV, 10.

Βοσπόριον, locus prope Byzantium, XVIII, 91.
**Βοσπόριχος*, Byzantius, XVIII, 90.
Βόσπορος XX, 29. 36. XXXIV, 5. 8. 10 sq. 22 sqq. XXXV, 10. XXXVIII, 11. *Βόσπορος* urbs = Panticapaeum XX, 33.
**Βουλαγόρας Ἀλωπεκῆθεν* XVIII, 164.
βουλή XX, 100. XXI, 131. *ἡ βουλὴ οἱ πεντακόσιοι* (*βουλεύειν, βουλευταί*) VIII, 4. XVIII, 25. 37. 55. 73. 75. 115. 116. 119 sqq. 135. 164. 169. XIX, 17 sq. 19 sq. 31 sq. 34. 70. 124. 128. 154. 179. 185. 190. 279. 285. XX, 4. 90. XXI, 111. 114. 116. 119. 121. 161. 162. XXII, 5 sqq. 35. XXIII, 87. 92. 97. XXIV, 9. 11. 27. 45. 47. 48. 50. 63. 96 sqq. 147 sq. 149. XXV, 20. 23. XXXIX, 10. XLVII, 18. 19. 26. 33. 36 sq. 41 sqq. 80. L, 6. 8. LI, 1. LIII, 23 sqq. LVII, 8. 56. LIX, 3. 4. Ep. 1, 2. 2, 1 sq. 12. 3, 1. 38. 4, 1. 6, 1. *βουλευτήριον* VII, 33. XVIII, 55. 169. XIX, 18. XXII, 36 sqq. XXIV, 96. XL, 20. XLVII, 42. LIX, 27. —. Cf. *Ἄρειος πάγος.*
Βούσελος ἐξ Οἴου XLIII, 19 sqq. *Βουσελίδαι* 70. 80.
Βούχετα, Epiri oppidum, VII, 32.
βοῶναι XXI, 171.
Βραυρών, Atticae oppidum, LIV, 25.
Βράχυλλος, Lysiae frater, LIX, 22.
Βρόμιος = Διόνυσος XXI, 52.
Βρυτίδαι, gens Attica, LIX, 59. 61.
Βυζάντιον VIII, 14. 18. 66. IX, 20. X, 68. XI, 5. XV, 26. XVIII, 71. 80. 230. 240. 244. 302. XX, 60. 61. XXXIII, 5. XLV, 64. *Βυζάντιοι* V, 25. VIII, 14. XI, 3. XII, 2. 16. XV, 3. XVIII, 87 sqq. 95. 136. 230. 238. 241. XX, 61. XXIII, 189. XXXIII, 5. L, 5. 17. Ep. 2, 8.
βωμοί VII, 39. XVIII, 92. 134. XXI, 52. XXV, 34 sq. XLIII, 14. 82. LIV, 26. LIX, 76. 78.

γαμήλια εἰσφέρειν LVII, 43. 69.
Γανυμήδης LXI, 30.
Γέλαρχος XX, 149.
γεννῆται LVII, 23 sq. 67. LIX, 55. 59 sq.
γεραιραί, Bacchi sacerdotes, LIX, 73. 78. 79.
Γεραιστός, Euboeae promontorium, IV, 34. XIX, 326.
γερουσία, senatus Spartanorum, XX, 107.
Γλαυκέτης XXIV, 12 sq. 125. 128. 137. 187. 197.
**Γλαυκέτης Κηφισιεύς* LIX, 40.
Γλαυκοθέα, Aeschinis mater, XVIII, 130. 284. XIX, 281.
Γλαῦκος, Carystius, XVIII, 319.
Γλαῦκος ἐξ Οἴου XLIII, 4. 7.
Γλαύκων ἐξ Οἴου XLIII, 4. 7. 43.
Γλαύκων alius XXIII, 172.
Γλαυκωνίδης Κυδαντίδης LIX, 24. 25.
Γοργώπας, Spartanus, XX, 76.
γραμματεῖς XVIII, 127. 261. XIX, 98. 314. XX, 94. 161. *τῆς βουλῆς* XVIII, 38. XXIV, 42. *τῶν τοῦ ἐμπορίου ἐπιμελητῶν* LVIII, 8. 26. *ὁ κατὰ πρυτανείαν* XXIV, 63. *ταμίου* XLIX, 7. iudicii XLII, 29. *ὑπογραμματεῖς* XIX, 70. 200. 237. 249.
γραφαί XVIII, 124. 249. 250. 251. XIX, 209. 257. XX, 138. XXV, 47. XXVI, 9. XXXIX, 14. 19. XLVI, 9. 26. LVIII, 2. 6. 15. *δημόσιαι* XXIV, 6. *ἴδιαι* XXI, 47. *γρ. ἀγραφίου* LVIII, 51 sq. *ἀπροστασίου* XXXV, 48. *ἀσεβείας* XXII, 2. 27. XXIV, 7. XXXV, 48. LVII, 8. *ἀστρατείας* XXXIX, 16. LIX, 27. *βουλεύσεως* XXV, 28. 71. 73. *δώρων* XLVI, 26. *ἀδίκως εἰρχθῆναι ὡς μοιχόν* LIX, 66. *ἐπιτροπῆς* XXI, 78. XXVII, 12. *ἱερῶν χρημάτων* XIX, 293. *κακώσεως* LVIII, 32. *κλοπῆς* XXII, 26. *λιποταξίου* XXI, 103. 105. XXXIX, 17. *ξενίας* XXXIX, 18. XL, 41. XLIX, 66. Ep. 3, 25. *παρανόμων* VII, 43. XVIII, 13. 54. 105. 119. 235. XX, 96. 144. XXI, 5. 182. XXII. XXIII. XXIV (154). XXV, 67. 87. XXVI, 8. 11. XLVII, 34. LVIII, 14. 22. 30. 33. 34. 37. 43. 46. LIX, 5. 90 sq. *παραπρεσβείας* XIX. XXI, 5. *προδοσίας* XX, 79. *τραύματος* XL, 32. LIV, 18. *ὕβρεως* XXI, 25. 28. 32. 45. 46. XXXVII, 33. XLV, 4. LIII, 16. LIV, 1. *φόνου* XXI, 105. 107. 110. LIX, 9. *ψευδοκλητείας* LIII,

15. 17. — γραφή = libellus: eius formula * XVIII, 54.
Γύλων, Demosthenis avus, XXVIII, 3.
γυμνασιαρχία (γυμνασίαρχοι) IV, 36. XX, 21. 125. XXXV, 48. XXXIX, 7.

*Δαμάγητος, Byzantius, XVIII, 90.
Δαμόστρατος (Δημόστρατος) Μελιτεύς LVII, 37. 68.
Δαμόστρατος, eius nepos, Amytheonis f., LVII, 37 sq.
*Δαμότιμος Ἀφιδναῖος XXXV, 34.
Δάοχος, Thessalus, XVIII, 295.
δαρεικοί XXIV, 129.
Δαρεῖος I., rex Persarum, LIX, 94.
Δᾶτις, dux Persarum, LIX, 94.
debitores fiscales XX, 156. 182. XXII, 33. 56. XXIV, 22. 39. 45 sq. 50. 79. 200. XXV, 4. 17 sq. 30. 53. 70 sqq. 85 sq. 94. XXVI, 1. 6. XXVIII, 1. XXXVII, 25. XXXIX, 14. XL, 22. LIII, 15. 28. LVIII, 1. 14 sqq. 19 sqq. 45. 48 sqq. LIX, 7. 9. armamentorum XLVII, 19 sqq.
debitum XXIX, 36. XXXII, 12. 14 sqq. XXXIII, 6 sqq. XXXIV, 2 sqq. XXXV, 1 sqq. XXXVII, 4 sqq. XXXVIII, 11 sqq. XL, 37. 52. XLII, 28. XLV, 70. XLIX. L, 17. 56. LVI, 1 sqq.
δεῖγμα XXXV, 29. L, 24.
Δείναρχος, Corinthius, XVIII, 295. Ep. 6, 1.
Δεινίας * Θεομνήστου Ἀθμονεύς, Apollodori socer, XXXVI, 17. XLV, *55. 56. L, 24 sqq. XLV, 55.
Δεινίας Ἐρχιεύς XX, 146. 151.
*Δεινίας Φορμίδου Κυδαντίδης LIX, 123.
Δείνων, frater Nicostrati, LIII, 6 sq.
δεκαδαρχία Thessaliae VI, 22.
δεκάτη, sollemnia natalitia, XXXIX, 20. 22. 24. XL, 28. 59. spoliorum decimae XXIV, 120. 128 sqq. vectigal XX, 60.
Δεκέλεια, pagus Atticae, XXI, 146. XXIV, 128. Δεκελεῖς LII, 3. Δεκελεικὸς πόλεμος XVIII, 96. XXII, 15. LVII, 18.
Δελφίνιον XXIII, 74. XL, 11.
Δελφοί V, 23. XII, 21. XVIII, 157. XIX, 65. XXI, 51. 144. XXV, 34. XLIII, 66. LIX, 33. 97. Ep. 3, 26. ἡ ἐν Δελφοῖς σκιά V, 25.
Δεξίθεος, Amytheonis f., LVII, 37.
deprecatio reorum in iudiciis XXI, 5. 75. 99. 151. 182. 204. 206. 208. XXIII, 206. XXV, 78. XXVII, 68. XXX, 32. XXXVI, 57. XLVII, 43. XLIX, 10. 22. LIX, 117.
Δερκύλος XIX, 60. 125. 175.
δευτεραγωνιστής XIX, 10.
Δῆλος, insula, XVIII, 134. 135.
δημαγωγοί VIII, 34. XXVI, 4.
Δημάδης, orator, XVIII, 285. XXV, 47.
Δημάρετος, Atheniensis, XXXVIII, 10 sqq.
Δημάρετος, Corinthius, XVIII, 295.
δήμαρχοι XLIII, 57. 58. XLIV, 37. L, 6. LVII, 26. 60. 63.
*Δημέας Σουνιεύς XXI, 121.
Δημήτηρ III, 32. XIX, 262. XXIV, 151. LII, 9.
δημιουργοί, Peloponnesiorum magistratus, XVIII, 157.
Δημοκλῆς XXV, 47.
*Δημοκράτης Σωφίλου Φλυεύς XVIII, 29. 187.
δημοκρατία (δημοκρατεῖσθαι) II, 21. VI, 21. 24. X, 4. XV, 18. XVII, 1. XVIII, 132. XIX, 136. 184 sq. XX, 15. 108. 159. XXI, 67. 207. XXII, 31. 47. 51. XXIII, 66. XXIV, 5. 42. 56 sqq. 76. 119. 154. 163 sq. XXV, 25. XXVI, 10. LI, 11. LVIII, 34. LIX, 75. LX, 26. Pr. 2, 1 sq.
*Δημοκρατίδης Χολλείδης XXXV, 20.
*Δημόκριτος Δημοφῶντος Ἀναγυράσιος XVIII, 75. 77.
δῆμοι, pagi Atticae, XVIII, 120. XXXIX, 9. 30. XL, 34. XLIII, 57. 58. 64. L, 8. LVII, 2. 49. 57 sqq. LIX, 104. δημόται XVIII, 261. XXXIX, 5. 21. 29. XL, 34. XLIII, 35. 36. 58. XLIV, 37. 39 sq. 44. L, 6 sqq. LII, 28. LVII, 5 sqq. LIX, 13. 122. cf. ἐγγράφειν.
Δημομέλης, Demosthenis affinis, XVIII, 223 (?). XXVII, 11.
*Δημόνικος Φλυεύς, archon pseudeponymus, XVIII, 115.

*Δημόνικος Μαραθώνιος XVIII, 135.
Δημοσθένης, Alcisthenis f., praetor, III, 21.
Δημοσθένης Παιανιεύς, oratoris pater, XVIII, 29. 54. 84. 105. 118. 181. 187. XXVII, 4. XXVIII, 15.
Δημοσθένης Δημοσθένους Παιανιεύς: accusator celeberrimus LVIII, 41. accusatus ab Aristogitone XXV, 36. ab Euctemone λιποταξίου XXI, 103. a Midia caedis 104 sqq. 110. a Pythocle et Aeschine XVIII, 285. a sycophantis 249. advocatur LVI, 50. LVIII, 42. a Demone XXXII, 31 sq. Aeschini infestus XVIII. XIX. LVIII, 43. eius aetas XXI, 154. ab Alexandro postulatur XVIII, 41. 322. Antiphontem corripit 132. aquae potor VI, 30. XIX, 46. architheorus XXI, 115. cognomen eius Βάταλος XVIII, 180. choregiam suscipit VIII, 70. XXI, 13. 156. Ep. 2, 10. in contione verba facit V, 6. VI, 29. XIII, 12. XVIII, 136. 143. 173 sqq. 191. 214. XIX, 23. 45. 116 sq. 135. 144. 156. 254. ad socios VI, 19 sqq. Thebis coram Philippi legatis XVIII, 214. consideratus XIX, 206. saepius coronatus XVIII, 83. 222. 257. ut coronetur rogat Ctesiphon 54 sqq. Euboicum bellum dissuadet V, 5. in Euboea stipendia facit XXI, 133. cum Eubulo colliditur XXI, 206. exul Ep. 1, 2. 2, 1 sqq. 3, 34. eius familia et res familiaris XXVII, 4 sqq. foedus cum Thebanis suadet et persuadet XVIII, 174 sqq. cum pluribus aliis gentibus XVIII, 237. in Harpalica lite praeter fas condemnatus Ep. 2, 11 sq. 3, 38. legationes multas subit XVIII, 45. 244. 320. Ep. 2, 8. ad Peloponnesios VI, 19. 26. 29. IX, 72. ad Philippum bis VI, 29. XVIII, 32. XIX, 17. 188 sq. 316. Ep. 2, 6. tertiam detrectat XIX, 122. 172. ad Thebanos XVIII, 211 sq. legationem ad Persas suadet X, 33. legem de trierarchis fert XVIII, 102 sq. eius liturgiae VIII, 70. ex tempore non loquitur XXI, 191. Midias et Thrasylochus bonorum permutationem ei offerunt XXI, 78 sq. Midiam κακηγορίας et ἐξούλης accusat 81 sqq. a Midia quibus iniuriis affectus XXI. cum Onetore quas lites habuerit XXX. XXXI. orationem funebrem post pugnam ad Chaeroneam habet XVIII, 285 sq. LX. pecuniam de suo donat XVIII, 113. 118. XXI, 161. Ep. 2, 10. pacis cum Philippo negat se auctorem XVIII, 21 sq. privatas suas res exponit XVIII, 257. 268. Pytheas ei adversatur Ep. 3, 25. Pythoni respondet XVIII, 136. Ep. 2, 8. redimit captivos VIII, 70. XIX, 169 sq. ad rem publicam quando accesserit XVIII, 18. 60. rebus publicis operam dat XVIII, 59. quomodo V, 12. VIII, 68 sqq. XVIII, 69. 86. 88. 108 sq. 189 sqq. 220 sq. 246. 265. 297 sqq. 320. 322 sq. XIX, 206. 223. XXI, 189 sq. Ep. 2, 7 sqq. eius rogationes XVIII, 25 sq. 28. *29. 32. 79 sq. 179. *181 sqq. 248. 302. 320. XIX, 154. senator XIX, 234. XXI, 111. 114. σιτώνης XVIII, 248. symmoriae praefectus XXI, 157. τειχοποιός XVIII, 55. 113. testis *LIX, 123. cum Theocrine rem habet LVIII, 23. 35 sq. 42. 44. theoricis praefectus XVIII, 55. trierarchiam suscipit VIII, 70. XVIII, 99. XXI, 154. 161. Ep. 2, 10. Troezenem confugit Ep. 2, 15. tutoribus committitur XXI, 157. XXVII, 4 sqq. XXVIII, 15. patrimonium suum ab eis repetit XXI, 78 sqq. XXVII. XXVIII.
δημόσιοι, v. servi.
Δημοτέλης Ἁλαιεύς LIV, 31.
Δημόφαντος XX, 159.
Δημόφιλος, argentarius, XLI, 11.
*Δημοφῶν Ἀναγυράσιος XVIII, 75.
Δημοφῶν, Demonis filius, Demosthenis tutor, XXVII, 4. 5. 12 sqq. 32. 35. 38. 42 sq. 45. 49. XXVIII, 14 sq. 19. XXIX, 6. 43. 45.
Δημοχάρης Λευκονοεύς, Demosthenis avunculus, XXVII, 14 sqq. XXVIII, 3 sq.
Δημοχάρης Παιανιεύς, Demonis f., Demosthenis affinis, XLVII, 22. 28. 32. LIX, 30. 32. 40.

Δημοχάρης alius LVIII, 29.
Δήμων Παιανιεύς, Demosthenis avunculus, XXVII, 4. 11. XXVIII, 15. XXIX, 20. 33. 36. 52. 56. LIX, 30. actor or. XXII (32).
διαδικασία (διαδικάζεσθαι): in rebus privatis, XX, 147. XXIV, 13. 54. XXVIII, 17. XXX, 2. XLIII, 7. 15. 34. 61. XLIV, 7. 40. 50. XLVII, 28. 31 sq. LIX, 115. in publicis VII, 7 sq. 41 sqq. VIII, 57.
διαιτηταί (δίαιτα) XXIV, 56. XXXVIII, 6. privati XXI, 83 sq. XXVII, 1. XXIX, 58. XXXIII, 14 sqq. 29 sqq. XXXIV, 18 sq. 44. XXXVI, 15. 17. XL, 16. 39 sqq. XLI, 1. 12. 14. 28. XLVII, 43. 45. XLVIII, 2. 40. 53. LII, 14 sq. 30. LV, 9. 35. LIX, 45 sqq. 68 sqq. publici XXII, 27. 28. XXV, 58. XXVII, 49 sqq. XXIX, 20. 31. 58. XXXVI, 18. 33. XXXIX, 22. 37. XL, 10 sq. 17. 30 sq. 38. 55. XLIII, 31. XLV, 8 sqq. 17. 23 sq. 58. 60. XLVI, 5. XLVII, 5. 6. 12 sqq. 47. XLIX, 19. 21. 34. 43 sq. 55. LII, 14. LIV, 26 sqq. LV, 2. 6. 31. 34. LVI, 15. 18.
διαλλαγαί, LIX, 47. earum formula *71.
διαμαρτυρία (διαμαρτυρεῖν), exceptio, XLIV, 1 sq. 5 sqq. 45 sqq. 57 sqq.
διαχειροτονία, v. χειροτονία.
διαψήφισις XVIII, 132. LVII.
dies praestituta XLII, 13.
Δίφιλος Μελιτεύς LIX, 58.
δίκαι XX, 147. XXV, 54. XXVII, 25. XXXVII, 3. 33. 37. XLII, 13. XLV, 4. XLVI, 9. LIII, 20. ἀνάδικοι XXIV, 191. XL, 39. 42. ἀτίμητοι XXI, 90. XXVII, 67. XXXVII, 40. LV, 15. 25. 28. ἔμμηνοι VII, 12. XXXIII, 23. XXXVII, 2. ἐμπορικαί VII, 12. XXI, 176. XXXIII, 1 sq. 23. XXXIV, 42. XXXV, 45 sq. 48. ἔρημοι XXI, 85. 87. 92. XXXII, 26 sq. 29. XXXIII, 20. 33. XXXIX, 18. 37. XL, 17. LV, 2. 6. 31. ἴδιαι et δημόσιαι XVIII, 210. XXI, 25. 28. XXIV, 114. XXXVI, 53. XLVI, 26. XLIX, 20. LIII, 23. LIV, 1. μεταλλικαί XXXVII, 35 sqq. 47. μὴ οὖσαι XXI, 90. XXXIX, 38. κατὰ πόλεως XVIII, 150. LIX, 98. ἀπὸ συμβόλων VII, 13. φονικαί XXIII, 43. 51. 66. 82. δ. αἰκίας XXXVII, 33. XLVII, 45. LIV. ἀποστασίου XXV, 65. XXXV, 48. ἀργυρίου XXXIX, 25. XLVIII, 45. LII, 14. 16. βιαίων XXXVII, 33. βλάβης XXI, 25. XXIX, 16. XXXVIII, 2. XLIX, 20. LII, 14. LV, 20. 28. LVI. ἐμφανῶν καταστάσεως LIII, 14. ἐνοικίου XLVIII, 45. ἐξαγωγῆς XXV, 55. 58. ἐξούλης XXI, 44. 81. 82. 91. XXX. XXXI. XXXIX, 15. XL, 34. LII, 16. ἐπιτροπῆς XXVII. XXVIII. XXIX, 6. 30. XXX, 8. 15. XXXVIII, 4. 17. κακηγορίας XXI, 32. 81. 89 sq. 93. LIV, 17. κακοτεχνιῶν XLIX, 56. κλοπῆς XXII, 27. XXIV, 114. περὶ τοῦ ὀνόματος XXXIX. XL, 35. 44. προικός XL, 16. 31. σίτου LIX, 52 sq. χρέως XLIX. ψευδομαρτυριῶν XXIX. XXXIX, 18. XLV. XLVI. XLVII.
δικασταί, δικαστήρια, v. iudices, iudicia. [112.
δικασταὶ κατὰ δήμους XXIV,
Δίκη XXV, 11.
Διογείτων Ἀχαρνεύς LIX, 45. 47.
*Διόγνητος Θορίκιος XXI, 82.
Διόγνητος alius XXXVIII, 27.
Διόδωρος, actor orr. XXII. XXIV (64).
Διόδωρος Ἁλαιεύς LVII, 38.
Διόδωρος alius LIV, 32.
διοίκησις XX, 33. XXIV, 27 sq. 96 sq. 102. LIX, 4. Ep. 3, 2. ὁ ἐπὶ τῆς διοικήσεως XVIII, 38. 115.
Διοκλῆς Πιτθεύς, praetor, XXI, 62. 174. *XXIV, 42.
*Διομένης Ἀρχελάου Κυδαθηναιεύς LIX, 123.
Διονύσια IV, 35. XVIII, 54. 55. 115. 116. 118. 120. XXI, 8. 9. 10. 15. 35. 61. 64. 106. 163. 175. 178. 226. XXII, 68. XXXIX, 16. XLII, 22.
*Διονύσιος Ἀφιδναῖος XXI, 107.
*Διονύσιος Κολωνῆθεν LIX, 23.
Διονύσιος, praetor, XIX, 180.
Διονύσιος, servus, XX, 131. 132.
Διονύσιος, Syracusarum tyrannus, maior XII, 10. XX, 161. minor XX, 162.
*Διονύσιος Δημοκρατίδου Χολλείδης XXXV, 20.

Διονυσόδωρος LVI.
Διόνυσος XXI, 10. 22. 53. LIX, 73. 76. 78. 110. LX, 30. ἐν Διονύσου V, 7. XXI, 8. 9.
Διοπείθης Μελιτεύς LIX, 48.
Διοπείθης, praetor, VIII. IX, 15. XII, 3. XVIII, 70.
Διοσκούρειον, prope Pheras in Thessalia, XIX, 158.
Διότιμος Εὐωνυμεύς XVIII, 114. 116. XXI, 208. Ep. 3, 27.
Διότιμος Διοτίμου Ἰκαριεύς LIV, 31. 34.
*Διότιμος Κοθωκίδης XVIII, 187.
*Διοφάνης Διοφάνους Ἀλωπεκῆθεν LIX, 123.
Διόφαντος, orator, XIX, 86. 198. 297. XX, 137.
Διόφαντος Σφήττιος XXXV, 6.
*Διόφαντος alius XVIII, 137.
διωμοσία, v. iusiurandum.
Δίων, navicularius, XXXIV, 5. 10.
Δίων, Syracusanus, XX, 162.
Δίων Φρεάρριος XVIII, 129.
Διώνδας, Demosthenis adversarius, XVIII, 222. 249.
Διώνη XIX, 299. XXI, 53. Ep. 4, 3.
divitum petulantia XXI, 66. 96. 98. 109. 112. 123 sq. 137 sq. 158 sq. 208 sqq. 213 sqq. XLII, 24. 31. XLV, 67.
divortium XXX, 4. 8. 15. 25 sqq. 31 sqq. LIX, 52. 59. 82 sq.
δοκιμασία, v. probatio.
Δόλοπες XVIII, 63.
domus inviolabilis XVIII, 137. XXII, 50. 52. 57. XXIV, 162. 164 sq. 197. XLVII, 60.
donaria III, 25. XIII, 26. XV, 35. XXII, 71. 76. XXIV, 129. 179. 184. LVII, 64. LIX, 97.
Δορίσκος, Thraciae oppidum, VIII, 64. IX, 15. X, 8. 65. XVIII, 70. XIX, 156. 334.
dos XXVII, 5. 12 sqq. 17. 44. 56. 69. XXVIII, 11. 15 sqq. 19. XXIX, 31 sqq. 48. XXX, 4. 7 sqq. 26. XXXI, 1 sqq. XL. XLI, 3 sqq. 25 sq. XLII, 27. XLV, 28. 66. 74. XLVII, 57. LIX, 8. 50. 52. 113.
Δρακοντίδης XXIX, 58.
Δράκων, legislator, XX, 158. XXIII, 51. XXIV, 211. XLVII, 71.
Δρογγίλον, Thraciae oppidum, VIII, 44. X, 15.
Δροσίς, Neaerae ancilla, LIX, 121. 124.
Δρυμός, Boeotiae oppidum, XIX, 326.
Δρῦς, Thraciae oppidum, XXIII, 132.
Δυσνίκητος, archon ol. 101, 3, XLVI, 13.
Δωδώνη, Epiri oppidum, XXI, 51. 53. cf. Ζεύς.
Δωριεῖς IX, 32.
Δωρόθεος Ἐλευσίνιος LIX, 39.
ἐγγράφειν (ἐγγραφή): εἰς ἄνδρας XIX, 230 (cf. probatio). debitorem fisco XXV, 4. 28. 71 sq. XXXVII, 6. 22. XXXIX, 14 sq. XL, 22. XLIII, 71. LIII, 14. LVIII, 21. 48 sqq. LIX, 7. εἰς τοὺς δημότας XVIII, 261. XXXIX, 5. 29. XL, 34. XLIV, 38. 44. LVII, 46. 61. LIX, 13. 122. εἰς τὸν ἐκκλησιαστικὸν πίνακα XLIV, 35. εἰς τὸν κατάλογον XXXIX, 8. εἰς τὸ ληξιαρχικὸν γραμματεῖον XLIV, 35. 37. εἰς τὴν συμμορίαν XXXIX, 8. εἰς τοὺς φράτορας XXXIX, 4. 20 sq. 29 sq. XL, 11. XLIV, 41. 44. λόγον XXIV, 199.
ἐγγύησις (ἐγγυηταί, ἐγγυᾶν), vadimonium, XXIV, 39. 41. 46. 55. 59. 64. 71. 77. 79 sqq. 93. 98. 103. 113. 131 sq. 144. 169. XXX, 32. XXXI, 10 sq. XXXII, 29. XXXIII, 7. 9. 10 sq. 15. 22 sqq. XXXV, 8. 15. XXXVII, 40. L, 28. LIII, 27. LIX, 40. 41. 49. 65 sqq. sponsio in matrimonio XXII, 53. XL, 26. XLI, 6. XLIV, 49. XLVI, 18. LVII, 41. 43. 54. LIX, 13. 51 sqq. 72. 79. 92.
ἔγκλημα, libellus, XXV, 56. 58. XXXII, 2. 27. XXXIV, 16. XXXVI, 20. XXXVIII, 10. 14 sq. XL, 16. eius exempla XXIX, 31. *XXXVII, 22. 25. 27. 28. 29.
ἔγκτησις XVIII, 91.
ἔθνος XXI, 131. XXIII, 146.
εἰκότα, τά, XXII, 22. XXVIII, 23. XXIX, 10. 22. XXX, 10.
εἰσάγειν: caussam vel reum in iudicium (de magistratu) XXI, 3. XXXV, 47. 51. XLIII, 75. XLIV, 59. XLVII, 24. 26 sqq. XLVIII, 31. (de actore) XXI, 39. XXIV, 10. XXV, 36. (εἰσαγωγεῖς XXXVII,

33. 34. εἰσαγώγιμος δίκη XXXII, 1. 2. 22 sq. XXXIII, 3. XXXIV, 4. 42 sqq. XXXV, 45 sq. XXXVI, 3. 23 sq. XXXVII, 1. 17. 35. 39. XXXVIII, 1. 3. XLV, 5. 40. 76. 81). ad reddendam rationem XVIII, 117. εἰς τοὺς φράτορας XXXIX, 4. 29 sqq. XL, 11. XLIII, 11 sqq. 81 sq. XLIV, 41. LVII, 46. 54. LIX, 13. 38. 59. 118. 122.
εἰσαγγελία (εἰσαγγέλλειν) VIII, 28. 29. XIII, 5. XVIII, 13. 249. 250. XIX, 107. 116. 209. XX, 79. XXI, 121. XXIV, 63. XXV, 47. 94. XXXIV, 50. XXXVII, 46. XLVII, 42. XLIX, 67.
εἰσιτήρια, sacra, XIX, 190. XXI, 114.
εἴσπραξις χρημάτων (εἰσπράττειν) XXII, 42 sqq. 60 sqq. XXIV, 8. 96. 160 sqq. XLVII, 19 sqq. L, 10. LVII, 63. LVIII, 56.
εἰσφορά (εἰσφέρειν) I, 20. II, 13. 24. 27. 29. 30. 31. III, 4. IV, 7. VIII, 21. 23. 29. 46. 70. 76. IX, 64. X, 19. 37. XIII, 20. XIV, 25 sqq. XVI, 12. XVIII, 152. 257. XIX, 282. 291. XX, 12. 18. 26. 28. 129. XXI, 153. 157. 203. XXII, 42 sqq. 65. 70 sqq. 76. XXIV, 8. 92. 160. 165 sq. 172. 178. 184. 198. 201. XXVII, 7 sqq. 36 sq. 66. XXVIII, 7 sq. XXIX, 59 sq. XXXIX, 15. XLII, 3. XLVII, 54. XLIX, 23. L, 8. LII, 26. Pr. 21, 2. 41, 3.
Ἑκάλη, pagus Atticae, LIX, 61.
Ἑκαταῖα LIV, 39.
Ἐκβάτανα, Mediae urbs, X, 34.
ἔκδοσις XXVII, 11. XXIX, 35 sq. LII, 20.
ἐκκλησία V, 6. VI, 29 sq. VII, 19. VIII, 27 sqq. 74. IX, 1. 4. 6. XIII, 1. 3. XVIII, 55. 73. 75. 132. 136. 141. 143. 169. 191. 213. 273. 283. XIX, 10. 13 sqq. 19. 34. 53. 58. 60. 70. 113. 116 sq. 122. 125. 135 sq. 154. 185. 207. 234. 279. 292. 304 sq. XX, 94. XXI, 8. 9. 10. 13. 132. 153. 162. 163. 193. 194. 196 sq. XXII, 68. XXIII, 31. XXIV, 11. 21 sqq. 25. 26. 80. 97. 123. XXV, 9. 13. 20. 41 sq. 47. 64. XLIX, 13. 66. 67. L, 4. 5. LVIII, 28. LIX, 27. 89. Pr. 6, 1. 14, 1. 26, 1. 34, 2. 47, 3. Ep. 1, 1. 5. 2, 8. σύγκλητος XVIII, 37. 73. XIX, 122.
ἐκμαρτυρία, v. testimonium.
Ἔκφαντος, Thasius, XX, 59. 61.
Ἐλαιοῦς, Chersonesi oppidum, XXIII, 158. Ἐλεοῦς XVIII, 92.
Ἐλάτεια, Epiri oppidum, VII, 32.
Ἐλάτεια, Phocidis oppidum, VI, 14. XVIII, 143. 152. 168 sqq.
Ἐλευσίς, pagus Atticae, XVIII, 38. 177. 184. XXI, 158. LV, 28. LIX, 116. Ἐλευσίνιοι XXV, 44. XXXVII, 4. XLIV, 9. 17. 21 sqq. LII, 20. LIX, 39.
Ἔλιξος, Megarensis, XVIII, 295.
Ἑλλάς VIII, 55. IX, 27. 30. 34 cett. Ἕλληνες IV, 10. 29. VI, 2. 8. 11 cett. Ἑλληνίδες πόλεις III, 20. XIV, 40. XV, 27. XVIII, 71. 182 cett. Ἑλληνικά, τά, III, 25. 26. XIII, 7. 35. XIV, 38. XVIII, 109. 311. Ep. 3, 2. Ἑλληνικὰ δίκαια II, 24. VI, 10. XV, 29. πράγματα X, 53. Ἑλληνικοὶ πόλεμοι IX, 22. Ἑλληνικαὶ πράξεις XVIII, 59.
Ἑλλήσποντος VIII, 3. 9. 18. 28. IX, 18. 27. XII, 16. XVIII, 30. 71. 73. 77. 88. 93. 230. 241. XIX, 150. 162. 180. XX, 60. XXIII, 5. 142. 179. XXXV, 13. L, 12. 14. 24. 52. Pr. 21, 2.
Ἐλπίας, ludimagister, XVIII, 129.
Ἔμπουσα XVIII, 130.
ἔνδειξις (ἐνδεικνύναι) XX, 156. XXI, 182. XXII, 33. XXIII, 51 sq. XXIV, 22. 50. 146. XXV, 14. 17. 49. 67. 69. 71. 78. XXVI, 15. 20. XXXIX, 14. LIII, 14. LVIII. Ep. 5, 1.
ἕνδεκα, οἱ, XXII, 49. 52. XXIV, 63. 80. 105. 113. 146. 162. 164. 169. 197. XXV, 56. XXXV, 47. LIII, 23.
*Ἔνδιος Ἐπιγένους Λαμπτρεύς XLV, 8.
ἐξαγωγή XXIV, 203. XXV, 55.
ἐξηγηταί XLVII, 68 sqq.
Ἐξήκεστος, Lampsacenus, XXIII, 142 sq.
Ἐξήκεστος, medicus, XIX, 124.
exilium XXI, 43. 146. XXIII, 205. XL, 32. exules V, 18. VII, 15. XVII, 16. XVIII, 71. XIX, 80. XX, 52. 54. 60. XXIV, 153. XXXIII, 5. 12. L, 48 sq. LVII, 65.
ἐξούλη, v. δίκαι.

exsecratio publica XVIII, 130. 282. XIX, 70. 201. XX, 107. XXIII, 97.
ἐξωμοσία, v. iusiurandum.
Ἐπαίνετος, Andrius, LIX, 64 sqq.
ἐπεξελθεῖν (ἐπεξιέναι), caussam persequi, XX, 145. XXI, 2. 47. 103. 107. 118. 120. 123. 216. XXVI, 9. XXXVII, 59. XLVII, 72. LVIII, 5 sqq.
Ἐπήρατος, Tenedius, L, 56.
ἐπιβολή XXI, 179. LIII, 14.
ἐπιγαμία XVIII, 91. 187.
*Ἐπιγένης Λαμπτρεύς XLV, 8.
ἐπιγράμματα VII, 40. XVIII, 289. XX, 112. XXII, 72. 73. XXIV, 180. 181. LIX, 97 sq.
ἐπιδικασία (ἐπιδικάζεσθαι) τοῦ κλήρου XLIII, 3. 16 sqq. XLIV, 13. XLVI, 22. XLVIII, 26 sqq.
ἐπιδόσεις XVIII, 112 sqq. 171. 312. 313. XXI, 160 sqq. XXXIV, 38 sqq. XLV, 85. Ep. 2, 10.
Ἐπικέρδης, Cyrenaeus, XX, 41. 45.
ἐπικηρύττειν, pecuniam per praeconem promittere, XIX, 21. 35. 74. 127.
ἐπίκληροι XIV, 16. XXXV, 48. XXXVII, 33. 45. XLIII, 16. 20. 54 sq. 75. XLVI, 18 sqq. LIII, 29. LVII, 41.
Ἐπικράτης, legatus, XIX, 277. 280.
Ἐπικράτης, cui inscripta LXI.
*Ἐπικράτης alius XXIV, 27.
ἐπιμεληταί: festorum IV, 35. τῶν Διονυσίων XXI, 15. τοῦ ἐμπορίου LVIII, 8 sq. 26. τῶν μυστηρίων XXI, 171. τῶν νεωρίων XXII, 63. XLVII, 21 sq. 26. τῆς συμμορίας XLVII, 22. 30. τῶν φυλῶν XXI, 13.
ἐπινίκια XIX, 128. XXI, 55. LIX, 33. 34.
Ἐπίνικος Ep. 6, 2.
ἐπιστάται XVIII, 114. XXII, 5. 9. XXV, 49. 90.
ἐπιστολαί: Atheniensium IV, 30. Berisadis XXIII, 174. 178. Callistrati L, 46. Cersobleptis XXIII, 178. Charetis XXIII, 183. Charidemi XXIII, 153. 156. 158 sq. 163. Chersonesitarum XXIII, 159. 161 sq. Cotyis XXIII, 115. Demosthenis XIX, 174. Iphicratis XXIII, 151. legatorum Atheniensium XVIII, 211. XIX, 174. Philippi IV, 37. VII, 1. 19. 21. 27. 32. 33. 34. 39. 41. 44. VIII, 16. IX, 16. 27. XI. *XII (2. 22). XVIII, 37. *39. 40. 73. 76. *77 sq. 156. *157. *166. *167. 218. 221. XIX, 36. 38 sq. 40. 44. 51. 161. 187. 316. privatorum hominum XXXIV, 8. 28. XLIX, 13. L. 62. LIII, 6. LVI, 8. Timothei XXIII, 151. ἐπιστολιμαῖοι δυνάμεις IV, 19.
ἐπιτάφιος XVIII, 285. XX, 141. LX.
ἐπιτιμία (ἐπίτιμος) XVIII, 15. 312. XIX, 313. XXI, 99. 106. XXIII, 44 sq. XXIV, 45. 90. 103. XXV, 71. 73. 94. XXVI, 1. 11. 12. XXIX, 50.
Ἐπίτιμος Ep. 5, 1 sq.
Ἐπιτρέφης Θριάσιος L, 47.
*Ἐπίφρων XVIII, 165.
*Ἐπιχάρης Λευκονοεύς XXXV, 14.
Ἐπιχάρης, Sicyonius, XVIII, 295.
Ἐπιχάρης alius LVIII, 66 sq.
ἐπιχειροτονία, v. χειροτονία.
ἐπωβελία XXVII, 67. 69. XXVIII, 18. XXXI, 14. XLV, 6. XLVII, 64. LVI, 4.
ἐπώνυμοι XX, 94. XXI, 103. XXIV, 8. 18. 23. 25. XLIII, 58. LVIII, 14 sq. LX, 27 sqq.
equites Atheniensium IV, 16. 21. 28. 33. XIII, 9. XIV, 13. XVIII, 177. 184. 215. XXI, 132 sqq. 162 sqq. 173. 197. XXIV, 97. 101. ordo XLIII, 54. Olynthiorum IX, 56. XIX, 263. 266 sq. sociorum Atheniensium XVIII, 237. Thessalorum VI, 14.
ἔρανοι X, 40. XVIII, 312. XXI, 101. 184. XXV, 21 sq. 58. XXVII, 25. LIII, 8. 11. LIX, 8. 31. Ep. 5, 4.
Ἐρασικλῆς XXXV, 20. 33. 34.
ἐργαστήρια XXV, 52. XXVII, 9 sq. 18 sqq. XXVIII, 12. lupanaria LIX, 67. Ep. 4, 1. sycophantarum XXXII, 10. XXXVII, 39. XXXIX, 2. XL, 9.
Ἐργίσκη, Thraciae oppidum, VII, 37. XVIII, 27.
Ἐργοκλῆς, praetor, XIX, 180.
Ἐργόφιλος, praetor, XIX, 180. XXIII, 104.
Ἔρεσος, Lesbi oppidum, XVII, 7.

Ἐρέτρια, Euboeae oppidum, IX, 57. XVIII, 71. 79. 81. XXV, 54. LIX, 94. *Ἐρετριεῖς* IX, 33. 57. 63. 66. XXIII, 124.
Ἐρεχθηίς, tribus Atheniensium, XVIII, 164. XXI, 68. XLVII, 12. LX, 27. *Ἐρεχθεῖδαι* LX, 27. = Athenienses XXI, 52.
Ἑρμαῖ XX, 112. XXI, 147. *ὁ πρὸς τῇ πυλίδι* XLVII, 26. *ὁ ψιθυριστής* LIX, 39.
Ἕρμαιος, Aegineta, XXXVI, 29.
Ἑρμογένης XLVII, 61.
Ἕρμων, Lysandri gubernator, XXIII, 212.
Ἑρμῶναξ XXXIII, 12.
Ἐροιάδαι, pagus Atticae eiusque incolae, LIX, 61.
Ἐρυθραῖοι VIII, 24.
Ἐρυξίας, medicus, XXXIII, 18.
Ἐρυξίμαχος, Chabriae affinis, XL, 24.
Ἐρχιεῖς, Erchiae, pagi Attici, incolae, XX, 146. XL, 16.
Ἔρως LXI, 21.
ἑστίασις (*ἑστιάτορες*) XX, 21. XXI, 156. XXXIX, 7. = *σίτησις ἐν πρυτανείῳ* XIX, 234. *ἑστιᾶν δεκάτην* XL, 28. *ἐπινίκια* LIX, 33. 34.
ἑταίρησις (*ἑταιρεῖν, πορνεία*) XIX, 233. 287. XXII, 21. 61. 73. XXIV, 181. XLV, 79.
ἑταιρίαι: in iudiciis XIX, 216. XXI, 139. XXIX, 22 sq. XXXII, 10. XXXVII, 39. XXXIX, 2. XL, 9. XLV, 67. XLVI, 26. LVII, 13. 59 sq. 63. LVIII, 42. iuvenum lascivorum LIV, 14 sqq. 33 sqq. 39.
Ἐτεοβουτάδαι XXI, 182.
*Ἐτεόνικος XVIII, 37.
Εὐαγόρας, Cypri rex, XII, 10.
Εὐαίων, Leodamantis frater, XXI, 71. 72. 74.
**Εὐάλκης Φαληρεύς* LIX, 61.
Εὔανδρος, archon ol. 99, 3, XXIV, 138.
Εὔβοια, Εὐβοεῖς I, 8. IV, 17. 37. V, 5. 10. VI, 30. VIII, 36. 66. 74. IX, 17. 18. 27. X, 8. 68. XVI, 14. XVIII, 71. 79. 84. 87. 95. 96. 99. 230. 234. 237 sq. 241. 295. 301 sq. XIX, 22. 83. 106. 204. 219. 220. 326. 334. XX, 115. XXI, 110. 133. 161. 174. XXII, 14. 72. 180. XXIII, 173. 182. 191. 213. XXXIX, 17. LIX, 4. 94.
Εὐβουλίδης I., Buseli f., XLIII, 19. 24. 73. 79.
Εὐβουλίδης II., Philagri f., XLIII, 11 sqq. 24 sqq. 41. 49. 63.
Εὐβουλίδης III., Sosithei f. ab Eubulide II. adoptatus, XLIII, 17. 34. 41. 49. 74.
Εὐβουλίδης Ἁλιμούσιος LVII. alius LVIII, 42.
Εὔβουλος Ἀναφλύστιος, orator, XVIII, 21. 29. 70. 73. 75. 162. XIX, 191. 290 sqq. 304. XX, 137. XXI, 206 sq.
**Εὔβουλος Μνησιθείδου Κόπριος* XVIII, 73.
Εὔβουλος Προβαλίσιος LIX, 48.
Εὔβουλος, Spinthari pater, LIV, 7.
Εὐδέρκης XXIII, 203.
Εὔδημος Κυδαθηναιεύς XXIV, 138.
Εὔδικος Ep. 3, 27.
Εὔδικος, Larisaeus, XVIII, 48.
Εὔδοξος Ep. 3, 27.
εὐεργεσία XX, 60.
Εὔεργος XXXVII, 2. 4 sqq. XLVII.
**Εὐήγορος*, rogator, XXI, 10.
Εὐθετίων Κυδαθηναιεύς LIX, 34.
Εὐθύδημος, Pamphili f., XL, 23.
Εὐθύδημος, Stratoclis f., XXI, 164.
**Εὐθύδημος Φλυάσιος* XVIII, 164.
εὐθυδικία XXXIV, 4. XLV, 6.
Εὐθύδικος, medicus, XL, 33.
**Εὐθυκλῆς*, archon pseudeponymus, XVIII, 118.
Εὐθυκράτης, Olynthius, VIII, 40. XIX, 265. 343.
Εὐθύμαχος Ὀτρυνεύς XLIV, 9.
εὔθυναι I, 28. IV, 47. XVIII, 58. 110 sqq. 124. 245. 249. 250. XIX, 2. 4. 17. 69. 81. 82. 107. 132. 182. 211. 223. 256. 273. 334. 335. XX, 147. XXII, 38. 39. XXIV, 54. 112. XXV, 37. XLVI, 9. XLIX, 25. LVIII, 14. Pr. 53, 2.
Εὔθυνος, athleta, XXI, 71.
Εὐθύφημος, scriba, LVIII, 8.
Εὐκαμπίδας, Arcas, XVIII, 295.
Εὐκλείδης, archon ol. 94, 2, XXIV, 42. 133. 134. XLIII, 51. LVII, 30.
Εὐκλείδης, legatus, XIX, 162.
Εὐκράτης, Leucadius, LIX, 29 sqq.

Εὐκτήμων, Aesionis f., XXI, 164. XXII, 1. 3. 48. 50. XXIV, 7 sq. 11 sqq. 101. 117. 159 sq.
Εὐκτήμων Λουσιεύς XXI, 103. 139.
**Εὐκτήμων Σφήττιος* XXI, 168. alii *XLIII, 42 sq. L, 18 sq. 24 sqq.
Εὐμενίδες XXIII, 66.
Εὐμηλίδης XLIX, 11.
Εὔμολπος LX, 8. *Εὐμολπίδαι* XXII, 27. LIX, 117.
Εὔνικος Χολαργεύς LVII, 43. 68.
εὔνοιαι VIII, 25.
Εὐνομία XXV, 11.
**Εὔνομος Ἀναφλύστιος* XVIII, 165.
Εὐξίθεος, Eleus, XVIII, 295.
Εὐξίθεος, Timocratis f., LVII, 39.
Εὐξίθεος Χολλειδης LIV, 10.
Εὐπόλεμος XLIII, 7.
Εὐριπίδης, poeta, XVIII, 267. XIX, 246.
Εὐριπίδης, trierarchus, L, 68.
Εὐρύβατος, proditor, XVIII, 24.
Εὐρυδάμας, Medii f., Thessalus, LIX, 108.
Εὐρύλοχος, mercenariorum dux, IX, 58.
Εὐρύμαχος, Leontiadis f., Thebanus, LIX, 99.
Εὐρυσθεύς LX, 8.
Εὐρώπη XXIII, 140.
Εὔφημος XL, 12.
Εὔφηρος XXII, 60.
**Εὐφίλητος Δαμοτίμου Ἀφιδναῖος* XXXV, 34.
Εὐφίλητος Σίμωνος Αἰξωνεύς LIX, 24. 25.
Εὐφραῖος, argentarius, XXXVI, 13. 37. XLIX, 44.
Εὐφραῖος, Orita, IX, 59 sqq. 66.
Εὐφράνωρ Αἰγιλιεύς LIX, 61.
Εὔφρων, argentarius, XXXVI, 13. 37.
Εὐωνυμεῖς, Euonymi, pagi Attici, incolae, XXI, 208.
ἔφεσις, appellatio, XXIX, 59. XL, 17. 31. 55. LVII, 6.
ἐφέται XXIII, 37. 38. cf. XLIII, 57.
ἐφήγησις XXII, 26. XXVI, 9.
Ἐφιάλτης, Philippi adversarius, Ep. 3, 27.
Ἐφιάλτης, Philocratis pater, XXIII, 116.
ἐχῖνοι XXXIX, 17. XLV, 8. 17. 57 sq. XLVII, 16. XLVIII, 48. XLIX, 65. LIV, 27.
Ἐχῖνος, Thebanorum oppidum, IX, 34.

Ζέλεια, Troadis oppidum, IX, 43. *Ζελεῖται* IX, 42 sqq. XIX, 271.
ζευγῖται XLIII, 54.
Ζευξίδαμος, rex Lacedaemonis, LIX, 98.
Ζεύς XVIII, 289. XIX, 247. 255. 299. XXI, 53. XXIV, 151. XXV, 11. *ἄναξ* XXXV, 40. *Δωδωναῖος* XVIII, 252. Ep. 1, 15. 4, 3. *ἕρκειος* LVII, 67. *κτήσιος* XXI, 53. *μέγιστος* XLVIII, 2. *ναρός* (*νάϊος*) XXI, 53. *Νέμειος* XXI, 115. *ξένιος* Ep. 5, 1. *Ὀλύμπιος* XXIV, 121. *ὅριος* VII, 39. 40. *ὕπατος* XXI, 52. XLIII, 66. *φράτριος* XLIII, 14.
Ζηνόθεμις XXXII.
**Ζήνων Φλυεύς* XVIII, 135.
ζητηταί XXIV, 11.
Ζωβία XXV, 56. 58.
**Ἡγέμων* XVIII, 84.
Ἡγέστρατος, Massiliensis, XXX, 2 sqq.
Ἡγήμων, orator, Aeschinis socius, XVIII, 285. XXV, 47.
Ἡγησίλεως, Eubuli affinis, XIX, 290.
Ἡγήσιππος, orator, Demosthenis socius, IX, 72. XVIII, 75. XIX, 72 sqq. 331.
Ἡδύλειον, Phocidis mons, XIX, 148.
Ἡδύλος, Pamphili f., XL, 23.
Ἠετιώνεια, Piraeei castellum, LVIII, 67.
Ἠιών, Thraciae oppidum, XIII, 23. XXIII, 199.
ἡλιαία XX, 47. XXIII, 28. 97. XXIV, 63. 105. XLIII, 75. XLVI, 26. XLVII, 12.
ἡλικία I, 28. III, 4. 34. IV, 7. 21. X, 40. XIII, 4. XVIII, 177. XXI, 95. 223. puellarum XXIX, 43.
**Ἡλιόδωρος Πιτθεύς* XXXV, 13. 14.
Ἦλις IX, 27. X, 10. XIX, 260. 294. *Ἠλεῖοι* VII, 32. XVI, 16. XVIII, 295. LIX, 18.
Ἥρα XLIII, 54.
Ἡραῖον τεῖχος, Thraciae oppidum, III, 4.

Ἡρακλείδης, Aenius, XXIII, 119.
Ἡρακλείδης, argentarius, XLVIII, 12.
Ἡρακλείδης, Byzantius, XX, 60.
Ἡρακλεόδωρος, cui inscripta Ep. 5.
Ἡρακλεῶται LII, 3. 5. 8 sqq.
Ἡρακλῆς XVIII, 186. XXI, 52. XLIII, 66. LVII, 46. 62. LX, 8. 31. LXI, 30. Ἡράκλεια sacra XIX, 86. 125.
hereditas XXVII. XXVIII. XLIII, 3 sqq. XLVIII.
*Ἡρόπυθος, archon pseudeponymus, XVIII, 164. 165.
Ἥρως, medicus, XIX, 249.
Ἡφαιστεῖον XXXIII, 18.

Θαργήλια XXI, 10.
Θάρρηξ, ab Eubulo in ius vocatus, XIX, 191.
Θάσος, insula, IV, 32. VII, 15. XVIII, 197. XX, 59. 61. L, 21 sq. 29 sqq. Θάσιοι XII, 2. 17. XX, 59. L, 14. 21. 47. Θάσιος οἶνος XXXV, 35.
θαυματοποιοί II, 19.
theatrum V, 7. XVIII, 28. 54. 55. 58. 83. 84. 118. 120. XIX, 337. XXI, 18. 59. 74. 178. 206. 216. 226.
Θεμιστοκλῆς XIII, 21. 22. 29. XVIII, 204. XIX, 303. XX, 73 sq. XXIII, 196. 198. 205. 207.
Θεμίσων, Eretriae tyrannus, XVIII, 99.
Θεογείτων, Thebanus, XVIII, 295.
Θεογένης, Andromenis f., LIV 7 sq.
Θεογένης Κοθωκίδης LIX, 72 sqq. 110. 121. *Ἐρχιεύς 84.
Θεογένης Προβαλίσιος XXVII, 58.
θεόγνια, festum Bacchi, LIX, 78.
Θεόδοτος XXXIV, 18. 21. 44 sq. XXXV, 14.
Θεόδωρος, Euboensis, XVIII, 99.
Θεόδωρος, histrio, XIX, 246.
Θεόδωρος, Phoenix, XXXIV, 6.
Θεοκλῆς, argentarius, LIII, 9.
Θεοκρίνης LVIII. τραγικὸς XVIII, 313.
Θεόμνηστος, gener Apollodori, LIX, 16.
*Θεόμνηστος Ἀθμονεύς XLV, 55.
Θεόξενος Ἀλωπεκῆθεν XXII, 60.
Θεόπομπος, Charidemi f., XLIII, 4 sqq.
θεός, ἡ, = Minerva XXII, 74. XXIV, 120. 129. 130. 182. XXV, 28. 70. XLIII, 71. LIX, 105.
Θεοσδοτίδης XXI, 59.
Θεοτέλης XLII, 29.
Θεότιμος LIV, 7.
Θεόφημος, Euergi frater, XLVII, 5 sqq.
Θεόφιλος, archon ol. 108, 1, XXXVII, 6.
Θερμοπύλαι LIX, 95.
Θερσαγόρας, Lampsacenus, XXIII, 142 sq.
θεσμοθέται, v. ἄρχοντες.
θεσμοί XXIII, 62. XLIII, 57. XLIV, 46. 49. 50.
Θεσπιαί V, 10. VI, 30. XVI, 4. 25. 28. XIX, 20. 42. 112. 325. Θεσπιεῖς XIX, 37. 106. XXI, 175.
Θετταλία I, 12. VIII, 14. 65. IX, 12. 26. X, 67. XVIII, 48. 244. 304. XIX, 198. LIX, 108. Θετταλοί I, 22. II, 7. 8. 11. 14. V, 14. 19. 20. 23. VI, 14. 22. VIII, 62. 65. IX, 32. 33. X, 64. 67. XI, 3. XVIII, 36. 40. 43. 64. 145 sq. 151. 211. 295. XIX, 50. 62. 111. 260. 318 sqq. XXIII, 111 sq. 120. LIX, 24. 91. Ep. 4, 8.
Θευδοσία, Bospori oppidum, XX, 33. Θεοδοσία XXXV, 31 sqq.
θεωρίαι (θεωροί) XVIII, 91. XIX, 128. XXI, 53. 115.
θεωρικά III, 11. 19. 31. X, 36. XIII, 1 sqq. XVIII, 55. 113. 118. XIX, 291. XLIV, 37 sq. LIX, 4. Pr. 53, 6.
Θεωρίς, Lemnia, XXV, 79.
Θῆβαι VIII, 65. IX, 27. X, 67. XVIII, 48. 174. 177 sq. 188. 240. XIX, 20. 127. 325. XX, 76. XXXIV, 38. LIX, 99. LX, 8. Θηβαῖοι: Alexandri Pheraei inimici XXIII, 120. Amphictyones XIX, 50. Atheniensibus infensi I, 26. III, 8. V, 15 sqq. VI, 9. VIII, 74. IX, 23. XIV, 33. XVI, 4 sq. XVIII, 18. 36. 96. 161. 163. 234. XIX, 65. 83. ab eis servati XVIII, 96. XXIII, 191 (cf. Ἀθηναῖοι). Euboeam sibi arrogant VIII, 74. XVIII, 99. a Graecis dissident X, 52. ad Leuctra vincunt IX, 23. XVIII, 18.

98. 202. LIX, 37. Orchomenum evertunt XX, 109. cum Persis conspirant VI, 11. XIV, 34. LIX, 95. cum Philippo adversus Athenienses faciunt VI, 7 sqq. XVIII, 19 sqq. 40. XIX, 20. 47. 85. 135. 318 sqq. ab eodem ante Phocenses devictos non deminuti, ut Aeschines promittebat, IV, 48. V, 10. VI, 30. IX, 11. XIX, 20. 42. 53. 85. 112. 220, sed aucti VI, 13. VIII, 63. X, 64. XIX, 60. 138. 219. 334, mox tamen lacessiti IX, 34. X, 4. ad Athenienses inclinant XVIII, 145 sqq. 156. 174 sqq. et foedus cum eis faciunt 153. 215 sq. 237. LX, 22. a Philippo subiguntur XVIII, 19. 41. eiusdem ad eos epistola *167. ad eos Philippi et Atheniensium legati 211 sqq. ipsorum ad Philippum legati XIX, 139 sqq. cum Phocensibus bellum gerunt III, 27. X, 47. XIX, 320. ab eis in discrimen adducti 148. 320. eorum oppida diruunt 326. Plataeas invadunt LIX, 99 sqq. praemiis suos non afficiunt XX, 105. 109. eorum proditores XVIII, 161. 295. tardi ingenii ac rudes V, 15. XVIII, 35. 43. XX, 109. Pr. 45, 5.

Θηραμένης Ep. 4.

Θηριππίδης Παιανιεύς, Demosthenis tutor, XXVII, 4. 12 sqq. 19 sq. 35 sq. 37. 42 sq. 45. 49. XXVIII, 12. 14. 16. XXIX, 6. 33. 43. 45.

Θησεύς LIX, 75. LX, 28. *Θησεῖον* XVIII, 129.

θητικόν XLIII, 54.

θίασοι XVIII, 260. XIX, 199. 281.

Θόας, Philippi satelles, IX, 59.

θόλος, ἡ, XIX, 249. 314.

Θορίκιοι, Thorici, pagi Attici, incolae, XXI, 82. 121. XXXIX, 7. 30. XL, 52.

Θουκριτίδης I., LVII, 20. 21.

Θουκριτίδης II., Charisii f., LVII, 20.

Θούκριτος, Euxithei actoris pater, LVII, 41. 67.

Θουκυδίδης LVIII, 23. 36 sq.

Θράκη I, 13. III, 4. VIII, 14. 18. 44. X, 8. 15. XI, 1. XII, 3. 8. 10. XVIII, 27. XIX, 156. 161. 180. XX, 60. XXIII, 8. 57. 114. 117. 164 sq. 170. 178. 182. LII, 20. *τὰ ἐπὶ Θρᾴκης* VIII, 64. IX, 26. X, 65. XIX, 219. *Θρᾷκες* VIII, 8. XVIII, 27. 30. 32. 244. XXIII, 103. 117. 132 sq. 138. 169 sq. 175. 182. 189. *Θρᾴκιοι σιροί* VIII, 45. X, 16.

Θρασύβουλος Κολλυτεύς XVIII, 219. XXIV, 134.

Θρασύβουλος, Nicerati avunculus, XIX, 290.

Θρασύβουλος Στειριεύς XIX, 280. XX, 59. 60. LVII, 38. 42. Ep. 3, 17.

Θρασύβουλος, Thrasybuli f., XIX, 280.

Θρασύδαος, Thessalus, XVIII, 295.

Θράσυλλος Ἐλευσίνιος LII, 20.

Θράσυλλος, cuius monumentum XXXVII, 25.

Θρασύλοχος Ἀναγυράσιος, frater Midiae, XXI, 78. XXVIII, 17. L, 52.

Θρασύλοχος, fenerator, L, 13. 28.

Θρασύλοχος, Messenius, XVIII, 295.

Θρασυμήδης, Diophanti f., XXXV, 6 sqq.

Θράσων, Aeschinis familiaris, XVIII, 137.

Θρᾷττα, Neaerae ancilla, LIX, 35. 120. 124.

Θριάσιοι, Thriae, pagi Attici, incolae, XLI, 3. L, 47.

Θυέστης XIX, 337.

Θυμαιτάδαι, pagus Atticus eiusque incolae, XXXV, 34.

Ἰάσων, Pherarum tyrannus, XLIX, 10. 22. 24. 31. 62.

Ἰατροκλῆς, legatus, XIX, 197 sq.

ἱερά, v. sacra et templa.

Ἱέραξ, Amphipolitanus, L, 8.

ἱεροκῆρυξ LIX, 78.

ἱερομηνία XXIV, 29. 31 sq.

ἱερομνάμονες, Byzantiorum magistratus, XVIII, 90.

ἱερομνήμονες, Amphictyonum magistratus, XVIII, 148. 149. 151. XXIV, 150.

Ἱερόν, Bithyniae promontorium cum templo Iovis, XX, 36. XXXV, 10. L, 17. 18. 58.

Ἱερὸν ὄρος, Thraciae mons cum castello, VII, 37. IX, 15. XIX, 156. 334.

ἱεροποιοί IV, 26. XXI, 115. 171. LVIII, 29.
ἱεροσυλία XXII, 69. XXIII, 26. XXIV, 119 sq. 122. 137. 177. LVII, 64.
ἱεροφάντης LIX, 116. 117.
Ἱερώνυμος, Arcas, XVIII, 295. XIX, 11.
Ἰκαριεῖς, Icariae, pagi Attici, incolae, LIV, 31.
ἱκετηρία XVIII, 107. XXIV, 12. 50. 52. 53. XLIII, 83.
Ἰλιὰς κακῶν XIX, 148.
Ἴλιον XXIII, 154.
Ἰλλυριοί I, 13. 23. IV, 48. XVIII, 44. 244.
Ἴμβρος, insula, IV, 34. VII, 4. XVIII, 115. XXIII, 166. LIX, 3.
Ἰνδικὴ χώρα Ep. 4, 7.
ἰοβάκχεια, festumBacchi, LIX, 78.
ἵππαρχοι IV, 26. 27. XVIII, 184. XXI, 164. 166. 171 sqq.
Ἵππαρχος, Eretriae tyrannus, IX, 58. XVIII, 295.
Ἵππαρχος *Ἀθμονεύς, histrio, LIX, 26. *28.
ἱππεῖς, v. equites.
Ἱππίας *Ἀθηνίππου, Halicarnassensis, XXXV, *20. 33. *34.
Ἱππίας, coquus, LIX, 18.
*Ἱππίας Τιμοξένου Θυμαιτάδης XXXV, 34.
Ἱπποδάμεια ἀγορά, forum Piraeei, XLVIII, 22.
ἱππόδρομος XLVII, 53. 76.
Ἱπποθόων, Neptuni et Alopae f., LX, 31.
Ἱπποθωντίς, tribus Atheniensium, XVIII, 75. 105. XXXIX, 23. 25. 28. Ἱπποθοωντίδαι LX, 31.
*Ἱπποκράτης Ἱπποκράτους Προβαλίσιος LIX, 123.
*Ἱπποκράτης, rogator, LIX, 104.
Ἱππόνικος, Alcibiadis affinis, XXI, 144.
Ἱππόνικος, Calliae pater, XIX, 273.
Ἱππόνικος, mercenariorum dux, IX, 58.
ἰσηγορία XV, 18. XXI, 124. LX, 28.
Ἴσθμια XVIII, 91.
Ἰσθμιάς, meretrix, LIX, 19.
Ἰσοκράτης, orator, XXXV, 15. 40. LII, 14. LXI, 46.
ἰσοτελεῖς XX, 29. XXXIV, 18. 44. XXXV, 14.
Ἱστίαια, pagus Atticae, XXXV, 20. 34.
histriones V, 6. 7. XVIII, 262. XIX, 10. 12. 192 sq. 246. 315. LVII, 18. LIX, 26. 28. cf. Αἰσχίνης, δευτεραγωνισταί, κωμῳδοί, τραγῳδοί, τριταγωνισταί.
Ἴσχανδρος, Arcas, XIX, 303.
Ἴσχανδρος, histrio, XIX, 10.
Ἰσχόμαχος, Charidemi pater, LVIII, 30.
iudicia VII, 9. XIII, 16. 17. XVII, 12. XVIII, 123. 224. XIX, 132. 211. 223. 297. 332. XX, 90. 93. 100. 155. XXI, 2. 4. 151. 176. 179. 209. 221. XXIII, 27. 62. 63 sqq. XXIV, 2. 9. 55 sq. 58. 63. 73. 78. 80. 92. 98. 99. 114. 127. 148. 151. 196. 207. XXV, 3. 20. 27 sq. 43. 48. 74. 77. 83. 98. XXVI, 11. XXIX, 16. 18. XXX, 32. XXXIV, 18. 21. 43 sqq. XXXV, 48. XXXVII, 20. 39. 46. XXXIX, 3. 10 sq. 17. XL, 1. 5. 17. 31. 34. 55. XLII, 2. 11 sq. XLIII, 4. 6. 8. 15. XLIV, 19. 38. 59. XLVI, 26. XLVII, 5. 6. 16. 18. 24. 26 sqq. 39. 43. 79. XLVIII, 1. 8. 23. 25. 31. 35. 43. 50. LI, 4. 8. LIII, 17. 24. LVI, 15. 18. LVII, 56. 60 sq. LVIII, 32. 40. LIX, 5. 27. 66. 90 sq. 105. 116. Ep. 3, 21. publice habentur XVIII, 196. XIX, 309. LIV, 41.
iudices XVIII, 1 sq. 278. XIX, 1. 179. 242. 243. 252. XXI, 223. 227. XXIV, 9. 118. 123. XXV, 3 sqq. 11. 27. XXIX, 59 sq. XXXVIII, 23. XLII, 25. XLIII, 9. 10. 18. 29. 38 sq. 61. 71. XLV, 6. 11. 17. 51. XLVI, 25. XLVII, 1. 7 sq. 15. 17. 39. 46. XLVIII, 25 sq. 30. 43 sqq. 50. LIII, 18. 26. LVIII, 31. 70. LIX, 5. 8. Ep. 2, 1. eorum insignia XVIII, 210. cf. iusiurandum, sortitio.
iuris exercendi varii modi XXII, 25.
iusiurandum: actorum XXXI, 9. XXXIII, 13. XLIX, 42. 65. LII, 15. 17. 27. LIV, 41. LV, 27. 35. arbitrorum XXI, 65. LII, 30 sq. quale in Areopago XXIII, 68. in diapsephisi LVII, 8. 26. 63. κατ' ἐξωλείας XXI, 119. 121. XXIII,

67. XXIV, 151. XL, 10. XLVII, 70. XLIX, 66. LIV, 41. LVII, 22. 53. LIX, 10. epheborum XIX, 303. καθ' ἱερῶν XXIII, 68. LVII, 26. LIX, 60. iudicum XVIII, 2. 6. 121. XIX, 1. 132. 179. 239. XX, 118. XXI, 42. 177. 188. XXIII, 96. 101. XXIV, 2. 21. 148. *149—151. 188. XXVII, 68. XXXIV, 45. XXXIX, 40. XLV, 50. 87. XLVI, 27. LVIII, 25. 36. 61. LIX, 115. κατὰ τῶν παίδων XIX, 292. LIV, 38. 40. in permutatione bonorum XLII, 11. 12. 17 sq. patrum apud phratores LVII, 54. in rebus privatis XXXIX, 3. 25. XL, 10 sq. XLVIII, 9 sq. cett. in publicis V, 9. VI, 29. VII, 10. VIII, 5. IX, 15. XVIII, 25 sqq. 32. 187. XIX, 17. 36. 44. 57 sq. 96. 132. 143. 150 sq. 158 sq. 171. 181. 278. 318. XXIII, 176 sq. διὰ πυρὸς LIV, 40. sacerdotale LIX, 78. senatorium XXIV, 147 sq. LIX, 3. testium XXIX, 26. 33. 54 sqq. cett. — ἀντωμοσία XLIII, 3. διωμοσία (διόμνυσθαι) XXIII, 63. 67. 69. 71. XL, 41. XLIX, 20. 67. LVII, 22. 39. 44. LIX, 10. ἐξωμοσία XIX, 122. 124. 129. 171. 172. 176. XXIX, 20. XLV, 58 sqq. XLIX, 20. LVII, 59. LVIII, 7. LIX, 28. ὑπωμοσία XVIII, 103. XXI, 84. XXXIX, 37. XLVII, 39. 45. XLVIII, 25. LVIII, 43. ἀνθυπωμοσία XLVIII, 25. LVIII, 43.

Ἰφιάδης XXIII, 176 sq.

Ἰφικράτης IV, 23. XIII, 22. XX, 84. 85. XXI, 62. XXIII, 129 sqq. 149. 156. 198. XLIX, 9. 13. 66. Pr. 50, 3.

Ἰωνία LIX, 108.

Καβύλη, Thraciae oppidum, VIII, 44. X, 15.

καδίσκοι XLIII, 10. LVII, 13. LIX, 90.

Κάδμος LX, 30.

caduceatores VI, 11. XII, 4. XVIII, 165. XIX, 163. 185. LI, 13.

caedes IX, 44. XX, 157. XXI, 104. XXIII, 22 sqq. XXXVII, 58 sq. XXXVIII, 21. XLIII, 57. LIX, 9.

καθιεροῦν τὴν οὐσίαν XLIX, 66.

κακηγορία XX, 104. XXI, 32. 81. XXIII, 50. LIV, 17. LVII, 30.

κακοῦργοι IV, 47. XXII, 28. XXIV, 102. 107. 113. 204. XXXV, 47. LVIII, 65.

κάκωσις X, 40. XXIV, 60. 103. 105. LVIII, 32.

Καλαμίτης ἥρως XVIII, 129.

Καλαύρεια, insula ad oram Argolidis sita, XLIX, 13. 14. 16. 18. 20. 48 sq. Καλαυρία Ep. 2, 16.

Κάλλαισχρος, dives, XXI, 157.

*Κάλλαισχρος Διοτίμου Κοθωκίδης XVIII, 187.

*Κάλλαισχρος alius XVIII, 137.

Κάλλαρος, servus, LV, 31 sqq.

Καλλίας, Hipponici f., XIX, 273.

Καλλίας, praetor, XII, 5.

Καλλίας, servus publicus, II, 19.

*Καλλίας Σουνιεύς XVIII, 135.

*Καλλίας Φρεάρριος XVIII, 115. 116.

Καλλικλῆς, Callippidis f., LV.

Καλλικλῆς Θριάσιος L, 47 sq.

Καλλικράτης, Eupheri f., XXII, 60.

Καλλικρατίδης LV, 2.

Καλλιππίδης LV, 3 sq.

Κάλλιππος Φίλωνος Αἰξωνεύς L, 47 sqq.

Κάλλιππος Λαμπτρεύς LII.

Κάλλιππος Παιανιεύς VII, 42. XXXVI, 53.

Κάλλιππος, Phaenippi pater, XLII, 21. alius XLVIII, 20 sqq.

Καλλισθένης, orator, XIX, 86. XX, 33. *Ἐπεονίκου Φαληρεύς XVIII, 37.

*Καλλισθένης Σφήττιος XXI, 82.

Καλλίστρατος, Amytheonis f., LVII, 37.

Καλλίστρατος Ἀφιδναῖος, orator, XVIII, 219. XIX, 297. XXIV, 135. XLIX, 9. 13. 47. L, 46 sqq. LIX, 27. 43.

Καλλίστρατος, Eubulidis I. f., XLIII, 37. 42. 45. 74.

Καλλίστρατος, fenerator, XXXVI, 13. 37.

Καλλίστρατος, Sosithei f., XLIII, 74.

Καλχηδόνιοι XLV, 64. L, 5. 17. cf. Χαλκηδών.

Κάμμης, Mytilenaeorum tyrannus, XL, 37.

Καππάδοκες Ep. 4, 7.
Καρδία, Chersonesi oppidum, VIII, 58. IX, 35. X, 60. 65. XXIII, 150. *Καρδιανοί* V, 25. VII, 41. 43. VIII, 64. 66. X, 18. 68. XII, 11. XIX, 174. XXIII, 169. 175. 181 sq.
Κᾶρες V, 25. XXI, 175.
carcer X, 74. XXI, 47. XXII, 34. 53. 56. 68. XXIII, 80. XXIV, 40. 42. 46. 60. al. XXV, 30. 54. 56. 60 sqq. 67. XXXII, 29. XXXIII, 1. XXXV, 46 sq. LI, 4. LIII, 14. LVI, 4. Ep. 3, 7. 12. 15.
Καρύστιοι XXXV, 8. 10. 14.
Καρύστιος, proxenus Atheniensium, VII, 38.
Καρχηδόνιοι XX, 161.
Κασσωπία, Epiri regio, VII, 32.
Κάστωρ LXI, 30.
κατάλογος XIII, 4. L, 6. 16.
κατάλυσις τοῦ δήμου XIII, 14. XIX, 175. 294. XX, 32. XXIV, 144. 146. 149. 152. 154. 206. XXV, 29. XLVI, 26. LVIII, 34. Pr. 42, 2.
καταχειροτονία, v. *χειροτονία*.
καταχύσματα XLV, 74.
Κεβρήν, Troadis oppidum, XXIII, 154.
Κειριάδαι, pagus Atticae eiusque incolae, LIX, 40.
Κεκροπίδαι, tribus Atheniensium, LX, 30.
Κεραμεῖς, pagus Atticae, XX, 146. LIX, 48.
Κέρδων, servus, LIII, 19.
Κερκιδᾶς, Arcas, XVIII, 295.
Κέρκυρα, insula maris Ionici, XIII, 22. XVIII, 234. XXIII, 198. *Κόρκυρα* XXIV, 202. XXVII, 14. *Κερκυραῖοι* XVIII, 237. *Κορκυραῖοι* XXIV, 202.
Κερσοβλέπτης, Thraciae regulus, VIII, 64. X, 8. 65. XII, 8 sqq. XIX, 174. 181. 334. XXIII, 8 sqq. 103 sqq. 114 sq. 128 sqq. 163. 169 sqq. 182. 191 sq. 203.
Κεφαλή, pagus Atticae, LIX, 61. 71.
**Κεφαλῶν Ἀφιδναῖος* XLV, 19.
Κεφαλληνία, insula maris Ionici, XXXII, 8 sq. 22. *Κεφαλλῆνες* 14. 23.
Κέφαλος, Lysiae pater, LIX, 23.
Κέφαλος, orator, XVIII, 219. 251.
Κηδοί, pagus Atticae, XLVII, 5.
Κηφισιάδης, Scyrius, LII, 3. 6 sqq.
Κηφισιεῖς, Cephisiae, pagi Attici, incolae, LIV, 7. LIX, 40.
**Κηφισόδοτος Βοιώτιος* XXXV, 13. *Κηφισόδωρος* 14.
Κηφισόδοτος ἐκ Κεραμέων, praetor, XIX, 180. XX, 146. 150. XXIII, 153. 156. 163. 167. 169. 171. 175. 178. LI, 1.
Κηφισόδωρος, archon ol. 103, 3, XXX, 17.
Κηφισόδωρος alius LVIII, 19. 21.
Κηφισοφῶν **Κεφάλωνος Ἀφιδναῖος* XLV, 8. 10. *19. 22. XLVI, 5.
**Κηφισοφῶν Κηφισοφῶντος Ῥαμνούσιος* XVIII, 55.
**Κηφισοφῶν Κλέωνος Ἀναφλύστιος* XVIII, 75. 77.
**Κηφισοφῶν Πειραιεύς* XXXV, 14.
Κηφισοφῶν **Ῥαμνούσιος*, orator, XVIII, 21. *29. 75. XIX, 293.
Κηφισοφῶν alius LIX, 10.
Κίμων XIII, 29. XXIII, 205.
Κινέας, Thessalus, XVIII, 295.
Κιρραία, regio Phocidis, XVIII, 149. 152. *Κιρραῖοι* 152.
Κιτιεῖς XXXV, 32. 33.
Κίττος, argentarius, XXXIV, 6.
Κλαζομένιοι LXI, 45.
Κλεάναξ, Tenedius, L, 56.
Κλέανδρος, histrio, LVII, 18.
**Κλέανδρος Σφήττιος* XVIII, 187.
Κλέαρχος, Heracleota, XX, 84.
Κλέαρχος, Spartanus, XV, 24.
Κλείδικος LVII, 42.
**Κλειναγόρας* XVIII, 154. 155.
Κλεινίας, Clidici f., LVII, 40. 42. 44.
Κλεινόμαχος LVIII, 42. LIX, 39.
Κλείταρχος, Eretriae tyrannus, IX, 58. 66. XVIII, 71. 81 sq. 295.
Κλειτομάχη, Midylidis f., XLIV, 10.
Κλεόκριτος, Buseli f., XLIII, 19.
Κλεομέδων, Cleonis f., XL, 6. 25.
Κλεομένης, Aegypti praefectus, LVI, 7.
Κλεότιμος, Eleus, XVIII, 295.
**Κλέων Ἀναφλύστιος* XVIII, 75.
Κλέων, Cleomedontis f., XL, 6.
**Κλέων Κλέωνος Κοθωκίδης* XVIII, 29. 55.
Κλέων, coriarius, XL, 6. 25.
**Κλέων Σουνιεύς* XXI, 168.
**Κλέων*, Teledemi pater, XVIII, 137.

*Κλέων Φαληρεύς XVIII, 135.
Κλεωναί, Argolidis oppidum, XVIII, 96.
clepsydra (ὕδωρ) XVIII, 139. XIX, 57. 120. 213. XXI, 129. XXVII, 12. XXIX, 9. XXXVIII, 28. XL, 38. XLI, 30. XLIII, 8 sq. XLIV, 45. XLV, 47. 86. XLVII, 82. L, 2. LIII, 3. 17. LIV, 36. 44. LVII, 21. 61. LIX, 20.
κληροῦχοι VIII, 6. XII, 16. κληρουχικά XIV, 16.
κλητῆρες, κλήτορες (κλητεύειν) XVIII, 55. 150. XXI, 87. XXXII, 30. XXXIV, 13. XL, 28. XLVII, 27. LIII, 14. 15. LIX, 28. ψευδοκλητεία LIII, 15. 17.
Κοθωκίδαι, pagus Atticae eiusque incolae, XVIII, 29. 54. 55. 75. 137. 180. 187. LIX, 72.
Κοίλη, pagus Atticae, XXII, 60.
Κοκκαλίνη, Neaerae ancilla, LIX, 35. 120. 124.
collocatio puellarum XVIII, 268. XIX, 195. XXVII, 66. 69. XXVIII, 21. XL, 4. 6. 19. 25. 56. 61. XLIII, 54. XLV, 54. 74. XLVIII, 54. LVII, 43. LIX, 8. 50. 69 sq. 112 sq. 122.
Κολλυτός, pagus Atticae, XVIII, 180. Κολλυτεῖς XVIII, 75. XXXIV, 134. XXXVII, 4.
Κολωνός, pagus Atticae, XXI, 64. LIX, 22. 23.
Κόνων Ἁλαιεύς XLVIII, 5 sqq.
Κόνων, Timothei pater, IX, 191. XX, 68 sq. XXII, 72. XXIV, 180. XXVII, 7. XXIX, 59.
Κόνων, Timothei f., XL, 39.
Κόνων alius LIV.
Κόπριοι, Copri, pagi Attici, incolae, XVIII, 73.
κοπρῶναι XXV, 49.
Κόρινθος IV, 23. XVIII, 96. XX, 52. LIX, 26 sqq. 36. Ep. 6, 1. Κορίνθιοι III, 20. IX, 34. X, 52. XVIII, 96. 157. 237. 295. XX, 55. LIX, 29.
Κόρκυρα, v. Κέρκυρα.
coronae XVIII, 54. 55. 58. 83. 84. 89 sqq. 114 sqq. 118. 120. 222. 257. 266. 319. XIX, 193. 261. 334. XX, 107. XXI, 16. 22. 25. 32. 33. 51 sqq. 63. 64. 145. 218. XXII, 8. 17 sqq. 69 sqq. 75. XXIII, 118. 119. 145. 151. 185. 188. XXIV, 176 sqq. XXVI, 5. LI. LIII, 9. LVIII, 27. 66. — στεφανῖται ἀγῶνες XX, 141.
Κορσιαί, Boeotiae oppidum, XIX, 141.
Κορώνεια, Boeotiae oppidum, V, 21. 22. VI, 13. XIX, 112. 141. 148. 325. 334.
Κότυς, Thraciae regulus, XXIII, 8. 104. 114. 118 sq. 127. 129 sqq. 149 sq. 153 sqq. L, 5.
Κόττυφος, *Arcas, XVIII, 151. *155.
κουρεῖα XXV, 52.
Κρατῖνος XXI, 132.
Κρεσφόντης, Messeniae rex, XVIII, 180.
Κρέων, Thebarum rex, XVIII, 180. 247. LX, 8.
Κρῆτες LIX, 108.
Κριθώτη, Chersonesi oppidum, XXIII, 158. 161.
κριταί, certaminum iudices, XXI, 5. 17. 18. 65.
Κριτίας, unus ex triginta viris, XXIV, 90. LVIII, 67.
Κριτόδημος Ἀλωπεκῆθεν LVIII, 35. LIX, 24. 25.
Κρίτων XL, 58.
Κριωεῖς, Crioae, pagi Attici, incolae, XLII, 11. XLIV, 9.
Κρόνια XXIV, 26.
Κρονίδης VII, 40.
Κρωβύλη, Thraciae oppidum, XII, 3.
Κτησίας, Cononis f., LIV, 7 sq. 22.
*Κτησίας Ξυπεταιών XXXV, 20. *Κτησικλῆς 34.
Κτησίβιος, Diodori f., LVII, 38.
Κτησικλῆς, logographus, LVIII, 19 sq.
Κτησικλῆς, alius, morte damnatus, XXI, 180.
Κτήσιππος Γλαυκωνίδου Κυδαντίδης LIX, 24. 25.
Κτησιφῶν Λεωσθένους Ἀναφλύστιος XVIII, 5. 13. 16. 54. 83. 118. 223. 250. XIX, 12. 18. 97. 315.
Κτήσων ἐκ Κεραμέων LIX, 48.
Κυάνεαι, insulae Ponti, XIX, 273.
Κυδαθηναιεῖς, Cydathenaei, pagi Attici, incolae, XXIV, 138. XLV, 8. LIX, 34. 123.
Κυδαντίδαι, pagus Atticae eiusque incolae, LIX, 24. 123.

Κυζικηνοί XXI, 173. L, 5. *Κ. στατῆρες* XXXIV, 23. XXXV, 36.
Κύθηρα, pagus Atticae, XLII, 5.
Κύθνιοι XIII, 34.
Κυνόσαργες, locus prope Athenas cum gymnasio, XXIII, 213. XXIV, 114. LVIII, 42.
Κυπρόθεμις, Sami praefectus, XV, 9.
Κύπρος, insula, XX, 76. *Κύπριοι* XII, 10.
Κυρηβίων, Aeschinis affinis, XIX, 287.
Κυρηναῖοι XX, 41. LIX, 9.
Κῦρος, minor, XV, 24.
Κυρσίλος, ob ignaviam lapidibus coopertus, XVIII, 204.
Κωλιάς, promontorium Atticae, LIX, 33.
κωμῳδοί XXI, 10.
Κῶς, insula, V, 25. XV, 27. XXXV, 35. *Κῷος οἶνος* XXXV, 31 sqq.

Λακεδαιμόνιος Ἀλωπεκῆθεν LVII, 8. LIX, 45.
Λακεδαίμων XV, 22. XX, 73. *Λακεδαιμόνιοι*: eorum agendi ratio in rebus publicis Pr. 35, 3. de Amphipoli certant XII, 21. eis Argivi infensi XV, 22 sq. cum Atheniensibus bella gerunt II, 24. IV, 3. 24. IX, 24. 51. XI, 6. 21. XX, 51 sqq. XXII, 15. LVIII, 67 (cf. *Ἀθηναῖοι*). cum Atheniensibus comparati XX, 105 sqq. Ep. 4, 7. Athenas muniri prohibent XX, 73. cum Atheniensibus pacem faciunt V, 18. de principatu cum eisdem certant X, 51. ab eis servati XVI, 11 sq. XVIII, 98. XIX, 75. XXIII, 191. LIX, 27. eorum belli gerendi ratio IX, 48. in Chalcidicam invadunt XIX, 264. eorum *γερουσία* XX, 107. Graecorum principatum tenent IX, 23. 25. 47. XV, 22. XVIII, 96. 202. XIX, 264. LIX, 96. Graecos iniuriis afficiunt IX, 30. ab eis dissident X, 52. Messeniis et Arcadibus infensi VI, 13. XVI, 1 sqq. Pr. 8, 1. pacem faciunt Antalcidicam XX, 54. 60. in bello Peloponnesiaco pollent XXI, 146. Peloponnesiis invisi XVIII, 18. cum Persis pugnant LIX, 95. LX, 10. paciscuntur XV, 29. XXIII, 140. eis Philippus infensus VI, 15. ab eo circumventi XIX, 50. 72 sqq. ad eos Philocratis dictum XXIII, 117. a Plataeensibus accusati LIX, 98. Plataeas evertunt LIX, 98 sqq. potentes olim IV, 3. nunc afflicti III, 27. X, 47. XX, 161. praemiis suos non afficiunt XX, 105. eorum reges Archidamus LIX, 98. Leonidas 95. Pausanias 96 sq. in Sphacteria capti XL, 25. Thasum et Byzantium amittunt XX, 59. triginta viris Atheniensium pecuniam mutuo datam repetunt XX, 11. victi a Chabria XIII, 22. XX, 76. XXIII, 198. XXIV, 181. a Conone XX, 68. XXII, 72. XXIV, 180. ab Iphicrate XIII, 22. XXIII, 198. ad Leuctra IX, 23. XVIII, 18. 98. LIX, 37. — *Λάκωνες* XVI, 2. Pr. 8, 2. *λακωνίζειν* LIV, 34. LIX, 36.
Λακιάδαι, pagus Atticae eiusque incolae, LIX, 61.
Λάκριτος, Phaselita, XXXV.
Λάμπις, navicularius, XXIII, 211. XXXIV, 5. 10 sqq.
Λαμπτρεῖς, Lamptrarum, pagi Attici, incolae, XXIV, 134. XLV, 8. XLIX, 14. LII, 3. 6. LIX, 45. 47.
Λάμψακος, Mysiae urbs, II, 28. XXIII, 142. L, 18 sq. 25.
Λαομέδων, v. *Λεωδάμας*.
lapicidinae in Piraeeo LIII, 17.
lapidatio XVIII, 204. XIX, 66. 337.
largitio IX, 37. 42 sqq. XIX, 7. 271. XXI, 113. XLVI, 26. LVIII, 6. 8. al. cf. *Αἰσχίνης* et *Φίλιππος*.
Λάρισα, Thessaliae oppidum, XIX, 163. *Λαρισαῖοι* XVIII, 48. LIX, 108.
Λασθένης, Olynthius, VIII, 40. IX, 66. XVIII, 48. XIX, 265. 343.
laus publica XII, 5. XVIII, 113. 279. XIX, 31 sq. 45. 48. 234. 313. L, 13.
Λάχης, Melanopi pater, XXIV, 127.
Λάχης, Melanopi f., Ep. 3, 21 sq.
legati quomodo agere debeant XIX, 273 sqq. 338. quarum rerum rationem reddere 4 sqq. 82. 183. eorum viaticum 158. 311. laudati et ad epulas vocati 31 sq. 234. saceri XII, 4. capite damnati XIX, 31. 137.

leges VIII, 2. XVIII, 14. 55. 108.
121. XX, 49. 57. 91. 107. 154. XXI,
30. 34. 150. 188. 223 sqq. XXII,
25 sq. XXIV, 5. 155. 192 sq. 205.
210. 212 sqq. XXV, 15 sqq. XLII,
13. LIV, 17. LVIII, 41. 61. LXI,
50. Ep. 3, 22. earum ferendarum
ratio III, 10. XX, 89 sqq. 137.
XXIV, 17 sqq. quales esse de-
beant XXIV, 68 sq. *νόμοι ἄγραφοι*
XVIII, 275. *ἁπάντων ἀνθρώπων
κοινοί* XXIII, 85. *τῆς φύσεως* opp.
οἱ γεγραμμένοι XLV, 53. *παραγε-
γραμμένοι* (in iudiciis) XVIII, 111.
XX, 99. XXII, 34. XXIII, 63. 215.
— Leges de actionibus non am-
plius instituendis XXVI, 9. de
adoptione XLIII, 41. XLIV, 2. 7.
23. 64. 67 sq. de adulteris LIX, 85
sq. *87. de arbitris XXI, 84. 93.
*94. XL, 40. LII, 30. *βουλευτικοί*
XXIV, 20. de bonis publicis
XXIV, 12. *κακώσεως* X, 40. *XXIV,
105. de caussis publicis LVIII, 5
sq. de choregia XXI, 13. 56 sq. 61.
de falsa citatione LIII, 15. de ci-
vibus recens factis LIX, 92. de
civitate donanda LIX, 88 sqq. de
collocandis a cognatis filiabus
pauperibus *XLIII, 54. XLIV,
66. de collocandis sororibus XL,
19. de commercio forensi XX, 9.
de contionibus XIX, 185. de co-
rona XVIII, 58. *120. de damno
illato XX, 35. 43. de debitis XXIX,
36. de debitoribus fiscalibus XX,
156. XXII, 33. 49. 51. XXIV, *39.
41. *50. 51 sq. *71. 82 sq. XXVI,
1. LVIII, 14. 15. 21. 45. 49 sqq. de
Dionysiis XXI, 51. 175. de donis
XIX, 7. XXI, 107. *113. *XLVI,
26. de dote materna filiis tra-
denda XL, 59. de dotis usuris
XXVII, 17. LIX, 52. *εἰσαγγελτι-
κός* VIII, 28. XXIV, 63. *ἐνδεί-
ξεως* LVIII, 5. de exceptionibus
XXXII, 1. XXXIV, 4. XXXVII,
1. 33. XXXVIII, 1. de exulibus
L, 48 sq. de festis XXI, 35.
XXIV, 29. de frumento impor-
tando XXXIV, 37. XXXV, 50.
*51. de furtis XXIV, *105. 113 sq.
de Harmodio et Aristogitone eo-
rumque posteris XIX, 280. de
hereditate XLIII, 3. 27. 50. *51.
78. XLIV, 11 sq. 14. 25. 62. 66. de
litibus hereditariis XLIII, 7. 10.
15. *16. XLVIII, 10. 25 sq. 29 sq.
LII, 17. de immunitate Leptinis
XX. contra lata 88. 94. 97. 99. 137.
164. de impudicis XXII, 21. 24.
30 sqq. 73. XXIV, 181. de inertia
LVII, 32. de infamibus et debi-
toribus in integrum restituendis
XXIV, *45. 46 sq. de iniuria XXI,
35. *47. 48 sq. LIV, 24. LVII, 30.
de iudiciis VII, 9. de legatis XIX,
126. 131. de legum auctoritate
XXIII, 87. 218. XXIV, 30. *42.
43 sq. de legibus ferendis XX, 89
sqq. XXIV, *20—23. 24 sqq. *33.
34 sqq. de legibus non scribendis
in usum singulorum XXIII, 86.
218. XXIV, *59. 60. 188. XLVI,
12. de legibus non tollendis
XXIII, 62. de liturgiis XX, 8. 18.
129. XLV, 78. L, 9. de locando
pupillorum patrimonio XXVII,
58. XXIX, 29. 57. de magistrati-
bus Pr. 55, 3. de maledictis in
mortuos XX, 104. XL, 49. merca-
toria XXXIII, 1 sq. XXXIV, 42.
45. XXXV, 3. LVI, 10. *μεταλλι-
κός* XXXVII, 35. de militiam de-
trectantibus *XXIV, 105. de
moechis in vincula coniectis LIX,
66. de mortuis efferendis *XLIII,
62. de mulieribus non audiendis
XLVIII, 56. de mysteriis XXI,
175. de nominibus XLIII, 27. de
nuptiis XLIII, 19. XLIV, 49.
XLV, 55. *XLVI, 18. XLVIII,
53. LVII, 69. LIX, 60. 92. de
officiis praestandis a cognatis
defunctorum *XLIII, 57. 58. de
oleis non exscindendis *XLIII,
71. de pactis XLII, 12. XLVII,
77. XLVIII, 11. LVI, 2. de pa-
rentibus alendis et sepeliendis
XXIV, 107. de parentibus et li-
beris XXXIX, 33. 39. de peregri-
nis LVII, 31. de peregrinitate
LIX, 13. *16. 17. *52. de permu-
tatione bonorum XLII, 1. 4. 8. 11.
12. 18. 23. 30. *φονικοί* IX, 44. XX,
158. XXI, 43. XXIII, *22. 24 sq.
*28. 29 sqq. *37. 38 sqq. *44. 45
sqq. *51 sq. *53 sqq. *60 sqq. 67.
72. 77. *82 sqq. 86. 215 sqq.
XXXVII, 59. XXXVIII, 22.

XLVII, 70 sqq. de pignore XLI, 7. 10. de poena irroganda XX, 155. de populo non fallendo XX, 100. 135. XLIX, 66. de praedibus XXXIII, 27. de praedonibus LIV, 24. de praemiis XX, 96. de praescriptione XXXVI, 26. XXXVIII, 17. 27. de probole *XXI, 8 sq. de proditione XIX, 133. de provocationibus XL, 44. de redemptis captivis LIII, 11. de regis archontis uxore LIX, 75. 81. de scortis LIX, 67. de senatu coronando XXII, 5 sqq. de senatus iurisdictione XLVII, 43. de abrogandis sententiis in iudicio sub triginta viris latis *XXIV, 56. de sententiis iudicum non rescindendis XVIII, 224. XX, 147. XXIV, *54. 55. XXXVI, 23. 25. 60. XXXVII, 18 sq. 21. XXXVIII, 4 sq. 16. de sepultura publica LX, 2. de stipendiis merendis III, 11. de suffragiis XIX, 239. de sycophantia LVIII, 10 sq. de syndicis a populo creandis XX, 152 sq. τελωνικοί XXIV, 96. 101. LIX, 27. de testamentis XX, 102. XLIV, 68. XLVI, *14. 15 sq. *24. de testimoniis XLIV, 55. XLV, 44. XLVI, 6 sq. *8. 9. *10. XLVII, 1. XLIX, 19. LVII, 4. LIX, 27. de theoricis III, 11. LIX, 4. de trierarchis XVIII, 102. 312. *XX, 27. XLVII, 21. L, 43. 57. 65. de vadimonio XXIV, 144. LIII, 27. de vectigalibus pendendis XXIV, 96. 122. de verberibus XXI, 35. de vi facta XXI, 44. de viduarum et orborum cura archonti habenda *XLIII, 75. de vindicatione in libertatem LVIII, 19 sqq. LIX, 40. — leges Lacedaemoniorum et Thebanorum cum Atheniensibus comparatae XX, 105 sqq. Locrorum XXIV, 139 sqq.

λειτουργία (λειτουργεῖν) V, 8. X, 28. XVIII, 104. 108. 267. XIX, 282. XX, 1. 8. 18 sqq. 40. 126 sqq. 151. XXI, 11. 14. 56. 61. 108. 126. 151 sqq. 165. 169. 171. 189. 225. XXII, 65. XXIV, 172. XXV, 29. 76. 78. XXVII, 64. XXVIII, 3. 17. 19. 24. XXIX, 24. XXXVI, 39 sqq. XXXVIII, 25. XXXIX, 8. 9. XLII, 3. 21 sqq. XLV, 66. 78. XLVII, 48. 54. L, 9. 21. 31. 35. 39 sq. 58. 65 sq. LI, 7. 17. LII, 26. LIX, 117. Pr. 14, 2. 48, 3.

Λεοντιάδης, Thebanus, LIX, 99.

Λεοντίς, tribus Atheniensium, XVIII, 84. Λεοντίδαι (Λεωντίδαι) LVIII, 18. LX, 29.

Λεπτίνης ἐκ Κοίλης XX. XXII, 60.

Λέσβος, insula, XVII, 7. XXIII, 143.

Λευκάς IX, 34. LVII, 18. Λευκάδιοι XVIII, 237. LIX, 29. 32.

Λευκὴ ἀκτή, Thraciae oppidum, VII, 39. 40.

Λευκονοεῖς, Leuconoae, pagi Attici, incolae, XXVII, 14. XXXV, 14. L, 27.

Λεῦκτρα, Boeotiae oppidum, IX, 23. XVIII, 18. 98. LIX, 37.

Λεύκων, Bospori rex, XX, 29 sqq.

Λεωδάμας Ἀχαρνεύς, orator, XX, 146 sq. XXI, 71.

*Λεωδάμας ναύαρχος XVIII, 73.

Λαομέδων 77.

Λεὼ κόραι LX, 29. Λεωκόριον LIV, 7. 8.

Λεωκράτης, Leostrati pater, XLIV, 13. 17. 19 sqq.

Λεωκράτης, a Polyeucto adoptatus, XLI, 3 sqq.

Λέων, legatus ad Persas, XIX, 191.

Λεωνίδας, Lacedaemonis rex, LIX, 95.

*Λεωσθένης Ἀναφλύστιος XVIII, 54. 118.

Λεώστρατος Ἐλευσίνιος XLIV, 9. 13. 17.

Λεώστρατος, eius nepos, Leocratis f., XLIV, 17. 21 sqq.

Λεωχάρης XLIV.

Λῆμνος, insula, IV, 27. 32. 34. VII, 4. XVIII, 77. LIX, 3.

Ληναῖον, Bacchi templum, XXI, 10.

ληξιαρχικὸν γραμματεῖον XLIV, 35. 37. LVII, 26. κοινὸν γρ. LVII, 60.

Λητώ XXI, 52. XLIII, 66.

Λιβύη LII, 3.

Λίμναι LIX, 76.

λιπομαρτύριον XLIX, 19.

λιποτάξιον XV, 32. XXI, 103. 105. 110. XXIV, 119. XXXIX, 17. LI, 8.

λογισταί XVIII, 117. 229. XIX, 211.

λογογράφοι XIX, 246. 250. LVIII, 19.
λόγος πρότερος, ὕστερος, XXIII, 69. XXVIII, 1. XLIII, 8. XLVIII, 51.
Λοκροί LIX, 101. (Ἐπιζεφύριοι) XXIV, 139 sqq. (Ὀζόλαι) XVIII, 140. 150 sqq. XIX, 62. Ὀζόλαι XVIII, 157.
ludi magistri condicio XVIII, 258.
λουτροφόρος, in sepulcris caelibum, XLIV, 18. 30.
Λυδία XXIII, 155.
Λύκειον XXIV, 114.
Λυκίδας, molitor, LIII, 14.
Λυκίδας, servus, XX, 131 sqq.
Λυκῖνος Παλληνεύς L, 53.
Λυκίσκος, archon ol. 109, 1, LVIII, 28.
Λυκοῦργος, orator, XXV, 1. 14. 38. 54. 69. 97. XXVI, 16. Ep. 3.
Λύκων, Heracleota, LII, 3 sqq.
Λύσανδρος, Spartanus, XXIII, 212.
Λυσανίας, Thucritidis I. frater, LVII, 21.
Λυσαρέτη, Thucritidis I. uxor, LVII, 20. 21.
Λυσίας, Cephali f., sophista, LIX, 21 sqq.
Λυσιθείδης XXI, 157. XXIV, 11. LII, 14 sq. 30 sq.
*Λυσίμαχος Ἀλωπεκῆθεν XXI, 121.
Λυσίμαχος, Aristidis f., XX, 115. 116.
*Λυσίμαχος Λυσίππου Αἰγιλιεύς LIX, 123.
Λυσῖνος XXXVI, 15.
*Λύσιππος Αἰγιλιεύς LIX, 123.
Λύσιππος Κριωεύς XLIV, 9.
Λυσίστρατος Θορίκιος XL, 52.
Λυσίστρατος alius LIV, 32.
λῷος, Macedonum mensis, = βοηδρομιὼν Atheniensium et πάνεμος Corinthiorum XVIII, 157.
λωποδῦται IV, 47. XXIV, 204. LIV, 1. 24.
Μαγνησία, Thessaliae oppidum, I, 12. 22. II, 7. 11. VI, 22. LIX, 108.
Μάδυτος, Chersonesi oppidum, XVIII, 92.
Μακάρτατος Προσπάλτιος XLIII, 48. 77.
Μακάρτατος, Theopompi f., XLIII.
μακάρων νῆσοι LX, 34.
Μακεδονία I, 9. VI, 20. VII, 12 sq. VIII, 14. IX, 11. X, 12. XI, 16. 22. XII, 5. XIII, 24. XVII, 28. XVIII, 30. 32. 39. 73. XIX, 155. 196. 265. 286. 307. 311. XXIII, 111. 200. XLIX, 26. 28 sq. 60. L, 46 sq. 50. Μακεδόνες II, 16. 17. IV, 10. VII, 6. 11. IX, 31. XI, 10. 17. XVII, 10. 11. 16 sq. 20. 26. 77. XVIII, 157. 166. 167. 181. XIX, 260. 327. XXIII, 111. Μακεδονικὴ δύναμις II, 14. XI, 8. Μ. πόλεις XVII, 17.
Μαλιεῖς LIX, 101.
Μάνης, servi nomen, XLV, 86. LIII, 20.
Μαντίας Θορίκιος XXXIX, 7.
Μαντίθεος Μαντίου Θορίκιος XXXIX, 4 sqq. XL, 18. 20. 34.
Μαντίνεια, Arcadiae oppidum, XVI, 6.
manumissio, v. servi.
Μαραθών, pagus Atticae, IV, 34. XIII, 21. 22. XIV, 30. XVIII, 208. XIX, 311. 312. XXIII, 196. 198. LIX, 94. Pr. 21, 2. Μαραθώνιοι XVIII, 135.
Μαρδόνιος, Persa, XXIV, 129. LIX, 96.
Μαρώνεια, Atticae locus, XXXVII, 4.
Μαρώνεια, Thraciae oppidum, XXIII, 183. L, 20 sq. Μαρωνεῖται XII, 17. XVII, 23. L, 14. 20 sqq.
Μασσαλία XXXII, 5. Μασσαλιῶται XXXII, 8.
Μάστειρα, Thraciae oppidum, VIII, 44. X, 15.
matrimonium legitimum XXXVI, 32. XL, 26. XLIV, 49. XLV, 55. XLVI, 18. XLVIII, 53. LVII, 69. LIX, 60. 92. 106.
Μαύσωλος, Car, XV, 3. 27. XXIV, 12.
Μεγακλείδης Ἐλευσίνιος LII, 20 sq.
Μεγάλη πόλις, Arcadiae urbs, XVI, 4. 8 sqq. XIX, 11. Μεγαλοπολῖται V, 18. XVI.
Μέγαρα VIII, 18. IX, 17. 18. 27. X, 9. XVIII, 48. 71. 96. XIX, 87. 204. 294 sq. 326. 334. XXV, 56. XXIX, 3. XXXV, 28. LIX, 35 sqq. 49. 120. 124. Μεγαρεῖς III, 20.

IX, 74. XII, 4. XIII, 32. XVIII, 234. 237. 295. XIX, 295. XX, 131. XXIII, 212. XLIX, 26. LIX, 36. LXI, 49.
medici III, 33. XVIII, 243. XIX, 124. 249. XXVI, 26. XXX, 34. XXXIII, 18. XL, 33. XLVII, 62. 67. LIV, 1. 9 sqq. 36. Pr. 53, 6.
Μεθώνη, Macedoniae oppidum, I, 9. 12. IV, 4. 35. IX, 26. L, 46. 48.
Μειδίας Ἀναγυράσιος, Demosthenis adversarius, XXI. XXII, 10. LIV, 10.
Μέλαντος, sycophanta, XVIII, 249.
Μελάνωπος, legatus, XXIV, 12 sq. 125 sq. 137. 187. 197. Ep. 3, 21. [6.
Μελάνωπος, Diophanti f., XXXV,
Μελίτη, pagus Atticae, LIV, 7. *Μελιτεῖς* XXVII, 56. XXIX, 48. LVII, 37. 41. 68. LIX, 32. 33. 48. 58.
Μέμνων, Artabazi affinis, XXIII, 157.
Μένδη, Macedoniae oppidum, XXXV, 10. 20. *Μενδαῖος οἶνος* 10. 20. 35.
**Μενεκλῆς Ἀχαρνεύς* XLV, 8.
Μενεκλῆς, sycophanta, XXXIX, 2. 13. XL, 9. 10. 32.
Μενεκράτης Ep. 5, 1.
Μενέλαος, praetor, IV, 27.
Μενέξενος XL, 6 sq. 25.
Μενεσθεύς, praetor, XVII, 20. Ep. 3, 27.
Μενεσθεύς, Sosithei f., XLIII, 74. alius eiusdem familiae 44 sq. 74.
Μενέστρατος, Eretriensis, XXIII, 124.
Μένιππος, Car, XXI, 175 sq.
Μένιππος, Philippi satelles, IX, 59.
Μέντωρ, Artabazi affinis, XXIII, 157.
Μένων, praetor, XXXVI, 53. L, 12.
Μένων, Pharsalius, XIII, 23. XXIII, 199.
mercenarii I, 22. III, 35. IV, 20. 21. 23. 24. 46. VIII, 9. IX, 58. XI, 5. 10. 18. XIII, 6. XIV, 31. XVIII, 115. 152. 237. XIX, 81. 87. 266. 319. XX, 162. XXIII, 139. 142. 148 sqq. 173. XL, 36. L, 22.
meretrices XLVIII, 53. 55. LIV, 14. LIX, 13. 18 sqq. Ep. 3, 26.
μεσεγγύημα XXXIX, 3.
Μεσσήνη VI, 13. XVI, 8 sqq. XVII, 4. 7. *Μεσσήνιοι* V, 18. VI, 9. 15. 19. 26. XVI, 9. XVII, 7. XVIII, 64. 295. XX, 131.
metalla VIII, 45. X, 16. XIX, 293. XXI, 167. XXIII, 146. XXXVII, 4. XL, 52. XLII, 3. 18. 20 sq. 31. metallicae res XXXVII, 22—38. actiones 35 sqq. 47. lex 35.
Μετάνειρα, meretrix, LIX, 19. 21 sqq.
μέτοικοι IV, 36. XX, 18. 20. XXI, 163. XXII, 54. 61. 68. XXIII, 23. XXIV, 166. XXXV, 51. XLVI, 22. XLIX, 26. LII, 9. 25. 29. LVII, 48. LVIII, 20. *μετοίκιον* XX, 130. XXIII, 211. XXV, 57. XXIX, 3. LVII, 55. cf. *ξένοι*.
Μήδειος Ἀγνούσιος XLIII, 7.
Μήδιος, Thessalus, LIX, 108.
Μῆδοι IX, 42. XII, 21. LIX, 97. *μηδίζειν* LIX, 95. [9.
Μήθυμνα, Lesbi oppidum, XLIV,
Μήλιοι LVIII, 56.
μήτηρ τῶν θεῶν XXV, 97. Pr. 54, 2. *μητρῷον* (XVIII, 142) XIX, 129. XXV, 98.
Μιδυλίδης, Aristotelis f., XLIV, 10.
Μιδυλίδης, Euthymachi f., XLIV, 9 sq. 13. 17 sqq.
Μίκων Χολλείδης LVIII, 5 sqq.
Μικκαλίων XXXII, 11.
Μιλτιάδης III, 25. XIII, 21. 22. XIX, 303. XXIII, 196. 198. 207. XXVI, 6.
Μιλτοκύδης, Thraciae regulus, XXXIII, 104. 115. 169. 175. L, 5.
Μιλύας, libertus, XXVII, 19. 22. XXIX, 5. 29 sqq.
μισθός: iudicum XXXIX, 17. meretricum LIX, 18 sqq. praeceptorum XXVII, 46. XXXV, 42.
μίσθωσις (*μισθοῦν*) XXI, 103. XXXVI, 4 sqq. 37. XXXVII, 5 sqq. XLI, 5. XLIII, 58. XLV, 29 sqq. 47. XLVI, 17. XLVIII, 44 sq. LI, 6. LIII, 21. LVI, 24. LVII, 63. LIX, 10. 19 sqq. eius formula *XLV, 31. *μ. τοῦ οἴκου* XXVII, 15. 40. 58 sqq. 64. XXVIII, 1. 5. 7. 15. XXIX, 29. 42 sq. 57. 59 sq. XXX, 6. XXXVIII, 23. trierarchiae XXI, 80. LI, 7 sq. 13 sqq.

Μίτυς, Argivus, LIX, 33.
Μνασέας, Argivus, XVIII, 295.
Μνησαρχίδης, dives, XXI, 208. 215. alius LVIII, 32.
Μνησίβουλος Ἀχαρνεύς Ep. 3, 21 sq.
Μνησίβουλος, Euergi affinis, XLVII, 53.
**Μνησιθείδης*, archon pseudeponymus, XVIII, 155.
**Μνησιθείδης Ἀντιφάνους Φρεάρριος* XVIII, 187.
**Μνησίθεος Ἀλωπεκῆθεν* XXI, 82.
**Μνησίθεος Κόπριος* XVIII, 73.
Μνησικλῆς Κολλυτεύς XXXVII, 4 sq. 11 sqq.
Μνησικλῆς, sycophanta, XXXIX, 2. XL, 9.
Μνησίλοχος Περιθοίδης L, 41 sq.
Μνησιμάχη, Lysippi f., XLIV, 9.
**Μνησίφιλος*, archon pseudeponymus, XVIII, 29. 37.
**Μνησωνίδης Ἀχαρνεύς* XXXV, 20.
Μοιριάδης XXVII, 27.
Μοιροκλῆς, orator, XIX, 293. LVIII, 53. 56. Ep. 3, 15.
Μόλων, archon ol. 104, 3, L, 4.
Μόλων, histrio, XIX, 246.
monumenta sepulcralia XLIII, 62 sqq. 79 sq. XLV, 79. XLVII, 65. 69. XLVIII, 12. LV, 14. 15. LVII, 28. 39. 67. 70. publica XVIII, 208. LVII, 37.
mortis poena XVIII, 133. XIX, 31. 126. 131. 252. 270. 276 sq. 278. 281. 286. XX, 135. 156. 167. XXI, 43. 49. 92. 152. 176. 180 sqq. XXII, 66. XXIII, 31. 80. XXIV, 103. 113 sq. 138. 149. 173. 208. XXV, 65. 77. 87. XXXIV, 50. XXXVII, 59. XXXIX, 12. XLV, 80. 81. XLIX, 10. L, 48. LI, 9. LIII, 18. LIV, 23. 39. LVII, 64.
Μοσχίων, servus, XLVIII, 14 sqq.
*Μόσχος *Παιανιεύς* XXI, 104. 107. *121.
multae XVIII, 105. XIX, 131. 273. 280. XXI, 182. XXIII, 167. 205. XXIV, 127. XXV, 67. 92. XXIX, 59 sq. XLIII, 58. 71. 75. XLVII, 43. LIII, 18. LVIII, 6. 31. LIX, 6. 8. 16. 98. cf. *χίλιαι*.
Μουνυχία, Piraeei arx, XVIII, 107.
muri Athenarum XVIII, 96. 248. 299 sq. XX, 68. 72 sq.
μύριοι, senatus Arcadum, XIX, 11. 198.
μυροπωλεῖα XXV, 52. XXXIV, 13.
Μυρρινούσιοι, Myrrhinuntis, pagi Attici, incolae, XXI, 93. XXIV, 71. XXXIII, 15. 22.
Μυρτηνόν, Thraciae oppidum, XVIII, 27.
Μύρτις, Argivus, XVIII, 295.
Μυρωνίδης, Archini f., XXIV, 135.
Μυσοί XVIII, 72.
μυστήρια III, 5. XII, 4. XXI, 158. 171. 175 sq. LIX, 21 sqq. 113. privata XVIII, 259. 269. XIX, *199*.
Μυτιλήνη, Lesbi oppidum, XL, 36 sq. L, 53. *Μυτιληναῖοι* XIII, 8. XV, 19. XL, 37. Pr. 37, 3.

Νάξος, insula, XIII, 22. XVIII, 197. XXIII, 198. XXIV, 180.
ναύαρχος Atheniensium (qui nullus tum erat) XVIII, *73. *77. *78. *184. Boeotorum XLIX, 21. 48 sqq. [99.
Ναυκλείδης, Plataeensis, LIX,
Ναυκρατιτικὰ χρήματα XXIV, 11.
Ναύπακτος, Locridis oppidum, IX, 34.
**Ναυσικλῆς*, archon pseudeponymus, XVIII, 181.
Ναυσικλῆς, praetor, XVIII, 114. 115. Ep. 3, 27.
**Ναυσικράτης Καρύστιος* XXXV, 10. 14.
Ναυσίμαχος XXXVIII.
Ναυσίνικος, archon ol. 100, 3, XXII, 44. LIX, 65.
*Ναυσίφιλος Ναυσινίκου *Κεφαλῆθεν* LIX, 65. *71.
Νέαιρα, meretrix, LIX.
**Νέαρχος Σωσινόμου* XVIII, 165.
Νέμεα XVIII, 91.
νεμέσεια, festum in honorem defunctorum, XLI, 11.
**Νεοκλῆς*, archon pseudeponymus, XVIII, 73. 75.
Νεοπτόλεμος, dives, XVIII, 114. XXI, 215.
Νεοπτόλεμος, histrio, V, 6. 7. XIX, 10. 12. 315.
Νέων, Philiadis f., Messenius, XVIII, 295.
Νέωνα, Phocidis oppidum, XIX, 148.

νεώρια (νεώσοικοι) VII, 16. VIII, 45. X, 16. XIII, 28. XIV, 22 sq. XVIII, 132. XIX, 60. XXII, 63. 76. XXIII, 207. XXIV, 184. XXXIV, 37. XLVII, 20 sqq. L, 36.
Νίκαια, Locridis oppidum, VI, 22. XI, 4.
Νικαρέτη, Euxithei mater, LVII, 68.
Νικαρέτη, lena, LIX, 18 sqq. 108. 118.
Νίκη Pr. 54, 1. cf. XXIV, 121.
Νικήρατος, Niciae f., XXI, 165. alii XIX, 290. LIV, 32.
Νικιάδης, Lysaniae f., LVII, 21.
Νικίας, Aeschinis affinis, XIX, 287.
Νικίας, Apollodori affinis, XXXVI, 17. XLV, 70.
*Νικίας, archon pseudeponymus, XVIII, 137.
*Νικίας, Philippi caduceator, XII, 2.
Νικίας, praetor, III, 21. XXI, 165.
Νικίδης XXXVIII, 23.
*Νίκιππος Κεφαλῆθεν LIX, 61.
Νίκιππος, navicularius, L, 17.
Νικόβουλος, actor, XXXVII, 22. 52.
Νικόδημος, ab Aristarcho caesus, XXI, 104 sqq. 107. 121.
Νικοκλῆς, tutor Pasiclis, XLV, 37.
*Νικόμαχος Διοφάντου XVIII, 137.
Νικόστρατος LIII.
*Νικόστρατος Μυρρινούσιος XXI, 93.
Νικόστρατος, Niciadis f., LVII, 21.
Νικόστρατος, peregrinus, LVII, 59.
Νικόστρατος, Philini pater, XXI, 161.
Νικόφημος, archon ol. 104, 4, *XLIII, 31. XLVI, 13.
Νίνος, femina sacerdos, XXXIX, 2. XL, 9.
Νόθαρχος XXIX, 31.
νόθοι XXIII, 213. XLIII, 51. LVII, 53.
nomen XXXIX. XLIII, 23. 27. L, 74. LVII, 37.
νομιζόμενα, τά, in honorem defunctorum, XVIII, 243. XXIV, 107. XLIII, 65. XLIV, 32. XLVIII, 6. 12. LX, 33. deorum LIX, 75. 79. 85.
νομοθέται III, 10. XX, 137. XXIV, 21. 23. 25. 27 sqq. 33.
numorum adulteratio XX, 167. XXIV, 213 sq.

*Ξάνθιππος Ἐρσιάδης LIX, 61.
Ξένιππος XL, 44.
Ξεννίς, Neaerae ancilla, LIX, 121. 124.
ξένοι = μέτοικοι IX, 3. XX, 21. 29. XLVI, 22. 23. opp. cives LVII, 3. 19 sqq. LVIII, 68. LIX, 13 sqq. 85. 90. ξενικὰ τελεῖν LVII, 34. ξενία, peregrinitas, XXIV, 131. XXXIX, 18. XL, 41. XLIX, 66. LIX, 52. Ep. 3, 25. ξενία, hospitium, VII, 20. XVIII, 51. ξένια, dona, XIX, 166. 167.
Ξενοκλείδης, poeta, XIX, 331. LIX, 26. 28.
Ξενοπείθης XXXVIII.
Ξενοφρῶν, Phaedimi f., XIX, 196.
Ξένων, fenerator, XXXVI, 13. 37.
Ξέρξης LIX, 95.
Ξοῦθος XXVII, 11. XXIX, 36.
Ξυπεταιῶνες, Xypetae, pagi Attici, incolae, XXXV, 20. 34. LIX, 34.

Οἰά, pagus Atticae, XXXIII, 14.
Οἰδίπους XVIII, 186.
*Οἰνάνθη XLIII, 36.
Οἰνεύς, Pandionis f., LX, 30.
Οἰνηΐς, tribus Atheniensium, XVIII, 118. XXI, 60. XLVII, 12. Οἰνεῖδαι LX, 30.
Οἰνόμαος tragoediae XVIII, 180. 242.
Οἶον, pagus Atticae, XLIII, 3. 4. 19.
Οἰταῖοι, Thessaliae gens, LIX, 101.
olearum cultura XLIII, 69 sqq. LIII, 15.
ὀλιγαρχία XIII, 8. XV, 17 sqq. XIX, 184. XX, 15. 108. XXII, 32. 51. XXIII, 66. XXIV, 24. 75 sq. 149. 163. XL, 46. LX, 25. Pr. 2, 2. 42, 1.
Ὀλυμπία, Elidis oppidum, XVIII, 319. XXI, 145. LVIII, 66. Ὀλύμπια, festum, XVIII, 91. a Philippo commissa XIX, 192.
Ὀλυμπιόδωρος XLVIII.

Ὀλύμπιοι θεοί XXI, 52. XLIII, 66.
Ὀλύμπιχος, Apollodori f., LVII, 38.
Ὄλυνθος, Thraciae oppidum, I—III. VII, 28. VIII, 65. IX, 11. 26. 56. X, 67. XVIII, 48. XIX, 192. 194. 294. XXI, 161. 197. LIX, 4. Ὀλύνθιοι I—III. VI, 20. VIII, 40. 59. 62. 65. IX, 11. 63. 66. 68. X, 61. 64. 67. XI, 3. XIX, 146. 196 sqq. 263 sqq. 306. 309. XXIII, 107 sqq. 150. LIX, 91.
Ὅμηρος LX, 29. LXI, 25.
Ὀνήτωρ XXIX, 3. 28. XXX. XXXI.
Ὀνόμαρχος, Phocensium praetor, XIX, 319.
ὀπισθόδομος, postica pars templi Minervae in arce, XIII, 14. XXIV, 136.
oracula XIX, 297. XXI, 51. *52 sq. 54. *XLIII, 66. Ep. 4, 3. 5. 10.
oratores I, 1. 28. II, 29. III, 1. 3. 15. 22. IV, 1. 44. VI, 1 sqq. VII, 22. VIII, 1 sqq. 22. 27. 30 sqq. 52. 57. 64 sqq. IX, 1 sq. 38. 53 sq. X, 2. 55. 70. XII, 14. 19. XIII, 18. 20. 36. XIV, 1. XV, 25. XVI, 1 sq. XVIII, 130. 170. 212. 219. 232. 246. 272. 277 sq. 280. 282. 308. 312. 318. 319. XIX, 137 sq. 182. 217. 251. XX, 166. XXI, 189. XXII, 37. 66. XXIII, 146. 184. 185. 201. 210. XXIV, 66. 123 sq. 142. 147. 157. 173. XXV, 40. 97. XXIX, 32. XLVIII, 24. 36. LI, 2. 16 sqq. LVIII, 62. LIX, 43. Pr. 1—56. Ep. 1, 4. 7. 2, 8. 3, 12. 30.
Ὀρέστης XXIII, 66. 74.
ὅροι XXV, 69. XXXI, 1. 3 sq. 12. 13. XLI, 6. 16. XLII, 5. 28. XLIX, 11 sq.
Ὀρόντας, Artaxerxis satrapa, XIV, 31.
ὀρφανοί XXXV, 48. XXXVIII, 17 sq. XLIII, 75. LIII, 29. LVII, 52. ὀρφανικά XIV, 16.
Ὀρφεύς XXV, 11.
Ὀρχομενός, Boeotiae oppidum, V, 21. 22. VI, 13. XVI, 4. 25. XIX, 112. 141. 148. 325. 334. Ὀρχομένιοι XX, 109.
Ὀτρυνεῖς, pagus Atticae eiusque incolae, XLIV, 9. 35 sqq.
Ὀφρύνιον, Troadis oppidum, XXXIII, 20.
Παγασαί, Thessaliae oppidum, I, 9. 12. 22. II, 11. IV, 35. XIX, 183. Παγασίτης κόλπος XII, 5.
Παιανιεῖς Paeaniae, pagi Attici, incolae, XVIII, 29. 54. 84. 105. 118. 180. 181. 187. XXI, 103. 107. 121. 168. 174. XXVII, 4. XLVII, 22. 28. LVIII, 33. LIX, 30. 123.
Παίονες I, 13. 23.
Παλλάδιον XXIII, 71. XLVII, 70. LIX, 9.
Παλλὰς Ἀθηναίη XIX, 255.
Παλληνεῖς Pallenae, pagi Attici, incolae, XLIV, 10. L, 53.
Παλλήνη, Thraciae oppidum, VII, 28.
Παμβωτάδαι, pagus Atticae eiusque incolae, LIII, 13.
*Παμμένης, Pammenis f., XXI, 22.
Παμμένης, praetor, XXIII, 183.
Πάμφιλος, Aegyptius, XXI, 163.
*Πάμφιλος Ἀχερδούσιος XXI, 168 (libri Πάμφιλος, Νικήρατος Ἀχερδούσιος. Cf. Boeckh *Urk. üb. d. Seew.* p. 247).
Πάμφιλος, fenerator, LVI, 6.
Πάμφιλος, fullo, LIV, 7.
Πάμφιλος, Plangonis pater, XXXIX, 2 sqq. XL, 20. 22 sq.
Πάμφιλος, Plangonis f., XXXIX, 4. 32. XL, 11.
Πάμφιλος Ῥαμνούσιος XLII, 28.
Παναθήναια IV, 35. XIX, 168. XXI, 156. XXIV, 26. 27. 29. XLIV, 37. τὰ μεγάλα XVIII, 116. LIX, 24. 25.
Πάνακτον, Atticae castellum, XIX, 326. LIV, 3.
Πάνδια, festum Iovis, XXI, 8. 9.
Πανδιονίς, tribus Atheniensium, XVIII, 29. XXI, 13. 68. XXIV, 27. 39. 71. Πανδιονίδαι LX, 28.
Πανδίων, rex Atticae, XXI, 52. LX, 28.
Πανδοσία, Epiri oppidum, VII, 32.
πάνεμος, mensis Corinthiorum, XVIII, 157. Cf. λῷος.
Πανταίνετος XXXVII.
Παντικάπαιον, Bospori oppidum, XXXV, 31 sqq.
παραγραφή, exceptio, XXI, 84. XXXII. XXXIII. XXXIV, 17. 43. XXXV, 2. 45. XXXVI. XXXVII.

XXXVIII. XL, 16. XLV, 5 sq. 40 sq. 51. 76. 81. XLVII, 39. 45.
πάραλος VIII, 29. XXI, 171 sqq. παράλιον, eius statio vel Parali herois sacellum, XLIX, 25.
πάρεδροι, archontum assessores, XXI, 178. 181. LVIII, 32. LIX, 72. 81. 84.
Παρεισάδης, Bospori rex, XXXIV, 8. 36.
παρθενών, Minervae templum in arce, XIII, 28. XXII, 13. 76. XXIV, 184.
Πάριοι XXIII, 205.
Παρμενίσκος LVI, 5 sqq.
Παρμενίων, Macedo, IX, 58. XIX, 69. 163.
Παρμένων, Byzantius, XXXIII, 5 sqq.
Πασέας LIV, 32.
Πασικλῆς, Pasionis f., XXXVI, 10. 20. 22. XLV, 37. 83 sqq.
Πασιφῶν, medicus, XXX, 34.
Πασίων, argentarius, XXVII, 11. XXXVI, 4 sqq. 30 sq. 43. 48. XLV, 8. 18 sqq. XLVI, 5. 21. 25. 28. L, 56. LII, 9 sqq. LIII, 18. LIX, 2.
Πάταικος Ep. 3, 15.
*Πατροκλῆς Φλυεύς XVIII, 105.
Παυσανίας, Lacedaemonis rex, LIX, 96 sq.
Παυσανίας ὁ πόρνος Ep. 4, 11.
Παφλαγονία XXIII, 155.
πεζέταιροι, praetoria Philippi cohors, II, 17.
Πειθόλας, Thessalus, LIX, 91.
Πειθώ Pr. 54, 2.
Πειραιεύς, pagus Atticae cum portu Athenarum, VIII, 7. 74. IX, 10. XVII, 26. XVIII, 37. 38. 132. 300. 301. XIX, 60. 125. 209. 277. 280. 291. XX, 36. 68. XXI, 10. 168. XXIII, 207. XXV, 38. XXXII, 10. XXXIII, 18. XXXIV, 6. XLIV, 4. XLVII, 20. 62. XLVIII, 27. XLIX, 6. 22. 26. 33 sq. 61. L, 6. 11. LII, 8. LIII, 17. LVI, 20. 22. 37 sqq. LVIII, 55. οἱ ἐν Πειραιεῖ XX, 11. 149. XXXIV, 37. Πειραιεῖς XXXV, 13. 14. LIII, 20.
Πεισίστρατος, tyrannus Athenarum, XXI, 144. Πεισιστρατίδαι XII, 7. XVII, 3.
Πέλλα, Macedoniae urbs, VII, 7. XVIII, 68. XIX, 155. 166. 169.
Πελλήνη, Achaiae oppidum, XVII, 10.
pellices XXIII, 53. 55. LIX, 118. 122.
Πελοπίδας, Thebanus, XXIII, 120.
Πελοπόννησος VI, 35. IX, 17. 27. 42 sqq. 72. XI, 4. XIII, 32. XVI, 18. 28. XVII, 10. XVIII, 18. 79. 156. 218. 301. XIX, 83. 260. 261. 303. 304. 311. XLIX, 9. 13. LIII, 5. LIX, 108. Ep. 6, 1. Πελοποννήσιοι V, 18. VI, 18. 26. IX, 18. XVI, 12. XVIII, 157. 186. XX, 53. 76. LIX, 101.
Πεπάρηθος, insula, XVIII, 70. XXXV, 35. XLV, 28. Πεπαρήθιοι XII, 12 sqq.
Περδίκκας, rex Macedoniae, XIII, 24. XXIII, 200.
Περίανδρος, auctor legis trierarchicae, XLVII, 21.
Περίανδρος, Polyarati f., XL, 6 sq.
περίδειπνον, silicernium, XVIII, 288.
Περιθοῖδαι, pagus Atticae eiusque incolae, L, 41.
Περικλῆς III, 21. XXVI, 6. LXI, 45.
Περίλαος, Megarensis, XVIII, 48. 295. XIX, 295.
Πέρινθος, Thraciae oppidum, XI, 5. XXIII, 142. 165. 168. Περίνθιοι XI, 3. XVIII, 89 sqq.
Πέρσαι VII, 29. IX, 36. XI, 6. XII, 6. 7. XVIII, 202. XXIII, 200. Ep. 2, 15. 4, 7.
πενέσται, servi Thessalorum, XIII, 23. XXIII, 199.
πεντακοσιομέδιμνοι XLIII, 54.
πεντηκόνταρχος L, 18. 19. 24. 25.
πεντηκοστολόγοι XXI, 133. XXXIV, 7.
pignus XXVII, 9. 24 sqq. XXVIII, 18. XXXIII, 10. XXXIV, 7. 22. 50. XXXV, 11. 18. 52. XLI, 11. XLVII, 37 sq. 41. 52 sqq. 79 sq. XLIX, 2. 11 sq. 21. 48 sqq. 61. L, 7. 13. 55. LIII, 10. 13. LVI, 3 sq. 38.
πίναξ ἐκκλησιαστικός XLIV, 35. 36.
piratae VII, 2. 3. 14. XII, 2. 5. 13. XVIII, 230. 241. XXIII, 148. 162. 166 sq. LII, 5. LVIII, 56. Pr. 21, 2.

Πιτθεῖς, Pitthi, pagi Attici, incolae, XXI, 62. XXXV, 13. 14. LIV, 31.
Πιττάλακος, Timarchi familiaris, XIX, 245.
Πλαγγών, Mantiae pellex, XXXIX, 9. XLII, 2. 8 sqq. 51.
Πλαταιαί, Boeotiae oppidum, V, 10. VI, 30. XIII, 24. XVI, 4. 25. XVIII, 208. XIX, 20. 42. 112. 325. XXIII, 200. LIX, 96. 97. *Πλαταιεῖς* LIX, 94 sqq.
Πλάτων LXI, 46. Ep. 5, 3.
Πλειάδες, sidus, L, 23.
Πλείστωρ XXXVII, 4.
ploratus in iudiciis ad commovendam misericordiam XIX, 281. 310. XXI, 99. 186 sq. 194. XXX, 32. XXXVII, 48. XXXVIII, 27. XXXIX, 35. XLV, 88. LIII, 29. LIV, 43.
Πλούταρχος, Eretriae tyrannus, V, 5. IX, 57. XXI, 110. 200.
Πλωθεῖς, Plothiae, pagi Attici, incolae, LVII, 38.
Πνύξ, locus contionibus populi Atheniensium destinatus, XVIII, 55. (169).
Πολέμαιστος Ep. 6, 2.
πολέμαρχος, v. *ἄρχοντες*. Spartanorum XIX, 264.
Πολέμων, Hagniae I. f., XLIII, 22 sqq.
πολῖται XX, 67. XXII, 53. 54. XXIII, 23. XXIV, 166. XLVI, 22. LVII, 3. 24 sqq. LIX, 13. 16. 75. 88 sqq. 104 sqq. LXI, 23. *γένει π.* XXIII, 12. 24. XXXVI, 30. XLV, 78. *φύσει π.* LIX, 28. *ποιήσει π.* XX, 30. XXIII, 12. 23. 65. 118 sq. 141. 145. 187. 188. 211 sq. XLV, 78. XLVI, 15. *κατὰ ψήφισμα π.* LIII, 18. LIX, 2. *πολιτεία*, ius civitatis, XII, 8 sqq. XIII, 23. 24. XX, 30. XXIII, 65. 89. 118 sq. 127. 151. 199. 200. LIX, 104 sqq. Ep. 3, 26. Byzantiorum XVIII, 91.
Πολυάρατος Χολαργεύς XL, 6. 24.
Πολυδεύκης LXI, 30.
Πολύευκτος, Charidemi vitricus, LVIII, 31 sq.
Πολύευκτος Θριάσιος XLI, 1. 3 sqq.
Πολύευκτος Κριωεύς XLII, 11.
Πολύευκτος, Midiae familiaris, XXI, 139.
Πολύευκτος, orator, IX, 72.
Πολύζηλος, archon ol. 103, 2, XXX, 15.
Πολύζηλος alius XXI, 31. 38 sqq.
Πολυκλῆς L.
**Πολυκλῆς*, archon pseudeponymus, XVIII, 105.
**Πολυκράτης Ἐπίφρονος* XVIII, 165.
**Πολυκράτης*, rogator, XII, 16.
**Πολύκριτος Ἀπημάντου Κοθωκίδης* XVIII, 75. 77.
Πολυσθένης XXIII, 202.
Πολύστρατος, mercenariorum dux, IV, 23. XX, 84.
πομπαί IV, 26. XVIII, 86. 216. XIX, 287. XXI, 8. 10. 22. 171. 174. 180. XXII, 68. *πομπεῖα* XXII, 48. 69. 78. XXIV, 8. 161. 176. 186. *πομπεῖον* XXXIV, 39.
Πόντος XVII, 20. XX, 31. XXXIV, 6. XXXV, 3. 7. 10 sqq. XXXVII, 6. 25. L, 5. 19.
Πορθμός, Euboeae oppidum, IX, 33. 57. 58. X, 8. XVIII, 71. XIX, 87.
Ποσείδιππος L, 50.
Ποσειδῶν XXIII, 66. XXIV, 151. Ep. 2, 16.
Ποτίδαια, Thraciae oppidum, I, 9. 12. II, 7. 14. IV, 4. 35. VI, 17. 20. VII, 9. 10. 13. VIII, 62. 65. X, 10. 12. 64. 67. XVIII, 69. XX, 61. XXIII, 107. 116.
praecones XVIII, 170. 191. 282. XIX, 70. 338. XXIII, 97. XXIV, 20. 150. XXV, 90. XLIII, 5. XLIV, 4. XLVII, 17. LI, 22. LVIII, 42.
praemia publica XIII, 21 sq. XVIII, 208. XIX, 330. XX, 5. 7. 15. 60. 71. 96. 107. 112 sqq. 120 sqq. 141. 159. XXI, 62. XXII, 5 sqq. XXIII, 23. 130. 136. 143. 185. 196 sqq. XXIV, 216. LVIII, 31. LIX, 2. 13. 89. 93. cf. *ἀτέλεια*, coronae, *πολιτεία*, *σίτησις*, statuae.
πράκτορες XXV, 28. XLIII, 71. LVIII, 20. 48.
Πραξικλῆς L, 41.
πρεσβεῖα XXXVI, 34. XXXIX, 30.
Προβαλίσιοι, Probalinthi, pagi Attici, incolae, XXVII, 58. LIX, 48. 123.
probatio: archontum (*θεσμοθετῶν ἀνάκρισις*) XX, 90. LVII, 66. 70.

LIX, 72. epheborum XXI, 157. XXVII, 5.36. XXX, 6.15.17. LVII, 62.67. magistratuum XL, 34. LVII, 25.46. 67. Plataeensium in donanda civitate LIX, 105 sq. praeconum XIX, 338. senatorum XXI, 111. LIX, 3.
προβολή (προβάλλειν) XXI, 8 sqq. 19. 26. 28. 176 sqq. 193. 206. 214. 218. 226. Cf. χειροτονία.
προβούλευμα (προβουλεύειν) XVIII, 9.53.118.169. XIX, 31. 32. 34 sq. 185. 234. XX, 4. XXI, 162. XXII, 5 sqq. XXIII, 9. 14. 16. 18. 92. 186. XXIV, 11. LIX, 4.
πρόγραμμα XXV, 9. προγράφειν XLVII, 42. LIV, 3.
προδοσία VIII, 40. XVIII, 38. 134. 158. 284. 294 sqq. 303. XIX, 110. 191. 258 sqq. 310. XX, 79. XXIII, 26. XXIV, 40. 60.127. 144. 146. LI, 8. LVIII, 38.
προεδρία XVIII, 91.
πρόεδροι XXI, 9. 36.162. XXII, 9. XXIV, 21 sq. 33. 39. 50. 55. 71. 84. 89. 157. XXV, 9.
προθεσμία XVIII, 125. XXXVI, 26. XXXVIII, 17. XLIII, 16.
Προκλῆς XXXVII, 48.
πρόκλησις (προκαλεῖσθαι) XXVII, 50. 52. XXIX, 11 sqq. 17. 19 sqq. 38. 50 sqq. XXX, 1. 23. 27. 35. XXXII, 18 sqq. XXXVI, 4. 7. 40. XXXVII, 12. 27. 40. 42. 43. 51. XL, 10 sq. 44. XLII, 19. 23. XLV, 8 sqq. 15 sqq. 43 sqq. 59. 61. XLVI, 4 sq. 11. 21. XLVII, 1. 5 sqq. 35. 40. XLVIII, 4. 34. 48 sqq. XLIX, 43. 65. L, 31. 34. LII, 14. 17. 30. LIII, 22 sq. LIV, 27 sq. 40. LV, 27. 35. LVI, 17 sq. LVII, 13. LIX, 60. 63. 120 sqq. eius formula *124.
Πρόκνη, Pandionis f., LX, 28.
Προκόννησος, Propontidis insula et oppidum, XVIII, 302. Προκοννήσιοι L, 5.
προμάντεια IX, 32. XIX, 328.
Πρόμαχος XL, 28.
πρόξενοι (προξενία) VII, 38. XV, 15. XX, 60. 132 sq. XXI, 50. 200. XL, 36. LII, 5. 9. 10. 24.
Πρόξενος, Neaerae f., LIX, 38. 121. 124.
Πρόξενος, praetor, XIX, 50. 52. 73 sq. 154. 155.
προπύλαια, arcis Athenarum vestibulum, XIII, 28. XXII, 13. 76. XXIII, 207. XXIV, 184.
προσκαταβλήματα XXIV, 97 sq.
πρόσκλησις (προσκαλεῖν) XVIII, 150. XXXII, 29. XXXIII, 14. XXXIV, 13. XXXVII, 41. XL, 16. 32. XLIII, 7. 15 sq. 75. XLVII, 26. 45. XLVIII, 29. 30. XLIX, 19. LIII, 14. 15. LIV, 29. LVIII, 8. 29. 32. 34.
Πρόσπαλτα, pagus Atticae, XLIII, 64. Προσπάλτιοι XLIII, 48. 65. 77. 78.
προστάται, inquilinorum patroni, XXV, 58.
προστίμημα (προστιμᾶν) XXI, 44. XXIV, 2. 39. 41. 55. 60. 71 sq. 77.93.103.105. 114. 191. XXV, 67.
proverbia XVIII, 24. 72.122.263. XIX, 148. XXV, 89. L, 26. LVI, 44. Pr. 48, 2.
πρυτανεῖον, v. σίτησις. — ἐπὶ Πρυτανείῳ iudicium XXIII, 76.
πρυτάνεις XVIII, 37. 73. 75. 116. 169 sq. XIX, 190. XXI, 8. XXIV, 21 sq. 27. 157. XXV, 90. XLVII, 42. LIX, 90. πρυτανεία XVIII, 75. 84. 105. 118. 164. 181. XXIV, 20. 27. 39. 40. 63. 71. 87 sq. 93 sq. 98. 169. LIX, 7. 27. πρυτανεῖα, sacramentum, XLIII, 71. XLVII, 64.
Πρωτόμαχος LVII, 40 sqq. 68.
Πρῶτος XXXII, 17. 19 sqq.
Πτελεόν, Thraciae oppidum, VII, 39. 40.
Πτοιόδωρος, Megarensis, XVIII, 295. XIX, 295.
publicani XXIV, 40 sq. 59 sq. 100. 122. 144. 146. LIX, 27.
publicatio bonorum XVII, 15. XX, 156. XXI, 43. XXII, 54. XXIII, 45. XXIV, 40. 50. 87. 166. XL, 20. 22. XLVII, 44. XLIX, 10. 45. 47. LIII, 27. LIX, 7. 16. 52.
Πύδνα, Macedoniae oppidum, I, 9. 12. IV, 4. XVIII, 69. XX, 61. 63. Πυδναῖοι I, 5. XIX, 194.
Πυθέας, orator, Ep. 3, 25.
Πύθια V, 22. IX, 32. XVIII, 91. XIX, 128. LIX, 33.
Πυθόδοτος, archon ol. 109, 2, XLVIII, 26.
Πυθόδωρος Ἀχαρνεύς L, 27.
Πυθόδωρος ἐκ Κηδῶν XLVII, 5.

Πυθόδωρος, Pythoclis pater, XIX, 225. alius LIV, 7.
Πυθοκλῆς, Aeschinis socius, XVIII, 285. XIX, 225. 314.
Πύθων, Aenius, XXIII, 119. 127. 163.
Πύθων, Byzantius, Philippi legatus, VII, 20. 23. XVIII, 136. Ep. 2, 8.
Πυθῶναξ, Zelita, IX, 42.
Πυλάδης, argentarius, XXVII, 11.
Πύλαι, fauces Thermopylarum, IV, 17. 41. V, 20. 22. VI, 7. 29. 35. 36. VIII, 64. IX, 32. X, 65. XVIII, 32. 35. 39. 184. 304. XIX, 18. 34. 58. 78. 83. 84. 99. 152. 153. 180. 204. 318. 322. 334. *πυλαία*, Amphictyonum concilium, V, 23. VI, 22. VIII, 65. X, 67. XVIII, 147. 151. 154. 155. 318. *πυλάγοροι* (*πυλαγορεῖν*) XVIII, 149. 154. 155.
Πύλος, Messeniae oppidum, XL, 25.
πυρκαϊά (XVIII, 132.) XXIII, 22. 24.
Πύρρος Ἐτεοβουτάδης XXI, 182.
πωληταί XXV, 58. *πωλητήριον* 57.

Quadringentorum principatus Athenis XX, 48.

Ῥαδάμανθυς XVIII, 127. LXI, 30.
Ῥαμνοῦς, pagus Atticae, XVIII, 38. *Ῥαμνούσιοι* XVIII, 29. 55. XLII, 28.
redemptio captivorum VIII, 70. XII, 3. XVIII, 268. XIX, 40. 166. 169 sq. 222. 229. LIII, 7 sqq.
Ῥόδος, insula, V, 25. XVIII, 234. LVI, 3 sqq. *Ῥόδιοι* XIII, 8. XV. LVI, 47. Pr. 24, 3.
rubrum mare XIX, 304.

sacra XVIII, 216. 218. XIX, 86. 139. 192. 280. XXI, 54. 114. 115. XXIV, 27. 97. XLIII, 71. LVII, 47. 54. LIX, 74 sqq. 116. LX, 36. Pr. 54, 1 sq. Ep. 3, 26. *ἱερὰ ἄρρητα* LIX, 73 sqq. 110. *δημοτελῆ* LIX, 85 sqq. *δημόσια* et *δημοτικὰ* XLIII, 71. *εἰσιτήρια* XIX, 190. XXI, 114. *τέλεια* LIX, 60. *φρατορικά* XLIII, 14. 82. *ἱερῶν ἀτέλεια* XX, 125 sqq. *ἱερὰ ἐσθής* XXI, 16. *νόμος* 35. *τριήρης* IV, 34. XXI, 174. *χρήματα* (opp. *ὅσια*) XIX, 293. 327. XXII, 7. XXIV, 8 sq. 11. 82. 96. 111 sq. 120. 137. 179. XLIX, 65. *χώρα* XVIII, 150. — sacerdotia LVII, 46 sqq. 62. LIX, 92. 104. 106. sacerdotes XXI, 43. Pr. 55, 3. Amphictyonum XVIII, 154. 155. feminae XIX, 281. LIV, 25. LIX, 116.
Σαλαμίς, insula, XIII, 21. 22. XVIII, 116. 208. XIX, 252. 311. 312. XXII, 13. XXIII, 196. 198. XLIV, 10. 18. LIX, 95. 97. LXI, 49. *Σαλαμίνιοι* XIX, 251.
saltationes lascivae II, 19.
Σάμος, insula, XV, 9. XXI, 71. 144.
Σαννίων, chori magister, XXI, 58 sq.
Σάτυρος Ἀλωπεκῆθεν LIX, 45. 47.
Σάτυρος, argentarius, XXXVI, 28.
Σάτυρος, histrio comicus, XIX, 193. 196.
Σάτυρος Μελιτεύς LIX, 58.
Σάτυρος, navalium praefectus, XXII, 63.
Σαυρίας Λαμπτρεύς LIX, 45. 47.
Σεμέλη LX, 30.
σεμναὶ θεαί = Eumenides XXI, 115.
septem sapientes LXI, 50.
sepultura XXI, 106. XXV, 54. 58. XLIII, 62. XLIV, 32. XLVII, 69. publica XVIII, 208. 288. XX, 141. XXIII, 209. LVII, 37. LX, 1 sqq.
Σέρριον, Thraciae oppidum, VII, 37. VIII, 64. IX, 15. X, 8. 65. XVIII, 27. 70.
servi VIII, 51. IX, 3. 31. X, 27. XVII, 3. XVIII, 129. 213. 258. XIX, 197. XX, 131. XXI, 46 sqq. 53. 180. XXII, 53 sqq. XXIV, 124. 166 sq. XXXVII, 24. 50 sq. XLII, 32. XLIII, 58. XLV, 27. 35. 71. 75 sqq. LIII, 16. 20. LV, 32. LIX, 85. LXI, 23. Ep. 3, 25. barbari XXI, 48. domestici XLVII, 52 sq. 56. fugitivi LIII, 6. LIX, 9. manumissi XVII, 15. XXIV, 124. XXVII, 19. XXIX, 25. 31. XXXVI, 28 sq. XLVII, 55. 72. XLIX, 55.

LIX, 18. 30. operarii XXVII, 6. 9. 13. 18 sqq. 24 sqq. 30 sqq. 61. XXVIII, 8. 12. XXIX, 35. 37. XXXVII, 22 sqq. XLVIII, 12 sqq. LIII, 20. 21. publici II, 19. VIII, 47. X, 22. XIX, 129. XXI, 179. XXII, 70. 71. XXIV, 162. 178 sq. 197. XXV, 23. XLVII, 35. L, 46. 51. LIII, 24. venales IX, 31. XXI, 49. XLV, 71. 74. 81. LVII, 34. LIX, 29. 49. eorum pretia XXVII, 9. XLI, 8. 22. LIII, 1. in quaestionem postulati et oblati, v. πρόκλησις. torti, v. βάσανος.

Σηλυμβρία, Thraciae oppidum, XV, 26. Σηλυμβριανοί XVIII, 77. 78.

Σηστός, urbs ad Hellespontum sita, XVIII, 92. XXIII, 158 sqq. 177. L, 17 sqq. Σήστιοι XXIII, 160.

Σίγειον, Troadis oppidum, II, 28.

Σικελία XX, 42. XXXII, 19 sqq. XXXIII, 13. XXXVI, 53. LIII, 5. LVII, 37. Σικελικὸς κατάπλους LVI, 9.

Σικυών, Peloponnesi oppidum, XVII, 16. XVIII, 48. XXI, 158. Σικυώνιοι XVIII, 295.

*Σῖμος Ἀναγυράσιος XVIII, 164.

Σῖμος, Larisaeus, XVIII, 48. LIX, 24. 108.

Σιμύλος, histrio, XVIII, 262.

Σίμων Αἰξωνεύς LIX, 24. 25.

Σίμων, frater uxoris Amadoci, XXIII, 10 sq. 17. 123. 180. 189.

Σινώπη, meretrix, XXII, 56. LIX, 116.

Σιτάλκης, rex Thraciae, XII, 9.

σιτηρέσιον IV, 28 sq. L, 24. 53. 56.

σίτησις ἐν πρυτανείῳ: bene meritorum XIX, 330. XX, 107. 120. XXIII, 130. 136. L, 13. LVIII, 30. legatorum XIX, 31 sq. cf. ἑστίασις. magistratuum ἐν Θόλῳ XIX, 249. prytanum XVIII, 169. XIX, 190.

σῖτος, matri, viduae, pupillis praebendus, XXVII, 25. XXVIII, 11. XXIX, 33. XLVI, 20. LIX, 52 sq.

σιτωνία XXXIV, 39. σιτῶναι XVIII, 248.

Σίφνιοι XIII, 34.

Σκελλίας LVIII, 67. [125.

σκευαγωγία XVIII, 36. XIX, 86.

Σκῆψις, Troadis oppidum, XXIII, 154.

Σκίαθος, insula, IV, 32. VIII, 36.

Σκιρωνίδης LVIII, 17.

Σκίτων XXI, 182.

Σκιώνη, Thraciae oppidum, XXXV, 10.

Σκῦθαι XXXIV, 8.

*Σκύθης Ἁρματέως Κυδαθηναιεύς XLV, 8.

Σκῦρος, insula, VII, 4. LII, 3. 9. LIX, 3.

Σμίκρων XXI, 182.

Σμικυθίων XXIII, 169.

Σμίκυθος XIX, 191.

Σόλων Ἐρχιεύς XL, 16.

Σόλων, homo obscurus, XLV, 64.

Σόλων, legislator, XVIII, 6. XIX, 252 sqq. XX, 90. 93. 102 sqq. XXII, 25. 30. XXIV, 103. 106. 113. 142. 148. 211. 212. XXVI, 4. 23. XXXVI, 27. XLII, 1. XLIII, 62. 66. 67. 78. XLIV, 67 sq. XLVI, 14. XLVIII, 56. LVII, 31. LXI, 49.

sortitio: choregorum XXI, 13. iudicum XIX, 1. XXI, 227. XLVI, 23. iudiciorum XLVII, 17. magistratuum XXXIX, 10 sqq. LVIII, 29. LIX, 72. militum XXI, 133. proedrorum XXIV, 89. sacerdotum LVII, 46 sq. 62. senatorum XXI, 111. LIX, 3.

Σούνιον, pagus Atticae, XVIII, 38. Σουνιεῖς XVIII, 135. XXI, 121. 168.

Σοῦσα, urbs Persarum, X, 34.

σοφισταί XVIII, 276. XIX, 246. 250. XXIX, 13. 32. XXXV, 39. 40. LIX, 21. LXI, 48 sq.

Σοφοκλῆς XIX, 246. 248.

Σπαρτιᾶται XXIII, 212.

speculatores XVIII, 137.

Σπίνθαρος, Eubuli f., LIV, 7. LIX, 39.

Σπουδίας XLI.

στατῆρες XXXVIII, 12 (cf. Κυζικηνοί). Φωκαεῖς XL, 36.

statuae XII, 4. 21. XIII, 21. XVIII, 91. 122. XIX, 251. 261. 330. XX, 70. 120. XXIII, 130. 136. 143. 196 sq. XXVI, 23.

Στέφανος Μενεκλέους Ἀχαρνεύς XLV. XLVI.

Στέφανος, Neaerae maritus, LIX, 1 sqq. *Ἐρωιάδης 40.

στῆλαι, tabulae actorum populi, IX, 41. XII, 8. XVI, 27. XIX, 270. XX, 36. 37. 64. 69. 127. 130. 159. XXI, 170. XLVII, 18. LVIII, 56. LIX, 105. legum XLVII, 71. LIX, 76. publicae XLVII, 21. termini XVIII, 154. στηλῖται IX, 45.

stipendia militum IV, 24 sq. 28. VIII, 26. XLIX, 13. nautarum XLIX, 15. 50. L, 10 sqq. LI, 11.

στοαί XIII, 28. XXII, 76. XXIII, 107. XXIV, 184. βασίλειος XXV, 23. ποικίλη XLV, 17. LIX, 94. μακρά in Piraeeo XXXIV, 37.

Στράβαξ, mercenariorum dux, XX, 84.

Στράμμενος, Argivus, LII, 10.

στρατηγοί II, 28. 29. IV, 19. 24. 26. 33. 45. 46. 47. VII, 15. VIII, 24. 28. 47. X, 22. XI, 20. XII, 8. 12. XIII, 5 sq. 15. 19 sqq. XIV, 22. XV, 32. XVIII, 37. 73. 75. 137. 145. 146. 164. 169. 170. 184. 303. XIX, 93. 99. 147. 190. 298. 333. 334. 335. XX, 78. 82. XXI, 145. XXII, 66. XXIII, 12. 120. 130. 155. 168 sq. 173. 184. 196. XXIV, 135. 173. XXV, 49. XXXIV, 50. XXXV, 48. XXXIX, 8. XL, 25. XLII, 5. 16. XLVII, 50. XLIX, 8 sqq. 25. 28. 35. L, 10 sqq. LIV, 4 sq. LVIII, 55. LIX, 96. Pr. 21, 3. 40, 2. 50, 3. 55, 3. Ep. 1, 7. 11. *στρ. ἐπὶ τῶν ὅπλων XVIII, 38. 115. 116. *ὁ ἐπὶ τῶν ἱππέων 116. στρατήγιον XLII, 14. στρατηγὶς ναῦς XLVII, 78.

Στράτιος, Buseli f., XLIII, 19 sqq.

στρατιωτικά I, 19. 20. III, 11. 19. IV, 28. XIII, 4. XIX, 291. XLIX, 12. 16. L, 10. LIX, 4 sq.

Στρατοκλῆς, Amphipolitanus, I, 8.

*Στρατοκλῆς, e gente Buselidarum, XLIII, 42.

Στρατοκλῆς, Euthydemi pater, XXI, 165.

Στρατοκλῆς, homo nequam, XXXVII, 48.

Στρατόλα, meretrix, LIX, 19.

*Στράτων, e gente Buselidarum, XLIII, 44.

Στράτων Φαληρεύς XXI, 83 sqq.

*Στρατωνίδης, e gente Buselidarum, XLIII, 36.

στρεβλοῦν XVIII, 133. XXIII, 28. XXV, 47. XXIX, 12. 39 sq. cf. βάσανοι.

Στρυβήλη = Φανώ LIX, 50. 121.

Στρύμη, Thraciae oppidum, XII, 17. L, 21 sq. 32.

Στρυμόδωρος, Aegineta, XXXVI, 29.

Στύρα, Euboeae oppidum, XXI, 167. 168.

συγγραφαί XVIII, 122. XXIX, 36. XXXII, 1 sq. 5. 16. XXXIII, 12. 36. XXXIV, 3. 6 sq. 26 sq. XXXV, 1. *10—13. XLVI, 28. L, 61. LIII, 10. LVI, 2 sqq. *36. *38.

συκοφάντης quid XVIII, 189. 212. 242. XXV, 41. 45 sq. 48 sq. 63. 96. XXXVI, 26 sq. 53. LVII, 34. LVIII, 10 sqq. 63 sqq. LIX, 43. ἐργαστήριον συκοφαντῶν XXXIX, 2. XL, 19.

σῦλαι VIII, 25. XXXV, 13. 26. LI, 13.

σύμβολα VII, 9 sqq.

συμβόλαια XXXII, 1 sq. 7. 20. XXXIII, 1 sqq. XXXIV, 1 sqq. 27. 30 sq. 43. XXXV, 27. 32. 47. XXXVII, 2. 10. XLI, 5. XLVII, 19. 63. XLIX, 1 sqq. 18. L, 1. LVI, 4. 50.

συμβουλεύειν (σύμβουλος) quid VIII, 73. XVIII, 189. 212. 290.

συμμορίαι: tributariae II, 29. XIII, 20. XVIII, 3. 12. XXI, 157. XXVII, 7 sq. XXVIII, 4. 8. XXIX, 59. XXXIX, 8. trierarchicae XIV. XVIII, 103. XLVII, 21. 29 sq.

συμπόσιον XIX, 139. 193 sq. 196 sqq. LIX, 33. 48.

συνέδριον, curia, XLIV, 58. LVIII, 8. LIX, 83. τὸ κοινὸν τῶν Ἑλλήνων (XVII, 15) XVIII, 22. = concilium Amphictyonicum XVIII, 155. σύνεδροι XXIV, 127. 150. Amphictyonum XVIII, 154. 155. 157. τῶν συμμάχων Ep. 6, 1.

συνήγοροι (σύνδικοι) XVIII, 134. 135. XIX, 290 sq. XX, 1. 146. 152. XXI, 112. 127. 190. 205. 207. XXII, 38. 40. XXIII, 206. XXIV, 23. 36. 157. XLIV, 3. XLVI, 26. XLIX, 9. LI, 1. 16 sqq. LVIII, 4. 44. 70. LIX, 14 sq. 115.

συνθῆκαι: privatae XXV, 69. XXXIII, 15 sqq. 29 sqq. XXXIV, 5. 46. XXXVI, 4. XXXVII, 5 sqq. 29. XLIII, 7. XLV, 32. 41. XLVIII, 9 sq. 17 cett. L, 68. LV, 31. LVI, 6. publicae V, 25. XII, 8. XV, 29. XVII. XVIII, 77. XXV, 16.

συντάξεις XVIII, 234. XLIX, 49. LVIII, 37 sq.

συντέλεια (συντελεῖς) XVIII, 104 sqq. XX, 23. XXI, 155.

Συράκουσαι XXXII, 4. Συρακούσιοι (Συρακόσιοι) XII, 10. XX, 161. XXXII, 18.

Σύροι Ep. 4, 7.

Σύρος, nomen servile, XLV, 86.

Σφήττιοι, Sphetti, pagi Attici, incolae, XVIII, 187. XXI, 82. 121. 168. XXXV, 6. 10.

Σωκλῆς, argentarius, XXXVI, 29.

Σωκράτης, argentarius, XXXVI, 28.

Σωκράτης, histrio, XVIII, 262.

Σωκράτης, Philippi satelles, IX, 59.

Σωκράτης, philosophus, LXI, 45.

Σωκρατίδης, archon ol. 101, 3, XLIX, 6. 44. LIX, 33.

Σωσίας, Sosithei f., XLIII, 74.

Σωσίθεος, Sosiae f., actor, XLIII, 36 sq. 42. 46. 70.

Σωσικλῆς, sycophanta, XVIII, 249.

Σωσίνομος, argentarius, XXXVI, 50.

*Σωσίνομος XVIII, 165.

Σώστρατος, Euboensis, XVIII, 295.

Σώστρατος, pirata, XII, 13.

*Σώστρατος Φιλίππου Ἱστιαιόθεν XXXV, 20. 34.

Σωτάδης, Cretensis, LIX, 108.

Σώφιλος, athleta, XXI, 71.

*Σώφιλος Φλυεύς XVIII, 187.

ταμίαι VIII, 47. X, 22. XXII, 70. XXIV, 129. 178. LI, 1. τῶν τῆς θεοῦ XLIII, 71. οἱ τῆς θεοῦ καὶ οἱ τῶν ἄλλων θεῶν XXIV, 136. τῆς παράλου XXI, 171. 172. praetorum XLIX, 6. 10. 44. privati XLIX, 14. τῶν τριηροποιῶν XXII, 17.

Ταμύναι, Euboeae oppidum, XXI, 162. XXXIX, 16.

Τάναγρα, Boeotiae oppidum, XVIII, 96. Ταναγραῖοι XXV, 60.

ταξίαρχοι IV, 26. 27. XIV, 22. XXXIX, 17. XL, 34. LIV, 5.

Ταραντῖνοι LXI, 46.

Ταυρέας, choragus, XXI, 147. alius Ep. 3, 15.

τειχοποιοί XVIII, 55. 113. 118.

Τελέδαμος, Argivus, XVIII, 295.

*Τελέδημος Κλέωνος XVIII, 137.

*Τελεσίππη XLIII, 44 sq.

Τελέστης XXII, 60.

τεμένη XLIII, 58. LVII, 63.

templa XIII, 28. XIX, 21. 49. 303. 327. XX, 149. XXI, 216. XXII, 13. 73. 76. XXIII, 80. XXIV, 181. 184. XXV, 34. LIX, 46. 76. Ep. 2, 16.

Τένεδος, insula, XVII, 20. XVIII, 302. L, 53 sq. Τενέδιοι L, 56. LVIII, 35.

terrae motus in Chersoneso XXXIII, 20. 33.

testamentum XX, 102. XXVII, 13. 40 sqq. 64. XXVIII, 3. 5 sq. 14. XXIX, 29. 31. 42 sqq. 57. XXXVI, 7. 32 sqq. XLIII, 4. XLIV, 67 sq. XLV, 8 sqq. XLVI, 2 sq. 14 sqq. 24 sq. 28. eius formula *XLV, 28.

testes qui sint XL, 58. in rebus controversis advocantur XXVII, 18. 21. 26. 47. 49. 51. 54. XXVIII, 2. 5. XXIX, 21. 53. XXX, 19 sqq. XXXIII, 12. 20. 25. XXXIV, 28. 30. XXXVI, 16. XLI, 9. XLII, 12. XLIII, 38. XLIV, 36. XLV, 13. XLVII, 11. 16. 17. 36. 38. 62 sqq. 67. XLVIII, 7. 11. 46 sq. 50. XLIX, 2. L, 29 sq. 54 sq. LIII, 16. 23. LIV, 28. LV, 5. LVII, 41. in iudiciis XXI, 139 (cf. ἑταιρία). testimonium quomodo dicendum: non ἀκοῇ XLIV, 55. XLVI, 7 sq. LVII, 4. 34, sed scripto XLV, 44. XLVI, 6. quomodo scribendum XLVI, 11. scriptum ab actore LVII, 14. eius formulae verae XXIX, 31. LIV, 31. fictae XVIII, *135. *137. XXI, *22. *82. *93. *107. *121. *168. XXXV, *14. *20. *23. *33 sq. XLIII, *35—37. *42—46. *70. XLV, *8. *19. *24 sq. *55. *61. XLVI, *21. LIX, *23. *25. *28. *32. *34.

*40. *47. *48. *54. *61. *71. *84. *123. t. sibi dicere non licet XLVI, 9. t. in proclesi XLVI, 4. 11. cum βασάνῳ comparatum XXX, 37. — ἐκμαρτυρία XXXV, 20. XLVI, 7. 8.
τετραρχίαι Thessaliae IX, 26.
τετταράκοντα, οἱ, XXXVII, 33.
Τηλέμαχος XXXVII, 5.
Τηλεφάνης, tibicen, XXI, 17.
Τῆνος, insula, L, 4.
Τηρεύς, Thraciae rex, LX, 28.
Τήρης, Thraciae rex, XII, 8. 10.
Τιγράνης, Persa, XV, 9.
Τιλφωσσαῖον, Boeotiae oppidum, XIX, 141. 148.
Τιμαγόρας, legatus morte multatus, XIX, 31. 137. 191.
Τιμανορίδας, Corinthius, LIX, 29 sqq.
Τίμαρχος, Aeschinis adversarius, XIX, 2. 233. 241. 244. 251. 283. 285 sq.
τίμημα (τιμᾶν): de poena XIX, 290. XX, 155 sq. XXI, 21. 25. 45. 47. 102. 151 sq. 182. XXIII, 167. XXIV, 63. 105. 118. 146. XXV, 83. 92. XXIX, 2. XXX, 32. XXXI, 10. LIII, 18. 26. LVIII, 31. 43. LIX, 6. 8. cf. δίκη. de censu XXVII, 7. 9. XXVIII, 4. τίμημα τῆς χώρας XIV, 19. 30.
Τιμόδημος, argentarius, XXXVI, 29. 50.
Τιμόθεος, Cononis f., II, 14. VIII, 74. XIII, 22. XV, 9. XX, 84. 85. 149 sqq. 198. 202. XXVII, 7. XXIX, 59. XXXVI, 53. XL, 39. XLIX. LXI, 46.
Τιμοκράτης, archon ol. 104, 1, XXX, 15.
Τιμοκράτης Δημοστράτου Μελιτεύς LVII, 37. 39 sqq.
Τιμοκράτης, rogator, XXI, 139. XXIV. XXIX, 28. XXX, 7 sqq. XL, 28. 59.
Τιμόλας (Τιμόλαος), Thebanus, XVIII, 48. 295.
Τιμόμαχος, praetor, XIX, 180. XXIII, 115. XXXVI, 53. L, 14 sqq.
*Τιμόξενος Θυμαιτάδης XXXV, 34.
Τιμοσθένης Αἰγιλιεύς XLIX, 31 sqq. 59. 62.
*Τιμόστρατος Ἑκαλῆθεν LIX, 61.
Τιρίστασις, Thraciae oppidum, XII, 3.
Τισίας Ἀχαρνεύς XLV, 8. 10. 24. 60. XLVI, 5.
Τισίας, Iphicratis frater, XXI, 62. alius LV, 5.
τοιχωρύχοι XXXV, 47.
τραγῳδοί V, 7. XVIII, 54. 55. 84. 115. 116. 118. XXI, 10. 59. 156.
τραγῳδία XXI, 149.
τραπεζῖται (τράπεζαι) XIX, 114. 293. XXI, 215. XXVII, 11. XXXIII, 7. 9 sqq. XXXIV, 6. XXXVI, 4 sqq. 28 sq. 43 sqq. XL, 52. XLV, 5. 29 sqq. 47. 63. 72. XLVII, 51 sq. 57. 62. 64. XLVIII, 12. XLIX, 2. 4 sqq. LII, 3 sqq. LIII, 9. LVI, 15. τραπεζιτικὰ γράμματα XLIX, 59. LI, 4. 6.
τραῦμα ἐκ προνοίας XXIII, 22. 24. XL, 32. LIV, 18.
τριακόσιοι, οἱ, ditissimi, II, 29. XIII, 20. XVIII, 171. XLII, 3 sqq. 25. Megaris XIX, 295.
Τριβαλλοί, gens Thracia, XVIII, 44. iuvenum lascivorum cognomen LIV, 39.
τριήραρχοι (τριηραρχία, τριηραρχεῖν) II, 30. IV, 36. VIII, 70. X, 37. XIV, 20. 22. XVIII, 104 sqq. 257. XIX, 230. XX, 18 sqq. 26 sqq. 129. 151. XXI, 78. 80. 151. 152. 154 sq. 161. 166 sq. 203. 208. XXIII, 168. XXIV, 11. 13. 92. XXVII, 14. 64. XXVIII, 3. XXXV, 48. XXXVI, 41. XXXVIII, 25. XXXIX, 8. XLIV, 9. XLV, 3. 66. 85. XLVI, 20 sq. XLVII, 21 sqq. 48. 50. 56. 78. XLIX, 11 sq. 14. 48. L. LI. LIII, 4 sqq. LIV, 44. Ep. 2, 10. τρ. ἐθελονταί XVIII, 99. συντριήραρχοι XX, 23. XXI, 161. XLVII, 22. 78. L, 37. τριηραρχικὸς νόμος XVIII, 102. 312. τριηραρχικὰ σκεύη XLVII, 19 sqq. L, 7. 26 sqq. 33 sqq. LI, 5.
τριήρεις: Atheniensium, v. Ἀθηναῖοι. ἱερά IV, 34. ἱππαγωγοί IV, 16. 21. X, 19. ταχεῖαι IV, 22. 28. X, 19 (μακρὰ πλοῖα LVIII, 55).
triginta viri XIX, 196. XX, 11. 42. XXII, 52. XXIV, 56 sqq. 90. 164. XL, 32.

Τρικάρανον, Phliasiae oppidum, XVI, 16.
tripodes XXI, 6. XLII, 22. LIX, 97.
τριταγωνισταί XVIII, 129. 209. 265. XIX, 200. 246. 247. 337.
τριττῦς XIV, 23.
Τριφυλία, Elidis provincia, XVI, 16.
Τροία XIX, 337. LX, 10. 29.
Τροιζήνιοι Ep. 2, 15.
Τρόμης, Aeschinis pater, XVIII, 129. 130.
τρόπαια III, 24. XIII, 26. XV, 35. XIX, 16. 148. 311. 320. XX, 76. 78. 80. 83. XXI, 169.
tutela (tutores) XXI, 78 sqq. 157. XXVII. XXVIII. XXX, 6 sqq. XXXVI, 8. 20. 22. XXXVIII, 3 sqq. XLV, 37 sqq.
τυραννίς I, 5. II, 21. VI, 21. 24. XI, 14. XII, 7. XVII, 3. XIX, 184 sq. XX, 15. 70. XXI, 144. XXIII, 66. XXIV, 149.
usurae XXVII, 9 sqq. 17. 23. 29. XXVIII, 13. XXIX, 60. XXX, 7. XXXIV, 23 sq. XXXV, 10. XXXVII, 5. XLIX, 53. L, 17. 61. LII, 20. LIII, 12. 13. 20. LVI, 5. 12 sqq. LIX, 52.
Ὑακινθίδες, Erechthei filiae, LX, 27.
Ὑβλήσιος, navicularius, XXXV, 10. 18 sqq.
ὕβρις XXI, 6 sq. 11. 18. 19. 23. 34. 38. 41. 42. 44 sqq. 51. 67. 72 sqq. 83. 92. 97. 123. 130. 135. 143 sqq. 160. 170. 181. 183. XXII, 68. XXXVI, 47. XXXVII, 33. 58. XXXVIII, 21. XXXIX, 32. XLIII, 75. XLV, 4. 39. 80. XLVII, 41. LIII, 16. LIV, 1 sqq. 24. LVII, 5. LIX, 86.
* Ὑπερείδης Καλλαίσχρου XVIII, 137.
* Ὑπερείδης Κλεάνδρου Σφήττιος XVIII, 187.
Ὑπερείδης, orator, XVIII, 134. 135. 223. XIX, 116. XXVI, 11. LVIII, 35.
ὑπερήμεροι (ὑπερημερία) XXI, 10. 11. 81. 89. XXX, 27. XXXIII, 6. XXXV, 12. XLV, 70. XLVII, 49 sq. 65. 75. 77.
ὑπεύθυνοι XVIII, 55. 111 sq. 189. 235. 246. XIX, 118. 211. XX, 144. XXIV, 150. L, 50. testes XIX, 176. XXII, 23. XLIII, 30. XLV, 43 sq. LVII, 5. Cf. εὔθυναι.
ὑποβολιμαῖοι, liberi suppositi, IX, 31. XXI, 149.
ὑπωμοσία, v. iusiurandum.

Φαίδιμος, unus ex XXX viris, XIX, 196.
Φαῖδρος XXV, 54.
Φαίνιππος XLII.
Φαληρεῖς, Phaleri, pagi Attici, incolae, XVIII, 37. 135. XXI, 83. LIX, 40. 61.
familiae conservandae studium XLIII, 11 sq. 68. 72 sq. 75 sqq. XLIV, 2. 43.
* Φανίας Ἀφιδναῖος XXI, 93.
Φᾶνος XXIX, 23. 58. defenditur or. XXIX.
Φανοστράτη, meretrix, XXII, 56.
* Φανοστράτη, Stratii f. (quae erat filius Φανόστρατος), XLIII, 42.
Φανόστρατος Κηφισιεύς LIV, 7 sq.
Φανόστρατος, Stratii f., XLIII, 22.
Φανώ, Neaerae f., LIX, 38. 50 sqq. 121. 124.
φαρμακεία XXIII, 22. 24. XXV, 79 sq. XL, 57. XLVI, 14. 16. φαρμακοτρίβαι XLVIII, 12. 14.
Φαρσάλιοι, Pharsali, Thessaliae oppidi, incolae, XI, 1. XIII, 23. XIX, 36. XXIII, 199.
Φασηλίς, Pamphyliae oppidum, XXXV, 4. 44. Φασηλῖται XXXV, 1 sqq. 26. 36. 52.
Φᾶσις, Asiae fluvius, LX, 7.
φάσις (φαίνειν) XXV, 78. XXXV, 51. XXXIX, 14. LVIII, 5 sqq. 45.
Φάυλλος, Phocensium dynasta, XXIII, 124.
Φειδόλεως Ῥαμνούσιος XLII, 28.
vectigalia XX, 32. 60. XXIV, 97 sqq. XXXV, 29 sq. LIX, 27.
Φεραί, Thessaliae oppidum, I, 12. IX, 12. X, 10. XIX, 158. 175. Φεραῖοι VII, 32. VIII, 59. X, 61. XIX, 320.
Φερρεφάττιον, sacrum Proserpinae, LIV, 8.
versus Euripidis (Hec. init.) XVIII, 267. XIX, 245 sq. Hesiodi

(Opp. 763) XIX, 243. Solonis XIX, 255. Sophoclis (Antig. 175 sqq.) XIX, 247. incertorum auctorum VII, 40. XVIII, 267. 289. XXI, 52.

Φέρτατος XXXII, 17.

φιάλαι XXI, 158. XXII, 69. 73. 75. XXIV, 176. 181. 183. XLIX, 22. 24. 31 sq. 55. 59. 62 sq.

Φίλα, meretrix, LIX, 19.

Φίλαγρος, Eubulidis f., XLIII, 24. 35 sqq.

Φίλαγρος Μελιτεύς LIX, 32. 33.

Φιλάμμων, athleta, XVIII, 319.

Φιλέας Ἐλευσίνιος XXXVII, 4.

Φιλέψιος Λαμπτρεύς XXIV, 134.

* *Φιλήμων Σφήττιος* XXI, 121.

Φιλιάδης, Messenius, XVII, 4. 7. XVIII, 295.

Φιλῖνος, Nicostrati f., XXI, 161.

Φιλιππίδης Παιανιεύς XXI, 208. 215. LVIII, 33.

* *Φίλιππος Ἱστιαιόθεν* XXXV, 20. 34.

Φίλιππος, navicularius, XXIV, 138. XLIX, 14 sqq. 48 sqq. eius filius XXIV, 138. alii XXII, 38. XXIX, 23.

Φίλιππος, Amyntae f., rex Macedoniae, I—XII (VII, 11). describitur eius indoles et agendi ratio II, 5 sqq. alacritas I, 14. II, 23. IV, 42. IX, 50. XI, 17. 22. XVIII, 67. bellum gerendi ratio IX, 49. XVIII, 235. calliditas I, 3. II, 7. comitas XVIII, 231. XIX, 106. 139 sq. 195. eloquentia 308. gloriae studium II, 15. XI, 12. insolentia II, 18. X, 2. perfidia II, 5. eius amici quales II, 18 sq. XVIII, 284. XIX, 295. 314. in Amphictyones recipitur V, 19. XI, 4. XIX, 111. 327. Amphictyonum dux creatur XVIII, 143. Arcades corrumpit XIX, 10. 261. cum Argaeo de Macedonia certat XXIII, 121. Atheniensibus inimicus VIII, 39. 43. X, 11. 62. ab eis contemptus XV, 24. Atheniensibus quibus rebus praestiterit I, 2. XI, 17. bella cum eis gerit I—XII. XVIII. XIX. legatos Athenas mittit VII, 18. XII, 1. XVIII, 28. 136. XIX, 44. 111. 113. 150. 235. pacem cum Atheniensibus facit V. VII. VIII, 5. 63. IX, 1. XVIII, 19 sqq. XIX, 18 sqq. de pace cum eis disceptat VII, 18 sqq. pacem rumpit IX, 6. 17. X, 11. XVIII, 71. 73. 164 (cf. *Ἀθηναῖοι*). quibus rebus auctus sit II, 4. 7. III, 28. IV, 11. VIII, 11. 67. XIX, 300. *βάρβαρος* III, 16. 24. IX, 31. XIX, 305. 308. classem parat IV, 22. VII, 16. Elateam occupat XVIII, 169. in Elide turbas movet IX, 27. XIX, 260. eius epistolae, v. *ἐπιστολαί*. in Euboea tyrannos instituit VIII, 36. IX, 17. 27. 33. X, 8. XVIII, 71. 79. Euboea expellitur 87. eius expeditiones in Ambraciam VII, 32. IX, 27. 34. X, 10. in Atticam XVIII, 139. in Byzantium VIII, 66. IX, 35. X, 68. XVIII, 71. 87 sq. in Chersonesum IV, 17. VIII. IX, 16. 35. XVIII, 139. in Epirum I, 13. VII, 32. in Euboeam VIII, 18. 59. IX, 12. 17. XVIII, 71. 79. XIX, 326. in Illyrios I, 13. in Locros XVIII, 143. in Megara IX, 17. 27. XVIII, 71. XIX, 204. 326. in Olynthios I—III. IV, 17. VIII, 59. IX, 11. X, 61 (cf. *Ὄλυνθος*). in Paeones I, 13. in Phocenses VI, 15. 36. VIII, 64. 65. IX, 11 (cf. *Φωκεῖς*). in Thessaliam I, 13. VII, 32. VIII, 59. IX, 12. X, 61. in Thraciam I, 13. III, 4. VII, 37. VIII, 2. 14. IX, 17. 27. XI, 1. XVIII, 70. 87. XIX, 156. XXIII, 183. eius condicio in bello cum Graecis I, 21. II, 3 sqq. XI, 8. ante ruptam pacem XVIII, 145 sq. Graecos quibus iniuriis affecerit IX, 26 sq. X, 8 sqq. XVIII, 65 sqq. Halonneso potitur VII. XVIII, 69. in morbum incidit I, 13. VIII, 35. XIX, 289. Olympia celebrat 192. erga Olynthios qualis XXIII, 107 sq. legatos ad eos mittit IX, 11. eorum captivos dilargitur XIX, 194. 306. Peloponnesiorum rebus se immiscet VI, 15. IX, 17. XVIII, 79. XIX, 260. proditores in singulis Graeciae civitatibus emercatur VI, 32. VII, 17. 45. VIII, 53. 61. IX, 53. 56 sqq. X, 5. 19. 59. 63. 66. 75. XI, 18. XVIII, 19. 31. 33. 42. 45 sqq. 61. 161. 236. 247. 295 sq. XIX, 11. 68. 138. 222. 259 sqq. 300. XXV, 37. Ep. 2, 5. Pythia committit V,

22. IX, 32. speculatores mittit Athenas XVIII, 137. Thebanis favet, v. Θηβαῖοι. legatos ad Thebanos mittit XVIII, 211 sqq. Thebanorum legatos corrumpere frustra studet XIX, 139. Thessaliam in suam potestatem redigit IX, 27. 33. XIX, 260. vulneratus XVIII, 67. — φιλιππίζειν XVIII, 176. LVIII, 37. φιλιππισμός XVIII, 294.
Φιλίσκος, Abydenus, XXIII, 141 sq. 202.
Φιλιστίδης, Orei tyrannus, IX, 33. 59 sq. XVIII, 71. 81 sq.
Φιλοκλῆς, praetor, Ep. 3, 27.
Φιλοκράτης Ἁγνούσιος, orator, VII, 23 sqq. XVIII, 17. 21. 75. XIX, 8. 13 sqq. 23. 46. 47. 49. 53. 97. 101. 113—119. 144 sq. 150. 159. 171. 174. 178. 189. 206. 229. 236. 245. 253. 291. 309. 316. 333.
Φιλοκράτης Ἐλευσίνιος, sycophanta, XVIII, 249. XXV, 44 sq.
Φιλοκράτης, Ephialtis f., XXIII, 116.
Φιλομήλη, Pandionis f., LX, 28.
Φιλόμηλος Παιανιεύς XXI, 174.
Φιλόνικος, ab Aristophonte accusatus, XIX, 291.
Φιλόστρατος *Διονυσίου Κολωνῆθεν XXI, 64. LIX, 22. *23.
Φιλόστρατος, orator, XLII, 21. 27.
Φιλοχάρης, Aeschinis frater, XIX, 237.
*Φιλτιάδης Κτησίου Ξυπεταιών XXXV, 20. 34.
*Φίλων XVIII, 115.
Φίλων Αἰξωνεύς L, 47.
Φίλων, Aeschinis socer, XVIII, 312.
Φίλων, Thebanus, XIX, 140.
Φιλώνδας, Megarensis, XLIX, 26. 28 sq. 33 sqq. 60. sq.
Φιλωνίδης Μελιτεύς XXVII, 56. XXIX, 48.
vina XXXV, 35. XLII, 20. LV, 13.
Φλιάσιοι XIII, 32. XVI, 16.
Φλυεῖς, Phlyae, pagi Attici, incolae, XVIII, 29. 105. 115. 135. 187. XLII, 28. Φλυάσιοι (Φυλάσιοι?) XVIII, 164.
Φοῖβος LIX, 97.
Φοινίκη XII, 6. Φοίνικες XXXIV, 6.
*Φορμίδης Κυδαντίδης LIX, 123.
Φορμίων, argentarius, XXXVI. XLV, 1 sqq. XLVI, 1 sqq. XLIX, 7. 17. 29. 31 sq. 43 sq. 62. LII, 5 sqq. 29. LIII, 9.
Φορμίων, dives, XXI, 157.
Φορμίων, negotiator, XXXIV.
Φορμίων, orator, XX, 51. 100. 159.
*Φορμίων Κηφισοφῶντος Πειραιεύς XXXV, 13. 14.
Φορμίων ὁ τριηραύλης, servus, XVIII, 129.
φόροι VII, 12. XI, 16. XXIII, 209.
Φρασίας LII, 3 sq. 7.
Φρασιηρίδης Ἀναφλύστιος XXIII, 202. XLIX, 43. L, 41 sq.
Φρασικλείδης, archon ol. 102, 2, LIX, 37.
Φράστωρ Αἰγιλιεύς LIX, 50 sqq.
φράτορες (φρατέρες) XXXIX, 4. 20. 21. 29. 30. XL, 11. XLIII, 11 sqq. 36. 57. 81 sq. XLIV, 41. 44. LVII, 19. 23 sq. 39. 43. 46. 54. 67. 69. LIX, 13. 38. 55. 59. 118. 122. φρατριάζειν XLIII, 13. φρατορικὸν γραμματεῖον XLIV, 41. φρατρίαρχος LVII, 23.
Φρεάρριοι, Phrearrhi, pagi Attici, incolae, XVIII, 84. 115. 129. 187.
Φρεαττῦς XXIII, 77. 78.
frumentaria res XVIII, 87. 301. XIX, 123. XX, 31 sqq. XXXIV, 37 sqq. XXXV, 50 sq. LVI, 7 sq.
Φρυγία XIV, 32. XXIII, 155.
Φρυνίων Δήμωνος Παιανιεύς LIX, 30 sqq.
Φρύνων, legatus, XIX, 189. 197. 229 sq. 233.
furtum X, 73. XIX, 294. XXII, 27 sq. 69. XXIV, 103. 105. 112 sqq. 127. 177. 204. XXXV, 47. XLV, 59. 62. 81. LVIII, 15.
φύλαρχοι IV, 26.
Φυλή, pagus Atticae, XVIII, 38. XIX, 380. XXIV, 135.
φυλαί, tribus Atticae, IV, 36. XIV, 22 sq. XVIII, 84. 118. XX, 28. 130. XXI, 5. 13. 18. 60. 68. 126. 131. 156. XXXIX, 15. 17. 23 sq. 28. 30. XLIII, 64. XLVII, 12. LVIII, 14. LIX, 104. φ. προεδρεύουσα XXV, 90. πρυτανεύουσα, v. πρυτανεία. φυλέται XXI, 19. XXIII, 206. XXIX, 23. XXXIX, 7. LVIII, 15 sqq.
Φυλομάχη I., Hagniae I. f., XLIII, 22 sqq. 29. 49. 63.

Φυλομάχη II., Eubulidis II. f., XLIII, 17. 29. 31 sqq. 49. 55.
Φωκαεῖς στατῆρες XL, 36.
Φωκίς XVIII, 39. 157. *Φωκεῖς* I, 26. III, 8. V, 10. 19. VI, 7. 15. 29. 35. 36. VIII, 64. 65. IX, 11. 19. 68. X, 65. 67. XI, 1. XVIII, 32 sq. 36. 39. 42. 142. XIX, 18. 29 sqq. 59. 141. 174. 204. 220. 248. 278. 317 sqq. XXIII, 102. 124. LIX, 101. eorum urbes viginti et duo XIX, 123. *Φωκικὸς πόλεμος* II, 7. X, 47. XVIII, 18.
Φωκίδης XXV, 38.
Φωκίων, praetor, XXI, 164.
Φώκριτος, Byzantius, XXXIII, 14 sqq.
φωρῶν λιμήν, Atticae portus, XXXV, 28. 53.

Χαβρίας Αἰξωνεύς, praetor, IV, 23. XIII, 22. XIX, 287. XX, 1. 75 sqq. 133. 146 sq. XXI, 64. XXIII, 171 sq. 176. 178. XXIV, 180. XL, 24. LIX, 33. 34. eius filius (Ctesippus) XX, 1. 75. 80 sqq.
Χαιρέδημος, rogator, XLVII, 20.
Χαιρεστράτη, Demostrati uxor, LVII, 37 sq.
Χαιρέτιμος Χαριμένους Πιτθεύς LIV, 31. 34.
Χαίρων, Pellenae tyrannus, XVII, 10.
**Χαιρώνδας*, archon pseudeponymus, XVIII, 54. 84.
Χαιρώνεια, Boeotiae oppidum, ad quod victi a Philippo Athenienses et Thebani, (XVIII, 195. 264. 282. 284.) XXVI, 11.
Χαλκηδών, Bithyniae oppidum, XV, 26. cf. *Καλχηδόνιοι*.
Χαλκιδική, peninsula Thraciae, XIX, 266. *Χαλκιδεῖς* XIX, 263.
Χαλκίς, Euboeae oppidum, VIII, 18. IX, 74. XIX, 60. 125. XXI, 132. XXIII, 182.
**Χάρης Θορίκιος* XXI, 121.
Χάρης, praetor, VIII, 30. XIX, 332. XXIII, 173. 178. LVIII, 38. Ep. 3, 27.
Χαρίδημος, Ischomachi f., LVIII, 30.
Χαρίδημος, Orita, praetor, III, 5. XVIII, 114. 116. XXIII. XXXVI, 49. Ep. 3, 27.
Χαρίδημος, Stratii f., XLIII, 22. 24 sqq.
Χαρικλείδης, archon ol. 104, 2, XXI, 178.
Χαριμένης Πιτθεύς LIV, 31.
Χαρῖνος LVIII, 37 sq.
**Χαρῖνος Ἐπιχάρους Λευκονοεύς* XXXV, 14.
Χαρισιάδης, Charisii f., LVII, 20.
Χαρίσιος, Thucritidis I. frater, LVII, 20.
Χαρίσιος, Eleus, LIX, 18.
χειροτονία (*χειροτονεῖν*) VII, 19. XVIII, 29. 134. 149. 248. 285. 287. 314. XIX, 17. 114. 121 sq. 124. 126. 172. XX, 3. 4. 91. XXII, 20. XXIV, 39. XXV, 50. al. *ἀποχειροτονεῖν*, reiicere, XXIII, 167 sq. 172. XXIV, 21. XLIX, 12. L, 12. LVIII, 27 sqq. absolvere (in probole) XXI, 214. *διαχειροτονία* XXII, 5. 9. XXIV, 25. 33. XLVII, 43. LIX, 4 sq. *ἐπιχειροτονεῖν*, in suffragia mittere, IV, 30. XXIV, 39. 50. ratum facere XVIII, 29. 105. *ἐπιχειροτονία τῶν νόμων* XXIV, 20. magistratuum LVIII, 27. *καταχειροτονία*, condemnatio in probole, XIX, 31. XXI, 2. 6. 120. 175 sqq. 193. 199 sq. 206. 217. LI, 8. *προχειροτονεῖν* XXIV, 11.
Χελιδόνιαι, insulae ad oram Lyciae, XIX, 273.
Χερρόνησος, Thraciae pars, IV, 17. 41. VI, 30. VII, 39. VIII. IX, 15. 16. 20. 35. 73. XII, 16. XVIII, 80. 92. 93. 139. 302. XIX, 78 sq. XXIII, 1. 3. 8. 103. 107. 110. 149 sq. 153. 156. 158. 162. 166 sq. 173. 182. 208. XXXIII, 20. L, 5. LIX, 3. *Χερρονησῖται* V, 25. VII, 43. XVIII, 92.
χίλιαι, multa, XXII, 26. 27. 28. XXIII, 80. XXIV, 3. 7. LVIII, 6. 10. 12.
Χίος, insula, V, 25. XVIII, 234. XXXV, 52. LIX, 108. *Χῖοι* VIII, 24. XV, 3. 19. XX, 81. XXXV, 52.
Χίων, archon ol. 103, 4, XXX, 7.
Χιωνίδης Ξυπεταιών LIX, 34.
χόες, festum Bacchi, XXXIX, 16.
Χολαργεῖς, Cholargi, pagi Attici, incolae, XXII, 40. XL, 6. LVII, 43. 68.